# नेंद्राशी में कुषान्त्राया नेवात्रात्राया नेवात्रात्राया

35'E

## RESERVE COPY

038407

Accession No.....Shantarakshita Library
Tibetan Institute, Sarnath

### ব্রম্পর্র ক্ষেত্র ব্যাস কর

(य.चडरं.चं2ेंबे.चड्र.जु.क्बं.)

শ্রুষ্ণা দু নের স্ত্রা মান্ত্রা নার স্থানর নার ক্রার্থানর নার ক্রার্থ্যানর নার ক্রার্থানর নার ক্রার্থ্যান নার ক্রার্থ

वित्यत्व क्षुत्र वि ......(1)
2. हव वर क्षुर विष्य वर्ष द्विर विष्य क्षुत्र विषय क्ष्य विषय क्षित्र विषय क्ष्य विषय क्षित्र विषय क्ष्य विषय क्षित्र विषय क्ष्य क्ष्य

वत्र्मश्च्याः व्यान्वर्धः विरावद्यः व्यान्यः विरावद्यः व्यान्यः विरावद्यः व्यान्यः विरावद्यः व्यान्यः विरावद्यः

तम् तह्रव पश्चर श्चेन श्चरं । ..... (22)

4. प्रमाद व्यवस्य स्था व्यवस्य स्था व्यवस्य स्था व्यवस्य स्था व्यवस्य स्था व्यवस्य स्था विषय स्था विष्य स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स

ফুরান্থর শ্রুমান্থর বিষয় ফুরান্তর বিষয় করে। হি. স্ক্রমান্থর শ্রুমান্থর বিষয় কুরান্তর বিষয় করে। বিষয় বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্র

মতস্থা ------(64)

6. वृ त्यते पत्र वृ ता रे विन ता श्र र ति वे वता ( 67 )

| 7. শ্র-মের-নেশ্র-স্ক্র-স্কু-রেশ্  |
|---|
| ন্ইৰে'ই'ৠ'ন্-ন্স্ৰ্বাধা(80)   |
| 8. त्रुविष्यं वृद्दः द्रष्ट्विष्यं व्याप्यः वरः वरः   |
| <b>र्बग्</b> नहराष्ट्रे बॅर्न्स्ब्यू र्र्न्स्   |
| श्चर् त्यं स्वा न हें द स्व दे त्यव स्व त्य न व   |
| ٦١( 88 )  |
| 9. न्र-निक्षः रूर्-क्र-म्र-विदः विदः न्यमः  |
| न्स्राष्ट्राचश्चान्त्रवादिनयाः च्यापान्या   |
| ॸॣॱॺढ़॓ॱॿॖॱॺॱ <b>ॺॱॾॕ</b> ॴॱॸॕ <b>ॸ॔ॱय़ऀॱ</b> ॿॖऀ <i>ॸ</i> ॱॿ॓ॸॴॱ   |
| শ্ৰহ'ন।(91)   |
| 10. দু'নেই স্ত্র' অইশ্ন্না ই স্তু'নই  |
| न्यरःश्रः धुरःन्यः येत्यः बुग्यः यः हे  |
| म्रायानु गुरु हिरा वे रेर नर व द  |
| ব-শ্ৰ্ম্ম্ম্(111)   |
| 11. वॅट्र. बर्यास्टर त्युन्र बेट्र इ.व. कुलालायः  |
| शुलातुः दहेवातुः चेत् ग्रीः दर्भे दहेवः   |
| নৰ্শ্লী ব্যাদ্ধ নিৰ্দ্ধ নিৰ্দ |
| <b>के</b> नम्भास्त्र म्यु साम्य स्थान   |
| <b>दि</b> -सदे-स्व-स्वायाग्रीयाख्यानवावावे <b>या</b>  |
| मलन् यःसँग्लःग्रीःन्वःग्रीवःग्रुदःन।  |
|   |

| 13. मॅद्रायदे प्रग्य कुर दूर यदे न् या यह म   |
|---|
| <b>द</b> यः वॅर्-ग्री-श्चेर्-सम्बन्धवेषः स-र् <b>रः।</b>  |
| नमायः भृषाः यया वित्यः न्देयः शुः नर्श्वषाः   |
| ٢١(144)   |
| 14. ध्रेन कर वर्र राज्य न वर्ष कुराय राष्ट्र न  |
| नुनः सुन्यासः यह्न न् व क्वान्तुः   |
| मह्यसम्बद्धाः ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।  |
| 15. শে'বৃশ্ব'কুশ'রূব'কু'ব্দ'ব্দুশ   |
| ततुवाधनवात्ता महाकेवा हे व परा  |
| न्नर्खरानङ्कलानःसम्बद्धसाञ्चर   |
| बर्ह्न पः सुः बहुन् तेष्वयः धरः पङ्गीरयः  |
| ٦٦ ······ (173)   |
| 16. দু অदे न्नु अअर्रेग व्याशेन् दम् व स  |
| यतु वः वे वा सहरः श्लुः मञ्जूषायः यः न् <b>रः।</b>  |
| म्ट. थय. ट्रे. ब्रु. क्या. क्य. ट्रे. पश्चेय.   |
| (180)   |
| मधु.त र्व. लप्ट. श्र. श्र. हिंद. मकुर् मार हवार्यता   |
| ग्रे.यद्भरंभेपय   |
| 1. অমান্তিব্যবস্থা করা করা বিজ্ঞান বি |
| वहेंवावि वहेंवालुकाया(191)  |
| [5]   |

2. গ্রি-গ্রুম-দি-শ্রে-শ্রন্থ কল কি স্থ্রিন গ্রম म्र्रायु:लेब.ग्रंट्य.तपु:ब्रे.ट्रे.ट्रे. 「本一大名、美山公、日勤 ロ公、日 ···············(213) 3. महाळेदान्ययास्दाचानेताकुयादरा रु. स्वयामा न्मा याम्य महारुषा विदः लेंद् त्र हम् वाया पहरामा 4. শ্রমের দু অব ন্ত্র মান ক্রন্ । অব ন্ত্র মান ক্রন্তর মান ক্রন্তর মান ক্রামির মান ক্রামের মান ক্রামে मोड़ेयाची पर्यास्त्र र र पर पश्चिर प イエー ナー美々・刻ケ・髪エ・竜・髪す・別エ・ नगदःकुरःकुलःवदः ५ विनयः य ...... (237) बेरका रूट वें 'बुट' वदे 'व जुर' रेबा ..... (248) **৯** ন্ম র্ম ব্রম ব | ----- (257) 7. व्राम्यक्रमाम्यास्य स्त्राचित्रम्य শ্বন্ধ্য জ্বান্ত্রিন প্রবাদ্ধন এন দ্বন্ গ্রীন্ श्चिर-१-०श्ने हर्या गवर-१८०। दर अत्र म्बिय्या प्राप्त हं क्या हे हिंदा ता श्रीत ही. "" "ब्नियं रें न्वं प्रज्ञ प्रं व्यं न्वर प्र ..... (268)

| 8. मॅरावलक्ष्यस्य द्वाग्राच त्वाय ग्रील स्वा                      |
|---|
| শৃঐ:ন ঀয়য়৽ঢ়৾ ॱশৃঀৢ৴৻৽ঀৼ৾৽৻য়ৢৼ                                 |
| য়য়৻ৼয়ৢ৾৾৾য়ৼয়৾ঀৢ৾য়ৼয়য়য়৸য়য়ৢ <b>ৼ</b> ৾ঢ়ৢ৾ঀ <b>ৼয়য়</b> |
| শ্বৰ-অহ-শ্ব-হ্ৰন্ত্ৰ-হ্ৰত্ৰ-হৰ্ত্ৰ-হৰ্ত্ৰ-                        |
| স্তুব-র্মন্বন-ম-হন্ম-চেক্তম-দ্রবা (278)                           |
| 9. मॅर वाळवासर मैका मॅरा विते चर्च तरहीया                         |
| য়য়ৼॱৠৄ৾৾ৼ৾৾৾৽ড়ৼ৾৽ৼয়৸৽ৼয়৻ঀ৽৻ঀ৽ঢ়ৼ৽৻ড়য়৽                      |
| য়ৢয়৾৽ঀ৾৾ৼৢয়ৼ৻ঽ৻৴য়৸৻ৼঢ়৴ড়ৢঽ৻য়ৼ৾ঢ়৽                           |
| ম্ ————————————————————————————————————                           |
| 10. कु.स्ट्रस्स्टळ्याम्स्यास्यास्या                               |
| वनः इयः परः ग्रुयः हे . म्र्राव्यः यम् . श्रुरः                   |
| ন্ৰ্ব-শ্ৰ্ম-ৰেশ-লি(298)   |
| 11. नगदः ह्रवः नगदः गुधः गृहेतारे विग् धे                         |
| <b>⋧</b> ब.क्षेत्र.थर.≨र.घरं ष.रंटः। ब्रे.७र.                     |
| लव.यूर्वयाचीजांचपुर्टर के.यर द्वेर.                               |
| ন্ট্ৰ-না (309)  |
| 12. कैट में ट यदे शेर् मृत्र में य में य में र य                  |
| न्वरागुः श्चेनः श्वापाययः सन्तरः व्याप्तरः                        |
| ग्री-म्ब.क्ब.केट.र्ग्री-मृहव.प्रचेनयाः ग्रेयाः                    |
| ম্য(315)  |
| ` '   |

| 13. ब्रेग ब्रॅल इंबर्डिंग न्युति वर वर्ष   |
|--|
| শ্य ळेटे ' ५ न न ५ - ग्री ' ॲट ' क्री क् ' र्यं म्य  |
| রে <u>র</u> িঅ'অঁব্'অগ্' <b>ক</b> 'ব্ <b>র</b> '  অগ্'বঙ্গুর'ট্রী'   |
| न्भे सळें दः त्यादः विषा (334)   |
| 14. न्नुकाम्बरागुवामने श्रीराम्बरानु   |
| महमासान्दा। मूरायाकवालरावी वदा   |
| ষদ্ধেষ্ঠান্ত, দু, দু, দু, মু, মু, মু, মু, মু, মু, মু, মু, মু, ম  |
| न्ह्यानु मत्व न्यान् न्यान्यान्याः न्यान्याः न्यान्याः व्यान्याः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्याः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः |
| 15. দু'এই নু' ষ'ন্ছ ষ'ন্থ শ কু' ষঠ সূ'   |
| শ্ৰিশ্বান্ধান্দা। শ্ৰাদ্ধান্ত ক্ৰিৰাট্ৰীমান্ত  |
| ळग्न प्रह्नेत्रयंत्र वर्षेत्र स्वास्त्र स्व  |
| নঙ্গ্ৰন্থ (355)  |
| स.त। टॅ.पपु.ध.त.रंबे.त.पोट.क्रेब्या.बे.बक्रुपु.क्षेचया   |
| 1. ৬৮:য়ৢ৴ৼয়৽ঀৼয়৽৴ৼ৽ শ্রামা  |
| ল্পত্র ক্রমে প্রেম্বর বিষ্ণু (362)   |
| 2. मुलाक्ताहाक्यान्वित्रक्ताने स्ट्रा  |
| वंश्रेवायान्ता द्रायदे न्नायान्युरा  |
| व्यक्षंत्रभुग्वभिव्यक्षः(371)  |
| 5 শ্নে বু প্রের স্থান স্তু মার্ভ্র শ্রেম ক্রম ক্রম স্থান ব্র শ্রেম ক্রম ক্রম ক্রম ক্রম ক্রম ক্রম ক্রম ক্র  |
| 山山山公田、殿、瀬山湖下、山山湖村、山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山山  |
| हु स्वते ह्व स्व हे स्व ह्व ह्व ह्व ह्व ह्व ह्व ह्व ह्व ह्व ह  |
|  |

- 2. ख्याय कृषा विष्ण विष्ण या स्वर्ण विष्ण विष्ण

  - स्राम्याम्याम्य स्राम्य स्राम्य
  - 4. बॅद्रायराष्ट्रायदेग्यञ्जाविषायदाश्चितः द्वदासुत्रायदा। श्चेद्दायद्वाय्वेष्य धाद्दा। बॅद्रायदेश्यद्वायद्वायद्वायः सञ्चा ब्वायदेश्यद्वायद्वायः सञ्चा श्वितः। ......(467)

| 교화기 시 | ढ़ॕ.ॴपु. <sup>ॻ</sup> .ब.च <b>र्थ.चेथ्य.त.</b> पत्र् <b>च.जय.चे.</b> |
|-------|--|
|       | ब <b>ଞ</b> ্ឋ-শ্বন্থা  |
|       | 1. यरःश्रेन् नहन् तहेलः <b>रंश</b> न्दे व न्रा                       |
|       | ন্ত্র-মে'ইনম্'ন্(479)  |
|       | 2. सःमवसः र्युन् म्बुन् मी न्यन् दिहेव सः                            |
|       | <b>बर</b> त्वाया चुर व्याची र क्वार र क्वीर क्वाया                   |
|       | वरातुःव्यायान्दा वनदः श्रुः द्वरः                                    |
|       | য়ৢঀॱয়ৢ৻৽ॱৼয়৻ৼ৾৽য়ৢ৾ৼৢ৽য়ৢৼ৽ঢ়                                     |
|       | 3. পৃশ <sup>-</sup> ইন'র'-বৃধ্বনান্দা ই-গ্রীন                        |
|       | न <i>न्</i> रञ्जु" ५८ त.क.च. के.चै बे.च छे थे.४न.                    |
|       | ন্ন <b>ে খ্র</b> নানার্নি শ্লুদানশ্লুবানা (508)                      |
|       | 4. न्ययःङ्बः न्वायुनः ग्रुः तुषः वैरः न् <b>रः</b> ।                 |
|       | য়ৢ৴ৼৣ৸ৼ৽ৢয়ৢ৸য়৸য়৸য়ৼয়ৼয়ৢ৻য়য়৽য়                                |
|       | बबः श्रीनः तम्बनः चले यः सुरः नेदः बैवः श्लुः                        |
|       | मञ्जीवाद्याः (518  |
|       | 5. इ.क्.ब.इ.ट.इ.व्यास.ल.केल.क्य.                                     |
|       | मक्रॅ्रवायान्दा  विन्तु'न्डिवाहियेखीॱ <b>हॅ</b> णः                   |
|       | विमालायदाजुरादार्जना जिल्लामा (535                                   |

1. স্থু-বৃদ্ধান্দশ্য অদ্যীদ্ দ্ব বিশ্বীকাষ্ট্ৰ-বিশ্বৰ ব্ৰাল্কান্দ্ৰ শ্বা

2. বৃষ্ট্রবৃদ্ধি বর্ষর ক্রান্তর বৃদ্ধান ক্রান্তর ক্রান্তর বৃদ্ধান ক্রান্তর বিশ্বন করে বৃদ্ধান ক্রান্তর বিশ্বন করে বিশ

5. दं न् शे शे शे माया मा मा शे न् यह या शेया द्वेदा है पार्च द पहुँ या पार हैं में या शेता पति न् यमा पहुँ या शेर या में शेर यह या शेया थे र स्रोता व्याप पहुँ या शेर यह या शेया थे र

| 7. तू 'ताते न्त्रा स्वाचा पङ्गवा मु 'यह वर्षे व                            |
|--|
| ही-श्रवा-हु-हेद-न्ययय-दु-घेतस-य-दूर-।                                      |
| ने हेलाये किंदानु खेनला हे में दाया खुबा                                   |
| য়ৢয়৽৻য়য়য়৽য় |
| ঈ্শ্(634)  |
| 8. मुलान ह्रिया सङ्गत्र मु न्यू मु न्यू न न्यू न                           |
| র্ম বার্ট্র অপ্রবর্ম নার্টি শ্লুম।(651)                                    |
| 9. বিষাশের স্থান স্থানা(663)   |
| 10. ব্ৰুষ্প্ৰাপ্ত প্ৰীৰ্ দেই ক্ষ্মী ক্ট্ৰু                                 |
| व्यवणः वयरः यः त्वादः द्वाः चुरः क्रूरा (677)                              |
| 11. हूं .पादे.चि.च.श्रु.झें म्. प्रहु. न् श्रुवाया केंद्र                  |
| ゼ・イガイな・セ・美国な・セ・イエ・ガー・カー・   |
| तह्रव.त. वट. विज्ञेत् . र वट. पद्म व. र व.                                 |
| <b>হুবা ঘরি সুঁ</b> বা (693)   |
| 12. दू त्यते ह्व या श्रु ह्वे ह्र त्य हु या श्रुवायते                      |
| धरः श्रेनः रॅलः ८ हेवः न्रः। म्कोरः विनः                                   |
| बद्दः ग्रांता प्रदेः सून् (702)  |
| 13. र ब्रेट रूट हुण चण जिला स हेला हु                                      |
| श्रेर् श्रुंद में विर विष्य पर्दा द  |
| क्ष्याम् केश्वर्यर प्रम्याय प्रम्युत्र मुन                                 |
| <u>ব্না বছুব্'ব্যার্শ্না                                   </u>            |

|        | 14. বৃষ্ মী ব্যাহকা শাব বৃ স্ক্রী বৃ স্ত্রী কু কা                             |
|--------|---|
|        | প্ <sup>হ</sup> ন্  |
| 다.용다   | न्नवःस्वःसः चरः धदेः तुषः धन् ः तुः क्वंबः धदेः                               |
|        | बावरायदे न्ये अळेव क्षेत्र  |
|        | 1. স্থব স্থিত সাম্বাদ্ধ ন্ নহ সম্ভিব নে ন স্থান                               |
|        | ঢ়ৢ <sup>৽</sup> য় <b>ৼ</b> ঀ৾ <sup>৽</sup> ঀ৾৽য়৾৾৽ৢয়ৢৢ৾৾৽৽য়ৼ৾ <i>৲</i> ৽ |
|        | <b>নম্বা</b> (738)  |
|        | 2. हे.रुषःग्रीःबाष्यायदेःने नःन्यं वःन् मे                                    |
|        | <b>ঀঀৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢয়ৢৢৢৢৢৢয়ৢৢৢৢৢৢয়ৢৢৢৢৢয়ৢৢৢৢৢৢ</b>                         |
|        | নমুবা(754)  |
| 저'덕중기' | 비영당·철조!<br>'대화국'대 최종미'원국'국국'! 특원국'  |
|        | 1. न्धुःद्वरःन्यग्रुयःग्रुःयह्नाः उरः।  |
|        | (786)   |
|        | 2. न्यु द्वर देय न्युय द्वेन इं य द्वेत                                       |
|        | अन्यान्ध्रतः महिते धियाने म्या ग्री न्यार                                     |
|        | <b>57</b> (790)   |
|        | <b>ব্</b> ৰম সা   |
|        |   |

#### अंपात्चन कु'स्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रा ग्रीयाता कु'स्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्र

1. यन'श्रेन'स्य'तहेर्न्न'न्न'न्न'केवय'व्य'न्द्रमंस्या हैं लपु मि. वास् माना से पाना में पाना नियतः श्चर् ग्री त्यते कराये वहरा सुना केवा च सताया श्चरा वे ता ग्वाता परेता । **ক্রব্য-দ্রন**া প্রব্যাস্ত্র নের্লন্ত্র ক্রেন্ড ক্রিন্ট্র ক্রেন্ড ক্রিন্ট্র ক্রেন্ড ক্রিন্ট্র ক্রেন্ড **४८.४**०.वै८.पश्चेयतपुर,य.स.वै.च.प्रपुर,केंब.रीय.क्रेप.या. मद्र.क्र्याम्ब्र.न्त्रु.हेद्राञ्च.पद्ग्या श्रुदे वदार्याकान्त्रेया मुद्धार र्राम्य र्रे अर्क्षर केव ये दु अ चुर नर मुम्य भेर। दे या पहेवा वयाम्बयान्द्रावर्षे अत् कृत् ग्री क्षेत्रात्रात्रात्रा स्वार्वर् वर्षा हू 'यदे 'शु' हु ग प र दर्ग न् इर्ग कु 'यद्घेंदे 'यद 'र्यु पेव पदे र द र संगः र्राश्चिरः गुग्यारेया प्रवेदाष्ट्रा देवा गुराश्चिरा से रासे रासे रासे रास प्रवेदा गुरा श्चेन्-न्नर-स्वायं क्ष-वज्ञर-विदा-विदा-विदा-। यन्-न्यान-विद्यायः **ऀ भेषामु अळे यं ह अदे वि अप्याम्य प्रत्य प्रत्य** दह्रेब.खे.इ.ज.इ.चेथा.तर.चेर्**व.थ.चेश्च.**की.ची.ची.च.रंट.चेलेट्य..... हैर षुररा तम् व विमानवाम र्मे अन् नु वर्षे कुर मे भुगल लु वर् त्त्यानः र्यः नुः च्या म्युरः इयः यत्यः त्युरः नः ह्यः श्रुरः श्रुवः अक्रम् **५ मुद**्राय: यतुव: यः व्यास्थावाय: याः श्ची: याः 1714 वर् : भेदः हः याः यदः व्याः क्षाय वर्षावर वीया वर वाया यदे वी व्यान् वी तर्तुवान्तान्ता कुषा क्षुपया .... ब्रेर-व-वृत्रियःस्ट-वृत्र वर्तुः वृत्रेर-व-भव-स्या-ग्रुयः ग्रुयः वर्षः नद्र । द्रितः क्षे.ल्रांच्याचे व्याहे ने हेन् क्षे. वेषायय हे विषा धाया बाव वा हु । . . . . ğм·पर-५वॅ६षाने। हरात्तुः ५८. धेरी छेषापविते वें रेट्या छेपया झॅना-तुःन्द्र-इट्राने द्वे-द्वे : ध्वेन्या खुःयेनया देशः ग्रीयः ह्वा-यः द्दः ज्ब-कॅ-ब्बॅन न्दा के-न्ने-वयानन्व-वन्नेक-ग्री-कॅ-ज्न-न-क्रि-चु**ट**-तरःर्भःर् मेतेः अरतः विषानकुरः दूरः च गिरुअः सदः क्र**ा**नकुरादे र हूरः क्रे-न्ने-न्यॅव-प्रमुव-य-ळे-रेटः (क्रे-न्नेरे-प्रमुव-म्यर-१-मेचया यञ्चतः धरः यर्ते 'मवरः वाषवः रे 'धेवः ) मैलः ग्रुटः वेषवः पशुदेः यर्गे र्.....**ः** यः बर्रायः न्रायक्षाक्षात्याष्ट्रम् तुर्राष्ट्रम् वुवर्षा पर्यंत्रतः र चयः भीया वेषा वेषा प्रत्यः भवयः सः निर्माणः वयः पर्यंत्रः सः नरुषाक्चे प्रति:स्वायान्यवाकु सेन्या से सेन्या प्रति न्याया स्वीत् प्रता arti

देवे के सम् । प्रया में सम् प्रमा स्वा कर न्या स्व प्रमा स्व प्रम

क्ष्यःभूरः यः अक्षः क्ष्यः चाल्यः द्वरः च्याः चाः च्याः चेयः ख्वरः क्ष्यः व क्ष्यः भूरः यः अक्षः क्ष्यः चाल्यः द्वरः च्याः चाः च्याः च्याः ख्याः च्याः ख्याः च्याः च्य

.

न्जे लेग्य ह व्रायक्याहॅरान् यहंन् पर रे त्रव्याह्यया नें विश्वेषा चुरः ५ तुम्" ® वः शॅन्वः न्वायाः मन्यः मञ्जा वः चर्ते दः छेरः। ষ্ট্রি'শ্র'1715 ব্র' নিম্'শ্রেশ'শ্রম' ষ্ট্রুশ'স্কু'র্ব' ইবি' দ্রব' বৃদ্ধা न्ते क्रेन्र र्वे न्त्र क्री स्थापन मन्द्र मुन्य "ने नुस्र तह्य नुस्र बॅद:अ:ळेव:यॅ:व्राह्य:ब्र-व्यःप:न्ध्रद:यहवा:अर्ह्य:पद:बळे:४ॅव:ग्री:···· न्यंत्र यं द्वार्यः गुद्रः स्वारा तत्त्रः त्र्यं न्वं रा पर्वः सूनरा गुरा यस । वरः रे विगायेनया सन्दे पर पहेना ग्रायन है ते दें तर्में का सामित है कि स वि'न्रा क्रेर'क्र्रमधेरेही बेर'म्बर्'देरेक्रर'ऍग्वाराग्रेयास स्देर स. रूर. श्रैव. रूर था प्र. रूप अ. च. च च र. तप्र. क्ष या है। वि. च च पा अर. सुव. *ॹॖॺॱॾॕॺॹॱय़ढ़ऀॱढ़ॆॺ॒ॱॺऻ*ड़ॕॱॾ॓ॸॱ୴य़ॱॾॖ॓ॱढ़ॆॸ॔ॱॺॴख़ॖॺऻख़ॸॱॾ॓ॱय़ढ़॓*ॺॱॻॖॆॺ* त्रेनः तद्यतः नृ ने निश्च स्वायः स्ट्रिन् न्रा स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स वरान्न्यराञ्चाराधरीन्वी यनुव इयराम्यराज्याम् करावराम् तह्नियानवरावराहे न्नाया केरावया इया मुख्या विषाय दे विराम पञ्चला" ७ वे या न्याया म स्वाक्ष्या हु खिता हु या है। या केवा में दे स्मामया ही **३**ॱइंबरकुषःगुःकरःगैःरगैः ५५५ तः इवलः र्लगः में १५५ तः मरः सः लरः परंतरः त्रहुंत्यःश्रमत्यः क्षदः या गु<sup>\*</sup>कता नशुन्तः त्रुतः क्षतः न्या व्यवितः हे । त्रा द्रिते स्थानः 2.हैं र श्रॅच.वथ.तर ग्रंचिय.पुर.। रथ.हैय.ग्रे.इ. दय.चेपार्च. वर.ची.

ॻ (ॡ लदे प्त्र पदे इंग्या वर्ष प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य व्या क्ष्र क्षे क्षे क्षे क्षे व्या क्ष्र व्या क्ष्र क्षे क्ष्र क्षे क्ष्र क्ष्र

②(इ.सं. वर. रेत्व पथन श्रे. य. श्रेच्य. पन श्रेर. कर. भूव. यर्थ. 16)

विन सम्भनसायरी क्रान्तु हिन्दारा सरा

स्वायः स्वयः स्व

बार्चिन्यः मदेः सेरः ब्रेट्यः ग्रीबामसुः मः यहं न्। यह वा न् ग्रीट्यः में हा स केद-मॅदे-दर्दद्र-व्यत्र-पासु-वीद-स्ट-वी-द्र्यद-व्यव-स्ट्र-तु-द्रे-पदे------विवयः वर्षः नृतः । यदः श्चेः श्वेरः वीः नृयं वरः संस्टः योः संवयः वर्षः स्वाः र् अय भिष क.तीबाया झ.क्रुबाया तपुरा च च ता अक्रूप्राचीया पर्टें रे. भी पर्थी पा. न्दः चरुषा " 🕽 झुः दत्यः तुः येवषा " ने : वषः र्वेदः यः केवः यं वै: वग्राषः बर्गलायदे मु र्यं व के पा वेग प्रयुत्र व रार्यं व मि मा इयस प्रतुता । मद्रे.यर.पग्रत.स्ट्राचश्चर.पर। द्रु.यदे.श्च.यदेश्चयर. वरामह्मारेन् लेबरा नेवाहु पर्ने वर्षे न्या स्वीति स त्युत्य बेदः धेव ततुन देदः दरः तह्नवः दहे वः क्रंतः कुतः ग्रीः नतुरः कुदः ৼ্রথান্তর্ ষ্ট্রীব্রন্ন্না ত্রা ক্রান্ত্রা ক্রান্ত্রা ক্রান্ত্রা ক্রান্ত্রা चकु:न्द्र:शुअ:र्रु:संनदे:अ:न्वु*र:*न्**गुद**:ग्रु:बॅल:क्कु:संग्राकंद: अ:दत्यः क्रु-धेव-वेव-प्राप्ताव हे-नेन्-न्-ध्रीव-पन्व-पठवा ववाग्रदा म्रामा केवार रामिया प्रमाल प्राप्ता वी स्रामा म्रामा स्री वा न्या चरुरार्द्रर-दे.चेरर-.....,मूर.अपु.श्रे.अरेथ.२.अक्.र्र्थ.थयाः ४क्षथा. लु.च.च हरः चरे.च गायः व्यवः क्षेत्रः ये च याः याः " श्रुवः च ये ः सूरः वि सर्वे:व्रायार्नेट्यं सुरे:क्रुं रात्वियायेर् धेवा यक्रेंग्र्यवा स्वया स्वयः वहित याहित। वयता ठत् यहिवापायहं वाहितावी है। या नर मं.कै.पी.ल.केर.श्रयः वृपाविषया लूटा विरामा वृद्दार्या विषया है र्यटा बहुबु: पर्व कु:रूर इर या.हेर. समय. ठर्. विमाधयायर या.वा.कु वा.कु.

① (न्यन्त्यकाक्ने याक्ष्र् किते व्याच्या अ4-35)

नष्ट्रवः यः न् रः वैदः कुषाः यः **वैषाः** तस्तु रः वेषः गवदः। "धेवेषः गवयः नः " ल्याया. मूट. या. वट. वुया. ब्रा. स्वाया यट वया या. या. नटा वळ्या. ह्या. ह्या. **म.क्र्याजिंदा जुर्बायात्वीयार्टातक्ष्रयाखिषु वृत्रु। स्रालटालटा बेट्टा, 'बटा,** অর্হ্ বরুশ উহ'। श्र. हो . हे र. ञ्च. पर्छे . तप्र. र वर . ह्ये बाया ही . क्र्या से . मुलासुरातस्वापिते त्युपाञ्चेरामन्यारे देवे वार्षे द्यापदे वार्यस्य मनदः कुः में मा सुः रेवः में रेके व्यामें मा बरायह्य मा महि सुः दहे व महि न में मक्केब्रची र्क्स सरदे या परि यह न हैं ना ने सा हन त्राँ ना क्षान्त रास्त मते अकेंद्र म्वरा शु शुरायते द्रदार्श्वर मी मुलायकं वा यदा द्वा परा । .... बद्रम्याद्रयात्रम् हुरामदे ह्याद्रिब्याह्रयाम्यान् गामामदेयाते। बक्षव पर र न ने र नर है न कूरा है या है या निवास मानि न के व के पाल क्षा मानि क्षा के व **ज़ॖॱज़**ढ़ॕ॔॔॔॔॔ॺॱॸ॔॔॔ॸॱख़ॾ॔॔ॸॱय़ॱॸ॔ॸॱऻ॔॔॔॔ॿॱऄॕॸॱऄॕॖॿॱॻऀॖॱॸ॔॔ॸ॔ॱॿढ़ऄॸॱॿॖॖॱ बदः स्वाय बादया स्वर्भायः यह या विष्टा निष्टा निष्या स्वर्भा में वर्भा भूवा वर्भा भूवा वर्भा भूवा वर्भा भूवा व **園女、女子、女子、女長女、女・女子女」** 

① (र्यण्प्याक्षे का क्ष्र्रः का मृण्यरण 36-37)

<sup>(</sup>न्यन्। प्रवाक्षः क्षेत्रः कः स्नाज्ञ हराः ५२)

म्यायानाः भेरः मूर्री स्वायाः क्रिरः न्यायाः स्वायाः स्वयः स्वय

কুল্মন 1719 মন্ কাৰ্মন শ্ৰেমন ব্ৰহ্মন শ্ৰেমন বিদ্যান ন ন কুল্মন কুল্মন

① (ব্যল্ ব্যম ৡ'ম ৡব্.ছ.৸ল গ্রহ্ম.হ2)

<sup>(</sup>र्यन्त्रमध्य क्षेत्रक क्ष्र्रकः व्राम्यः चर्तिः 53)

म्ब्रिंग द्रा पर्या पर्या पर्वे प्रस्त क्षा स्वाय पर्वा प्राय स्वाय प्राय स्वाय प्राय स्वाय स्वय स्वाय नवे**वः**सरः भ्रेंबः वेदः। श्रुः तत्वा गुः छदः दरः नेः ने नदेः यः वयः सरः हेदः क्रि.क्रम्याययान्य्याने विमयान्या हे.श्राययायन्ति विमाळे वार्ये भूमतः क्षः ह्रा-्ग्र-सं श्रेन्व-देरामा महता में दा अकेव से दे सुदे ····· वाक्षवायायहै वावदा दे हियासदा वेदाया वाक्षवायायहै वावदानया सर-वर्षामुका १५५ - छेव-धे *- न्राच* ठरायव सुया ने वर्षा सर-वर्षा है तर्न मदे इन वरा नहेन हे इन दिन प्राप्त निराधन में निरा सराय क्रिन्न्यल्या न्याया महाराष्ट्रा में दाया के व संदे निमाय **ध**र्मायराष्ट्रित् क्ष्रायायल्या रहा स्वास्त्राया स्वास्त्राय स्वास्त्राया स्वास्त्राया स्वास्त्राया स्वास्त्राया हे त्री विराव विषय शुरवार्षण सर हेर ग्रेश खना स्याविर मविषय भेट. यूप्ताह. यूष्याय. द्विया खंटरा श्वी. पविषा वट. इतु. प्रीट. श्चिरः वितः शुका सरः अहं र मा अर छेवा में खिनवा र र क्षेत्रा सर क्रुकाने न्युका झन्छन ये वायमा नैवासदे न्याय मे वाधवासदे हिया या देन्-लन्-जुदै-न्व-तु-न्वन्-ल-व्ज-न-त्नि-न्न्त-क्र-क्र-जुन्-न्न् हे तरे परा पहन पान्र तेयरा ठन की पान न ने सुन्या पान्ने रया नया न् च त्राः में दः अः के वः यः प्यदः शुः न रा न् व व न् दः के तर् न् नरा प्यनः यः ः र्कर में र्रः | के र्मन बेर् ग्री के व हेव हेव ले कव न कता प्टर्ने श्रु.स्या विकास्तर स्था के नित्त विकास स्था के त्या क

श्ची स्वारा स्वरा स्वारा स्वर

Ф(र्यनाके क्रूर्क मेना गर्य 55)

र्म्ब.त.रट.र्ट.चयु.य.वयाह्र.ययाचनया श्रु.पर्वेश.वयाग्रट. ञ्चनातः वर्षाः येनतः पदे : ज्ञः केवः तु : यः नृदः च रुत्रः न्वे : यतु वः स्वनातः पताः … युर ब्रुट्य.ग्री.पथी.प पर्वेर। इ.५ई.तथ.ग्रेट. वि.वंट.तु.क्रू.थट. र्वसन्तरामशुकाने महीबास्ट्रानु यहाया स्त्रन् सहिन् युकार्यमाहुन จั**ื่ยสพาธ**รากราฐิราชิารุยผาผาฐีรายลำสิริธราฐ ฐาผลิาฐาส <u> ট্রি-'ব্রি-'ব্রেম'শৃর্থনে ইকাট্র-'ব্রিন্ম, র বিশ্বর-দূর্থনে ট্রি-'</u> विचयः सर् त्यूर् स्र वहर् र्यूषः भेरः। वळः रूवः कुषः सुर् ह्या ग्रैकान् इंकान्य है वे. तर् बी. कुव. त्र. वा. कुव. त्र. वा. वि. वा. त्र. वी. वी. वा. त्र. वी. वी. व शुर्-लर-कु-श्र्वाय लदर-दल्ल स्वाय-शु-र्वो नदे-अह्र क्रूं-वर-स्वाय-मवर्रन्द्रियः वेत्रः स्वावर्राः दे स्वस्यः अञ्चः स्वर् ग्रीः न्यं वरायनाः इस्रायायतराष्ट्रायदे न्यायाय ने व्याप्तरा वृश्येराष्ट्री प्रमुन मान्दा ब्राम्यते क्रमार्थिन ग्रीमार्थी मान्या मान्या विष्या स्तर क्षॅं व्याप्तवर्र्म्याः र्ह्यं र्यम्य तहवार् घुर्याः में राया केवार्येते म्योरः **য়ৢ**ॱঢ়য়ঀ৾৽৻ঀৼ৽৻ৼয়৽ৼৼৼ৻ৠৢ৾৾ঀৼৢঢ়৾ৼয়৾৽ঢ়য়৾৽ঢ়য়৽ৠয়ৼ৽৽৽৽ र्भ-कृतिः सः मं के प्रविवातुः श्चें गला धरा अर्दा प्रता करा वाद गता परिता । न्ययायायम्ना ने न्याहे न्या केन् न्या गुरा सुना महता है न्या **८८.तर.** भेष य.पहत्र. रंतप.श्रेट. त्रुप. प्रत्येत. ह्र्येष. ह्येष. ह्येष. ह्येष. ह्येष. रु.र्र.बुर.कुषास.र्रा कु.स्र.क्र.चश्चा.वीषायद्वरातप्रातस्य. तुतै:र्न्न के त्रे त्र व्याप्त कर कर कर के के दिया के त्र के कि के कि

वयागुर पहन त्र्ति त्यव परे श्वा कर स्वा प्रवाह वर्ष्य र द्वा प्रवा षक्र्य. चेरीय पा. चेर्याता पर्टे पया श्र्याया थि . थुटा । यक्ष. रूव . ग्रेपा ग्री ट. इयस् वयाग्रदा मूदायाक्षेवास्त्राच्यावास्तरायास्त्रीत्र द्वातास्याक्षे मञ्जूषा "ा वेया ग्रायामान्मा श्राया रमा ह्या सम् ह्या सम् ह्या सम् व्ययः सदः मः मृतः व्ययः शः न्द्रयः श्रमः विः स्त्राः तत्यः सम् द्राः न्यः न्द्रयः र्वस्त्र द्वर्ति रे. इस्ययात्म क्र. र्यट्य स्त्र विद् सन्देवः इत्राच्च व्यायवे छ्या वे सुवे वे नान्य वे निक्र मं तर्रः म्वयानक्ष्रायह्यान् इत्याम् दा या केव्यं या वी हेत् प्रते ..... धुणवात्तुवानहवार्यवान्ने प्रतानु प्रताने प्रताने प्रवासी विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास र्ट.श्रीबा.श्री. वाचातात्वाचीय. तपु. चाचात्वाचात्वाचात्वा वाचेत्वाता में वाचात्वा वैद्रात्में नात्रेवायात्रात्में विद्यान् (भ्रम्याने राह्णे द्या **イヨヒ4.聖.ヵ雲.**占4.知、出て4.日4.四年.) は4.日4.日 मूर्-मधियाग्री-सु-स्-र-र-। चेथ्र-श्र-प्रची-र्ट-ति-वर्थ-प्रथ श्चरम्द्रे श्चेम्करन्य अस्तरम् अस्तरम् अस्तरम् भीरम् नर्माम् द्राप्ति नम्या नर्माम्या हेरावर्मा नाम्यया ठरायव संदे.वें बंबा चड़्या परेंटे. तर विया है. परा रंबा संबंधा श्रेंट चर वेंटे. वी 華とは、夏し、ち、日、日本、山か、日初、日初、日初、日、一 मैज.घंद्र.विषय. ू 🛈 😩 (र्मण हे हूर्क मृग्जर्य 63, 66)

तियाय ता. ग्रीया. श्रीटा. क्षेता पढ़िया. श्रीटा मा इयाया ता हेया तार पह वाया पहिंदी. न्द म्बेर्यान् रून् व्य हे गुवायायह्वायदायया ह्यायान्द्र वेदा हेरा ন্ম-ট্রাস্থা স্থ্য-বৃদাল্ভব-মাক্র-ন্ম-দূ-মের দ্রা-মাব-র্মম গ্রীকা *ब्रुच*ॱङ्घेन्यःवयःनङ्गवःपदेःश्रे**टःयः** बद्यरःन्त्यः वययः ठन्ःनुः कुयः परः च्याभेरा श्रुयार्त्रुयार्द्राव्यास्याध्याव्याव्याव्याव्या बह्र-याधेवाया राक्षा हिन् क्षेत्रामार्वेव तुरावता स्रामुवा बहुर दे रॅॅंब्र:सं'वैय:य:र्भुर् यवा ब्रह्मदःर्या:धेर्:क्रेवा:बु:दहेंब्र:यवा केर्: रु.पद्मन्यत्महूर् कु.पम्यत्सिर्द्या यहर्य्यावयान्यवर्यया <u>ब्रिन् लाम झुर्य मा ज्ञुरा भेदा दर्शे मा लहे दा प्रदे मू स्पर्द ज्ञु य हुया मा दे दा । । ।</u> नगुर-न-धेव धराष्ट्रेन् ग्रैयायम्याक्त्र्याग्री-नङ्गवाधागुवायाञ्चेयावयाः..... नन्न मैं कन हो न ही जिल्ला पर्ने नहार न महान ही न ला ने व हैं। ववः हवः न्रः। न इवः यः यः वाष्येयः परः तप् न देः श्चेरः न्मुर्स्यार्म्नु रादी ह्वारा महिकारादी केवान् मे प्रतादे वारादी महिता । ग्री सुर। वर्षा म्या. क्रेब. झ. झ. च्या १८०१ अर्दर अंचिया श्रुर । यह रा कु त्यन्य ग्रे हूं व स्वा विनय है तेर संग्न र स्वरा या सह र में या संग्रा গ্রী'শ্র্মমান্ত্রা ইন্রের্মের্মান্ত্রান্ত্রের্মান্তর্মস্কুমা परःश्वलः इंदः ह्व देव देव व्या श्वलः स्टः क्षेत्रः केतः व्या व्यवः व्या व्यवः स्टः क्षेत्रः व्यवः व्यवः व्यवः <sup>ড়ेब</sup>ॱबयःगॱहे*ॱवेन्*ॱग्रेॱछुग्-हु-५तुत्पःचःग्वरःचनःशुरुः५हुन्*न्*रःचठरा हे.घबेया रे.पस्तायाययः इराह्यासराचीयाचद्द्याची प्राप्ता स्ट्राह्या चीया

में पड़ियान ने कि तह क्ष्मा क्षेत्र मा महाया में मा स्वार हिया में क्ष्मा महिता में क्ष्मा महिता महित

स्वायः तर्वयः स्वाः त्राः व्ययः स्वायः स्वायः स्वायः त्र्यः स्वायः त्र्यः स्वायः त्र्यः स्वायः त्र्यः स्वायः स्वयः स्वय

① (र्यम्के के इंट्रक म्याग्रहत 66)

दश्चिष्य पर्दः चयापदेः श्रेटः वया स्नि हेषा हेर् या न सुयापत्य हु। व वयता ठन् दं वहं र प्रदे ग्रह्मा सुर्थ । .....रे व्याहं देर वेपया हे वहं रू ळव-वन-वरास्व-तु-चल्नाया सर-ळेव-य-छेर-वेनरापरा मला नेन न सन् न बका क्षें नवा ग्रीया बादें वा मनः बाद्वी ना यम् वा न में वं बक्रमान्त्र्यान्त्रमान्त्राच्यान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान् र्षा चु अया न दे या सु : न विवा क्षुंदान : र्दा क्षुंवा या विवा क्षुंदान : र्षे वरे वर वर व के में हैं वर् र र में वर वे वर व मेबेयापचातात्रास्त राष्ट्र झात्यीरा र्टा धिम्याया बेया मेव राष्ट्र ..... म्बुरःब्रेरःदरःहुःबह्द् देःसरःक्षेत्रःयः ध्रैरःविष्यः ......" ७ देषः .... म्रायाना स्मेरातृ त्यादी त्रा वा पत्ता के वा में में या दिन त्वा या नहा 其一·原仁如·创·多口如·自己·日勤十·口及·洪十·刘司曰·其四·日子·曰·是·常子······ म्यायान स्वयार्भ्यार्भ्यात्रायायायाया

#### 2. हर्गन्यु 'न्यग्'न्स्र्पं प्रयाप्त

न्त्र सम्बद्ध म्हिन वर्षा निष्ठेषा शु निश्च र ने विमाधन महेवा र्यं व देग्याप्य हिन् नेया गुरा व्यया सवा वे तर् ना शुरा वया हव नार बनरः र्रें र निहर केर निर बदे र बन र सुर व न विन्य पर ने नव ड .... कुतैः तमन् महं व हैं हैं नव विषयं। ज्येन वि नवे नवे बुद्राचारम्हित्यायया "म्द्राय यद्यार्च क्षेत्र क्षा द्यायायव्देत्र परि तहेग्य वेया या पर्वे न् पर ह व कि ये वि वि हे न् ना हिरे यह श्चियार्च्यार्च्याः वयाः चल्दाः चीः देव : छव : मुव : कयाः च इयः श्चु : कया सः छे : त्वतः विवा न्रा इति त्वव्यवारा सं जो मृ नः राजवारा वर हेव वि प्र विष्ठेराने वारवारेया प्रकृत् धेराव्य वित् स्रवास्त्र स्य वित् स्वरास्त्र स्व मयान्य क्रूर ग्रीय गुर वर दु व व्यूव प्रदर हूव व व्य मनवया है न गुर दैयः महरः मरः महेवः गुरः वरः दुः बेरः मधः मध्यमः रेगवः रे मिहे वः इवः वर अर् लया ने हु रेन लया छुर रे शुनेया अरे थे. १ निये रा श्रवरा श्रर थरःदरम्यारायानेव सं केते भु न्रानेव केव कुव करामहराम् । भुःकलाह्व अराधकात्विरामा ह्याया देराम्य माधिरामा हु हैतास्या " मन् रहेव में र या अहर प्यंत वया न् ते किर श्व नु न ता नव ते ते हैं से . . र्दः चग्रः ह्रॅव हे . ययः दिवरः दु . पङ्गे . चत्वा पङ्ग्या 🛈 वेवा व वयः मः ने निवेद शेर्नित् हैं ग्रायः महेन् त्या ग्रामः । सं क्षेत्र नर्मा इंग्रंमविषातु नव्यवास्त्रम्या "ने नवानुषा शे नेरा न न न से स्वारी चे किर में मुल पिय केव में विष क्षेत्राय मदी द्वर में के त्र के तर कर में

① (र्ग्र प्रति प्रते के रमस्तु वुर प्रमहर्प इत वर्ग महत्य वे गहन वर्गु ...

¥ल अं∙लुग्ब·धर·दे्षःऍब·25—26)

रलवाया वातरलायाह्नाम्रायदे ह्वालाने न्या वेला वि दि दे ताला न्दा मुल में 'न्दा महेदामहेकानी के मका दे हिन् के मानक्षार र्वसः भेदः वी ६ वा स्वरः च्चेत् स्या वा देवा से न्या स्वरं वा स्वर बहरः हुण यः भेदः यथा दः दीः दोवदः सदः हुनः यदेः दुनः सः प्रवास क्ष्रयात्रा धुत्याये केटात्रयाक्ष्रवायायाने द्वापी ख्रुवाया प्रज्ञाटा प्रते अत्-तुः वितः नृष्यमः वर्षुः श्रमाः मृष्ठेषः ग्रीः ग्रम्यः न्दः स्वः पः न्दः स्वयः " \* ठैवा तु मे वेवला पदे सु वेवाया पहें वा पर शुर हैं। " 🗓 वे वा वा वा पर । बिट। बेटवार्नेराञ्चवाश्चिकामम्बामान्यान्ता न्यवादिकाळ्या ब्रेर-व् उव-ब्रीय-ग्री-वह ग प-लुकाधर-वानवकायकान्द्रकाशु-व क्रुन्-या र ह्याः व्याप्त व्याप्त द्वारा स्वर विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विषय विष्य विष हे*द*ॱट्वेटॱकॅटॱय:रट्राय:पर्टेय:ग्रीद:ऍर्प:रे्प्ययपार्यः यळेंद्र हैं।

क्षेर.क्षेपया,र्ट. वार्च. क्षा. कंष्र. ता प्रचेष, तार. या यक्ष्या पा = ব্'ঞা मूर. य. पहवा बाजू व शुदु. गंडी बाया थी. धर. च. रंटा। अब्रू. वि. खंर. में था. बॅंदे त्य्य अद्भवता ग्री कुषा में कुषा देवावा द्वा वा वी वा कुषा मदी महत्व प ने द मॅं के अर्दर्यत्तर स्थयर ग्रेयर ज्ञान के वर्ष पर के प्रमान के प्रम **ढेदः यं '**बरम्बास्य स्यूरानः महिंदा श्रेतः श्राचा ने दे श्रेतः श्रुतः है । वि वि **यदः**त्वारे विषाची परःतु पर्या सहिर हे स्वा त्या दि है त विषा तु पर्या स धे**लावलाह्व** ग्रान्यते न्स्र है ग्रायत्रे न् ग्रायार् लाचन ग्रा क्षेत्रायाः नेते राज्यन्यः हे विषया या विषा विष्ये हे अवातु न वा पठता क्षेताः षाचम्री , उद्याचलकाचाकेर द्वास्त्र विषय व्यत् वेथा ग्रेथा गेथा प्रदेश विष्य **इट.र्. व.** पश्चे.पवेब. लूट.च.चेश.भेटा तील.र्.पु.शु. झंबय.ज.पट श. द्धितःग्री स्वयं त्या श्री दं अवस् व्हितः व्ययः हिषः विरायः त्यः त्या । त्यः श्रीवः .... क्रि.मुन पर्वेचयानियाने सबयानं वालास्यान्यान्ता रेश रे. व्या वाह्यान्यायतान्यं वाद्यमान्यान्वेनाः इत्याद्यात्रे राष्ट्रियाः मक्रिन्ने क्षेत्र म्लान्य मास्या स्राम्य मास्य म चरुन्। पदे चे ब्राया के ता बादि के प्रतास न्गुवा। ने न्व कं न् न् न्व व्यावार्थे क्यू न व्याप्य व्या देनेब्द्वंबर्भेषाभित्। बददारेबर्ब्यंत्राद्यम्। ख्यातुः ख्यावाने प्यवान्मेंबः **इ.ज्-** क्षेत्रक. ह. तथा ह तु. झु च. क्षेट. स्व. क्षेत्र. स्व. क्षेत्र. ह्या. क्षेत्र. ह्या. क्षेत्र. ह्या. क्षेत्र. **ब्रैयःग**वरः क्षेःव्ययःग्रयः क्षःय**ठवः चेरःयः क्षेरःग**शुब्रःष्ठियः तुः ४ रहः ः ब्रम्बराक्षावर छेव पर छी ने निर की न्या यह रहा था

① (高·万円下) 青河和、円美丁、六円、芒和、356)

4

2

दे वराक्षेरा में राय में न्य मान्स्रा में न्यु राय है नाय है नाय है नाय है शु अद्व रेता क्रें र नशु अ श्री न हैं र निर हिन धरे न सुर है नहा है नहा है। नहे न'हे 'कॅ 'हें - दिला हु 'दर्डर। कॅ 'हे 'नवा नहत वर दर दवा दर रवा मते.र्धर.क्ष्मयार्टा क्षेय झ.ह्रर.र्ये व रच.च ह्य. वर. परे.र्धर. मिन क्रिन्न्व ग्री न्सुर मठका ग्रद क्रिं केर पहें समा दे दियानर ळेवः पर्यः विनवः ग्रवः स्वा-द्वरः व्यं वः हवः चे रः नवः यह यः देशः द्युरः विन वस्वलः नृत्रेमः नृतः । हुतः तर्भ मः लंग्वा चेतः यन वहेवः त् गः वरः यरः मूलान मैं राष्ट्रा तथा तपुरम् द्वारा क्षेत्रा क्षेत्रा तरा है। तथा पश्चे मेथा मेह्र श्चिमायात्री क्षेत्र "व्यापाय द्वारा स्वापाय स्वापाय श्विषा **2.**ぬ々た.gた.g. க்வ. など.a. るん. 点とないう. 美. 女女. रैगावा त्यवा हुर परि हु । वं ने वा बेरा हु वा श्रें ना नरा सवा है र ना नेवा पत्रतः न्दः पत्रुदः पः अर्दे रः वः गृब्वः पदिः त्रतः स्वः दह्यः पश्चः पः पवः " कर् ग्री न् मु प्रियाम्यर प्र नु व्ययाम् देवा है त्यर वि देव द्या है न् देव 

**बॅ८**ॱअप्पर्वार्थं केद्रार्थेकाका केद्रार्थे दे:हुलाग्री 'ग्रम्का क्रेट्र'न्धुटावी स्रेत् <u>के.पर.च वंशावयार्ज्या हे. २व. हव. पर. पंतु. क्रु वंशावर ह्या तर. कथाया.</u> नन्मारम ग्रुटाने ते हेरा शु र वे ते हिन शे त हाटा माया हे हिट या या या या <u> न्याने ते द्धं ता श्रे ने रा परा अया धरा हॅ या वा म्या मे वा से ता से वा से ता से वा से ता से वा से ता से वा</u> मते-न्सुर-मी-ळॅम्बा-अरम्बानिक क्र-मठन् व-भी-अहिम्बा-त्या वेवाचु-म अ.४व्ययः संचयः तः वाद्यः तः न्दः न्द्रः विद्यः विद्याः विद्या **देल: हवा में 'के 'रवा हु 'वञ्च**न्या" कि वा न्यायाया ह्रेस देवें सम्राह्म वा **बद्भार म्याय वर्षा वर्षा या या वर्षा कर्**षी प्रवर हिंद्या येंद्रय सुर्वा सुर्वा प्रवर्ण सुर्वा सुर्वा स्वर्ण सु भूषार्तिरःक्षेत्रयाग्रियामञ्चरः वयाचात्रः ह्रदः वद्धान् र्वामी छे । सूरः **. .** न्रःशु र्**डन्ःसवः**श्चे र्ह्नरः ठवःशु लः यहे लः सरः ग्रुलः वर्षः यदे तह न्या लः सः त्र्र्न्याच्चरा देवला संक्षिप्या स्कृत्वे के देवा से के हवा न्या चैत **न्द्र**द्रद्याची देन्या द्यान्ध्रा पठ्या गृह्य स्ट्रास्त्र सुर्वे ता बिद्रा वेदायञ्च गर्वेषा:सदायदे स्रवायः वयाः कदावीः हिंदान्यं वादाययः *ईट्य.*त. में प्राप्तित होता होता है देन में प्राप्तित होता है प्राप्तित है प्राप्तित है प्राप्तित है प्राप्तित है प्र इवयः बर्षः नृथः द्वे वयः शुः द्वे वर्षे । व्वे तः यह् नः धः वरः या या । व्ये । व्ये । वः न्ता अर्विन् र्वेन्यान्वर्ट्स मृत्रेन् र्वेन् र्वेन् विन्यन न्स् ट्रह्मया कमला केना मुन्न ने ना न्या भरता ही वाद दा के न्या मा हार मुन्न ना नि वयार्थराञ्चनका हवान्यारायदेः नवना न्युका नुकेना नुसारा नदायः विषाययाञ्चर्याञ्चेताञ्चेयाप्रवायक अवन्त्रवाय अवन्त्र अवन्त्र अवन्त्र वा अवन्तर वा अवन्तर वा अवन्तर वा अवन्तर व सर्द्रलामः विनान्तराव व्याप्याया विनानिता विनानित विनानिता विनानिता विनानिता विनानिता विनानिता विनानिता विनानिता विनानित

① (â、天口下、黄河勺、口莨丁、青口、芒勺、379)

तुराने र्यात् क्रिंग्वं प्राप्त विराह्न प्राप्त प्राप

साम्ब्यायम्य श्रा सम्बद्धायम्य श्रा सम्बद्धायम्य श्रा सम्बद्धायम्य श्रा स्वास्त्रायम्य श्रा स्वास्त्रायम्य स्वास्त्रायम्यस्य स्वास्त्रम्य स्व

स्राच्याम् स्राच्याम् व्यक्ष्याम क्राम्याम् स्राच्याम क्राम्याम् स्राच्याम क्राम्याम् स्राच्याम क्राम्याम् स्राच्याम क्राम्याम स्राच्याम स्राच्या

ष्ट्र-अळवा ह्वेत-रगर ग्रीताय त्रात्वत या क्षे.येर कुरवा हे .र वा प्यात्वा ने नवा विरा श्रु:कुन:हु:क्रु:इर:वरादररायदे उर:हुव:क्रेव:य: तहेन:हेव: श्चिरः नदेः के र पॅ वरक्षे पुराविका ग्रीका झ दिरावा प्रस्थान ग्रीटर वा मेरा स्वरे भ्रव-छव-छ-५-५-५। वि.भ्रवाछ-छव-स्वाय-५८-। नम्भव-पदी-वाक्त्य-चेन्-बुदु:गृव-दु:र्ह्चण-बु| नगद-दश्च-रृ:ह्व:बा हैर:गैर:गवय: ॻॖऀॱॿॖ<sub>ॺॱ</sub>ॺॕऄॱ(ॲ**ढ़**ॱॸॸॺॱ) ॴॗड़ॸॱॿॗॸॱढ़ॺॱढ़ॎॱॕढ़ॱॹॗॸॱख़ॸॱॸॸॱऻॗ ॶॸॱ ळ.रं यद. दूर. थी वषु. ह. के.रं यद. में. वे. य हे थे. पहुंच. क्रयाग्री मुलायं दे महित कुराके तु रामदे के कितासर हैं पवर पहेंद वहिंवा हु.सर.र्वाय.स्व.खर.हे.वे.हे.वरा छर.हे.वे.खर. वि छेर.हे.वे.इ.यक्ष झॅ.व् ही छेर.चव दे केटा केट. इंट. वर्षःह। अर.हे.इ.इ.वर.वे.यथायह्यय वेर.धेतया अर.हे. वै. म्रें म्यु र्वतः स्व न्याः विला स्व हरः स्व ही र्वेः ष्रम्यातः है वर स्वाय मैल र्म्याय भेर यो ला छव से है । ये त्या है । यर स्वर यः स्थलः भेदः चहेत् कण्य यः तुः अः नदः। वहवः न् छ दलः मेदः वाकेवः म्रु. लंदा तथा पहुंचे तथा थि मी श्री श्री क्षा क्षा क्षा क्षा मान न्यादः स्व हुः दर्भा न्या केन्या न हु स्व हु ॅब्सःर्सम्बर हे क्रेंन प्रत्य स्वरा शे के निवास के निवास के निवास के निवास के निवास के निवास के कि ब्रें केव में न्याया स्वार ह्या हिन्स विकास किव हिना न्याया स्वास्यान्यान्यतान्तिः श्रीतार्यान्यान्ते । द्वारान्त्री वास्यान्ति । स्वास्यान्ति । स्वास्यानि । स्वास्या न्में त्र्व त्र्त्रायते ळें न्या ग्रीया मृत्या मुला सक्वा के ने ना न र्मन्यायि अर्केन् स्यान्दार्म्या स्रिन्धे न्वन् स्राम्या स्रिन्धा स्रिन्धा स्रिन्धा स्रिन्धा स्रिन्धा स्रिन्धा नलवा की ला की हिन या करा नु न्दरान नदा। मृत्वा धरा का का का का का तार्थ्याय राष्ट्र भ्री. म. संस्था भी विराधा तार्था तार्थ विष्या में स्थान विषय में विषय विषय विषय विषय विषय विषय दत्र-र्मेलाची चे चनारु साम्रवासरार्मेनायार्मा कृ.ग्रेथ.भूर.। मलास्याकुः दिन द्वार द्वार द्वार विवास स्वार स्व ध्रं दे र्राया स्थापना न्नि न्दःन्तः ग्रे हे विष श्रे तर् नि तु स्य न्दः स्व स्य स्य स्व स्य स्व स्य स्व स्य स्व स्य स्व स्य स्व स्य कुै. यं. सं. छ्वं वेथा तथ प्रटाप्य प्रति विविधानी अक्टर तथ प्रति वर्षे रामा स्थान दङ्गर पर्या देंर तक्षेत्र की किंतरें ना संराद नेट पा संन्या कुला पा गुत कु "" म्हिन्यायते विदः ने स्वा ह्वा ग्री र्मायाय है तही नर हिन परे नहीं .... নदेॱॐ न्रार्ट्या क्राय्य यथा शुवाषे । হাদ । बै। ह्या क्रायुः हुँ दाया दा क्राया । नते नक्ष्र शुर केव ये दिन स्व न्यार ये प्यत् केते विष हु नक्ष्य हे ... न् गुरापदे म् न गुरा रे ताय न् र पर करा सर्वा पर्वे दे त स्व मुनायदे " न्रः ळ वः श्वः हे : न्नः यः वेदः ग्रीः श्वनः मुः स्वाः ने : हे वः वर्षे वः ग्रीः श्वेनवारः । सरायग्रीना सदे शिरान मृत्र निर्मा स्था ने निर्मा ने स्था में स्था में स्था में स्था में स्था में स्था में स्था मः यहेना हेन प्रमार धुना नेवा द्वेन ग्रेवा क्राया प्रमान वा मुल मं :शूर्यात्रक्ष :श्रुवा संदे : सं : श्रुवा दि क : म हे साम दे म न ला से र : .... [स्ट्र में देव अता ग्री कें त्या देवा स्ट्र स्ट्रें म्या है। हे में र याव देय **ढेंबरा के द**ेहरायदे व्हार्य हो यह गरा के राज्य राष्ट्र वा प्रदेश गरे राज्य स्थान के या प्रदेश गरे राज्य स्थान के स ୢୠୄୠ୕୲୷୶**୵**୕୶ୡ୕ୣୣୡ୷୷୷ୣଌ୶୲୷୶୲ୢଌ୕ୄ୶୷ୢୄୠ୕୳ଵୄ**୵୕୷୷ୢ** 

न्रात्यमुरापदे हेरात्वात्राकेषाची पद्वास्य परावने र प सर्दि । न्य्न स्नाया शुर्दर हुव केव सं न हुव ग्रेश न है व न से र अदे से र अदे से र न इसकार्टा ई.शूर्ः वा.इ.पा.स्.मुलार्या नहेवाल्याया हुटार्विरः चम्दादश्चराष्ट्राञ्चा वियावायञ्चः ईवालवायः ग्रीन्द्वान्त्रयः क्रुन् इवल न्दा रूप के केन में निवा वी केल ही हो त्या निवर नदी हूल पर्वः भुः इयः या अंगः न्यं वः न्यो । नर्वे । यदे । बर्हरा श्वीः महेरः रहा कें ला लेंगला लेरा श्वाः रहा मही स्वीर स्वीर केंगला न्द्रित र तार्मा नेयापदे न्यूर्या च्या सुद्र युव हि न्यापर है ..... इत्याधिव खन्य न्दा अधुव परी न्नाय क्रंब भेव मु क्र क्र वा परी विन तह्यान् चृत्राम् दायाळ्या क्षेत्रा के वा ये के वा ये ता हे न्ता या हे न् । मेरे ना के वा के वा वि हि.कुबे.तूर.चेवयातरं वेयर.पे.चंद्र.तपु. म्यापरीका के.इय. **नम्पर्भः श्रेन् द्वर्गन्दा न्द्रयश्चर** श्वर्म वरुषः ग्वरः वरस्यः है। पद्मवायान्द्रायाँ पदी देवातु विषयाय दाय श्रीयाया कु सह दी य रा बेस.मद. बेर्य. सेर. पर्यं स्वर. वर्ष. वर्ष. वर्ष. वर्ष. वर्ष. वर्ष. वर्ष. न्दः। जुलः जुन् न्दं व र्यं : इवलः ग्री ल ग्रुदः ते ग्लः दत्तः न्ददलः अर्वे : नःस्या ........ 🗇 वे यः नययः ५५ न

स्न नैता क्षेत्र सं न्या मन्त्र प्रता के के सं न्या मन्त्र से न्या के व्या क्या के व्या क्या के व्या के व्या

भ्रम्यान् र्वं यादार्वे दाया केदार्य दे यात्राया यदाया प्रति कदा कुदाः । इस्र कुरा के खेर के से के स्वा के स्वा कर स्वा ळॅंबाखाडुवाब्रामानाविन्नुः क्ष्न् नेरान्वराळाव बुरावदेः न्येवः ... ... रेगर्याय विमानिक्या रहा। क्रिया झे रहेन स्वया साम्या स्वरास्तर हिन महासी : য়ৢॱॸऀॺऻॺॱॺॕॺऻॺॱॺॱ**ॸॺढ़ॱऻॖॎ॓ॺॺॱॺॱॕॸॱॸढ़ऀॱढ़ॿॕ**ॱढ़ख़ॖ॔ॺऻॺॱऄॸॱऄ॒ॱऄॗॸ॔ॱॱॱॱ <sup>ह्मन</sup> हे पार्श्वन्य ग्री श्रॅन या **श**र्मा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वा स्ट केव देव से की से से पार्श्याया वया वव खि नवर **८** त्वा ग्रहा मूर. थ. कुर्य. तु. न भीर. ल. न झूबा. च न थ. शुर. कुथा । न थ. लेक' अ'र्सेन' पर-रे शेर् देवा है 'न' इ. केल रन न हे के रेटा विश्व स्त्राहिक न्या.वेद.इ.न। न्याप.सूच.ल.क्ष्यानक्याक्ष.या.श्चेर.कषु. प्रायास्याया रमायाज्ञित ग्री'यारे करार्थेमा हेयानकर् पार्टा रे अवा हुन हे प्रते तुःकु*र्-र्*र-हुन-न्र-कुःगुःरेन्यःस्न्यातः स्न्यातः स्न्यात्म्यान्यः न्रहेनः कुलः न्ररः विष्र-विर्

① (यह क्षेत्र ह्वा यव राज्य से या कुरा ह्वा यह राज्य राज्य

म्यान्त्र स्राव्या स्त्र स्त्

① (वस देव सदःवदे द्वेग्यः सुः व्यायः देवः मृग् ग्रद्यः 13)

② (न्यन्नान्यसाक्षेत्रसाक्षेत्रसाम्नान्यस्यः 85)

पहुंच. हुंच. चेथा बाबट. यहूं ।  $\dot{\varphi}$ . शुंच चे. श्वा. मी. पंतर. कुंच. नं चंच. नं चंच. हें च्या. हें चंच. पंतर. हुंच. नं चंच. मी. पंतर. हुंच. हुंच.

श्ची त्राच्या विकास स्वास्त्र म्या स्वास्त्र स्वास

① (र्यम् प्रथम है स्म हैं र्क्ट में में मार्थ १९३)

<sup>(</sup>र्मन्निप्रवास्त्राः क्षेत्रः कः वृन् ग्यास्त्रः १९०)

第四公 口題工.吳山 য়ৣ৾ঀ৾৾৾৻৸য়৾৾৽ড়ৣ৾৻য়ৢ৾ঢ়৻ঢ়ঀ৻৻ঢ়ঀ৾৻য়ৢঀ৻৸য়৻৽ঢ়৻ न्तु नहें करा **"ब्**र बद खर बेबा खर के का खु का तु खु द नदे हैं द क्षेत्र *ৢऀ*ॴ ख़ॱॸॸॕढ़ ॸॹॕॱॸॱॾॹॴॿॕॗॴॸॱॴॱॖॹॱॻऻॹॖॖॖॺॱॸॸ॓ऀॱॻऄॻऻॴ**ग़ज़ॱ**ॱॱॱॱ ग्रैजःधर्-१न्गर-क्षर-हेज-ह्य-घ्रश्चन्याया ग्रुव-विद्वेव है-विदे-न**ेवर** ग्री 'खेर' हॅ ग्रांगी 'पह्नद म'रेद'में 'के ग्रीद'रियर देग्रा निर्मे 'प' ড়<u>'र्र</u>-पठरायदे गर्डग्रज्ज्व,रिन्टर,पश्चर,च.वे.वे.पपु,पपु,च.वे.वे. पते न हुय। विषान्दान् क्रिया न हिन्यमा "..... कुता न दे न सूर्व प देव स्.ष्टु.श्री.रटा वी.विषाक्षणचा रहवार्चणाश्रीरास्प्राद्धार्या ट्रे-ब बेर् यः दर्ने-वेर्-द्येयः कुषः मृंदः श्वेयः ग्री-क्ष्णः म श्वायः च ब**रः यं राः ः** <u> बीक्षःग्रहः कृष्यः तुः नृष्यः चः नृष्यः चङ्ग्रक्षः दह्यः दृष्यः वृह्यः वृह्यः वृह्यः वृषः व</u> देय.की.रंतताताबाद्रयानर.क्रिंरानपु.श्रेर.पे.पंच याक्षेरयार्टा। यु.र. मः र्यम्यः स्वायः म्या स्वायः म्या स्वायः भी स्वायः विद्या स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्व यर मुल पदे हीर में द्वे पद्व इवल गुर पद्व राम नेवा ..... "वेयः" न्दः। नङ्कलानदेः तुकाळेगकावी "अहेकाचुन् कुः सः व्यवागुः वः নৰি শ্বের নাব্য মেই কেনে ৰ অ নাব্য নি নুষ্ট আব্যারী ৌদ'দা ক্রুঅ নবি **ই ·** पर्रियानक्षेत्र. तपु. द्वा. क्षेत्र. क्षेत्र हिषा महेषा त्या । वटा केत 

म् बिर्यः गेवरः चल्यायः य्। भ.मे. क्षुप्र रंग्यं येर्थः ज्ञान्यं न्यः स्वान्यः स्वयः भ्यः प्रेयः प्रवः प्रवः श्रेयः भ्रेतः श्रुवः स्वयः क्षः श्रुप्र रंगः रंग्यः रंगः रंगः

रे.स्.इर.ब्र्रावरावे वि.स्.र्वा वि.रं.र्वे वा.वश्चरयाव्या गॅरवाराधेवाही इयासरावरा। "अनवादिरायस्यार् अर्वास बामरे क्रिन्कु याचे भववारु भविषयाये भारती महत्रा हुराम कराह्र सवया वयाश्चरवन्याश्चरञ्चव स्वा दे तस्याहेव हरायर ठवा स्वायाश्चर हुर-तु-बर्ळेन-ध-कु-ळेब-ध-दिख्यायर-बर्धन्। ने-वयायहुर-वया-बर्ह्न-तित्यासुग्रार्श्चव नेवारे पतिवासक्या सरासहित। संविदेर म्राज्याक्षेत्रः स्विर्वास्यास्य विष्याः स्विष्याः स्वित्रः विष्यः विष्याः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषय **र्वेरःगवरः** यः हे न्वः यः वेर् गुरः सं स्वानु किनया नश्चरः मवरः हे नेवः वि नवाग्री पर श्रेंब प्यायाया ने प्या वया पत्रिया ग कु यह ते हि म्या प्रा हेव ... **७**म्.हु। तहवान् इत्याम्टाया**क्र**याची कुत्याया क्रेन्यान्ता कुत्राया *ঀৢ৾৾*৾৾<del>ঀ</del>ॱঀৢ৾৾৾৽ৼৄ৽ঀয়৽ঢ়ৼৄ৾৽৴ৼ৽ঀৢ৽য়৽য়ৢ৾৾য়৽য়ৢ৾য়৽য়ৢ৾য়৽য়ৢ৾য়৽য়ঢ়ঢ়ৼয়ৢ৾য়৽৽ म्बद्रा "प्रेबेषान्धवानान्द्रा दे व्यायश्वानानेत्रान्दे द्राप्तान क्षेत्र्वरापितः में दावा केवा में देश्ये वेरा वितरा वितरा वेरावा के विवास स्तुत्र बु नर नहें र न्वरा " वेष न्रा "रे वष र र र र र सु त इर म्र्वालम्। वर्त्तु वेनम् अनम् दह्यान् इत्राम् रायाः केव्यादीः म्बेर्विरक्ष्य्यानविष्य (धर्मेवः) म्यर्थेनयाग्री वेरङ्गातृ न्नायः

① (द्वन्वयाक्षेत्रकः वृन् जरवः 101)

व्याम्ययायां पः इवया द्वान्, प्रत्ये व्याने व्यान

सं ने नः में दः अदे खुदः में वा क्षा कर संदः पदे न दे वा न सम्मा सम्मा मुल वर् दि छिर देवा छ दिल्ला लेवा लेवा वा से देवा की देवर हैं नवा रहेर वदा "ने वया धवा के ने दान वा तह वा वर्षे वा के दे ने ना निष् म इं ८.अ.चर् व रू. छुबे-तूपु.जीर. वृथान झू.वयाके. कं व बे के जीतायन छुवे.... रेण देलानकुष यान्दातु न्नद्राति र्या हे र्या हे स्वा हे र्या है रायु न्दा वि য়৸ঀ৻ড়ঀ৾য়৻৴ৼ৾৻ৼঽ৶৻ৡ৾ৼ৻ঌ৾৸৻৸৻৸য়ৼঀ৻৴য়ৢ৸ঀ৻৸ৼ৻য়ৼ৻ঢ়ৢ৾৾৾৻ ्रेते ळे बदतः १ वादवाद्वे के**दानु सु**राग्री बदवा गृतु वासादवाद्व**राः** ८व-५व रट-र-- व वरे है महिलाहरू है न है ने रे ने न मी नवार रूट.वय बंध्याचा वर्षाञ्चाची है.चू.च्यु.कृट.चुयाख र्रावरुवायात्ररान्ववाद्यात्र्यात्रम्यात्रवाद्यायात्रवा त्तर्यः इवयः न् धु : न्दः प्रियः ग्रीयः वी यत्रः तायः यतः वा प्रदः विकाग्रादः न्ग्र-वॅ म्द्र-पः श्रेग वी छे र खाद र न न व य ख्र न्या द न न म हिर मिर स् कृषं चृषः द्रद्राचा या उदया या मध्या श्रुष्या मध्या या महत्र वा ना राय दे स्वाया

①(र्पण पर्वत है व हुर् करे ने ग्राम्य 102-104)

क्षेत्रायन् षा:मॅं : क्षेत्र-मॅं ते :यगाद : त्या व्यवस्य : स्या : क्षेत्र चे ने : न्युन् : *वेद्-ग्रैरान*ह्यासद**्यायक्र**यासया*द्वापा*याद्वायायाद्वाया तहैन हेव इया पर तदेव या गुव बहुव सुन व महारे राय दे में व रु इयाम वयवारुन् यहिवामदे में यळ मायवाया वर्षवा गुमा हमार्वा र् भु नव्व न दे दे स्थान ह्रव प रहा। स्थय कर से हे व पा प के के व त्म् नित्रवर्ष्यम् वर्षः भुति व स्म निक्षा हरा ह्वेषा निवास मा निवास त्यर्थानी भी म् वी मी किंदा में प्रायम् विषय मि विषय म हु-पराय पार्वा सद्वित्या भेता वा दे द्वाया याहे वी क्रिया पराष्ट्रित रुषा चला तर्दे र वा अधिवा श्रदा दे क्षा अध्यक्ष वा वा वा विकास रावद न क्षानीयासं छ अस्मयाहे छ प्रस्ति र दे दे प्रस्ति से से में में ने नर रे श्चेन्-तु-गर्ड-म-गर्डग-हेन्-मलुगल-व-ठेन-पश्चन। ने-यम-श्चे उप-व-बहुद्र-पः दर्रे : न्रः दर्रे : क्षे : सु : सु न्रः । वर्रे : न्रः दर्रे : क्षे : सु : **२ ४ - १ वर्ष १ वर्ष** मःबह्दर् केन् केरा देव पर्दे ते सूर् दु मर्ग कन् सरम्बर्ग सम्बर्ग वा वन-तु-देवानानम् राष्ट्रं वानरायह्न रात्रुवाले वाञ्चवाय राज्या दे इयतः वः ने। पन्या रुया इयता पर्येता है स्थ्रन ग्रीता थवा ह्या दे ते ता है वर त्याम्द्रेत्राचराच्यात्वरात्वरात्वरात्वरात्वरात्याः "() वेतान्यतानाः स्रवरादेवेः 

① (बै.र्वट : ह्रेन्ब.वर्ड्र् ड्रिन्ब.चर.र्व.र्व.४52-453)

तुषाञ्चनयान् न्वा हु न्द्राध्या श्री नदे तह वाया या नेदा के में या दी। र्षेषाःच हितः न र नदीः न्सुमः ळेषवा स्र र निवेदः त्राः सु र नु " क्षेष्वायः मदीः ...... पृ.वी...धेर.अरत.५व.भूर.वशिषाग्नी.क्षेव्यःश्च.कं.इव.घरवाचेथ..... द्य यर बंध तर यहर्ना न्रा है. है. च. लट. वे ब हर वितार्श्वाया प्र- क्रि.विस्-क्षेच्यात्व्याच्याः **क्ष्याः स्--**श्चरः यक्षेत्रः यक्षेत्रः यक्षेत्रः यक्षेत्रः यक्षेत्रः यक्षेत्र र्षेष्रव वैषः धः श्रेः न्यदः ह्रं व्यायह्नः वदः यहिन् धनः छिदः। ने प्यवेतः ঽ<u>৾</u>ৼ৴য়ৢ৽য়য়ৼ৾ঢ়৽য়য়য়৽ড়য়৽ড়৽ঢ়য়৸য়৾য়৸য়ড়য়ৼ৽য়য়য়ৼ৽য় **६८.श.क्षेत्रश्चर.पूर.पश्चे.**पवन्न.चेष्ट.प.के.पी.पष्ट्र.पर्येन.केटा बैं-र्वराष्ट्रं क्षाना सरावी हैं वाया वहूर वरा वाया वाया वाया वाया विवया **ॷढ़ॱऄॱ**ॸऀॸॱॸॱढ़ॱॺॕ॔**ॸॱॺॱॸॸॱ**ॺॱॻॕढ़ऀॱॶॸॱॺऀॖॺॱक़॓ॱॸढ़ऀॱॺॸॺॱॺढ़ॖॺॱय़ॱख़ॱॱ राष्ट्रव अयासर ग्रम्यार विमासेंद्रय वया पर्ने अद् छिया। मेंद्र या प्रम्म द्रप्राच्यापालयान्त्री, भ्रिप्ताच्छी, स्वित्याची, क्रिप्ताची, पास्याची, पास्या म्वेत्। "७३वःमञ्जूनवाववान्यवान्यः सः नः नः नः । विवान्यवेनः वे

① (देव:देवे:कूँद्:क:धर:दॅव:)

② (â·དབང་ན་གས་བརྡོད་དེབ་རོས་४५५३)

① (ব্ণশ্বল্প্রাপ্পৃ'আইব্'ক্র'র্শ্'শ্বন্থ'106)

तु 'कॅंदरा'पदे' सुव'प'क्षुव'पेरा'क्षे' वेव'गुव' दु 'पञ्चेपरा'हे' पक्षर'पेर'''' **ब्रुंन्:प्रते: इबार ब्रुन्: शन्र: पार्व: यदी: दुः है। न्येन: क्रेन: कें क्रिन्यें: ख्र** ब्रिन्न ह्रवा क्षुवा हिन्न व्याप्त न व्याप्त में हित प्रवास स्तर सुनाम **के विग**म्परे रूप्तवि**न ठव** लाड्डी विरामह्याम हे प्रविव है। **यं कु अ**ळे ते : अवर : बुष : अळे द : चे : के द : च : के द : च : के द : च ते : कुष : यं। र्धर.मु.क्ष्म्य.लब.पब.पष्.रद.क्ष.त.चं श्रु.वु.बर्. ह्याग्री.गर्य. क्रेन् गुरागुन तु नक्र्मर न में द सन् न न में दे न मृत दे द गुर र द है न ग **देव:तु:के** प्रत्यायन्त्रः ध्रे**व: ठे** व्यंगः गै: प्रत्यक्षुंत्रः ग्रे**तः गॅ**दः य देः क्रवः ...... त्यर्थः न्रः न्स्रः में क्षेत्रकः क्षेत्रकः के ख्र्नः यान्रः। नक्ष्वातहेवास्ताने न्स्तानेन् चेतान्ते केताने में ति के न्ता **वे.**अर.पि.सत्रात्तराञ्चराच स्वायाञ्चात्रम्थान**्वतान्वनान्,** प श्चरः र्ते ते हे रहिन्युका की महिन्य की रामा विष् रे. खर. केर. राज्य या श्री बहुव व तर्देव केव में द्या ग्रुट व बाद पर श्रुर व व व व व व व व व व म्हेम्मे भुद्रावि दाया बदद देवा शुर्ष कु यद न द्वा बदा देवा क्रट.में.बीर.श्रेव.क्वत.तर.पश्चेषान.क्षेर.बु.प्रट.च.धेर.पे. व्रेवा लाया चित्र अया पर् से स्व चुता विक के वि से स्वाहर हो। हे र्वात्र जुल मदी.लया हे न्दा न्दे कितानु सुनान्दा नम्दी न्सु दा ह्रेव ह्र स्वराजा त निव लया सदी प्रके नवया श्रव श्री र र दे क्र क्यां सर विया वया दे व री बक्क. वि. प्रें र. मील. ब्राप्ट. प यो था. मूं मांथा ग्री. मीला. मुमाया वि. प वि. प हें थे. प हुं थे. वै व र अ न र व दे ते न मत दे व श्री य वळ व . हु न श्रु र य भेर । 융ㅈ.

सर तेया और अव प्या गुर वार्ष पर वा ने राज व क्रिं प्रा रहिता खर. क्षेत् वि स्व तु : बर्षा नर : बहै र : नगर हो : नर की ख्र राष्ट्र व : नर व र्ह् र रा कुपःग्रेतः ध्वत वयः रदः वृतःग्रेः न्यायः ग्रदः च्वदः दे। देरः य चदःग्रेः सीपारीपारी कं वया मूरा अपुरा मेश्रर लेगा राष्ट्र मि अपुरा प्राप्त प्र प्राप्त র্মান্ত্র প্রকার প্রকাশকার কিনের কর্মান্তর করি করি বর্ম করে 🕶 यर व्यापा रेपान धुया रेते । गृष्ठी में किर हे । वे से स्टार्टा वे वितः वरः वि वे : न्ते : के : हते : यर : या वितः य वितः य वे रः य दि : या वितः य क्रिंगि, वृत्र क्रिं इस्र व्यक्त क्र संरित्यं नियाना वियाला प्रमुं क रिटा पड़े वी. पर्वेद.सपु. सं. प्राचिताता संस्था प्रवे तर र्वे चेता व ঘই:মঞ্জীব:জা देव श्वर्-तु-नगद-त्वंद-इस्रयः यस्यः शु-देव्ययः यः विवादिशं-नर-देयः निर्म ने प्यट से झे बते हैं होन तर्ने हा चरा रे बाया है। वे या श्रुवाया दी हो कुन ल.य.पिव.लश.तय.पव.श्चय.त। कु.कु.श्च.पचट.पक्षेव.पहूच. र्न-हिंदशःशु-क्षेत्रशःश्वाकाःस्वाकाःसदैः नामृ वः द्वाः चुदः वः रदः रुवाः गुवः ः । स्वराम्बन्धन्तुः वर्देदः वरा चुः चाधेव स्वता म्वन् नुः विदः के नःयः हे द म्.सं.चपु.ह.धेर.यूर.खेबा.इय.पश्चिताम्। "① वयाचयपान. सेर. 

वृर्कु अक्र प्रदूर। स्क्र प्राविष्ठ विष्ठ वयात्रम् न्यरण्यराक्टान्द्रानगुगाक्षेत्रवर्मान्त्रमा न्हें दं लेर हे दे हे दूर र्रा व्याप्त व्यापत तक्षव्ययास्त्रचुन्यास्त्रच्याक्ष्यान्याः वे न्दिक्षायास्य मनुर'विर'पकेरकाव्याक्ष'यर'विद्। वन्या'वेद'दरः। ध्यास्या क्रामानवी वर्षारायाक्षराञ्चा इ.सेना हिरात्रायायाचे ह्या मधियाः स्मिथा श्री विष्या विषया विष ब्रुचायाः श्रेषानः श्रिम्याः व्यास्त्रः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः युर्-ह्रें पवर पहें द रहें द ये र स्र र विष् र विष् र र विष र **७८.६८.१.५४.५४.**१४.१४.१५६ व.५८.१४.५४.५८.५४.१५८.५४. क्रि.मृ.बुर.र्टा कु.र्यंदान्यं मृ.सं.लेला स्.सं.चय हे.संबय. *५*अग'*५८'परुष'हेरातदेन*'तु'र्वेद'यतुग'ग्रुर'। भू.चबर.चक्षेत्र. तह्रवावी के विव कर्रायदे छ स्राम्मर क्षेत्राय हवा वर्षा शी स्याप वर्ष **६्रवश्चर प्रह्रेट.ल.चे इवश्चरायर प्रक्राण्ये।** 

श्ची-सं 1724 वर्-रच श्चर-पश्चाविकामके प्रित्तश्चाविकाम विद्रास्त श्चर-प्रति वर्षाः वर

द्र-विट-कुष्य-प-द्र-। वर्षे-विदे-विदे-कुर्-ह्रव्य-व्यक्तिके-द्रव्य-व्यक्तिके-द्रव्यके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यक्तिके-द्रव्यके-द् ५६े.चदुः चवयाशुः ५ में रः धरः चवे रः वया हूः च्चः वा चग्रः च दुः च्चः चनर-र्धायात्र्यंर-र्रा हुर-म्.क्षा है.कदे.क.चठकाईर-र्गवर. न्र्रा, गुवान् वेन्या स्पा केवार्य दे सुवान वेव केवा क्षेत्र क न्में राधिः गर्वरः ग्रीः नगरः शुरः न बरः में रहा गर्वरः ग्रीः भ्रीम्बरः तुः ख्रनःबहुन में नाउंबान हुन्दुन र्येन् स्ते नहतः सन्म। कुन्ना स्त **ह** ' पॅर्' र्राया में ' धेया ' रेया राप विष्या ह्या परि मारी राह्य हे ' ह्या दे ' विष्य रेखा' बुन धुन्य अक्रम जुर्ने पदे बेट में जुल र यहा । या हेट में मॅं-र्मनाः तुः बेर्-पः र्दः महरासुयानः सुनाः तुः महेरा में दः बाह्य स यदाश्चरका का स्वाप्त के स्वाप्त का पड्ययः पर्दः हिन्यः प निर्मुकारा निवार निरम् छन्यः ग्री : अ**र्छन् : र अव** व्यवतः न्यान्यातः न्दः न्दः पदेः शुः व्यवः यव्यवः प्रः शुः र हैं। " 🛈 वेषा तिर्न्याः क्षेत्राने रहेला श्चित्रान्य देवा न्यान्या न्यान्य न स्वान्य प्राप्ता बयान्द्रवाताक्र्यान्त्रीन् नाद्वेतानादे सुनातात्मवाक्रीन् नाद्वेतानी वहन् त्यवा लर.पर्. वयार्तिः क्ष्येया पर. श्ररा

ब्रै'स् 1725 निर्धुल'स्र। "इर'ब्रळे ईव'ग्रै'त्र क्रेन्स्त्र क्रेन्स्त्र क्रेन्स्त्र क्रेन्स्त्र क्रिन्स्त्र क्रिन

① (न्यन्यत्वसङ्गे सङ्ग्रह्म स्वाग्नरतः109)

म्बर्धित स्थल प्रम् त्रित्व स्वर्ग् में स्वर्ण स्व

म्यापायम् म्यापायम् म्यापायम् स्यापायम् स्याप

① (ব্নন্-নথমাঞ্জী,মাঞ্চ্-ছের র্ন্ন্ন্ন্ন্ন্ন্

ळटळाळु'ॡवळ'य'नवे'र्ङ्गटारी'न्ट्रेलाचें' आट'नव यर'नवेलाने। क्ष' न्रायरुषायदे यहेन हेवानु हिता ,वरा न्यायर नुरायदे के हि सं .... विक.श. वृत् श्रेव.इर. वक्ष्र श्रेव श्रेव. रेस्व. रेस्व. रेस्व. त्याला प्राचित कर. बरि.मा.भ्रेम में विनया परेमिया विनयं परि भ्रेय ना न महासे हा हेरी " 1 ठेराप्त्रिं प्रमुण्य याचन्। वर्षे अंत्राहीन्यर में न्या न्यायान क्रावा न्राहेन हुना हुना सह हा स सह ना महेन स्वाय न देया पति श्वन तु प्र छेव श्व प्र प्र स्टर थे भेषा ग्रे व श्व स्र र र ग भेषा श्व व प्र .... रत्ति क्ष्यया पञ्चरा वर् कु महत्वा विषावया व हारा दि करायू बुराग्चितारेता भ्रेगाल अंतर्श्वे विपात प्राचनात लेंबार के बता है। महिता गां डेर महिंदान्यहर्दि इस एट्रेक्ट स्वराख्या न्त्र-न्गुल हेव न्द-क्ष-ब्रेट्र-ब्रह्म-ख्य-प्य-प्य-प्य-क्र-ज्ञु दे-मक्रेव-प्यव--र्वायाः ग्री-५तुः त**र्वान् कुः केदः यः** अद्यतः ५ वाः गः श्री वाः येवायः धरः ग्री वाः ः । । । । । म्न. धर. थे. पश्चर र्ज्या विस्त वया मृत्रा नित्र नि ब्रम्याश्चान्त्रम् च्या प्रक्रिया देव वा क्षेत्र के व्याप्त विषया निर्मया मते महदायम् भेषा छ्या यहुव या देवे खत् ह्रव्या महिता भेष देर.पह्ना.हेव.इय.तर. रट्रेव.त.क्रुव.त.क्रुवशाग्री.व.त्र.चर्चेर. यप्त. ल्.वेर.ज.स्वयार्थ्यत्रार्थरायर्थः व.च.च.च.च.च.च.च.च्ययः क्ययायाः व.च. लवायदी न्वराधी देवान विवास स्वरास्त्र हिना न्ना इवा ह्वर

① (बर्-बावर-विचय हुट-वि-धुट-च चह्र-च-ईत्-बेर-बेर-वि-वि-स्त्य-पः राष्ट्रवावर-वर-देव-स्य-19)

4. 디까디'플로'ㅋ드'그림키지'원저'최르도'그림자 기호드'디르'…… 키르도'라드지'리

ट्रेम्बरकुथरश्रेटर्जूथरार्ट्टा ट्युवर्थरण्यात्वे प्यस्तर्व प्यस्तर्व प्यस्तर्व प्रस्तर्व प्रस्तर्व प्रस्तर्व प्रस्तर्व प्रस्तर्व प्रस्तर्व विष्य प्रस्तर्व क्षियात्व प्रस्तर्व क्षियात्व प्रस्तर्व क्षियात्व प्रस्त क्षिया क्ष्या क्षिया क्ष्य क्षिया क्षिय क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिय क्षिया क्

विनया ग्री नया अंति का अन् न न स्वा द्वा विव व न श्री वा न न मा भारत मा प्रिया प्र बर्दव विद्रा दे थर दे केर मू हुर दर हैं क क दे हुव वर ल के तुषावषा मञ्जूराम्बराङ्गेराष्ट्र**ायके प्रमान्धरामा मरा**मञ्जूरा पर्वः सरा न्दै न्दः न्यमः त्वनः ग्रै ज्यकः श्रंदः नवदः में व्यदः व्यतः व्यतः व्यतः व्यतः व्यतः व्यतः व्यतः व्यतः व्यतः व **४**. घट. तपु. क्य. शुर. की. की. याय शाया व्याप्त क्या स्थाप म्बर्-ह्यान्युकाष्ट्रकार्यः व्याप्तान्यः व्याप्तान्यः व्याप्तान्यः व्याप्तान्यः व्याप्तान्यः व्याप्तान्यः व्याप न्दा 🎽 व.कर्.चेद्र.त.क्र.त.चेरू.त.चेरू.तवाचेट्र.चेर्य.क्रुय.ग्री. श्वाय. क्वेवॱ*पर्यःचर*ॱश्रम्यःयःयावयःश्चेन्ॱमृख्*दः*मैं।क्रमःश्चेन्-दम्बनःदष्ट्रनःग्**र्डः** ः ঽৢ৻৽ঽৼ৻৶ঽৼ৻ঀড়৻য়য়ৢ৽৴য়ঽ৻ৼৢ৸৶৻ৼৼৢ৸৽ড়৻ৼয়৻য়ৢ৽৻ बर्मवासदेखावाम्बर्धवासवा मगदार्चेदाम्बेवामवरातुः पञ्चार्मे र्मेवा मदे.पिट.पञ्चीर.भेचय.लश.स.र्या गड्या.चु.स.के.चतु.हु.पर्ट.प्य. षयालेषाः वैदानहें दाञ्चनवा "न्सुदाञ्चं दार्वे म्यान्यान्यान्या न्यवः व्वादः स्टः सदेः यव वः सदेः स्वावार्श्वयः स्वायः स्वादः ह्राताः गुः क्रे.संन्याक्षेत्रं त्यसायहेव केव संदेशे ना सरायहिन सदी कुव वेद। "1 **३श.**च भर्-च त्या माराया वाराय र स्वर् सुरा मात्र प्यार प्रे केर र्र से <del>ড়</del>৾৾৽ঢ়৽ড়ৄ৾৾৴য়ৢৢৢয়ৢ৴৽৻৽৾য়ৣয়ৢয়য়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽৽৽

① (â·དབང་శॅགག་བ莨ད་དེབ་རོག་ 454)

<sup>12</sup> 

चंद्रर.विज्ञानी.कु.इंर.-्निज्याविजायस्य र.८चुजा**ड्रकः त्र.विजा**सद् श्रूर...... न्दरॱॾॕ॒८तः ग्रे-क्रे-त्-वळॅग-२वदः **गु**दः ग्रेतः केटः पू : बु रः यः देः · · · · · हॅं नवारम्हॅर्यया "तुवानवरविन व वास्वारम्यं हार हेवायं दे क् ब्रियायार्थ्यम्यासदे भ्रिः मृ ग्रु ग्रु । इतः प्रवित् वे इतः पार् । ययार्थः चरात्रिरापते वरामचवाकी चाममञ्जास है नवा समेत् केवा संस्वताः वयानु नार्दा श्रामार्दा मञ्जाल सरा हेर् सदी मृत्या ह्या स्थापाञ्चा क्रमाया चुरायाया ने द्राया विद्याया निर्माण विद्याया विद् यह नाय हे रई याम विवास भेव माम मु: स्वाम हे या शु: हे रमाम विवास करा मा न् चुरला धर क्ष स्व ग्री ग्रंट हिर छेव ध व तर्रत्य शे व श व व य *इबबर-२५:२८:विषाची:बहुद्राच:व\ ५:२गव:वव:गुव:हु:ब्ढेब:वेदा* । ৽য়ৢ৾ঢ়য়৾৽ঀয়ৢ৾৴৽ঀৢঀ৽য়ৢয়৽য়৽ঀয়৽য়ৼয়য়৽য়ৢয়৽৸৻৴ৼৢ৽ঽয়৻য়৽ঢ়ঀ৾ঀ৽ঢ়৽৽৽৽৽ व्ययः यः व्यव्यः यदेः ञ्चः द्याः यग्तः धेन वर्षः यः न्नाः न्नाः न्यः हे . द्यः वयः য়ৢ৾৾ॱ**ড়**ॱঀ৾৾য়৾৽ড়৾য়৾৽ড়ৼ৾য়৾৽য়ৢ৾য়৾৽য়৾য়ৼ৾ঢ়ৢ৾৴৽ঀ৾৾ড়য়৽ঢ়ৢ৾৾৾ঢ়৽ঢ়ৢ৾৽৻য়ৢঢ়৻য়৾৽৽য়৽৽৽ र्रायातुः सराञ्चरापया पर्राञ्च मा स्री क्षेत्रस्य पर्या मे ने मूला द्वारा पर्या । सुन्तरामर्**व में रा**पग्री**र विरापग्री नामग्री भनामविर हे नापम्याक्षः ।** षयायाः इवयान्दावह्रद्यायरान्धुः विषाञ्चयाः तुः पद्ध्याः वी " 🛈 म्रायामा इयाच विष्या पुरवासियाय वर्षवा द्वारा प्रवास वर्षा वर **ৼ৾ঀ ৼ৴৴৻৽য় য়ৢ৴৸৻য়য়৾৾ঢ়৸ৣ৾৴ৼ৾য়ৼয়য়ড়৸য়ঢ়৸৻ড়৸ঽঀ৽৽৽৽৽৽** वि.स.क्षर्यःचमायः वेषः श्रीः पहिरः मे ल्यां स्वायाः या श्रीरः परीरः 551

① (部: 万円下, 青町村, 口美人, 克田, 英田, 442)

र्राहरनेग्नव्यत्रुतिययानियानिकार्यहरामा याववः लट. टॅ. प्तपु. में. या कि. ता कुथे. गूपु. में. "या थया झे. खू. चंटा मु. थें या क्रिया खी. २६ बलाम् हेरान्दान्तरे कुलानदे प्राप्तिरायु कं**रानु** गुबलाय **स्याः** परः जुलापायवापरे विवल पन् ह्यारं वी स्वी त्र व इस्र गुरा दि **&**<!মৃ.ধৃ.:ব্দ:ড়'ড়'৸'য়৾৾৾ঀৢয়৾য়য়য়য়য়য়য়ৢ৽৸য়য়য়ৢয়ৢয়য়য়ৼ**৽** बैश हे - ८८ छे कु ब ब्रेट वेश पदे - ने ब पर ने ब रा है। देवे क्ष्म राज्यस्य न्याय मुख्याद्र जुन् गार्ट्स् द्राञ्चन व्याद्रे ने पत्रु द्रा <u> चकु क्षेत्र व्यापन्यया पहिंत्रय च्या भेटा। ने दे कु यह का पटा यह परे ।</u> येत्रच १८ श्रीर पर्य द्र नाये स्यार्च श्रुच श्री व्यव्या व्येच रवः मः विनः हैं या यदिनः यतु वा गुरा दिवः या न विः केरः रावा या अववः नश्चीनानी श्वीरात स्था भेना क्षेत्राया सरा ग्वाया स्था व्यापार स्यापार स्था व्यापार स्यापार स्था व्यापार स्य महर्रितर वरे क्रेंर मर्गेर यदे यह गृहा "नगरे:र्गुर व्रॅब केवा **४:८म.श्र.बह्द.न**दे.पॉव्य.म्बे.म्डेम्'वे.पर्ने .ल.चहेव.वयाचुट.चर.. **.** म्बायास्य "क्षेत्राचिद्रायात्राम् नेयास्य नुस्ति स् न्तुलाग्रं र में नगत हिंदा इयल के समुद पार हुर नदे हु हुद दया बर्द्रवः द्वंयः ग्रीः द्वेरः बङ्केवः ५ वादः वित्र द्वारा में द्वारा में दारा वादारा विद्या विद्या ठन् ने नहून् गुरु वे न्यन है।

तह्नित ग्री-धि-ने-नु-स-न्न-स्ति ही दै-ने-लु-धिन-लेत-स-ने-तन्-न्तर ॱॾॣॸॺॱॻॖऀॱ**ॾऀ**८ॱॺॕ॔८ॱॺढ़ऀॱड़ॗ*८*ॱॸॗॱॶॺॱॸॱॸॣॸॱ ॕढ़ॱक़ॖऀढ़ॱॸॕ॔॔८ॱॺढ़ऀॱड़ॗ८ॱॸॗ॔ॱॶॺॱॸॱॸॣॸॱ त्तर्भः अप्र त्रा है स्तर्भार हो त्राम स्त्रिन हिंता स्वीत त्रा वर्षे के के मिन विषःचेतःसरःब्**रःसःसरःग्रेतः**चेतःस्राःस्रःवःस्रायःस्रायःवेतःसदेःसः वःविषाः विन् तु केन् नहें स्वाव नहें न्या वहें न्या वह "ने न्या हरावे अया पायदा क्षेत्र क्ष्या पत्र करा पाया न्यार क्षेत्र क्षेत्र भ्रुत्यास्य मने वाया प्याप्याचा व्यवस्य वाया है वे प्याप्त न व्यवस्य में स्वर् बर्-रु-बुर-व-विग-हे-दू-लदे-ब्र-अदे-यन-हु-बुर-यन हा रे-यर ब्रिं-क्षिरात्रु त्यादे ह्या अविवादहीर मे वितावहुर हे जुदायर देवायदे .... इ.च.के.चे.रटा अन्यराष्ट्रानदृष्टा के.वराष्ट्रानदृष्टा के.वराष्ट्रानदृष्ट्राके नु होन् मा अपनि निया कुलाविय केवा में ते हिन में राष्ट्री हा न ता तहन धर य हेन् हेन रूट हेन् ग्रैंय मृत्रि त्र प्रत्य त्य त्य त्य विष् वृ . ५.वे. च . व व . य व व . य व व . य व व . य व व . य व व . य व व . य व व . य व व . य व व . य व व . य व व . य यातार्थम्य हे न्सुदार्त्वतन्माम्बेमामीयाम्बेमाताक्षास्त्रव्यत्राम्यान बिद धव धारा धव धर पर पर्सव धरे द्वेव सुँ र ग्री धि ने पर्ना धे से देव धे त्यत्त्वात्र त्याचेन् देव विन्तित्य स्वातः विवा कुः मर्चे तापि । वि मध्येत्र वेत्र श्चामा देन प्रमानिक कर्षा वा विवा <u>न्सुर'ञ्जॅब'</u> इस्रायायायाया क्षेत्र ग्रीका तु : न्यात्र या साम्या स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन नम् नामा क्षेत्र स्त्री न नामा निष्या प्रत्य के स्त्र हिन्या विष्या स्त्री नामा निष्या स्त्री निष्या स्त्री नामा निष्या स्त्री न लबार् के जुनाया जिन्दा मार्च निर्मा न

1727 वॅर्-रवानुदावर् निवेषायदे श्रेन्य प्रदा रहता नर्दा नगतः र्वेदः नरः ग्रीः तगतः ज्ञानेः र्वेदः हे त्राहे र केरा श्रूर र देशे इ.थ.४८.४. बर्स्व.राष्ट्र.क्रॅचयारीचयाग्री.चर्डर.क्र्र.५.लट.ट.जेश. हीर. म्ह्यायायवार्यन् ग्रीः इयाया यळेवा यरा महेवा सं द्वा वि हिला 5A. करापु हुरायार्चे वायावाँ वायाञ्चे वार्चे यायदे वायराव स्थारा वारा वारा नम्राज्या विरावि क्षेत्रक्षेत्रक के. नाचे नवा खेर की ज्वावा खा खुर ध न्बॅन्-चुलासरामहे वामलवा क्षेत्रात्रा वे व्यापरा सुरा स्.स.प.वु. श्विरः श्वरः विवाधित स्वराष्ट्रियः विराधितः स्वरं विवाधिः **অন্-**ম-বৃন্-অবৃন্-গ্রী-অব্-নেই-ন্-ধেই-র্ল্-স্ল্নম-ন্--- মূব-ব্বা-চু-অই-স্র बाबळ्यान्दर-नृतिकेदायु सुरायाने विषाग्विषायञ्जरातु त्याँ के या प्रते। न्बिन्द्यायाँ या व्यवान्य वा विवासिक व

①(部、「「「「青河町、「東京、「青河、茶町、486―487)

न्ता प्रेर्न्यत्वर्वेतः प्रवाद्यं व्याप्त व्यापत व

য়ৢঢ়য়ॱनेॱড়য়৽য়৽नेॱৼৄ**য়৽য়৾৽ৡয়৽য়ৢ৽য়**৽য়ৢৼ৽ঢ়য়ৣ**ৼ৽য়৽ঢ়য়৽য়৽ৼ৽৽** বর্ষার ব ব্রুক্তির বিষয় রুব বর্ষার ব্রুক্তির পর্যা বর্ষার বর্ষা বর্ষার বর্ষা বর্ষার বর্ষা বর্মা বর্ষা বর্মা বর্ষা বর্মা বর্ষা বর बर्गु म्र वु : भेष : सु तः च दे : व दः । विद्या च द व : वे दे : मुराय सरामीका अर्दे वा परामी में का पार्टिका में प्रामी स्थापी में स्थापी स्यापी स्थापी स्थाप मञ्जूषाम न्राक्रमण देवा मन् निया में वार्षा में वार्षा म्या मन्त्र माने वार्षा त्रितः प्राच **रुजाया देरा केवा दिरा गर्दाः गृदशा स्नु** त्राप्त स्वेरा विरा ८.पिशः ब्रीयः चेशिशः क्री कार्यः मुख्यः इयः याष्ट्राच्या प्राप्तः चित्रः चार्थः ताया चेशः . . भ्रेंग् ग्रॉर्- च कुदे रद्भ श्रंब **र्वेद व्या**न मुब्य प्रेंन् पर् **"**र्-दे न्न्य" मॅं केव में ते खरायक वया न न्रा कृ लेव न न सरा न ते स्राम्य स्राम्य **१ँ व**.प.१.श्रुय.सर.थ.वे.य.वे। क्षे.वया.रे.य.प.इय.वे.रे.४.४.४.४ न्वराष्ट्रप्रवासुरामान्द्रान्दिकेमान्म। वदे है। देदे हुन्या खु:मार्ने म्राय:गाुदा: कराय ठरारे : यह मार्च व्या वित्र व्या खाया विवादाः .... **न्हे**न् चॅर त्युर पर्ने क्षेर छु प्रते तु राय दि भीव वें ले रा चें न्राय न्राय นาทูสาผากฎัสานาผสาสสพาธราฐาฐสาศธิจา หูาลผูสาผราฐรา

দ্। "এপ্রন্থন্যকাৰ্বজ্ব ব্রাক্ত্রে ব্রাক্তর্ব ক্রিল্রার্ক্তর্ব ক্রেল্ড্রের্ক্তর্ব ক্রের্ক্তর্ব ক্রের্ক্তর্ব ক্রেল্ড্রের্ক্তর্ব ক্রের্ক্তর্ব ক্রের্ক্তর ক্রের্ক্তর্ব ক্রের্ক্তর ক্র

न्द्रभ्राक्ष देवे क्राज्ञ जुन भवे (वर्ष वान्य चुर नहें र वदाज्ञ माम त्वा मार्थ (वेषा ग्राया) केषाम साम मुन्द केषा साम ग्री मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ निविद्यः स्रेतः स्रेतः केरा कीरा नी स्राप्त क्षेत्रः स्रोतः केरा नी स्राप्त की स्रोता का का कीरा कीरा नी स्रोत विराद्दा वर्षाये प्रावेदावा बुदा ख्यायाचा श्रुरारावदे हैं। यू चेथात्मेष : भूषा क्षेष्ठ : यु चेषा श्रीच्या के प्रः चेया ची मी स्त्रामः क्रा क्र. ब्राया खारा के. यह व. य. र. क्र. र यह य. य. य व. य. व्राय व. य क्षेत्र ब्रूप्य वर्षा धार्मे स्टार्झ विमान्ते क्रिट्स मृत्व हुराय हुर नहरा बु है। दे-ल: नेवाल वल हैं वा न्धें न् ग्रेल विषय निवेर में वल वर्षे व पहें न न्तु-श्च-वर्णायत्वर-याम् न स्प्रेन्-श्च-वन्नर-न वर्णाले-स-यन्नन चपु.हु.क्रिय.प.प.पा.सूब्याय.पया.बु.प्रेच च ब्रीच.क्रे.च्ट. धर.जेब.त.पा हिर.पे. ऱ्नेन.स. रट. ५ ही नेया साथ नेया **चया स्था** न्ते केंद्र मेरा पत्रवा.चथुवा.चट.धिय.ग्नेथा.झे.पचाया.झेवाय.पज्ञेर.तर.पक्षयया.णेटा। यवायना ने ने न यद शे अदार्थ या न नुदाबिदा बाह्य वा का न न वा ह्या या न बेर्-धर-पश्चर-धराप्त्रण-क्रुव-तर्म-पत्विव-तु-दे-बर-पर्ग्रेट्य-ध-ब-बन्। ८.पीश श्चै ४.रं थेबा.बी.बीख्बे.बीख.र्टर.चेविट.जय.त.बट.न् थ. दंद.कुट.बी. 

① (和"大口下"青河和"口莨气" 九口" 花和" 525)

चलर् म'र्लन्याक्ष'र्याञ्च चर्राम् चैयाकुराने छै न्दर्राप्त प्रम र्वराह्र मह्मित्रम् । विष्यान्य न्या न्या न्या न्या निष्य न्या निष्य न्या निष्य न्या निष्य नि न्रान्दा हुदाधेन विद्राष्ट्राचायदाचन्दान्दा विद्रवास्त मंव्रामा स्वराम **केट-बै**-मलु ग्रान्**र्वरा सुद ळ ग्**रान्य-महद-दम्याय मुंदर-ग्री-अवर-…… नक्षंत्र-वर्षाञ्चराके हुद्दान् स्त्र-यत्र-यानेद्र-यान हृदा दे महिरा दहियस निराञ्चन वहारु वह में श्रीयाल पा है हिराय वेदा उरा है राहे है है । खंब वेदा मर-दबर-वर्षेत् छ्रुष-ध-द्रः। दे-दब्र-ग्रुद-छ्रेर-ध-घ द्र-सुघ क्रुय-ब्रीट-ध-र्ध्य-पठवान्य हुर-पहटाक्षे-र्वे केट-वी-ध्वावा गृहें बावा द्या **६. अध्य. ह. १८८ ह**. यट. ने हेया ग्रे. ख्रेन ख्रेन या दिया अर्थ्य सर. भुद्रि-ध-घट-ध-द्रिन्। चर्गा-भैकाद्यक राच। भुनिद-ध-स्विक क्षेत्र-**बद्धः म् न्वराध्यः न्युनः ऋषायः त**्युयः सं न्युनः सन् वर्षः ने न्यातः स्वरः सः । क्ष्मिते हि स्थान्य राम्यान हे निवेद नृत्य विषान्त नृत्या म्राप्त्रम्यायायानम् विचाञ्चरान्ययान्ययानञ्जयान्यः विचार्यात्यः । न्द्रायते स्वार्धे क्ष्या तर्धे क्षया तर्म क्षया व्याप्तरा निराया स्वार्था क्रॅनयः न्टः बुरायः न्टायं ने द्वीया क्रें श्रीवः वयः धरः क्रें या द्वया वि स्वः नदेः न्दिताशुः भेवासदे त्या परानु न्दे केटा पा सुरान्यर न्या पा पन्यदे न्वराद्ध्याद्वरायाद्वर्ग रवारोदान्य्यं ग्राह्यवाराचेतातात्र्व्यार्थाः स्र न्तरात्रेवाक्षेत्राच्याचेत्राच्याचे वित्रात्रेत्राचन Ħ. **万二五** 

क्रेव्यदे विनयः हुरः दुः क्रेयाः नवा यवियः धर्नः अरतः देशः स्राह्मः याद्यस न्दर्षियाची श्रेश्वर नश्चराश्चर चिताहे र्न् न्द्र स्वत य र्यम् तहरा हिन्द्या महियापा रे विमासार्म दर्भे मिन् हिया है। स् पञ्चर'क्ने'ख्व-'क्वेब-देव-पवेब-धर-र्म् याचेद-दव-बेब-देव-बंब-बाह्यकार्ष. ऍर-इंजःपर्दे-पृंज्-ईल-बद-देल-द**र-पर्**ज्-क्रे-हेद-वश्वराग्री-श्रुद-स्र---पक्षाः श्रीयः ब्रायन् रहेवः स्वाविषाः पङ्गः वर्षः वीः श्रीवायः पञ्चाः श्रीवायः पञ्चाः विषयः पञ्चाः विषयः पञ्चा पठर् रे क्षेत्र गृबेतायापढं द.क.शुटाद देवात संग्रतायाता सर ग्राहे.. रैरल स्रवल ग्रैल मने गल नेद प्रतान तुल न सुर ह्या ग्रैल हे ल या केंद्र पराधिरायमान्में याद्वरा। दे त्वया वं स्वानि वेता व्याय विदार्थना व्याय ळेवः हे दे : क्षेत्रः गृद्धेताः शुः नृद्धेताः शुः - र् व्यायः व्यायः व्यायः श्वः स्वर्तः स्वर्ताः स्वर्ताः स्व त. बेबर. है। ख्यान ग्यान विवादरा द्वा स्वा है ना है ना है ना है न द्यान्यत्यत्या गुरुषातिराच श्रीताला ह्रेत्रानु राज्यता व्यापाला स्रा पश्चित्रा इस्ता के हिन्द्र देव स्थल स्वाया निया प्राप्त है । स्वाया स्वाया निया स्वाया स्वया स्वाया र्गार-तु-ळॅन्-पदी-बुक्ट-बूंट्य-कु-नुबम्-न्**रॅ व**-ख्रट-ॲ-ठव-स-न्ट-। त्यन्वन् नष्ट्रताव्याम् इवकानु वान न्या मेर्टि श्रीमा नश्ची द्या "दव गुरु-तु-अप्नल-दे-न्र्वेन्-प्रविद-तु-ने-प्रनु-विष-धर-न्वेल-पः धन्-प्रलः दें महिव चुरा ततु म र दे रे देवा नरण हैं वरा शुर त्या हे तर दिन है वाइका " अनव ने ते क् के हिन्न् ने व्यान्य व न व व न व व

स्यानाधवाराने विवेशा ह्या भेवा देवा वर्षा पराधाने विवास देवा बुः वः न रः ब्रद्रा कः देवा स्रम् वा बुः वः नवा विः मृष्ठेवा वः मृषदः नहः । । । यहरावयाञ्चरायद्वायाञ्चरायहुरायहुन रुष्यार्यवाद्धरायाच्याया वै-दे-तस्ताव्ययःहेराशुःश्रेगयावयाय्यस्त देन दे-वयादेवाग्रेयार्श्वःर्रः त्र्रान्यवालाहाताम्यानश्चरान्याम्यान् र्यन्। च कु .सन् न कुन् न कूर् म्या प्रताय कुर म्या विष्य कुर् E.धुन.वेथ.पश्च.व्याचमातावयात्रम्.प.रट.सर.तथ.वूर.झ्ना.क्यया... ≝न्या ळ्रटायाम्यमानरुवारीत्राज्ञद्ग्यराध्द्रा देववा**र्ह्**र **१८.।** रेटिल.यर.कुथ.चरेथ.चये.क्य.५.घपु.कुट.च्यं चरुथ.धैये.स. पर्टेंबा है 'बे 'ह्रबत्रा हुन ग्रॅट'न्टा। प्वतः वरा दुः पद्दर्गः वरा पर्टेवः ल.पर्देच इंट.र्चेष.इंट.र्नूच.थ.के.प.वु.ट.प्रेश.बैर.ग्रीथ.ग्री. ग्रूथ. किंद्रलःद्रवः देवतः विवाधिवः श्रृप्यलः यः तुः गृष्ठेतः गाः गञ्जरः श्रेः अद*दः ः ः* रैकाग्री महिंदारर महुन दे विकास न्यार विवस स्राम्य स्वार स्व न्यवाख्री दिन्द । स्वायन स्वाय यवर.लर्.क्याने.स.स.चर्राच्यापानवेषाञ्चराक्रियः **多の、3下、**」 चरुतःसुला विरामहेशालेम्बासराम्याताम्बार्यादेशे केरामासुरामी: न्डेन्यं न्न्द्राचित्राळे नह्ना न्या निया सद्दर्शा स्रान्त्रा शुक्रा शु Bच.ये.त्र.त्र.च.रं.ल.र्ञ.क्षेत्र.क्ये.येव.ध्यात्र.त्र्यं.तप्त्र.त्र.क्य. व्यवस्थाः

ल्वायाकी. देवाची देवीट. इवाया प्रति. पुराती व्याती व्याती व्याताकी. प्रतिट. प

यर देर वश्वार्थ क्षा द्वार हीर स्वापित ही र या वर या दर्भ हु: विराधाला अविष्या प्रतिराची वा कुला के वि पर्व महिराम सुराम सामा श्ची देरायात्र ताथायात्राच्या श्चीत्र रायवायम् विवाने प्रतिवान्य देवायाः भूर. मु.र सिर. क्र्याया यदर. रे. परे याया पतु. यायया क्षेता ह्राया याय य मदर वित ग्री-र यं के रेगका त संद : इ.च च हेव : यह व : वू र संद र दें व : वू र न संद र व : वू र न संद र व : वू र न्गरामा न्यतः मा हेव यापरामा मवया उन्यंव केरान् विरा श्रुट्राट्र च ब्रुवा महाश्रद्धारा स्रवाया श्रेर् प्रवासी देवाया र्रः। तुःयः बै्रः र्थे वः र्रः यरु वा यवा गर्डरः र्धुरः विर्रे । यः र्रे या िर.४९ूर.४चेथ.४**चे घ.४४.४चू च.४४८.**३४। र्वुषार्ध्रादेश त्रुं र ब्रायम् तम् वास्यातम् तम् स्वास्य स्य स्वास्य बे:हल-न्दः अनेतः ह्यायान्या छेरः यमेन् छ न्याया छिता हैते हिया `देवेया सं क्षेत्र हरे हिन् लु छेषा स्याप्तरा गुर्व म हिन् क्षेत्र के न्या न्स्र । ..... ं क्स्पार्श्यमु नृत्रात्ते । वेत्रात्ते तात्वे तात्रात्ते । वर्षाः क्षेत्रे विवता ग्राताः ।

गुव-पत्रम् र्यावायायम् पर्मा प्रवादर तु मर्वम हें ह्रा है। न्या न्यॅ व् बु : सप्तरा न्तु रा क्षु न्य शु : नहरः नदे : सं : वृ : वि न : गु व : नवरः : : : : : यूब्याज्ञ्यानविदः वृदः यङ्गानवेरः वृदः श्रेचय। वृः यदः व्रावरः यस्यः कुदि।व पह नवार न्यार वर्ष द वि वा वी केर । "वि व व वि व व व व व व व हु-न्न-साम्रेन्-मु-द्रव-सर्वा सम्बद्धियार्था " विवासि देना-क्रे-मुन् मन् ग्राधिन्यान्ता ने विदायम हेरासुयानवे लु वर्षेद्रायसाप्ति वरा सं.के.घपु.इ.वरप.युग.थी.रेसर.क्रुबयायश्चेताचर यूर.इय. तर् अ गहर ने र्यंग रेग्य र दें केर थर न्य र म स्थय रूर लबा श्रापड़ी लार्चे टा न इंटर हिंद्या लंद्या शुः करा न इंदा द में या वे य र्याच्य : নৰ্মান্ মানভবাষ্ট্ৰ প্ৰামি প্ৰশান্ত হৈছিল কৰা ग्रयः ८६ वः ८६ वः ८ में यः क्षेत्र ४ म्य ८ द्धः ग्रट्यान्द्रयः अटम्यान् । अरः यस यर रुव.इ.वयासः रह्माययारा। रूरा क्या राह्मरा वाल्च श्रेय हैं . व्या बढ़व विन् क्षे न विवाहेन हेट हेव या मानुवाकी वान रूट या हिट द्देवः परावः इः पह पः हेः द्वः न्यः द्वेः द्वेषः ग्रंतः द्वयः वः द्वेषः व्यः हिन्यः वु व न सवारे र व विया है हिरानु खेनका रे नका नवर विया वर्षे रार्के र .. निर्देरान्त्रीयायदे अरग्याकः नवरा इ. वनया ह्याया ने पिर्वे वातुः त्रबुपरा परा तु 'याम 'र्म् न्राया येन् 'परा नृतिरा हे 'ह्र र तु 'दर्दु र या सन " ॅॅं ४ : इ. पते. विपयः पद्येर : इ. बया: म्रॅं . यु. र. तु. **म्रॅं व**. यूरः वयः क्रः क्रेतः **दे**यः यः ते रे.पर्वव प्रमुण्य प्राप्ता शे.वेव गा. शेर् प्रमुण स्वारा स्वारी स्वारी इयथ.परीया लय.जन. इयथ. चन. नय. पर्माय हे . में धूथ. इ. हूर. में. लट. हेट. वया नेलट. श्रुर. च हट. चया या स्वा. तु. क्षेट. च. नेट. कवया हेना.

ज्ञा-प्रवाचयान्यर श्रुर-है।

म् .कं.चया.रं विया.रं विरा.श्रेया. झ्याया.तपु. यावया.क्या.यायायाया. इन्-द्रमुद्र-क्रेब्र-दर्देन्ययायायायात्रभूयाविद्रा देशाचीयानवियाहेते हे दन्नमः शुः श्वः यन्त्रना ने व्या श्वरः मा उवः प्रमा न्यमा न्सुरः विमा मुर्चन विर् रे जिर द्वे दें विर् र्र क्रिय केर विर् रे विर रे विर र क्रिं-वया महेना क्रे.क्या इ.प्.क्रें नया श्राम्या निया निया निया निया निया त्र्रः द्वेरः श्चेनवः स्त्रः मः नृदः नृधुवः त्रवः नृदः व । श्वनवः वद्दर म् कित्र देव में किया क्षु किया या युन्य महिंदा मवद मीया श्रेम्य महिया ग्र-न्वम् वे मुग्परे प्रमानि न्या वर्षा स्त्रम् उत्। न्र वेद य बुष यम्भवादम्बन्दा इरान्गराम न्युवान्युरामे उपार्षान्य वह न्रामः ख्रेन्यायात्रम् । न्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्यापता व्या तकः स्वराष्ट्रमः विद्या विद्याः स्वराष्ट्रमः स्वराप्तः स्वराप्तः स्वराप्तः स्वराप्तः स्वराप्तः स्वराप्तः स्वरा चियान्या यान्यादे द्वायाष्ठा प्रमेषा प्रदेश हेया प्रदेव र न्त्या न्स्र था प्रदेश द्रैर-बी-घर-पु-द्रंरया धर्ब-ई्रब-न्यया-द्यय-प्रयाय-याग्रुर-घर-य्दर विषानी इर्मिविशास्त्र स्रि तम् निष्यं संवानवरान्ध्राञ्चराधराञ्चराचरेनावन्यारवारेरातुः वर्षेराके संवा चथं मंद्ररात्रायान्त्राञ्च नयाश्चायान्यान्त्राच्यान्य श्चायाः ह्या स्थलं छवः नरः यरः नग्रथा नृत्यः धरेः हैरः नृवेशः हेर् दे हे स्थलः मामाधियार्थ्य, श्रुप्त, श्रुप्त, श्रुप्त, यथरे. N.N.원리.보석.灵석.다.신仁.

सर्वानर्थित्म सूर्वाय,वियाना जयावि क्र्याचेयाना कु लटा वा सूर्ध নব্দ.র্ল্লেরেরেরেরের জ্বরান্তর জ্বর প্রন্তর প্রস্তর প্রন্তর প্রস্তর প क्रिया सीट. लेश ताच श्रूचाया चाडू. ता. इस्या क्षायर । द्रिया त्राय हेता निया यत्रायार्वरान्य मर्वरान्सुराञ्चरा धरादेरानदे त्यवा यहेवा यहेराः "" सं :क्षे. पथा : दंश : दंश : क्षेत्र : क्ष मदे त्ये ह्या र्सुर'यमु स्वार्ट्र'यरल' हेद अर्धद क्षेत्र' सेद र र पहर दत्र मुल' क्षेत्रे:ह्रॅंट्र'ब्रायर'यर्थ्य'यं यह्न्रा बुद्र-व्या ग्रेड्रिश स्ट्र- बळ्बसा न्तुलान्यणागुरावार्माताम्बुन् वया कुल हेन ब्रेनलागुरावर्व हेराः म्र. मुर. मुर. मुर. मुरा अपर. मु. न्यम् स्र. प म्य । न्सुर केव न्र नर गर्य में शाम दिया है र निर्मा न केवा रेवा में " क्रेर-न्तुत्र-ग्र्र-प्ने -म्बर-य्ने कुल-प्रयाहे - व्रद-मी विग्रानह्न ग व्रत मर् "मर्राहे-सर् हुल कुल सर्" देश नग्रत त्य वेन या दे द्या ब्र.लेब. क्र. ञ्च. पर्वे. तप्तु. क्रय. क्रेय. क्र. क्रय. क्र. क्र्य. च्रय. क्रय. व्याप्त वि हुरायराम्या देवयाम्बरान्सराम्बराम्बर्मा भेगलायराह्याने । न्तुलान्यमा सायळं वाद मेचलान्यमा तमन के ना विमा गुला तरा । यर.वेर्-वियामयार्थमा वेरयारेथावर क्षेत्रम्या महीयाही वियानम्या नवी । मळे महत्रमा १ ता ग्रेता , देवा मदे महंदा म्हा है , शु खं सर् मा हे ना न-न्द्रा धर-धर-ने सं-न्वंद-धंत-न्वंत-धंत-न्व-न्वंत-न्वंत-न्वंत-न्वंत-न्वंत-न्व-न्वंत-न्व-न्वंत-न्व-न्व-न्व-न

प गुक्र भीरा। विकास दे के सिंग्तु का न्सुर विस्ता विन् मा वि स्वापन कार्यु न ५ वाया संस्था स्था के स्था के स्था के स्था के स्था के स्था है राष्ट्र व ळेव रेव में ळे न्रायाञ्च प्याप्त केव रें रें रें रे श्चर बर बर बाया हे र तुया . . न्दरः भरे वातरा ग्री त्यावा यक्ष्यया यह वाता न्वीया भरे हिं वाया राजिरा राजिरा नगदःधेन् न्दः नठरा नरः श्रंथः गददः नरा विश्वः धः नर्शेन्वः श्रेरा वन रैदःवी:२्तुरा:२व्यगः।दय: वृङ्गेय:२:रुदः:व्य:५धुरः:वराः श्रवरा:वर्धःय:हेः**ःःः** चर:ब्रॅंय:च्रेट्-व्रिय:ग्रेंब:ब्रेंद्र:ब्राङ्गेय:क्रेंब:च्रेट्-य:च्र्टा व्रॅं-झ्रेन्ब: लब हु नहिलाय है। "नम्म इयायर तर्वे वाय केव में दे नम्म लखा तम्राप्तराक्षेत्रकृत्रा द्वागुरावर्षागुःतृषावावितेषुः बळ्ळवात्तेः **ৡ৴**৽৸৾ঀ৴৽৴৴৽৸৾য়৽য়৽ড়ঀ৽৽ড়ঀ৽ড়৽য়৾য়৽য়য়ঀৢয়৽য়ৼ৽য়৽য়৽ড়৽ न्त्रा न्दर वे ता बळ बबा न्दर्भ सर स्वावार प्रवास स्वर् सर् द्द्व-न्-र-धरे-८न-व्य-न्स्-र-वेन्-ग्रैय-क्र-र्य-हे-न-य-क्रेन-य-दे-क्र-तमर्यासुरमत्वाराधिवरशी र्रायदात्रस्यास्वात्रान्य में केवरम्य नवरारवासरवायस्वामु नगायाम्बरानायास्या नरातु नर्दरास्ट्रिया कुलाह्यः अहतः देशः नृहः च ठरायः नृषाः हवः तदैः नृषाः वीः नृहहः नुष्टः नः दबः धरः बे: श्रेन् द ने देवः दर्ने : धरा मृत्व नु : ग्रेंधः यतः चु : यः बेन् दे।" ® देश में दूसरा पर्या प्रियासमा मुद्देर श्वित सा देगा या श्विराप रा 341

नुषाने चका संग् भेगका कें भ्यंत्र मिं मिंतु के न्दान् आवा हिते हैं न्दुदान कराः निष्मे नका संग् भेगका कें भ्यंत्र मिं मिंतु के न्दान् आवा हिते हैं न्दुदान कराः

① (和"石口尺"等可叫"中美气"克口"芒啊" 609)

न्दा न्युरान्युरानी नहार प्रान्यमान्य द्वारामी राज्य राजा र्सुर-नैय-र्तुय-मेंद-इयय-ध्या-देय-द्या-प्र-प्र-य-य-य-य-क्य्य पर-----<u>न्तुलान्यम् क्षम् या इयलः कुलः हेनः धेन् परे नृतुलान्सुनः मेः भूनःतुः ः ।</u> तर्चेत्र ने 'क्षेत्र' खुकारीटार्डं अ'र्सेटाञ्चित्रा' नृत्रुवा निः क्वित्रां विः क्वित्रा विष्ठा विः क्वित्रा विः क्वित न्दा हते चव करा रायाय ह्याया हे जे विद्या गुवा तु वहाया पर्वेया चुरायरा अदः स्वारा इयरा न्यारा भद्राया न्दा न्याया वा या नदर-रवनाने हरनेन पन्तरापन्नीनव ग्रम्थर पर पर हेन प्राप्त हैन बारिष्ट्रियान् ग्रादरम् शुरु वत द्यता मृत्व के बेन् सर तु बारा न र्वाचा .... ग्रीयानग्रवाञ्चन नम् वाञ्चवि श्चाः छनः य स्यान हुन् ववाः नयः अयान वमः । च्यायात्वा संस्थावदे हे त्यावनया नेन हेर् रे ववर नर संता चु क्रि.रिया भिर्या केर. देव. भ्रेंन. सव. खंब. श्राया रहेन. सव रवर छेया बन्दर्भ क्ष नर्या र स्वर् द्वा श्री न्वर्य में हू स्वरे हा सर्वर न्यावर तर्ने 'केर' मेवर' वेय प'या में स्पर्म प्राप्त में विषया में हैया. मैराम्डेम् म्रॅन्य वे के त्रीय प्रमान्य अवस्य व्याप्य मुन्य प्रमान न्कः तृ त्यते न् वा बहेंग ता क्षव तेर लुषा हे तम् त त्यव हे दूर वक्षता । मामबिवायाय है म्याप्ताल हु धेवाबेयाम न्यापत वर्ष वर्ष विष्ट्रायदे ञ्च या वर्षेत्र न्दा क्ष्मा परा नु । अन्य वर्ष वर्ष । स्वर्म परुषाग्रीषामने प्वतापनि । त्वारामने । **८६ुग्-५८: ग्**षॅ'द्यत्रः भेग धेवः यः न्रायः यं रः बर्द्दनः श्रुवा। हिन्दे त्य

য়য়য়৽ঽ৴৻য়য়৽য়ঀৢ৾য়৽ঢ়ৢ৽য়য়৽য়ৢ৽য়ৼ৽ৡয়৽৻৻৽য়য়৽য়ৢ৽য়য়৽য়য়৽৽৽৽৽ नगतः पदः तु। "दः सः वदः है : रदः ने दः ग्रे यः वेः र ववयः पदेः ब्रुं दः हैयः त्यः तहुनः यरः श्रः : श्रुरः य देनाः धेदः दा वरः श्रुं महारायः महनः केदः यदेः नगितः ब्रह्मः (व्यव्हः) नः है : क्षेत्रः नक्ष्यः नः या स्वनः ग्रीः नतः है नः क्षेत्रः <u>ৠৢ৵৽৴৸ৼ৽৸ৡ৽৸ৢ৾ঀ৸৽৾৽৸ৼ৵৽৴ৼ৽৸ঽ৵৽৸ৼ৽</u>ৡ৽৻৾৽ৠ৴৽৸ৼ৽ৼৼ৽ৠ৾য়৾৽ है के पाय विवार प्रिय मिल्ला हिया निकाल विवास कर बिह्ने प्राप्त नमादे नवरानः लका नवेरानरा शे. उरानका ने दे । श्रें ना ता श्रानका न हो। पर वःश्विर्परिः रेग्य ठवः सम्रायः ग्रदः रदः ने ग्वेत्रः शुः स्रः स्रिरः भूरः । **इ.**चर्र-पर्येबा । थ्य.चयय.ग्री.रसि.सिज.ईशय.ग्रेट.कीर.स. थ्रर. नरःश्चिमयः नेव रसिरः बी स्चिमयः क्रेक् यः पर्धियः पर्धरः यस्यः यस्यः यस्यः वि.च.चर्चभाषा रट.रट.बी.नव्याशुःश्वराचरायनेट्या नेवा"ा **३**यामञ्जूलामाराञ्चेतालेमा। देशसञ्चलनावयान्स्यान्स्या मःइसम्पर्याम्भूत्रव्यार्थः स्वाविष्टिय। यहः केव्रानेव्याः केर् क्रित्तः रॅदः ने : क्षरः सम् : सेवः दुः न ह्ररः न में तः दः पन् माने : ने देः पञ्चा मु बेर् मर द शुर नवा न गादे ग्रद र न र व ग हे व ह व र दे त ति व पर्न-तर्ना वर्षा अर्था द्राति वर्षा हिंदा श्री वर्षा देश हिंदा वर्षा वर्षा देश हिंदा वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर् नरुषाः स्ट्राः झ्रेनः स्ट्रान्सुरः क्षेत्रः नवनः शुवः नक्षुः रुवः वटन्या

① (和"石口下"等可引"口蕉"下汽口"产剂" 615)

कॅ·ॲंक ॉर·ऄंतु कें·र्टः र्वाम्'र्यंक छट सं'ठंद ध'र्ध्टः र्वाम्'हेरा'''' र्षेट.रट.चठराञ्चर.लट.मेथ.इर.चर्सेटी र.लय.घषु.ह.र्सेट.रेथता. रट. परुषा द्वरण हूट. दे. बट्धी झे. जटा झे. त. रेसेट. रंबता झे. पके. न्दः चठवा देन् : ध्वा वी श्वीदः न्यानः तुः वा हैं दः चः चठवा अहं न्ः केदः। ख्रवा क्रे.च.५इं.च.४४.व्य.५.४०.६८.५.२४ त.८८.४७४.२. लर. ५इंग. <u>चक्कर्रत्तुलाञ्च नलाशुर्रस्टरमञ्जूर्र्रम्लरायः स्वात्रः नस्वरः वर्षे</u> <u>ব্দানকথা ব্রীবাঝর্থ বাংমান ইবানের চ্</u>রান্থ বদ্ধুর প্রান্থ বদ্ধুর প্রান্থ বিশ্বর ब्याया कर्ना के ता करा के या वा के ता के ता के ता के वा कर कर के वा वा कर के वा वा कर के वा वा कर कर के वा वा क **६ंगःने : इंगः नगर्ने राम्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य** डे. चया होर. च भी में हे. त्र. वे. परं हो. परं राया थी. रं था सेर. च हेरा सूर हे चरु.ह्य.लट्य.क्य.लय.चय श्री.चेय्य.तपु.ह्रेर.श्र्य वी.र्रव्यय.स्यय. ... र्वर.री.पर्वेश रम्.त.थरथ.मैथ.भैपथ.व्य.तथ.र.प्वा.मैर. तथि या अर्मे . प मृ म्या पे . प शुरा द्वारा द्वारा स्वारा स्व र्वि लेगा मदी या नव्या नदा। व्या क्षेत्र श्वा स्वर्ग व्या क्षेत्र श्वा श्वा स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग **ग्रै-लॅग**-नेग्राक्**रवराम्बर्याक्, र्नान्यरा**तुः नक्ष्राया नेसुराङ्ग्रेनदाः के**द**ः <u>घॅर कुरा अनवारेर वर्षर वर्षा यह केव रेव घॅ के र्दर वा भु पार्या</u> ळेवाग्रीः शुः स्वान्या न्युकावकान्यवास्य स्वामी वात्वकान्यवा महाबाकुन् मा कून् अन् महरा के का की अन्य का की कि का की का निवार चर.स्रेचल. श्रुंत.पस्तेष.पस्रेर.परः। स्.सं.चय.रियायायपुरायर.पसर्थः खलानकुन्-न्युद्रानिने ने अन्यान्यम् न्यं अधिराया नया न्तुलान्दानी न्सुदान्समा सर्वता केवा विन्ने विन्ने ल्रान्द्रः वर्षरः न्यवावी वर्षरः येषः नुः व्यवः मुत्रः व्यवः स्यवः सुत्रः व्यवः स्व यवः क्षंवः वार्द्र स्वा क्षे : द्रावाः सम्मा च्रावः द्रावः द्रावः स्वावः मनः ह्वेन हिर्मेण महेराय क्रिया मरायर ह्र्या विराम्धिय प्रमा ने व्याश्चीन्तराष्ट्रं दे देन्तुराक्केवायवार्यान् जुन् व्याप्टार्येटा क्वेताञ्चरा स्त-कृत्। र्वेश्वर्वित्वीर्वेष्युं पुःरह्मत्रश्चरः अयः विदःष्यान्तः न हरः दे दे के सुद्रास्थयामा नया श्वराध्यारा प्रदास के नया विदाय वारा निवास ब्र.पसर.श्रेर.चर.पश्चेर.केर.। रेधेय.रेसेर.क्षया.श्रुषया.वेध.वेषया. য়ৢঀ৾৾৽ঢ়য়৻ঀয়ঢ়৻য়৻ড়য়৻য়ৢয়৻য়ৢঀ৾৽ঢ়৻ঀৢ৴৻য়ৢয়৻য়৻য়ঢ়৽ঀ৻ঀয়৸৻ঀঢ়ৢয়ৢয়য়য়ৼ ह्येत्रायरायवा विवासायात्विरावृत्तान्तान्तरायकवारायाची र लट.पश्चर.धे.इ.स.चट.बी.क्य.श्चेष.वट.येश श्चे.स. 1258 वर. षाब्वे स्वादेश्वराब्वा स्वादेशकेषा केरा हु या के बाबी राम राम स्वादेश रही राम श्चिषाःग्रीयःग्रॅटः ब्रिनः **क्षः यः स्रट्यः ह्**यायः चर्चाः मेनः च ह्यारः च यायायः स्री

स्यान्त्रः कुत्रे त्याः म्यान्त्रः कुः त्या प्रमादः भ्रवः स्यान्त्रः स्याः स्यान्तः कुत्रः कुत्रः प्रमायः कुत्रः विष्यः प्रमायः कुत्रः विष्यः प्रमायः कुत्रः विषयः प्रमायः विषयः व

क्रूर् नः ब्रैरः पर्येच हे. खे. चर्या चर्या व्याप्त क्षेत न प्रम्त क्षः पर्येच व्याप्त क्ष्रा न प्रम्त क्षः प्रम्त व्याप्त क्ष्रा न प्रम्त क्ष्रा क्ष्रा न प्रम्त क्ष्रा क्ष्रा न प्रम्त क्ष्रा क्ष्रा न व्याप्त क्ष्रा न व्याप्त क्ष्रा क्ष्र

① (त्यव वलका है का हूँ र करे में व वर्ष 133)

ॸॣॱॺ**ढ़॓ॱॹॱ**ॺॾॕॺॱॸ॔॔ॸॱॺय़ॱॾॆॱॺढ़ऀ॓ॺॱॻॖऀ॑ॺॱॸ॔ढ़॓ॱॾऀॸॱय़ॗ॔ॱॿॖॸॱॺॕॖॺॱढ़ॾॕॺॱॱ प.रटा पर्.चंचर.श्रॅट.प.ज्बंबा.चं.ड्बा.चंबट.र्चवा.इ.प.वंबा बेद्-ध-द-ळॅ-रद-बैदा-बद्द-क्रुव-द्-वा-दनुद-रन्द-भेद-वु-हुव-ध-धॅद्--तर्तेते. र्वेषा त्या से न्या त्या क्षेत्र त्या त्या त्या त्या के त्या के त्या से न् न्मॅल'वेल'वुल'यन। सं क्ष'नल'गुर हेन् ळेल'ग्रुरलयः ने क्षेत्र धेतः वा र्वाञ्चयान् त्रिति देश्वर द्रान्ति न्यान्तर स्वर् राम्बत् वर्षा उदा मन्यायन ख्रवाश्चरत्वरान्दर्यायाः से विष्याः ते त्वर्याः ग्राहराः हराः हे स्वर्याः यया *षदःवः*पग्रःत्रंवःग्रुवःन्सुदःन्दःपठराःयःषः इदःकेवःयदेःकपःङ्गःः वयाश्चिरावतुर् परावर्ष्य र्वेषार्थम्या स्वर्धियात्र । हू व्यवे न्ना व्यापना *য়ৢয়৽ॸৄৼ৽য়ঽয়৽য়য়৽ৡ৽ৼৢয়৽ঀয়৽য়ৢয়৽য়ঀয়৽য়৽য়ৢয়য়য়৽৽৽* क्रानिवेद्याचितातावा हेव.रेदाही.र्.श्रे.विरामवरामदाई.ई.हा.स. यर. विमयान्वयाञ्चरः भरायः द्वरायः विमानविमानविमानविमान तस्याङे द्वारानु र्वेदाने न्द्राया मान्या मान्य <u> ब्रियः वियासम् विरायदे श्विः या व्यक्ष्याः वया स्वाद्यः श्विरयः श्विः श्वेत्रः</u> श्चरः चुरः व वि ळे क तर निहरः वतारः ररः ये ह । सर निश्न व सरः ... र्टिषा ब्रट. र्स. प्रश्चे. प्रश्चेषा वया प्रयाप मुंब ने शिवा के हिया प्रवया है। श्वेषा लायहेनवारा क्रेन्य में वा बेवा बेवा वा क्रीन्य में स्वाम्य । वृ लते न्न अल हे सूर प्रमाद प्रस्थान सूर पर्मा मेल के कि या से ते र्जु मा .... पद्मन्य परम्य विन सं संदेशन हेन हे न्दा न्य नाम नाम स्र

विराष्ट्रियार्थम्याययदरागर्वे रायायेरायराकेरावरे राम्बर्याशु 到51 त्ह्रणः मं "अर्-कुरायह्यायम् दावितः स्यार्मायः मान्यायिः र्धरः क्ष्याया मृद्धः प्राप्त प्राप्त क्षया प्राप्त दिरः क्ष्याया या द्रीः क्रि. पृ . वृ र. न्द्र वि . वे रा व सूत्र त में वे . यत परे . या न हें न . हे . क्रि.पश्चिता भिष्य प.षक्र्या.मी.बर्ट्र.पह्य र.मी.म्बाया.थी.बी.र.ता.मर. इसायार्थवायायार्वाराञ्च दाइययाच्चीयाच्चीरावरावचुराया न्तुराञ्च द म्शुवा ग्रीता संतान विवास धिव-पा द्विव के त्या मी ग्रीता में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त के त्या मी स्वापत व्या श्रीट पर बेर् था। दे भूर श्रीट परि बनर वि व्या क्रिय है पर्या वैर्'नक्षण धर'तश्चर'रव। द्सुर'र्ह्चव'इबक्ष वॅरक'हे दे द्य पक्षण सरातशुराक सारकं य दा दे दि दि दे रा गाँव रा गाँव रा में की में न इरा देव.चर.व. भीव. बहुव केल नंतर. बक्रूचा की. चया प्राया गर्य. पर के परी र में "ा वेषा मुर्सा वेद । दास मुराम सुम र र र र र नैष्टियानु कि निर्मान्य स्थान स्वाप्त मार्थिया मानवन निर्मा स्थान स्थान पर्व. क्रेन्. शुर्म. च . न्य मा के. शुक्ष. पक्ष. ने . न स्वा ने . न सा न हि द्व.केल यथा वि.इव.त्.क्री श्र.पर्य.के.वि.व.व.. ह्यरायरुवार्स्स्यवाराष्ट्रीवाराञ्चेराव्याः हे स्वाहर केवायर। हूं त्यादे ञ्च या या के भी मी यह या मिरायकर। यव हुव स् क्षेत्र स् क्षेत्र स् के ते प्रा श्चर्यकें प्रवाह्यका वर क्ष्रा निवाह निवार निवास निवास । र्दा विष्यत्रवेषान्तुः हुद्राचैषा गुषान् वर्षान्वद्रान्ववा

① (和"石工"等可如"中美工"之中"花和"641)

5. ଓଟ'ସିଟ'ଅନ **ବି**ସ'ମ୍ବିଟ'ଛିଟ୍'ଅନମ୍ୟ'ଡିସ'ନ'ଅଟମ୍ଅଟ' ମ୍ୟୁଷ୍ଟ'ବ୍ରିଷସ'ପ୍ରିସ'ଞ୍ଜ'ମନ୍ଦ୍ର'ଆ

स.रेपु.क्रंब. अ.क्टर.बु.क्र्य. गवय. बटा. खेवा "नर.क्रंबत चॅद्रायान्याचे दे सुरावैषायर यहा पदी प्रते च लाये। यदा अवाया ..... ब्रे. इट. इट. ब्रे. ट्रिट. क्र बेय बेट्य. ब्रेट. त. टेट. तर्य. हे. क्षे बेय. व्याम् । यर क्रेक् स्वा के तर्मया केषु । न्या में हिर्या क्र्यया सु । व्या म् राजुः हेरान ठरा हे । यह मामी " दे । वरा राख्या ह्युरा महा वरा संग्रा डुरे न्हे. न्ह्र. च. इवया रवा स्थर है. पश्चरया नेरा "स्याय पर्वाया हे. ५१ व थे. पश्च वया विन स्थया ग्रैया मूटा खदा नगता पया द मूट्या नेट.वे.च २व त.र्थचथ.त्र.कु.पर्ट. केंट.चक्रीय तथ.बूटय.श्र.बेथ.क्रुवी... क्षित र व त. है. क्षु चेश हैया पर्हेचेश चेटा। जना न. चेडेश एट्रेण प्रवृद्धः सर-प्रिं निरुधानी द्याप श्रुप र्वे का प्रेष्ट के वा देवे हे वा संस्तृत स्वाप चिश्वरात श्रम्य पारे रेते अर्थे या निर्माणना स्मित्र विष्य मार्थे वा विष्य बेते पन्न वेते १ सुर ळेन्य य हेर हे व वे। "० वेय ग्यय य प्राप्त ने निया ने व विवा में दाय दे निस्ति वी नाई के विकास है या है सु निय के तर र् विश्वयाराम् विषया निरा विषय विषय विषय विषय विषय विषय म्रुरः नहीं वा में रावा धरा में दा ता दि के रावा में हिरा में वा हे वा हे वा हे वा है वा सःर्वः क्षंत्रम्त्वः द्वः द्वमा द्वारम् रामदः र्वेवः क्ष्र्रः ग्रीः क्ष्रवः लः स्यामः . पर्ववातासाक्षान्याक्षां वर्षवाद्वाताने । यव प्रवादिवाने पार्वे ।

① (名.七七、美山如.古美人.七七、代如.650)

त्रविग्रेय प्रति क्रिया क्रिय

"ने वर्षा के ने दान वर्षा दार्थ दाय न्दा । अव यान वर्षा वर्ष न्गुरः क्वॅब्राविवानिकार्यः पठवायः इववाधीः ह्वाळेगः श्वाप दवायः इयराक्षराम्बर् करा। विदेशन्यार्थ (४ क्षायर वेरा) रहा हेर् गुराहे स्निन् ञ्चरापदे नाम या द्वराप ने दे के के ना सव ना निनः उता नर ..... खरामबरायं यामबेरयाम् इंदाईरा १५० श्रेराके वि: समाम्ब्रा तुषाम्केषा तु मञ्जूषा है। देवे के विवेशन व मं प्रिंतर न्दा मठकामा नरः ब्रेमया शु. व ता ब्रेमया है . सिया ब्रुप्त के . मा नमा ब्रमा विमाया प्रवास मा **कैर:न्तु:**लुदे:र्षेन् अस्व धर:यहुन् यदे हुन् यव बहुव न्रा पर: पर्वोद्दःमृष्ट्वेदःस्वारम् श्रीयामृश्चि मः वर्षा द्वः वर्षः सम्बन्धः श्वेषः क्वे ः हेताः खु-लुन्य-पर्द-श्चन-न्सु-श्चन्य-खु-अर्द- र् । "① वेया-ग्या-प-न्द-। रे हेबर में रायर । सुरायर । हुर राया हुर साम इस.मुयागु करानी नहेराया दे नहेदारा स्राचारास्यातातु कुर्-र्रः। वेष-ठव-४,वव-वठष-श्रे-वर्ड-नतुव-व-श-रेरे-र्ग्यायां ग्रे-श्र-वर.रे. ह्रे ब. डेय. चटर. त रटा। डे. हेय. श्रू चया विचा ने हुवा क्षेता वर. य. यहर्याता श्रुवाया वृतास . श्रुप्ता हिंग वारा मह्र्याया मह्याया मह्या विनयः हुर छे देर द्वर कुष सु दे वया वही नवर वह द या दे नविन

① (â.ヹ゚ヹた.美ヹ゚ヹ.ヹヹヹヹヹヹ. (60)

<sup>65</sup> 

मनुदः नम्या मस्या र्वं वा मर्गे दः मायाया र्यः।

क्रिन्न् वरे शेर् नल्र ने क शेर 1728 वर् क शेर के रे रदःयः विश्वयः ग्री विरः श्रुतः गुः विरः विरः विरः विदः विषयः ষদ: নহৰা শ্ৰী কাৰ ইমৰা বি বি বু শ্ৰী বিদ্ৰা গু শ্ৰীনা বু দ্বানা বু দ भ्रवः विश्वया कु. के. किर. रे. पूरं सप् केला घरं रेटः। पह्या प्रथं सप् स्तर चरुषाती.थ.क. अवश्तिवे.वेव.ती. विरंथा थी.श्रेषा-रं व्यापपुराच्यापः..... सम् "ा देवान्यतामः यात्रम् ने न्राम्या वर्षाः वर्षाः 廣大の、別、台、多、子大、一 となっよべ、 名本、英山の、別大、日本の、美大、日本、 मधियात्.ताराक्ष्याश्चरात्तात्त्राच्यात्त्राच्यात्त्राच्याः भेयापाचर्याः श्रीर..... नवर कुर सुवा विर 1727 व्यर केर श्रेर नविर नेवा वर् न् र प्र लय.चर. मेडेय.चर्से.चर्च ती.वी.वी.चर्ट.वंय.चर्.क्रं. अय.चर्. रूट. म.पित.विस्तान्त्राचात्राचार्टा व्ययः स्वयः व्ययः चवः विदः हेः श्रेटः वीः लय.क्टा व्रट.चेव्य.य.डी.क्र. प्रट.च. प्रत्र. वयायय.पचव.रह्य. श्र.पविर.सेब्यानक्य.ब्याययात्रीच

① (वृ:लदे:इब:इर:वंत्:धेन:देन: दॅल:114)

6. हू'यदे'वर्ज्याचे'वेग्याञ्चर्'र्वेवयान्व्या

विष्यत्यीयात्रह्यात्रात्रह्यात्रात्रह्यात्रात्रह्यात्रात्रह्यात्रात्रह्यात्रात्रह्यात्रात्रह्यात्रात्रह्यात्रह

① (和"石工"等可称"中美工"方式"在"659)

② (**â.**七七天)美国权,口美之, 之中, 天心, (660)

बॅदः अः नव अः तुः नविन्या देवेः देनकः ग्रीः ख्रान्तुः चेः बॅदः अः यद्नाः धः त्रै विन क्षेत्र क्षेचयार, स्थयाता चेचवया घर गंतुवया वया है. रेट. कैचया वर्ष्ट्रया. स्राप्तृ स्पति ह्वा या धरायन् वा रुवा वीवा ह्युव द्रारता हे स्वत ह्युव वितरा र ढ़॔ॴख़ॾॴख़ॱॿॺऻॱय़ॸॱॹॖॸॱॴॸॱॻढ़ॺॱऄ॔ॱॺऻॖऄॺॱॺऀॱॸॆ*ज़*ॱय़ॱऻॕॿॱढ़ॸॱॱॱॱॱॱ म अयाक्षरामा अवता श्री मुंचा प्रतामात अरा रु पा श्री देते:ळे: संयंत्र: रु. याष्ट्रेव: या मुत्र: पति: द्वाद: येता तदी: श्रद: रेता ম'বি'नेर'वे'रुष'**ই**অ'নঅঅ'ग्रे'ग्वषाह्यसाबद्यर'द्वेव' सर'य' शुन'' **''** न्याप्रझ् क्वार् क्रुराया व्युअव् व्याम् या मृत्रा श्रुर हिन धे केर तु प्व न् वी प्व पाय विदाय र बहें न् रेवा प्रा े ने प्र के त्रत्व वै'स्व'कर्'ग्रुर' वर्षायं केव'यं वे' वर्षायः हे' क्षेत्र' वस्त्रुयः पायाः "" बर्देवः सरः नर्ह्ने न् केरा न् नृतृ दः आदः नगीयः त्यायः वर्षे दः नरः श्रेः नग्रीन् र्रे वियामग्रात मुस्य मया रे न्या तहियासुया ग्रीयासुरा वया ने ना ¥ण्यायराचेर्द्राँ "ा वेयायदिर्धार्द्रा क्षान्यराख्राक्षा ब्रि. अपु. श्रु. द्वाया.ग्री. यर. लट. लट. त्राय. थय. थय. व्याप्ते. था. यक्वा.... ञ्चन् ञ्चन्यासु सेनयायान् मृताया देवा के त्या ग्रम् मवमान् मृता स्वारा । ब्रेन. बुल. न्टा ब्रे. बुल. त्वन. हव. क्रेवन ये. नवट. द्धल. श्वना कुल. सन्रः मायायाय म

① (南、石口下、黄可和、口莨丁、子口、芒和、680—681)

दॅब् गुर हू यदे हु हेर पर्व पर्व हर हर है। "रे व्य न्तुलान्दरानुतान्तराकृतान्दरा क्रि.म.न्दरा क्रि.म.न्दरावन धुन्यरा वर्षर येया क्रुन् वस्त्रन् यया धव रहंव वस्त स्नि स्ताय हेव यदि सुर नम्लामी में दि सार्वन लार र में ताल में सर में र स्या है नि सर में र स्या **ल.धे**बेथ.इंश.च.दं.च.डेंट.र्चेबेश चंट्र. इंबेथ चंट्र. बाळेबार्याब्याळेन् बरण्याणी पूर्वेबाळेबार्या हिरान् सहन् रेहा महा **७**८५.क.मेेब.श्रूषथ **७.**च.श्रूर.५.५.५.५७५.५.५५५५.३.५५५५.५.५५५... ग्री-रम्य विद्यापा श्री र में द्या केव ये दे स्वाया र में रया या मेर् र र परे .... म्बर्फ्रिया हे.व. य. यक्क्. श्रे. श्रे. प्रे. पर्टा विवयः इय. मने मिते छेन मठवाने विषायमें अन्ति गन्त न्तर्मा धेव प्तनुषा नह्रवात्रां ही तार्वे वयात्वयायर् न्वव द्राया ही राया विना हुर द वेन्या यय के नर र में रय है। यह केद रेद में के र्रा र्ष्तः स्व वि देव ये के लेवायान हुया रे मानु ही ही द्वारा व्यापम्या " तर्परा भी खु पाववा हवा चुरा यह मा भी पाव के दा के वा में तर्दे । वै.प.म्.पपु. मुच. त. १८८. चर. कर. मान्याची व्यापा स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था पति छिन। ने विग सर् अन् छंग्रा छै ग्रा छ न र स्वा के के न से बह्र-पद्म-रिकालानम्यानम् क्रिन्नियान् मुक्तानिकान् विकालान् विकालान्य बपु. चर्या प. क्षेत्र. च श्री च. त. बे या ची या पहें या १ वे या ग्री या पता ची या 지다하다 '자도' 씨·왕씨·다라' 씨·빨씨·원·원씨·조·다자' 제 수 계 출시·원·다본 다 " र्देब.प.श्र.पटं.याच पर.चया बक्का.चेरा ब्रूट.श.रट. बहतायसर.

<sup>(</sup>न्यन्यवस्य क्षेत्रः क्ष्न्त्कः व्याप्तरः १३५)

> "ग्वयानक्ष्र्या भेदाया केव्याये ते व्यवास्य स्वर्षः है न्यायः द्राव्या स्वर्षः है न्या केव्या स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः है न्यादः

① (南·て口て、美可和、口養て、子口、犬切、683)

ष्ट्र-स्टर्-श्र-मृत्रेष्य-प्रस्टर-पर्न-तुष्य-ग्वष्य-ह्या-मृत्रेर-ग्रे-क्ष्य-तृर-क्ष्य-मृत्रेर-ग्रे-क्ष्य-तृर-------नेद्रयायान्वेरावरुषा अवन्नायाः केवायवानायान्वेषयान्दाव्ययाः तर्ने न्या शु . प्यत्र त्या व दे . हि . स् . है . प्या न्रह्म . वि यः बर यः रेयः न्यः . . . . . . . . . . . . . चरुराग्री: न्यम्। नञ्जालावया श्रुषात्रे । मिरा छेवा सदिः नृ ग्राः ना स्वापाः स्वापाः च.क्ष्य.क्य.क्ष.च्य.चयायायाक्षेत्रा य ो.य्रचयायात्रस् कैरल चेर र्वें र ्हार थर। दर्भें र स्व के नविष वर्ष के न यसामित्र यात्रान् विषयम् स्यान् स लते न्ना वर्षेत् वर्षात्र मुला (धरा) में दाये वर्षात्र न्ने वर्षात्र मुला (धरा) मूर.त्री देवाय त्री विधर.य्रच वच.क्ष्ट्र.य्रच.त्री विश्वयाती ञ्च.पचट.पर्वेच.पह्र्य.<u>श्र्वाथ.षक्</u>ष्.lag.श्र्वा.त्र.श्रिय.पश्च.श्रूर.पर्व्य..... ७|पःश्चेतःग्रेसःय|द्रात्रेय| श्वःपःपग्वरःयदेशक्षःयदेव क्रसःस्। क्र्यानचिर्। क्र्यान्द्रि.चेश्चनः इत्रयायायात्वनः ५६८याच्या परार्तिया *শ্*না পুন, মু. বহু থান ব্যাহ্ম প্রায় ব্যাহার ব্যাহার বিষ্ঠা ব্যাহার বিষ্ঠা ব্যাহার বিষ্ঠা ব্যাহার বিষ্ঠা ব্যাহার বি बे.र.च्य.च.चे.य.च। के.सप्त.र.यम.च०य.र.तथा.सर.ट्र.प्रम चरमा.च्र. केत्र-पॅर-५ ग्राम्द्रं राचे ५-की सक्षेत्र-स्वा प्राम्य हु स्वरः हु स्वरः हु स्वरः हु स्वरः हु स्वरः हु स्वरः हु पर्सन् व बकान्न मुका श्वाकी मार्चन पा शुकारा मार्चन य मृज्याय शुक्षा य कुर्या श्रुवा तो । वर्षा के ब्रायदे के व्यव । वर्षा वन अलात्रम अप्तारासम्बद्धाः स्वारास्याः स्वाम् वहिंद् वया मेरेन ५५०। में वा केवा के ही व वया सकूर.री.पर्देश गेविर.गु.स.र्रेज.स्वयातवर्थ.स्रेर.री.ल्ब.क्रिया

चुलावेदा ग्रंदरायाङ् वेदादव याद्दा बदतारेलाला वर्षात मकलान्युलाभ्रीटाल्या यान्दानहला येटा येन् पुरान्येवा न्या नेवा सुदार्य वद्याल वा स्टेरि श्चेन वा स्टेरि श्चेन स्टान् दे स्टान् दे ने स्टान् दे ने स्टान् स्टान स्टान तृ .प.वे.ञ्च. अल. च ह र. चवे. न सुका में र. रूवा <mark>. घं . न र</mark>. बरा नक्र जिर् नच्याः वृद्याः वृद्धः स्यायः अद्गृद्धः स्वर्यः नजीयः हुँ १। विराधान्त्रेराचरीय वर्षात्रेराप्त्रेयानस्यान्त्रायहेराच्या हु महिंदान र्वामाया अद्राव नाया श्री मा श्री ताया मा निर्मा ता निर्मा ताया मा निर्माण कर्म नाया मा निर्माण कर्म निर्माण क वन्यो क्षे त्र्रेते पने क्षेत्र नरा प्रमुद्र भारे दार्घ केरान बेंद्र मति नन्या र केवा संदे न्स्र केवा नन्य व स्या हु निष्ठि व न विया वी करा न्हर्देशायह्रयात्यार् नहेर्पयायान हराह्या वर्षायात्रा नहेरा इसकाक्षेराहेरे रामा वका सार देरा माले वा सहिता ला धिवा परे वका हेन्। पन्ने ने ने प्राप्त स्वार प्राप्त प्राप्त स्वार स्व मुबाद्धनान्दावरुवायनाद्वेवाद्यास्य "ा देव न्वयायहनायान्दा देते:ब्रु:सं:ब्रे:द्वर:सं:क्ष:पि:द्वर:द्युर:द्युत:द्यम्:यवा:यवा:क्यःद्वर: द के.यानबिरायपु. र्वेयाव् के.वपु. ह्याव् विराया के.यार वै.यापु. वि.या वहतावहर् नु चर्त्रः श्रवा "न्तुरः ह्व द्वारः न्त्रा नेवः नेवः केटः मृ बुराबारुदाचराष्ठ्रवायादे व वनायराष्ट्रवायाद्वी नामी नाम दिलेया

इंगवा गुन हु , नय दव ग्री देवा पश्चवया पार्व देवा " वे वा अवया म्ब्रियामामरुवाय न्यम्बरावा द्रायदे न्ना यामतुव माळेव में पर्मे नेना बर्ने ख्न्य ग्री न स्वाया सुन्या शु द्ध्ना परि ने वान्या ग्री हा या न्य या क्रया इनियाशिष्ट्राप्ते श्रायाश्चार्यस्याद्वेषाग्ची दिन् वयास्यानु ग्रुट्या विवा धेव र्स्ना दव गुर तहेग हेव कर रेन गी सर ल दे ग्री मार स्वाप्य न्रामुका क्रायका अन्। विना वरा भ्रमका नेरान्सुरावा अना न्रा यमः है न र्रेन् न्र मतर न्र स्क्षित्र स्वा स्व वा स्व वा न्या मुंद व्यापत्र प्राप्त मुंद स्वाया माना " भुंद सुर या या वर्षे र्टः इव कुल गुः इटः मी मुद्रेरः पः स्विता स्विरः सुद्रा मुख्या गुः हेतः ... ... पर्यात्र प्रमुन्य के न स्थान मान्य न हुन न वर्षा या तक वर्षा प्राप्त न न न न वर् श्रुर्पन हराम राज्य वृद्याय देन श्री द्वार सं स् पार दे द्वार कित त. बुच. लुष. कंपय. वें. लु . में. चर. ही. क्या. ही. चीय. वे पय. द्या पया **रॅ्व** .य. द्विव . व्हें व . वे . क्र्रं . य. येव . य. य ठ य. य. य हे व . क्रेट . यूं ट . य. र ट . . . महोत्रः धेवा यः च ठरा ता वदः दें व हि स्वरः महाता खेतः खेन् यत ह यः त ह ताः बिटा कु कु व दे द्या या यहे व वरा दे विया हू यदि हा वा द्रुरा गर्डर तु नित्वाया व द्विव हर गुर शै ता तथा विर मी वह व क्षेत्र ने र ह्वि र वया । नरे नाजर न क्षुर श्रिट रेनाय संदर्भनाय प्रति श्रेर क्षेत्र । म्र हिर मवन् देव वदेव धन् छै वर मयर मयर महा अधी मवता है या देरिया क्रे.र्थ्याविषाः चुट्रायरा यहेवार्वे।

① (和"万中天"美可和"中美气")

क्रि. चेथानर ज्ञान्या क्रि. चेथानर ज्ञान्या क्रि. चेथानर ज्ञान्या क्रि. चेथान्तर क्रि. च्या क्र

त्रन्यः स्वतः स्

याः स्वायः श्रीयः श्रीयः श्रीयः श्रीयः श्रीयः भीताः भीतः भीताः भावः श्रीयः स्वायः स्वयः स

 न्दः मठरा थे सदा सुसरा सुदा हु । व्यय स्ट व्यव र्

"८६ अ८० में ८ अ. केव ये विकामिया न हु या र्यम्य की मवदा श्रीवा मुं केव में पठरा आरापित अवापव प्राप्त वे सेर हर में देवा मे। हू नि.स.च हे ब.पहू ब.कू थार्टर रेटा कूथापनुषार्टर के थी बटा भूव अदे सुद में सु मि खू में ज्वा भे सु सु खु ख में मिव खय मदे सु मि इस्रतात्र्यं राहे में रास्रतायाते प्रस्थाप दे र्रा वे सेराहराची न्दाबाह्र विवागविषाविषण्डित इन् चु न्दा अति वश्चर कर विदा इट.सर्व.ग्रेथ. बङ्ग्य.रं शर्वा. श्रुंट. सर्व. बड्रेथ. पहूंच. ब्रुंट. रं वा विश्व. पहूंच. व्रुंट. सर्वा व्रुं अक्षान्त्रा थरायन्द्वान्यस्यान्त्रस्यान्त्यस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यस्यान्त र्म्याः द्वाराद्वारायाता स्वयाः स्रात्वेता च्वारा व्याप्याः कर्णाः मुलायाम्बद्धः मु न्वना सं स्ट्रानी उवा न्वा है । स्र र हुन प्या वया स्ट्रा रुवात्त्या चु मवदा "तर्ने अपराविषया छैन स्नि धरे हू विवाह बारा वयाग्रुद्रः धरा हे . हा र दि . हे नया सरा व नया है . यू मया ग्रद्धा न कर् . ही . र्म्या भेटा यन रर ने मुन्या रर न सुव न के ता में र स ळेदःरदेः नम्दः स्वासः हा त्रारेवा मणुन् ताये मे चुन् द्वायः क्ष्रवः क्ष्रवः स्व बुगा "७ वेग नगमिन वेर य छ के नर नेर भन हे न गर्न वस्तरर कुरामम्ति स्रावेदायते दुरातु पठरायतु ने व्यास्वातु विदायते

② (र्पण प्राथ है ज हैं र क में न ज्रा र र 143)

वयायायर धेरावर्षेत्र में न में राया केवर में राजवर नदीर ने रोतर भेवर द्यनाः नु ति विदास्य यहाः स्वाधितः मुक्ता विदान **ग्री:क्षुर:न|बै:४ॅन १ॅन्य:न|५व:५३व:अ.वुरा:गुर:।** वॅर:अ:ब्रे दे:रा: कर.स्वया. पद्य. श्रेचया. रंट. च हुव. वया यहता. पश्चर व्यवट. प्वेर. त्यंर. ... क्ष्यान्दा भे हरान्दा है नदे स करान बुन्य न वतान होन पा देना मारार प्रमुक् के राज्य वा मारा श्वर हिन में निय के ने में में मारा के ने में मारा के ने मारा के ने मारा के ने न्नन्यात्र्र हिराळे. क्षेत्रया पक्षेत्र ग्रीरा बरा प्रीया क्षेत्र खे य वया विवया. मबेर क्रें सेमरा पद्धरा जिंदा न रेंग्या थेनरा हैं भेद हैं न बरान रहा। नवरः हीव लर हर पण हन पः नेल नरः मु.मु.ने. स्वारा ग्रे. हीन पः झः ≋चिया.लूरं.तपु श्रेयातपु.क्यायकयाञ्चेच पि.जूप मु.पयाश्चेषु रशेरं.श्चे.. विवालानविवाला देरा। "शुः बळं बर्या में ल हे राजन हे हिन बेंदा बरी मुलार्या मुनाम् मूराम्या मूराम्याम् विवास्यया यसुराष्ट्रा व न्दा व्दायदेश्यहताहदेः श्रम्याम् गुरं व्यक्ति है है है दिए। वदःषीःसुदःरेयःयः क्रे प्वतः क्रं राज्यः म्बेद्रलः यङ्गेत् म्वदः यः जॅम्लः ५८ः [ हे केर् ता ब्रेंट अया तक अया तर् ते के ब्राय यह वाया यह या शुवाया है "यरे" BL.ग्री. बेबयाक्ष्यायस्यानु .स्याधेनयामा क्षेत्रः नव के श्वे. में प्राप्ता लयः ई.पु. विचयः हुः ई. हुः छः यह वः यवकः श्रुषः प्रतुषः चरः हः । इयः ई यः .... वरात्र द्वरायरा द्वर मेळ्य इत्या श्वराया श्वराया श्वराया श्वराय द्वराया है तस्यान्द्रायाः केवार्यस्यात्वयाः वु न्दायम्यान्द्रवाः के स्वार्यम्या शुः वु र

म्यान् "कुष्यम्ययान् क्रिस्के स्वान्त्र स्वान

① (न्यन्-नलबाक्ने बाक्नं न्क विन्त्र राम्ना

② (न्यन् प्रवाहित्क हिन्क मिन् ग्रम् 149)

श्ची स्व १८८ म् विष्ण विष्य विष्ण व

<sup>·</sup> ① (ব্যল্বের্মঞ্জু-মঙ্গুব্-æ-র্ল্ন্-ন্র-146)

7. मॅंट'लते'वग्व'क्ट्र्य'व्'जी'वर्षेत्र'व्ये'क्ट्रंवर 'वर्षेत्र' वा

द्रया न्या क्ष्रा क्ष

<sup>(</sup>देव वेर वद्यद्य दे देव ग्या सुः)

**बै**:५घर:क्रेव दें :वला बूट:बानर्बा:ब्रं :क्रेव:स्.बलट:क्र्व. (ग्रेट.) रेथ. ख्यानकृष ग्रीःमन्तिराधेनकार। क्राह्मराधुर ग्रीःमार्गात्वे नकाः **मह्याः केव** मंत्रा मिन् संस्था नरामहेव मन् मा हेवातुः विनः वेरासुवः **बतः है** र प**हें द** पा धेद ले वा गो हे र वा पा गो है र की गो वे र धे वा र र प हो वा ... ... १वाशुःसम्बा "किवामवस्तरान्दा धराने हेवाश्चे सः 1731 वर् क्ष्मकारम् स्र "म् मुद्र केष् विर न वि ग्रार्म् मुद्र के न वि ग्रार्म र लामारे र क्षेमा ही प द्वारा हो र में र ला र वर्षा हो से वर्षा हो र में र ला हो र नन्नामः द्वार् देवानाय। देनाया हेनानी ही त्वार वहना हु नहुता। हे.हे.वर.रूज.हेय.झेट.च.ला निर.ग्रेय.ह्य.ह्य.हर. ट्र.प्रेट. र्रायास्त्राह्याह्याद्वीरताहे। यार्मवराष्ट्री खन्यार्थ्यायाम् इदाया **ॻक्केन् सु**च मदे के क्वे क्टर हे त्या हल महार प्रत्या महार क्वा का स्वा का स्व श्चरतामद्रे पर्दे प्रता श्रुदाय दे द्वा में दाय स्वता ग्री द्वी द्वा ये न्तः अधुवः परः प इथः श्रेवः द्राः स्रोते खिल्यः ग्रेवः न्तः स्वयः न्ययः । मरः क्रुंदः नः वै रेद् । ज्ञुलः रावणः क्रवलः ग्री । स्वावणः स्वावणः विवावणः वि **गु**रःक्षः मॅदः अः इ अयः ग्रीः दर्षा दर्या सार्दा अञ्च वारा हेत् : यदः मी ग्रीः वरः । । न्ह्रव मदी वार्य न मान न ही न मा स्वर्य न में मता है विमानमा तहता रा र्षम्यः भेर्-अमु पर्वः च न्यतः मृतः यवसः मुदः म्यतः पर्वः व स्याप्तः हैराने विरोहे इया मुल के पहन विराधी अपिए किन पर्या रूर म् विकार्षः प्रतः मृ च . पः वा ह्र मृतायः य प्रति स्वायः प्रतः मृति ह्रा विकार मृति हैं ।

Ф (द्यावःवविःववेः बुदःवह्दःदेवःदेवःदवः28)ः

क्षुयःपः धेवः यत्र देन् व्याग्रायः न्यान्य व्याप्तान्य । व्याप्तान्य व्याप्तान्य । व्याप्तान्य । व्याप्तान्य व म्नेता इयाक्याके पहन दिन्। पर केन नत्ती हैं हि दे तु धन पर बाचर्। र्-ब्रेंबार्यः क् वकाग्रीवार्ष्ट्रिन् वकायरायरा गर्नेन् झ सुवारह्वय लुता चुरान रहा। क्षेत्रा सराहेर् क्षेत्र स्वरापर केवा परे विवेर कें सुवा यर-५ में दला हे . यद मा के दा महारा विदाय है । यह साम स्वर्ध के स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर् सुरायानहें दायाधेद। इंदारेदाग्री प्रमाद देवाम सुरुष प्रदे द में द्रार य:न्दः अद्युवः धरः विश्ववः ग्रीः अन्वरः श्रॅं यः न्**ठे**वः श्रुवः ग्रीः ग्रः नः इववः ग्रुवः ः न्दः बहुवः पर्दे । पर्देवः यः पर्शे वा वा विनः न्दः वी यः बे वा या या दिनः য়য়ৄৣ৾৽ঀৄ৴ঀ৾৽ড়৻ঽ৶৻য়ৣ৾ৼ৴য়ৣ৽ৼ৴৻৸ৼৼ৻৸য়৻৸৻৴য়৻য়ৣ৽৸য়ৼ৻ঀয়য়৽৽৽৽৽ त्रवेतः प्रदा ग्राम् ने विवयः सम्बन्धः द्राम्यः प्रवेशः व नः प्रवाहाः ह्या न ब्रिंद्र-ग्री-क्र-पद्देव-च-इवया-पक्ष्मया-भेदा ग्रीयान वया-श्री-विचः युः विश्वतास्त्र नायाः प्रतास्त्र प्राप्त मार्चे वा प्रतास्त्र वा प्रतास्त्र प्रतास्त्र वा प्रतास्त्र वा प्रतास **ळेब**'प्रेरप्तबुण्यान्सुर्प्यान्सुर्यान्धेन् ज्ञारप्ति ळेवायनुब्याः यानक्कृताबिद्रा दे व्याकी नेदान राष्ट्र स्थान केवा में दे नामात लगान्तरायात्री द्वाई डिर्या इवाया वर्ति स्वर्या तुः वृंद्र-त्यः श्वरः अदः सुयः तुः श्वेदः स्वेदे श्वरः ताः त्यः **क्वेः गुदः** मी मा र्राताः रताः " बेर्-धर-रैब-पहिव-पहण्यान्वयां चेर्-जुर्ना म्यार-केव-पिर-पहण्याः 

① (বৃগ্ব'নৰ্বি'স্কুম'ন্ইব্'ব্য'ৰ্ম'29-30)

**बै**:न्नरः हॅ ग्व:न्हॅन् त्वात्वहुर:नः क्षरः ने र् ह्व:न्तुव:ग्वंर:नने र <u> 山</u>ヨナ、対
ロ な、 と さ に が に が に が に が に が に が に が に が な に で す ! に に が す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に が す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に に い か す ! に वर्ष्ठिदशः कुलः देः चं दे वे केदः य। दरः कुलः ब्रेटः य। दे वं केलः ब्रेटः सः श्वायः क्षेत्रः न्यायः वयः न्युयः न्युदः वीः क्वः अक्षुतः चुः धेवः वेयः वियः। एवं त हूव.त.रट.अक्रुव.क.र्य.ह्येग हे.इल.ह्येट.प.ध्ययावियापरीया स्.सं.पथार्.रे व ज पक्षरं बङ्गरं गरालरं अविधानरं परे *ॅंड्*न-तु-मल्या-प-न्ना ने-स्न-न्ने-क्रेन-प-तुन-ग्रीय-प्ने-त्वयःहे-न्राक्षः क्रुवः श्चिरः तुः नवरा श्र्याया न न्रायदेः स्र श्रीः धवः यने र येगवाया यन् ब्रीटःसदेः ग्रान्देन्यान्यः द्वारान्यः न्यान्यः व्यान्यः व्यान्यः व्यान्यः व्यान्यः व्यान्यः व्यान्यः व्यान्यः तात्वरार्च में संस्व र्ष्ट्व र्ष्ट्व र की र मा बर से न मु नवा न से नवा न से नवा न से नवा न से नवा न पहेन'र्थ'झ'नर'वॅर्'ल' ग्वल'क्चे'र्पर'श्चर'र्मे' ग्वल'र्वेप' भ्रेनल'रूर' ' য়ৡৼ৻য়৻৸য়ৄ৴৻৸ৼ৻য়৻৸৻য়য়য়৻য়য়৻য়ৢ৸৻৸য়ৢৼ৻ঀৢ৾য়ৢৼ৻য়৻ড়৾৽ঢ়ৼ৻৽৽৽ ख्. श्रेच् श्रीटाची न् में वा मवला हूं टायर खलाया वा हिं द्वा पता हे पर्नवला <u>ૣૢૻ</u>ઌ૾ઌઌઌ૽૽ૢ૽૽૱ઌઌ૽ૢૻ૱ઌઌઌઌ૱ૹઌઌૹઌઌ૱ઌ૱ઌ૱ઌ૽ૺ૱૽ૺૹ૿ૢઌ૽૽૾ૺ૾ૺ૾ૺ प्र-पञ्च मिन अन् कुन् गुर्म कर्म निष्य येत्र द्वर पञ्च निष्य प्र मर्ख्याया वया व्याप्य १ सं निया प्रस्ते सः ग्राम्य सः मास्रीय सः निर्मायः बैर-अर-पह केव रेव यें केर वर्षे ग्रायर वृषा वरा "न्बे स्व चमः भैयः ऋषः विद्रः देवः ग्रामकः भैदः। मूदः ऋचन् मः यः ऋवः चैयः गुर्-अरतः नर्षयः नर्ने दर्शन कुंद्-मु केनः अस्द्-रहेरः। दर्ने दः वेदः न्तरःश्वरःयःकः धनायम्रं त्वरायञ्च तायः स् स्र्रः तुः यह वः यत् न्याः मने केन हीर वेया ग्रमण "धेवया मयया मरा मवन यर में र ख्यानु : हवा मुव : न्रा प्रवाय : र्यवाय : व्रे : न्व : व्रवय वर्ष र : प्रवेर : न्रा र्जूब-५वाय-झे-ब्र-इवय-कुयानर-अनय-६-विला वि.लव्-ब्रवाय-बद्र-बिदः तर्दे गः मे : हॅवः ह्यः रायाया दे **यहः यहः यहः है रः** द दॅरः केवः क्रंरः येवः र रट. ब्रट. बट. वर. वे. केया कर. रट. मेट. पहूर्या हेर. च श्रवाया इ.च.वथावियाचु.क्र्याचार्यं वार्ष्यं विश्वाचार्यं वेर्याच्याच्याच्या त्र्यातःश्चेतायाक्षेत्रायाक्षेत्रायान्याद्वायाक्षेत्रायान्याद्वायाक्षेत्रायान्याया नर-स्-क्-नम-क्-म-वन बर्द-र्मामवा वर्द-र्मामवा वर्द-र्मामवा विवादियात्यात्रराष्ट्रिन् क्रिं विवयः श्रवाद्यान्ता ह देवः स्वाद्य द्वीतः देवाकेन् वृहेंद्र वृद्धात्व व्याहा व्या वेवायदे ख्राया वेवार वहीं व्या वहीं इंदरनी: अकदारमें र छता दवा सं 'कना निर्दे दार वेनाता करा सर दवा ही · · · · यदे इर मव पर्द न पर्द मा सर में हिन पर सह र मा साम हिन पर्द र <u>ॷऀॱॿॖॕॖॣॖॖॣॖॖॖॖ॔ॣॖॖॖॖॖऀढ़ॣढ़ॣढ़ढ़ॣज़ढ़ज़ॷज़ॹॣॸॱॿॸॺॱज़॒ॣढ़॓ॱक़ॗॱ</u> क्रियाबेर् हु अर्भायाबर र्वा बक्रियाची रेन् वा ग्रम् वा शे (1728)

<sup>(3.</sup>イロで、青中町・口美元・イロ・だれ、706)

व्यायम् की कर्षत्व वा हिराया बहता म् ने क्या अदा यह हरा वते हाता ...... मञ्जाषानावरामा संवादा सर्माना श्री है निया है । सर्मादा प्राप्त श्री इसरायेगराञ्चेगाचरायाचे र्पानियाक्षराञ्चराचरावेदरायायाया **श्चर्-तरः नेर्-ग्रे-र्-वर-वश्चर-श्च-वर्-वर्-तर्म्-यायायते स्वर्ण-व्रियाग्रु----**केवार्यः विवा प सवयापा वार्षे दास्या वाष्ट्र वारा विवा वारा विवा वारा विवा वारा विवा वारा विवा वारा विवा वारा व वै.म्रें.म्र्याणप्याभेटा। श्रेट.क्रेंचयाक्र.च.रटा। भेयान्यायाया तह्रवाचराच्रवारा विवाधित समाञ्चरा है। र्यमावार्मवारा पहेंदा लया "मुल हरता छेव य ते हु नते तह न है न ने है या ही न है । चब्रा-लपटा। भू. जूया क्टर. टु. र्व्या-ब्रे. शुला गुरु ग्वा व्या अवया क्री रह्या. न्ने चर बेर्ना पर्ने ने नदर परि खन्य खंया धेव हैं हैय है कि वति:हेरान्तुः हॅ नरान् धुन् खेन् धरायह्ना धराने हुन् ला अवे धन्न सं वै'यर्ने ह्रयातु। यहिना हे वाग्री प्रामामाधिवाया वै प्रामादे हैं सा *त*तुत्पःचःत्वत्यःमृद्युद्द्यःमद्वैः न्वद्यःयाम्यः स्वः तुः स्रवः न्वरः न्वर्वः न्तृः देवः सरः इ.रम्प्राताः वाल्यवः क्री इं.ला.सम्बारा सम्या वाक्ष्यावादी मावतः द्वान्त्र क्षेत्र क्षेत्र त्र क्षेत्र नवर-वृद्धे-स्वाय-धेद-श्रुद-धद-ध-द्व-धर-विवय- व्याप-न्यायानः तुषाने । ४ या व १ न् या स्याधव । ग्री न् या या हि न् क्वित्र या छ । । । । । । चुदै र मे निवे जेर या ग्यार देवा र र ही छ न्या ग्री का ने द स्र स्व प्राप्त

① (高·万中下、青河村、中美万、千中、芒村、712)

त्याम श्रेश्चर द्वा श्रेष्ट प्रत्या प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्या प्रत्य प

र्षिट्रायाष्ट्रेन् वियान्गरानु केन् बर्माय नवरायया सरायार्थिया श्रेमा । इस्रवासर् दे। है। सं 1730 वर् र र र र र र र विकास से स्वार **है** .स्. ञ्च .प. पक्च र. पद्य. क्रें या हे र. पद्ये . य च त. र. प्रें पद्ये . हे वा ने या ...... **र्गरके** त्युराई हेते हॅरामें त्र्पण रंगापराग्रायतेवायते केता विद्राप्टार्नु परामित्रे चार्या देवा स्वाचित्राचा हु-देन्-सु-वि-क्र-मिन्नेल-क्र-मिन्नेल-ग्रीय-न्तु-सर्दन्-ने-प्ययास्य-द्र-**यावयाः पर्रात्रे देः तयाः इताः पर्वे पर्वे दयः ये दः श्वरः श्वरः यो दयः पर्वे ः ः ः ।** लट.थ.बुब.धेंचया रूर.ग्री.वेषया.बुट.केंट.बुय.च.चर्यट.च्डीट.ख. **€८.**मधु८.म४.१४.लेव.श्र.स.६.४.६० प्राच्या प्राच्या क्षेता अथा... स.स.चर-श्रेव-श्रद-वियार्च्या हिस्-म्याः हेव-छर् ग्रर-सर-म्यूर-लम् दलः मृर् हूर्यः लूर्यः ल विच रा विच र् र व हूयः शुर् र मा ्वयः न्र-हर्म्य वार्ष्य दे न्र-वर्षा मु कित ह्रा वृत्रियः हरा वरा कराः तनरकाकु कु विन्दरान्ध्रवामदे मरानम् दे त्या स्वास्ता ह्या स्वास्ता ह्या स्वास्ता हिता स्वास स **८२ै:५८:५२े:५**६**०:५**:ब्रॅंड्र-०३४:ब्रेन्-वर्ख्यःवयःलयः ४अ:वेषःवः वर्षः <u>क्रियः नृत्राच्याः चर्त्राच्याः वर्त्राच्याः वर्त्राच्याः वर्ष्यः वर्ष्यः वर्ष</u> नम्रेच्या क्षेत्रा विवादित्यात्च्राचराचराचरान्त्रात्मे विदेश्या स्थाया क्रेचा इॅंदर'य' के'.च'य ब्रॅंच विष्य देन विष्य देन विष्य के विष्य के विष्य के विषय के विषय के विषय के विषय के विषय के र्षायः कर् गाउँ र् र्वेषाया श्री अस्या नेषा रेषा सामा कृतः यसे स्वारा स् वियानवास्तान्त्रते, तस्त्रान्त्र्रम्यात् हेत् विता हे । त्या स्त्रा प्रमा **₹௭**˙௧¯˙ᢧ˙ੵੑੑੑੑੑਗ਼੶ਗ਼ੑ੶ਜ਼੶੨੶ੑਸ਼੶ਸ਼ਸ਼੶ਸ਼ਸ਼ਁ੶ੑੑਸ਼੶ਸ਼ਜ਼੶ਜ਼ੵੑਗ਼੶ਸ਼ਸ਼੶ਖ਼ੵੑੑੑੑੑੑਸ਼੶ਜ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ੑ

स्रह्मान्द्रा वहेदानीमाशुक्रावनी वदाकेष्यमानेमान्द्रमानेस दश पथ शु. श्री च ता किंदा खेया या चाया था। श्री चया हुरा खा दरा प्या स्था ७८.र्थेत.त.¥थथ.ग्रेथ.रु८.२८८,थे.से.स.पेशेतायया.प**रं**.रेये.मु.त∠... तहार मीया पर्डे स् वया पर्डे ग्रम्या ने अव द्वया पर्डे मृत्रेयावयाम् इत्रवं यापरा यदाक्के प्रयापत्तुव व्यास्ते प्रया यदा बन्नतःगुरःग्रुअःद्रवःवःकन्।यःनञ्चनवःयःयःवःविन्।र्रःभ्रुरःग्रदेःः <u>ढ़ॣॖॖॖॖॖय़ॴॳॱॳक़ॕऀ॔॔य़ॸॱॻॠॷॱऄॱॻज़ॣॖॖॣॖॴॴॶॴॴऄऀॻॱऄऀ॔॔॔ॗॗॗॗॗॗॗॗॗॗॗॗॗ</u> चक्ष-त्र् भ्वत्वि विवाद्यार इर वी का देवे व्याप्त विवाद विवा प<u>द्मत्यः अव्</u>रक्ते देग्यः अनुदः परः गुग्य। चर्याय.पश्चित्र.ग्री.सर. विटःक्षयःहेलःशुःम्हःळेदःञ्चःमत्रःथःवेलःयःवत्यःम्वटःयहंन्ःने**ः** न्यताङ्गावराची क्राके केवार्यना समापदा के क्राप्त व व व व प्राप्त व व शुःपद्रंताविदातरावी विष्यंत्रं हिंद्या स्ट्या थी. शु-गर्भयः बिद्रा स्व-रूट-रु-श्वेय-स्- स्- स्- स्व-र्म स्व-रूप-स्- स्व-रूप-स्- स्व-रूप-स्- स्व-रूप-स्- स्व-रूप-स्-रूप-लया। यदा विकास याम्बुबाक्चियायळे दान्में दासे नु स्वराष्ट्रवायाम् यात्रहे म्यासुदान्मा हे दा नबेरकः संग्राक्षका स्वारा क्षेत्र कर्मन । यह न विच-मृ या श्रुवार्शा

दश्चम् श्वाद्याः स्त्राचित्रः स्त्राच्याः स्त्राः स्

र्राकेरकार्वे वारेका सरावर्ष रागुरा वदा द्वंदार ग्राय दिवा ग्री ग्रावर खु-चुर-प-लल-त्र्वन्दि-र्वस्तु। त्व्य प-न्नुपरा अर्म् व-ग्री-पर **श्चेन्-दॅर्यःश्च्याःन्हेराःश्चन्यः।श्वेन्यः।श्वःद्यः।श्वेन्यः।श्वे ब.इ.७४.२.१.१४.४५२.११**४४.११४.५४४.९४४४१ प्र.४४४४ प्र.४४४४४ षान्वराहीरान्त्रात्मक्रान्त्रेवान्द्रयान्वरार्वा बेलाञ्चवः लु.स्वायद्वागुदः। दे वकारेदः वैवावि यः न गः स्वायागुकः र्बरः न्यंर्यत्त्रहरः श्रेष्ठं नाश्चाया न्वदायारे विषया वहंदा दशुना र्यं द न न तर य विन गुर प क्रें त तर्न हरा अर पर न अर पर न स्तर स शुवाकेरायामाञ्चिति वे दिन न्दावकरायव वश्चनाद्वे न नवर यादे त्या बर.म्रेल.ग्री.बर.एविच चश्चेर लट्य.श्रेचया गा.श्रीत श्रीचायात्रया **ब्याः** पश्चितः प्रतास्याने प्रतास्य विष्यान् विषयान् विष्यान् विषयान् विषया वन्नवार्द्धरः नृतिवाद्याः नृत्तुनः स्वावाः विक्वाः वह्नवाः वह्नवाः वह्नवाः वह्नवाः वह्नवाः वह्नवाः वह्नवाः वह् न्श्रमधी म्न वर्ष्य देश निष्य वर्षे निष्य वर्य निष्य वर्षे निष्य वर्य वर्षे निष्य वर्य वर्षे निष्य वर्षे निष्य वर्षे निष्य वर्षे निष्य वर्षे निष्य वर् | विकासक्रियान्ता विकास अमा तुरा निकास करा तस्या तु वार महाराष्ट्र **द्रिंट.क्र्या.धेया.चेया.चेया.चया.चेया.चया.च्या.च्रिंट.....** は、ちょうなり、大き、ないないないない。 大き、いいっちょう はっちょう しょうしゅう **A**51 श्रमकारेरायहाळेबारेबायाळे रहा। वाश्रुप्त वाळेबा **र्वम्यः ग्रेयः भ्रः स्टाः नङ्गयः दयः चन् ः तज्ञु मः न् नरः न् यमः यस्ययः नहें मः ः** मन् क्रियातर् मानवर्। पश्च श्चारायव स्वा स्वा में क्रिया है रेया

*ह्म बारा प्राप्ता प्राप्त विश्व श्वर स्वाप स्व* इयसः सं सं रे सः हिन हिन हिन कर् निव सं निव निव स्थान न्ययार्देरावहेदार्श्वराचित्र वराष्ट्रयाची वन्या क्रेया कुषा केदाया (सं क्ष.चर.बुर.) पार्श्नेयापधिताबुराञ्चेष प्रधितापद्याञ्चर वर्षाचेर. म र्यम्या भी ने देवा सु दिन् पर चुर्या ..... १ विवा न राया मा त्रमता ने दे र ह्या या श्वेन या ने कर के कर द हो कर सवा न मा श्व वा न मा शिला हि ळे दिर-द्वर ळेवा बेर पा धर वेंद् तु की पृतर यहरा। इर हिरा ह्वा स विषराम्डलान्दा गाञ्चाञ्चायार्वनाञ्चयवा रतुवान्देवाय्यर केव.रर.पर्थ.पूर.ये. सूर. हे. शु. र पर. सू. सू. यपु. बेचया पात्रेच वेया... मानक्यात्रज्ञुनास्यान्वयाक्षरार्मेरायान्ता हिन्य न्वयार्थन्।नीलुन प्राप्ता श्रमा त्रिया निह र में त्राया स्वाय दह निया पर स्वाय प्रमा वयानदः ते सं सं नवा क्रें स्वा तत्त्वा ना वर क्षेत्रा नवा विवेश स्वितः য়ৢ৴৽য়৴৽য়৸ঀ৽য়ৢঀ৽য়ৼ৽য়ঢ়৴৽ঀঢ়য়৽য়ৢঢ়৽য়৽য়ঢ়৽ৼঢ়য়ৢয়৽ঢ়ঢ়ঢ়৽৽৽৽ चर-र्नाद स्वर्ध श्रद्ध र्मा स्टर्स स्वरः मु . खन्या लेनाया त्री ना ह या ग्री . खे . हे ना . पर्वेग.तपु.धु.झ.मध्यातक्यापट्ट्राचराबहता. हेव'गठरा'रू'। प्राचिद्राक्षे प्रचाप तर्हे . क्या प्रचाप कर्णा , कुथा चेथप तथा पर्धे चे विषा वदःवह्मनानेवेनुवार्षेन्वे अर्दे वा रामवे हुदामामहिन्यायान्यन्व

① (為: 云四下: 菁四四:四美云: 元四: 元四: 756)

<sup>(</sup>ব্ৰশ্বেশ্বেল ক্লিক ক্লিক ক্লিক ন্বল ন্বল:170)

ব্ৰেম্পট্ৰ ক্ৰিয়াৰ প্ৰাক্ত ক্ৰিয়াৰ ক্ৰিয়াৰ ক্ৰিয়াৰ ক্ৰিয়াৰ ক্ৰিয়াৰ ক্ৰিয়াৰ ক্ৰিয়াৰ ক্ৰিয়াৰ ক্ৰিয়াৰ কৰিব

1733 ४५.६ श्रूर स्र श्री ५ ५८ स् ५ ५ ५ ५ में ८ स है ५ १ १ ৾৾<sup>ড়</sup>৾ৼ৽য়৾ৼ৽য়৾৾ঀ৽য়য়৽ৼঀৼ৽৾ঀয়৽ৠৼ৽৶য়৽য়ড়য়৽ৠৼ৽য়ৢয়৽৸ঀ৽য়৾৾৽৽৽ য়ৢ৾*ঀ*৽ৼ*য়য়*৽৸ৄ৾ৼ৾৽য়ৢ৻৽য়ৼৣ৾ঀ৽ড়৾৾৾৴৽য়ৼ৾৽য়ৼ৽য়৾ৼ৽য়য়৽ঢ়ৢ৻৽৽৽৽ तथर र्स्याया खेर रहरा इर तर् चेर स्तर ही साम स्टूर हिर कर दनद्याः क्री:रुन्: श्रद्याः कुदः प्रवार् स्वानः निर्धुयात्र्वालु हु । यदान्ग्रात्यान् । ठराके नया श्रुन् छेवान्यवः रेगायाना हेयाना सुवान्ता न्यान्त्री स्वान्या स्व नव् ग्राबी न में या पार्टा ने स्थया म्यया ध्या धरा धरा दे रे विदेश [यदःष्ट्रियःश्चेरम् हुदःयदः सुन्यतः मृत्यः विदेश्वदः तुः द्वामः क्षदः न्यायः स कुनावर श्रुं श्वाया छ। दे किंद्या द्वें वाद्या छेरा देवे प्यार वा ेवाङ्गवःवः पञ्चनः वयः श्चे क्वये के गाः पकुनः श्चनः यः के पङ्गवः कु*यः यनः स* बर्गवायायवा देराधेरायाधेनवारायाचेरायाळेदाधेरावम्यः वेनलायन। "मदैःवैःषं क्षःनःधेन् मह्त्रनु जुन्नने क्षःतुः वन् स्थानु स्पन्याने यान् न् ने भी स्थान मिन्स् स्वाया केता सराय स्थान्त तु तत्वायायान् वेषायाळे राज्या वर्षे राज्या न्युराळे वृष्या द्वेरा छवा वर्षे राज्या 

मृत्यते न्ना या व के व मि न के व मि

<sup>(18.2</sup>七七、美山村、山美七、七七、天山、田田)

द्गर्स् वि: श्रुत् प्रतिर्णः हे : श्रे श्रे श्रु व्या श्रे व्या श्रे व्या वि: व्या वि: श्रे व्या वि: श्रे व्या वि: श्रे व्या वि: श्रे व्या वि: व्या वि: श्रे व्या वि: व्या वि:

इस्राध्यावरावरा। "तर्नाञ्चनरायहर्याम्यात्वर्यान्याः इंदः विश्वश्र लूट्या ग्री नरे क्री टेंट्रा श्री के विश्व प्राप्त के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के वार्ष के त्रेता मुत्रा शु त् शुराम हे किन् मि वातार मा त्रा प्रा पर न में न्या पान्ना इर-विवयाधारम् विचरमी प्रविवास्तरालर पर्याक्रवायाधारम् । चक्या हे.धेर.चरश. केंद्रश.शि. क्ष्यंतरा श्री. वि. सं. पश्चिर क्र्या. तपु. पण्यात. न्द्रिरः रवः वच्चवरा प श्चं रवबदः द्वयः वर्ष्ठ्ररः वश्चद् थवः हे द्वाः वरः """ बियाना लय ह वयानगत क्रूया गयव गवर में हूं ग श्रव हूं व ल नर **ह**ेनरा मानग्रत हूँ रा.ग्री कुना बक्ष्यया व बाबित स्टान केबा मानु रामा **बिना**यायग्रीनामय। पॅन्नु 'बेनयावयाक्तयाक्तयावरेन ह्वायायाव्व नायर्न् मते.पह्रेब.पाया.बंबा.बंदि.र्टांबबेबा.त.पट्टिंद.पंतु.हेब.पह्रेवा.प्रे..... बर्दना नेते जर हैन मुते के न्या इवल न्या में राय केन से ते प्यापत ला य्यानक निर्वे व.त. व. १ व. विट. श. कट. सट. रटा वे. मू. स. स. में **র্মা-প্র-**ঘতঅন্ত্রমান্তর জ্বান্ত্রমান্ত্র জ্বান্তর স্থান্তর স্থানিত স্থান্তর স্থান্ত স্থানিত স্থানিত

① (र्यन्प्रवाक्ने वाक्न्र्यः मृन् चर्यः 165)

नदे कु वह द हिं य नहीत शु ल्या किया नियम नियम निर्म हे न हि किया **ॠ्बा.तपु.धूट.बपु.चयाप.धूचे.क्बा.पश्चें ४.घा घर्बा.चयाप.कूथाग्री.तर....** बह्बया पठन्वया क्षृत्र तिरा बुता स्था तिरा स्था निरा स्टाया न् ग्रीया ळॅर-७.६८.कुब.त्.वीटाना अळूब.बुटा **"ने.**बबा.वेर.खे.चि.वी. मदे देव केर नशुका भी मनद अर दर्द मुंद्र मनन में दा केद मॅं ते. मेरी रामी रामी रामे दे. केर. ने बरा ना प्रधान है। विशेषान है। ने दे व ठगा ठेरा पावे कृ त्यते कतु व पते इया बरा य दे कि दा ईया या ये ' श्रूर' हु। ' कुं.म्बं.म्बं.म्बं.म्बं.म्बं हे.बक्रवा.ल्बं.त.रटा स्वाव्यव्यव्यव्याद्यं विदः ष्रभक्तेर: हु र १७३४ वर् ११८ सून वर पेर पेर वर्ष "दे न्य हे न्न स केर र त्र कर र । इ न क क क में र र र र र न क क न स न म्बर धेमान भ्रम् म्बर हेन सु.स. न.रट देन यं केरे श्रुर्थ इ.स्था वचर.म्यालिया.कुरावधी.स्यालयाशीवातप्रमकूर्द्राह्या ष्ट्र-व्यक्ष्यः ब्रह्मन् व्यक्ष्यः क्षेत्रः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्यक्षः व्य त्त्रे कुथ.पश्च.स्या.पथ्या ह्रय. झ्या.स्या.कुथ.प्रय.स्य.कु. शु.स्र-मन्बर-युर-चर्छ-स्र न्हिल-युर-प्रि-स्रग्-गृहेल-र्र-चरुलामः इयतासुला दे हेरा झ खरा ग्री ता यह ला द न के ' क्षेत्र द हा हेर का इवरा ग्रेश वह या न्रास्या है । इवा न्यार बुरा विराधेन स्वार हैवा में रा वर्तः वर्द्धन् वरा न्यां वर्षाः क्षृत्रं कुरायः विदाने । न्यादः क्षेत्रः वरः न्या

① (र्मन्प्रवाक्ने वार्मन्म्रवा १७०)

म् न्याः विद्याः विद्

ब्रे'-८--द्रे-चग्-८वेल-कुरासु-८ कुर-०-५८-। अवत-५सुरादर्भे-०-बहत-न्यानने क्रिन्या श्रुंन्यते केन्नु तकन् सन् संया यहाय न्रा <u>इयानयत्राङ्गयाम्ययार्थमयायायात्रान्तर्</u>द्धम्यालु लेयाः महाराष्ट्र ॻॎऀवेयःनययःविद्ः। ष्रियःनेदेःन्नःच्वःवेतःक्षुःइवयःयःयस्यःध्वाः नमातः क्रेंत्रः र्यम् नरः नरः तर् नः व्रंतः धेनः नवित्रः व्रंतः नर वहर्मा अवार्ष के ज्ञान द्वा प्रति वा विषय में दि । *न्बॅदरा:पदेन्*:कृत:कृत्यदे:न्नु:अ:अळॅग:वॅ*न्:नु:वेनरा:हेरा:बन्तःसतः:* ॻॖऀॱॺऻढ़ॖ॔ॺऻॱॴॿऻढ़ॎॸॱॸॖ॓॔ॸॱऄऀ॔ॱॿऺॻॴक़ॖऀॱॿऺॻॴक़ॖऀॸॗॱऒॴॿॴऄॱॴड़ॿ**ॸ**ॱॻ विना-नृत्ता यु:पः सः पञ्चः क्रॅनः पञ्च ताव्यायु : क्रनः पहुं नृतः पः नृतः। नृतः वर्षे वस्ति वर्षे *बन्दः चरः द्र्चेद*ःग्रुं 'बाप्दः'र्से 'श्रुं 'श्रुं 'प्रंटः प्रचे 'येन्यः प्रंत्रं प्रविनः' ' न्दरः इत्राञ्चर्रः न्वेदः राज्ञेदः श्चरः न्वेर्रः मेर्गदः अर्गदः स्वयः विवादः मनः यहं र किरा वि मे ते ते ज्ञाना महिला महिला के वा निवा ने वा निवा वर वराक्षेत्रापा न वश्चर हे रेब न देव न यस नर ग्री रू र व्यव सर है नरा लपर. बहल. वि. द्वेच क्वाय. यूर्याय. पु. पर्टू र. क्षेत्र. पञ्च ला व्या चूर हिंद्या. **इ**थ.ग्रे.र्षट.थर.क्षेत्र.ह्राच्या <u>धूत्र.</u>पद्मारा श्रेत्र.थी. ह्या. भेचया. तपु. धु. सु. चं. चया. यजू व. च हेर श्रु. श्रु. ची. च बै. च हे. पपु. खे. च पु. विग्रह्मावा नेमायमानुवामवाधाः अनवामनेमान् वे तुवा निरा। वर्ष्टर ध्रम्य रोवा प्रवेशन् में या पर निरामक या प्रवास में या

① (र्वन्त्रकाक्षेत्रकाक्ष्र्रकार्मन्त्राप्तरका १७००)

ब्रैट्ट प्रम्मान्या व्याप्त स्वाप्त स

শ্বন্ধ ব্ৰহ্ম ক্ষাৰ্থ ব্ৰহ্ম বৰ্ষ কৰা প্ৰাৰ্থ কৰা প্ৰাৰ্থ প্ৰ बर्ने विषयः विषयः हुरः वी द्वरायः विहेरः परि वरा "रेन् नरः अर्थेवः म्बर्श्यान्यान्वियात्राञ्चेदात्वयार्षेवात्यार्षेवात्राञ्चेदात्याञ्चेवात्या केव-म-न्दा इद्राञ्च-देव-म-के। सु-दू-वेव-र्गगयायायकंगयानुन बर्वायातान्वराद्विराचास्त्राचर्स्त्राचर्स्त्राच्या बर्दराधेनराधेन जुलाद्वराद्वेनान्ने वान्युवावने वाधवरा ठदा बहुद्गान्नेत् केद सं नानेबर्या गुरा ग्री अर्द्दा प्रता क्षेत्र ग्री वरा तु र वितर मेर्वः ययः स्टान्त्रवारा दिन्ता मार्थः श्रुः यद्वः तुः पठ्या श्रुः यक्वः र्मेदे-र्ग्रीयायिंद्र-व् ने ने के वास्त्र-व्याप्त-व्यापत-व्यापत्त-व्यापत-वयाप मैकाभू वाया वेनका पर वह वा बेटा वि वि वेट हुन या के ये है बे तक्तामीयानहुन्दे मेवाक्तवालया श्रुते ने नदे नवामे वरादन्न ह म्श्रिर्द्र च्या क्षेत्र केर तहेनया परे नम्ति म्यू वर म पङ्गला द्या चक्रैपान इश्वर दु. हार् पान धरा विषया न हे . क्रें या में हैं र नहीं म्बन्यान् क्षान्तर्ने ना दे क्ष्या शु क्षेत्र विता क्षुन्य अमें द केद **रॅं-२८-बॅ८**-अदे-न्न-द्र्यंव-इवल-ल-हे-हेर-बंश्य-द्र्य-ग्रें-ट्रंब-इवल-ल-

<sup>ॾॕॣ</sup>ॸ॔ॱॸग़ॱऄॺॱॿॸॱॸॖॱऄॱॸॸॸॱऄक़ॱय़ॕॱॸड़ॹॱॿ**॔ॸ**ॱॺ॓ॱॿॖॱॸ॔ॺॕढ़ॱऄॱड़ॿॱॱ क्रॅनषःयः के:न्दः नरुषाने 'चशुः नदेः नर्गे न्:यः **कुः के**न्नः यद्देनः यद्दनः यद्दः बर्हर्-पर्दे-बर्हु व-वहूर-हे। म्बैस्यानुर-मृत्य-देदे-तुरानु-कर्-प-क्ष सुर-कंद-या मृत्व वाद्व-पर-दाद्वयापावा वी श्वेद-सुषा-परी-श्वम् नैयान हुन् य था श्रुवा न्यर स्थूया दिर ने न तत्या स्वान वा न वा न वा न न्रामुकायान्द्रान्त्रायदे प्रवास्यायाम् मुन्या ठवापविवातुः क्रुकायमः " दे वर्षान् भेतर वी वर्षा कर्षे वर्षे रा व्यवा व विवादा से वादा ता कैनलाव नश्चर विदा दे र्या वी अनल सकेंद्र ॲंदर्स विद्या पार्स्ट्र चुरुवा.पु:र्गार.पदु:ज्वायातात्राजीः झु:रूर्तात्राया हराचे वायावरः.. र्गायः गृहसः श्रृदः द्वेयः दश्चान्यः ग्रीः तगादः मृत्रागुदः दञ्चया "Dठेयः..... म्यायाया क्रिंग्यर श्रेम्या शुः हु । यदे हु । या अळ्या न्दा इ.सं.चर्. न्तर-न्ब्राम्याञ्चेत्रायास्त्रम् । क्री म्ह्राम्याचुन्तामः श्वित्राचेत्रायाद्वेत्रायाः 87

① (司責'司四天'月段' 물도' □美气' 국 □ ' 茂 □ ' 40 -- 42)

नम्भव त्याँ दे ' र्व क्वनण केव 'यह र र वे रा र्ख्या र्यम्य वे न कुरा ले या देवैः यदः तुः हे 'के दः दवारः राद्यः यादे 'क्षे खु वैः खुदः हॅ नव क्षे 'ऑदः हदः । । मनेरमा विवासिन स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थाने स बेर्- मदै नम् तः है ब के ब में ल न क्षुर्ल है । कुल नदै न ह ब म र्रा प्तिःक्षॅरःवद्भःगश्चराग्रीःवहेदःक्षुदःदर्गेषुःग्रुवेःवग्वरःदवःश्चेःवर्षःःःःःः न्बेरलान्ह्र्रायह्रा ररार्र्लाव्याग्ररामह्रवार्ग्रराक्ष्यामययान्र के चेन् वियाधिव गुरा श्रेमया तुरा शे में न् त्रामर्या सक्रमान् सव समया मतुन् है सारीन् न्यान्यायरा होन् क्षां यदा परा महेना स्थानु त्याँ विन क्षा ळ न्य भ्य हुर। र क्षयावर्गे क्षेत्र स्यायवर्ग्य वर्षः वर्षः ब देव रि र वे विवयः क्रिंट र्दर। यह क्रिंय रहा दे र बळे द र यह के हो हो द कु.किलार केबार्या वृद्धा मूर् प्यार्था यहा क्षेत्र पष्टा स्राच्या तनर्वत् केर् विर्राटर्वया ग्रम् व्यापितः मेर् बेर्- पर्द-क्ष्म-पर्यामी तस्यासुम्यादनुव-पावार्वेर-पाविमार्कतामुरःःः न्में या वे या नगता त्यव वे ना मुया न द्वारा ना त्या गुरा है नया नुया या

क्रि.स. 1735 म्ट. नेट. ल्या स्वयः क्रि.स. प्रा.स. क्रि.स. क्र.स. क्रि.स. क्रि.स. क्रि.स. क्रि.स. क्रि.स. क्रि.स. क्रि.स. क्रि

मुत्रा ई.चन.जूनयायीन.बघत.र्या.चुर.ग्री.थि.बा के.यर.चरूप. र्ष्ट्-यू:कृ:वेव:र्षण्यःम्टायदे:बे:ठ्रण्ड्यण् धदे:बे:पे:पे:प्रा चमातः ह्वा बन्दः न्यं वः संगवा हुरः विदा न्ववः धरः हुः यूबाच् वि.क्षे चलाच्। पश्ची पश्चीयाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स 551 **ऴॅॱऴॅढ़ ॹॖॱॾॕॱ∠८.४८.छ.**ऄऀॿऺ॔॔॔॔॔॔ॹॖॱॳ॔॔॔॔॔॓॓ॻ॔॔ढ़ॹॕ॔॔॔॔॔ढ़ॴॖ॔॔॔॔॔॔॔॔ चठर.च.वयथ.ठरं.प.वहपांव.ह.चेप.च०थ.वेथर.वुटा। दे.वयः द्रश्र-श्रेयःस्रयः सर-श्र-पद्यत्। झे.२। पत्ने-क्र-स्वायःग्रे-श्रर-श्रेट्यः न्मा इ.य.२.पत्री य. में . य. व्याय स्वया स्वया स्वया लट.ब्रेचय.पर्यय.क्रे.च्.च्रे.च्ये.च्य्य.र्ट. बह्त.रट. पर्य. क्रे.ह्यं.... मर्श्वन त्यन म्दर्भ द्ये त्या इर् स्टर्ग व्याचित्र व्याच वेवतः त्रवतः व्याः व पात्राकु.विर.पाषुव.विषयान्यु.वार्चरयाशु.वीन् क्रव.वि । वार.व् यापाय श्चि-मदे-द्र-दा द्र-ब्रेटी पत्तरी ब्रे-स्ट्रा श्चितः सक्द-स्वरा सक्दरः मर-मण्यायायते सुदारु म्वोतर वित्र विषया होत् यादेव सर दिव्। इन बरः इरः क्षुः देवः मः क्रेःवयः बङ्ग्याः स्वायाः व निरः दरः वहोयः पर्दः वर्त्तयः । मः तरे नवा धरः वहर्। दे ववा वा नवर ग्री अनवा सर केवा श्रेन ग्री 회독신.월.뇌물다.회성.십.건월도의

यान्तित्वरः "तहस्य विकास स्वास्त्र विकास सम्मान्ति । म्रास्त्र स्वास्त्र स्

अद्र-स्-ह्-व्याः क्ष्याः क्षयः क्षय

श्ची. य. 1439 प्र-श्च. वीयायरी. पर्वेचाकं श्ची. याच्याय वीयाय वियाय विय

<sup>1)</sup> न्यन नलका है का हूँ न का मैं न ज्ञाहर 210)

② (न्यन् नलबाक्ने व कून् क मन जनल 295)

बर्द व।

संनद्रः "म्राम्याक्रेम् स्वाम्यतः मृत्रेमः धिषाः यातृः न्नाः साम्याः स्वामः स्वामः स्वामः स्वामः स्वामः स्वामः मुरान्द्रः मुः च इतः न्ययः व मुरा देवः यः व केरा यदे वि प्यः वि प्यः वि देवायानाबुवायदे विप्याखे तुर्वा ह्यूराने के पूरवि रूटा सुराया थे ञ्च-करे-के-मृत्रेयान्वयाग्री-मृद्दः र्गन्यादः मृत्रान्य र्म् त्रु **ग्रां**यासः यहुदः र्रः तस्तरः तेरः ब्रेट्यः त्रंग्या ग्रीयः पश्चातः हे स्रयः केव-तु-तू-न्न-अ-र्वेनवाद्य-विधानिक विद्यान्ति । कि श्चिरः विरः वेदायः पदेः श्चुः अळ्दः संग्रायः ग्रीः ग्रीरः धेवाः पदे श्वाः पुर्या बी द्व द्वारा ता द्वें द्वारा मृत्र मृत् हेरा:म्र-स्याम्धर:कराम्वयानुःम्वेष्याराम्यः कुत्रपदिः स्राः श्चमानियाम्बर्धान्याच ते देन्याया यहार्षे प्रहा वियानहाम्यह ते स्मिता कु.ब्रैट.चर्च.स.क्र.स.स..थ.चर्च.स.चर्च.स.च्य.चयर.चयर.चयर. **ब्रेक**-मु-ळेब-यॅ-८८-वरुष-सुत्य-व-विवाने-में ८-अ-वे-वर- न्नेववरायः रे वेर् में रवा मा वर्षा शास्त्र शास्त्र विवादा में में दाया मही "1 डेसाम्यययानान्दा दे हेसा मेदाया केदाया कु मुद्राविता पत्रम्याया तक्षायाः वि. वि. श्रे. च हे श्रे. च हे श्रे च हि. श्रे च हि श्रे च हि. श्रे च हि श्रे च हि श्रे च हि श्रे च हि मुद्रेयाम्बर्म्द्राम्द्राम् दायाकेवा स्राम्याकेवा स्राम्याकेवा स्राम्याकेवा स्राम्याकेवा स्राम्याकेवा स्राम्या धनाः द्वेनावान कत् वायो कव् नाशुवान्ता हेवः कवानुः केवः या तत्यान म्बर्विता देश्वह्र्रयाञ्चायाचेराक्षानान्त्रस्य वित्राचीता हिव नन्याः इस्रायः व्यवस्यम् तः वृत्याः न्यः हेतः व्यवस्य व्यवस्य विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विषयः विषयः विषय

① (त्यन् प्रवाक्षेत्रः क्ष्र्ं त्रकः व्राम् ग्रह्णः २११)

न्दर। "धेवेषाव्यन् धेर्।

ल्. ५ रू. ४ . व. वर्ड् व. जवा विद् वी. ५ की जा ५ किर. ब्रह्म अहे अ. र्. वर्ष वाया. मते "बी (तर्मा मुक्त मा" वे लामा वर्षी म्या पते मूरा "बी त्र्वण्याः श्रुप्तायम् वास्तायाः व्यवारा व्यव्याः व्यविवान् विवारा स्वयः विवारा नगायः नविव शे.र्नरः सक्रमा वया है . मृत्यु . सु ते ते ही व . सून मुता न सी . स्यानपुः श्रद्भारकृष् केषाळे मा म्यो मा स्यानश्चित्र पा मा वे द्राया मा नवर पर हे श्रुव पर दे प्रवर हुन (विनय में व स्पर अविय श्रुव ) वयः रवःमृत्रतःस्था ....." ७३वः ग्रयः प रदः। दे : स्दै : वॅदः रा ग्रयः श्चिर्-मेलुर-मे-मेलुर-ह-मेलुर-देल-दर्दर-क्रेब-र्द्दा श्चिब-मेनेमराश्चर ळेब् :शॅन ग्री :सं तिस्र : सॅरि: चव इ : सॅर । द्विर रा र | हें : सं : " हे : पदि रे : तर्यः र केवार्थ "वेषायाय दे धिवारेदा। साम्राप्त साम्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप् लबा वै न्त्र वा वर्द विदाष्ठिया श्री ते न इसवा ग्री न्त्राय द्या स्वा में वा ग्री । वियावियान्त्राची देव श्रूरा वर्षे विषयान्त्रा स्टा कुरा है। त्रवारान्त्वारार्वरावीरवेराधित्। यहका ग्रेवानहा नदे ख्रां वा व्यत् श्रेवा र्ब्रुक्षयःश्र.प्रह्मयः योप्तर्था वयः क्रुव्यः स्टब्रुक्षः वर्षाः वयः क्रुद्रः वर्षे वार्षे वर्षाः वर्षाः वर्ष र्दा वेव.कर. व्याकर. श्रम्यायाया नृत्या पश्चापत्या पर स र्रायव्यामञ्जूनार्गेषार्यान्यार्गातः श्रुर्याः नेवातः के परापहेवा <u>⋛</u>初ॱऄ॔**ॸॱऄॱॸ॒**य़ॸॱळे**ढ़ॱय़ॕ**ॴॿॺॴॹढ़ॱय़ॺॺॱॸऀॱय़ॱॿढ़ॸॱय़ॸॱ*ॸॸ*ॱॸ नी.नगरास्त्रं मुं से नगर नेना सुया दर्गा ग्रम्। वर्गार ता हेना नहन

① (ব্নশ্বেলমঞ্জী আ ইব্ ভে ব্শি গ্রহন 222)

<sup>(</sup>अर्-अविरागते वृत्तिहेन्नेनः देवा 40)

मदे क नम्बार्म निर्मा दे साहित महिता है ते हैं क्रन् र् व्यापा मार्च क्री में व्यापा के प्रत्य षी नरामु ख्रियायया ने विन्दाम्बर्याया सनी दी क्षेत्रा सन्दिन ये म्यायदे .... न्बे स्क्रियल में के धेव क्षयाय क्षयायतम् यक्षेत्र रा "धेवेतानमा इव.कर. श्रूच. क्रवाया नविया श्रीमया क्रवाया विवाया र ने M七.之.美心 पर्व.पावियाम्बेदामञ्जामा चयाम्राम् दार्याप्रे प्राचितामञ्चराः ... वियानदः भूरा "इवियाञ्चर्गितरः क्रवार्ने तरीवातायवियानदरः **ब्रै**८ल'ल'कवा हुवा सुन **ळॅ**न ग्री ख़्दान ने 'ने 'लक्ष श्रे प्रत्य श्रे के र लवा '' मेल्व.श्रीयःतःत्र. इयथा थेयः यक्ष्यं व्रिंग्लीयं वृ र्यायः क्ष्यं या थेयः वर्याः मर्चर्रम्त्रायः प्रस्टित्व्या मृत्रिया विः र्वरास्टेवः प्रस्टिवः मृत्रम् द्ध्याद्वियास्त्राम् न्यापाते ...... व्याप्तान्त्राम् न्यापात्त्राम् न्यापात्त्राम् न्यापात्त्राम् न्यापात्त्र रे.च.श्र. इंच्या वर् १६८। वर्षर वर्षा नर्म श्रे वर वर्षे वर वर्षे मरात् शुरामते श्रु मार्चे व व्याग्री म्यो साञ्चा "७ देवा यावामा व्यतः श्चि द्धवायाने से पुते वदान्तर हुन पत्र विया द्वारा या व्याप्तर विवास वश्चर न न में दा की र गुरा से में न न ने में सुर न ने त से ल गुरा विवायः वर्ष्ठयः चेदः वर्दे दः व्यदः यः दृष्टः । वर्दे व्यवितः विवयः चुष्टः वीवः सर्वास्याना त्याव त्यादि त्याया श्रांता अने निते श्रांता पहें वा मा स्वर त्या तेव 

① (वर् वार् पर वरे चुर वहर देव देव ४४३)

② (a其·a中文·中京·鲁大·中美人·宁中·英和·20)

मानक्या राजका प्राचित्रक्षित्रक्षित्रक्षित्रक्षित्रक्षित्रक्ष्या स्वाचित्रक्षित्

श्चिम् श्वा व्याप्त स्वाप्त श्चिम् श्चिम् स्वाप्त स्व

<sup>🛈 (</sup>न्यम् प्रवाक्षेत्र अर्ह्मन् करि म् म म्राह्म १८०१ २०३)

<sup>💯 (</sup>द्यन्यत्रवाक्षेत्रक्ष्र्न्कः मृन्न्यर्यः 295)

यद्रात्ता स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वया

① (न्यतःनवै नवै न्यूनःनहूनःनेन देवः 32)

② (ব্যশ্বেরস্কুর্ক ব্শ্র্রমে 300)

श्चे मं 1744 वर् नेर वेर वे मंत्र मंत्र मंत्र वा केव वि वा व कुःचल् न्याः नवयः हेरः धरः नञ्जनः यम्। घरः केवः यः महारः दः सञ्च वः धरः **要.कुब.७.८मी पिलाप.ब्र.नर्थेब.र्ट्ट.**क्चे.न्र्र.स्वयाग्नी.पर्श्वयावयर.स्र. देगान बदान स्वान हुन है जा देश में निया निया है वा परिया सद्भावति तही नवा कुरार्वे न ववा ना वा श्री वा नवे वा ववा स्टान् न ने वा न क्लाह्रेरः (ब्रुरः) विदायकुर् ब्रिटः या केवा ये ते राजाय थे राजाय केवा या स्रा aud d. g と. al. g に g , と なと. è と. と ロ. と 白 a a . a. と a. と a. c. g a a. c. と a. c. a. c वर्षण कुन्या मुन्दर्भिन्न अराज्य कुन् निया मिन्दर्भिन न्त्रा रेग् ग्वरा शु कंद मी श्च यर स्मा श्वें ग विनय हुरा देग्-धिरः गु-क्र-भी-न्न-अर-सुन-क्रेंग्रा-द्रश्चिरः। दे-द्रग-मी-द्रग्या **ऄॖऀॸॱॸॖॱॻ**ॸ॒**ढ़ॱख़ॱॻ**ॶॖॖॖॖॺॱॸॣॸॱॹॗॸॗॱॲॻऻॺॱढ़ॺॱॸॣॻ॓ॱॸढ़ऀॱॸऄॖॺॱॻऻऄॖढ़ॱॸ**ऄ॔**ॱॱ चक्रिन्स्न्स्न्र्न्न्व्याच्याच्याः इत्राच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच मायायात्रीय

① (र्यन्प्रवाक्षक्षेत्रकाक्ष्र्राक्षःम्नाज्यस्य 302)

② (न्यन्'न्यकाक्षेत्रकाक्ष्र्न्तकः वृन्च-चन्तः 343)

म्बर्गा "क्षियाच्यात प्रम्म व्याप्त व्यापत व्यापत

① (ব্ণণ্দগমাঞ্জী,মান্ত্ৰ,ছেন্ছ,বুল,মান্থ, 344)

विषयः मोधः स्वाः द्वाः स्वाः स्वः स्वाः स

णि (र्मन् प्रवाहित अप्ति का हिन् का मिन्। श्राम्य अडित्र)

② (न्यन्प्रकाक्षेत्रकाक्ष्म्रकार्म्या

संन्तुःन्दः तन् वानकुः वृष्णनकुनः वान् न्यान् न्यान् न्यान् न्यान् न्यान् न्यान् न्यान् न्यान् व्यान् न्यान् व

10. व्र'यते'त्त्र'अस्म्'न्त्। स्व्व'यते'न्नर'व्येवेर'न्त्र' तेय'व्यायपटे'म्यय'5'शुर'डेट'शे'नेट'चर'यं'ह्र'व्यंत्र्य या

क्रे:र्नर्स्स् क्षःपः दे 'स्या' सम्दर्भ परः गृश्यः तु 'कुलः प्रयः ग्री: म्हेमः' क्षेत्र.ज.ब्र्स्.च्यां ४.८८. ं ६८.चर्चे.घचया.ज.ज्.ब्रुयाची.चया हेरा.स्र-स्र-दर्वन्त्रः विषाधिवः सामितः वी हेन्य गहेन् छै वर वर्षाः म्यायाः स्राया स क्रेब्र-सं न्या व्याप्त क्रेब्र-२ तु । ह्या १ व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त । व्याप इव मरी र दि दे र है र है र वि वि है व प वे र र र है । मुलामदे नगायात सुरामर भेरामर सेग्राया मुन्या हैया सुराधर स्राप्त महेना । य**र्द्रत**'त्रश्चुरः रॅ. कृषं मी. भेर. तर्रात्र पर हे क्र में ता. मात्ररा पश्चित सर्राः परा बळें द क्ष्म के परी ख्रम हे ल बी न सद पा विमाय हे मान द र वह र यर पहें व व व र वे र वे र व व छि व र तु र हु व र श व व र र र । पहें प र ह व व र छे म्र-न्य-त्-न्न रु-क्वा-पदे-स-कुरा-क्वे-ब्र-दिन-धेना न्तुराम्डरामने महराष्ट्री व्याप्तराकेष्य में ने राक्तेष्य क्षात्रा स्वास्त्रा स **पतुत्रायः अक्कॅ**ण्याञ्चः हेताः शुः श्रेष्ठेत् । यदे । न्त्रायः व्रेनः यः विवासः सुद्रायनः बर्देवा क्ष्मायराष्ट्राविदाया गृत्रेमातासवै मिदार्वयाया ने क्षाविदानदा मे वंगकाविरकातुराधिनाळरकाश्चेकाचेरामाविनाचेकातुरहारकवैतारा बुगला बहुव भी विनय हैन बुन म नेया विन नर स्था बव व गान न भी

इस.क.र्या. हे. लट्टा ने. लट्टा वर्ष मंत्र वर्ष मंत्र वर्ष मंत्र वर्ष कर वर्ष कर वर्ष कर वर्ष कर वनवार वीर भे स्वार हो का ह्रां र त्या पा निर हुर स्वता हू । यदी हा स्व बक्क्रम ग्रीट. सिम्राय सवा श्रीट. इता भ्रूर. बक्कर. लूब. मोडेश ग्रीट. ट्रेब ब. छ . नः बर्दे : अपिनः नदे : चुराना चह्नं राये : बरा "भेरा ग्रार के ज्ञार के ज्ञार के कर्केन् भेव द या पहिला पश्चन त्ये दे धव पने खेला पास बुगल क्रेन् खेला त्रुण पः अहतः नृहेणः कुः अहिव पः नृहः। वृः प्रमणः नृहः अहिवः प्रदेः ज्ञानातातात्रात्तुः सद्यतः द्वेताः विना द्वेत्तः व त्रेत्रः व द्वेत्रः व द्वेते व विनः व्ययः ग्रे में अत्यः त्र या वकेरायः धेदः स्ट्रिंग्यः। वरेगः मु मेर्गः मेर्ग्यायः स्ट्र क्वेंन् प्रते नुष्यो द्वार सुराम्याय प्रत्य क्षेत्र त्या दे प्रते दे प्रते व्यव न्यव प्रत्य र्नर:र्टा मृत्रेयाक्ष:वाक्षे:रानतृत्यीयाक्षेटानक्ष्यवायावस्यःर्टा **ผิช:ญิ.ผน.บ**รู้.५€สพ.ก.พ.บขพ.บผูน.ใ.ผีน.พพ.ฎิ.พยิ.ปันาก. त्यात्यान् वा वी चेन् प्यत्यान् चेन् पार्टे ता हे वी न प्रमा केन् प्यता विवास केन्या पश्चित्रियान्त्रियानदेश्वयादश्चरायान्त्रेवाहेश्वर्

নম্মপ্র-প্রনান্ত্র-দেস-দ্র-দ্রা। মু-ক্রব-লুব লেম-দেরিম-রুপ-ক্রি।।

 यमाञ्चिता सरा सववा प्रदेश ज्ञमा स्ता येवा न मृत्या वे ता मृत्या या न व ता । . . . . मञ्जनक र्ह्या चुरायर। देन वका यन राया ने वार है वा चुन छी । बेन्। दॅब<u>्ग</u>णूरःब्रेटःवर्ने चुटःग्रीयःब्रंट्यःक्षेत्रःद्वःदिवःचेनःत्या बह्रमानी विनया सने म्या ह्युन की महिं में धिदा मनिया देन द्वार स्मा बर्वेदःचेदःर्देवःबेदःठेवःचुःबर्धवःयंववःवव्यवःव्यवःदःवेदःवेदःः ग्रै-इ्र-तु-संयानम् न्रयान्यदाकेदास्यातु-नेन्यात्। न्यदायः (क्षे-द्रवर्षाः नेरः) द्रवा रदः र्द्रवायाकः ह्रीरः विव्यव्यहेवा वा नेव्यवा पर्वेदः ः मते सु भेता ने तर् हेन् न में तर् देन है त्या भेता वर्षे र द भेता थ नवायामा के विवासी त्या प्रतासी द्वा मुद्दा मुद्दा चन्नातः नव्हराल् वाळ्न ग्रुटः। चळवः दें सःवहः नीः श्रेः द्रस्यमः श्रेरः छेदः नःमरुषायहितः हिन्याने निवेताया नेते राष्ट्रा वेदा विवास कि.स. (अर्. अप्रयावया विषयः विषयः) पत्र्यं विषयः मिहितः वा विषयः व्याग्रम्यायस्य व्याप्यायः दे नाम्यायः दे ने न्यायः म्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्य बंक्षंव चुकारा वर्षा देव तु कृत क्षेत्र वर्ते क्षेत्र वर्षा कर्र स्थाप देत् मका चका मा विकास में का वा में निया में पक्षेयावयावयाक्रमाने क्रमाना स्वापना विवाय विवाय दे । क्रमान स्वापना स्वापना स्वापना स्वापना स्वापना स्वापना स 

ब्रम्यास्त्रः श्रेत् सम्यात्मात् सम्यात् सम्य

क्रियंत्रे द्वान्त्रे त्या नेषास्य वायायायाया त्या व्याप्त त्या व्यापत त्यापत त्यापत

च्ह्याः व्याप्त व्यापत व्या

श्ची अन्या यह नानी नश्चर वर्ष न यान्या ग्रह्म न्या व्याप्त व्यापत व्या

① (四首、如四本、四角、夏下、月黄气、青叶、黄河、53一年56)

11. व्यान्यसम्बद्धन्त्रेन्द्रम् स्वाम्यस्य स्वयः स्वय

न् त्यते न् ते केट न् व सुर ग्री के त्य न्द न करा व न ग्री त्य प न्तर क्र.विय.क्र्य.तपु.चम्य.चश्चर.क्र्य.पर्या वियात्य.व्यात्रा व्याप्त.वा मदे न न्द्र है या नवराया वैनाय में दायहुन देरा यहे वा शे ह वका छै या सं कुरा दें या न्याय है न्या संद केन प्रदे र देश हन ग्री थिन क न्या न्या न्या स के.च.प्रवेषः वृषाः पर्देषः श्रुः श्रुवा अपयः देषः श्रुः र परः यपः श्रुयः पर्देयः मादै:तुल:नगदःश्चं दःश्चे:यरादम्ब:नदेरायावदःयर् यावरःव्वरः सुरः **छ-२८-१** चर-कुल-कु-। कुर-व-वह्र-, पत्र-बर-। "ने-बयाक्ष-५८. चरः वव बाग्री क्षे म्दा बा चर्वा च के बा च वर्ष हैं । यह व्या में दिराया सरा हैं वर्तात्र त्या के त्या देव के देव त्या प्रत्ये वर्षा वर वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ह्रवाग्री के म नेवावना सराया हे या वया नवर हिवाहना है या श्री निरया । मतर बुर हर नक्षेता "केवान बुरवा तत्वामा नरा ने निवेदार्थ स नवि विवासं राषी माने वास्त्र सुराया के न्याव राषा नवि नवि विरा ना नहॅन् पर पर । "ने नका कै न नर नका कर्न न करा हूं नका कुका ने हिन য়ৢ৽ঽ৾৽৾৶৻য়৵৻ড়৾৾৾ৼ৾৽৸ৼৢ৾৾৽৸ড়৾৽য়ৢ৾৾৽৻ৼয়ৢ৴৻য়৾৴৻য়৾৾৴৻য়৾ঢ়৻য়৾ঢ়৻৽য়৾৾৻৽ঢ়৻৽ मैया वर् ग्री मुला वर त्विद्। "अकेया मयया विदा। झमा धरा तु न्या से ञ्च'यःश्लु'द्रेर'पर्वुव'यदे'क्वाधर'≪र्यण'परायःरेव'र्ये'क्रेदे'श्ले'यः≫ वदः। "तर्भन्यान्दायाक्षेत्रार्ययान्यति वृत्तुरायायानुवाक्षरा वन्

① (ব্ৰাব্রাখন ইকাচেরা)

② (af.aluz.ag.ac.a美之.ja.tu.28)

लूर-क्रेब-ब्रुड-ब्रुब क्रेब-त.क.श्रट-ब्रुथ-ब्रुड्थ-रूथ-ग्रुड-ब्रुव-ह्रुब-गु.ब्र्याया ग्वर है। चम्दार्या मृदाया केवा येवा नहीं नवा नहीं नवा मदे विवाय हे रूट वर्ग त देव है ने वर्ग वया इया मध्य कर है वर्ग तरा र्रः न्बॅर्यायायाञ्चर् केषा ग्रुर् श्रेष्यायायर यर मुदे ग्रु न म्र **३**८. क्ष्यांचष्ट्रच्याः स्त्रांच्याः क्ष्याः स्त्रांच्याः स्त्रांच्याः स्त्रांच्याः स्त्रांच्याः स्त्रांच्याः स् म्बर्भ " किवान्ययात्रम् क्रिं निर्मायकात्र्रायते त्राया रहा मैका मञ्जापन्य म्या महिन्द्र विकास स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन म्बर्शित्रमृत्रम् विद्याने नियाने नियाने क्षा क्षा भीता मुल्या मु बेबेयाता श्रास्याश्चारा चर्षा या कर्षा स्राक्षिता स्राह्मिता स्राहमिता स्राह्मिता स्राह्मिता स्राह्मिता स्राह्मिता स्राह्मिता स्राहमिता स्राह्मिता स्राह्मिता स्राह्मिता स्राह्मिता स्राहमिता त्याचेंद्राया क्रेक्ट्रिया क्रें दिवाहुका सदावी क्रें व्यान्द्राया विकास दिवाहुका स्वा ६८.मु.पथार्च्यतिश्वात्तवियात्रा <u>"</u>७ प्रयायात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रा रे महिन ता हिन परे ने स्वर न त सुरा ने सा व न दिन परे न स धेन क्षेत्र: क्ष कै.स.क्या.की.म्ब.रम्स.म.इर.वि.की.मे.लब.स.पाया ह्र्या.चेद.क्या. **४५**-७-कुःविगःवेदःस्रम्याम्वदःर्वनम्वदःर्मःयत्रःरे स्रमः मश्चरः वदरः श्रेरमदेव ह्व में व्यापु वार्षराम विषा सराम वह र कुः " दे नवर् भी द्याय यन्तर स्

् सर्व्युर्वे अत्रव्यामुयार्वर् ग्री हे वर प्रज्ञंता हे वे प्याप्ता

① (र्पन्पत्यकः क्षेत्रकः मृन्जर्यः 376)

<sup>(</sup>नैयः झेन सॅटः पते : नृश्चेष्यः सुः मृष्यः प्रतः 15)

खन्तरकृष्टर्भेत्रदेश्यक्षेत्रदर्भन्तर्भवश्चरम् । अद्धित्रवृत्तम् । अद्धित्रवृत्तम् । अद्धित्रवृत्तम् । अद्धित न्दर्द्धत्वाच्चराष्ट्रर्द्धत्वा यम्द्ररावयाम् श्रीवायरार्वे क्ष्मणासदैः लद्याः कुषाः ग्रीः यहं र् वक्षः र्वान्यवयाः विः भैदः श्रवः वदः । । खन्नवाक्षीः श्रेषाधरः भैरासरायारी वळता रुवान्ता ने प्रविवाउँदावा नक्र-रहा नवसानहवानहाडुनार्यनवाग्री वरासु भेरासरायानमा चयु.लयाबह्रम्। म्ब्रीयाने प्राप्त क्षेत्रम् अस्त हुन्। हुन्। हुन्। हुन्। हुन्। हुन्। हुन्। हुन्। हुन्। न्ता नम्बरक्तान्ताम्बरास्वावर्गान्ताम् नम्बरास्य र्षेत्रयराष्ट्रयाचे क्रिया वर्षेत्रया वर्येत्रया वर्षेत्रया वर्षेत्यया वर्येत्रया वर्येत्रया वर्येत्रया वर्येत्रया वर्येत्रया वर्येत क्रूट: २ में 'झ्रेन्य ग्रे 'च 'च त्वाद: १ क्या म्या च ने 'क्षेत्र क्षेत्र' ुँ ८ क्षिन्य वर् विर नेया शेर् न्यर पत्तर पत्ति क्षे से हे 1748 हे र्य त्रुवार्र्रायर् यावराव्यवारु रावेषा ग्राया ह्रं वावदानर । कुतैः वयः नैदः तुः पठनः नृष्वेषाये पषः नृष्ठः विषयः सन् । वर्षः । वर्षः । द्वावयानबराही हु. सर. १।

> त्त्वराज्याम्बर्याम्बर्याम्बर्यान्तः । । त्रिक्षः विवाक्षः विवादाः वि

चेथान्य विर्वत्वत्य विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्या चित्र विद्य चित्र विद्य चित्र विद्य चित्र विद्य चित्र विद्य चित

**६** छेन भे.थी वि.स.मेर.लट.सक्षातार्ट.सक्षातथ श वृथ स.पंत्रेल ब्रेन्-चुन्-कुल-तु-र्धुन्-धा क्रुन्द-र्ख्य २ स्याधातादी-वियानमुब्यधार्द्यः रुदर है : बे : क्रुबारा पार्विष्वारायदे : इया त शुराया ने द्वा व व व दिर कर न्रॅर्न्स्। ह्रेंब्रक्र्न्ञ्चन्यते न्रेन्द्रक्र्यः अर्हेन्वर भेरः श्रु न्यायतः प्रत्याच्याः वर्षाः व्याच्याः वर्षाः व्याच्याः वर्षाः वर् पतै केंद्र त कुँ न न्दर त कुँ बाका या बेद कुँ कुरा। यद पति व र कुँ का र ब विषयः भेटः सः निष्यः विषयः हेषा शुः त श्रद्धाः अद्ः ग्रुटः। इटः **र्भ-श्रेत**-स्वात्य शु\*र्श्चून्-प्रदे<del>-श्रद्भद्</del>रस्थ-स्वात्यात्रात्यात्रात्य-प्रस्तात्रात्य-प्रस्तात्र्य-प्रस्तात्र मब्बे ब.बी. बर्ट्या शु. बेयारा रू. पहिंच हैं. पहिंच हैं। या देव हैं। या देव हैं। या देव हैं। या देव हैं पर्वेगल। रव.त.तबर.तूर.श्च.पष्ठ.ईव.गेधेश.रट.। येल.श्चेश. नम्नन् माने क्रिया में निर्मात सहया दिए हिन सार माने से नता सर है। ना ता दे वहंबाधते सद्दर्श धुद्रवाही वव्दाव्य द्राप्त वर्षा द्रव्य वर्षा द्रव्य इ.चर.वेर.चपु.च्यातक्र.चयायाचान्द्राक्ष्रा चर्चा व्य वु.र्धियाकी. वि.वै.व.पष्ट्रेय.पष्ट्रे श्री.य.श्रर.तर.येषयात्रायायायायाः श्राप्त श्रीयायर श्री.री.श. वयाह्म वायानु वया हे पर पर्छ पानर वाळ द नु वळे वाहे। "वेवा ह्येर" ब्रत्युर्वेराह्मवानुषानुकान्ता नेवाह्म हुँद्रह्मान्वरा मायायास्य प्रमुद्धायादे यह मात् । है। ह्या प्याप्त है । यह वार्मे माया है। स्.वे.वे.च.चयापःइव.के.वर्.प्र.प्याप्तियः पर्वयः वयः क्रा. श्रीरः न्यान्तिक्तार्यास्तरे श्रामा भीत्रात्मा महिमालमान्त्रमा परि मक्षाके वास्तर स्वामित सिर्याम केवा सामा विषया हिता । नक्ष्येद्र, ज्याया साह्य राये हिया येव पहरा क्ष्य हिरा ही राये यह वास

"अंतरा भेगार्वार व्यारमा गरा ग्री महिला वर्ष्ट्र-महार्रापर। **६८.प्यान.धी ब्र.ल्य.**पष्टे.मे.र्ट.व्र.च्.चेच्य.प्यायया अग्रेय. য়ৢ৾৾৾৾ঀয়ৼ৾ঀয়৾৾৾ঀয়ৼৼ৾ৼঀয়৾ঀয়ঀৼয়ৢ৾৾ঀৼ৾য়ৼ৾য়ৼ৸ श्च.य.वेश्वय.त.रंटा वे.ब्रा बेटा बेन्य.वेर.पञ्य.वंय. बर्द्दर्भागुरायान्वमाविष्याम्मिष्यान्वमान्त्रम् वयारेन् त्याम्बुद्राचुद्रा विन् द्वेदे चेन् नन ने हे क्षेत्र धेव छै नवया वस्यायेमयामा लु यद रु न्या देया द्या मृत्वा सु । यद वे वद वितरान्याम वितान्ता वितारवारवार्याञ्चरार्यमा वितानवार्याः विवार विषरः विषानः बेद्। द्वः ग्रदः संदे त्यात्रः द्वारः हुदः वः वेदानः न्यं न **ॱ** न्यर बेर् र व स्व म् न्ये प्रव स्व के से र व से महा महा के व सा ... तुराचुरावावमान् श्वाची र्ये क्षराधेवा रत्ना यता है क्षरान् वराधरा त्रुंत्रा अत्रप्तात्र्वेत्राय न्द्रत्युत्र त्रात्रुत् क्रु अत्रहेत वृत्र । "1 <u>बेरा मृत्यान क्षेत्र प्यन ग्री ज्ञा या सुत्र हिंग उग्रता वर्मे व ते व से के त्रा ।</u> बी.र्यर वी.य्यां यरे स्व क्षेया यगत क्षेत्र तुर र्वा पवे पक्षे ह। बर्ने बार्य विवयः हुर छे देर द्वर कुष यठवा श्रव वर देरे वेर ৠৢ৾*ॱ*য়ৢ৾*ॱ*৴য়য়য়৾৽৸ঀৼ৾৽৸ড়৾ঀ৽৸ৡ৾ঀ৽৸ৼৢ৾ঀয়৽৾৴৽ড়ৼ৾ **ট্র-**মে এর ব্রাক্তর বিশ্ব বি निर्ग्धे वदर प्रेंत् है उवा यहर स्नि वेत् वेत् न्या यर वुद्द हिय। **বি'**নিৰ্বি'ঞ্জন্ম'ল্'ম'ন শুক' ঐব্'ক্ষা শুল' শৃত্ত' নিষ্কুৰ্' শুক্তিৰ প্ৰ

मः पर्दरामञ्जरः श्रृयाञ्चरायतः श्रृतः व्यापः द्वारा व्यापः व्याप

त्यूर्वेत् इया कुषा गुरु द्रार व श्रुर व व श्रुर व श्रुर द्रार हेत् गा हरा वि वा वर् वायर नया या ता व वा गः मा वर्षे ते वह गा रहा। क्षेत्रवास् न्देर मं वा उत्ति वाया ही । धावा हेत्वा ही दे न वाया हेवा बेद्राचनायद्यासु कु च इस्रायाय में त्रेद्र तु द्वाय विद्या विद्या रसरामञ्जालाना कुरस्य में प्रवास के न्रायक्ष है । न्रेन्य। मुद्रा न्माना मुड्दराय र्वाया यान्द्रा व्यूटर व यदि हिटा मुं हु नदेर **ड्रेस्ट्रिक्ट्यायाक्रेत्रस्य स्थायायरा**त्स्र्राक्षेत्राक्षेत्रास्य स्यास्य वास्त्रास्य वास्त्रास्य वास्त्रास्य त्रुं नः नक्तः श्रद्यः श्रेषा के द्वार श्र्या द्वार स्थापन्यः या मृति । मृतः मेताः बर-बर्यानाम्बर्धाहरात्याकृत्युः हित्र्यश्चराशुः यत्राज्यः हेः वित्रम्याः वर्षेत्राः वे ...... १ वित्राः व्यापायाः त्याः व्रताः वर्षाः व क्षेत्रका श्वाका पश्च का है। सन् का वार्षित र दा हुदा सः क्षेत्रे श्रेष् कावा वा वाका वान्स्रायह्माविवासंमहिताराराविवामी नि कमानग्रामारे धेव। **विष्याक्रमान्यतः व्याद्यान्यतः तुल्याः त्रमान्यतः वर्षः व** बाक्तःमवा "म् नित्रहेषाया रहेते अन्याये मिन्वाके यहा वेत् उहा ।

प्राप्त मा के स्व क्ष्र ति म्या क्ष्र मा क्ष्र

<sup>(</sup>অই অন্তর্গরি ভূম বইন্ নি ইক 63)

दाक्रें म्यराया या मूर्य क्षाया के विदा विदायर के निया स्वातः सुर्वातः स्वातः स्वातः निवादि वासीयः वासीयः वासीयः विद्यातः । रेग्राश्च्यायाः ग्रेशः **कॅट्यायः भृःत्यायम्यः यात्रः यात्रेगः या** वृद्धारम् वृत्याः युरा रातुरार्वादार्थे व्यरासेकाञ्चात्रकरास्त्रक्षे वाद्यास्त्राच्याः रुदा यगतः वृष्-दर-वरुषायहतः देषाशुः <u>हॅ</u>र-द्-म्बर-व-धेव-वतरः। लयु.वयावनयात्स्याचीयाद्वरामा चेत्रान्त्रा च्या नेवास्त्रवाद्वरा श्च.क्च.रट.च्र्य.व्य.व्य.द्य.द्या.वी.वा.च्य.च्य.व्य.व्य.व्य.व्य.व्य. श्चरः यदः त्रां नदः श्चरः श्चेदः द्रां यः यदेः चनादः यदः द्रः । मयय. रूर. अष्टिय. त. क्रव. त्र. परं . परं . क्षेत्र. वं . परं वं या व्राचित व्राचित व्राचित व्राचित व्राचित व् वह्रम्'र्सम्यान्मेंयार्द्धयाग्रीःवु'धिमान्ददान्दान् स्थार्द्धमानु मिद्रा ॻॎऀॿऺज़ॱॺऻॴॴॱऄॱॱॳॿॖऀ॔॔॔ॱॷॳॱॾॴॹॖॴॹॗऀॴज़ॗॱॴय़ऀॱॿॖॱॴॸॱॱॱॱ बरदःरेतःग्रे:न्यमः इययः सन्मरः उपः वहें ययः ग्रुतः प्रः । न्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्राक्षराक्षेत्राक्षेत्राक्ष्यात्रान्त्रान्त्रान्त्रा <u>ૣૢૻૡ:ૠૢૼૡૡૡઌૡૢ૱ૺઌૡ૽૱૱ઌ૱ૡૺૹ૱૽ૢ૱૱૽૽ૺૡ૱ઌૣઌૺઌૢઌૺૺૢઌૣઌ૱</u> मु के रोत्रायानम् पायद् ना स्वत्रा केवा चुर् पारा गुन्या निर्मा भूपया ने राष्ट्री व्याप्तिक्षात्रम् । व्याप्ति । व्यापति । व्याप्ति । व्यापति । व्यापत वृद्धिः हु त्यते कु हिंदः रूटः म वेययः कुटः इययः ग्रे प्रमें र् यः है 'हुः पर्वः """ क्षन्भ्रेव-श्रःकुरोः विश्वासः मृतेशः व व्यव्यास्य व व नार्यास्य मार्यास्य मार्यास्य मार्यास्य · . ① (न्यन्यत्वक्षेत्रक्षेत्रकः नेन्यन्य 404)

म्बरः। "ण्बेयाम्ययानः हिरः म्हान्यः स्वरः म्वरः म्यः स्वरः म्वरः म्वरः

क्रिः। न्याच हुन न्याच न्याच

यर्न्रावात् स्वान्त्रात् स्वान्त्रात् । स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त्रान्त् स्वान्त् स्वान्त्यः स्वान्त्यः स्वान्त् स्वान्त् स्वान्त्यः स्वान्त् स्वान्त् स्वान्त्यः स्वान्त्यः स्वान्त्य

① (र्यम् नलसः ह्रे सः ह्रॅर् कः मैं मः म्रद्ध 390)

लाम्राज्यक्रव मृथाश्चिष पश्चित्यार्टा। श्चि.मृ.यर.मृथार्ट्रापर्वेर.प्राप्त म्इं य.क. न र. न हेव र. मैं य. हे व्यय. त. व. वर. व. वर्ष. त. य. हे व. वर्ष. ... ठवार्थे न्दावक्ताय रवा मुन्याय प्राप्त क्षेत्र त्या वक्ष वक्ष में विदाय दे नमातः देवः वर् नु मार्थर् भः रहा। हे ज्ञा अरायदः न राया हुराया मार्थः इस्रात्युर्रासरातु चुेद्रार्करा। क्रेंतासहुद्राची मा स्वाप्ति प्रति प्रति प्रति । ग्लेबर्त्या अराक्षेत्रा क्री प्रतराहर मुर्ग्य क्रूरायदे में वा विषय क्रिया क्राय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय ঀৢয়<sup>ৢ</sup>য়৾ৢয়ৼ৽য়ৼ৽য়ৢ৾ঀ৾৽য়৽ৠয়৽য়৾য়য়য়ৼঀ৽ঀয়ৼয়৽য়য়য়৽ঽৼ৽৽ ऱुषाःषाञ्चरानः रहः रहः वैदः ग्रहः न षाः अदः धवः खेषः श्चेदः यनयः **वेषः** यः ः खे<sub>.</sub>चय.तय.चिट.यपु.देच.इय.जघप.रच.क्टेर.च्य.थी.च≥ट.। विर. त्रः बरपः द्रथः सिरः लरः मेळ् । घरषः क्रीयः र थर् । य. यूर्वयः सिर्वयः मेड्रेयः । ग्रं हित्र है स्वा पु होत्र प्रदेश केषा क्रम्य के मदे वाव्य हिता देश में रा बंदि श्रृद् नु पहिंदानर पहेवा " वेदासर ने वेदा हुर न्र पहुर मुक्रस्ययात्रिंद्रायदे यह गानु। वाधतायदे प्रवादा या धुरा रहें या सु बहुन्त्वस्तर्भन्यः वित्यक्ति संवयः द्वार्यः व्यत्स्त्रः वित्रस्कितः इंद्र-लच-हुद्र-महेवायानगदायन धर्-दर्ग-ग्नेवा (1750) इन्यः हे. स्पृ. हेर. में. पर्वे. तप्. क्र्याप के. बिश्वा के. वेव. वे. वेव. बेव्या कर. दक्र-अर्-इव.क्य. वर्षा वर्षा पत्रीय.क्यीय.व्रिव.वाच्याय.िट.री.प्यायय..... ब्रमायाम्याविक्याग्रीक्राम्या दे तहलाहु विवानहेराव्याम्या क्रियम्य क्रियः क्रियः क्रियः क्रियः विदः प्रवे न्त्र नित्र न्त्र नित्र क्रमां सर्थ केंग्राचर में इंट विच पर्ट है हिं पर्य ने पर्य विट पड़े 

৸ৢৢৢৢৢয়য়৽ড়ঢ়৽৻য়ৢৢ৵৽য়৻ৼৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢ৽ঀড়৽ঢ়ৢ৾৽ঀড়৽ঢ়ৢয়৽য়য়৽য়য়৽৽৽ न्ययः चुन्यार् या विना त्तार्यर न्यया हे न्ता विवान ने वा ग्री स्वार्थ र्त्राया नर-पस्वयः मदे मिन वाहे मि वाह्य मिन केव रि मयव प्रस्य न्द्रेर:इब्रब:ग्रेब:न्डंब:डुर:द्रिर:बेर बॅ:च:बय:बॅ:के:र्ट:। त्रवान् केता ग्री : श्राम्या श्रे : ग्रान्य ता न्यान । ता विता केता ग्री : श्री : श्र बर्दर्'वदर्'। पयान्द्रामयान्चेदान्द्रयाने नगादाया द्रापदाक्षा राष्ट्राच्या विकास मान्या विकास भ्र. द्या ग्रीय खेराया पार्टा व्राप्त व **छु:नवर:व:सव:क:**के:ऑर:५वॅद्याहे:नगत:३व वी:नहॅर्-रॅवःया बॅद्रायाळेवार्यात्युर्यायेदास्यानुयायात्वेदयायाळेवयाययातू विद्यापा मृद्धेयावयानग्रदाविययाग्रीयाक्षराम्बद्धाः हियादाकाष्ट्रिताक्षराय रदाक्षः चर्चर वया रूर् यारवा मूर या क्रेक् च ते वे स्वर्ग स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वर्ग स्वरंग स सम्बारा होता ग्राम्या का मिता व्याप्त मिता के व ট্রী'বস্ব'ট্রিশ্বর'বর্থ'বর্হি'ক্ট'বর'বর্ম'র্ব্বর'ব্দ'ি ষ্ট্রী'র্ম্বর্ম **७५**-५-%ताग्रुट् अः येन्यायायागुद ग्रुतानगार्येन् धराङ्ग्रुन न् नेतानेता । क्र.र्व.ग्री.व्यायामवाव्ह्ंवास्ययान्ता ह्र.र्यायवयानाश्चरामया नयंत्रःसूरे-वृष्यः इषयः नगेषः र्षः श्रीयः प्रः क्षः नश्रीः वयः नर्दः पर्मान्तरा भ्रामान्या भेवान्ता वार्ष्रामानेवार्षम्य वारम् त्रे क्षिन तु व्वाया हे प्रदेश के अदा अदा स्टा है के वार्ष है । तक दा

र्षत् यदम् अर्द्धे व हे च हर् वे वे तर्द्ध वर्ष प्रवे हे व व व तर तर व तर व चर्मातः भूषाः श्रुद्रः श्रेषाः ग्रुद्रः न् इतः नः श्रेषाः श्रुषाः श्रुषाः श्रेषाः त्राम्यान्तरम् न्यम् वे नु वर्षः यदः भूवः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः त.वीर.परीय इ.म.वा.बा.च्या.वीर.स्.यर.या.वयारव त.री.परी. बुग्याधियायान्वर्भरार्म् स्वराम्बर्भा र्यायार्गेरा। यर्था वयाः **ॡ** र्श्वम् राज्य विक्र के मिते स्ट्रिंग्न मृत्विषामा अवतः न्याः या त्युनः केन्ः इसामुलाग्री म्प्रमार्द्धताबेदाग्री न्या ने न्या नी हेला त ब्र ता ग्री खुरा ..... नेति के क्रुवाय पुराम क्षे किते के मानेता नरा। विमयान्यवा अया पव गतिया है । प्राप्त के स्टारा पर या हिंदा ने या पर है न र्र. में . पर्यं निर्में विष्टे . प्रमा मिला मिला स्वापा क्रिया क्रिया मिला स्वापा मिला स्वापा मिला स्वापा मिला स्वापा स् क्रे.चगव.र्रेथ.ग्रीय.चश्चेरया ग्रीट.तक्रे.ध.पवट.ब्र्ट.य.क्र्य.त्रुप.चगव. बाचेनयानी निराहीता क्रीता में प्राप्त में वाचेता निर्माण प्राप्त महीना है वात्रा पाया वया होना गुरा देशा दे त्राया में द्राया के के से दर ने वया है तर इस म ढ़ऻज़ज़ॾढ़ऻढ़॔॔क़ऻढ़ढ़ढ़ऀॹॴॱॾ॓ॱॿॴॾॣॴॱॳ॔**॔ॱॾॣज़**क़ॗऀॗॗॗॷऄॎज़ज़ॹॗॱॻॴॗॗड़. . लब्र-तुःबेनल्यायः वैःवदैः द्वर् कव् लुरः नव्यः सं पर्वः स् यदेः ह्वः यदे ह्वः यदे ह्वः यदे ह्वः यदे ह्वः यदे ह न्दःचग्रदः ह्वं दुः प्रेन्द्रप्राचेन् के सुदः पट्टेन् व्यायवाया क्र.श्रूर.पश्चिर.श्रूर.क्षा.श्रूष.वया.र्थया.श्रुव.पश्चि.वय.पश्चेव.पर्धेय.पर्धेय.पर्धेय.पर्धेय. श्चित्रयरायात्रत्वित्तु पत्तित्त्र पत्ति ग्रायरायहेव। यरान्रायरा र्भात्रम् प्रेर मुक्त विकास स्रवा स्रवा में निर्मात स्वराप्त प्रवा मिर सका से न

क्षु-नग्राह्म-तु-नगर्वशाद्धिर-विदाह्म हॅग्-इग् प्राह्म गुर्दर र् मूर् तपु लव नव स कुब क्व वया यह त्यीर वर् स्वा मिलरह .... तु न् ग्रादाचा क्रेवार्थे वालुका ख्रेवाला वाच कृषा धराद श्रुरा बेर् इवा श्रुका रा विषयः ग्रेयः दरायवर्। ५२ : इययः वययः वर् हः वर् व्रायदे हे । धेवा नःकः हुः स्परे न्नः याया ने निरा में ना करा न करा न नुया **ब्रुट्-क्र्या** की. ब्रुट्-र्बा नर-वश्चित्रयात्या हर्ने की. युश्चया वर्षा सरा क्री लट.अज्ञेष.बेष्ट्रे.चबट.च्या.वेष.ग्रेष.नेथ.बेदट.री.क्री. तपु. खन्ना नव क्र. पा. स्पानपु. श्रेनया थी. व्र. पपु. वि. नव्य. न्यान व्या बैंग्स्बरह्मबब्दरह्मिन्द्वयः विद्राह्मेग्स्वर्गान्द्वयः विद्याप्यः ॅब्रियानने निरामानि मायासेन् द्यानेवातुः मञ्जूषा पराचे वया। नवरः श्रेवः ग्री: नर्रेयः में स्वयः न्त्यः एउंटः नुः स्नायः स्वयः परेः " विषयातु सेन् ग्री विराग्वरागी रहे निया पश्चित्या पर्वे ग्वित श्रीवा ग्वित पर-मे**्।** त्युर-बेर्-इवाज्यायाञ्च-र्रार-पर-हव-धर-मी-में-रा-ध्रेव-परे दंबाबेर्-गुर्म देर्-व्यावें-धदेःध-ध-द्व-व्याग्नी-छे-रेय-धर-र्र्-ध-र्रः न्नर्यः ग्रे : वे : बॅरः चैव : वयः व्यवः यरे वयः कुरः वयः यगः यग्रै यः यः यः । न्यरामी में यानवराष्ट्री न्युयाम्बरार्चे वानवना न्ये प्रयोग न्द्रुणः ध्रेद्र-कर्। ५५५ मुलः ग्रे न्याया द्व्रां न्याया द्वरा व्याप्त न्याया द्वरा व्याप्त विश्वरा व 

मदे मुंब में निर्देश वार्षिर हिरा ने वे निर्देश कर ने वे हरामञ्जेत वया बहरा यमहत्रा ग्री में नाह बाया स्वा हु मह व दें न विवःस्वाःश्चेन्:पवाः बेन्:श्वेषःश्चन्:यनुवा नेनः वाज्ञन्।विः नः विः हेः हेः पश्चर् अर् छ पहन दे रे में मारा धेव लेया हुव पिना प्रभूष वर्षा लुवा है .... यगार हें बर दबन रूट व उराया बर नवा व का वि रूट ने हें हैं। दें ते सु र्रात्वीयः वयवः ठर् पवर् । यर पट्टे कि ते वर ग्रेवियः ग्रेन न्द्रे. हेतु. नम् यास्त्रा द्या वर्षा वर्षा है । हिं वर्षा है । वर्षे । वर्षे । वर्षे । वर्षे । वर्षे । वि.र्वियाशि.कूर्रामञ्जावया दि.राया बार विया वि. प्रमुला पात्रा ষ্ঠি'মাইমাল রমানতবা প্রবাশ বিদান্ধনা প্রথম তব্ রব্ রব্ নইলেনেইন্রেশ্বারারার্থনেরাইর্রাইন্রেশ্ গ্রান্রারারারারারার্ **देन्** ग्रे**रायवॅ न्यया**वेन हु नहम् व ग्रॅं केर त्य्युर येन् इया कुलः .... रराक्ष्यारदाया यवा श्रुरायरा देरा देव ग्रुरा भेवरा श्रेवा नित्र में वे वयान् नवायस्यावायस्य ने स्थार राज्ञीत् केटा । न्यवायक्टान् बटार बनावि सराधि सुन गुरा देन क्रान वना सदे पर धेव सदे स्वतः ग्रैकाकै : धरा है नः अप्तान स्तान स्वाप्त है ना स्वाप्त है ना स्वाप्त है ना स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स् त्युँद् धरात्रुण दर्भाया क्षान्यावा नाता हेवा र् पक्षेत्रा पा इया या क्रक्टर हेन्द्र द्राद्र पट हो ब्राज्य पर पर पर व के क्रिया व रेन् के प्राप्त र देव्-ग्रे*ष-*न्स्*ष-न्*ठर-षे-ष-ळ.दे-क्रे-च-व-र-न्य-प्ने-क्रेन्-प---कें द्वाग्री नहीं प्राधेन। पश्चरा बेरा क्या ग्रीयता पा श्वरापदे स्वाता **कु'सु'क्केद**'र्सम्बद्धायाद्वे पु, त्यान् सुवामर्थरामी मूचान न मानी बाजा ज्ञान रा 

न्देयाग्री नवया धरान् सुराम् इटाया देवा मुहेषाग्रीटा देवी सामित्र ही बेर्-व-बे-इर-पन्ययातरुष् यद्मान्द्रि-व्रत्यातस्यारु-द्यम्न्द्यरः र् छे 'त छेर् 'छेर्' कुष् 'क्रुं स्राप्त तर्ष प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त र्दे र र्रायहिव परार्दे स्वा श्री स्वाया खं राय छन् व्या ग्रीत् या र्रा लबानव विवास भूव बेर किरा र तुरा वर्ष में वाक इस वर्ष नरे (हम्बार्यम् व्यन्तु क्र्नायहम् विन्यः हम् क्षे विन्यः नुमान ब्रा र त्राम् न्यान् न्यान् न्यान् न्यान् म्यान्यान् म्यान् मुन बाबुबामाना देवार्श्ववाधेना चेतान्त्राताचरात्त्व ने क्षावतरा तष्ट्र-येश्ववयात्र-विश्वतिराश्टा द्वेतयाववा रटाश्वा विश नर.पर्धर.क्षे.पत्र.क्षेर.ह्यैर.टर.क्ष्य.र् क्षेय.क्ष सूरी ्रिव.धे. तेन्याक्षरामदे निष्याध्यापस्य वान्यावाक्ष्य याया । हिन्या यदा पञ्चितानते. शंबाधी. चर्षाचे वया हेर् वया रेटरा वी खें वा विराक्चित रेटना न्नरामा सक्षेत्र प्रकेरि स्टर्सिर मी में या केर रिटर पठवा है हैं स्पर्ध में बदै नगत सूब भी मार्चा इर दि है सेर ख्वाय स्ट दि श्वेनय पस्तान् त्यते मा स्वाप्ता हिं पर्या वा विष्य दिन हिं पर्या वा स्वापा ग्री वर वय नेपा मु के विर धेर महर हुन या इर वय दर वे समय श्रीयाधिरः वर्षे दः ठेटः हेया शुः ५ इट्टा प्रदेश वः वेवा प्रवाय दवा प्रहे कुःः न्रः क्ष्वानु प्रमायः श्चिवाची । च्याचीन् ख्या विरा स्रिते ने वास ख्या । इस्रतः नग्रदः ज्ञंदः गृत्रेतः व्यतः व्यतः च्यतः विदः च्रेतः ख्य देनः त्यः वुः च्रुतेः व्यः

ने देश वर्ष र्व नर्ग लु न र्रा र्यण न्स्र ग के न र्रा वह्निय पः सम्या द्वास्य स्वादय के परि देन्या समय समय समय कर्पना धेषा अस्यात्र सदै । अया मन् न् स्वाया त्या या मन् न् ने न् मानः स्वानः या केषा न् नः " इत्र-तृ न्वे प्रवेद्र व्याप्त्र व्याप्त प्रवास व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त ग्रीयास्यामा मर्दे वास्त्रमः स्थापने स्थितास्य म्हामा मुन्तास्य प्राप्तास्य स्थापन छम व्वत्यान्दान्यम् वित्वत्याः वित्वत्यत्याः वित्वत्यत्याः वित्वत्यत्याः वित्वत्यत्याः वित्वत्यत्याः वित्वत्यत्याः वित्वत्यत्याः वित चयातह्नवारामः संवारा च चेतः वदार नवा रहेरा तुः के नेरान्या वि तुः ळ. बर. क्षे व. यावि. वयाच महा से से या वर प्राप्त में राम प्रा लश्चनव्यक्ता नव्यन्त्रस्यवाताम्बर्गन्या द्वावित्रस्य न्दा प्रकृति इस्र अवा क्ष्य क्षा कु न मूं लाव का न लाया सर्वे वि न कु न कहरा वयान्द्रत्वर् न्द्रत्युं प्रज्ञात्वर् व्यात् प्रत्युं प्रदेशेत् इयाक्त्राक्तित्वां न्द्राची सुर्दे त्य श्रुत्र अद् के महत्र दे स्वाधा धेवा वेदा ... इवः विया नगाया वया लु या है। श्रामाया पर्दे या मदी न्यमा महत्र वया समया ग्रैबायळे.चर.वैबाहे.बर.ग्रैबाहे.ब्राहेबाहेबालया**चे राक.ट्रेब.** क.चेड्च.में.चयात्रत्र.बेरा पश्चर.ब्रेर.क्र.तक्व.क्र.वयाहर.स्वा. म.ब्रेन्-क्रेम्। वेयाब्रेन्-तु-मयन्-यतुन्ना-धयानेया-धर्म-त्ना-क्रम्या-ब्रेन् दंबाशुः ५५ व महे 'हरा वहर दबा दशुरा बेरा के 'यह दा शे 'स सर कर्द्वत्रिंदिः ग्री नगदायनः है। श्वरः गुरः गै में ता वेव वता यहतः दैल-ब्रॅं-इंबल-क्रियान्य विकान कर्म निवास स्त्रीया प्रदेशिक्ष याताने अग्रवानि राष्ट्र प्रवास्त्र में प्रवास्त्र प्रवास्त्र प्रवास्त्र प्रवास्त्र प्रवास्त्र प्रवास ঈ৾<del>৾৾</del>য়৾৽য়ৢ৽ড়ৼ৽ঀৠৢঀয়৽ঢ়৽য়ৼ৽ড়৾ৼৢৼ৾য়৾ৼ৽য়৾৽য়ৼ৽য়৾য়৽ঀৼ৾ঀ<mark>৽ড়ৢঀ</mark>

मिष्या छ्रा दूर इया इयया विवानु विद्या विद्या है। विद्या में नक्ष्याची निर्मा स्था विष्या पर र्राक्षते त्राचा कर्मा क्षेत्र त्राचा कर्मा विष्या विषया विषया विषया विषया विषया हे. च शेर. च पु. १६ . १६ ४. ८ ८. जय. १६ ४. जय. वर्ष. च त्रा वर हो. च न्तु सदे छेरा च दु नि हेन तर बुर बेर् इय कुल ल सद सदे नग्र इयरात्युर वेर् इया मुल मु निर्मा निरम् निरम् क्षे'न*क्ष्याव्यान्* चे'वडेन्'डेन्'ढ्रुण अ'श्चेन्य'ळे'मङ्के'न्'व्यायय'ग्चे'ह चयः चयरा उर्-ता य इर्-त ठर्-वरा तक्षर-द्वा देर्-ग्रेशः नव य देन्। য়য়য়৽ঽ৴৽ৠৢৼ৽য়৽য়৽য়ৢয়৽য়৽ৼয়৽য়ৼয়ৼ৽য়ৼয়য়৽য়ৢয়৽ঀয়য়৽৽৽৽৽৽ पर्नेग्यामञ्चनयायाङ्गययादीनातुः द्वे द्वे खे । धरामी पनार्मा समुद्रासरा न्द्रे त्द्रेन् द्रेन् य थेव। यहै नियारेयायर वर्षे नयय वेत संयान्त यान्दान्त्रान्त्राविषाविष्याविष्यान्दा विन्तुः विन्ति निवासी निवा न्यम्'श्रेः स्याराये मारा प्राप्ते मारा प्राप्ते मारा प्राप्ते प्र रे'नब्दि'न्यान्दि'हैते'नन'नब्दुद'ग्रीयान्दी'रिन्दीद्'निन्दित्रस्तिःहैं'''' कपःश्चर् ग्रे : क्षेत्र वित्र श्वरः श्वरः ग्वरः ग्वरः ग्वरः वित्रः श्वरः ग्वरः ग्वरः वित्रः श्वरः ग्वरः वित्रः क्चै'नर्र्न्वयानग्राद्देव न्रात्ति ज्ञात्राळेष ने नया वा यहान्या मःम्यान्यः चर्त्रः द्वार्यः द्वार्यः देश्येष्यः क्रीयः क्षेत्रः तुः नग्रादः यनः व्याः " ब्रद्यावयादी स्वर हेया शु त्वद्या हे विषय दिवाय मुना हुया थी ने \*\*\*\*

्राक्री बाया तरा खे ता चिया विषय तरी स्तर हो हो हो व समय द बाया है वर न मुग्र वर्षा में ' नर ' मुर् ' क्या' केया रागाद स्वा क्या शर माय स्वा य इ.र्ष. तपुर खे.च. पर्थ. बंकुबी. तपुर कुथ. य कू. प्य केट. पर यो प. प्य प. प्र र्देव तदी भूर ता लटा च भुर में टा बा केव में बा च मा त वचाया हूं .लपु.मं.वयाताता कं.यूरापक्रें खुरा देश में लावेश. हू 'यदे 'च्च 'यर प्राप्त र है 'कै 'चैद 'कैद । प्राप्त 'यर के 'यद स्मार के 'यद स्मार के 'यद स्मार के 'यद समार के 'यद सम बैट.केष.के.वे.च.झ.झ.बय.वेट.क्ष्य.इय.वय.टय.पव.बट.तूर.चश्चन. लर.ग्री.चयाप.सय.त.व्री देवियाचेश्वर.म्.श्रु.घथया.वर.ग्रीयाचा. हराधेव। दे हेलाव प्रायाद वे प्रमात महत्व वर्षा या वृत्र पर हिरा विदा वि.च.रव.नथ.वि.पर.ची.ह्.ह्.चयर्। श्चर.लर.क्च.नपर.विर.यूर. हे 'नगरा-पद-प-पक्रम्'नदे हु 'यर्षद 'प्रम्'व 'प्रम्'नदे 'अयः नदः '''' इस्थयः ग्रेयः देन् त्यः विषयामा देन् ग्रेयः ने तस्याविषयायः सुद्धः चलवाया: व्यन् गुर्मा दूरवादी: व्यावाना वृद्द में गुर्मा विष्यादि विष्यादि विष्यादि विष्यादि विष्यादि विष्यादि विष्यादि विषया व त.लुर्या के.कर.ध.च.च.व.राष्ट्र.सुर.क्र्याच क्री.ला.र्चिया वर्दर.मी.लया पवः इवायावा त्युरः वेदः इवा मुलः प्रायः श्वेरः दवः पः व रहे नवाः क्र-प्रवाचित्रहे क्रिन् स्टारिया नाम स्रोत्या स्टारिय व्याक्षेत्रय. म्हिन् हु दि या लायम् तर्भव लेवा विवय ला ह्यू राय राष्ट्रे रा देवा लुवा । । । यम् - देन् व्याखयानव क्रेयाम्म बुम्न पायानग्रान मुवानवमावस्य क्षयान्द्रान्द्रम् सुन्तराद्याक्षयान्द्रम् सुयानग्रह्मा दूरायदे सु बर-क्रव-ब्रॅव-ड्रेन-द्याम-इयय-क्रव-ब्रॅव-ड्रय-वय-वियय-य-ब्रुन-व-----विवास देवा यम् ताय प्राप्त विवास है न किया या प्रति व मान न न न

बर्ग्या पर्व खया पत्र पत्र में श्लेप्या पर्व र्ष्ट्र ता खया पत्र कें या महामा र् विश्वयाता श्रुर विर । वि ररा मृत्रेया है । मृत्र मान्य है या वि स्वर हिंद स्वर शुःर्यदः वर्तुन ने वर्ते वर्षाना र्या स्त्रम् वर्षाः सुः वर्षे सुः नहाना । विवातुः मने 'सॅन' प्पंत्रम 'स्यापया मेत्रो वया मने 'सं 'सुमा षायानवान् हैकार्नेवानेनाम्मानुमानविवानुमान्यान् विवान्तामान श्चेर्-भुः विषयः दरेष्यः चुयः चयः धवः स्रा रयः प्रायः देवः स्यायः शुः म्बर्क्ष्या दे अनवा हु त्यते श्वा वर्षा त्र्या हु वर्षा त्र्या वर्षा त्र्या त्र्या त्र्या त्र्या त्र्या त्र्या मञ्जूदःमदे मृद्राद्याद्या स्वयायाम् परार्द्रया पञ्चम्या द्या दिवः ..... च द्वन'य·दे| देश'य×'कवःश्चेर्'ग्री'र्नेद'यःदेर्'ग्री'र्नेवशर्यः चुत्रः य धेव तर् ग पया देर है से सब भेव है र गवा व गव देव म्वर क्रु.बुर.तु.च मत.सन.लून। प्रध्न म.श्रूर.बु. सबल वर्षाच्रा प्रेते. व् हू .लादे : झा वा वे :राम हु : चुरामदे : ब्राम च वा धेव : मरा ने : ब्राम च वा नुन्यः यस्यः दस्यः यञ्जेय। यष्टु मः श्रृंदः श्रृनसः हैं मः यः हिंदः मनिसः म्वर्क्षराहेयाशुः शे. तह्मराम्या द्वायते ह्वायते ह्वायत् स बक्केला देन् ग्रेल इंब बलन् देने तरानु ल्वा लेन ग्री मही वर्ष न्यान न्तातृ त्यते न्ना वाते न्नु न्य बुदानते के न् नु न्य हैं न्यातृ त्यते न्ना वाते न्नु त्या मने सँ र र्षेत् ध्वेत ५ मा मृत्व स्वया ग्रेन् मा यया स्वा हिन वया न क्षे न्त्रा ग्रह्म वाक इया श्रुत्र तह ग्रा शु हो न मान्या विषय **७वः**गववः स्थयः वसुरः द्रयः विषयः यः क्चुरः परः पहरः व्या コズ

< देर-पट्टे ' ह ' व वा त श्रुर- वेद : इ वा कुल की ' त हि वा श्रूर- केद : पदे : द व : पा इवलर दहेव वियास चुरा व्यान के मेव हु के निया माम हे पा है र वियायाचुराकेराके त्यराकु विवाह विया के विया विवाह विया विवाह विवाह विवाह विवाह विवाह विवाह विवाह विवाह विवाह व वदे : अरः इंदः दिः दर्व वर्षः वदः त्रव द्या स्वयः सुदः वः ददः। द्या र्सुराश्चेनवायायाञ्चनायराग्चेवा देर्ग्गुवाबदनवायायदेखवानवा लर.कु.पर्.पहर्मथाश्चिर.वेयातालूर्मशी वै.पपु.श.श.वेयथा.हेर. मनः अहेरा वि द्रारी तहिव भेगा कर् बेर हि व मा अहेरा कव जिट.चव श. र. प ट्र. कि. राष्ट्र. श्र. प ट्र. व ट्र. व ट्र. व. प ट्रे व प प ट्रे व या ही. या प्र. प्र चर्डे खू त्य बेराय दर्भ वर वर चर केर केर मृत बेर वर वर दे क्रेर। क्रव्रास्टरम्ब्रवास्यायर् स्ट्रास्टर् हारायहान् विनासदे ह्रवा हेरा न्सु'ला में दःबदे नगद तू 'लदे न्च वर्षन या न्व वदे लु 'लेग' षयायत्र इयतायायत्र क होन् या श्वरायदे हु वर्षत्र न्रः। 951 बै रव इयय पट्टे हैं न वय स्थय रूर् पत्र र है पशुरय मेर् ঢ়ৢ৽য়৽৳৽য়য়য়৽ঽৼ৽য়৽ৡ৽৾৾৻ড়৾ৼয়ৼ৽য়ৼ৾৽য়য়য়৽য়ৢ৽ড়ৼ৽য়য়৽য়৽৽৽ ह्रं लारेन् वया महिमाया है भिवातु निमाया यह हा अदी लु क्रें ना सवसर ठन् देन् वया वैन तु म ने माया देन् ग्री न में द्या भन्त भीवा तु । द्राजीयायर्गयातप्रात्राययान्याच्याच्याच्याच्या ्तु। व्रावरायम्परम्याष्ट्राण्यस्वन्वत्रात्वे त्वेत् वेतः न्येतावेः र्वाक्रवारा लेगाल पर पर्यो पावरा हो र हु - छि । पर अपरा पर्र र हा ぬ身人、別心と着せでけ、してし、夏し、夏・ロ、夏・夏の、旬、夏の、日、日

तमस्याम्बयाक्तराचे तस्याया सुर्वे म माया स्रेवासमा ग्रीया है स्व चक्कर्ने न् ना सामिर याधिर विवेदाव मुनाय से मुनाय सरामित । मश्चरः सर्। यर कुरे दें दा सवया ठर् नवया पविवार र त्या नामर कुर क्रेम केर्र्यमायस्य हेयायस्य "ा वेयायस्रित्तरुम वश्चरः ब्रेट्-इब्रामुलामु नेव्यार्श्वेट्-द्रा पर्ने म्बर्म मुन्दि सम् म्बुयाची वरार्च्याक कराइयायायाकेरा हैयावया इया वरा तिया । तब्रीन् व्यवस्यत्वामा वृत्न्त्रः अवाक्त्रः विष्यत्वे व्यव्यविष्य रमता भी 'श्रेषात में पान ने ने अदार्थ 'भी ने श्रेष्ट में तामरा कर ने स्वार्थ ' हुता ' मु : ११ म : १ म ता व द : म द : व व : व व व : व व व : व व व : व व व : इत्यारा खेवा म्वता अत्यान म्याया म्यायाया म्याया म्याया म्याया म्याया म्यायाया म्याया म्याया म्याया म्याया द्वामुरान्यामञ्चलानदेः ब्राटा बदान मतः धन नदः सं ने दे व व नितः । बेर्-ळ-ळ्ट-र्न्न्द-वर्ने-वर्द-बे-र्न्न्यान्ती-हुट-व-वहॅर्-पदे-व्ट-रुद्र-न्यायान्यान् र्रुट्र्र्न्वरावि मुद्र्र्स् हे ह रद्र्या मृद्र्य स्यासपुरम्यादार्भ्याप्यास्याद्राद्राद्राचित्राश्ची तिश्च द्रव्यक्षराश्चरावितः पर-पर्में द्राया संदार अन्द्राया की स्वाप्त पर्वयामान्नियानीरा दे.र्वा वी.स.ट्रेब.क्र.च.स्वयं हु .पादे न्ना सर. ग्वरायदे धग्रदान् वर्षे वा बहुत्रा हेव हेरा का हारा वर्षे समार् हे 'च र हे न् स्वापार्टा व शुर के द स्वा हिम है 'त्र क्या **कॅ** 'देर' बेर' पर' पडर ' विप' वग' गाँडें र' छेर' ख़रण तुर्ग बेर' आपण

①  $(\mathbf{T}^{\mathbf{q}})^{\mathbf{q}} \cdot \mathbf{q} \cdot \mathbf{q} \cdot \mathbf{q} \cdot \mathbf{g} \cdot \mathbf{g} \cdot \mathbf{g} \cdot \mathbf{g} \cdot \mathbf{q} \cdot \mathbf{q$ 

मलवाश्च वाच्यार् व्याप्यापि व्यायि व्यायि अहेन् न् ह्या व्याय मिर्द्र-प्राच-इवक-विरक्ष-इव विराध्याक्षयानव नेवर र व्राचित्र क्षेत्र:ह्यं तथा दे:यह्याश्च ३ ट.ज.चह्यः मृद्धरःश्च: मृटः केर् यहर्ः वियाचेत्रकार्यायायात्रा अत् चेव रूत्र्वायात्रवा सेवयाचेत्र्र्या रेग्याक्षयाम्बाद्यकान्द्राज्यामध्य व्या वृत्यते व्यावराष्ट्रवार्ष्ट्रवा **लु - न्वॅल अॅं र** : र्स्व्य वैच र्डय व्ययम अञ्चय स्त्रेन् व न्य्य विवेताः बुद्रायायहूर्यायायविषयाकुर्द्रा बूद्रायप्रायायाय्यायाया नम्दित्व वर्षे वरत मञ्ज्ञ तारहबार हिरता में राधा यह वा में रक्के वा में राधवा मिया वरा वेवलायते छेन् म् वास्त्रस्य गुम् न्वतः चेन हेला सर्वेम्ल न्मा वेदायर्द्राम् वात्रु यात्र्रादास्य वाद्यायाः वेदायरायदी माराम् वेदायमा देदा र्यं के सं वा मान्या स्वरा वं रामक वा के राम के प्राप्त के स्वरा वे राम वी प्राप्त के स्वरा क र्देन-चन्नर-दन-प्र-व्यन्-क्रेन-बुर्य-र-क्षेत्र-वित्य-वित्र-वित्य-वित्र-वित्र-वित्र-वित्र-वित्र-वित्य-वित्र-वित्र-वित्र-वित्र-वित्र-वित्र-वित्य-वित्य-वित्य-वित्र-वित्र-वित्र-वित्र-वित्र-वित्र-व नम्रेंद्-सुर्-सुर्-सुर्-स्-र्-त्याद्र-दुर्-स्-र्-सुर्-स्-र्-ळ्टाचाळ्या "ण डेवानशुट्वाय मुनायवातृ त्यते ह्वा अदे ह्वा सर वदःवलायानः इवता वै दे न्या दे स्वराधिवः या नहें दः या नवि ताया नवता । स्रम्यान् र्राट्मी क्रुयान्व से अस्याद्येयाप्ये सं क्रुयाये सं दिव या कः त्रै क्षे. ट. पानवि वया धेर हें व उर रा पानवा वी

१८ द्वा मुक्त के प्रमान्त्र व्या प्रमानु मार्च कु न्या स्वा स्वा सुन कु मरुरःश्नम्याः अर्दे 'अष्टरः मयाः स्वयाः स्वयः स्वयः देवे केवाने 'यान् स्वरः महत्राः" म्रायाम्बन्यः मृत्रत्तरमाञ्चिताम् नवारः हेत्रपति तचुरायः अस्या न्-स्वाम्द्र-स्वी: सुन्न्याः हेराः हू निवः निवेशः वर्षः क्षेत्रः हेन्यः केवः स्थानश्चेषायान्यव्याप्ताञ्चात्र्याप्त्याप्ताच्यात्राच्या तु 'अब हू 'बैब' महैब'अरउद'चर' ग्रुब'य' दै 'महैब'सुद'चर् म'मङ्ग'मैं' ब्रुं न्याम्याके स्थार्यम्यालुकायम्। ने मा वृत्तास्य स्थार्यायाम्या पद्भलारमा सेमला मदी पर्न र हिते है लासर र है र मदि पद्भर र है दे । ॻॎऀढ़ऺॺॱनवलः न ने ने अन्यलः ने दे दे दे अः अळॅनः न सक् परः न् शुअः न कुः ः कर्न्मु दु प्यतः ग्री प्रत्यास्य स्था धेत्र सः सं ज्ञुता ग्री प्रेष् रेष्या स्राय स्था त्रा शु गुन्यायायते हु त्यते ह्या यदे इ या वर न्दा व वर्षे व्यापर पार न्दार नातः यवै यदै चुर्या यहँ द्राया वृत्रेका की करा विष्यं यदै से कुका की धीवा ..... देगलार्दे : अ:दे : ऋं रह्मला वता वा नु : लु अ: गृतु अ:हुँ द : ठव : ग्री : त शुर : केद : 로 외. 회 (지·지) "मुलायिनागुःर्यत्राम् क्षेराक्ष्रम्या ठवः विना धवः धरः ब्रें ळें य र पावया प्रेम्'" ७ देवा वेषा पर्द्या दवा दुन र् त्रुं पा चेन् ग्री पर्द्या नेरामहेब राक्षराम्याकेराववाहवाग्री न्ये मविवादनेराञ्चराधराञ्चव कर् शे इ वर्षा गुरु रा अहर हिंदा के दार में द प्रदे में कुरा गु के विषा .... तर्वन शुः धवा

① (बर्रे बापर वर्षे । हुर वहूर देव देव 67)

② ("इर्-कु-श्र-इंद कुल रचल-" नेर-चरे-नेच हेव-572)

इन्द्रिया है है शे है है व्या मूर अक्ष्य अर ला स्था विया वरे.

"न्वय देन राष्ट्रेट्नी त्यूं नाम्ययः ठ्राष्ट्रे मुन्यः यम्बर्ने त्रह्यः न्ययः न्युद्यः मृद्यः यन् न्यं छेवः यदेः व्ययः हेवः म्येरः ग्रीः यञ्चः ः म्ययः न्युद्यः मृद्यः याद्यः चिवर् यदेः व्ययः हेवः म्येरः ग्रीः यञ्चः ः म्ययः न्युद्यः मृद्यः स्थाः व्यव्याः स्थाः स्थाः

स्व.चयायः स्व. श्रीट. तक्रे. धे चयायः स्व. ळे. ४८. २ वर. केला व याय. श्रें ब. श्रे. या ह्र दे. छ. य ह्या व याय. श्रें ब. श्रे. या ৾ঀ৽য়৽<sub>য়ৢ৽য়৽</sub>য়য়৾৾য়৽ড়য়৽য়৾৴ৠৢ৽৸৾ঀয়৽য়৾য়ৢ৾য়৾৸ৼৼৼৼঢ়ৣ৾৽য়ঢ়য়৽ৼ<u>৾</u>৽য়ৢ৽য়৽ <u> के.स.चै.८.५१वर.ध्रमथाशुर-भ्री.घश्य.ठ८.ग्रीय.चर-ङ्ग्रीयाशी.मोर्नूट.....</u> য়ৢঀয়৻ঀয়৻য়৻৸ঽৢঀয়৻য়য়৻য়ৢৼ৻৸ঽ৻য়ৢঀৢ৻ৼ৸ঽয়৻ঢ়ৢ৾৾৾৻ঀৢয়৻৸য়৻ঀৢ৻৽ महाला भवेंद्रायान्वार्या केवार्या ते सवा ठवा सववा ठन् ग्री न्ना या स्नान्दि विवयः हेरा श्रुरः यः नृतः। क्ष्यः यरः यन् यः श्रेवारः यन् रत्रारा स्वरः त्मॅ : म्बर्या कर् : परे : बिर : क्रेर : परे : केर : तु : ख्या : स्या र वाया : वे : या स्या : या स्या : या स्या म.बट.लयट.पत्रट्य.म.अर्.तपु.च ग्राप.पूर्य.च यत्रा ग्रीय.श्राप्तिन.तया हा. हीर-र्-पश्चरता-मेटा ने कर-पश्चर अर्-इय-मुल-वरा-भ्वरा सक्रमः बी-अब्बब्य-वर्दे बाब-बेद्-चर-बुबाब-वर्धुद-चर-चुबाच-द्र-। दनद्यानक्षेत्रपूर्वा सम्मान्त्र । स्वापानक्ष्या सम्मान्य स्वापानिकारी विषया हिन्द्र । स्वापानिकारी विषया हिन्द बान्ब्र्न्यर वि.स.चग्रत विवयायाञ्चर नदी न्व्रित्याय न्रा वह्यायर मझलामन् वर्षा मधला कर् निर्माणा मान्। मुं निम्न निर्माणा भेषा स्वेषाश्चर्या स्वास्थ्या श्वेषा श्वेषा स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्वार्था स्वार्थी स्वार्यी स्वार्थी स्वार्थी स्वार्थी स्वार्थी स्वार्थी स्वार्थी स्वार्थी स्वार्थी

परे गया परे में में द्या पा निमाणदा हेया स्म ने या उन महे में इसस ् न्सुमः क्रेवः धेरः ए सेवः यगायः देव मञ्जम्यः वया विनः ग्रीः यय नेवः ब्रेन्-चॅ-लब पव-इबल-ने ब-पर-हॅन्-पन्-पन्-तिन-छे-पर-ठवःबहे : वः भ्रान्त्रः । विषाण्चै । वः न् न रः वे नः श्वायः यः सुनः परः · · · · न्यम् अन्-तु-विन्य-नम् अव्यानु-दर्ग-न्विताय-त्वित्र वायके माळेवः र्धसम्बन्धमाराने ने सारा न्में दसा धरसा मनदा सह दारी दिया है। दन इस्रतः ग्रेया वष्टि राम वाप्त्री याया इस्रयायाय राष्ट्रिया उत्रामी क्राया रहेता लयातर्यानार्टा क्षेत्र सराज्ञास्त्रेराक्षेत्रक्षास्त्री क्षेत्रक्षेत्र स्वाना न हम मैल दें र की की दम बद केल बेर है किर पत्र र है न सरका प नत्रन्थायुन्यः व्यवतः रुन् क्षेत्रः यंग् मै न्दर्द्रा मी गृह्य मे हिर्म कुर्मे स्था पन्गाचेन्-तु-पञ्च पनःदावेयाचेन्-पनःशकः धःरोरःश्वायः ह्येदः याम्ययाच्यान्त्रान्ते व्यक्तान्या स्वाप्तान्य स्वापत्य स्वाप्तान्य स्वापत्य स्वापत्य स्वापत्तान्य स्वापत्तान्य स्वापत्तान्य स्वापत्य स्वाप मुल वर्षा सरा वर्षे र हि वा विषा से ग्रांच ग्रांच साम नेवा हु हि । या मामा पारा । । । য়য়য়৽ঽৼ৾৾৽ড়ঀ৾৽ঢ়ৢ৾৽৾৽য়ৢঀ৾৽ঢ়৾ৼয়য়য়৽ঽৼ৾৽৽৽য়য়য়৽ঽৼ৾৽৽৽৽ पश्चित्रात्र्याः स्ट्र-शुः ख्र्याः स्वर्यः प्रस्त्र-त्ध्न्-तेः ध्रेत्रक्र्-... **पॅर्**ग्गु चुन्र्न्य छे न इसक् स्र्यं क्ष्म इक् प्रमाहित्य दि र्देद क्व प्रस् नशिवालूर्रातपुःर्रेरालवा चर् सेर् मियाचया भून्राया अष्ट्रवा पा श्रेषा वि... न्दा अम्बर्ध इका नगर हैवा बर्य प्रेवा यस कवा <u> ব্রুদ'ন্টির র্মাঝাঝাঝার্মার বার্মার ব্রুদার রাম্বর্মার ব্যার্মার ব্যার্মার ব্যার্মার ব্যার্মার ব্যার্মার ব্যার্মার বি</u>

दरद्यानह्रद्वात्र्रा है श्रेत्यी नरातु नने क्रितायश्चर केंग्या नरा अम्रात्याः अळ्ळे व वी न् व्याद्या पति न् न् न् स् अञ्चल स्ति विषय सने वाया श्रुपाञ्च । मः य ठरा क्षु रोतः वस्रायः ठर् रोस्रय हे प्रेम् मे क्षु द्रायः व प्रायः । <u> द्वेत्रक्ष्याम्ययाश्चेत्राक्षयामञ्चरात्वेरः। स्वाद्धराय् ८८८यः</u> लट.रूर.यूष.हेर. २६८.पवी बेव 'विट.के. शूबेय.र.कर. ५४. संघया के. द्विन पद्याप्त व्यवार कर् ाया है व बहून न क्व स्वया कर परे हिन् ही ... न्धताता श्रुन् केन पार्वन्या अहिए अपन्न नार्ध केन स्वि श्रुन्य हे न्दा नग्तःदेव-नग्रवःग्रेग्रक्षे । इतः सन्दिन्न् । सन्दिन्ने प्रमास्त्र के. ब्राक्त विषया कर् विषया प्रचाया परीया यक्ष्य हिरा द्या के. इय न्ने निया वर्षेत्र ये छे न्यम बेन् ग्री थे ही इ उते छेन न हैं क चेषानु देरान वरार्च्या वरार्च्या वरार्च्या वर्षा वर्षा **इन**-र्यानियाषे, थी. पठ्या**नीयात. कुर्यान्य**पासीयात्र - पक्र. पाक्रये. त्य मदेवारान्दा अर्क्, हुत्रा पर्मा व्यव विद्यार महेवार में मःबद्धिवः वेषः > वर्षेवः ग्रीवः ग्रीवः ग्रीवः गर्वेषः पः पर्वाचा विः धेवाः श्चुद्रापद्राप्तेद्रायाः क्रेरायदेग्वाञ्चेदाः क्षाद्रवार्यात्राद्राप्ता चर्याः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर् त्तर्थः क्षे.श्र.श्र.श्र.श्र.श्र. वश्ययः ठर. ग्रेयः क्षे बे.र्टः च २४. धे. बेयः नयः सुतं पर्दे भे ने। "ा विषान्य पर्या पर्दे वर "अवासुर "विषाय वर्षा

<sup>ॎ (</sup>हर्तुः संज्ञुतः धेन् स्वृतः द्वातः न्दः नृतुरः धेन् स्वृतः चतुतः श्वन्तः । वर्षः देवः द्वातः । वर्षः देवः द्वातः । वर्षः वर्षः । वर्षः । वर्षः वर्षः । वर्ष

न्गतः व्यात्रात्रे व्याद्यात्रे क्या विष्या क्या विष्या क्या विषया र्गार्धरान हरावलात्श्रुरा केरा द्रवा श्रुवा श्री हेला りず 当る イト・ दब्दला हें देवाय हैं वबदावया नैयार्थवया श्रीत्व स्थय हराया गरीव पत्तराचेरा सुर या हुरावेरा। "दे विषा से देरा पर में राजा यह गायें। डेव पॅरे र गरि एर गैया बर गया परि के र ग रव ल मे । पव लया रव ... पर्चेरः ने ने लाक् व झां न बदान गां ने ला ग्री ला अस्वारा में ले । ह्म यायाय है। पद् विवास न्युन् है। विकास स्व हु यायायाया इयरा विषया सम्बद्ध द्वारा प्रते क्षे वरा छटा सं ठवा छी क्षे रूरा प्रमारा विवयां चेता करा वर्षा "किया व वाया स्वर में राष्ट्र विराय वे वाया राष्ट्र क्षेत्रा हे. जू. अहे त. रे. ४८. रे. वेया रुष रा. इयया पायरा ह्रारा है। विश्वया न्द्र-इरायान्ता दुरायहत्यातृ स्टी हा या अळेना नेरा "इ संतर सर.र.पतु.वयान्यर.र्यया. क्या ह्र्यात. क्या ह्र्य.री. क्या अर.री. क्या या पतु. ह्रया त्रिनः श्र्वायः सहितः सवा क्षेत्रः सः सः स्यान्यः स्वा द्वेता सदीः सम्यान **नॅन'नवर**ॱहे' हे*' ६५* ७ त्याद देव द्वापत्व नम्दे' क्वां वर वे शुवाय हु। 

① (মই ল্বন্-ডুব্-ন্ই্ন্-ই্ম- 67)

वर्द्रा" किता प्रवादर्ग

13. मॅंद'सरि'नग्त'कृत'त्र्'तसि'त्व'स्त्रल'न्'ग्रि'श्चेत्'तग्त्र" प्रदेश'य'त्र' प्रगृद'स्त्र'त्र्र्'त्र्र्'त्र्र्ण्यह्रग्रे'या

**ছী.খ়. 1**221 চু**ट.४०.वै८.०४.**ब**श्चितातपु.**६५.लेब.সূपु.দু.प**ब्**रा मॅद्र-अदे नगल नं द्रा कु । लक दें द विच गुर्हे द : तु : अदगल पदे : बे : विंद : कु : इट.री.कु.रुट.रेटा ल.याववे.लबा.ववे.हूत.प्रेया पूरे.री.चवर. **क्रॅ-ड्रे-ड्र-ब्र-लय:नद-इय:ग्रुय:र्यान्य:न्ट्रा** न्यग्:ग्रे:स्-नज्ञु:न**रुय**: के. थर. रुवा पट्टिंस ग्रीया है. पर ही. वर. वह पानि विया हून में ट. वया त्श्रूरः अर्-द्रयः श्रुतः श्रूरः श्रुः पर्ने व्यवरः यद्यः श्रूनवाः प्रते व्यव्या व्यः "पष्ट्रवः यः क्रवः श्रेन् विष्ठेयः गादे त्यः क्रुनः न्व्यं द्यः हे । प्रादः व्यादः यॅॱन्वरः पर्या ब्रब्यः कर् 'पर्ने 'प्रहरा बुर' ५ तु न्या पः रेर्' क्री 'र्वे रखा धरः' वैद-तुः ननवः यः द्वुदः देवः यदैः वेष्यः विदे नगदः नृदः विदः द्वुदः द्वः क्रमहा म्या द्रायत्रम् वाराष्ट्रम् वाराष्ट्रम् वाराष्ट्रम् वाराया मति र्भून इया बना वहा। "अमरा पर्नेन मिन या केवा में दे ये न व वर्ष वता मॅद्रा अहव मंदि प्रमृदाया स्राध्य कर मंद्र मि में द्राय स्वता दन्ष्या वे अंदा परा वा वा विष्या विषया विषया वा विषया विष म्राचित्रा स्रि.प्रयम्याष्ट्री प्रत्यायत्या स्रि.प्रया स्रा

<sup>( (</sup>र्यन नक्ता है स हर्न क हैन न न र क 4)

<sup>(</sup>इ.स.च.र.र्चना.मंथका के अ.अर.क.ध्ने.चंट्य. २)

वया रूपा श्रीन विश्वया ठन भी नियान प्रिन हैं ना या निन वया प्रियान ब् रोर मु न इव प रूट कप शेर केव में र पव श्वेषण भेव हु के परा "" देशाधनाने हुनावहन न्में राजेन। विषया हुनावमान हिंदा पर्वे पर्वे विषाममादाधनायदेः देवामविषा श्चु वातुवातु वे द्वा इया द्वा चर्णातः न्युंषा र्च्च ग्रामुरः पट्टेर हेर त्राम्या संस्था वर्षे व्यापनः विषयः इरक्ति:देर-द्वर मुख-द्रा इं यम विवाय है के पहें पहें पहें पहें के स्व म्र-किर-इन्नाप्ययाद्र-विराव-इन्-ग्रुर-क्वयापक्यापन्ययाद्वेव-ग्रु--हिन्य में निय न विनानम्न न्ने राहं या हुरान न विवासम्बन्न केरान्र न्व न्यात भ्रव तु नम्भ नवया अस्त न में ता अके का ये ते न में त्या पर । । यद्-त्र्च्र्रिन्हे शे रेद्र-पर-हे सामुयायळव् त्याई र प्वा वृ न्ना सरी **स** स्वे : ... यतुत्र-यः केत्र-यंत्र-यंत्र-युः क्रम-श्चित्र-सुन्यः दन्त्व-यः वेत्र-यः दे दे वे विदः য়৾ঀ৾৾৽য়য়ঀ৽ড়ৼ৽৸য়য়৾ঀ৽ঢ়ৢ৽য়৾ৼ৽য়৸ৼৼ৽য়৾৾৾য়৽য়ৼ৾ৼ৽ৼয়৾য়৽য়ৢৼ৽য়৽ঀ৾<mark>য়৽৽৽৽</mark> गर्डेन् गुरु दु दिर्दि र य र विदास्तरम् के यद से से दि य विदासित से द् ৾৾৾ঀ৾ঀ৾৾৽য়ৢৼ৾৽ঀ৾৽৻য়য়৾য়৽য়৾য়৽য়৾য়৽য়৾ৼৢঢ়ৢ৾৽য়ৢৼ৽ৼ৾ঀ৽ড়ৢ৻য়৽য়য়য়৽৽য়৾য়৽য়৽ঢ়ঢ় "共之·美元如·少士·劉·劉·母如·長·帝士·由於四·日·日子曰·日·诗子· প্রশ্বান্য প্রশান 1751 শ্বান্য প্রস্তির ক্রিন্স করে নের নির্মান করে করে নার নার করে নার ক

(ব্লন্ন্ৰ্মাঞ্জী মাস্ত্ৰন্ত র্নাল্লন্ত 5--6)

श्चिनः खन्नायः नृत्रेयः ग्रीः सुमायः यम्बान्य न्याः मीनः मित्रा मित्रः म **बर** संग्रा सं चुरा ग्रे धिग रेगाता ग्रुव र्र शे अझुव ध विग श्रेता यहुव हु स्पर्वे ज्ञा स स र केव र र र जुर र हो र छि । व्यव र द रे गव य से हो हो र र स र म.सं.क्बानभूरविवानवराहे। हिराश्चार, वयाने ह्या शि.शूर्य तहेव. बळॅग नेवान्द्रा सु च न हो । कप से न हु मवा तमा द में मा सर पहे वा सर য়ৢ৽য়৽ৼ৾৾ৼ৽য়৽ড়য়য়৸৸৽ৼৼ৽য়ৢ৽য়৽য়য়য়ৼ৽য়৽য়য়য়৽ৼ৾য়৽য়য়৽ नहेबर्डिया श्री इयया ग्री नेया हेन्य ग्राया में ने हेन् न् नुदार होया षॅर्-ग्रु-धेन्-ळ-रे-हुर-वहेन-र्नेयाय-वहुन वर्न-ब्रॅन-ब्रव्य-हेते-केट्रे.मॅट्र. ब.कव्.लट्र.ची. गवा.च रुट्र.ची. बा.बट्र.ची. द्रा.ची. द्रा.ची. व्या.च इसं मुल मु हैर ल तिया सर् नियं दे ते यह विविधा पत हिल से दे मु त. इ. क्रुबंध. तथ पूरं प्रवर्थ चंत्रथ. वंत्र करें . द्वेच. त. व्रीत. व्रीत. र वर वयंयाक्त यहिवामा है पर्द्वा हा यास्ता हिंगाम छेवा या र्याया <u>ৡৢৢয়৾৽৾৾৾৾য়ৢয়ৼ৽য়য়য়৽য়৽ঢ়য়য়য়ৢৄৼ৽ঢ়ৢ৾ৢৼ৽য়৽য়য়৸ৢয়ঢ়৽য়৽ঢ়য়ৼৢয়৽</u> स.स्वेया व्रेयाता ग्रीक्र झ.च.र्टा बर्ष्ट्या महाविष्ड मुँ र विराज्या है **इ**च्चयः क्रेर्न्यः श्रन्यः स्र्र्यः स्र्रम्यद्वः स्रयः स् रे. रस्या मुलान् य दा सवारा ठर् वाष्ट्रिया परि या ता ता ता पर विद **য়৴**৻ঀয়ৼয়৻য়য়য়৻ঽ৴৻য়৴ৢ৻ৼয়৾য়৻য়৾৻য়য়৾৴৻য়৾৴৻য়৾ৼ৻য়৾৻৴য়৾ঀ৽৽৽

① (देश देवे कूर क पर ইব 572)

ब्रुन्-ब्रुव सहुन्-हुन-दवः लूट्- नवःक्रे-लटः। ञ्रां-च ब्रु-च बर्ट- प्राः भैवा र्धताब्द्रभग्ना हैरामाळ्यालहर्षिण्यातहर्भित्ववातु गुर मात्रवाता कुला नदे । त्यदा में दे । वृद्धारा र ता शुः व र । हे । वृद्ध व । व्याप्त । ঀ<del>ঀ</del>৴৽য়য়৸য়ৢ৽ঀঀৢয়৽য়ৣ৽য়ৄয়৾৽য়৽য়৾য়৸য়৸য়৸য়৸য়৸য়৸য়৸য়য়৸য়য়৸য়য়ৢঢ়৴য়য়৸য় महेवा मूरायाक्रवात्रास्वायान्म्रायान्वात्राह्यायार्वाहाया (अर मुः) वेदःयानगदानवदान। वश्चरः बेदः इवा ग्रुयः श्रीः व ः श्रुंदः दवः यः देः इस्रवान् केना हु । दि र र र र र र हिवार व र र व या या हु र व र । व व वे व र हि र र र र र र हिवार व र र व या या ग्रैसः पर्या मुदः केरा वयः पदेः श्रुंदः धेदः यतु यः पर्या देरः धेद करः पर् ग्री-बी-भान्यम् क्षेत्र की स्टार्स्स स्टार्म क्षेत्र मि स्टार्म के वार्य के वार्य के वार्य के वार्य के वार्य के महिनायान्य मृत्रायम्या श्री स्वाम् भिया सित्र हिन् सुन् मृत्रा म्यमः न्धॅक नेरा हु : बे ग : न्वग : बे : मे ग : न्रः म व व ग : न्यः म व ग : शे.सा वनः वियायाविषाचित्रात्म्यायहणाचेत्राचा नेत्राह्यावळ्याचीः তব্:গ্রী : ইব:গ্রাব্ : রঝক:তব্ :ম : দ্ব বা কব্ :গ্রীক:গ্রী ব : র : র্ : র :ব বরু **র : র ক** म.धिर्यायाज्ञीयात्रात्व्यं रामरा श्चीराश्चितात्र्यात्राच्यात्वरात्राप्तरा विनयः पः इत्रयः यः तद्ययः तुः ग्रीवः व्यावि । श्री तुः तः प्रिययः ग्री खन्यः र्ष्ययः । धेद्र'द्रदर्भ र्'तेषाचर्ष्र्यायरेषकाग्रीखु'म'यस्यातु श्रेपग्रीर्'गाश्चरः तर्नु गः श्रुयः सुग्रायः श्रुप्रायः मश्रुप्रायः । दे : यः स्माः विवयः सुर्याशे :क्रुः रः यः स्मन्ध्वाताः मृदाः सान् वाः प्राः केवः प्राः केवः प्राः स्वतः व्याः स्वतः स्वतः व्याः स्वतः स्वतः स्वतः व्याः स्वतः स्वतः

मझ्दायानेदार्च छे सुरा अर्केन हुन येदायन वर्षन् पान्मा हिनायन नन्नार्यः केव यः नेन् नम्ब परिः न्वारम् तर्मः ने म श्वार यः नम्बर्यः परिः ळ्या मुला के बार्य ध्येवा के दा। ये दाला द्या क्या मुला हित्या व दी पह वा प्रते। त्वुराष्ट्रताधेदामत्। मग्राताचेत्रताने मिव्दायह्र न्दार्म प्राथा ग्री मह्नत्मः भेनः तुः लव्यवान् व्यवः यमः वश्चरः यः वन् व व वः यवा मह्नवः यः स्र-**ऋंग्याक्षेन्, तु. लुका धराने, ते ग्राय्या करा क्षे**न्य स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः स्रायः ल ६.म्ब.ध्याखेयात्रानु अराधराप्याप्याच्याक्याच्या **३**ल.हेनला वक्षवयन्त्रः इट.वयः क्रिल.ट्नटः श्रेट्-विदेः बर्ख्यः क्रुवः मॅद्रायाळेवारॅंद्राम्बद्धार्स्याग्री लु तिश्चेवासुम्यायायात्रस्य प्राप्त सामा स्यापास्यकाराम्दायास्यावाराम्येवायान्ये व्याप्ता व्याप्तान्यास्या म्रायप्तार्थित विषया स्थान्या प्राप्ता स्थान स्थान प्राप्ता स्थान त्चुर-ष्ठिरकः भेवः मदेः र घरः मैकः दर्दे देः र्ने वः क्रॅरः वः देनः ग्रैकः ग्रुः ळेवा व **च्चरायर पर्याञ्च । यदः यदः विषाः तुः यहरः हे** १ द्विष्ट । या ज्ञे राष्ट्र राषा ध्वा देन् ग्रे प्रवास स्यान् क नें न् ग्रे प्रमुक् श्रेन् म्रवास रून् ग्रे प्रवाद प्राप्त हू . यदे : न्ना वर महर् दाव व रवेर मी न ह्रव : यर कर हिर के व रवर यर यव त्रेषःकेःपः ५५:कृषः पर्यादे : पत्नेषः पश्चीयः पर्यादश्चयः पत्नेषः वेषः ..... बेनल पर् हे न्न व बळ्न व क प्राप्त मान देव के के लेव लेव पर देः अन्यन् न्रेरः ग्रे प्रमादः सद्भः व्यापञ्चन्रः शुः येवराने । यदः नद्भाद्यः स्व ষ্ট্রী<sup>\*</sup>ঠ্রমার্থ্য ব্রহ্মার্থার বিষ্ট্রমার্থ বিষ্ট বিষ্ট্রমার্থ বিষ্ট্

मला मलिर लन्न स्वास मिरा में न हेव हिर बेर नदे ही में हैं हैं न्-तृत्रः अष्ठवर्षाः धरान्यवर्ष धः पदिः पविवादी पदिः श्रीरः श्राः श्राः श्रुवादाः **€.कुबे.त्.रं-रं-**र्बबे.त.ढुरं बंबानरंबा.ज.रंट्याश्च.बंशरं सूं.शुर..... बेर् धर होता मध्येव। "० वेता न्याया मार्ने दाया बहर धवा वर हिया म्युर्-अंतः ग्रावितः म्वरः पः इवयः द्वरः श्वः रतः धरेः हे वहन वयः त्रुपः यदेः ग्**डं** 'पॅ 'हुतु' पगुदः ऋषः ग्रे 'हे 'यः ग्रः हे न् त्यः न् र्रे शाहा है 'हुन् ' मग्रातः मृत्रानः इस्रारः र्भुः तर्ने गृषः सेन् सः ने स्व वित्रः नृष्यः वृदः । तर्मेन् प्रतः सहिन् सुग्वारा न् श्रेण्या सु राम्यान् स्वारं म् राम्यान् स्वारं म् राम्यान् स्वारं म् राम्यान् स्वारं नवरः वहर यः दर्भः सुः वैः कंरः स्वः वः क्वुकः ग्रीः भेन रेनवः दयदः वेनः शुकागुराम् वाना पळेला समका से । मिल्या धराने स्थापित स्थापित श्चेर् मृत्रुर स्नुवरा वर्मेर् प्रदेश्च प्रदेश व्यवस्य देव क्षेत्र वर दुवर । "क्ष ब्रुट्राट्यक्रव्यस्ट्राप्तियव्यव्यक्षः इत्याया ने न्यायः वर्ष्ट्राप्तः मदी महु दो मदी मार्थ मार्थ महिमार है मही वास है हिमार खन मार्थ मिर बाकेवार्यते प्रमाया क्रया श्रीन् श्री प्रमावाप विषातृ याते श्ला वा केन् व्या क्षराया नेरामुलान्तराय तुवाया केवाया आवा वहरामु वाक्षे वाक्षेता व्वार पॅर्व्स्य इंदर्श क्षेत्रीर् भी श्वाया तम्बर्ग वेषा " वेषा र्रा **"मॅराया** क्रेव्यंदे निर्देश्या स्थानिया निर्देश मा क्रिया है से देश मा क्रेव्यंदेश मा मदेव-वृत्र-धुन्य अळ्च . हु . न्ने नदे विद् नी मुल न्नद र र हे द मुल .... नम्ब स्प्रिं की नर्ग में विश्व कर् अष्टि ब मानई म्ह र मू र परि हा अरे

① (वृद्धः नगृतः गृतुः नत् वाञ्चेगतः नवा नृतः वृद्दे स्वाः गृत्तः 185)

व्य-व्यान्त्रेर्यान्य विष्यान्त्रेर्या विष्यान्य विषया व त्र्वातः अन्यानम् तः स्वातः स्वातः स्वातः न्याः न्या सदान्दरावर्षा यद्रावाराच्या वर्षावराम्याः ..... अव नदाह्यका द्रशादवर्षा द्वीत्राच व ेदानश्वासुन वि द्वार हु निरुद्धा देता वि र्षेष् अन् अन् वर्षे ने पश्चर ने या वा विन स्थ र्षेत्र क्या विन स्थ क्या विन स्थ क्या विन स्थ क्या वि हेल.पश्चरताने.पग्य.ध्रव.ग्री.म्.यर.पव्यायाध्या सर.ह्र.क्.यदी द्वान्ता त्रुर्वेर द्वा कुल कु द्वा नर लदर वु नर द्वा या या विष ঀ৾৾**ৼ**৾৽ঢ়৾৾৽য়য়৾৾৽ৼ৾ৼ৾ৼঢ়য়ৢ**ৼ৾৽৻ৢ৾৽৽ৼ৾ৼঢ়য়ৢ৾৽৽ঢ়৾ৼঢ়য়৾৽৽ৼ৾ৼঢ়য়৾৽৽ঢ়ড়৾ৼঢ়** लयाविरानुन् न्वेतायन्। ब्रिंग्यदे नग्वातायव श्रीत्रावा नदी नुरान्य **इटा श.रनय.ग्रे.नर.पे.धेनय.**ईय.पक्च.न.ल्टा ७४४.चश्चरय. हुत्रपत् देर्वसदेश्यवातुर्दे ।स्य अवस्य स्य मैर्द्र श्रेव स्र तुरु:बॅद्र-अ:मन्ना-चॅर हेव्र-चॅदि:ब्नशः दिन्नशः शुर्व्यारः सुर्वे रहेवारः लट् अर् पर हर लट् नम् त स्व गु भे लर तहे न न न न न न न न न न हैव'नवबाग्रीवाबी हार्चवाग्रहाराज्या नेवायहार दाववाग्रहा विवयः परे गुरा पर्या परि विवयः भेगः हैं वः क्षेत्रा या शे पर्या दिवः गुर म्रॅंट.अ.कुव.त्र्यात्रभव.भूव.ग्री.बावया.र्टा ह्र.४म. हर हु. क्र.स. नवर्यात्रीमिन्द्रीत्रवर्षात्राहेत्रीन्द्रीक्षेत्रायहर्यायान्त्री

① (देन वेर लंद नदे द्वेष सु वेश व वृष्ट्र ग्राह्म १६०)

सरावश्वराजेराह्म वाज्ञुयादव राखेराह्मरायकराख्यायव राही बिराय क्केब्राच्याच्याम्याचेनवराचे हेराह्या ह्या व्याद्या व्याद वियानु याग्रीयानामाञ्चनया विषया पर्ने नया ह्यु पाळेच पाला वे यालु यापामा क्राम्ययान्ग्रीयान्वयाक्षेत्रायाद्त्। "० ह्यान्ययान स्राम्यादार्भ्या म्बद्रायतस्रे क्षेत्राधेनरा स्र्राम्बद्राम् र्द्रेयाशुःन्यरायहीयय न्यान्यतेः भ्रूरा "ह्र्राञ्च न्येषायते छेषा गर्चना ग्वर अर तहर हुर र्ने परे हेना में र ग्वर प्राप्त प्राप्त हुन मही था महिषा महा मु हें वा महि हैं मा यहा हवा महहा महिष्य महिष्य भूव भव अस्त्व मिराल्य मिरायिय है नियाय अस्तान दे या के श्वास न कलाई विवाया ज्ञून मा अज्ञू वा विवादिता है है विवाया चरुरान्त्रभ्राच्य्यान्त्रवरा। "② वेदान्यययानान्त्रा। प्रमादार्भ्यः र्रान्वर ब्रेव संग्रा हर वियाम न्यत्यव परि ब्रूर यह र वर । "नगतः व्वन्धवः ज्ञनः व रायदेः विवास्तानु देशः वर्षित् य दी तम्राष्ट्रियाक्षेत्रः त्राचनावाक्ष्यायवे स्वास्ता वे व्यवस्तरायके न रट. श्रुवः सद् नम्दः ह्रव वनसः हुरः ७ वः ह्युः सेरः न्युयः यः परः दिवसः ह्युन्यः ग्रैयः ः पश्चयाया वर्ष्ट्रालु दर्षा तक्ष्रा च्या च्या व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त **ৼॱॸॣज़ॱऄॖॱॸॴढ़ॱॺॣॕॺॱड़ॹॹॱॷॸॱॶॴढ़ॏॺॱढ़ॿॆॺॱढ़ॺॖॆॸॱॸॣॸॱऻ** 

① (অই'অফ্র'নেইর'র্বাইর' 68)

① (ব্ৰশ্বথ্য ক্টা অ স্থান্ত ক ক্ৰা শ্বং ৫)

मर् कमः श्रेन् श्री विमया यने म्या नरा वरत तमर्या श्री तह हैं हैं र ৾ বহৰণে হুদেৰেৰ বৰ্ষা ব্ৰদ্যাহ্ব বিষ্ঠিৰ বিশ্বৰ স্থান বিশ্বৰ বি <u> ૨૪.૦૦ કે ૧૪.૧૪.૧૪ કે ૧૪.૧૪ કે ૧૪.૧૪ કે ૧૬૫ ૮૮.૧</u> क्षान्त्र श्रेन् श्रेन् श्रेन् श्रे प्रदेश्य प्रति । या वर्षे प्रति प्रति । या वर्षे प्रति मविवाम ह्रवायदे वैवा हें वाया नहीं न केटा रहा वेबवा नेवा हु पर्छेरा मःमङ्गाञ्चेतः क्रमः वृत्राः गृत्राः के मृत्रीयाताः महाताः मिष्टिकः सुरावः वा निहें नेथा दे.हे रथ.क्ट.अ.हिर.रट.इयय.नेशिट.क्र्य.हेय.हन.क्टर. यः बह्दः द्वेषः श्वायः नगायः वेषयः द्दः हेषः शुः यद्येषः परः प्रायः ह्वः <u>ॷ</u>ॱॕॱॸॹॖय़ॱॺॱक़ॗॱॶॱ**ऴ**ॺॱॻॖऀॱॺॕॺॱॺॕॣॸॱॱज़**ॺॱॺॕॺॱ**ॸऻॿऀॱॸॺॸॱळॅॺॱय़ॖॺॱॾॗज़ त.श्रंश.के च.से र. पहरा श्रं चया की या यह या ता की . के रावा चया । अर. म्र. नरात्रधराष्ट्ररान्चनान्वता अर्थना हुराह्मारायदरान्धरावन श्चरः क्रुन्त्र तथा श्वुनः सदे **. स्**या क्षेत्रः श्वें व स्क्ष्या या ने . नृतः । सं . क्र्रं नः ननः पञ्चला "ा डेलानायलानः क्षेत्रः ने विषायत् न्याः १९५० मा १९५५ मा १९५ नम्यः भग नै: भ्रेगः निले न्दः दम् कः न्दरः अधरः न्या के सं ले रा न कः क्ष द्य-५८. पर्र- क्ष्य श. वेष्य-त. लुव-रू।

14. ਬੈਕਾਲਾ ਜਿੱਤ ਕਾਰਕਾਈ ਘਕਾਵਿਕਾਰੇ ਦੁੱਤੀ ਕਾਲਾ ਜਿਵਾ ਵੱਕਾਲਕਾਰਡ ਕ੍ਰਿਲ ਕਾਰਨਕਾਰ ਕਾਰਟ ਦਾ ਕਾਰਟ ਦਾ ਹੈ। ਜਾਣਕਾਰ ਸਿੰਘ ਜੇਵਨ ਕਰਦਾ ਜ਼ਿਲ੍ਹੇ ਜਾਣਕਾਰ ਸਿੰਘ ਜੇਵਨ ਸਿੰਘ

① (र्वाय.वर्ष.वर्ष.वर्ष.वर्ष. १५०.५४. 65)

स्वाप्तवाद्याच्या क्राचन्त्राच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्या **पतुरः**प देे हे सः प्रमादः ह्रॅबः ब्रह्मः विष्यः विषयः विषयः वर्षः पदेः व्यवसः **८ गुर्-बेर्-इ**ब-कुल-गुरा-विवय-सुन्य-ववय-ठर्-न्युन-य-वठरा-य-----हुर. पर. पहेवा बूर. अप. प्राथा करे. री. अर बया तर है. है वे अ अ अ र्रः। सुरःपङ्गेन, पठवा अवशः मुवा ग्रैवा ह्ररः तथा वा विवा न छन् ह्रवा त्रेताप्रमान्दे केन् म्हार वरान्में रका मङ्गरान्ता हु त्यते ह्या वरा हु न त्रे**र**ॱ**लुल'र्झ**म् श्चन् श्चेन य**ल'र्ने न** श्चेन् श्चेन् श्चेन् ले न्युः " नशुवालेयायदे भूयाक्रमा क्रमा निष्या स्थानया भ्रमा सदी वरा मूं वाका करा । ন বল্ল নাথনা

"क्रैट.करे.यं.वंबा वरु.हा वरु.वंबा वरु.वं वरु.वं

वरे नगर व्यं न सुर पट्टे न

र्व-तरी ब्र-अ.क्रब-यवे.चगवे.हंबाख.पत्रं रवाया. ब्राया स्थान विवादा विवादा स्थान विवादा स्थान स् स्तर्यत्यः विन्वे विन्तर्याः विन्तर्याः विन्तर्यो विन्तर्यो विन्तर्यो विन्तर्यो विन्तर्यो विन्तर्यो मयरंग श्रीरःश्च-मबरःमद्भवः हुन्। नेवारे मया हेवारे । वा ८व.त.इ.स्ट.ध्र.स्ट.चप्र.ह्र.स्व.च्र.च्याच्याचारवातात्वाताच्या ब्रद्भः वेन्वायायदे : व्यायदा र व्यायुक्तायदा यहेवा क्रिक्र व्यायवा हू विव महेता वरा वेगा मैरा महिरा पर। वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वसार्वे सामा क्रिक्त के वा मदे के के तर्मा मान्या वा माना के निष्ये प्रति । ञ्च अते क्षु ता न्द्रित वळे चुरा त्र्वा मुना छे । अवत न्द्रित त्रा न्द्रित याचेर् छ्याम्राया केव् यंर ० व्रवार्ष्ठ्व स्याप्ति र वा प्रयाप्त्र व्याप्ति ग्रेन्यापरात्राविवयाताश्चराते नयत्यार्टा म्राकेन्यरात्रा पादः श्वः यादः लु . या न्यः । त्रः विदः पड्यः ग्रीः लु . या नु न्यः । विदेशः विदः या नु न्यः । ग्रे-द्व-वययारुन्-विव्युः तिम्यायायन ग्रेन्-द्म्यायायन प्रा मग्राबासम्बाधिक व्यापासित् स्वयः वित्तु क्षावाव्या हू यदि हा बालानम्यानभूवालुवा सुदामङ्गे न्दराक्ष्या हु त्यवार् वा छेता न्म्यान्तः कुन् न्यया व्याद्यान्नि विष्या वेष्यया प्राप्तः न्युन् व्यास्तः । ग्री.तिबाधाः व्रापाः केर. यवशायहमायाः ग्रीतः तरायहिवः पठत्। हेवा परः 

च्या प्रति स्वा व्या त्या प्रता व्या प्रता प्रता प्रता प्रता क्ष्य क्ष्

युः दं स्वाची चु च न द्व प प्यत् मुख्य वे य तुव प्यत् हर व्याप्याया नम्भानवना नवरा नदी नमात ह्वं क्षेत्र न नेवा र तुरा धरा हर ह्या द्भरावि रदः मृद्रेयावयानग्वाञ्चर ग्री त्यया द्वा ग्री प्राप्ताञ्चर ৻য়ৼড়৻য়ঀ৻ড়ঢ়৻৸য়ঢ়য়ড়য়ড়য়৻ঢ়ৼঢ়ড়ৢয়ৢ৸ঀ৻ঀৢ৻য়য়ৼঀৣ৽ঢ়ড়ৢয়৽ঢ়ঀ৽৽৽ मी कॅ. सं. र्रः। मृत्व या श्रवाया ठर् या स् संरावया प्राप्त ये प्राप्त स् दर्भासक्रासं विवास वदान्य विवास विवा ळॅं व्यानवरावया नगाराञ्चेवानववा द्याया नरायया गायवया तु छित्। । । । **45** 

द्वाक्षत्रम्हणा प्रणात्रक्षत्रम् क्षेत्रक्षत्रम् कष्टिन् क्षेत्रक्षत्रम् क्षेत्रक्षत्रम् कष्टिन् कष्यत्रक्षत्

ऍवलाय**रा इंतर इंतर विवास राम्य राम्य प्रमान विवास स्टार महे**वा सर्हेव म्हेर-भूः नबरानग् क्षाग्राकाश्चे बाह्य स्वराग्यर दुः द्वर केर पठ्यः यॅर:ॅर:व्रक्ष:रूट:दर्नेन् ग्री:वी:न्बद्रक:व्रव्यक्ष:ठन्:वि:न्वद:तु:वश्व:पः डु८.पर्येत ८.७.यूजा.<sup>कु</sup>ब.७४.घथप.धूब.घथ्रंथातपुः हुथाला.चवथा. दर्ने मः न्दः प्रभुत् प्रते र र्रे भः कुत्र के दः प्रते र हे ता दर्ग र की का प्रते र ने के स्व त्रेन्-हेन्-न्द्रवान्द्रवा है। विदानगतः भवाः हुः है। हेन हे वावानवा मते. पर्या कवा मे शरादधरा करा या पर्या मा दह्मा ख्रम रात्रा परा ही **इंग**.यथ.प्रमूर तपु.चज्रू व.च कुर. ज्वाय तथा छेर. ग्री. ग्रय.यथ.पय. **ऱ्य.** <u> च्चेन् द्यास्या च्चेन् ख्या चानः क्ष्राः क्ष्राः नेया नगतः स्वार्धः स्वार्थः व्याः</u> ॻॕज़ॱॖॖॖॖॖज़ॱॸॖ॓ॱॸॖॖॖॖॣॸॱॸॿॺऻॱॿॕॱक़ॣ॔ॱढ़ज़ॱॸऒ॔ॸॱय़ॱऄॖॸॱय़ॱख़ॹॱॿॿढ़ॱख़ॱॿॺॱॱॱॱ श्चीत् पञ्चातः क्षेत्रः तुः तृष्वेतः पदेः तेवातः तृष्टः । वर्षः या हः अयः स्वातः गु.चथा व.प.पबंदय.कु.पद.ऱ्यंथ.वैद.यी वृथ.ग्रेट.पयोद.इय. शु'त्रच्रत्याव्या हू'यदे ह्या वार्ता इ'यर यदे हूं वेद इवयः त्मालुकामदे सम् कर्ना मुना हूर्या द्वारा स्वार स्वार माना नगरा बरम्यायिः तृ विव ग्री वयाम् । वर्षायम हो मवर प्रति म्व दि स्व हुर हेषाः <u>ঀয়ৼয়৾৾৽য়ৼ৾৽য়ৼয়৾৾৾য়ৢৼয়৸য়ৢ৾ৼ৽ৼ৽য়৸য়য়ৢৼ৽য়৸৽য়ৢ</u> वरःवयःग्ररःस्ववयःर्वयः पर्ववयः पः दर्नः यः पर्वयः पः यः न्वः पर्वः हेयः त्य**र**काक्षे चेन् प्रदे नेग्राचुर व नग्र क्षेत्र ग्राव क्षेत्र व व न्या ने दे ..... द्दःभेयःतरः वेयःवयः वः यः य्यं यः वयः यदः हुः यद्धवः व्यानेः नेयः यः ः गहेंद्र दह्य

र्द्रवः विवाला इतः न्यं वः विवालि वितालि न्यं तः र्वाकः नर्ज्ञः नवनः छेर्-तुर्वा नगदः श्चेदः इस्ययः द्याः नद्रं रः ग्रीः नश्चे नवनः छयः वःशःतत्रुवःभेरः। वैगःन्धन् वः श्वंगवः र्वः रवेतः व्यनः व्यनः विनः नि इसका ग्रे के का कर के त्रा के का के का कर का कर के कि का के का कर का कर के कि का नश्चनः अन्या ग्री त्विराये व ग्री र र वे व ग्री व ग अर- ¥ बा के पा क्रिया प्रता क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया व व्या च चे दा । दि रदः वै हैं। या प्रिंप्य वे इ वर्षा यह क्षा या वि वि राम वि वर्षा देवानु श्री हैं में या या नहरा यर ने र्या मी मार्थिया रे पहरा वर्षा देयाचु न च्या प्राची दे तामहे द द्वा धुला चु है की के र इवका ल म्नर्या नश्चिता खन्र हुन् अर विरा वे शेरोर हुन् र तर ता धन हिन्या नहन्द्राया चुरादर्न र्डेन्कर्पर्रे ग्राया ग्री क्रिया त्राया क्रिया म्री प्रवाचित्रच्च क्रास्त्र प्रमात्र ह्व द्वा व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप वयान्वेनवान्यक्ष्वायाच्चयाने मृत्ये स्वायः व्याप्ति । व्याप्ति व्याप्ति । हू विवाह अवाया कु वळवा लुवा परि हू यदी हा वदी हा वा प्रा चम्यायायायायाये द्वावे ने विष्या विषया য়ৢ৽ঀৼ৽ঀয়৽ঀ৾ড়৾ঀ৽ৼ৾৽ড়৾৾ঀ৽য়৽ঢ়ৼ৽ঢ়৾৾য়৽ড়ৼ৾ৢয়ৼয়য়৽ড়৾ৼ৽ৠৼ वया वैःम्वन्निः वः महिंदः द्रम्या धदः त्र भूतः वेदः इयः कुतः न यद तपु. इय. ली प्र. तपु. येल्या प्रयास्त्र में प्र. प्र. प्र. या प्रहे. हे प्र. येया प्रहे.अ.प थर.वथा.घथा.करे.हुर.ज्ञच.चथा.परीच रे.अपथा.रूप्या. ष्ठर् ग्री पहे कंग महरामा **इया शाक शें शें**र यहुव महीमा सेर्पिसे द्रवरात्मा स्वादा स र्धर क्षेत्र स्वादा स्

र्देव-क्षव-महिन-ला लव क्षव मदि-र्देगव महे-र्देगव-र्द- हेव-म-महिर् कुरे ख्रालया पर्वाता निता विता प्राप्त करा है। लिबाया ग्रीयाःयाःपायाः क्षवः पर्वाः त्यान् । प्रवास्त । प्रवास द्वाः त्याः विवा निवा । विवा निवा । प्रवास द्वाः विवा मदे शे र्यम् वर्षे न तर् या द्वाप्त हिन न विताय वर्षा वर वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर् यः नृतः। रतः बळ्वयः ग्रुः विवयः दम्यः ग्रेनः वी रतः यदे विव वया ननव द्या ग्री विवया गृहें रा नृष्या शु त नृष्य व व शुरा खेता स्या श्री व वयारमा द्वरायमा भराग्री दिमार्थेन के नान्म। नवमामवान् ने तर्वेन ब्रन्यित वे केराय हे या ब्रेन्स ब्रम्य ही या या क्रम महिया हे या स्वीया ही । कु.क. वयय. २८. वट्या. तर्य तर्म अर् अर् अर् अर् अर् अर् या नदे ह्रन्य ग्रेय व्यव रूर् ग्रेय हुन ह्रन है । हुन पदि वे वे दिन न भूथात्या झे तम् पूर्ता स्वया वया विषया तम्या छूट दि रे नया या जुनाया न्ता अनाक्तरमहें दान्में या नेयाकन् ख्राक्तरम् वियाने माय न्ता मिवयः यात्रिययः दयायः मुद्रा ह्या छ्या या स्वायः ग्री विया पर्द्द्रवा दर्शनः र्राम्यायर् पर्दः त्राप्ते व्ययः म्**र्डनः न् मृयः** ने म्यायः मृयः ह्रिवः इवयः ग्रीयः " त्रेबर्यान्द्रम् वि:क्रीं वर्षाचनान् विद्या व्याप्तम् वी:व्याप्तम् विद्या र्वायाः श्रु रोतः या श्रु र्देशक्षयाये वर्द्वाया र्द्दा र्वे या या या वर्षा मते. देन्या ग्री हेयामा स्ति वा नगत हिंदा न्या स्ति वा नह या ग्री श्रेष्ठ देत्र देव क्षेत्र क्षे

नमुन् हृ त्यते त्रायान्ता द्वारा द्वारा द्वारा हेन्। लुका परि न माना माना हिका शुः त च र वि ते वि ते वि ते वि ते वि हेन्।

दॅवः कवः बठिषः ला विः तः च व ब्यायः सम्बन्धः यः न्दः सम्बन्धः तर्वाद्यात्र्वाः कुतैः श्रूर। प्रवाद्यः ग्रुः श्रूषः स्रान्यः त्रेल'ततुम् वैदान्धन्'वः स्र-'खम्काल'न्म्वापम्'क्र'क्षेत्रे स्राप्त्रे स्राप्ति बः स्वः हवः न्दः नेवः स्टः ठवः दि यः श्चिष्यः ग्रैः पविषः ग्रेनः धवः । युरा त्युर बेर् इया कुला युः लवा मा छेर छंव करा वि रर वी तर्र यर गर प्रंत् ग्रै पङ्गं पवन प्रः यहे येव र्षे नवार रहा हु : यदे न्नु य य भु *न् न र महत्र क्या येन् पा चु या या य* निकातु या देयाया । **ळेवः यः चुरः ५५ म ५: छेवः करः ५ मॅवः** विष्यः र्यः रेतेः अविवः यः न्नः अः नङ्गः नवनानीनहिंदाकु नदा वानवाम वा वानवाम वा वानवाम देन्यानहे न्यूया हु स्वते हु स्वते हा या वया नवया महेन्या छै। मन बंद्दरी चम्याञ्चरम् वयास्याग्ची ज्ञार्यरा निर्मात निरम्भ निर्मात निर्मा निर्मात निर्मा मलयार्च वियासदी दूरवादे न्ना वादी रामाद मादा महार मुदा र में या

स्याचे द्राविता व्याप्त स्वाप्त स्वाप

च्याः नेयाव्याः क्रिर्म् प्रमुद्धाः स्थाः क्रियः स्थाः स

चेन् वायव वेन् यर पहेवा मुव य वे रव हैं प वर पग ने राव य है कर.पर.पक्षथयाग्नी.**शु.र बरयान श्रेयान.जूबेयाग्री.**मुचे व.ग्नेयाखाक.तीया. ॱॾॕॖॺऻॺॱॹॖॱॿऀॱॸऻॸॣ॓ॱॸऻॗ*ॸ*ॱॾॖॖॺऻ<u>ॸॱ</u>ॖॖॖॖॸॱॸॸॺॱढ़ॾॊख़ॱॿॖॺॱढ़ॱॺॸॣढ़ॱॸॣॺॕॿ ग्रेग् ग्रायर रु पर्मे र पदे अव्यार हे या वहा पर्मे र पा हे र रु पा व लूट.च.परीच चकुच.क्चिचायाशी.प्ययाद्वीयायाक्चियाय लटा चकुचा.क्ष. यर.सूर.बेन्या य.कर.सूब.ग्रट.ब्रेन.त.र्टा व्य.पपु.शं.वपु. विनया क्षे न्दर हेव से ता संग्राच का क्षेत्र या तत् म न प्रवान का मारा हैन न्यम् तर्वन् न्व्या बुद्दाने वया न्दा व्याप्त व्यापत व्याप ब.क्ट.जय.च्योदु.ह्याश्च.पद्याच्या व्रापदु.व्याचर्टा क्रे.यर. **४ॅन्:पर्व: कृ 'बिन' इया या थी: बया मा 'च कु नः पर्व: न मान: में मा मी 'न में मार पर्व:** पर्वतः चेत्। यत्रः न्यं दः इयरा वर्षः चुवः तुः राकः धाराः धुवरा ग्रीः श्रुदः क रोबाया प व्या वी प रुपा विंदा हो र। पाया हो र रें याया या वें द र् वीया रे याया विर.य.पस्तारी चर्णायायरच्यातार्थे. वृयः इययाताः वृयायदे चर्षाताः रॅव-मवर-रॅव-हेर-झुन-र्मेरा धर-मविमयाव-मर्ट-ताः इः रार-छर् मदे बन्दान्में व द्वर में रुवाया दिन्य । हेराया मृह व वर्षा शे तर् मा तश्चरः अर् : इया शुलः शुरु। वि : या निर्दे : दर्वे या य त्र या यदे : रहः 35'I दक्षथ्यः ग्री.पायाः क्षेत्रः न विना दि । न द्वा न न विना देवा । विवा न विवा न विवा न विवा न विवा न विवा न विवा वार् दुरायर वि या वेतायर नर्दर वी अर्तर वे वा रता सहन् वा गुरु " वयावना बेर् यावना सने या ग्रमार नार यर सहना देवा श्रा तर्ना

स्वास्त्रम्यायव्दाद्वाशुः तत्त्व प्रमृतः व्यापायवाः

बर्दर्धंदर्ज्यः म् दूर्यदे न्ना सदे सद्दर्श्वर्षा साहिता ही त्या गरि न्द्री त्रेन्द्रा न्यमामी प्रमृत् याचेन्यते ह्रां ने के पार्थेन बर ग्राय पर्दे स्वराष्ट्र निव तु व्वराष्ट्र पर्द स्वरा सर्व न्य रे र्षरम्यात भ्रेषाः रेष्मवृद्दाद्वयामञ्ज्ञयामदैः स्वयाष्ट्ररादम्दया क्रेयाराः ।।। <u> चैत्। र क्षे भूत्र य रद्या सबर श्र पहुंचा च</u>ुदे च मृदः ह्रा बर्द र र्घे व इवंत्रा ग्री विदार्भ में दे है ते ने न तान में न ने हिंद न निराया सुता वता हुन । ब्रॅंब-(ब्राने-द्वेर-वेनवानम्बर-ज्यु-द्र-। ध्वेद-कर्-क्व-५ह्न-न्म्यान्त्रम्यान् वित्तान्त्रम्यान्यान्यतः वितान्तः वितान्तः वितान्तः वितान्तः वितान्तः वितान्तः वितान्तः वितान ग्री-नग्त-ग्रॅं वाच्चवानदी नग्रॅन् द्वामदे श्री-दिवाया व्यापञ्चन देवा लु यः हे : नर्ञ्च : नव्या न्ने द्वा चित्रः वित्रः व्या न या वर्षः न या वर्षे य ञ्चनाय बर्श्वरयः ने नमायः देवः नश्चरयः शुः तहम <u>ह</u>यः स्रः रेवः अनः पृः षपु.भ्र.व.बक्र्व. थे.शु.पहूच.तर.विश्वय.रट.पर्वाय.न। य.क.तीय. व्यवारी तथा द्वास्ता निया भेषा भेषा । वया स्वाप्ता प्रापहण द्वा रेग्रायास्त्रुग् वृ कृ त्यते ज्ञा अन्ता प्रम्यायाया वया कृ यर मस्नामितः विवाह्म स्राप्ता स्वाहिता स्व नगर नेन दंर देश वर्ष वर्ष हैं र निर है अपन न ल र कें प्राप्त

पिता र्याया श्वाया वि. श्वराय हेव. तपु. रेचे. केव. की. मृतया वर्ष है विवयः ह्य वर्षेट्र अरः हते न्यंयाकते स्वा. तुः वर्षे पारे मू.कं.यंथ.रंटा तज्ञैं शुरं इंश.मैज.त.वं.वं.वंथ.जय.विर. चैन् यः व्यापञ्चरः रदः वर्देन् ग्रैः यन् यः वर्द्देनः च्याः यः वर्द्देनः यः कु. बुव न. वर. त. पर व लर. पर व. प के व लर. र वे व प्राप्त व क्रिया व तत्तर क्षे. क्ष्योथ. प्रचे. क्षेत्रया श्रे. श्रे. मी. क्षेत्र क्षेत्रया ता विद् तरुम नम्तः ह्रवः यन्तः न्यवः बुवः संदः वयः तद्यतः रुनः ध्याः वदः पत्रेष्-विप-पत्रेषाग्री पहेष्-श्रेष्-ताः कुर-पत्-विष्याः देवायः देवायः देवायः । क्षे.ल क्ष्यः नेबल प्रचित्र विवादा ঀঀঀ<sup>৽৻</sup>ঀয়ৢ৴য়৾৾৾ঀ<sup>৽</sup>ৼয়৽ড়ৣ৻৽৻ঀয়ৼ৻৸ৼ৾ৼ৽ঢ়ৢ৾৽ৼ৾ঀ৽য়ৼ৽ঢ়ৢ৽ৡৢঀ৽ঢ়৻ড়ৼ<del>৽৽৽</del> लुकामदे छिरा तेव छकामदे निल्म में वास्तव सार्मिक छ । विला बे.र्ज्ञ्य.तपुर.च्याय.स्यायवर.च.¥शक.७्च.र्ज्ञ्य.चेक.चेक.क्य.क्य.क्य.क्य.क्य.च्या बटयार्म्याकु. लवा इर.क्वर् ब्री. विषान्ट लवे ही प. हि. हन ট্রব্য. दर्भः पविव चुकाव के के राम्यका कर की र प्रवा क्रिंग में सका या कर तर्म र नका महार के तेयता इया र्या मी विमया परे ग्या मेग्या मरा बुया परे पर्या । कुष्-ग्वरः देवः रेग्वः ग्रे केः व्यन् छे नग्वः व्यन्यः न्यं वः यहवः वयः इर वंदे क्षे वया द्र सदे क्ष य रहा नग्यायर ग्यायदे कू विव

म्बर्ध्या ताम्या मृष्या विष्या विष्या मान्या सम्या सम

द्वास्त्राम्भवाता द्वानार्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्रा श्चायाम् व्यापदि नव्यान्यान ने यात्र न व्याप्त व्यापत व्याप हु स्परे ह्व :बरे प्राय रेगाय रें द ना केंद्र स्व : यह : यह से स्व स्व स्व स्व से स ह र् ज्याया ग्री विषया श्री विषय श्री विषय हिस्स विषय है । **इ.स.मु**ल.स.पुष.पष्पाप्रते , द्वे , दवे , दवे , या द्वा पत्र पत्र पत्र प्र प्र खुदा हैरायामभैगावया मगायाञ्चेता वान्यान्येवामक्याण्ची हिराया पहरावया त्राप्ता दरा हे वर्षे पराप्तवया वरतारेया चठताश्चे तास्यान् क्रिंट होत् स्वराम हतात् तार्या वर्षेत् श्चे त्या स्वराम **चैतःमदे**. तु. सम् नि नि में क्रायामा नि में तार्सम् तार्सम् वास्य स्वर स्वर से के से से स **इंग्** श्रुत्यायनेन् ग्री ज्ञान्यायन ने दारी रोत्र इसवाया प्राप्त या तथन ग्री ..... द्रमानस्याक्रेक् या स्वावक्रिक्ता स्वावक्र स्वाव मदी हे ब न्दा च्या ब बा यहाँ र की ब र यह व र नगतः र्ह्रेदः अन्तः न् चेदः दक्षः इतः यः नहेंदः च रः रदः तदेनः ग्रीः लक्षः धेनः महर्में कें मिलुरार्ने वास्तान् विकारे का चुरावा के का गुराहू विकार ञ्च सर नञ्जय देव लु रापदे छुन द्या गुन पदे लय धेन नम् द स्न । ... न्बॅरल देव क्र छेर न्बेला वन हे क्रें र ल हेव क्र न्बेल परे हैं. এম্বেশ্ব প্লব্ৰেই সেন্ধী প্ৰম্বত্ত্ব্ৰেম এ নী প্লব্ভৰ

र्व कं व महिषा था दू भावे ज्ञा स्ते हुण बहें र वद यवण सते

क्रैरायाया श्वमायहेराययार्ने र्वाच्यायाध्येवायत्व मृतुरार्नेवाया वेन् ज्ञून् चेन् न्म्या चुरावान माना ज्ञून व्यवान व्या व्यापि व्यापा लुयान्यानेन् क्विन् क्वेन् प्याप्ते क्वा वित्र व द्यमान्यामवदानी प्यन्तिम स्राक्षान्या प्रश्नान्याम् वयामयार्नेवान्छे पछेन् छेन् अपयार्खवा रहा यह पर्नेन् छै अहत्यापते स्राश्चिर्यार्मः। दृष्येत्रञ्चायायातुः नायराम्वा दृष्येतेञ्चाया वयानि नम् नवा नहेना द्या श्वरता वया ने नि श्वे नि ता स्तर श्वर से नि स ढ़्वात्त्रत्वणायत्वाप्यायदे भेवातुः श्रेष्ट्रायाळेवाया धेवायत्वा श्रुतः वयास्ता बुवा हेराया क्रिया ने में वाका करा हरा से मावा ख्रा मा असे ना प्राप्त मा यनः कुन निवृतः नेवायः निर्देशयः निवायः चुतः के निवायः विवाद्यायः चु ग्रॅंबान्ड्रबाच्चवायदे। हूं स्पर्वेन्त्राः बराव्हे बायदे निमादान्य दानि व वराधिः भे

स्वाह्मयाना स्टार्ट्य क्राव्या शुक्रा विष्या श्री त्या स्वाह्मया स्वाह्मया

रॅं व ढं व मिर्रेण या विद्या ग्री का किये स्वाम में व सवा प्राप्त हे वा खु বর্হমা**ব্**ষাব্রুবানভ**্**শ্রী শ্রুমান্ত্র্যার মান্ত্রু বিদান্ধ্রণ ব ৼৄ*ॱয়৴*ॱড়৾*ॱড়*৽য়৽ড়য়৽৾ঀৢ৽য়৾য়৽য়৾ৼ৽য়য়৽য়৽য়য়৽য়৽য়ঢ়ৼ৽য়য়৽য়৽ৼ৽ **तु**"नञ्जनः र्ने बृख्*षाव्यानम्* द्राप्तान्ते दृष्टाः श्रेष्टाः विश्वतः अदः इत्यः कुत्यः नगर्-पर्दः हेराह्य विराय कें य दर्भ दक्षेत्र केर् सूनशादर् साया विराय इ. शूर. थय. कुर. चंचेर. कुर पंचया ता क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था जिबाध ब्रूप.धु.पर्टे.पर्टेब ब्रे.कर.चबाषु.इंध.धी.पर्वरकार्थार्ट्र.च.वैथ. नर वि. पर छ्र, पर था पा प्रचा थया चर्ट तप्र सूचा हिचया पर्चे पुरुष्य पर वे कॅ 'सुत्य'नवा' तर्चे न प्येन : बेन : यन यन हे वा विषय व हे या व के या व के या व हे या व हे या व .ब. केव में दे.हन्य हेया पड़े निवया ग्री निवेद्या पार्टा बहुव परा । त्युक् तेगवा पर द्युर् दे क्रायह ग क्रावर विष्य ह्या विष्य ह मकुन्-मझरा-तर्नु ग्-मरा-तर्ने 'सन्-इसरा-ताक्रे सं-चेद्र-हे 'सन-दन्दरे.... लदःन्दः। यदःवःववःहःवेलःवर्न्यःवव्यतःवर्षःक्षःवयःन्दः। <u>ঀয়ৄৢৢৢৢ৴৻য়৾৾ৢৢৢৢয়য়ৣয়য়ড়য়য়৽য়ৣ৽ঢ়ৢয়য়ঢ়৽ৼৣয়য়য়য়য়য়ৣয়য়য়৽৽৽৽</u> धेव- ५ तु मा परा श्रॅला सम्भात्र मह व व व व सी मा मिला 되되지" **न्नेयाग्री,रं.के.लूर्**नन्तु,रंजू,राच्यी,त्याच्यी,श्रुप्त्ये,प्रच्यान्त्रीरी

रा स्वावरावयाक्षा प्रमुद्दायदेवयायते सं स्वाहरामी रा पश्चापवाः याद श्रे न कुन् तरे बका परे खिन र में में में निर न में न वन छेन। वर् वन्न उर्ताता निवा में वार्य स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स् रैबायायबिकार् पर्मेरायाचेराकेरा पर्ने र गामबन्धारु त्या झालरा मल्बायायते हूं विवादया श्रीते पर्मा एक से मिन ने द्वार के प्राप्त रे वहवाने विवासी पकुरा है के लगा प्रविष्य परि विषय पर्ये राया श्रीप्र मु। हु स्यते न्त्रा सदे विषय स्त्री कि तह व विषय स्त्रा मा स्वाया हर स्वाया देरा दे पपुर शिवाय हर र वया वर क्या र वया ব্যুগ্র-স্ক্রী श्र.त. बोट्ट्रेट.रेज्या.श्रेर. घषण. छर्. घटबाय. राष्ट्र. व ढ़ऀढ़ॱॹॺॺॱॻॖऀॱॿॺॱॻॱॻॼॖॻॱय़ढ़ऀॱऄॱ**ॻ**॓ढ़ॎॱॸॣॕॸॱढ़ॸॱढ़ॶॕॱऄॕॣॸॱऄॗॸऻॗ बद्दःद्र्यंद्रः पठ्यः द्र्यः दर्दः दर्दः श्रुः पहरः श्रे स्व নশ্ব-শ্লুৰা तर्-न्गः तः म्रॅंन म्रॅंन्न् न्व्याः चेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षः न्या व्यव्यव्याः स्र-संदर्भविद्वाचे स्र सम्बर्धाः स्र स्र स्र दे दि द् न व्याप्य व्याप द्या न्याची तुराक्केन् छेन् प्रवेश्वेर् यापा छुन्य द्वार्य क्षेत्र छे । या व्यापा छन् यापा छन् यापा छन्य विश्वेष वि मनद्रा म्यारीत् विश्वतारी हेवातवद्या श्रीत्रा तत्वा हे हेवा वाईवः कं वव गहें दा देर लद स्थर स्थर प्रदेश र्षे मार्च क्या में विदान वया रदः भुषः तुः हं दः र्वे नः र्वे नाव नित्र व व व व वे नितः यदे । हे व । दूरः श्रवः नितः । महेवा इ.स.वया मार्या वर्गा पर महत्यते की जुरा नवा स्ता विवा वर्षा नर-दिन्-वयार्जर-क्वार्वर-क्वार्वर-क्वार्यर-क्वार्यर-क्वार्यर-क्वार्यर-क्वा ৾ঀ<u>র</u>ॱয়ৢয়৾৾৾৾৾৾৾৺য়৾ঀ৾৾৺য়য়য়৽ঽ৾৾৾ঢ়৾৾৽৸৾৾ঀ৾৸৾য়৾৾ঀ৾ৼঢ়ৼ৾য়য়৾য়ৢ৾ঢ়৽৽৽৽ स्ट.वृट । वसरा ठर् मूट. या छवं. तृ पु. भु. हुव पा पहेव. पद. मूल्य. रक्ष ह्वा प्रतिविध

म्राचित्रकाम् वामा क्षेत्र स्वया क्ष्या मारा वामा क्ष्या मारा हिला **खु'**तज्ञ**रल'व्रान्**ख्राम्**डर'**मैं'खेर'ञ्चु'बहत'्म व हे'खेर् बर'वरे... भ्रुद्राधंदानदे द्वादु धेवा दू विदास्ययावयात्र यदे हा सद्दानम्य <u>র্মা (বিমার্ম ন'বিমার্ম-মুরী, র্মান্ধ শার্ম প্রমান্ধ শার্ম শা</u> न्दः अहुद्राधरासुद्रः धक्रे कित्र विष्य विष्य देव र न्दरः व रुषः व वषः व विषः न्दरः " प्रस्ता र्नेत-क्ष्य-प्रने स्थयाक प्रत्य प्राधिता हिन् हिन् सिनात हिन न्मा अन्तरम्बा केया त्रां अन्तर्तर्तर्भः न्या वदा वस्तरः ठन् वरामें दाया केवा में ते श्रु देव य न्न केदा म रवा म द्या न्य मी हेरा " धी.पर्याच्या वियाता. झ. माञ्च मा मी. में . पाप शि. मा अल्या पि. पा हो या लामाया. भुषा **पॅन्:बबष:ठन्:नेट:यट:**बने:प:न्ट:ब्व:बेटा न्वे:ॐग्य: न्दः पर्शन् व बका वा व्यद्या श्रुन् कें वा यन् वा सा स्वा सा सु कि व सु न श्रुन् श्रु । पन ฐ ·スエ·スエ·ขิ·ฉฆั ·ฆฺณ·ฐ ·ซัฉ·นนิ·ผูณ·ฐัจ ·ฉันณะฐัฐ · ฮมฆ·ठर · · · · रत्र्वर्र् श्रुन् क्रवायान्त्र वाह्न त्र में त्याक्रवाये वे व र्राम्राह्म न्यान निवासी क्रियति म्यान स्वास्त्र म्यान स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास लूटा। क्ष्यापर्ट.रटापर्ययाचराश्चिरातपुः क्षेयातालटाचा द्वाया क्षेयाता इंच.सप्ट.चेचं क्षा.बेथ.धे.च्रा.यायम्चयामा डेया.स.ही.च. ईययासय श्रॅमायाक्षेप्तवनायाचेन् क्षेप्तवा दन् छेन् केन् तु न्वेगवा दवासुगवा निवित्तह्नायाशु निवितापदी त्या श्वा त्या विवादा है निवादि ता केव्य में दे व्यवता विष वी. चर. रे. च वया. चर्ष. कं. शु. शु. रा संस्क करे. पा. मू. चर. रे पा. मूं नय च.

पर्वणश्चरणवर्गा झें अरः त्रः अर्थरक कुरा हैं हो हैं 'त्रेर' त्रः व तहवार्व रता स्वास्त्र विवा वर्षे व्याप्त वर्षे व इन्तरायाः अत्राप्तर्भात्ररायाः वर्षायाः अत्यापान्याः भैषा भरः र्भरः न्नः यः र्भः न वदः यह यः द्वः द्वः ह्या व्यापः निः यः द्वः नवट.विष्यःबक्ट्रण इत्त्र्याःचात्रः अत्त्रः ववटः क्ष्यः वर्षेट्राः विष्यः यः वृन्द्रा वा वृव्यताया देना विद्या মুল্রান্ ব্রাম্প্র প্রাম্প্র ক্রিন্ত্র ক্রাম্প্র ক্রাম্পর ক্রাম্প্র ক্রাম্পর ক্রাম্প্র ক্রাম্প্র ক্রাম্পর ক্রাম্মের ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্মের ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্য ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর ক্রাম্পর रण: र्नर: र्नें द:शुन। वड्या शुरवा ही के के नवर: वें र:सु: र्नर: । पथवार्श्वितःश्वा अ.र.श्वी.श्व.व्यार्थातवरार्थवार्थ्या व्यारा पह्रवायता न्यायास्याप्तीयाद्वास्यास्त्राच्या न्याया त्रवातः स्ट्रेन्त विष्यातः त्रिक् स्ट्रिन्स् स्ट्रिन्स् स्ट्रिन्स् स्ट्रिन्स् स्ट्रिन्स् स्ट्रिन्स् स्ट्रिन्स् मुट्टरक्क नह्या नगार भ्रवा के त्याम्य सर्वा सुट सुव न्या न स्व वहेंबा सुरावश्वरावेरान्यराज्ञया इंग्लग्मिते हे न्यरावन्त्रया न्तुलाबन्तान्यवान्ताकुलावणाः नैकान्ता विवास्क्रिवार्सः है। म्दर्वा वर्षात्र्वा द्वराष्ट्राच्या वर्षात्र्वा वर्षात्रे देश्या क्या रवातानार्यात्रहेवा इयार्य्यवातरास्वास्त्रास्यात्रा कु यात्र विन्यायहें प्रियामित के प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्त 170

क्रिया भेट्य के र. चेट्य क्रिय क्रि

पत्रिवः तुः र्छेरः तुः रेखेराये । वृषाक्चिषाय १५ : ५८ : मर्गाय विषय । विषय विषय । त्र्वायायते वावत् दे द्रान्या नावे वित्रारा वित्रावादवा की द्रिवादि व भेता ने संभित्र मदे च ना न मन् सुगल मल व चेर कु के मन् महिन न्नंद:ब:चन् न: में 'केंब' में 'हे 'नई **ब**'तहब:मदे 'न् **इट्ल'न्ट्रंल'** र्रायुं मार्थित विद्यासम् द्रायदे म् विद्यास्त्र म् विद्यास्त्र म् विद्यास्त्र म् विद्यास्त्र म् विद्यास्त्र म् वर्षित्रवर्षाः वृष्यकाः सन्। या तर्षे द्वायकाः वृष्याः ग्री देन् वर्षाः प्रमा য়ৢঀ<sup>ৢ</sup>য়য়৽৻ৠৢ৾য়৽য়৾৾য়৾৾ৼ৾য়য়৽**ঢ়য়৽য়ঢ়য়৽য়ঢ়য়৽য়য়৽ঢ়ঢ়৽ঢ়ঢ়৾৽ঢ়ঢ়৾৽ঢ়** ला ब्रुं रावा ने दिरा हु नवा क्षर बेरा बर सा क्षर प्रति न विराह मा कार वा म्भेया र्वायापराष्ट्रिर्र्वेन्।वन् इवयारेर्वेर्वर्वर्यर रवः यः इवकः द्रेरा ञ्चलः पत्रः प्रदेशः दरः वसुवः यः इवकः धरः मुराशु मवर मुद्रे स क्षेत्र न्रा नम्रायाय खेनवा सम्राप्त नम्रादेव के लेवा क्षेत्राप्तरीयानाययानेवयाक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्राचिता ,, कुथानेशिया तर्गारान्दा दूरवरे न्नायदे न्या स्यान्ता "मेंदाया के वासे देशी <u>इणः इयसः वसः वेदः क्षेः भाषः मा देवः कवः नञ्चः गश्चिः दः नोतिः धदेः देवः ।</u> इसला देला पञ्च नवा नेटा नेड देर राजरा भी किटा देला न्म् लाकुरा हैं हे तकदाहु लिये हा अपने नि व में द नि न र ला उव छी । बर्भवार्याधेवापया वितायाकेवार्ययान्वित्यापा वितायार विवाय हूं सदे हा या स्पार केव पेंदे हु सु र दे र पेंद्र में ते पाय के दे र दे व पाय र र र र र र र र र र र र र र र र र

ठर् हें हे तकरात्र त्ये ज्ञा अपराचीया अर्द् न में या ग्री अदारा में या या म्बेर्यानहूर स्यानधीय पाया विर्वाचार्यार्थरायान्दरहेग्य थे न्नार्स्यायाः मृत्रा क्षेत्रः क्षुः वस्या क्ष्याः क्षेत्रः मृतः वस्या क्ष्याः मृतः स्वरः मृतः स्वरः मृतः स्वरः हुना-तु-पने-क्रीन्-नद्द-स्व-य-धरः। ने-लक्ष-त्वेद-व-बेद-वाळेव-मॅं दे नग्व दिवया पर्व त्रहित के पा नेवा ग्वाप परवा वहार म्या वहार देवासराष्ट्रीकात्य ह्वा.हु.सर्ने क्वीर पाश्चर क्वा.सर्वे श्वर हेर यर र्वा.स चैन्-न्र्वेषः धरे-चगानः थम। "① केषः न्रविन्-तर्गु ग्-केमः। <u>पतुर दें र र जनवर रें र जल र जी हेर कें इबल दें व कें र रह जा शुक्र है</u> त्तु ' दॅव'ळ र् ' ५ देव तु ' चुल' वल' सम् नाम हि र चुल' सं के ' र्न-र्न-रेन-प्रदेश-र्मयाय क्षेत्र-श्रीया "प्र-्रेन्यान्ने वनया श्री ग्रीयाकंन् अरादहिंदा हिटा हुटा हुरा माया ग्री विया हिया दिया ग्रीया प्रा पथ.ग्रेट. चेशल चर. ह्रेचेश. वच.रा. पचेश.श्री

ন্বৰ্ভিন্ত্ৰ উদ্ধ্ৰ উদ্ধান কৰি ক্ৰাৰ্থ কৰে বিশ্বৰ প্ৰদ্

① (र्यन्यत्रकाक्षेत्रकाञ्चर्कार्मन्यर्वः

② (万可A、口角、口角、夏天、口美子、子中、芒和·61)

① (र्यम् प्रवस्त्रे सञ्चर्क मृत्रम् ग्रह्य १४)

<sup>② (ব্নশ্বেক্ষাঞ্জী মাস্ত্রন্ত র্শৃশ্লব্ক 25)</sup> 

चैरायः क्षरः तह् गः यदेः त्वरः यतु वः त्रः। व्रळ्गः त्यरः वृत्यः वार्यः। मॅरि:केव:म्शुवा ई:हे:ब्रॅन:न्यॅव:नर्ग:यं:केव:यंते:न्नर:बह्दः हेद'र्र'यठरा'वद्यत'र्ग जुर्'ग्री'जुल'र्ये'केद'र्येते'त्रील'केद'र्रे'स म्पृरम् वर्ष्या विकास मित्र के स्थान शुंमःळेदःभःञ्चःनदेःवेः यःन्षे तेष्यान्यस्ययः वच्यः वज्ञुन् शुः दर्गयः ः **ढेव:र्टा** र्ग्रीय:प्रिंत्रंग्री:क्रॅंग्क:यग:र्टा ठराय: येग्रा परः मः इंग्राचित्रः व्याचित्रः विश्वास्त्रः विश्वासः विश्व त्नानाः वहतः न् नाः त्यः हिन्दाः विन्ताः विन्ते । विः क्षेत्रः ने वाः वहतः न् नाः । नयाने न्यून स्व सार्याम स्वयायतर कुन म्यायात स्व प्रे में र्नेन:ञ्च-व-वेन्-य-वङ्काया वैन्ना केन्न्यम् वेन्-व्य-न्ना हे क्रिन्स न्यु न्यु व त्या की नाम पर्न पर पर यह या ग्रार "ी प्रकुष पर """ र्षेषायाः सत्रः र्ह्यतः सुषायाः ग्रीः यवि ८ : ५ वि ८ यो या यो या या या या वि या या वि या या वि या या वि या या य वर्ष्केन रर ने नित्र राज्य हैर देवल पश्चरण

संतिरः "द्राधित्यस्त्रम् द्राध्यस्त्रमः हे स्थ्यस्य वितः स्थानि स्वानि स्वानि

त्त्याकु नव्दा "ा "ने हैरा में दाया छेव में ते नगत देया नकुन् नु শ্বদ'ননা Ĕ**੶**ਖ਼੶₳ੑਜ਼ਸ਼੶ਫ਼ਖ਼੶ਸ਼ੑ੶ਸ਼ਜ਼ੵੑਜ਼੶ਜ਼ੵ੶ਖ਼ਜ਼੶ਖ਼੶ਖ਼੶ਜ਼ਗ਼੶∄੶ਫ਼ੑਜ਼੶ਸ਼ਖ਼ੑ੶ਸ਼ਖ਼੶ਸ਼**ਫ਼**ੑ੶ हेव यव्य य रूर्। लट. व्र. पट वी. यञ्च विष्य व्याचि व्याचित् व्याचि व्याचि व्याचित् व्याचि व्याचित् व्याचित व्याचित् व्याचित् व्याचित् व्याचित् व्याचित् व्याचित् व्याचित् व ग्रायानु मानवा मानवा स्पार्या स्पार्या स्पार्या स्पार्या स्वार्या स्वर्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वार्या स्वर्या कर् ग्री विर ल बह्म जिस् र पा क्षेत्र पर्या दे है । यहर ग्राम जु है । विर स स चय-ल-चम्त-वर्ग ई.इ.पकट-वे.पप् श्रि.यप्र-मेंद्र्य-वर्षेय. मवयामवन र श्रियाया समा देवान मुन्त है या न मुन्त मिन प्रायम द नमः त्रवः वेषः वेषण तस्या पस्या अया व स्वया भ्राः य न व न द्रा प्राव व न मु बद्धवः लुषायर। यूर् ग्री के हे जूरा पर्ववः झवा या वया पत्तर प्रति पर रु-दे-रेग्याग्री-ब्र्यायीयायायायाया तहवान्यरम् राज्येतायाळेवाया वया गुर-र्गोव अळेवा ता श्रे लु क्ष्या पर अर्द र परे रागात वर रागर ठव मवर्ग्यर्ग्रत्मेर्वाने वस्यानु केषान्रान्यता स्वाक्ष्या र्विता श्रीरानु र्शे र तहनायान्वरा "@ वेवानवायात्र दिन्ना ग्रम् त्युर सेर् इवा कुल कुल के रूपर मने न्या हेल द्वे पहन प्रमाधिक खिल के रूप पर पर्दे द कुर . . नियानः नेव. म. यथा

<sup>(</sup>न्यन्नव्यम्ब्रेन्स्यः ब्रन्कः मृन्न्यः अ1—32)

वबरादबेदायम्प्रा रमादब्धमामाञ्चावबरादने तहुन। न्रा ८ळवः मृत्रैराः मृदेः श्रुं नः न्यं दः तुः इत्यः कुत्यः चः कंटः मैः गुः यः न् मैः श्रूं हः ः ः ः नश्रम्भयात्वरः क्रून्या स्वाप्तः । नश्रम्भयात्वरः क्रें न्वरा ग्राण्ये श्रम् *ॸ्घॅव*ॱॸॖॖॱॿॱख़ॱॸॱ<sub>ॽ</sub>ॺ॓ऀॱॺॕॗ**ॸॱ**ॸऀॺॱळेवॱॸॾॕॺॱय़ॹॗॺॱॸ॒ॸॱ। नेव केव बक्रम ग्राक्र म्यार प्रते न्तु बर्द न्तु क्षे क्षेत्र र र र र द व बर्या पर र प्र नवर नव्हें र ना वर नदेव र कुर क्षर न देव लिंद ने न क्षर धरः तद्यतः शुरुतः श्चवः श्चेवः मात्रुवः रुषायः अर्षेवः श्चिम्तरः रूरः। ন্ত্র-ব্য वरः सः र न र न र न म लान वरः न ठ रा से र हरः नुः त मुं र मुं र मुं र म लान व नवरःश्चेवःच नवरः यः नदः। दशः दर्गः स्वाराश्चेरः प्रयः प्रयः प्रदः यः ड्रेन्-न्ब्रायदे-वय-हत्र्यावरः। " 🛈 वेषान्ययम्य-दर्ने-ययान्डेन्-व्यार्वेदः यः कवः सदः वीवा येवा मुता वदः यरः द्वी स्ववा ग्री यर्दे स्वावाः मोबेशामादुः इ.चा.स्रचा प्रवास्त क. क्रा. द्वा प्रत्रापदिः न्यूवः क्रा. व्याप्त क्रूर-दर-लेब-क्रेब-र्थ-दे-तर्द-म्बद-प-सर्वेब-प-दर्ग मुनेश-दर्श-प्रेद-**ग्रै**'न्बॅब'मवर्षाशु'मर-न्द'५ळवर्षावेरा'नेष्राय'म्वेरा'पॅन्'य'वा ३२| भ्रमकारे राम्या भेका क्षेत्र संरादकवाका नहें हैं रहा। वा सरान्य रान्हें इ.लुब.च। इया.मैल.मी.क्ट.री.चेर.पक्षयता.चेहेया.मी.लूर.ता.चरुया. सर्चेदः पर्याञ्चर् : वॅर् ग्री : म्रार्टे स्वयं ता विष्टः ति मृत्या मृत्रः स्वयः विराधितः स्वयः स्वयः स्वयः स् न्धन् मृति छिर्या स्व तिमा सरा श्रेन क्षेत्र स्

म्बन्याम् भ्रम्यायः वर्षेतः म्बन्यायः विष्याः वर्षाः विष्याः वर्षः वर्ष

① (ব্ৰল্বত্ৰাঞ্চল স্থান্ত কে প্ৰান্ত কে 48-49)

**१८। ४८**-ध. छ. ४८-४८-१८ व रे लियानव संग्राणीय रेव कंव न हैं र्ने 'न्याचेन्'कुर'बुन् धरे'च्राराह्य गुळे 'य' शुका दुःर्स 'न्सु 'न्रा वन्य न क्च ॱ५ॅवा न क्चर 'प्रंर्न विवाय लया न व क्चे 'र्रं र या क्चेर्न विदया शु न क्चेया । न देरी , कुळ रेटा रेळा ब्रह्म स्वापत स्वाप्त स्वाया बतिः भेगः करः विगान द्वारा हे ने ते वरा नुः दुरः भेगः के कें नवि न क्रिं न्वन् चेन् न्वेराय ने के कराय है चुर धेन न्वेर भेर। नगर नवा बानुकान् प्यरादत्यावरादन्ववरानुकाकी क्रेन्यदे न्त्रां प्रति में निर्मा र झ. ऱ्या. येथ्यः श्रृंचा. यं. च श्र्यंथा. छे. प्रम्यंथा. छे. प्रया. यं. यं. यं. संश्रृंदा. 351 नद्गः च्रियः वयः इतः नियाः नतः योवया नयः तुः यहतः हो । इतः नयं वः नतः । निवित्रः न्यं वृश्वीः तम्बन्दिष्ठः नुः तह् नृः कुत्रः यम्दः वृन् निह्ताः ।।।। मेट्रे नयाययाविरयानना बरारी प्रयापने बरारियारी परिया में नेया में *ब्रिंगःश्चावाःचावावःचःक्वः* द्वानः क्वान्तः क्वान्तः क्वान्तः क्वान्तः क्वान्तः क्वान्तः क्वान्तः क्वान्तः व्य पकुर्-पठराञ्गपरा ने 'वरापत्तुर-वॅन्'स्र्'अञ'पव-ग्रीरावर्'ग्र-रें ··· र्याचेर् दिर्याशु पड्यापार्रा डे थेय करायताष्ठरता गुरारे रुता पर्श्वन्यायाध्येत् तत्वा तत् । यमातः भवा वी विदार् देवः धेवा देवावा धरः रम्बारायराय्येवताः स्वताः केवा कंदा व्याः विवाय मेरानुः क्याः विवायाः ने रावाः पक्षक्या मुँदार में विवाद में दारा धेवादा सारा दे विवासी विदार पर (विदः न्या विद् विव देन व्याय पर विदे पर दूरे व 141-142) इन्निम् श्री अधियात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या वृ .षद्र.चि.ब.श्र.चेर.पर्देष.पथ.झे.श्रूच.बी.बोथर. गुर-में 'ईरा' बेरा वहन्य न्वर नुषाने श्री स्व 1754 वर् रव श्री र व श्री व ह्नेना मु निया मु निय मु निया मु निय मु निय मु निय मु निय मु निय मु निया मु निया मु निया मु निया मु निया मु नि 1788 वर्रा श्रे स्ति त्राम् पति वर् हे में स्ट्रिक वे ति ते लग हु श्चं प्रमुनानी निष्य प्रमुन्य निष्य मृन् स्र स्त्रा म् दे दे क्रिन वया स्निया मृत्र विवया ग्री वर वर क्रिन क्रिन क्रि. पर्झ. चेषर. बह्र र.त. श्वीय वर प्रपु. मि. वर भी. ह्रेर. पर्छ. चेशिया क्रुवे. .. मते हे द्विम गुति महत धमा निषर मते वर विम सर दि नि महिन सि नि नि हिन नैयान संक्रिया ने न सन् महु महुवान निव नया संग्री वार्य महिया स्था म्बर्यत्व म्बर्यान्त्र म्बर्या क्षेत्र मुद्राम् विष्य मित्र म् निर्म्यत्रेत्राचे में विषय में भारतीय निर्मा में निर्माण में र्व-१६४.७व। श्रव-गु-देवे-वर-धमा-मह्मारा-पर-। पर-१म-मर्ड-इर्याचिर्यपुर्वेच ह्या श्रेव्रास्य इयास्य वर्षात्राय्याच्या सहु सार्वाया रहारहा है। हरित्र र प्रेष्ट 5.22.d答 ५,पाषुः वितारी श.चकेवा अक्षरं क्या श्रम्या श्रम्या नियान प्रमित्र प्रमान निवार वझ-र-वर्द्र-्रवयातेयामावयात्रहिन्यायावर्रायदे न्रा कुष्टा मविर्यास्त्राच्यात्राच्याः स्वाप्त्राच्याः स्

16. वृ'यदे'त्र'यश्चर्यान्त्राः वृंद्यस्य दे सं त्रुत्य स्वा प्रति । वृंद्यस्य दे सं त्रुत्य स्वा प्रति । वृंद्यस्य दे सं त्रुत्य स्वा प्रति । वृंद्यस्य दे सं त्रुत्य स्वा प्रति ।

मृत्यते मृत्या मित्रा प्रमानिका प्रमानिका मित्रा प्रमानि

मालिनाया हुराळें ते राञ्चा है। हैरता है। दूर दूर दूर है ते है ति है **छेर्** ग्री मनवा नर्हे वा शे जीर् गा शेर् भी वा समी अं वा ने वे राम् लर्था विष्या में विष्या विषय विषय विषय के विषय के विषय के विषय के विषय के **্রিমঅ**:র্মান্ত্র-ট্রান্ত্রের নের্মান্ত্রনার বিষ্ণান্তর বিষ্ণান্তর বিষ্ণান্তর বিষ্ণান্তর বিষ্ণান্তর বিষ্ণান্তর বিষ্ণান্তর বি खें भेग्रायेन्यः" 🗓 देशाग्रायानः झुः द्वतः ग्वन् स्यागास् नै द्वार् रः . . . . हुना नवरा नने वर्तन है हैरक ग्रै हैन खंबा वान में र ने नक न में रक पतिन्ने त्र न्वराय के न्देशत्रे तार्म प्राम्य विष्य में प्राप्त विषय में प्राप्त म मः अन् नु नु द्वार न हे सा शु : धे : स्राप्त लु : दे सा सा विमा या धे द : द सा ने : द सा इतामिव्याम् वियाम् बिया है. बुव गेवेय वया मिर कर मर में पस्र र म बुया रहा। म बिर इन मन्द्रन्त तन्द्रत्य पर्वा सुर्विष्य वारेवा पर्वा पर्वे रु रे रे रे नयाक्ष्याग्रह्मयान् में यानु या मा ने भूतान् न गुरा ने तानु या न यद्र-तु-दे-नवा-तर्ज् कु-वेद-वेनवाना-नविद-केनवा-रव्या-वुद्र-नश्च्या----र्टा करुका केंद्र मु. श्रीटावर विवयः "बेकार्टा "हू बिवान वेका केंपायः र्यं व भूष्या व्या ग्राम् क्या प्रवेषा याना क्रिया क्रिया व्या मिना प्रवेषा स्र **श्चे वर द्राक्त हर अववाय पार्च प्राप्ट श्वय हे श्वय श्वर वर प्राप्ट** परिक्रिन् हिन् ल्या है इस्यय दय ल्या परिवाय मान भेवाय है न्यें या 

<sup>🛈 (</sup>न्यन प्रवाह) याञ्चन क मृत्याचरव 98)

मुन्तराम् वृत्तर्था की विद्रास्य विद्रास्त विद्रास विद्रास

स्वाता न्यानः ह्या नयातः तद्देः य्यायः य वरः। विः सन्देतः यद्देरः यद्वेरः यद्वेरः यद्वेदः यद्वेदः यद्वेदः यद्वेदः यद्वेदः यद्वेदः यद्वेदः यद्वेदः यद्

<sup>(</sup>र्यम्भव्यक्षेत्रः अत्रः अत्रव्यक्षः १

<sup>(</sup>न्यन्न्यकाक्ने साञ्चन्क मृन्यन्य 113)

ब्रि.ज.कुब.त्या.चयापु.पक्षयय.पट्टरा द्रै.पापु.च.ता.सी.पतिवादा. न्दराक्चेन हुराके भूनान्दा। केना अस्याया विः साय दिन क्षा विकार बह्यारेया शुः रिवयः न्रयः पर्वः वर्षेन् वर्षेनः रावेगय वर्षन् न्र्मेयः बियानवा हिनास्वा क्रिना अवासा मानेवा स्राप्त मानिवाया याने दया नर.मूर.ये.चर्र.वयाञ्चव.नक्ष्य.चट.ञ्चन परीजा.चे.लुव.ज्वाया. नगप. पचर में प्रत्य गुरेत के किया सार्दा वाहें र ग्री पचर में ता करे र प्रेरा स्वा.क्ष्यं.बर.पपु.चयर.क्षेयं.चर्याचक्षेयाचाच्यांनाञ्चयाची याचवेयां ने नियानि भू न्र श्वन म निरुषा मु यहिन है । स्र में श्वन म ने लाखना . .. इर.वव १व.री.च ६व.त.च खेयावयाचया छूराच श्रेव. च मार्चरा मलेयामवरायुम्यार्थम्य वृषा अव यामवायारे सान उरायाँ विर लबारी ने ने इसा की या प्रत्या या प्रवास करा है है न या लाग या या निर्देश की या **इय.श्.लय.त.प.पहेब.धे.य.**प्र-ज्ञातक्र.चंद्र-बंबयाक्षेत पश्चेर पश्ची म्राज्याकुर्द्रयाञ्चरेताञ्चर्वराक्षर्यायाज्याच्यरायाच्यरायार्म्र्रया र्गे तर्त्र पकु सग् सर य र सर पकुर कुर पकुर पत्र र ते अ लबाम्बिर्या नेरा तसम्बारायामा मुन्तर्राम्बराम् राहे दारे वर्षे के ल्बायातात्वी अकूरं न्द्राक्षियाया चक्रा प्रत्याच्या विष्टा मु:केरःमदरः। अयः यदः महिरार्गः। वि:स्। ञ्चदः यः यहराः श्चः बरुव-रु-देर्य-हे-श्चव-ध-वय-छन्-स्र-पहन्-ध-र्र-। भूर-६८-६र-ह्यर-विर-न्र्याञ्चर-पत्रेणाञ्चर-पत्रेणान्याः यंन्याः न्यान्याः न्यान्याः

र्यं द न कुर् ' ह्यावा में या हु ' क्षेद कुर सुला " के विवायवाय मार करा म्रास्याञ्च वर्षा करायवेषाग्री तर्द्धन् यहेवा वर्षां श्री वर्षेत्र वर्षेत्र देशास्त्रेन् न्यो. तेर-भ्रु-ऑरय-वृषावृष्यः व ह व त्रत्यः व : न्रा त्तुवःग्रीःक्रे क्रिक्तं स्राव्ययार्थयाञ्चेवाञ्चया वरावरात्वयारार्थवयाः विचः कः धेनः सवः विना सः निवासानः स्वरः सदः। ददनः श्रेदः यः चिन् वासरः ह्ये क्रा १७५७ वर्ष १ वर १ वर्ष १ वर् मते छेता नशु अ हे द र में दर्श म हे नश मते भू र अर्रे अपर पते हु द .... नहें न वराने हे वा "नन्या ठया इयका सुति यया नु न ठरा है न सुवादी" म्राया वियायह्यास्यायविवास्यायात्विवास्यायायायाया ब्रेन् र्वं वा वता श्रुवः व वा वाह्रयः या प्यन् प्यन् मी मे नि व मि नि व वा भ्रुन्ः च.लवा च मृदः सेनवः क्रेनः वासुदः चना ने : स्नेनवः स्व स्ववः द्वा ब्राम्य प्रमानिक विषया विषय श्रुदि हेश नम स्वार क्षेत्र दि विश्वाप मर में तल ला में दा अके दे र ज्ञाया क्र.सिर्णा , प्रेय. १ स्था.च इय.क्र. सिवा. थे. प्रया विवय. हे. त्रिराधार्म्य प्रति हे केटा धार्मी प्रति वारा ह्रामाल महीता प्रति । किटा बिदः तर्नै रः नष्ट्रवः त्र्ने वैः दें वः क्रुनवः में के निषयः ग्रीकः वैः विनः मः व**र्दनः ः** यते. न में त्या या अध्य हिता है। में त्या छ उन में वा पहें वा उव में वाया हैया सामञ्जूतानदे देवात् इंदायाम् शुवारेवा ग्रीता मेवापा सवता

① (र्यन्यत्रका हे 'का श्रद्रक में न्या श्रद्रक रावि)

क्रिन्दिः सर्द्र न्यास्त्र न्यास्त्र स्वर् स्वर

①(वर् वितर्मित्रे वित्रे वित्र

वृद्ध्यात्रम् व्यवस्य व्यवस्य विष्टुर् स्वर्षेत्रम् विष्टुर् स्वर्षेत्रम् त्राया में वास्त्र वास्त्र वास्त्र में वास सीयालय नाया र का में विरार की पर मंत्रे में या पार हरे हु अथा विषा विव-तु-क्रे-नय-धर्-तयरय-विद-क्षु-नर-श्वर। न्बॅरय-हेवाय श्विप-भूर-बर-वलक हर-ल-देर-कु-र्वेट्यन्य-नर-र्वेयन्वर-वी-लर-कुद्र---चलात्याद्यक्राच्या र्ह्राह्रातकरात्रुं लादे श्वास्त्रे श्वास्त्राच्याया श्री नरातु कु में में सु के न वेग व्याद में दि देव सिराये के केरा कु मा व न्त्राग्रं र में कारतार्या सहतार्या तरिवा में वा मानिवा में स् द्भरा ने सं जु र्ह्मन हु हु दे त्व ति दे ते तु न स्रे ल व ल ल ते रा न स्रव पा র্মান্ত্র-ট্রিন্-ট্রাকার্ন্ন রামির স্থানি মর্লান্তর্বান্ত্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্ ब्रेन्-न्म्यान्नेया क्याग्रह्मात्राच्यान्यस्य वर्गन्यान्या वर् वनदस्य वानने क्षेत्र वहुद्र नदे होत् क्षेत्र वहुन्य व न् में स नेद्र । देन् वयानवयाद्वायाक्षेटाची श्रेप्या वयवा ठर् छ वया व से या मश्रुर्या पर्देश नयानगत्राविवःश्चितःसः ताते : भूतः श्चेत्रः यः ग्चेता न गतः श्चेत्रः स्वायः वयाग्रदः सदः सदः स्वाचनवा मदेः स्वायः स्वायः स्वादः नित्तः । वृ स्वदेः ह्यः सदेः शुः नुकायविवः इतः श्र्याय सरायः अव्यक्षायर छेन् न्मेकार्यम्याय ग्रिः म्बर्यर भेगान बद्दा से विषया "कियान विषय वा वा वा विषय विषय वा वा वा वा विषय वा व द्यावर वर तृत्र वेर वर येर वर्ष न मात थेन त् वु देव वेर ने वर्ष लिए नि

① (제국:제內조:대리:월주:대美국:국和:독재:98--99)

द्यू.प.पठय,ाप्तिंद्र.पर्याता,केर.पूर्य.प्राचिष्ट्यीयाचेता क्रांत्रवा नग्रान्त्र्रेषाळ्यायान्वराधेन्यावुरावीः सादहेवाववादेव ग्रीविरामा हुतरान्यताम् मृष्ट्रित्विर्ध्ता दवाग्रुराके हुताव विश्वता विर् ৾৶৽ঌৢ৾৾৴ ৼৢ৾**৾ঀ**৽ড়ৢ৾৾৽৻ৼঢ়য়৾৽৻৽য়ৼ৾৽ঢ়৽৻৽য়৽৻৽য়ৼ৾৽ড় बळें न में दर्शन मानवन में वर्ष माने महारा समा मान हो वरह सह महारा श्च.पठरावित निर्वाचानीश्चानी श्वीपार्याची हिरार्याचानीराश्चराश्ची इस्रताम् । पश्चराष्ट्रीयामुल पर्दे । भर्षः श्चिर् देव स्वास्त के म् वालु । दरा रहेता । देशा श्रेद् भी सुन्या तन्त्र भी द । मिल्य या नव राम राम रे श्रेद् पु मा श्रुवा । । । विषाः कुषः क्वाः हुः पङ्गाः पविषाः सद्दं कुः देशः दब्दाः केः कुषः प्रयायाः ग्राहाः । । मुडेन् सहुद् नुद्रान्य नहेद रहि सदि ही संदा हु रात्र ही ता हु ता हु ता हु द्रदः तह्यां द्रयाया यदे 'ये वाया कु' यळ दे र वें 'ये वाया कु' ये कें 'ये 'द्र ' ' ' ' नक्यः श्रुप्ताः अर्मे व् ग्रुयः प्रदेशः ग्रुयः प्रदेशः प्रदेशः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्वः विश्व ८ तुन्। यः त्रः क्रुतः क्रुः धेन क्रितः न्यः यहः त्यः वहतः विद्यः न्यः यहतः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः मी.र्नर्म हुरायमाक र्र्डिया वया के के वित्रामा दे वा श्री "ने र्रे ग्री यावा गुः वयान् मुला "अवेयात्रित् धत् परि हिन् वया श्रेतः भ्रुतः ने के लिल्ला 

① (र्यन्प्रवाक्षेत्रकाक्ष्रे वाक्षर्वाक्षर्वा व्याप्तवा १७४३ — १७४)

② (वॅद व्याय देव क्के. पर बदे रहूद क पर देव 584)

本版四 (本版 ) (本の )

स्तः त्रे त्रात्रे व्यायः व्यायः त्रायः व्यायः व्यः व्यायः व्यः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः

म्यान्त्रम्याः स्वान्त्रम्याः स्वान्त्रम्याः स्वान्तः स्

① (न्यन प्रवास्त्र अस्त्र म्या वर्ष ११७४)

स्यान्त्र स्थान्त्र श्रु हुरातु प्वत्व र्षा स्वयः म्या स्थयः विष्य तु प्र स्थयः मर् मुल क्यारेव में केला महन कीला नवर परे देरान्र में ने केर कुरावना पठन् वता भुगन्तरा देवा या के वि दुरातु विन्ता नवा हेवा हैवे श्चित्रक्तान्त्रा है.यदे ति.या है.यदे तुरायह न हैं ताया न्युर्-भुव-व-नर्व-न्द्र-व-व्य-न् न् भुव-नव्द-न्द्र 쮰. न्तुरःरेदःसः छे य नुस्रवः परः पत्नु न्या परः येन्या परः पर्या नेरः। पर्वे बोयाः बोद्रयः ग्रीटः श्री बोयाः पा हे बोयाः याः पर्वे द्वा च गा विषायद्वि ता च र मा द्वी गा ता ना मार मा तर र न मा वर र क्षर-भेष-मे. च याय-चचय-भेर-सिष-शिषाक्ष्ययाना दिषाक्ष-स्यायानः ठरःकेव् संतः य≅्यः पश्चाः शुरः स न्व्याः यः येषाताः येषाताः यदे सुत्यः नुः श्चेवः यः इता दे व्यासु गृहर देव व के के पिर प्रविद कें र सु प्रवेश पर्व पर्वर वयत ग्रे वित्र सक्रमा न्या धरा पत्र विषया शु म्या परि सक्र र स्र र केवा " न्तुःश्चित्रः ब्रुप्रःश्चिर्यः प्रयपः धुबः प्रयाश्चित्र सः कुः बयः श्वरः प्रयः ..... तझ्याक्र. यहा विदायदा द्वा यह र दिरारे के प्रेर र श्रेमाया स्या र् शुरायाबेदान् विषाञ्च षा विवाह । त्रिता प्राप्त । क्रायान्यारा ब्रूज.ब्र्य.वया.वयुर.ब्रुट्य.रट.जया.चयुट्य.चर.वच.चठट.चटु.ब्रू पण्"भैराः क्षुत्र में 'दराः पृष्ट' केद्र' वसरा छन् 'यद्ये दर्ग विषयः केद्र' में राष्ट्र स् য়ৢॱॲ८लॱऍवलॱऄ॔ढ़ॱऄॴॱऄॱॸऻऄॸॱऄॴॱॴॶ॔८ॱऄॣ॔८ॱॳज़ॱॻ**ॖढ़ॱॸॗज़ॱॱॱॱॱ** गठेग हु न इस्य बिदा ग्वव पदा अर्हेग हु न् न परे कें र ठवा ह वर्ष वयान्नेंद्रयार्थ्यायाव्यायन्तान्ता न्योत्रान्त्रत्याळे देश्व 

## 四、名称は、カリカリューのでは、日本のでは、日本のでは、 一般、日本のでは、 一般、日本のでは、 日本のでは、 日

तृ त्यते त्रा यते त्या यहं त्या यहं त्या यते हैं ना निते 'ते ना नित्र या यहं ना यते स्या यहं ता यते स्या यहं ता यते स्या यहं ता यहं ता

तर् से है। रट व्या मुल अठवा तह्या राया मु अठेते अंतर था हे। न शिन् क्षेत्र ने सं सुन न ह्रव तिहेग्या सेन् व्यायह्न स्याय स्याय राज्य पद् अ.श्रीट. श्रच प. श्री . लट्या तपु. श्री ये. ला बी धु. त कू ला ने या ता ल्या . . . ह था. केन्-तु-बळवः वर्षेन्-चुर्यः वर्तु ग्-गुरः। न्देन-न्देर्यः शु-मुत्यः पदः शुन्-स्यायह्र्याम्वयावियाह्राक्षेत्राच्यावयाच्यात्राम्यास्याह्या र्ट हुवाय तवाय ग्री स्रेर व व र व त व व "इवाय हुवा 1760 वर वयास्यानदे मुकारा ह्वावा बळवा पत्रा देवावा ग्री केटा बालु टार मुंदारा *ने ॱॠॕॸॱ*ॄॺॱॺॖॺॸॱक़ॆॱॸॺॱय़ढ़ॱक़ॆॺॱॸऀॺॱॻॕॱक़ॆॱक़ॗॺॱॺॎॸॱॸॗॱॺॸॣॺॱॿॎॱॱॱॱ र्दा वर्रे श्चर वरा केर् थेनय इर हु र व मातु थे भेरा प ह्रव धरे. ब्रॅब्रिको कुलाक्ष्य दें वेबरज़्ब र्यम्यान्न ब्रुव्यके रिमान्दरा सत्र. म कृष् शिरालु . बाबर अहर् . सरी विरया वया म अरा के मया चुरा मा पित्रया चर्टा द्यार्चाराच्याशुः ख्र्राधः हेयायः इययायः स्रुते. ब्रेन्टक्यान्ता ह्याया सक्षत्र संयाया पह्या विषय द्वेन स्थित स्थापन क्रेन् महेंद्र अह्रेन मार्केन वित्रावित्र वित्रा व्याया सूर्या १७५८ हा ६ क्रेया । 15 वैदः वितः क्रियः क्षः देः श्रेटः तुः पर्वयः पर्वः च्रेयः पः देरः प्रयः क्रेरः प अटः । स्रेनरा हे 'स्रवुद हुर'पर'पहेद स्रुर'पर'ग्रांय'र्यंद ग्राग्याय सहतः मन्द्रा वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् वर्षेत्रम् **ह्रमायः महावः महित्सुः मितः वादेः शुमायः २ वः ग्रीः हेवः २८ः ।** श्रुदेः हेतः

<sup>्</sup>री (देन-देवे-ब्रॅन्क-पर-देव-585)

व पन्नतः सँग्रादे त्र रहित हे पह्न प्रमुन् न नेवत रहत लुकासराक्टायात्रष्ठ्व व्यवेदार्देषात्र हेवा वर्षद्वा सर्वा ने स्व रदः तः श्रुपयः वर्षे वः मुयः पदे धदः श्री दः श्रुयः श्रवः पठ दः तुः मुः धेवः । **ढ़॔॔ॴॱॸ॔ॺॕॸॴॱॳॱऄॱॴॿॖढ़ॱॷॸॱॺऻऄॴॸ॓ॱॸॕढ़ॱक़ॗॴॱक़॔ॻॱढ़ॕॱऄढ़ॱज़ढ़ॱॱॱॱॱॱॱ** र्दा प्रमाद नमा वया चर हिंद्या बदत के लिंद्या स्वाम का क्षेत्र ही दिया नञ्चन्यायहरू." ® याचियात्व मा स्ट्रा श्रु के विवास अर् अर् श्रु की मा लाक के त्र तिवा वता वर वी में वर तु वि वता या धेवा नरा सं तु ता म्रायाम् मुरायास्य क्रिम्यायायायः विरा मुरायायायः विरा र्द्रवाशु मृत्र दियापदे समाम्दर् हे स्रा ह्या पार्वे म्या स्यासरा न्दः सः नः वयः वैः व्यवुवः परः यहेवः दः ळेवः ग्रुदः ने सः श्चेत् श्चेदः बुवः ..... पक्षेत्रतहेग्य बेर्-ग्रेयः बह्र पदेः हृ . यदेः ह्वा अः श्रुः हेरः पकुरः पदेः **ह्यः** न्न-«वहं अ:ब्रीट्-अन्नदःशुः अट्रायदे: कुवः » नेटः यरः अ:दे ः रटः यः न देः चर्डलाईन इद्राञ्चर्रास्यायदे हैं देते ह्या बरा बुद्राच न्या व केंगा है। वारा बर्हर्पार्ट्या अनवारे देया ग्राट ह्रिंब अर्दे । अपर विनवा हुट में हुट ग्रम्। विक्षात्रेम्। कुर् : विक्षात्रे विक्षात्र য়ৢ৴**৾৸ঀ৾৾৾ড়ঀ৶৻৸৻য়৻৸ৼয়৶৻৸৴৻ঀ৸৻ঽয়৻ঀ৾ঀ৾৻৸ঀৄ৴৻৸** 

④ «ኣና・∄・፯ና Էব・ᇴལ་ҳчҳ・৯╡ҳ・чҳ・ҳҳ・ҳҳ・ҳҳ・ҳҳ・ҳҳ٠ҳҳ

इसम्बर्धाः भी वहारीया से स्वापित स्थापित स्थाप तथा द्रायदे न्ना सन्दर्भी न स्वाप्त स्वाप्त भेरा ने हेना सु . धेवा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व नर-महिलान भैदार् अलेग्या गुरा ग्राम्य प्राप्त राष्ट्र राज्य राष्ट्र राज्य राष्ट्र राज्य राष्ट्र राज्य राष्ट्र त्रु यदे ज्ञा वदे वळ्या वी ज्ञूया पदे ज्ञु द्युया वेदा देवा ज्ञेव पा म्या के ..... नवा दु.स्व.धि.वेर.प्र.पे.म्वनवा.वया.श्वेता.श्वे.पस्र.पटर.वया.चवा. **ढॅ**न्-य-चेन्-नम्बा सु-हेन्-सु-हेन्-ग्री-बय-वय-बय-नेन्-मॅन-बहिन-क्रे-सॅर्-गुर्-। र्-रेश-सॅर्-ग्री-पङ्गव धरी-र्नेब-म्य-ळे-चर्श-वेगरा-वर्श-अ-त्युर्यापराञ्चलाञ्चा विषा क्रेंन्य हुन्य हुन्य वेत्र न्वें वा वेद्या परि वा मारा वेनला अन-न्यन्तुः अयन्त्र नृहेन-दरः। द्यं व हुराय नला म्रायि मि. अप्रायि मि. प्रायिक मि. प्रायिक मि. अप्रायिक मि. अप्रायिक मि. अप्रायिक मि. अप्रायिक मि. अप्रायिक मि. न क्रुंत्- बर्ह्ना " 🛈 🕏 य ब्याया विता 🔰 ते क्रेंत्र- बर्दे : ब्रायर वित्र या हुतः मैका ग्रम्। "तरी स्निम्बरा मेव वा ग्री से मिमा वा न न में हिव में ता मुला न्तरः हैं दे कर वी धर हैन त्यु या हैन हुन नहाय है। न व रहा रा पा मान्द्रक्षा मुलाद्यर अक्रवाची सुवाल श्रवा बहिदार दरा पहें या ब्रि. १. ५६ व. म वहेब. मध्याया ब्रेन् छव. स. है. मी. स. है. बक्र्याः श्रुयः देव के के देव में के राह्म राज्य राज्य निवासी मानिक राज्य राज मवेषामते वरातु क्षा ह्व हैं हे मन्व ग्री मवषा शु वेष ष "® वेष त्रित् यान्ता नेता मेता माना केवा नेवा में के के लगा केता नु जान्वा लु

① (बुदु:नग्दाक्ष्याग्री:देश्यदे:म्बुदाद्यान्न्याप्तान्दाद्यः म्ब्

② (মই মাদ্র ভূর নেই ব ইব ইব ইব 102)

र्रः दर्भेषः कुषः कंपः ने 'र्र्ञः कुं मृन् सु र्रः यग्रादः भूषाः र्षेष्रा द्र्राधरः "" য়ৢ৴৻ৼয়৻য়ৢয়৻য়৴৻ঀয়৻ৠৼ৻৸য়য়য়৻য়ৼ৴৻ঀয়৻ঀয়৻য়য়৻য়৴৻য়ৼ৾৽ बार्यर नथा "मुल कंप रेव में के करा माद कुल मी रेव केर मायार *ষ্ণুব*ম'অইব'ভ্ৰহ'ণী'শ্লী'বম'ধ্ৰ'দম'ৰএম'গ্ৰুব'দ্ভ'' দ্ৰ্যু' নুট্ৰ' এ''''' न्हॅर्न्न्वर्र्न्न्यः व्यार्थन्वरः क्षेत्रः क्षेत्रः चार्त्न् । व्याप्यः **য়৾৾ਫ਼ਜ਼**੶ਸ਼੶ਫ਼ੑ<u>ਜ਼ੑਜ਼</u>ৢਜ਼੶ਫ਼ੑਜ਼੶ਸ਼ঽয়੶ਜ਼੶ਫ਼ਫ਼ਜ਼੶ਸ਼ਫ਼ੑਜ਼ਸ਼੶ৠ৽য়ৄঢ়<u>੶</u>য়ৢঢ়৽ঢ়ৼ৽৽৽৽ म्ह्या व्याप्त व्यापत व न्दःनेते अन्यान सुद्राची स्तरायया तत्त्व या अन् या स्वाया ची प्येन् .... ₹तःस्तः पः हुरः रेगल शुः शेः यतु ग्"ा ठेरा ग्राययः पः अत्। सूरः त्मेलायहर्न्न्त्रत् ठयाचुरावराञ्चराष्ट्री र्रेन्द्रावस्त्रत्रहेतान्यया ८व्रॅंर.ग्रेथ.चश्चर्य.तर्। "अंचय.ध्रेच.श्चेच्य.र्ड.व्हर.श्चे.श्चेर.थय। बै'हे'चग्रद'देव'चव'दे'वेद'ल। (गुर'मड्रे'कर'बेर') शु'हेद'ग्रे' क्षा.री.च भेष.सुराय.सर् श्रीता.यी.श्रीता.यी.श्रीता.यी.श्रीता.यी. श्चिरः विचा द्वाया श्चिवः पद्चेवः विया ग्रहः। विदः पद्धः पवि रः पः क्षे. पः पठवाः ৻ঀ**৻৾ঀ**৾৾ঢ়য়৾৽ড়৾৾৻৾য়ৼ৾৾৽ঢ়৾৽৸৾ঀ৽য়৾য়ৼ৾ঀয়ৼঢ়৾ড়ঢ়য়৸ঢ়য়ৢয়ৼয়য়৾ঀ৾৽৽ बात बुवा तर्ने खुवा रेबात गुरवा बुवाव व वे भु ने मावा रामावा है प्यंद क.बु. क्रेचेथ. तद्रावर्ष मूर. य.कुय. त्य. वीर. ह. चेथ. त्य. परुषा न् क्षेत्राम् दे कि. पर्ने त्या क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा विता वित् ने त्या क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत्

① (बर्-बावर-बुद-वह्द-देव-देव-106)

धेव-वेब-महारक्षरमान। देवे-यव-तु-----श्रुव-पदेव-हे-उव-वर्द-गुराक्षात्रे विवाल्वव वै स्वाया निवाल विवाल निवाल निवा हें के सुल तु रर वी न य अक्षेत्र यहें या य य तु य य र न र लु व व कुल नते । यदः श्रेन् अतः वदै । सः वः के स्नवः कु । ववा में दः वः के वः ये वः गुदः । । । । बद्दः लाधिद् बाळियायर बहुदः लाजुदः बदः बुदः दे न मृता अस्मृतासः " *বী-স্ক্রুদম*-অর্শ্ব-স্কর-ম-*ব্রিদ্-মেম*-শ্বর-দ্র-ম-মস্ক্রম-ম-ম*ত্*ম-দ্রি-মা म्वव वेरःह्रेषायवेरःन्दः सहेषायसम् वार्षरः मदेः भेराशुः म्वीम्यः ययान्धनाने ह्वा कॅनाया देवा यह नि हिन् ने में देवा या विषया प्रति यसवायाः इवार्याः तुः र्वेषायि विरामकरा विषातुः यस् वार्याः वेषाः न्त्रयाम् क्ष्याः भूनाः श्रु न्यु । चु न के व र्या । यदी । सू न त न या अवा न द । या । व्यायव गान्ध्रम्यः र्म्मयः स्मितायर्द्राम्यद्वः स्वयः गुरायवः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः लया है दः मुद्दे न्यादः मुद्दः मृद्दः मित्रः यः बह्न वृद्ध देश देश हुयावदावरा वहा पहुन प्रमुदा प्रमुक्त परिवर्ष यदः तर्वेयवः द्ववः हे । वर्षदः दृदः । देवः दृवादा विववः वरुवः शुः तह्यद्वर सदे हितु न्त्रु अर्झे व स वहर हुन स् ह के व र सथ ख्व थे ने या या र <u>न्धुन् तनेबल वहाँन् कुरासुल पते अत्राह्म सहरा कृते क वावर वदा। "न्</u> *ঀ৾৽৲*ঢ়৽ড়ঀ৽য়য়ড়৽ড়৾৾ঢ়৽ৠড়৽৸ঢ়৽৾৾৾৾য়৾৾৾য়৽ৼ৾ঀ৽য়৾৽য়৸য়৻য়৽য়৽য়৽য়ড়ঀ৽ঢ়ৢ৽ नहनःव्यानगदान्दिवयायाळानवगः छेन् सायवाद्याके ततुन् म्ह्युद्रसम्पर्म विद्राग्ची स्थल देव भी सम्बन्ध समान कर ग्री सारे प्रविद्रा

देगल पर ग्रॅंस पर विदा हे न्यु बरा (इट क्रुर नेर ) गर्ड यह द् ক্রুম কবা ন শ্ব: ব্রুব র্মশ্ব মক ইব ট্রুব র ব্রুব র ব্রুব র ব্রুব র मुठेग्-तृ। प्रकेत्रवर्ष्ट्रग्-स्यायद्वरकुल्प्नदेर्द्रप्टर्धेदेः प्रद नगतः देव-नश्चरयः नृज्याः द्वाराण्ये । लु । न व व । ह व । स्व । स्व । स्व । स्व । **वयमः रूरः य**ष्टिदः रुदः म् व्यया यः केवः यं यः यष्ट्रियः व्ययः ये यः ये यः यः हेवः र **धर**. भर. च.र. ृव. प्रवर: ध्रुंगल शु. शु. त्युर्यः च ने . केन् . कुर. कुरा न्यरः ..... वहिना हे द न शुबा वर्मे द वर्षेन ने सुदे प्यट श्रेट व्याप वेट सु वन """ मुर्हेर्-पर्दे-च माद-सुर्द-च द्वुत्वा "ा हेर्य-महित्र हिर्दे । विद्य-दिदे र **यम् श्रेन् देशः यने अयः यः न वकः नमः श्रे यहः नमः न वनः यने न्यूनः** त्र्र्र्र्व्वी म्डॅ·पॅ·बॅ्र्य कव्यय्रिः वेषा ने क्रॅर्य्युवाया स्रदः वेषा क्चाराकेदार्यः सहर् प्रदे मुद्राधीराधिद। प्रक्रिक्रेद्रार्यः केरादेशः ह्युयाम् वेषाः व्याप्त वादियाम् वरा हेवा उरा रातृराकेरा विरावि नग्रत्सुरार्वेचर्वेचर्थेच्यू र्येरावर्श्वचरारेदेवनग्रह्मेवर बर्द्र-बाय-र-प्रवा "म् इ.प्.यर्या मैया झराना बचरालया प्रवेश हैव. मयता रूर : यहित : यः केव : यं र : श्वाता र वा र ह वा लि। केता श्वीर : विवा यं र **१.**लर.रेथ.चेश्च. १.श्चेय.पट्टेय.ग्वे.लर.खे। चेलय.लर.श्च.श. थर.श्च. मः स्वायाः भ्रायाः भ्रायः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायाः भ्रायः भ्र वसाग्रमान्वायायम् देश्वस्यायस्य देशस्य पर्द्वराधिव स्वर्भाया भी देवारा सुग्वारा नहुग सुर पहुंच पठ रार्झे

① (विव: नगुन गहार: नव्य क्षेत्र नवः रूप: में ग्राम्य 232)

व्यवित्तरम् व्याकेषा के. द्वारी स्थारी स्थारी स्थारी स्थारी प्रतित के. प्रतित स्थारी स *ব্বি*ন্দ্রের বিজ্ঞান <u>न्रोत्रःपत्रेद्रःपःन्र्युयःग्रीयःह्यःयत्रःद्रम्पःयदेःश्चर्र्त्</u>र षरःशुःबतुवःवरःयः।यमःवतःहमः न्धुरःमवरःकुःस्यःकुरःन्रः। मॅंद्राची म्बर्का र्ह्धाया मृद्रा दिन के अक्षेत्राया ह्र ब्रक्षा यदि द्वा दिन के दिन मेंद्रा बायन्याः व केवः व दे यार्रे राष्ट्री क्षेत्र तु यार्रे या है हि स्वराय गार्रा न्ध्र .... तपु. रूब.पा.श्रर.धर.वि.केषु. घ. छ्वा.किर. पवेथात.केर. (क्षर.श्रे.) श्रर. भे दिर तु . ये न या न भू न . यो न . यो न व या न या या न . से र सि . भू . भू . **র্বা র্বা গ্রি মি 1760 ইন্ প্রবাম নে গ্র্বা মিন অন্ গ্রিন্ মি বা গ্রুম স্থান স** ग्री'महनार्धर् नवर्षार्ख्यार करायार्थ्य राष्ट्रम मेरायर श्रवः भ्रवः नवरःश्चे न गरि हे र वेनल है । सूर न सूल नदि । है व । ल न है । न गुर लु .... कुदै निं न कु के कु के कु क्या अवत पर् अव कु क प्रति कि के के कि कु धैर-वेनवान्त्रदर्गः निःहेवानग्रतायदात्विरानरः"र्नेदायः बुद्रायतुष्पार्थयार्थे व्यद्रावे तद्रवर्षा श्रुप्र विद्रवर्षा श्रुप्र बुद्रवर्षा लाक्षरःश्रद्धाः नवदः न द्वा हिनायः श्रुतः मध्यः निरा न्द्रत्तेव्व कुर्तः नश्चरः भ्रवः वु द्रम् वः येनवः पर्तः हेवः बु ः त नद्रवः ः ः है। ग्र्टर'बूंदराशु'कुल' कंप'देव' घॅ'के'द्दा हे' खयापवा दें 

<sup>.</sup> ① (অই'অদিন গ্রুদ'বছ্র'র্ন'র্ন'র্ন'র্ন'107)

मद्रः अः त्रियः न्यात्रा स्यात्र व्यक्ष्य ।

विद्याः प्रति त्या श्रीयः स्वारं क्ष्याः स्वारं स्वारं

यन् अर्दे अपर छ रेटार्यर के या से विट र श्रुर भेर र यह से या से वे है। बद्दर्वेदा ईराद्वेदा पर्वरायमा बैर्वेदा छन्। बहूरे.चा ष्याचेरा चेष्र-क्ट.च.श्र्चयार्चर वर्षे हरायरे. स्बाय के के शु क्या अल्ला के कु प्या प्रश्नित कर श्री या ग्री के श्री वर गर्ह प्रया रा ... माक्रावर्ष्ट्रमा वर्षेयाचरायने पारुवायाया संग्रायदान्ते । यतुव इसमाग्रीमासक्रेन् मदी में ज्ञानियाया ग्रीमास्य विषय स्वीत निवासी यरे.प ठव.ग्री.भेष. सूरु.प्याया.पे.पूर्.पवीयाया.५.भूट. यावेया हीर. म्.क्षे झ.कपु.क्षे भेषाल. य्याया यया न्याया प्राप्त व्याचित्र प्राप्त व्याचित्र प्राप्त व्याचित्र वित्र वित्र वित्र व्याचित्र वित्र वि ञ्चनामवरा "ा वेयानयय मास्रायकेन ह्यारेवाम के ने वेन **७**-- श्चे - ८५ वर्षा १ - १ वर्ष च्या प्रत्य च्या च च्या च च्या च्या च्या च्या च्या च्या च्या च च्या च्या च्या च्या च्या कुल क्याने से मुन्स सुन्दर्भ कु निर्मा कु वेनलाततुन न्नातानवे नवे चुराना नहें रायवे वरा ं तर् अनल क्षर श्रु . व्रु व . व्रु . य द्वर . व्रु च य . व्रु य . द र । य व्रु व्य . द य य . इवाधे नेया स्या ख्रा इव देवा न्यु याचे यया मवदा ख्राया संग्रामया या उर-५ग-मर-वाबर्धर-हे। इर-भुवे स्वाधर-५८-। वर्षे वापर-मवे बुद्रायायहॅद्रायायवदाह्रवाह्यरावदी द्राया विषा व्यव्यवाष्याय विषा

र्ष हिर्द्या पर्वव पर झूर हैं।

इसम्बर्वरादे वया "दे सं रेद यें के द्रा वें रावदे त्रेद्र व्यापा **यः हू '**भैदः पठवा ग्रीवा सुपवा सर्वे व न स्थापते प ग्रीते थे पवा क्षे 'द्रा बहर्श्युर्द्र वर्षर प्रते इया वरा खालिय। तृ नेरावरा श्रे करे के पूर संचित्रःस्य स्रि: क्रिंशः न्यः प्रष्ट्विनः तुः पठ्ठन हे। विवयः पञ्जेतः मे**रः स ক্টর্-র্**টে-ল্রি-মৃত্র-র্দ-ল্রিল্র-ঘ-অন্র-ঘের স্থ্রব্-ন্র-গ্রী-এয়-দ্র--त्त्रतः चुते : मृतः के रहे र : त्रु : मृत्यु अ: धते : अर : के ला पहु : मृहे ल : हे द : शहे ल : नवःश्रीः रात्रः सेनराः हे। देः य न गतः न ज्ञारः संदेः न रोतः धेनः देवः संहः न्दा मवदाश्चेय दे वस्य र ठवाये छ न प्रवास वस्य प्रवास है । वर् नमायः मुंदाः ह्वा र्र एखरान ह्या है। मूदानमायः मञ्जूरार्टः। यद्यायाः धेना पश्चेर चुते न ग्रायः यहं वा स्थाप हैं दे हैं न हैं न से स्थाप न हैं दें हैं न हैं न से स्थाप की दें से स् न्त्रतः भ्रम् तस्ति स्रुप्ति व्याप्ता हेव। व्याप्ति वे वे प्ताप्ति वे प्ताप्ति वे प्राप्ति बळॅ द कु न यं द नियम ने के के के द न द न द न से किया बळे द मित र यदे . हुर-व-श्चित् य-लेर-श्चि। मन्व-ल-केव-य-नश्चरग्च-श्च-श्चनल न्दः परुषः पषा मुर्थरः भेगः देवः यः के खेव्रास्टः परे पा रुवः तुः मन्द्रम्या मलेर धेन देव में केरे वेचल पहुर हैं य या स्वापर मी बतुवातुः श्चारवार्या यद्वार्या यद्वार्याया वया स्यार्थिय व्यति । स्राप्ताया । चर्च्यायाच्याञ्चना तस्ताञ्च्याञ्चे ताञ्चे त्रे श्चे त्रे त्राच्या क्रायायाः क्रायायाः व्याप्यायाः विकास मुप्ताः सर्वे वः सक्रम ह्या पः देवः यः के सुग्यः न् ग्रे यः पर्वे वे पर्या ५५. निर्मु निर्मु निर्मे विदेश स्ति निर्मे निरमे निर्मे निरमे निर्मे निर्मे

मुद्र-भ्रंब-द्र-ल्व मुद्र-पड्डे-ह्या म्बर्य-ल्य देव-प्र-क्रे-क्र-भ्रंब-भ्रं मर पहुंचल पते पन्ति देव ला के देर नवसा ग्री ने ब्रा मेरा निया भरता मते. दूर तहेव ग्रे हिंद तार नदार मुरान दूर हैते न मदा दूर लेते. न्न अरे हुल मु त्याय मा द्याप्त त्याप्त में निया देराहरानी सुरा देन ग्री नमायान विवाह्ययान देते हुन निश्चान रार्यरा क्षे किं या वर्षा लुका यमा विष्या यही सु विमान वर्षा के वही स्वरी हैं बर्कर ठव तरुषा हेर म देर ग्री लेबल नेव हु र षत हा या श्चर्यात्रः अर्थाः वे प्रवाहित स्थानी स्थ **र्रः तु** : न्नुरुष: बृरः वेरः वु राय: व्राप्तः विष्टः वि কন'ন্নদ্বার্থরত্ত্র'ন্র শুন্না শ্রুব'নর অর্ন শুন্রথ তর্ ইর্ मह्नेर्-मु-क्रेर-पग्रीलायाधिद। विराध-वि पराम् नेम्ला द्रारेर्-ता थुवयावित कुवात् विरालरा। राक्षे मार्थिया ग्री विरया श्री विराधित हो नार्थः श्री न्या प्रत्राचित्र वा प्रदेश से द्रा के प्री प्रत्रा महात्र प्रता के प्रत्रा के प्रत्र के प्रत्रा के प्रत्र श्चलायते श्च हिन् वला लत्या कुला ग्री पद्मवायते श्वेता या लु लेन ग्री देता " ख्यायान्यः वितः क्रियः । वि. क्षेत्रः तु . विषा यवायाया यस्त्रः यस्त्रः अस्त् । वषा शुः ल्य-ब्रिट-पार्यम्या ने मेन बेन् यामा की नाय ब्रुया परि शुम्म वाया मॅं मुंज्यिते हे व न्यात हूँ व तु । व न न या के ये या या व ये र मुं के न्यम् बेन् कु मु प्याप्त वि भूक स्वर्भ निवर्भ निवर्  हिरा वृ तिराष्ट्रे पङ्गदाया दरायदे छेर् पु विषय या भेदा मद्या श्रीर वि.चल्चेय रंगिराज्ञा, केया हैया तपुर प्रिया अराम केया विश्वास न में प. जिंदा न बंदा में . बंदा में के बंदा है या न क्या न है या न करा न है या न है या न करा न है या न है या न करा न है या न है या न करा न है या न है र्गे यः र्था यः रहः वरुषाम् यदा वर्षा वर्षा वर्षा में या में वेषा र्था या तु र वर्षा वर्षा । वया बेंदा बादी प्रमाद भेग सुरा परु द्रा पर पर पर परे पा दे वया য়ৢ৽৴য়ঀ৾৾৽য়ৢ৽য়ৢ৽ৼ৾৽ঽ৽ঀ৾য়৾৴ৼ৻৾৾৸৸য়৽ नवःग्रीः श्वम तुः मवरः। म्रान्यः देवः यः केः श्वमयः हे केः वर्म देयः नम्दिन्द्रुत। ब्रि. बरि. बरि. ब्रि. व्रि. इसरा भारतमा निमान के साम स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप र्द् ग्री श्री द्वा के जु अवय द्वा या वर्षय रहा दि व के वह के जु स्वर के ला चयःग्रीः नवरः। मूरः बदः नविरः धना चङ्गाः विषयःग्रीः हेवः तच्चरः यम्याराह्मराच्याराञ्च्या राष्ट्रवा राष्ट्रवाराम्याया स्थाकुया स्थाकुया स्थाकुया स्थाकुया स्थाकुया स्थाकुया स्थाकुया क्रिन् अन्। श्रेन् पर्वे स्पायान् में व से ते नाया वया विनय मह्यान्त्रियात्त्रियास्यान्यास्यास्यास्यास्यान्त्रियाः न्त्रेदाकेः स् अवतः न्या तः अरः त्ये न् न्यु । वि त्यु ग यवता हरः। वा सः नक्यामु भु हे व न इ व्याप तर र वहता स्वाप न द्वा " केता " केता " केता पर "म्राम्याक्षेत्रम्यत्रेनम्यत्रस्यत्राध्यानद्रम्यकुन्त्रद्रामस्याचेनद्रास्या मह ळेव छेर है वे न्दर ने कें कें विष ती शुरा विष र ही विष मन्द्रम्पः सद्राद्धे द्वित् व्यादिने स्वयः श्वीम्यः ग्वीयः द्वाः सदे श्वाः सद्दिन् स्वर् र् निव्यात्रका भुः व्यत् तिवाक्ष्य मह क्षेत्र छे नहे ने का हू निव्यत मक्रमा हियाय दर्गा र्यर खरा दिया प्राप्त स्चिषः मुब्ब सरः वसुवान् मृषावेषायेषायः नृषः नवेषः प्रावेषः केषः देषः व क्व.रदा <sup>क्व.</sup>प.क्च.र्.झ.५४४.घ्.क्व.च०थ.च येष.च्य. क्रथायाया श्रु. दत्या च अया श्री मा अपन्य में स्कु. म अम् हिया ही . विश्वयातान्ता वि. हिरानार्यान्यर क्याय्याय मृहेयासु व्यत्तिया यदे न्वे क्व न् त्र्य स्था क्व न्व स्था क्व न्य न्य स्था विषय स्था स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्था विषय स्या स्था विषय स्था ळ्ळ प्राच के दे. या च पर अपर पहें दे. ब्रियः रेची प्रयास पर भी रे क्रियं के विकास के विकास के विकास के विकास के न गांते छिर लर इया क्ष्र कुषा है या है स्तर सुष्य है या है या राम राम राम राम है या स न विराड्ड क्र्याई विराधामित्रेयाया मेराया क्रेव स्तापा माराइया मञ्चरके स्राप्त पहुंबा दे प्रसेव हे बाप हो करे हैं ने बिद्र षाव्याञ्चयावान्वावान्यस्याञ्चयान्यः वित्राद्याः वित्राव्याः वित्रा लूट्यातह्रवानुबायाण्या हेवात्वुटानी नार्यया रहारा छुता मुल क्याने संस्था विवादना यगित स्वा केव संग्राह्म स्था नम्पानर धुन्। न्नर न्वरः। ज्रह्या यहेता नृत्यः व्याधुन्यः धुन्यः। खर.चंचर.चेथ.परथ.देलां "⊕ ध्याचयतारा क्षेत्र.चूर.घषु.च येष. खरामिव में प्रताद हैव में जान विवास के राम के राम है राम है राम है ब्रह्मन् श्रुयः न्त्रुरः सं निव त्यान्त्र र द्यावता श्रुः स्व तत्या प्रति ता निव ता निव

<sup>ি (</sup>র্মান্সান্ধ্রাষ্ট্রাম্বনার্ত্রাক্রান্ধ্রাক্রান্ধ্রা—23)

र्वः वहंग्यास्यः यहं रः

ने वर्षा "मुत्य स्वर ने सं देव सं के न्मा यम् वे मुद ह्व स्वरा नगर में य हैं न है न तव गया जया न व ने या न की न व के न हैं या है व म्.कु.बहेयाचर.री.ह्ययाचयाक्ष.र्श्चितार्चरया होरा। वहर ता इया . अर. न्ट. के. टॅ. वर्षर के. च. च करा। व्यं चिट. केंद्र. चेंद्रे. न्हेर. हिंद. हुर. हुर. मवर्त्तते त्यत् नि दे श्रूरि वि नव नव न मुर् के न हम परे हि न पश्च विषय महिन्द्र विषय विषय । या विषय । विषय विषय विषय । विष्य विषय विषय । विषय विषय विषय । विषय विषय विषय वि श्चितां अने या स्तर् । या कर्ता नित्ता निता निता सक्ष्या श्विता श्वि । श्वे नित्र के । म.बिर.मेंनेथा स.६.लपु.मेश्रर विर.मेर्य.रेर्याचे.चे.श्रर.की.चक्षेत्र. त.बैय.भेट.। रेथंय.बक्ट.बु.श्रे.पब्.क्ट.ब.बीय.हू.पह्राय.स्ट. क्ष्याल ध्यास्या हुरा वर्षा कार्यरादेन वर्षा हुरायदे हा वर्षे सक्ष्या श्रीताश्चा अर्था अहता विते स्त्री नया तक्षेत्र स्त्र स्त्री नर नवि नया विता निया न ष्यायवान्तेवान्तान्यायाः वात्राच्याः विष्याच्यायाः विष्याच्यायाः विष्याच्यायाः विषयाः विषयाः विषयाः विषयाः विषय लवा र.क.बळ्वा हील भुटे.कु.ध्रम् बहल विरायहल विरायह राष्ट्र अराखेर वा परीया ब्राह्न त्रिते त्रां अदे वर्षे वृञ्चिता त्रां वर्षे वर्षे क्रां कर के वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे तत्न वासतः नहेन हु वाह्मन हु याद्वि तर्दे न हु न हु से यो र न न द हू न ग्री त्या देव के वर्ष भीवा वदी या जरा हु। दें विष् हा अदग्रा वर्षा है। संक्षेत्रेद्रानराह्दानी सु क्रेटान्द बढ़वानु सु लरा है वाववा केंवा ग्राद्या पन्नर्पर्यं अर्द्धन् श्रुत्यः न्येर विरायर्थाः न्येत् स्त्रेन् स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्र द्यान्त्राच्याः के त्रे ते त्राच्या व्याप्त्राच्याः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः

मॅद्र-म्याययः धर् स्वायः मृत्र-द्वियः नतेः क्र्यः याः स्वायः स्वयः स

दे'व्याप्तिः तर्व न्द्रंयाम् विष्टा त्याः क्रिंत्रः स्वाप्तः । इयाद्यः निः न्द्रं निः स्वाप्तः । क्रिंत्रः स्वाप्तः स्वापतः स्

<sup>🌣 🛈 (</sup>इस.वर.पद्य.व्रट.यवप.क्रे.व्र.व्य.वर.र्

**৽** द्रश्राह्मरानवरा ञ्चारा हुना यदे छ या यहुना ने या या यह । के वा देवा म्.कु.बबेयावटारी मुपया ब्रिप्ताया पश्चीया बेयावटा बर्दराषेया हे. ट्रॅंबर्स्य वर्षे वर्षा इत्राह्म द्वीयवर पर कुष यर वर्षा युवर मृतेर विवर क्षेत्र र मुलायहलार्नार्मा अगाडे ऑर्गन्तिति। हेनारहरहेन दर्शेयातेवायापरानश्चेवाय पावदा। कुलान्यरादेवार्थाकेरायहा ळेदा:अळॅगाद्याय देनाय हेन्। इंग्य हुःगहुः याह्य आयान्ता न्ययः मं याहेगः यार्थाः र्वित्तर्वा हिन्द्र वर्षाया वर्षेत्राचे न्या कर्ता मुन तहस्रान्त्रम्। श्रे.मेळ्.च.न्त्रान्यूयःहरूष्याम्बद्धः के. कृ 'बुर' दबे थ' ग्री 'र्घर' र्षे ग्राया ग्राय केंद्रा ग्राच च ग्राया केंद्रा राष्ट्र या प्राया मार्थ न्दरः। " மिवेयान्ययाविरः। दे द्याप्तिः धेनयः कुः सहरः अदिः मः ब्रीमाह्मसरायेनस सरागुरायद्विदार्थाने दी "ग्रायविदान्नायरे न्यार ब्रुंगल ग्री प्रचर में गाविका प्रति रेका गावत दिर ब्रेंट खुर ग्री रेका पर्योगका कुल-दर-इव-ठेव-दह्यकायदे हेव। पर्ने म ठव-वर्षा भ्रुपका अर्वेव লন:রাথ-জুনথ-দল্লী---এব--নন্ত-রুনথ-নথীনা में र अ के द में दे चर्मावास्वावास्त्रे स्थाः स्वास्त्रे क्षेत्र स्वास्त्रे aे तेर हर में 'सु केर अयायां सु 'धन ज्ञान अपर ज़ु 'क्र कें पासु | वि.ख.पी.भूर.जी पूर.पखेबायालयानवे.श्रु.प्रस्थाप्त

① (বর্ষাস্থ্রীন'বরব'কুব্'র্না'গ্রহ্ম'25)

नवा बुरमं के नकेवा विकरे के नहा है की की की की की की की की की ॺॕॻऻॺॱॸ॔य़॔ॿॱॶ॔ॻ<mark>ऺॿॱॿऀॱॸ॔य़ॣॺ</mark>ऻॸॻऻॱॶॖॾॱॻऻ॓ॴॱॻऻॾॣॺॱय़ॱ॔॓॓॓॔॔॔॔॔॔ नक्षेर्या मु द्वा व व तेर न इव पा तहेव पा दे के दें वेद ज्वा नगरि:सुर:ह्रॅब्र-पर्वा सुर:ह्र-राम 夏대.游.옾회대 वरः सः सम्ब के के के स्तर्भावा मृत्या विर मी विषयः वर्षे मृत्या व **र्धे**वा मःमः तेरः श्चः वळ्वा प्रवदः वरः वरः वरुषः व इवषः प्रः। विद्वः षः क्रेद्र-व्र-त्र-त्वरान्न्य-न्युय। क्रुन्-क्रुन्-अन्। क्रे-ठ्रा प्रवे-क्रे-स्वाया ग्री व्याप्त श्री प्राप्त श्री प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त विक्री র্বা জ .ঽৄঽ .ধুনাথা.নাধ্যান্তীথাপ্তালধ্যানধ্য,ক্তব্যানধীথাপ্রিপ্তি বদ্ব বর্ষাগ্রুদ্ধানর্জন বৃদ্ শ্রীদানিদান বুল্বাধা প্রা न्देन'पठन'सयान्दर'। .....ळेल'र्नु'न्डर'अर'रर्धर्'धुरासु**दः'' '** शुबः ळ वयः धरे ने व स्व के व मुव क कुर्यथार् राजीक्ट्री, जा श्रूबाया <u> শ্বম অমুখ্য শ্বাহ্ম শ্রী অ.জুলক, দি, ন দ্রী শ্রী লি জা, র্ প্র . র্ র্ম ক্র</u> शु.बांध्रलाचयाचयापश्चीता देरावि देवाया क्रियासम्बद्धाः राज्या बर्धराष्ट्रम् न्वरावस्य देन्द्रम् केवर्या वित्र मुक्ता इ.न बेवयात्रास्वयात्रक्ष्रम् ह्वेयाग्रम्थात्र्यम् ह्वेयान्या ब्रॅं'सुब्'ळॅग्यायतु 'ययापड्डून्'येवया नने'यम्यापरावयाद्यापर मुयापायदानदे सेव्याप न्द्रीटाय इयय ग्रीया रे हो दय ग्रीया पश्या म्बेल्क्टरके द्रायवितारी तिक कुरानु क्या क्या क्या प्रायहरी यह रा परि ते में ग् ग् कर प्रेम पार्ट पर्या में हित विर विषय हुर प्रा *वैषान्*सः वृद्धं राख्यं म्<mark>युद्धः इ</mark>दायद्विषायवायकुवायायम् द्विपायवायक्ष्यः । । ।

208

र् । "अविषान्यिन प्रमार्किन हिन्। देति श्रे के व "ळे लाय हु त्या है किंद्र पश्चेरयाने क्रियाग्री तिवराया पश्चिर पर्यः निवया छवा क्रिया क्रिया क्रिया हिस् त्। तहेन्यायायेन् न्नेन्रा स्वापने नामिता नेवारा की नामिता वर्षा वर्षेत्र में र विनयः रोवः ग्रीः पद्धः यहँ वः परः वर्षे दः यहं द। दे र श्रुवयः वर्षे वः प्रः छेवः मयसः ठन् यद्वितः यः बर्ळेगः नृतः। मुलः स्वारे व्यान्ति स्वारं व्यान्ति। स्वारं व्यान्ति। भीट.चर्याप.च्रिय.ज श्र्याय.चष्टु.क्षे.श्रुष्ट्राच्च ब्रायाच्याचीय.श्रु.क्षेत्र.चर् न्तुलाख्या मानवाची क्षातहवान्यतान् इत्लामें रावा केन ये ते नाति म्रोर धिम मी सुर र्क्ष केव ये सक्ष्म न सब सम्र न मा मीता में रा परि .... हुलामञ्जूनाता है। स्वाधिन दूर्धनामक्यान्याना विद्यापाना हुना है पश्चर ब्राम्यद्राम्यवायायन्त्रास्यास्य स्वा व्याप्तियाया पर्वम्याम्वा मर्दराया श्रुग्वेरा बहुता व प्रवास क करान्या वियामदे ह्या ह्या वियाश्चर र्याया देया द्वर श्चर हैं हे दकर में भेगवा दस्या रूरा ठर हुवा केर सरा स.कर. लयाया लराश्चार्द्रास्वास्त्रा क्षे.सं.मूराया हे.सं.लयायवा म्रै-अन्तर्मायाः समायाः समायाः त्रीयाः समायाः समाया हेब-इट-पड़ेब-पड़ुट-वै-पतुब-च-श्चरा-वर्झ-च-चह्नर त्यन्य माञ्चन वामङ्करे क्रमाद्यम्य मृत्री वित्रकेवावि स्राम्य न्शुंबाग्री स्रे शे शे शे त्रा हे त पश्चि पश्चि पश्चि पश्चि पश्चि पश्चि प्रे प

① (तहबाब्रिटाबहर जुन मृन् ग्राय 25-26)

ब्रेस्-श्रेब्र-श्र्मा ब्रेस-श्रेब्र-श्रम् ब्रेस-श्रेब्र-श्रम् ब्रेस-श्रेब्र-श्रम् ब्रेस-श्रम् व्याप्त व्य

ने द्वान्य स्वान्य स्

① (REN'AF. NER. 24. 44. 124. 27)

② (अर्-अप-र-इर-नहर्-न-र्य-111)

विन् स्राध्याक्ष्य विन्य प्रायहर्।

विन् स्राध्याक्ष्याक्ष्यात् स्यान् स्रायहर्षः स्रायहर् स्रायहर्षः स्रायहर्षः स्रायहर्षः स्रायहर्षः स्रायहर्षः स्रायहर्षः स्रायहर्षः स्रायहर्षः स्रायहर्षः स्रायहर्यः स्

ষ্ট্রী.অ. 1220 জন্ম প্রনাল্মা "বছমাইর মেকুরা ॻॖऀॱॿॖॴय़ॕॴॿॖॴॸॾॣॺ॔ ॸऺॺॱय़॔ॱ**क़॓ॱॺॣॸॱढ़ॺॴॻॖऀॱॿऀ**ॺऻॴॸऄॗऀ॔॔ॱॿ**॔ॱ**॔॔ बुदः पर्यः पत्र महत्र में महत्या देया परि देव देश महार प्रमुद्ध प्रमाद देव क्रे.चर् श्रोष्ये.त्रं र.श्रोष्यः चर्द्ध्यः च बरः चश्चियः दह्दं श्रायः चरे र चे .च से यः . र्तुः यहर् चठवा महेंदार् में वाग्री चम्ता थेववाया सून्। ক্তুন্ প্রন্ বহার প্রাপ্তান বর্তা হার বিশ্বর প্রাপ্তান বর্তা করে বিশ্বর প্রাপ্তান বর্তা করে বিশ্বর ব 急へ 周·四の·周·四 発亡·ロ·製·四七·エロ·日日四日·日 雪丁·到丁·四丁下 वन विचला हुरार न द्वराळेला स्नाया द्रा রূ.খ্রীদ. দব. দবী প্রথা. पःचुनःञ्चन ञ्चं प्रचरःन्ने येनवानाने वा न्तुः यहन् नुःचुनः ञ्चनः र्गे श्रेरार्ग र्रराने काळेकार्या र्गे श्रेरार्गर्यराञ्चर परुषः हॅर प्रत्ता म्वर प्रतः संरक्षित खषा क्षा ग्री वा वा केंद्र वि प्रतः ग्री """ र्हेव मवरःग्नरःग्रुयःहेग कुलःपद्गवःश्चे र्रः। घरः परः यह्यः अर्मेवः त्त्रः वर्ते नेदः तुन्वरः हैं : अ: बेदः यः द्र नः कुषः यदः वदेते : द्र है दः द्र यतः हुः ..... *ढ़ॼॖॖ*ॸॱॸढ़ऀॱ**ॾॕज़ॱढ़**ॖॖढ़ॸॱॡॕॴॱॡॕॿज़ॱॻॿढ़ॹॱॻक़ॕॗज़ॱॿॕॗ**ॸॱ**ख़ॱॾॕज़ॱॻॖऀॱॿॖॗॴॱॿॕढ़ऀॱॱ न्बॅरलामबेन् न्नु का बेन् पार्श्ने दानवे सर् स्वालास्त्र वा ता व्यवा 

मरःश्रदः।

अतः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषय

श्ची-सं 1777 वे छ सं न्युर यूषर यूषर श्ची र श्वी य श्वी य र स्या हू लदै न्न य बहू न न बिदाया है से स्वर्त न के ति स्वर्त न के विद्या न के ति स्वर्त न के विद्या न के विद्या न के व न्ने ता कु ते व्यापक सं राम हा के का रेका में के मिर्का कु ते की क्षा मर्का कु राम बर्गल इंट्यानवरावेटा श्चानानेव्यामदे वरान्तु राज्या क्षेत्रामः चश्चरः नरः नगदः श्वंतः र नदः पवे खुरः पहे ः नः नव अः पव म्याः व मार्यरः । तक्षवतः वुर ने हॅर ने वर र्रा । क्षा तर वे ने ता हे वर खें ता हेर प **ଌୖ**୕୰୶ॱॸॹॖॱॺ॒≅ॻॱॹॗॴॱॾॕॺॱ୴ॻॱॶॴॱॹढ़ॱढ़ॾॕॺॴऄॻॴॱॹॕढ़ॱॸॄॺऻॸॱॱॱॱॱ र्षे तरे नवार तिया समिता क्रिया स्टार्थ स्ट्री से म्हेला से प्राप्त मिलेश. छट.थ.चशित्रः इव चेल.री.रैं.लपु चे.वा.बक्च्तं.च्या.बद्भः बह्रातपुःचाः... श्रैल-८ बु. प ने थ. श्रूबला प कु. भू र. ले व. कु व. नु व. चू. कु य. चे ट. कु व. पश्चामने प्राया की प्राया क्रिया है पा हिन्दी प्राया है राज्ञ परि प्राया है राज्ञ है राज्ञ परि प्राया है राज्ञ परि प्राय है राज्ञ परि प्राया है राज्ञ परि प्राया है राज्य राज्ञ परि प्राय है राज्य राज्य है राज्ञ परि प्राया है राज्ञ परि प्राया है रा क्र्यामञ्च महेरा हेदायमाया या इया महेरा से महिरा महिरा समापिरा हु गाया । या प्र कुनयः पञ्चितः सूच यः ञ्चतः तृत्युः य छवः चहावः स्वयः छेतः न छः सूतेः ৡ৾৾য়<sup>৽</sup>৴ঀ৾ঀ৻ ৸য়ৣ৾৾ঀ৾৾৾ড়৸৾৸ৼৢ৾ঀ৾৾৽৸ঢ়৾৾৽য়৾ড়য়৾৸য়৻৸য়৻৸য়৽য়৾৽৽ 551 त्या श्रूपा म्या हेवा मि श्रूपार मे तर्वे तर्वे विषा ग्राम्य करावते **र्**चुकाशुः नृत्रेक्रपरः ≹ग्राहे । व्यान्डक्रप्तक्ष्वापर्यः प्रदारा

<sup>(</sup>प्रह्माक्षेट्रवाह्मर ज्वाह्म ज्वाह्म व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याहम व्या

लब्ब ह्या विकास स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

ब्रु-सं- १७७७ वर् चे च च च कि कि के मान्य के मान कुला इंगरे से दें अव ५ व सुर न वे नवा मदे स्र र ह व घर वरा ॺ.पंचयःर्थेटयःथि.कै.प्रह्रेल घ.रेटः। थैयःबोर्ट्रेटःल ब्र.तंतरेब.त. शूर्ः ह ग्राप्त मुद्र भेद्र मुद्र स्व स्वर भेग्य हुर पर् । हेया हेर ग्रेय हेवा बानर र मूं हु रिय कुथ. मी . मूं र रया र सूथ पया ता ने . मू . मैं य क्या मूं . मूथ. न्त्रम्बत्रद्वातु न्वेंद्रायदे अर्धे न्याय हि त्र्या के सुद्राप्ता दे त्रतात्रामी.सी.प्र.प्र.। नेश्चरमित्र स्वानेश्वरतार्हेरायक्र्रा ब्रह्मर्।वर्।वन यानमु ब्रह्मर्री मा स्टाइनिया न् मुर ग्री*षा-*न्बॅर्या-ऍवोषा-र्यः अळवा-श्वेषा-प्रष्टेष-प्र्येर-स्व-पर्ने-ॐ्षा-बुराः.... न्रायाः नृत्रायाष्ट्रायाः श्रूरा क्षेत्राची सुन्याः श्रूता न्रायाः न्यायाः । **了**有"口景下啊 चाला इति म्वा च्रा वर श्रेष चयर भवा ॥ १३४. त्रिन् हेरा। तुरायहंरयः "नगतः त्रुवः क्ष्वः कुरावयः वर् निव्यायः षयानवाह्यान्द्रियान् चुन्। नवयान्र्र्भ्यानहयान् चुन्यान्या पर्या:च.क्य. त्या. क्या. क्या

① (AEN'AL'ABA. #4.144.124.13)

भूर.गु. मवय ईवायधिवायवरायहरी "कुथाययवाय रटा। अर. ञ्चिते द्वारा वरा भी देश वर्षा देश हैं के कि वर्षा के विषय के कि विषय के कि ब्रि. अ. क्रेब. त्र थ. ब्रिट. बी. क्रि. प्रेट. ग्री. प्रथ. ट्रेब. ग्रीट. यापव. मु :ञ्च: अ:बेन्। न्हें र: र्बेल: ५५ व्। ५० हा :चहर: द: वेन्त्र:बेरा नगर ...... विनवासम् न्या (अराक्षुमानेमा) बळेवा व्याक्षेवा ग्राया श्रुवासिः श्च. च न द व या या में दा यह न में द या पर या स्व प्या हे मि या रदा वेदःश्च-वःश्चेवःवदरःम्रेदः यदेःश्चः देव धेवः ग्वेतः स्ट<sup>-</sup>ळॅगः ठेतः वुतः .... नग्रायलाचेन्रतावग्रीतान्त्रात्रायाः वरावारा *ज़*ॺॱॸज़**ॸॱऄॕ**ॺऻॖॱय़ॱढ़ॸॖॱढ़ॏॺॱॺॆॸॺॱय़ॸॱक़ॗॱॺॱॺऄॕॺॱढ़ॺॱॸॆॱग़ॺॱॱड़ॿॖॖॺॱॱॱ ने व्या क्या स्वा माने नया प्रति न मान्य स्वाय स *चॅर्-ग्रु-लब्र-सॅव-च्रेर्-स-सुब-बॅर-रि*। ४-वे-वॅ-बॅव-इब-८ग-र्नर ह्याविषयाम्हरायाम्बरा हिरायाम्राचराक्षेत्रायान्तर ञ्चन हैया ग्रुं न त्रुवा ग्रुं का मानवर विरा ५५ हेवा तु छ ना सेर विना न्दः स्ट्रामते ग्वरः क्रेया गुः देयाया पञ्चला " ७३ या वित् या प्वेता <mark>ৰ্কিন-বি-ৰেম-ভিন্-ব্-নন্মম</mark>-ন্ৰ্ন-মেই-ম্ন-গ্ৰী-গ্ৰিন-গ্ৰী-ম लर.चडुराम.रे.लुवा

सदे त्रुव्यक्ष त्राचित्र क्षेत्र क्

<sup>🛈 (</sup>द्वत प्रवेत चूर पहें र क्रं र क देव देव 296)

② (वृत:नग्न,नश्रद्भः व्याचनः नमः नदः चेते : मृन् च्र तः 320)

्वरा इस्तर्भा "त्राम्ययाय्याः विषयाय्यर्भे विषयाय्यः विषयाय्यः विषयाय्यः विषयाः विषयः व

ल्.पर्नर.ब्र्ट.अपु.लीकार्येट.सपु.स्.वीचेबाकाराषु.बाबकार्श्वलाक्षे .... *षर-*५५ में न्या स्थापन भ्रमत अयामन स्यामित स्थानित स्थान गुँ वः यः न् ग्रन्थः न् दः। वृः व्रः सः त्यरः व्रेनः यः गुँ वः य विषा नुदः प्रग्रदः र्सः यपाः श्रेष्यया में राज्य के केरा न्दाः क्रें का या स्वर्णा ग्रामः *रे ॱ*रॅबॱक्ष्र-'<del>डे</del>र्-र्वेषःश्रयःनव-ग्*डे*शःक्षःग्शुर-(८तु ग्<sup>-</sup>रॅब-क्ष्र-:८**२** -भ्रम्याः वर्षाः पञ्चतः तर्ने : ञ्च वान् गानः चे : न्दः ञ्च वाञ्च गानः गानः चे : ले : गाने वा ग्रुं तः पले वाः गान बह्र-र्मेयारा हुरासराम्भेया कु व्यामी कु र्राट्र के स्यास म्रिप्ते हेदारहेतायेताळवाशुग्धुरायदेग्यायळंदायादेनाधुरा।"@देवानशुरव इयाहर वटा "मॅट यदे खुवा दे पर मे ने महा त्त् या के**र**ा यदे अर्केन् ह्वेब ह्वेया न राष्ट्र ह्वा अराष्ट्रिया अयाया गर्नेया म् कु चरुया प्रदेश म् दायदे च माया च साम हो। साम माया साम

① (বর্ষ খ্রীশেষধন: ফ্রব্ র্না গ্রাম্য:80)

② (Ţ┩ḍ.བẬదీ.쾰ང.བ੬ོང.戈བ་རྡོལ.297)

প্ত-প্র-বিশ্ব-মেন্ট্র-প্র-মেন্ট্র-প্র-মেন্ট্র-क.इंश्या.स्या बेद्र-इदःयःनगदःब**ढेर्** विदाक्तरान्वरः। धुवाग्रीःन्बेररा≹्वराः थी.पर्यक्ष.स.मी.षक्षपुर-पीयामिकातालय.योया.जीय-पीयाम्.स.म.मी.कुर ॻऀळेलः न्रायापा स्नरः श्रम्याया तर्नरः श्रेन् ः श्रुंनः न्यारायः कॅ ः श्रेवः न्द्र रगः र्वरः ह्रंतः विषयः ग्रुरः ह्रेवः ठेगः येवयः धरः सर्देवः विरः। रेः वयः "त्रु नायतु व सदी केवाय हु मदी त्या भी ही त्ये ना ही खेर हे हैं कॅ 'बेब' 'इब' तक्षेब' त्या ग्रेब' तदे गया ग्रे जुत्य यर 'द्रवट' व शुर । इ.ज्यंथ.क्रेय.वर्षा स्ट.य.क्र्य.ग्री.क्यंत.त्र्राच्याय.रंट. २ ब य : केर्- क्री : ब्रु ग्राय न क्री द : क्रॉ व : य व : व द : व द : व द : व द : व द : व द : व द : व द : व द প্লীৰ ধৰ্ম-দেশ্বৰ-গ্ৰীৰ্-দেশ-ক্ৰ-শ্ৰীৰ-দেশ্বন-ব্ৰীজ-ৰ--बेयानग्रदायेनया " ७वेया र्वार्पा इराने वयान हुराविरावीया श्रीरा श्चिरः ग्रीः सिर्मारा या ने प्रति वा स्वार्थित । स्वार्थित । स्वार्थित । स्वार्थित । स्वार्थित । स्वार्थित । स इवामराम्यरातु गाञ्चेगालु यासरा ह्रवाळ गया मवराया न्रा खुॱळे·ञ्चॅव-ब्रेट-त्-श्वंपव्यव्यव्यद्द-प्याळे·ञ्चव-ब्रेट-श्व-वेट-द्ट-पॅ-ने· वर्रे क्रॅर भर "पर्" वर् छै श्रेर देव जुल रवरा "बेर वरे दे वर त्र्विन'न नर् छै त<u>र चुला बेव न सुर र</u> बा नवर चु पेर् रे । शेर क्रिर तर्वे भें रः «कुलः रवसः वेषः र्गरः वे स्टः » वटः खुटः चरः विष्रः सः ..... द्भरावामिरामी त्विर्यास्याची अर्राञ्चर हे वे वया धेवारा न्रा महिव **ब**्दी:श्रेनवःपरः।प्रवयःपकुर्ःषः ईरः हेगः विषः पञ्चयः वयः वर्दः तुः वेपण्। *रोर:ञ्चर्-च्:र्कर:रु:ञ्चेष:मञ्जूष-मवर:वशः* गलु*र:*खण्यःरन:२५३०ळः: :

① (तह्य ब्रैट्वंबर जुन मृग्यूर य 83)

ल बैर्या है देश पहिंदा सार कार केंद्र किया है देश करेंद्र हैंद्र रेनरा भैर सर् रह्मरा प्रत्र ह्मारा ग्री न भेरा महेर र ग्रूर द्या ग्रुर मः बावदः में वे स्निच्यः हु " धुं व्यय शुः बेचयः ५ वें यः धु रः चयः १ रः छे व्यवदः । वायवःमः सः त्यमुन् न्सु र्डा अह्न हेरा वन् मुन्य । यरा देवाया "देव श्चिन् श्चिदः नवदः वयः नविदः नैः त्याः स्वारा तः न्यः শ্বশ্ন-১-১ श्रेरःश्चिर्वातायाने विवयः गृदः धरः गृदरः न्दरः गहुव-५८"। या कुषाने ते वदा विदः "कु वषा धेनषा या धेव या नदा। बर्दव हो। ल.क्रेन्य.र्रें य. ह. भ्रें र ल. केल. क्रंच। (ने. घ्रं.) रेव. च्रं. केल ग्रुट. र य. पञ्चन्यायार्द्रायाधिवार्वेत्। वदाःस्वाय श्चान्त्राव्ययाय्देत् र्रद् **के.क्षेत्रयः २.९८:वि.**च द्वयः यः क्री. प्रमायः प्रमायः प्रमायः क्रायः यः क्रायः यः क्रायः यः क्रायः यः क्रायः यः | प्रमाश्चिद्रायाद्रम् द्रायात्रा मे विद्या प्रकार केर वह द्रायका मृत्र दिन मि क्षा करा कर विद्या मि का मि का मि न्**ष्यारेयायान्त्रम्या**यावीयावत्न्येराकेराकेन्या चुरावयाप्त्रां केरा गर्यम्यः इयगः वया

> स्ट-तृते-मृत्य-स्य-स्य-स्ट-। | |प्यय-मृश्य-प्रने-प्र-मृत्-स्ट-। | |सु-वृत्य-सु-स्य-स्य-स्ट-। |

बेसामवरा द वेव स्मृत्। " अवेरामयया परे: "मु वरा वेपराया पेव या

<sup>(1) (</sup>क्यार्वयः इवायक्ष्यः द्वारः वेयार्गरः वे यः विवाहिरः वेयाः वायः विवाहिरः वेयाः वायः विवाहिरः वेयाः वायः व

बक्षवः क्री. पर्यात्र व्यात्र व्यात्य व्यात्र व्यात्र व्यात्य व्यात्य

① (बुल: रनसः क्रयः नविदः नेलः नगरः वे न्यदः धनः क्रेटः वेसः यः स्नाः

म्-द्रिर-परुषाताव्वव स्वमानस्था "① रेषान्यत्य मुद्रास्त स्वाप्त स्वमानस्था "① रेषान्यत्य मुद्रास्त स्वाप्त स्वमानस्था "① रेषान्यत्य मुद्रास्त स्वाप्त स्वाप्त

क्षर.शियु. इय वर. दी व्रिट. इ. क. च्र र. दी. क्रिया श्रेयया प्रे. केद्र'म्बर्या ७८' बहुद्रिय प्यते 'ब्या द्वा अर देर् 'स्ट ये 'हेट 'हु 'ब्रॅट' *ॹॗॱ*धेदॱय़राॱने ॱनु सॱवेन् ॱसॱमास ॱॾॕराॱस मस विमागुरः वु ॱन में रा वेसः … <u>ૡૺૺૹ.ਜ਼৴</u>ૺ૽ઌૣઌ.ૹ૾ૺૺૺ૾ઌૢઌ.ૹ૾ૺૻઌઌૹ.ઌઌઌૢઌ.ਜ਼ઌૢ૱ૢ૽ૺૹ.ૡ૽૽ૺૺૺૺૻૻ૾ मैं खुर पङ्गव मवर पदे पुराय श्वेपराय था भिर अस्व से दे मि ब *दद्देव*-प*बेन्-न्द-प्र-*केव-बर्ळग-व्यायेनस-प्रेन-प्रेन-प्रदे-प्र-स्वी-----बर्ळबर्यार्श्चे राहे 'त्रु' या यक्रें गावरा यह राहे। यह गायें 'केवायें 'द्रगुदा सॅ'चतुत्र-छुन-धेनल-पदे-नृत्य-भूत-ग्री-भूनल-पृत्र-क्रेत मग्रल-ठन्····· बहिद्रायः मुलापियः क्रेद्रायं नायेवयः मुनायः स्वाद्र्यः मृतियाम्। द्रवास्यायः । **बेनवः दवः न बु नवः न दवः ग्रीः केन्ः न ग्रः भैवः क्षुदः धः यः न् चेः न्नु न्वः यदः ःः** भि.चर.मेज.बक्ष्य.बर्च्य.त्रु.चड्डब्र.वर.। चेश्चर.चर्टर.के.वर.चडेश बर्ह्सर्।प्रस्याः भवाः न्दाः यञ्जायः हेवः वृद्ध्यः बर्ह्सर् याः ग्रीकः श्रुरः सुरः

① (বর্ষাস্থ্রীন'ঝলব'কুব্'র্না'গ্রম'37)

मह्रम् महिरान्य व स्थान्य व स्थान्य व स्थान्य व स्थान्य व स्यान्य व स्थान्य व स्यान्य व स्थान्य व स्यान व स्थान्य व स्थान्य व स्थान्य व स्थान्य व स्थान्य व स्थान्य व

संदेव ब्राचाह्या पदे वरायक केवारेव में के मन्व राजा भेवा कैनल'नश्चर'नवर'कुर नहेव'हू'सदे'ञ्च'व'बळॅन'गुर'येनल'क्नेय''''' बह्यायस्त्रित्तु "अप्यापाठव प्राये प्रेया प्रते क्री मान्या स्त्रा भी मान्या नःइरः सदतः दुरः श्चेनः नरः रूपः यह केवः वस्तरा उर् सि वः यः तह्यः । र्मतः र्चरतः में र 'यदे 'मुल' विन 'हु 'कैनल विल हुँ र चुर जर्त रव र " " प्रणाः भैवः बर्हेरः श्रुंबः तुः श्रेपवः पः नृहः। व्याः श्रवः बर्ह्यः नृहे देः वियः र्गुलातस्यया निवर्नियस्याम् राहेव स्वर्मित्र स्वराम् वर् कुषाविष्यासर् प्रमेंत्। **नम्राहायवेषा**स्राकुषासदे क्रें पार्श्वेतार्श्वेता बैव-५वा षयाया महेरा यमार ज्ञॅब-प्रि-मन्द ज्ञुर-महुवा अः सुदे हैं। यम्या (पूरवि: न्याये: सुदेरम्डेद: में) यद्दः द्यंदः मृहेया यग्रयः क्षित्र द्यमा अस्ता देते अतिवार्षे के किरा वरा इया या क्रा किता है र र्मात्रीर्र्ण्यायक्षार्र्। द्यामुयाम्। कर्मामुयाकरामुद हुबानकुः सः नहुः क्षेत्रः नृतः । व्यावारः नहिष्यः महिषा वर्षे वा नहेतः वृत्तः द्वाप्तवितः प्रकृतः वरुषः ते राष्ट्र । वर्षः वर्ष SEU.

द्वरम् श्वर्याच्याः स्वर्याच्याः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्यः

ल्.पर्नुतुः श्च.च.चर्छः च बरः। विश्वश्वातिज्ञः शास्त्र वा स्वर्धान्य ब्रुव-महव बे.बट-र्सट-ब्रेय-ग्रेय-हम वर्डव बेट-श्रॅट-परा मृत्रः स्ट त्या के स्ट प्रस्ता के स्ट प्रस्ता के मृत्र के स्ट प्रस्ता के स्वार के स्वार के स्वार के स्वार के स "सम् र्म रुम हुम हुरा श्रुरा धरे रायर कारा क्रायर मान्य वर्षे रासुव स्थानायः षायाम्बर्च द्वरः। व्यव्यः व्यवः विदः नव्यदः ग्रीवः स्वयः याः न्यः व्यवः विदः विवासः । बन्दरम् व क्रबारं वि क्रान्ति व कर्मित्र व क्रिक्त मश्चम त र्म सं.रसर.मु.श्चर.म.स.रम्थासप्र.पहत्रक्षाक्षम् श्र.मू.र. र्म्रला विवायाश्वेदाहेयायान्न्तायाः इतित्तित्तार्यात्राश्चराश्चरा बर्ग्य है। इन्ह्रिंग् वरक्रिंग्रिंग् वरक्र मुल'विद्यय ग्री'तहेनाया चेल'र्सनाया देवा पर संलाम दुना वतर। र्मतः श्चेयाग्ची रत्राञ्चेत् रव्हें नाञ्चे ना केदा स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स <u>र्नरः अळॅ गृःषः गृषरः क्षृत्रयः ग्रैषः वर्नः नृत्यत्वावानः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः व</u> बर-श्रुव-श्रुव-स्तापना ग्वयाग्री-झ-तहबान्धतान्धरकार्ष्ठाग्री. मुलायः स्ट न्यार द्विन्या दिन्या है। कर हिन र् हिर छ न्यार र र र र र र र 

① (यहंबाध्रीर.बधव.बैंबे.ध्वाचंट्य 95)

वु दर व्या १८ वर है। इस् मुरकेवा बेर कुन म 4 ह्र.के.िय्ट.त.क्षथाह्र्य.चर्ष.चश्चरथा.श्चरथाच्यापायथा प्रट.ट्रथा व्याम्ब्रुवाद्याः देव बेदायायवादि द्याप्यवाद्ये प्राप्तवा यर अ. तुर्वा च क्रा च र क्षु र पर दे र ने वा व क्षा र क्षा प्रते प्रते प्रते र क्षा प्रते । प्रते र वा व इ.ही. ५ थ. तर. शूर. लट्रा पश्च. प.इर. बच्च व.वी थ. थ. थेव. तर. ईव. বর্বান্তবান্ত্র বর্বান্তবান্ত্র বর্বান্তর বর্ব बर्दरक्षेट्र-र्रु-तुन् यः रे-मृत्रैकाग्रु-र्श्वेर-यक्ष-ग्रन्थ-श्रन्वकायः सुनःयक्ष क्रे.रंबरय.हीर.वेय.त.क्र्य.लूर.र्न्चय.ब.च.चया पहंब.रंवेरय.ब्रूर. अ·ळ्ळाग्रीः मुलः पॅतेः तस्त्रेवः यया अक्षंव हुषःग्रीः विनयः वदे नयः नरः वश्वरः चगायाः अस्यायाः उदः हिव क्षेत्रः ययः नृत्यः नृयं वियाः इद्ययः र्राम्बर् ध्रम्यान्मरया ब्रुरा ग्री विम ररा मैया ग्रया मार्ग्या क्रिया व्य- व्य- प्रते व व व र द स्राय है । ह् वाय प्रते य त्या मु य गुरा गुरा हुं व .... मर-नगत-न इराडिय-नर-५५ क्री ग्वय-क्रे-न्यर्याडिर्या या मह्मरा मृतिमा अवर म्इनि दु या राष्ट्र मिते स्ट व्याम् द या अक्षेत् यव ग्रे-क्ष-तन्दर्या शुःकुन्-वृषानने <u>- श्र</u>ीन-यादर्गेन्-श्रुन-यदे-नवयायाया श्रनः **र्**टा। ब्रिंट् इयवाया श्रुवया यह माधिट् त्याय हॅरवाया च्रेट् के वाव श्रुवा " मबेर्-र्युर-पहुन-य-र्नेय-य-र्र-। यद्य-पर्नेयय-ग्रुर-वे -प्रस्य-म्राके स्राम्रास्य म्राम्राम् स्राम्राम् स्राम्राम् स्राम्राम् स्राम्राम्

① (বর্ষার্থ্রেররে কুর্র্ন্ শ্রাহ্র 106-107)

कुलारवला" बेरायदे वदायरी क्रांस्यायद्रा छेवा छ क्रांच वला चेला यन् मूर-मेयन.लूर-भुव.हर-रंगेप.यधु.यहेब.पहुब रंगनायहूर हीया "न्तिर्यं झरर्यं न्यर व्यापर व्यार भ्राप्त । श्रारा व्याप्ति व्यार वर्षे राष्ट्र नै'स' इसरा न्या श्रुपरा सर्वे न' कुया निम्म स्था कर स्था है न'सर केंट्र सा मन् नायं केवायं ते नाव माहेवा हे । हरा हना मह या ग्रुषा पर । कु । मन् हा न्यं व निमात्र स्थानी केट व व में ट सा केव में र मव या कुं या ने या है । स्या शुमःपरःमहेदःदेः श्र्रंरःश्रेः विगःद्युदःदरः। र्धरः यहन यः केदः न्बेगला चे क्वं केवा वु कु व रा चे करा हुव केव या नरा चल्नायाति अयाचन ग्री नहें क्चान्त श्रीया न्दा श्री व श्री दें अया नन् शु. क्र्रं थ. क्र. पंजेर थ. शुव. श्रेर. विश्वय थी. प ट्रेर. श्रेष. येवय क्ष्त प ट्रेर. घर महेवा विश्वयावितानिबर्षितानिवर्षानिन्ति। हीराविन्याक्रमान्न दनदःवी क्रेन्ने नरुषा क्रेन्न न्यम इयषा क्रेन्से वित्ति वित ब्रक्षास्त्रम्याद्भव्यक्षाक्षाक्षात्रम् विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य मिया अर्थाययायम् क्रिंट् च मा भरामते हैं दिन। क्रें न सरकेट थे ক্রমারেই নতক্ষরিনকা ক্রুরি স্থা দ্বা "① করা নার্যান মা अंचयार्ट्र.यारव.२.५६८.५६व ब्रुवावयु.इ.थु.२. क्वितानया न्यण्डे'विन्ने'वर्वाराह्मायत्रामा वेताया ह्रन्वेर वर्षा नहरान-नरा वार्वास्तर तर्ने न्यू हैं दें से खर तक्षेत्र जेर ना यद

Ф (न्यूय.चब्रेट.च्यूर.चर्च.378)

नुदःमङ्गेः ह्र यः नह्युः चेद् ग्रीयः ग्रॉवः मजुदः चेः विवः रुदः द्ववः यः क्षेयः क्षेदः ः विचार्श्वर विकारी कि.रंशचा इसका हिर ज्या हिया छ वा नवा न्र वश्यानविद्वितासराव्यान्ते, विद्वान्तराव्यान्तान्ता विद्वान्ति विद्वान्ति । म्बर्सा परुषा श्री महिषा श्री मार्ची मिश्रा महिन् में म सु श्री व हिर्म र्र-कुर-वा वानवा सु-वा-नठवा-नवर-हेर-दे-वा-सर-मुर परीर-रे.च देहा बुरा यारवाता वया हूवा करा बिवर पावर विवाद हवा <u>२ब्र्याच्ययाञ्चरः ग्राउयाने छेदः करः प्राक्ररः रहियाञ्चेयाचेतारस्यः ।</u> चु'र्टा श्चर्'ह्यानुवाधिवायाः वेर्'रेयायाः वेः चेर्'चुदेः व्यवदः दर्दे वायः र्यतः नवरः क्षेप्रनातः **ञ्चेत्रः स्या**श्चनाय च्चे : क्र्रः ज्ञः वज्ञुन् : पर्यः वरः ख्वेरः : त्रिरः चः च र रा वे यः **कः न् न् यः** च वे वे र व्यु रः यः च हे न् ः यदे । व रः व विनः यद् करा नन्तरमवे सुराक्ष यर पर्चर हेना "र्ज्ञव मेर अर हेर है मॅंन् अग्रॅंब महेन न्मा मेंन् हुम त्या इंब प्रेन् बेन् संम्या न्म मठस निविद्यन्ति स्वराम् स्वराम् स्वराम् स्वराम् स्वराम् स्वराम् पवान्ता देरालवामवामद्रियाव्यामयाम् पान्ताम् म्यान्याम् अ तु अव कु राष्ट्री राष्ट्र स्था कु दारे प्रतार में ता वे ता विवास द ये व वे वा माव दरा म्। सरा पश्चिर त्र . त्र या पत्र महिता द्राया तक्षाता तु . तर्व ता पा र ट स्थ्र महिता व न्हेंदःन्वदःवह्दःत्तुन्द्वःपविवःवेनणःस्टःन्य देःतल्लालवः ल्लं न्व श्रूर वात् वृत्र ग्रंट चुट ह्वा ग्रे में दावा वर्षा वे के वर्ष वे .... नगद नश्चर र्रा श्चर स्राय स्रा

म्बर्य त लट. एक ब्र्ल. पर्ट. इव. वया. इव क्षाया वेट. उर. यहूं व क्षा तर. तथे. के बा के बा ब्र्ल. पर्ट. वया व क्षाया वेट. उर. यहूं व क्षा व्या. वेट. च्याया वेट. प्राय के क्षाया क्षाया वेट. पर्ट बा क्षाया क्षाया के प्राय क्षाया क्षाय क्षाया क्षाया क्षाया क्षाया क्षाया क्षाया क्षाया क्षाया क्षाया क्षाय क्षाया क्षाया क्षाय क्षाय

<sup>🛈 (</sup>न्यतः नवेदे : हुदः नहेन् : देन :

क्षयः वियानः ग्वरः। ५५ । वर् । वर् ग्वर वर वर्षे वरा हे म्ब्युरः श्वरः त्र के के देव में के निव्यास में में में निव्यास में से खेया त्रेवा न्दः हे ज्ञा अ क्ष तु विवयः हे न्द्रियः ततु यः न्दः ख यः न्वदः लु नः । । । । धु-वेब-सेब-मेथाम् बाना केष घष्या ठरा बहुब सराम्ट. वयानक्ष्यानदे न्यूयाक्षेव वेव पि क्यान स्याने इया ग्राप्ता ह क्रुणय राज्या देन स्र पायक्ष दार् या यहरा पार्य ता हिनाय दे हे दा यहे ता सुद्र-शुवाळवातायः श्रेवायर वहर्। " ा "वळा प्रतुद्र-द्रेवितायः या मॅर वल पह के व रव यें के न्र हे न्य या क्या महेलाय न्य र ग्री व .... मंचर क.क्टा रुब.मू.कुप्र. बेच.स्ट.चेट. चेट. ह्या. ख्र. क्याया पर्छेता. नः इवनः वर्षेत्र वर्षान्यस्यान्यः पर्वः सुरः सुरः नेरः देनः सुनः न्रा इ.थर्वाञ्च. ब.रेतल.पञ्चर.च्र्याञ्चेतया वैर्वा.तप्त. वे.सप्त.वे वे.सप्त. क्रवामयशास्त्राच्याच्यायक्राम्याच्याच्याच्या हे न्यायाक्रमा <u>लट. स्रम्थ. पश्चर. व्रेच. स.क. स्व. पी. लवी. में. सहला वया हा जलार मेरा....</u> ब्रिंदि में नव द्धेव दिवाय नेव हिंदि की या निवास के मान वेव-इव-तु-र्ने-स्व-र्वेन-तु-ध्वा वेनला नगला अरग्रास्ते-सुर-सुर-नैटः ठैरा खर : न्टः हं राज : न्या या सम्बद्ध र जा है रा ग्री रा महः के दः अक्षेत्र या या । . . . . मॅंद्राव्यानञ्जूत्यानदेरम्योत्राधिमान्द्राहेवाळवाह्यवासुत्याहे स्वेवाः मन्द्रतह्रवाह्न माहः ग्यान्दरन्त्रानः ह्रा ख्या चल्या ग्यान् याह्रवाहर **ञ्चायायळॅग्वयायहतायहॅयाग्री**खग्नेवायळॅवाग्रेन्ग्री-न्हेयायत्वा

① (बिस नगृव नहाम क्षेत्र स्वा क्षेत्र का क्षेत्र माना प्रता ३०५)

न्दः वरुषः भेरः वहत्यं लुः चः नवदः। "० वेषः न्दः। ने हेषः "मुत्यः य्याद्वन्यान्द्रहे न्नावा ब्राम्य विषया विषया विषया विषया विषया विषया त्रक्षेत्र अष्ट्रत्य वेयान्त्र या क्ष्याया सहस्य क्षया प्रत्य हेर् वेचरा वरा में राया केवा या यह या तस्त मवरा चरा यह केवा रेवा या .... द्धेते.द्वेचया.पञ्चामुः भूरः रूपया.चमायः यद्दैः मवदः विदः । यष्टः क्षेत्रः सक्रमः **र्**ट हे ज्ञ य इया गढ़ेया य इया प**रु** र पटा एव ग्रीया य **हे** य परि र सु । वृ । हेन्-भुन-ने-मन्द-भुन-सर्ना (प्रक-हेन-न्मु-प्रते-भ्रम्य-य-श्चन्-व्यय दर्देर वै'र्यॅव'वृ'यदर इया प्रु'र्नर क्षेत्र श्री के बारे राष्ट्र पार्य .... ब्रैश.पर्नुप्त ब्रैय पर्विर.चर.इंस्। ) पर्येय.सप्त.धेर.चेव्य.ग्री.धेय.स्ट. क्रवारिक में के ले म्हरा की में रहार क्रेवा में रामित मान वाम क्रिव में रहर बह्य तस्त् वह् न् कुरा हे निया ह्रें व केर के सी इते हि है निया **ঀৄ৾৾ৼ**৾য়ঢ়ৢ৾৽য়ঢ়৽ঀ৾ৼ৽ঀৼ৽ঀৼ৽ঀয়৽ড়৾৾ঀ৽ঢ়ড়৻৽ৠ৾ঀ৽ঢ়৽ড়ৼ৽য়ৼ৽ঢ়৽৽ न्दा वें बदावी वा अके हुदारु अन्दा क्षेत्र केनवा वहार वेनवा न्र-क्रव-द्रव-त्र-क्र-ब्र-विद्यान्य-विद्यान्य-हे-वि-वा-बक्षा-वयाः वृ.सु.चेर (श.) पर्वे बयासियाक्षीररानु विनया मृत्या श्रे वा यहरा स्ट्रा इन्डिन्, हु-ल्या रहें वा न्रिं या केन् रें या हे हा या यह ना या हु हैं न वु दे दे दर सु लेर केव य वु र दे लेव येवव पर । हे व वक दे दे र सु व्यक्षः सक्ष्यः मृत्रेक्षः वृत्रः वृत्रः मृत्रः मृत्रः मृत्रः मृत्रः स्व

① (शुदु:नगृद:नशुद:पतुव:न्रोन्य:पव:न्द:देवे:मृन्यद्व:306)

चक्रसःहेदःदश्चेतःत्रेषक्रःभेटःश्वःधेरःकेदःयं गृत्वःदटःश्चेत्दर्यः शुद्रःः विषालु न यहं न दे वषा बेंदा यदे नगृत नविष नु हे हा या यळ गावण विनया है। वियाने। निःकेन स्वार्यः के हीन स्वारी हैं नया समया उन् र् . स्वयं वया नेया प्रह्म वर्ष र . कुरा । र्या ग्रीया प्राप्त के बरा प्रविषया सिपारी.कुरं पश्चित्रवाहर्रातपुरप्या. वियाक्षेत्र सूपुरवाञ्चयावरारी सिवा.... न्नेन्या प्रक्रिक् म्बर्या कर्ना अद्वित या न्रा हे मि वा न्रा के ज्ञा <u> हु ग'स' र्स्रग्रा' हु ग्रुट, इबका ल'ह , ग्रुल, हु ग्रुट, हु ग्रुट, ग्र</u> बहर्। धुःवेदः नवयागुः सः मेरः यः पर् गः यः केदः यः प्राः भेतः सुदः मूर ह्राच्या त्रि.कुच.अकूच जाचक्चेच.चिबेया.परीजान.चेचर.श्रेचया. ·····व्राम्यान्त्र व्यास्त्र व्याप्त व रा.परीयाना बोबरा। बोब्याहा चाबुबा श्रेचका ब्रीटा अपुर च बोबा परी हुटे. हु. न्तुद्रात्रं नत्त्र दुते सु थेर केत्र यदि विषा प्रकेत केर हे ते थेपरा प ञ्चन्यायत्रेतायम्भवात्रायानेवानुः सवा दयायायारायाराञ्चानुः 東山·畠·ය如・栗山・倉下・ヨイ・ロ湖ロロ・日・山本・名下・一 ひてか・勇 かっか・ 乗り・ तर्ने मु सक्र मेर वर पाम के के बिरा देन वया मेप रीन में प्रायन देवाया क्षेट्रची-र्न् व व्यव्यतः ठर्-छेट्-र्नेवानय। प्रट-श्रमयः बेट्-पर्व-स्र्मयः रेयारेयाचेन् मदे स्निन्यान् प्राप्ता न प्रायान्यारे 됩고.교도. बर्ह्मन् व्यवन्त्रा के वार्ष्या वार्या वार्ष्या वार्या वार्या वार्ष्या वार्या वार्य नक्रुन्-ग्री-दर्शेषानानवराम्, रेयान्य-श्रिवानपुर्धान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्तान्य-प्राप्तान्य-प्राप्तान्य-प्त वर्ष्यानका देर्'व्याञ्च या केर् त्या क्रें कर माव अदाय है । क्रु वि

देन वयास्य वं ने की वया अने की ने या क्षया के ने वया क्षया विष्य हैं ´ঽৄ৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾৾৻য়৻ড়ৢ৾ঽ৴য়ঢ়ৣড়ৢঢ়৻৸৻য়৾ৼ৻৸য়ৢয়৻৸য়ৢয়৸য়৻য়৻ঢ়ৢঢ় वतर उर यें शे तर् व केंग ग्री न ह वास से इस वर मुं में व हुया व रहे च**८.२.५५०**४.५४.५५.७९४.४९५५ मी.श्.२८८.२८५ मा.स्वा.इ.घ.स.... वर्षा रे देर महत अर सुव शुया ळ म्या परि हेव यळ र प्रव महिषा म्बर्र-लयःक्षेत्रवह्म्बर्याण्चेयायह्यान्चर्यात्रीः वाच्यायाः क्ष्राम्दः स क्रेव-यं वया इ.१८.ज.वेनथ.च ६४.परीज.च.च ४८.चर.वे बंधा.च. नैव-तु-दर्शना-हिरा। मदय ग्रील-तर-हेव-दर्शल-नैव-तु-येगल-पर-म्राज्याक्रय त्र्या है होराया श्वे बाया र्राप्ता क्षेत्री सरार्गीया इराम्याया श्रीया शाम्य माय द्वा वि. प्राप्त या स्तर्भा स्तर्भा स्तर्भा स्तर्भा स्तर्भा स्तर्भा स्तर्भा स्तर्भा गुरु व व व य अ भेवा व दे दिवाया ठ र व केंद्र य व द व व व वे व ही व व व <u> पश्चेत् क्ष्या संस्था श्वराया स्वराय स</u>्वराय यात्री त्रावयात्र्या विषयात् । त्र्या प्रदे ह्रणया शु अरापया भेवातः र्ने।"®वेषःनवायायत्तुनः केरः। नवदः धरः नेतेः तुषः ग्रीः वर्द्धरः ने वः स्र्रेरः ला "अनल भेन में र अ के व से ल भ के व अकेन नर हे ज्ञ अ न हे ल तस्याया श्राया ग्री में याया बोदा राष्ट्रीया या होदा या होता रहा वा ही दारा पर राष्ट्र र

मदे. विवय इया क्रवाया न कर् विवा होया यहार नर् पर्या विवय क्राया विवय है रहा मान लॅ'य नवरान ह्व'अ'न्य पर्या चुन्नु'न झ्वर्याप'यर्ह्ना हेरानवितेः वैद स¥र्रॉदरम्थेर व्याक्ष्रम्य स्वर्ग्य या में दरकेद म्वर्राय रूरा विरास् वस्य पत्तरा नेवाप द्वित देरातकरा ठवा श्री स्रामारा छेरा स्रामा नेवाया परा न्म केष वाष्ट्रवा सेन्या पाइवाव शुःहे नि या केर् गुरा हे व नि येन्या पा बर्दरा हेर-दुन नै हेर्न भक्त हेर्न से के से कि स्थर महिन्या यास्या भ्रवता है निय अक्रवा ग्रीट रेट हें दा द्वा क्रवा राया मान केंद्र देव रें केंत्र द्वाद स्व दे प्रमु अदे प्रमु तिर प्रकृत्य प्रदर म् त्र व धः नवरः। वेरः न्सुदेः वेवः हुः सुः चेदेः न्सुः नहिरः यः निरः यः केवः धः न्दः न्यं वः यहं नः ने 'हु ग' छु 'धि सं सं स्थे व 'ध' मवह । के वा महा या छी हो व म्राच्यान्यक्ष्याः अक्याः अप्तानुः स्तान्तः विष्याः वि म्पुरम्बरम् चेर्ट्स्यया इ.च.कर्ट्स्यूयया हे व्याप्त के क्रिया मुख वयः गः पत्रे वः स्रवः द्वा पत् वा वा वा वा दिन् दिनः स्राधिनः पी । वा पत्र वा परीयानामवदा क्रयारी मानुवानी केवारा निवासी वार्ता क्रया यदे अर्मेद रु अर्केर : ऑद : मृद्रेश रूर : हे : ह्व : वा वा कें मृ से पर्या द या केव-रेव-प्र-केय-पर्न-श्रव-प्रव-त्पर-य-राजायाम्याप्य-मेर-नेय-----नहें र यह र । र में वर के र न ग र ने वर हुं वर ये र वर र विनर क्षा वर शे के या हु या लेव-स्वाय-वाद्र-वी-चर्या-नेया-क्षेत्र-त्र-क्षेत्र-पर्द्ववय-क्षेत्र। मह-क्षेत्र-**२ेक्:यॅॱळे**वेॱगुॱॺॕॖ*ॸ्ॱॺॺ*ॱॸॖॱयःनबरॱनॱवेगॱॸ्रः छरॱढ़ड़ॆक़ॱॸ्गेॱॸॹॕॺःॱ **र्वम्यार म्ब्या अल्ला हे ज्ञा अञ्चर्या या ब्राह्म र वर्षा नाम र वे नरा राज विद** 

प्राकेत रेवार्य केराक्ष्य प्रमास मान्य न्वयःश्चीः क्षः क्षारः यः नन्ना यं क्षेत्रः यः न्तुरः यः नन्त्रः कुरः वेनता पदेः … न्या भैता वि स्वा वि स्वा वी श्व थेर क्षेत्र वे पर्रा न हुत वनवा न ह त ..... परीता बीरा इ.श. शक्या किरान के बार्य से साम है में साम के वित्ता के परीता क **ब**दे.चलु ग्राम् वर्षाः शुः हो वा सः हो रः यह के दे व सके ग्रामें रः सरः सहतः वस्र भ्रवता ममल करा है है है। मा केर हिन है ने विवया या नवर हैरा। दे 'द्या' वी 'श्रवता बॅद्र' खंदै व ग्राच ह 'के व 'देव' चें 'के 'य वे अपूर्ट 'व्रा बादी-चर-दर्दे की-बा-चत्त्र त्रान्ता हे न्ना वा न नेवा हर ही वादी तम्मा य**र.री.स्था**याचे बाबाताचे बेबा बाबा क्या प्रत्या के बेचा स्वर्धा निवासी के वास वि ब्रेन्-य-पङ्गला यह के ब्राह्म बार्च व व हि व य के व य य <u>र्चरतः ब्राट्यक्रेवः र्रेतः कुलःश्चर्णेः बर्दरः यः नवयः ग्रेतः श्चरः हरः।</u> भ्र.क. पदः य स्वायः पर्ह्नः ययः पर्द्ययः है । वश्यः प्रवायः प्रवायः । पदिः क्षं वयावनयाम् वःश्री मने वः क्षेत्रास्यामः न्दा वेदः यः केवः यॅरा'च मृतः अवः त्रच र्रेटः कुं 'के'चः कॅरः सुतेः र्रे 'मृत्यः यदीवः क्षुवाः यरः · · · · पञ्चलाम क्यराहे न्ना यक्ष्य वरायक्रेंद्र ऑवर रॉ. रॉ. याम श्चरावरा हेवा है... त्त्यावः मवदः। क्र्यानबिराग्नी क्रेयाम मिर्मा मिराम न्तुरः अर्क्षेन् : प्रवानितः विद्यायायरः हे न्नु : या अर्क्षेन् गुरावेवया केया न्द्रु 'न्युवःग्री'त्युर्यःश्र्रः न्द्रेयः न्दिरे नेद्रा----प्राक्रेदः वर्डेन् न्द्रः *इतातुः बॅटा बाळे वा ये रा बाह्या न स्वता चारा के किया* र्षेम्यान्यम्य पहन् वाल्या यहेवा ग्री देवाया म्वरा वे वाय हार ग्री

**े व मॅ**८ व्याप्त स्ट केव रेव से केर स्ट से अक्रें मार मार से वे के र्यहः .... न्यवान्वेषाः सर्मान्याः न्युरान्यम् द्रान्यः न्ये न्ये न्ये न्ये न्यायः न्यायः न्यायः न्यायः न्यायः न्यायः न्य ्र अया हे ज्ञा य अळ्या वया र्या अप ५ दि प श्चर हे चें र अदे अद र दिया नः गवरः। दे वयान व केवा बक्ष्या कुयानन केवा ये छेर द किनया च श्रीरः के. च.वं। इ. श्राच ववा. वया ग्री. ईव या ग्रे. इट. रे. श्रवा श्रे चया वव प्रक्रित्रेत्र्यं क्रिते सेम्याम्युत्रः स्र्वाम् नेत्रः क्रितः मे स्र महेंद्राचा नवदा। हा च न्सु सदी छे ला महिना नी हो कर से हार छे कर यदि हो पर्नाया भाराष्ट्रा बेराचेनया मायाहे ही या बळ्या वया बहाय पहें बया ही । **ब्र**च.क्र्य.सुर क्रे. 'शिर.सुर.क्रिय.त.चेबर.। क्रुय.चेश्चरके. क्रेव्यक्रवान्दरहे न्नायायवाहरी क्षार्टर दुः धेनवायाया विदाववानुवा नःवयरा ठन् यद्वि व पर रङ्के या क्युंदे तहत राजा रोजर की तक मानि क्युं य्याद्वे न्यान के व्यापक के विषय वार्षे व वर्षे प्रवि व वर्षे प्रवि व <u>ই র অঅইল ব্রাইন স্ন্তীর দের্লার দিচ ইর বি ইর ইর ইর স্বর্ণ</u> त्तुत्। त्रं व्राः व बक्षवास्यकारुन् सार्कराया सेन्या महास्वास्यकारुन् सिस्या म्बेन्याक्षराधेन्यायायाहे न्यायाळे ना गुराक्षरा नु बह्नम् व्यापक केव मध्यय ठन बहुव परा कुल में केव में दिन क्व शु वियाया श्रेर् या व व र र र वी र व र र व ते र व र र वी व र व ह व र य व ह व र र र व वहें क्षे न्दा क्षायर हे केर वा बार क्षाय केर न्दाय निकास हम्बराश्च क्रेन् अंता अवा भी क्षे वरा गुव कु ही वा उरता है निया पहें न नरा विन समयानु मान्य मान्य मान्य वा क्षेत्र क्या न सम्मान्य वा

ग्वैतः इंद. दुत्रः भेगः द्रायः सुग्यः पञ्चे : ग्वैः द्वेयः यः त्रवः सं : स्र-्यः - · · यश्चर्त्त, शुरायार्ट्र वळत्र के ह्वायार्थ्यातालु पा सह न के दूर केया व्याक्षंत्रः वेनवायदेः ययः तुःन् । वृत्वो न् में वः यः हें । वेदः चै । चु । वतः वेनव मला न्मॅब ने दे ते वि तुरा हू र हु निरास में के त्या निव हु सावकारा विवा सन् राला मक के न बहू न वया से मार्टा परी लायपुर श्रेर स्वाया अर्. *ॱ*ॾॕॖॺऻॺॱॻॖऀॱॸॱॺऻढ़ॱॺढ़ॱख़ढ़ॱख़॔ढ़ऀॱॻॱॺढ़ढ़ढ़ऀॱॿऻढ़ढ़ॱख़ॱढ़ढ़ॱऻढ़ॗॱॷॸॱॿ<mark>ॏॺॱ</mark> दे सामान ह्राया अर वियान इवाया है है या वा अक्षा विया में हैं यह र नय। नि कुरि ने दें नि या व्या दें नि ता न इनिया न हिं । यह री नया मूर. स विवाय र्गे यानय रे. चर. मे. याक ब. वु. वुयान यस न में य श्चिमान्यवान्तीः संस्थानम्यान्तेवा न्यान्यान्याः स्वाप्तान्याः स्वाप्तान्याः स्वाप्तान्याः स्वाप्तान्याः स्वाप पञ्जाता न व ताः शु 'थे परा पर रहे 'हा 'अ' अळ न 'व ता हु र 'न शं ता है दे ' नगीरामे.कु.च.परीयाना अह्री क्र्यार्चीयु.कुवाचरा गायु.मुर्स्या तु यह के व अळे ग नद में द या यह या यह या यह न यह वे स ग हिन हे न बाबक्रम् नागुम् स्थित्वा यहु म् नेवान्त्रवा नेवा ग्री पर प्र केवा अक्ष मार्था चराकेवा परि वरामी मेरा अरी पत् मारा माव या स्वया """ न्दा उत्तन्त्रहें निर्देश्वायर संग्राय के प्रदायर में क्रायर शु वेनता यन्दा दे द्वास्व सुदु न्व नु सळे छेद में या शु छेद में सळ र ठवः यान विज्ञायः वर्षा वर्षा रामा १ ६८ : भवः ( इवः ) ग्री : क्षार्रः क्षयाशु भेगरा मा नक्याया हे न्त्रा अक्षया गुमा हे न र वे परा न या

क्षे'मिट् इययाची सं कुषान्द्र क्षेत्र क्षाची 'व्या सर्व दायदे पर्मे न् यं इयस नर्ने केष्य अक्षेत्र व्याप्तव वाचत क्षेत्र ना न क्षुता नया हे न् वा वाक्षेत्र । मी बुगला केंद्राया चुरा श्रद्धा केंद्रा महिना मी ज़ेद्दा है। विदासे दार प्रदेश प्र ळेदः वयरा उर् : अही दः यः यरा मार्केर् ग्री : व्रु क्यू ग्रीयः दर्गे न रा। বপ্ত,নধু.জ্ঞ্ম. नदे सं न्यर है। बेंद स् केंद्र सं न्दर प ह केंद्र स्वयं कर वहि द सं निद्दर तह्रवःतप्रःक्षृवःक्रःकवःमः तःहः न्नः वः वळवाः ग्रुटः ये न रा। न गायान के के बार्क मार्क स्वराय देश है अप अया गाया सरी न रान्या है *ढ़*ेते हे **ब**्दर्रे कुषाये व्रार्थ अप्तावि यहें ब्रायहर् प्राये से ख़हा धेवा यहा म्बर्धियानी श्रेर्मा म्बर्शियर पर्ति है कि त्यात मुन्ति मित्र मित्र म्बर्ध्या अर्प्या अर्थे र रे त्राचा व्यापा व न्यायाङ्ग्यान्तेषायाञ्चरान्ये वेत्रायते न्वेन्यायाययाय त्रीयः न्वर म्राज्यक्रवात्रात्रक्ष्यायायक्ष्यायह्रवात्रात्रक्षात्रात्रात्र्या चलेयःसदेःरटः हेर्गयः झलः अर्-रुं पङ्गयः सः वेर्-र्ना ..... छरा च कुर्-र कु *ऀ*9ेव्:र्जव:२व:हॅ:पॅदे:बतुव:तु:बॅ८:ब्राक्टेव:यॅ:*न्द:५३*:केव:देव:यॅ:के**ः हे** न्नु या प रुषा क्षेत्र कुषा दें ला श्रु व त्य दे व त्यु षा मार्थिया थित कुषा परा यहं न् <del>ৡ৴৻ৢ৴ৢ৴য়ড়ৢ৴৻৸ৢৡ৴</del>৽৸ৡ৵৻৸৻ৠ৾৾৾৸ৼ৾৽৻য়ৢ৾৾৾ঢ়৻৸ৢয়ৢ৾৾য়ৢ৻৸য়৾৽য়ৢ৾৾য়৻৸য়ৼ৾৾ৼৢ 

हु क्ष्याक्षेत्र म् नर्नाया स्थान्या प्याप्त स्थान्या स्या स्थान्या स्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्था स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्था

क्यं ग्री. र्र्ट्र प्राचित श्वर प्राचे द्वर प्राचे द्वर प्राचे द्वर प्राचे हि त्वर श्वर प्राचे प्रा

① (बिंदी.चर्गवे.की.चेशीर.पर्चिश्व.धीचेथ.चश्चरंट.सूप्च.सूचे.बिंट्य.

ब्रदास विवा नविदाकु र्यदाब्रीता दासे देरानाता देर से स्वा के स्वा की स्वा रुतर निष्य के निवर प्रायमित ले सालु र नियम द्वा प्रमाद स्था है इराश्चरत्रा केयान्य्याष्ट्रना इयायया नरा न्युर्याया ने स्राह्या सर देर दे। देर वयालु चुरा यह या परि द्वरण में राया के वर्षे दे पर्वेर्-पःक्रॅंट-कुदे-यय-र्नेव-इ-प-क्रे-रेग्व-इयय-हंर-प-य-प्ययय-···· वया र.५य.श्र.इर.ग्रे.क्.प.२.वयानाया नववायाच्या र.हे.ह. *ॱ*झेर-म्बु*र्*यन्य-प्रवे**व**-दशुच-पर्दे श्चॅब्-५5ुव-म्बॅयन्दरे पर्यः महाद्वालु बेयायेनया महाळेदाह्यया उन् यष्ठिताया झावदा रोता सेता न व्यापा मवयाश्चित्रयावयाश्चर हेययापर हिलापवियापया हे नियायक्रमा श्चिन द्रा अन् ने जून स्वयः वयः अनः सः यः ने ते ने ने वा स्वयः स्वयः स.पध्य.मञ्जायायाया समा.स.धयातयाने . व्या.क.नेयाहे . परामी. विषयानभुर्-रदःग्रहःकः नया नह्नवःगः नदः वर्षे नदः नयः न म्बर्म क्षेत्रेवाम्राकेवाम्रावेषयाव्याम्बन्याः हेन्या विनला मृहः केवा व्यवस्य रूप् मिष्ठेवा मिष्ठा मिष्ठ मिष्ठा मिष्ठ में मिष्ठा मिष्ठ में मिष्ठा मिष्ठ में मिष् नेव मदे न् न म नेव नेव न विवास निवय है मिन् नु विवया .....ने नव कॅराज्ञापञ्च गर्देगापदे केंद्राम्केगामी के ज्ञादा अपना होता दि वार्ष्या । । मुद्र-पस्दर्भिते-र्धायायाँद्र-पित्र-पित्र-प्रमुद् कुलान दिन द्रमा अर् थे सुगल गर गरेगल पति सुलान हुत्। रे **२ थ.इन.** नेलून.न. बट. श. बबया. बट. शे. ८ व. शे. थ. ८ में थे. ४ म

द्विन्याशु भर् सेन्या हे हा सामक्रिया सार् राजा हा स द स सार ध्रमाम्यम ब्रान्। अन्तर्रात्रे मं करावस्यानु नम् रायदे शे ब्र इययः यह्र दुरः। विवयः र या वययः यहे पयः ग्रीः देयः प र । व्रीयः श्च- श्चित्राची म्यूर्या स्ट्रेयया पठया क्याया नवर हो श्वना यह र न्द व्रारंभान्यं व्रारंभावा श्रु यातु वा व्रारं स्वरंभाय वेवावा नार्वे निरं विषा हर्दानम्ब देवानकृषा ..... ख्वायाम् इता मुनेयापरे केवानकृ म्बेर्यायाम् केवा वयर्या उत् यहिवा यदी म्रोतः मृत्रा देवा ये के प्र हु - ब्रुव महेव मिर्द भेवरा क्रुयाय केट क्रि. ए. दे . हुं व वर्षा क्रु. म्तुरःधेर् पहित्रक्रिंरपुः क्षेर्यं रामलु म्रायाये अक्रिं हेत्रायायः \*\*\*\* न मन्या न दिल ग्री : अड्राया न करा खेला है। यदा श्री ह्यू मा स्वीत श्री मा स्वीत हे न भुव न मृत्र म् त्रा हिन सेनवा क्षा "ा वेवा गवाया पत्ना हू" लपु.चि.य.चचीर.तपु इयाघर.लय.पविर.त.सेर। "त्र क्रियवया ठन् अधिव परि सु नि म ने व में किर अक्षेत् तस्य पर्म तसे या ति । पर-पशु-पर-सुद-हॅब-हॅब-प-र्दा वर्ग्व-विकेर-छेदल-पा "® यूर्वयः छ्टं यहूरः यश्चरयः यः यः वर्षः श्रे.वर्धरः लर्षः वर्षः रे.वर्षेत्रः श्रम्या सक्रम् तत्वा प्रम्त सुनाय श्रम् श्रम् न्या सन्य प्रमा तत्वा प्रमा निम्म गवर अहर पत्ना

4. मॅंद'सम'दू'यदे'त्व'स'वतुद्'य'हम'वेद'गहेम'ति'वद्

 <sup>(</sup>धिंख. न ग्रैंब. चेश्वर. पर्धंत श्रेंचा श्र

<sup>314-316)</sup> 

<sup>(</sup>यहं अन्नि: सहयः कुन् मृन् । श्राह्म । 120)

द्य-र्वन्व्यात्रः वार्वः देश्येष्यः श्रीत् श्रीतः श्रीतः वार्वः स्ति । व्याप्तनः तुः वेवसः वा

ञ्चनलान्नरार्द्रराच्च द्वा द्वा देवे के लान्डेना हैन। "झ न्रापठलापदे द्वा मशियायम्य में प्रधित क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रधित क्षेत्र प्रधित क्षेत्र प्रधित क्षेत्र प्रधित क्षेत्र प्रधित न्बे भेग्य ग्रीय बर्क प्रदे विषय स्टर्म मिन् ..... वि के बेद प्रदे प्रदे विषय है : मब्ली : संग्राय गर्व : सामाह्य स्त्री : स्वार्थ : मर्वे व : स्वार्थ : स्वार्य : स्वार्थ : स्वार्य : स्वार्य : स्वार्थ : स्वार्य : स्वार्य : स्वार्य : स्वार्य : स्वार्य : स्वार्थ : स्वार्य : स विष वी:मु:श्रुयः वरुतः तथवात धरी: द्वी: यतु व: रव: तु: अद: वा अतः यः हैंदार्पूराश्चराश्चायाकान। श्चास्यायाचेदाक्वायदे। द्वायाद्वाद्वा **ळेवॱय़ॅॱ**ख़॒ॹॱॺळॅवॱॸ्धढ़ॱढ़ॏॸॱॸॻॖॏख़ॱळेॱॸय़ऀॱॸय़ॱॱॸॕय़ऀॱळॅॴॹॱॸॗॱॴ नववाग्री क्षेत्र्राप्त अपिता मेला मु र दे र र पव सहे राधा द मे व तर्या केव-सं-म्द-पर्वे बेथ-लबा-पर्वे या-पर्वे या-पर्वे निव्य पर्वे बे न्मता इर राज्य मा द्वा प्राप्त राज्य हिम्बर स्वार मा स्वर मा स इ.पर्यायकूर्यं रेवरं तरः तर् हैं। यू तर्रे वित्र वित्र पर्या पर्या वित्र वि न्त्रा नगरायत्यार्ञ् अराक् विष्ट्रात्यायाय्याय विष्ट्रात्या र्दा लयाया हुर है पत्री हैं दें। हैं में व लेव के हैं द्वा त्वरः इयतः क्षेण्या है। क्षेत्रा ग्री दिरः वता वश्चरः नः वहवा न् घरता म्रॅंट.अ.क्य.त्र.च्ये.च्ये.च्ये.चर्ये.चर.वहेचय.त.च्ये.चर.चर्यः

इत्याग्रेदिय पश्चम्यायाया ...... इंदि तकदात्रायदे न्या विदा दाक भु न यर स्व। वर् म्याय ग्री क्या मवाया ठ न मुग्य ग्री मु वर्षे र छ्वा यावै यव परे दे साम केवारी ध्वा वित् यर भूगु सुन पदे प्रमुव पदे क्केट.त्र.खे.पुर.की.५८८.खेबाय.ज.चायय.चेट.५्व.इ त्रया.केट.ज्राचय.तर.. हॅमल: पर: शुरा वेसल: ठव: घसल: ठट तः त्रें : वे: देर: येट: य: तु 'से. तुरारश्चरण वारवामा इवया या नेवामा समामा स्वर्धिताने श्चित विषयः ग्रै : सुग्वारः श्वार प्राथवा । इं हे : तकरः हु : ति दे : ता से दा अ र्रः १५ वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे के किया वर्षे वर्षे के किया वर्षे वर्षे के किया वर्षे वर्षे के वर वर्षे के व रुन् ग्रे 'स' अदे 'न में न्य य' न्न अहु व यर ग्रुरा है' अ'हु म' क्वें नय ग्रे' रोबरा ठद हबरा ठट पद रारे था न में दा किय ही द महिरा ही रादमा र्दर-ई-ड्र-तकर-दू-त्वते न्न-अहिन् न्वर-वश्चर-ग्नेर्य-वर्षन्यर-दू-" न्नः वः कृ. **मू**र्य श्व. ह्. यत्र श्राप्तयः त्र. त्रः। मूब. क्रव. मु. मूब. क्रव. मु. मूब. क्रव. मु. मूब. क्रव. मु. बरन्यायदे नेहरा न्येर बरावरु द ह स्वामुनायदे हर सेवा वह **पर्व**्यादहतः सन्दर्भ मुकेरः सुदः ( ) यसः सुदः पर्वः स्वयः ग्री म्बर्भाया म्यान्य न्यान्य न्याप्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्याप्य प्याप्य प्या মুদ্রা থাদ্র-মুঞ্ নাজী নজুব না মুঞ্জ না ন্দ্রা প্রথা হব বিষ্ণা নাই क्किन् प्यापने न्या प्रमान के स्वापन के स इर.ज्ञच.त्य.चेंच्ट.च्यूय.ग्री.पहत.य.चड्डी मे.ज्य च्रं.ल्या.चरुय. भूरः रेग्यायवि ' भवः श्रुरः नदैः नग्यादः धेगः न्म्रें रयः रेवः न्दः। <u>२ वे 'नदे 'वेट' वे 'जुल' २ नद्र रा ह्रेट' वे 'जुल' नहूद' ॲटरा ग्रे 'नद्र व' पॅ</u>

विवाय करा अधिवाय में हि प्रकट हु यदि न्न अदि वया मा विवाद विदः स बर्वान तर्देव महोराष्ट्री स्थान तस्ति या केवारी निश्च ता निर्मा पहन दर न्या अर मारा अर्घन में पा भेर अरे न स्वा असुता श्च-वाश्चरः भ्वे वाया हे दः स्वाया क्रयः न्दा वाया स्वी न् च्या या र्यम्यानिस्यानी स्त्री म्यानिस्यानी स्वर्धा क्रियानी स्वर्धा क्रियानी स्वर्धा क्रियानी स्वर्धा क्रियानी स्वर्ध ञ्चरा वराने ने यान्या सेनाया सेनाया सेनाय त्वावायाः स्थानः इत्ययाः मन्याः वीतः मन्याः वीतः विवायायाः मन्याः । अनवारेरार्वातावि नम्बार्देवार्यायात्र्रात्राण्या "तर्रात्रा म्राज्य विष्युम् विष्युम् विषयः विषय बाक्रवार्यकाळ्याचीन् मानेकास्य मी मन्यार्यन मिन्यार्थन मान्यार ह्र ग्रायः तहरः ता ग्रोतः श्रवः देवः चे के निकुषः निवे तो व्यापन् ता साम्या । स्व बर्द्धवःद्वशःश्चवःतवःत्रः नद्वतःश्चेतः दिः वितः दः यः स्वराष्ट्रं श्वरः द्वरः द्वरः वितः लर. ट्यानश्चर म्या वाइय. छर. विषया पहें व. ये. झं या अहेता शे. <u> पश्चित्र, क्षेत्र, पठ्य, ग्रेश, क्षेत्र, पश्चित, पर्वत, पश्चर, पश्चित, पश्च</u> रे'र्पेर्'पदे'सुअर्य'म्शुअ'र्रः। कु'र्रुत्य'से'केव्'म्रेके त्य'स्र्रः क्र्यान्त्रेया चत्रराम्याधानानुत्रा .....चरुयायस्याभागवानुः व्ययः महवान्यां वार्षा त्दैरःवैवःर्वयःद्देवःद्वेषःदेवःवै। "वदःग्रैःशेदःदेवः कुवःरवषः" "ब्रायायक्ष्याययवानस्यायुनः धरः बेर'मदे'नेम'नेदे'**न्**र'|

① (বর্ষাস্থ্র-অধ্ব-শ্রুবার্শ্নাস্থ্র-118-120)

②(५नव.नवेवे.वृद्ग्नह्न्-देन-देव.428—429)

महेवा वर्ष्ट्रता इन्ते श्रुवा वर्षा वर्षा वर्षा या वर्षा या वर्षा या वर्षा वरम वर्षा वरम वर्षा वर्या व ञ्च द्व न प्रते छ ता नहेन हेन जुल द्वर यह न न तरा सम् न न तरा सम तरा वुग्याप्तम् वार्यवेषाम् वरायह्री "ा द्रार्या राष्ट्रीयायक्ष्या "दे । দেব শে ই অ অম ক্লিব শে ব অ অ শ দ ব ক্লিব ব অ অ <u> ব্যুশ কথা</u> मानमः भेरः शुनः पर्वः न् नरः श्वुना नगायः क्षेत्रः भेरा सुन्यः सक्ष्यः नन् दः \*\*\* हमान्तिवायाः यहं र किरा वे किरावयाः व किरावयाः व किरावयाः व विषयः पवितः पवेषः पदेः सेष्यः पद्धः सः स्वादः स्वादः महितः। महोतः ब्रद्भानतुत्र-कु-लक्षायुन-मद्भे-मद्भाना-मकु-मतुत्र-ल-सहत्रक्षे-किन्न-----बुनः क्षुन्यायळॅना तु र्ने नदे बिर्ने कुलार् नरा सहर कुला नह्न ना ॲ८तः ≹ग्तारी प्रत्गार्थे म्बबता उन् विवित्या में हे तकटातू प्रते न्ना वा त्तुमालु विदेशी क्षान्या मुद्रान्य विद्या "@ देवा विदेश विदे वयानेनवारत्त्राञ्चे वारम्पानम् तार्वे त्राव्याचे वारत्तु नायरायहेवाहू " यते प्रकृत् प्रते द्वा वर दे 'अष म्रेष्ठ अप क्रिक् दे ते 'धेम् दे न्या द्वा प्रहे' पहुर हिन परे वे केन हैं दिस्य मा सम्बन्ध मा

स्राम्यः क्रिक् स्राम्य स्राम

②("ব্ ট্র ব্র ক্র্ড্র ব্রক্তর ব্রব্জ ব্রব্জ

हुब.च्डुका श्र.त्रहृत ह्.लब्य ज.बीट.बु.क्र.च्.च्डेक.चट.जुब्य श्रेय. नवरः। "७ देषः नरः धरः ज्ञान्य प्रक्षान्य स्टि केषा वर्षे व वि श्चित्राप्तरः (हे दुराञ्चः पत्ररासुन स्वायाया नेरः) या के बुः वायन पेतर **ॾ्र**-ल्र-ब्रेनजः सर-लेग्नजः ततुल। रगः हॅनः गृहेराः लः हॅगः ह्यं र वर्रे र वरः **नञ्जूलः नर्दः अहलः बुरा सेग्वाः श्रुरा नगरः देवः नश्चरा । " ७ वेरा ग्राया** नःनडलः श्रन्यः ने रः में रः अक्वासरामेवातू । यदे हा अदे अहे र गडेवाराः वि.स्.चेष्यात्तराष्ट्रास्.क्षरं चवराच्याक्षराश्चरःश्चराचरः बर्चव मुव प्रंट रे पठरव व पर। यन विव व मुर्ट ह्वया वव रहः रॅॅं **व**ृञ्चराष्ट्रं गताग्रीराम्बुरार्ने दायाय**बुरार्ने रायतार्गे** अर्ज्ञदास्र दारा हैनयाश्वर लटा श्वर श्वर पश्चर पश्चर ३ र में या श्वर पा साम हे या शु तृ 'यदे न्न अदे सुदे हे दे नवा नवा नवु र दें व त्या हे नहें नवा है के स्वा यदे . निव्यायन्त्राम् अन्ति । व्यास्ति । **वै**ॱभ्रम्यः ने ये मायः भ्रांतः संग् भवासः न्दः भ्रांतः सविधासः भेरः अयः ः ः ঢ়ৢ৾ঀ৾৾৾৴৴৴৾৾ रमात्राया व्यायक्रमान्याग्रमानेता क्रिया मूर्याया म्याया विदाय धेव ही।

श्ची स्वाप्त स्वाप्त

①② (বর্লার্লারররে কুর র্নার্ম নাথে)

म्दार्थां कर सिन्द्र में स्त्र में

सं त्रेर राम्यातः श्रुंद गाउँ 'सं 'हेर 'हेर 'हें 'खंद 'यहे 'ह 'खब तम्द '''' न्मॅर्यालु व्वराद् पायदे तस्या के वावे के नया हा यह प्राया वया ... *ञ्चरता* प्रस्तरा श्री ग्रह्म दाया दिरा हिनाय है । त्या श्रीया श्रीया की स् र्म्तरवि वि चुराना वहूर्य दि वहार्विर विषा "र्क्व व वहार बहून विनय हे रुव कुया विष्य हून हून हून है या है न र विवाद में या पर *नर्ॱक्रॅब्यबर्न्यः भेव*न्दर्*ग्यायाने वाचाना* सञ्जवः ग्रीः यवाद्यास्य *व्याग्रुद्दः नेद्रः नुष्या*ग्री<sup>\*</sup>श्री **ळे** 'नेद्रः सुद्दः र्क्नेय्यप्यदे र ळे ' ळं न् ग्री ' ळें न् र य य . . . . . र्यर-क्षेत्रया **अ.ज्.४८-लर-थ.क्ष्र-१८-५४४-ल्र**-क्ष-४४-४४४-४४४ य.व.म्.चईयान्वाह्यावा देन् र्रा अदाके वह मान्मे क्वेरायवेया ब्र.स्.रट.जयट.रट.पबेब.पहिबाक्षेचवार्.केषु.पविर.श्रेर. वर्रेन्द्रावे वर्षे वर्षे क्षेत्र के वर्षे द्रावर्ष वर्षे हो। श्चिमता समें वा पाता द्वेवा न्या में निर्मात लागा मान स्वा माने ता पठता ता ने र्देव-वि.च वट-अन्या क्ट-यन्डे-भूर-बहेय-वयनगत-वनयाश्चर् ल्य-पीर-तक्ष-४-४र-बीय-ल्य-४८-। निवर-नथयानुय-ल्र-क्र-क्षेनया

दे**ॱढ़ी**ग्-२कॅट्य-ध-ढ़्(-घत्य-ब्र-घुत्य-द-क्रुव-उट्-) व छ र वर्षे पर मञ्जूमलामित में दर्भ हैत मुक्ता स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वा **३**स-८८। स्थानवः न के साव साम्यान्य त्र्न् भीवात्रः वरः वी ख्याया अया अया अया अया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व मञ्जम्यानिकायात्रयेतः स्थान्दान्यक्षान्त्रीद्यायः लुया ने हेलासुरः रदः तह नवा लु : वनवा चुन् : पा सवा चन् : सुन् चून : वा केव : यं रः : लु'र्घन्'बी'बुक्पःब्र्याम्ब्रुम्काने। बी'हे'मग्रदःदेव्'ठव्'गुम्'महे'न मग्रातः भ्रॅंबर ग्री : त्या त्रियः द्वें ह्याः व्यादः ग्रु दे : दे वा के : द्वारा परः पहेवः वर्ने सं न्तुव वंगव गाव गाव गाव छिर वेवव वङ्ग व वङ्ग त छ र वि वह म. श्रया. येथा. पर्वे प्रया. में येथा. श्रीया. तपुरा निष्या. क्षेत्रा स्था. विष्या. विष्या. विष्या. ग्रै'कुर्'र्र्। क्ष्मार्रेव'स्ट्रे'ह्र'र्र्र्यक्ष'ग्रुर'कुव'रेर'स्ट्रेरे'पर' ब्रय दरेगल हुर:वग्:चल:पर:मलबल:र:लब:व्:क्लाम् हुर:धल:बं:दवेर: ' न्द्रमुद्दानी के स्वाम बेद्या पर्मेंद्राया भेदा व्या देवा मारा के स्वा रॅसन्यां कुराप्तां स्राविव कुरा हिन देव तार्मा स्व त्रा न्रंतर्राच्छ्रतानदेः द्रात्ते हें नान्ता साम्रेत्रे वर्षाम्यान्यान् । **५.**४८.मृ.श.कुप.क्षेत्र स्राचित्र क्षेत्र क्षेत्र स्राचित्र क्षेत्र स्था क्षेत्र क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र मुलार्वितः ग्रीराम् तरावादारावादाः स्टाराहोतायारा मृदाया केवावारा स्टारा म् अधिकार्यस् स् अ.चार्यलः रक्षःश्चः प्रकेषः पः सूरं प्रचीवायः व्ययः पर्वे या **के.र्च**.प्रवार-र.ल.ध्ये.र्वे.प्रवा.पक्षा.पाक्षे<mark>य.स्रवायाश्चेपाया</mark> प्रवेषाया र्

ছ্রণার নসার নজুর । "া উষার হিন্ র দুলা উর্লা ह्मा महाराज्या प्रमाणका का कार्या करा का स्वापन का बै हे न मृद देव र व दे कि द ही । अस सुय दु द स है न द से हि र र स (म्मूब प्रहेंब प्रथम प्रहें र रहा हैर् ) रहा। विशेषाया मे ने राष्ट्र प्रहार पर्यट. क.ची विशेषाता के. विषेप्र क्षिय प्रावट विश्व प्रावट विश्व प्रावट विश्व <u>र्चेरल नरुर् क्षेत्र पङ्गे न व्याल कु से किर कुल विव के से र देल हैं ।</u> त्तुयाम्बदायह्ना "७ डेवान्दा नेते छै में नह्नवादहेव न्यम ५५४-वर-१५- ४८-४-१५४-वर्ष अ.मी.म्.म.म.म.म.म.म.म.म. (1783) स्तः द्रान्त्र न्त्रेयायते केया ग्री नेत ..... म्राया पर्या में **ଌୖ୶ୖ୰୶**ୖଽୣ୵୵୷୷ୖୖ୶ୄୖଽୖୣ୵ୢଌୖୣ୵ୢୢୄ୕ୢୄ୷୷୶ୢୄ୶୷୷ୄ୷୷ୄୣୣୣ୕ୣ୕ୠୄ୕ୢ୴୷୷ୣ୵୷ **६.४व.ब्र.१.१५०४.पक्षेत्रत्य, र्यं, मंत्राक्ष्य, पर्यं, मंत्राक्ष्य, पर्वं, मंत्राक्ष, मंत्राक्य, मंत्राक्ष, मंत्रा** नलवा श्रुनः निरम्परः श्री स्थ्रेरं । जवानवा श्री । जा व व न तु । न ग्रायः न श्रु रः । । । । नक्ष्म " ®देशन्तरामः नद्याः ई स्टः सुदः पट्टः वे अन्यः देवे प्रेतः इरलम्ब व

महत्रक्तान्त्रः के यामा इत्या क्षेत्राचे प्यान्त्रः वित्रात्त्रः वित्राच्याः वित्राचः वित्राच्याः वित्राचः वित्राच्याः वित्राच्याः वित्राच्याः वित्राच्याः वित्राच्याः वित्राचः वित्राच्याः वित्राच्याः वित्राचयः वित्राच्याः वित्राच्याः

① (বৃশ্ব নর্ব স্থুই নাইব নাইব 443-445)

न्यलाइवान्द्रित्तिवयात्रं त्यदे न्त्रा वा वक्षत्रा व्या म्राम्या कवा सरायाः क्षवा रोटः नवटः पर्वः यगदः त्वनः श्वेरः दिनः पत्नु गः यः इवः वरः वरः। "ङ्वः नु गुव म् ने मार्थ प्रकेष रेव में केदे सक्ष्म मुख्य स्था प्रकार निर्मा मूर.अ.छ्ये.तूर.रॅण.ठु.सेल.चपु.च मेर.लये.हीर.नुचया.धी व्यव्र.कुये. बिर-हे दिर्दे ह्युत्प-झु-देरा-प-हेर्-प-दे-झ-धर-क्रेद-घॅ-धिद-देरा-मुत्प-र्पर बळ्ळ मायामाय म्या म्याप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्व मॅकास्य न दर्भे का दिया न कथा सराचा न के छेदा सक्र मा हिया न रा बिराने वै वे वे वेव न्व (शेर मुंदा है से व शेरा) इया न ने वा स्वारा । .... न्रेंतर्रत्राचेनरायः इवरार्शेर्र्र्रर्मा न्रेंतर्म् वर्में दाईर्गानुया न्रांवः न्यं वः स्वावाया वर्षा वर्षा के र मानः श्वादः स्वावः वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा व न.चंचय.चंय.चच.भूरा अक्र्य.श्रिय.हंय.न.कुरं.नर.ज्यंय.श्रेय.पंचेत नरःश्चः क्वः हे : हु रःश्चः यक्केन् : तज्ञे यः गः हू रः नन् यः व व रः । व ज्ञा यः श्च वः इं'लम् न्नु अर्दर्भ म्ल्यार्यं द्राष्ट्रम् न्यार्यात्रम् वर्षात्रार्यात्रम् वर्षा न्दः। बळ्चाः बुलः नन्दः लुषाः बळ्दः छु द्वरः पग्नुः क्विरे क्रेरः पग्नदः श्विः मञ्जूषा "ा केरा विष्ट तर्मा मा वा ने विदे वा वा मु न वि ळेदॱअळॅगॱॾॗॣॣॺॱ२ेदॱॲॱळेॱय़ॱद्व संश्चे<u></u> ॔ॱ नॅन्द्र त्व वारा ह्व यः वरःयः" ॱॱॱ न्मॅब-तु-वन्दि-दन्भन्या-विन-यन्ति-वन्य-विव-यन्त-चल नवालवानवाकेरासुरायाचेनवानवे द्वे नवानु च गवा ह्वा न् नवा मले महेब पहेंब प्राया पर्टे र महिंद मवद सहेत परे हें र लेग हा

① (বর্ব স্থান অবব ক্রব র্ন প্রা স্থান 133)

र्नायः त्वे प्रते वुरायः यहरायते अ वरान्यायः यरायः वर्षे या व्या

ষ্ট্রীমে: 1786 রাক্ মের ক্রান নার্যানর ব্রা

② (त्यद महे दे चुद महूर देय देव 460)

यहश्चर्या वेंद्र या केंद्र या केंद्र या के खेनया परि द्वेंद्या देंद्र ता £¬ŢĴ¬₽ӓ¬¬¬╗¬ӓ¬ӓ¬๕¬¬҈ӄ¬ҕ¯б¬ฅ¸ҩҳ¬ӓ¬ҳ¬Ҟ¬ҳ¬ҳ¬ӡ¬¬ӡ҇¬¬ बिदः तुः मञ्जेगवारायदेः कंपः सया मा ज्ञाः यत्रः विः वे विः वेवः ववः वे राज्ञः स्टारः तुः यदः र न्न्या हु सदे न्नु स्वयास्य स्वया की व्यव मन्या करा करा के वा গ্রবি-গ্রী-গ্র-দ বলবা-হর্নার-প্রি-প্রবি-দেবা বি-জ-ছবা-গ্রবি-শান্ত্রীব ग्रि. विवयः विदः करः वर्षयः वया यरयः ग्रुरः ग्रुरः मह्रवः यः न्रः। तेस्या क्ष्या क्ष्या कर् त्या के निर्मा से न्या स्वाप क्षेत्र में निर्मे हे न्म्रियायान्दा अधिवाता विदार म्म्रिया विदार विदा मामदीमित वर्षा "लयामव इया मुद्रेयान्र हेते हुर भेगामक्या तह्रवशार्चनायशान्वाच्यामा मुय न्यर बळ्नाया त्युयाया नवर्। " जेया निया निया । अळेन् . यं व . यह या . यह या . यो ता ळेवा . यो निया . यो ता . यो निया . यो ता . यो निया . यो त्रवेषः नदेः सवः सुवः मृशुरः ब्रेरः वेषः कुषः न्रः। हेवः त्रुरः त्रुषः क्रेष र्यम्यामञ्चलार्वम "न्मयास्वामरामयरावयाविः वास्वास्वास्वा विष्राधे केर कुल विष्यु सेवल पर्या ग्रह्म न विष्यु न विष्यु न विष्यु न व्याद्या क्रेयाया अया या श्रीवाया क्रुप्त वा सुराय मारा हा वराया हे । मूर्गी. हैं स्वध्यक्ष्य इंबर्धा कुषा व्यवापर् मूर्विर ৰিমা-মামামা

## 5 व्यन्तिः स्थान्याः स्थान्य विष्य विषय स्थान्य स्थान्

② (বর্ষান্ত্রীন:অলব:কুব্:র্শ্শ্গ্রমে:587—589)

디腹丁'우레

रॅं**व**ॱक्वेवॱयर्रे दे 'ग्रुरःर्ह्धयःश्रॅंरःच ग्रदःश्चंबःर्गदःचवे 'चःचङ्ग्बःःः' **८६ॅ द.र राजाराष्ट्रेय. इ.जा. इ.च. जाराया. चाराया. चाराय. चाराया. चाराय. वदःन्देशःशुः**लुब्*षाञ्चदः*।यदःवहेदःविदःवीयःवस्थयःपदेःन्वदःविदःन मते विराधान इर् मते वरा विषय निषय विराधान में राम क्रिया में प्राधान क्रिया है । । । नहें र वा श्री श्री १७८५ भेर श्री या सर में र स्वाय का श्री र मानु र नका इर-लयानलाध्याहेवानबेटलामाबेलाम्डान्यास्टर्हेवाह्याम्युयाला मरुषाचित्रः श्रीतः स्वादान् वादान्यः । विद्यायान् विद्यायान् विद्यायान् विद्यायान् विद्यायान् विद्यायान् विद्याया क्षमायहूर ग्री.वट.चर.लय क्ष.चर.च. मेंचेयाये ट.वुटा वि.क्ष.चया तिषारी. ५ हो ४. श्रेचया. ब्रेचरा के पा श्रेचर वया गई र १ देवया छ। या स्वासी द्वर मुला ह्रेन् केरायदे तुलात शेला गुला या ता त्या ह्या स्वा क्रि उव भा मदे में र तथा पर्ने र मार्द्या मुर क्षेत् खेर क्षेत्र प्रेय प्रेय न्नेया रत्यत्वाक्रेर्यः त्र्राक्ष्यात्वेर्यः न्वरः न्व्यावेषात्वेषात्रेरः न्वरः त्मधी ने देश मासुता पदा तमा नक्ष्र तथा श्रुद्दा न दा के चेंद्र न कर दे प्रमान के निवास के पश्चित्रयाचित्राळ् स्ट्रिस्ताम्बद्धाः वर्षाः इर न्त्र भ्रीत्राच्याः पठताताष्ट्रया विश्वासं तर्ने ने स्व प्या नु ते ज्ञू या स्व व के रापते नु तारा खिरमात्रस्यान्या हिमात्रु वास्त्रवा हिमाक्रम् विरावित्यमा तुः केलः श्चनः चुनः वन्दः। ने भूनः वाचुनः के न्वमः न्सुनः मृहेनः न्मेलः

मुल्यालेशाम्यीय माद्र्याक्ष्मा । इत्यालेशाम्याम् स्ट्रियान्याम् स्ट्रियान्याम् स्ट्रियान्याम् स्ट्रियान्याम् स मिल्टायाम् वयाक्ष्याः । इत्याले स्वयाक्ष्याः । इत्याले स्वयाक्ष्याः । इत्याले स्वयाक्ष्याः । इत्याले स्वयाक्षयः । इत्याकष्यः । इत्याले स्वयाकष्यः । इ

भ्रम्यान्त्र महाःवृःत्वरःह्ययःभ्रुःभ्रेष्ट्राम्युःयःक्रवाश्चराकुः यक्षः र्टा ५ शुना सन्तार ने किव ह्रा तिर र ने में व शु शु ल शु हे व तिर र इस्रतः नेदः त्र्यं व प्र-ततः तिताः वित्रः व वयः वहतः दे व्यवः तः त्रा वरः । म्राह्मान्य म्राम्य प्राप्त स्थान स्थान ন্ৰু শ্বাম শ্বাম শো मृद्धि-पश्चर्याः तद्दायाः पर्दे - क्रियः श्चियः पर्द्यः न्त्रे याः मृद्धिः वदः ..... वि.रंबर.श्रैय.श्रंय.रं.पय.र्वा.हे. **छेर**-सम्भवरात्रम् गुरः। ब्रामान्त्रा हेवानदेत्यामदेन्त्राम्यान्त्राप्त्राध्या वयानेवावणायमार्थितेर्रम् यवार्ख्या चान्ने न्याना नयःश्वयः हे दः नवे दरायः श्वेयः धॅरः मॅरः मलु दः दरा नशुदः मठेरः बेदः सः इर.१.१३४.१४४.१३.३१.४८.१ व्र.११११११८.१८५४.१८४८.१८४८ इर.वय.वुर.चर्युःलव.वयायायद्र्यःचर.चयात्रीयार् कूर.बी <del>हे</del> वृःपबे त्राः या वृत्रे या व्याण्य स्टुः **हें** वृः च व्या न् ये नः या र्यानः या वृत्रः या वृत्रः या वृत्रः य न् यव भाक्षव देर वैवार्षेत्र विवार्षेत्र विवार्षेत्र प्रति व स्वार्षेत्र प्रति व स्वार्षेत्र प्रति व स्वार्षेत्र क्रैराधार्म्, दुन्यम् ज्ञुना निष्दार मेना नामा यहा निष्टा क्रीता सहा 

रॅंब-तु-पश्र-पर-ञ्चव-मा-क्षे-प्य-पर-प्र-। पत्य-ध्या-वर्षः वर्षः वर्षः <u> ५८. मंबिट. मुथ. संबट. क्रै. ५२४. क्र. १५४. विथा क्ष्य. श्राचर. १५८. व्र.</u> मॅ**र**-नग्रत-नग्र-नर्जानर-ज्ञायानु-न्यर-नजासुयानदे-स्रुव लु..... त्षे**रः** हे न्याः ध्याः हे वः यहे त्राः यः वहे यः यः श्वेरः श्वेरः वे वः हवः क्याः वरातुःवेनराः व्यानवरार्वरार्वया है। वाक्रायां वर्षेरा स्राप्तर पर्चेर-तर-झर्। हेब-चबेर्या-त.बेध्याग्री-बि-ब्यायनर-वि-रंबर-चर्धः श्रदः विदे र में द्रा महिला कु मार म्या भारता है। विदा है । विदाय र नदी भिना में ब कि मा बाहे ल हिया निर्धा के निर्मा निर्मा निर्म निर्मा नि मुलाग्री र्यर वहें बामुला देवे ला हि र्रा वृ र्यर या के ब्रा के ब्रा मुर द्वाप्तर्द्राम्बेनाक्षातुः धेराधेना यया द्वाप्तर्भना द्वाप्तर्भना सम्बन्धाः ध्रुन हुर तकर छेर बावन वृत्यर म धेव ईवा समाय विकास हैन है. भूर.र्धिय.बेश्ट.ल्ट्य.ज. "बूर.वि.क्वेज.लंब.धुब. बुब.बुब.बुव्य.सेंट. वर्षेव. म-छ-ल-श्रीन्-उद्-। व्यवतः श्री-तन् न्न न्यान्- । स्वनः स्वनः स्वनः स्वनः । र्बर-प-र्राष्ट्रे श्रुर-लगः श्रेलाग्री स्वा दवा नवर-र्वा पहर है। नवर garar:ऑर:रव:श्रुव:कु:रॅर्:ञ्च:र्घं व:र्कर:व:वुग्व:र्ग्व:बुर:र्सर:···· केंचया यामक्षया इंट. मेव्याप्ता पार्य याप्तर हेना पड्ना में हूना वया द वृष्टाक्षावर्ष्ट्रमान्द्रम् व्रिष्टामानेद्रास्त्रम् स्वर्षाः पश्चर कु रूरा इर ईर् वयाया सम्मामवर के विमा इयया शुराय मामा र्म्या राया यक्ष्य वेर् में संवित यगाय के क्रिन क्ष्या र र मे नया यक्ष्य र्वराष्ट्रियास्राव्ययान्त्रात्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र

म्या-म्या-प्राच्या ॥ ३० अयः याया-प्रम्य म्या-प्रम्य म्या-प्रम्य ॥ ३० अयः याया-प्रम्य म्या-प्रम्य म्या

म्दानुः सं कुण वदः द्वुण वर्दः वी सदतः द्वं वृथ वे से न स्वायः स्वयः स

② (न्न्दःन्देःन्देनःदेवःदेवः 560)

पक्षित्राचित्रम् स्वार स्वर स्वार स

<sup>🛈 (</sup>न्न्य पत्रे प्रते चुर पहेन् नेय हैं य 561)

ब्रूट्रपञ्चर,ल्रंट्र,च्राक्षल ह्र्ट्रर्चाट, ह्र्य, प्रश्नेट्र, श्रूट, श्र्ट्रपञ्चे, येवया क्ष्यःहः चयः पञ्चरः बद्देवः द्वार्या देवः यद्वरः ग्रीः क्षः वरः स्वाः वर्षे रः चुरः । क्षेत्रया क्र.पंत्र्याचया छे.यव्टावियावियान्यय पर्वे पश्चेतावया प्यंत्र श्रीकामवृतःवेताञ्चेताश्चीरतर्मे त्वर्मे सम्बद्धाः मर्चनः सन्दर्भः स्वरः स्वरः सम्बद्धाः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः ॅंड्र क्रिन् क्षेत्रकारी त्ये त्ये व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व नर्-इत्राच-बेव्रियायार्थार्य्य-प्रयाचि-र्र-न्व्यायस्यान्र्रेयाळेर्-ह्र्र----विष रस्काम्राज्यान्यमायुरामराविषावस्यायुकाकेरास्रा <u> चेन्-पर-मु-न्धव-छ्र-प-रे-न्द्र्य के ह्य-रो</u> प्रगत हॅव्यी ग्रेया इ.स्.क्र-. ५. च व थ. पहल. बाह्र द. व थ. व द. ह थ. प या प व व व व व व **इ**ब्रान्य: भेष:र्व्यायुन:र्वुष:ग्रंट: र्व्यम:नश्चुत्र:ग्रु:र्व्य:र्वुट:श्चे:७न: तुः कु · वॅन् : त्रं व : नग व · ग्रॅं व : ग्रें व : ग्रें व : व व व : व व : ग्रें व : ग्रें व : ग्रें व : ग्रें इ.कु · वॅन् : व्यं व : ग्रें व चलु वार्या कारा वर्षा वे राज्या वाय वर्षा या स्वार वा स यं केव यं र पर में र र वाप क्षे म् रा समारा ग्री रा वार्षे व र द रे खरा द बी-बवरा:ईयाद्वेयादेयाके न्यायाद्वे द्वी वियानेव तु वर्षीत यादे क्वी वर्षाया । वी पूर्-क्रिंप्य-ग्री-वर्षेष-पंग्री-लूर्या-पावीवाया-वड्ड-पाक्षेष-प्रया-वाज्ञवाया है। वे कॅब के ब वु दुवे सुल शु के ब चेंदे न चें ब न व ग ह बहा या तहा या इंदर्भेयः तथ्यायः स्वर्धिः । इंदर्भेयः विद्याप्तिः । विद्याप्तिः । ह्या मराष्ट्र देवा सु.व. देव स्वाय ग्रीया त्त्र का वना न्दा सामा मुलार्सरार्थनाय ग्री-न्यं वर्न्यना है या के त्य ग्री दल वेवर्न्य न विवर्ध है रा ब्रुद्रे म्बर्कार्ञ्च पाञ्चे पद्या "अविद्यानीयायाया क्षेत्र क्रिया वृत्त निराद्याया मी

① (न्यद पत्री पत्र वृद्ग पह्न देन देव देव र

स्ति म् १ क्या प्रमाय के स्ति प्रमाय के स्ति प्रमाय के स्ति म् स्ति के स्वाय के स्ति स्ति के स्वाय के स्वय के स्वाय के

ला हूर् छिन्य ग्रेन् यानवा हं द्वा हु ग्रुराधराय हे दार्द र ह्र्रायया र्मानाम्बदालयानवान्दा। नमादार्श्वेदारवायार्थे मुदारागा भैना द्वा कुलामनेतामा केव अक्रमा ह्या परिवास महामा ह्या परिवास हिमा परिवास हिमा परिवास हिमा परिवास हिमा परिवास हिमा हिमा नरानग्राभिषाञ्चरायराभ्रम् इत्य ग्रीष ह्वामे। देरदायायका छवा ब्रह्मना ह्यु त्राह्म र तुरा पर्यु वा पर्या प्रमा विदासी व बर-मुर-पङ्गपन् मुर्-सूर्-अर-बर्ख्र-सु-अ-देश-देश-वेनल-स्-इर-स्--ह. लर. लय. श्रयाने श्रर विद्या श्री तिष्ये । मेर्या विद्या ने वसारे दा बेवा में दा बादे न मृता हुता वदा रादी प्रसुदा प्रवामा हैव प्राया क्वि.लय.ऱ्येय.श्च.तयाप.ञ्चर.र्यप.चर्ष.चर्षेय.पह्रं य.पह्रं य.प्राय.पञ्चर.... न्श्रेन्यायात्र्वं न्यायी वित्रान्त्रेयान् हेन् न्द्रात्र्या वित्री वित्र हें ... मृद्या हेरा त्र्रा म्या नेया न्या मारा त्रा त्रा त्रा विष्या प्रा मारा हे त्रा प्रा मारा है त्रा मारा है त्र मारा है त्रा मारा है त्र ষ্ট্রসংবর্ভর-গ্রীকাশার্রর-বৃদ্দেশ। **ギエ・タエ | 過て・ガエー** न्मतः पठ**रा** ्रात्में पति क्रेंन्र-न्धुन मेला पत्ति स्ति स्ति म्ब्राः हंवापड़िया कु'न्यवाधिवाधिवाधितारार्यवान्यम इसरा ग्रद्धा सर्मेर न्या स्र्रा राम्य प्रत्य प्रतास्त्र म्या स्राम्य प्रतास्त्र म्या स्राम्य प्रतास्त्र म्या स्र तहरानुन् नगाने हिंगा व्यवाय में रामानुन् है वागुरा इपि.धिप्र. मुषारम्बर्कान्यवाकार्यवाकार्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्या 型い、大八.

255

**रबन्द्रम् द**रस्चन् वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वरत नग्रदः क्रॅब्र-र्ग्यदः नवि न्यरः क्रॅग्रः हुन्यतः द्धंयः ख्रे व्यवः ग्रे व्यवः र्ने व मःसंस्रात्रेरः न् सम्। दवनः चुत्रः दः न् सम्। ग्रम्तः लुरः नतः संस्रः हेदः न्रः। न्स्रान्यम् क्ष्रियः केष्रस्ययः यह मान्स्रान्यः म्राम्यः क्राम्यः क्राम्यः क्रि <u>इब्-त्वतः ब्रे-न्ब्रायरः वि-च्रायायायः क्रायायः वि-न्ब्रायः व्यायायः वि-न्</u> श्वरः अरः में प्रमृतः तत्त्वा ग्रुरः। न्यारः प्रवेशः प्रायः विष्यः विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः मनया अन् : स्या वाम राम माना चित्रा स्वा वा के वा वा वित स्वा भी राम वित स्वा भी राम वित स्वा भी राम वित स्वा क्ट-र्राग्यान्युन् भेषान्ग्रन्तु नक्कुन्। ने स्निन्यार्मेन् अया थे किन दया केन् महें र मवर पर केन् विते न्यतः ह नेन न्रा कर छन संगया न्यं व-न्यवा हे राज्य स्वर्ण वा तर्हे नः च नः श्रे वा न ग्रानु न स्ना ततु व ने वयार दे उदा छुव न्दा अया पवा सु ग्राम भेवेया वदा ह्रां व केवा वि.र्पतः रेवः र्वायाकु र्यमः कुलः रेटः मैं र्पे व र्यमः इसतः वेलः र र्गर-तु-प्रवेर-प्र-प्रवेर-वेद-अपण कु-प्रवेद-स्-छि-स्वर्य-वर-**धेष् अं**त्रामञ्जूराग्रीतामग्रा भैताञ्च्याम् व्यताम् क्रियाग्री ध्यानः हे न्यायाः स्व-द्व-ग्रुच-र्यम्या-द्र-। याश्च-व्याश्च-ध्व-याव्य-यव्य-क्रिन्य-मिन् हु व्यदः न्मितः वर्षे नः विषः नेवः रेवः यवेवः वर्षे नः वदः यदः न्युवः र्या भरामया गृष्टा दरा अहरा लागा मया सग्ना मुदार हो ला अहरा छ । क्रम्या बेर् प्रया र शुक् र छेर् ज्ञा न प्रज्ञ र र्ज वा रेर र रे खेर खेला

त्रान्यत्र-भ्रित्रक्रियाः मृत्यत्रभ्रत्यः वर्षः म्याः मृत्रः मृत्

## 6. नॅर'नॅर'न्नर'क्चेर'र्चर'र्ड'वे'र्चेरकेरर्रास्त्र'व्या

ষ্ট্র-শ্র. 1480 হ্র-.এ.ই.ন্র-প্রস্থর প্রস্থিত প্রস্থান প प.प.व. व.य.प.मूर्याया प्राया च्याया स्वार्या स्वार्या स्वर्या इयतावतान्त्रतावराच्युराम्याध्यातु वी स्रायहरावतार्मे रान्तुरा न्ता व्याव न्यर परकेरण ग्रं वा व केरिय के किर पर के किर पर मॅंत्र-धुंग्र द्रवायदान्वययान्द्राध्याः अन्तर्भः वृ न्यरः नदीः धेग् यदः **ঀ৾য়**'য়**ঢ়ৼ'**য়য়৾৾৽**য়ৼ'|** য়ৼ'ৼয়'য়ৢয়য়ৢঢ়'য়য় <u> ইব-ৡ৴:৸ভ৴য়৾৾৾ৼ৾য়ৢ৾৾৽য়ৣ৾৽ৼ৾য়৽৴৴।</u>
য়ঀৢ৴:৸য়য়য়ড়য়৻৸ঽ৽য়ৣ৾৽ त्र्युं न् अन् रहा। हे व प्वेरक मा खेल य क से व : ब अ र वे : ब क निरा गलिर मिन्यं न इया नया ग्रम हिंगाया गहिना नी लि पर परे न तह्रवाग्रीयान्नेतास्याञ्चराञ्चराराच्याप्यापनेवा नाकावास्या ब्रुब-प्रम्यःश्चेर-पान्ययाद्धयाहै छिन्-ब्रेन-श्च्याग्ची पाना-मु-प्रन्-स्रम्यातुः वब.क्र.तयर.ब्रेन.ब्र.बेथ.क्र.। नेप.व्र.पनर.क्र्य.वश्य.वर्गनी र्वसः चुर-दर-मु-दर्-भ्र-द्यं द-द्यं द-द्यं द-द्यं द-र्यं द **६ता**ग्री-ल्या त्यत्र्या या त्राप्तर न्या त्रापा कवा विषा पहरा वर्षे राष्ट्रर प्राप्तर । दे•दल्लयः द्वमः यरः व्यदः यदः कुः द्वे दः द्वययः द्दः यः नग्रयः वी किर्यः ः मः इवका ग्रॅं वा न हुर छुवा है। दे र इव ल दवर मार दि व से वा व

श्रेषाराः पर्य राषाः सुवान हिरा हुर ह्या ख इय कुल लगर विलाद ग्रारा हुः । क्षेत्रप्रवृत् ग्रेक विराधे श्रें का तुर्वा के साम क्षेत्र क्षेत्र का क्षेत्र ग्रेक का क्षेत्र का का विराध का क नश्चनवान्त्रहरः नेवार्ट्रस्थान्तुः नर्युत् स्वया बेदः नविवा विदः नेवावः *न्बर*-वर-महेंद-ज्रुदे-ब्र-धेग-वर्षे रा-धदे-नेंद-हेंर। **支上. 2. 4. 型.** <u> न्यम् न्यम् मैत्रा श्रे स्य प्राचा ग्रु श्रु मार्ने वर्णी स्य प्राचा मार्ग स्थाप </u> - 124.4£.94.94.9.9.1€.1-14.263.9.9.2.0±-14.24.24.9.9.9. लूट.ब्रुर। पद्यन.प्रमा.श.पत्न्रेर.ब्रूट.थ.अक्षथळ.ह्रट.पत्ने.झथळ.टूर. नग्रतान्त्रेतावताक्षेत्रताञ्चेना अस्त् केतान्त्रात्वा ताञ्चरा मावरा न्मेत दे. इव केट. ज. ही. कवा. हो र. क्षर. ही र. दे बावा ग्राट. क्षर वा. ही वा. भ्रमतः क्षरः मुद्दरः हेरा यहेर् र ज्यारः खनरा ग्रीः यम् दाराहरः र र र द्वारः । । । । । । । । । । । । । । । । । <u> बिश्वःक्र्याः सः स्त्रं - क्र्र्यः स्वायाः स्त्रः वी - यह या यह द्रायः वा ना के विवा प्रञ्जे या विवा स्</u>र अप्तरं ठव न्वेंव के नि निर्माय क्या तथ की किया के निर्मे निर्मा करा करा किया के निर्मे निर्मे निर्मा करा करा किया के निर्मे निर्मे के निर्मे क नद्यः वर्षे वर्षे वेदः भेरा चिता वक्षव चेदः न न तत्य स्ता तिता है र केदः हिंद्या .... च्यार्चेव विष्यारेटा क्षेत्र खेरा श्विर खुटा बहुत ब्वान्य रामवा महरा धेन'वर्'। रे'द्वर'धेव'व'राम्याराग्ची'केरराम'इवरावरा दम्या हा मिलेट.चु.श्र.क्रय.चवेत्र.पतिर.ग्रेय.ह्रट.श्रेर.ह्रम्य.पट्टेर.त.वेय.ह्या देन्ॱवयःग्रुदःमॅनःमुत्यःग्रीः<u>`</u>ञ्चेन्**यं श्वेःद्रग**्विन् वयःनेदःश्वेवःश्वेषायःनेदः **ः** इट.प्यू.पूरायाक्षणकुर्याश्चेत्रेय्राश्चेत्राश्चेत्र 英大.美可.重.之上。 न्म्यान नर् के म्र कुल वर्ष हव रे खल पर । केरल न्व धुर व **ब्रायाय देता** 

बहुव र्डथा देना हुरायरा बर्देवाहें र्निया पदि परि हुरायहें र्दा लट. भ्रेयायहिन हे बान निवाद में त्या की देन या निवाद में प्राप्त मार्थ तस्र चेर मन्द्रमा उरा दर्ग तुषाकु मेर महिषाया है। चश्चिताहै केंद्रिक्ष व्यान्तरा वाद्रिक्ष व्यान्तरा विद्यान रवाम्याना साम्याना निवास मान्या निवास मान्या साम्यान स तम् भूराच इवका त र्वा यदे मधुरादह्व ठवा धरा वु क्ष र सेरा बेरा परेरा **৺ব**'ঝ'ৰী'মন্ত্ৰ'ক্টিম্ম'ট্ট'স্কু'ৰু'ম'ড়'মাৰুদ'ৰী'হুদ'ন্দিন'' शुं तेर रें केंद्र अवया बेल तस्य महेंद्र अहंद्र द्वे य लुक तत्तु म इपया मॅन्-इन्-क्रेशन्यं वर्श्वे क्षुण यर्न्टा के क्रुन्-क्रे वर्शे वर्गे वर्ने वर्श्वया য়ৢঀ৾৶৽ঀ৾৾ঀৢ৶৽৸৽৸৶ৼৢঀ৾ঀ৽ড়ৣ৴ঀৼৼ৾য়ৢ৽৸য়ৼ৽৻ঢ়ৢয়৶৽৴ৼ৾৽ঢ়ঽ৶৻ড়৽৽ **ॺॱवॺॱॺढ़ॕॸॱॺवॸॱॸॕॺॱ**ॸॿऀॺॱऄॺॱॸॻ॑ॸॱॸॖॱढ़ॾॕॸॱढ़ख़ॺॱॿॖॱॸॻॕॺॱॱॱ इयवावयाच्चित् क्षेत्रे न गता क्षेत्र नत्त च ठवावानग्वाची केटवा ना इयवा र्राक्ष केषा स्राक्षित खेषाया शु तस्या स्रायहर स्राप्त विषान्यत्य ततुन केरलार्स्रयाचेन् से ह्वाला ह्रान्नरात् ईराहेला हा यावृ 'न्वर' नयार्मेराव कुलावर वी शेर्वा अर में र्र र्यं व्या र्युर नडया विर्रे ब्रुन् ग्रॅट द्वन्य स्ट अन् द्वयान्येय। क्रेट्य पाइयय द्वयाया नाइन् धरःवरः ब्रॅबः र्धयः स्रेव। रदे छवः छुवः रूष्या साम् र्षे व स्वायः यः

लु धेन स्या है। न मान अन्त त्या मिन का कुल न्या अर्थ भी भी, यतु व वर यायाव केव राष्ट्र व माया माया व्याप सहित के व के या वेषा नरा **ৡৼ৶য়৾ঀ৴ৼয়৶য়ৢ৸ঽ৶৸য়৸ৼ৾ৼ৴য়ৼ৾৾ৼ৴ৼ৾৶৸ড়৸৸ঢ়ৼ৴ৼ৾ঀ৽৽৽৽** नवैदः मुः द्रवः इता नग्तः ब्रुदः द्वादः नवैः नः द्रः। वद्दः द्वदः *ख़*८ॱ<sup>ऴ</sup>ॱॼढ़ॱॺऻढ़ॖऀज़ॱॾॕ८ॱॸॺॸॱॴॴऄ८ॱॾॕढ़ॱॸॺॕज़ऄॎज़ॱॸॸॖॸॱय़ॸॖॺॱ**ॱॱॱ ৢৢঽৼ৾৾৻**৾ঀৢড়ৼয়৻য়ৢ৸৻ঀৢৼ৾ৼ৻ৠৢৼ৽য়ৼ৻ঀৢৼ৻য়ঀ৻ঀৢয়৻৸য়৻ৼৢয়৻য়য়৻ युरः बहरः में राविते।वः र्वरः द्वरः क्वेरः ग्वेरः तुः बढ़ बः वहें बलः हें म वर् <u> इंज्याच्यानग्रदञ्ज्यानम्बर्धानः इत्यानम्बर्धानः व्याप्त</u> न्यं व : के : खुना था है : कर्में व : मैं व : खुन : खुव : खेन वा है : हुन : हैं : प न न क्ष्याप्तियवया क्रूट्याश्चितातात्वाक्ष्याक्ष्याश्चिताग्वी प्यताहाला था न्ययः स्वः न्वः श्वा-न्दः। वः क्रुदेः अर्थे वः महेनः यहिनः यह वः न्दः। मॅन:धुंग्राव्याकेटराञ्चेग्वी शृंश्वाद्याकेटराज्या न्यं वासुटः..... त्रेषः रु. मूरावि कुषः कुर् इया या हेरा न्दा मूरावि अक्रेरा म्वया चयःचे च्च<sup>ा</sup> श्रेव सूर्वा विषयः यात्र विषयः प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत ब्राप्त्वा.ये.व्री.वर्ष्ट्र, या.कु.इ.४.४८.घर.ता व्य.क्ष्यायी.ड्री.४४.४८. क्रिं क्रिं स्थान्तर स्वाया क्रिं क्रिया क्रिं क्रिं क्रिं क्रिया क्रिं क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रि परुषःन्रः। परःश्रंथान्चेन् क्षेत्रन्थान् व्ययःमः स्वयः श्रेन् ग्रंरः व्यः য়ৢ**৾৽ৡ**৽৸ৼ৸য়৻ৼৼ৻য়৾য়৸৻ঀ৾৾৽ৼয়৻য়য়ৼ৻য়য়য়৻ৼয়য়৻ড়ৼয়৻য়৾য়৽৽৽ क्षेत्र'वर्ळत्र प्रसूर् वर पुराधिर प्रयागित गर्वे गर्वे । वें र प्रमुन्त वयाचेरावा पराञ्चनयानेवावयाचेराविहरावेयायचया ह्रास्याधि 

इराइंगर्दा में राजुलाधानि राज्या प्राप्त वर्षा वर्षा निन्दा छता। मुवागुरायद्वा इवायरामयामुयाकेरानुतागुःतयामा इराउवा न्दा मॅन्त्यक्त्येद्ग्वेद्ग्वित्यत्दित्वत्वित्त्वेत्यत्वत्यद्वत् उदान्यवाद्मित्राविदायम् न्याद्मा विदास्याद्मित्रायाद्वनाः न्दः ह्र राज्ञ र राज्य र रहतः तहेर छेन् भग गवर छुट वर पहे व में र वश्वासुराम्बराब्दान्दा। र्रदान्दा ह्रेटान्वा क्रेन्ज्र परुषः वृतः वृतः प्रयाने : न्वाः क्षेत्रः श्वॅवः न्वॅषः के ः ह्रेतः तर्वे : ते रायः श्वः त्रेवः कु 수건대美·육수. (비용비·대·정도·등·다용·숙·) 회회·다 평·숙·였·영국·비정도…, श्चिम मिलेर । मार्ग व्हां । मिले मिने मिन से वा की स्थल व का मिर । मिर च कि. विद्यः विद्यः क्रियः विद्या इर्-वयान् म्या नेयान्नीयान्ता क्रम्मियास्ययान्यान्ययान्यान्य ब्रि:ळॅम्:स्रुंत्य:सॅम्याय: वृत्तः वृत्त ॅब्र्रल, ट्र-(विनया नक्षेत्र अर्-(य-क्र्र-)विया ख्रेर-क्र्या चुता नवेता तुर्ना तुरा वि चॅन्-ल-पङ्गंब-तर्ह्णकाधेव-र्द्धल-न्हा त्वामा-म्यर-क्रेर-मी-तर्हतः बर-बर्-ध्य-तुन्न-दन्द्रुद्द-दन्-स्र-स-स-स-स-स्र-स्र-देर्-हुर-हुर्-प-----यय। ग्वयान्त्र्राज्यान्यः व्यक्ष्यान्यः व्यक्ष्यः व्यक्षाः लयर मुल रें दे न्यर ने न् ग्री में न्यर ने व नर वनर वनर नहेग हु न ग्रामा ऱ्रॅल-ब्रे-५ तुन्न-स्रम्याने - देन्याने - न्वॅ्य-देव-ब्रेन-स्व्य । व्यॅ्र-कुल-घै-हैं : कृ : रुक् : ऋषे : ब्रु : क्षेत्र : क्षेत्र : व्यापालका व्यवु : यह : यह : चुक : *ৡ*৾ঀৢ*৻*৻৵ৡৢ৻৽৴ৼৄ৾৾৾৾৾৾৾৾৾৾ঀৼ৻ৼ৾য়৻ৼয়৻৸৻৸৻৸য়ৡৢ৾৾৾ঀ৽৻ৼৢ৾য়ৢ৾য়ৼৼড়ৢ৾য়৽

द्धला विश्वर वि.र्टर.क् व.धु.च्र.रर.वु.लव.वु.रवु.वक्ष्य.प्या.वैर. च र सः श्रीया तु : तर् : यन क्रिंट के क्रिया विव र यह । वि र दें हि : इट.रटा विषय.५६८ में नाम नियम नियमें में भी समाम प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप् ग्रै'वियायह्याविषयायविराग्रेन्'सुयाया ने'रेगयासीयरेन्'से मॅर अन् ह्वा मॅनाव वया यहे ये शुक्क (हे ये गुब्द ) न्दा में नेदा (र्मुक्रिक्टि) याम् केवर ब्रेया मुत्राय है स्वराय । "रेर् मेर् म्रायर क्व ग्रै'पङ्गत्म् । बबब्द रुट् हें 'दर्दे दे 'दर्बे 'दर्दे द ग्री 'कु प म केर 'द सुट''''' ग्रॅनियालि.लीयाड्र. पर्श्वेयायहरा र तथार् विरया क्षेत्रया क्री विष्टा स्राप्ता <u>नश्चर-त-क्रथान्ती-श्वथान्य पुरस्यापर-तश्चर-ताम्बर्यानश्चराम्बर्याः अवरा</u> धु·बदेः धनः दर्दे वः भ्रः निष्ठ रः तकतः शुवः तवन् वाराः श्रु वः नतः न्त्रीच्याः क्र्याः पञ्च वः न्नाः व्यायः स्वायः प्रमान्तः पञ्च वः पः क्रियः प्रमान्यः पञ्च वा विवायः विवायः व बिवे-चेड्डच्याक्षेत्रम् अक्षर् स्वर् हे. हे. हे. हे. हि. दहेला तया नेविव दे स्वया গ্র.প্র.প্রস্থ্য-শ্বন্থা के.कर.मूर.रि.वंब. पूर.पै.क्ंर.मूज.वेब.च. ग्लद यामग्रद्या न्युर्वाम्राया क्रेक् या सुग्वाम् व्याद्या द्या वरा वी सः न्यमः वि सम् अर में अर म् राह्रेर वर्ष न त्रुमः धारम् वर्षा स्वराधिक वर्षा केब्य.कु.य.अक्शय.कूट.ए.बू.पूर.च.र्थयय.रंग.लब.वय.लूच.त.रंट्य. नयाध्यात्रीत्म्ब्रायाय्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या নমূব ইন न्यमः स्था सन् । न्युरा न्यं नः स्युरा न्यं राम्भेरा 회.보스.디네. मह्युवाग्री हो त्र में अवदर न् ग त्या यह न रा न रे न रा अव र मार्ड न मिले केर

त्रभूरः देव यान्या देवा क्षेत्रः या न्दा। या क्षेत्रः या विषय या विषय या विषय या विषय या विषय या विषय या मबराम्यायन्यात्रुयानुयाळेषायातेषातु - वरायहर्।" किंतायत् पश्चर.चै व.व/८.कुपु.सूव इंट.व/व/थ.श्र.श्रुपु.ल्ट.पचन.पथ.केव.नपु. व्यादेव त्यां में केव या स्वर द्वीय वेर पा या या या प्राप्त का विष्त वा लन्याञ्चन्यानी प्रवास मान्द्र मुद्दा की कि वा स्वार मिन नविरःशुः कंगः इययः वयः षः तवयः यमिनयः गत्ति । तः निः नः नर्ः । न्ता वः वः वः न्यरः नः न्दः यः नग्ययः ग्रीः श्रुः छनः ह्ययः व्ययः वयः यवः छ्वः नवर हिर ने तह द वर मेर निरा मेर निरा वर्ष में हिर द वर वर्ष हैं न्द्रतः च्रमा था बराम वि चेन् । खम्या मा विषा येन खम्या छै। यद्येन सामा नदः म्र-इर-क्रर्यः रवः विष्यः नदः क्र्याः नविः वयः कः नक्र्ररः म्र्यः स्वः सुः য়ৢয়৽ঢ়ৼৢয়৽য়ৄৼ৽৸ৡ৸৽ৼ৸য়৽ৼ৸য়৽৸ঀৢয়৽য়ৢঢ়য়৽য়ৄ৴৽য়ৢ৽৽৽৽৽ वियातरीयो.सम्प्रास्त्रिक्षेत्राक्षाक्ष्यायायाविरालरा। यह्नाम्हरायस्त्रिः भि. ५ व. वर्षे व. क. लूट. वनया बेट. विच. वेया १८८। वेट. लूटा कु. नया कैरलः देव : श्रेन्य अर्ह्म ला केंद्र : इस्तरा ने त्याद गायः तु : येंद्र : यदे : केव् : विदे : " <u> न्यतः स्त्रेन्तः।</u> ठटः हुव। वेदेः बुः र्यवायः त्रान्यः नङ्गेरः बुः न-र्-, तुः त्र बुंद्र ताः दूः न्यदेः श्चः वयदेः श्चः वयतः वाः वाः वयः वाः वीः वीः वीः वीः वीः वीः वीः वीः वीः विनः इंदरा ग्रे नव्**रा** ईं या पठ या सुया यहुं ना पना कु न्यें वा स्थाप व्रा वरावगुरवावेदारावध्यातु वर्षाक्षर्या भीता हेर्रा देवेदा हेर्

① (न्नव.चवे.चवे.वे.चेर.चेर.चेन.द्व.633)

द्वेट्य र्ट्याक्र्रेर यद न्याया न्या थर हिर् हे त्री म सु विदया छ। सि यन्य द्रायम्य स्रायम् द्रायम् द्रायम् द्रायम् द्रायम् स्रायम् स्रायम् ह्रिन ह्रेन् बेन्या महेना ताई छन्। पत्री पत्री यहर है न हुन व्यात्मीन् व्ययाचुरावान्यन् वर्षात्र्येत्रात्नेयावेयाय्यायवात्म् रात्तुन् । बर.च वर्-छ्र.च वर्-लब्-बर-व्यत्वयाव्यवर-व्यतः दह्नाः र्स्तरे.श्रेयः ब्रेट्रावह्र्यः वृद्धाः विद्यात् क्रेत्रः क्रिया विद्याति क्रियः विद्याति विद्याति क्रियः विद्याति वि नम्रीतः स्वायः विष्यः विष्यः विषयः Ŋ·ᠬᢩᢄᡪ᠂ᡩᢐᠬᠬ᠘ᢋ᠂ᡯ᠒᠂ᢋᠸ᠊᠍ᢖ᠂ᠵ᠋᠋ᠳ᠃ᡆ᠂ᠼ᠂ᡯᠵᡧ᠇᠒᠄ᡩ᠂ᢍᢆᠵ᠂ᡚᡆ चकु:घर्याया: मॅन् क्राच्नेरावरातस्या: क्षेत् चुराहेरा: नेराज्ञ ता क्षेत्र क्षेत्र स्वा याः बद्धवयाः क्रॅराचित्राच्चेरापयाः ज्ञारयाः या व्ययाः छा पत्तुरा वेत्राः प्रता ला क्षेत्र श्रुवा केत् कुर्रा केत्र श्रिवा क चविते त्रु त्र तर्दर में दान वर्षा से प्रहेर हिंद र में वर्षा न वर्षा उदा है कि नवास्वान हे वान वे नवा ना न्मा स्वावा व **इ**ट्-बीट-पड़िज-धुन-कुट-ट्युन्य-घजातीय-तथानीय-विद्य-धिक-पिट-श्री-पड़ीर-वयाकवाःवि चियाहेयाचे न् व्यान् माना तक्षेत्र तेवयायायाया नहायाः दद्र-ब्रि-विश्वर्थः कवा ल्रि-वर्दः दव्यक् सेव न्त्रः याव न्त्रयः प्रशास्त्र स.लुब. बुब. पर्झ. वेबल. पर्मर. बुब. जुब. बुव. द्वा वुर झ्वत प्वाय. न्न'यव रहेव रूटा वर र्यट ने बेद्दे रें ग्रम रूपा रेया भ्र. रियाक्र्यास्यायाक्रम्याति असी नोद्रेया मा पर्या नोद्रेया स्वापा सर्द्रम्या म श्र-दं मुक्त पहूर्व न्यूय चुरा पर प्रवाय पहुर के दि के वि के दिया वि . . . यासुवै देव या पर्ने मेरान्वे या वर्न वया श्रम् श्रम श्रुव वर्ष द्वार्य देवे या ।

देवासनान्त्रीयासदासुन्यासहन्द्रात्र्र्यास्यानुन्यास्य न्यास्यान्यास्य न-न्दः। इत्रायाकेन-ठवार्वेन-पितावीकी इत्याया ग्रीमानितावी र्नेव-बेन्-प-बे-बे-बन्न-उर-। वेय-न्म--नु-र्ने बन्दर्श-अनुकाप**र-**য়ৢৢৢৢৢৢ৴:য়ৄ৴৴ৼ৻ঀ৾৾৾য়৽৴য়ৢঀ৴য়৸৽য়ৼয়৽৸ঽয়৽ড়ৼ৽৸য়য়৽৸৸৽ড়ৼ৽৽৽৽৽ तम्राध्यकान्त्रेरार्म्यान्त्रान्या पहेवा रवावरान्त्रं वाळवावरः र्मतः दं रेवः र्दा वर्षेदः रुद्दः वर्षेदेः शुः मृत्रेषः शुः उद्दा अवरः ख्रायाराष्ट्रभारत्वास्य यामाने यान् वितान्य मान्याना श्रीया द्वाराष्ट्रभारता यान्याना वि इत.कुरथ.पश्चेर.रेम्थ.तप्र.च्र.स्र.श्चेर.श्चे. क्ष्य.तय.क्षेय.यग्चेय.वेश्चेत.वी. . बु-धेन-न्द्रेन-द्युत्र-प्रइंति-हे-क्रु-अदि-धे-छ-अद-दिन्-क्रे-क्रे-हु----दश्यानुः श्चिनः श्वारानेयान् ग्वारान् । "D वेषान्यया नः पर्वव अधर मु र व व सु अया पव र र । गर अया पव । या प्र ह न व **क्टर्या**विरायम् अक्षवायम् न्यु राज्यु राज्यु यान्यायम् यान्या स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स ब्रह्मतः बहुना कु च्या भेना के त्या निवास निवास करता वि.च.वी.क्रे.पवेर.क्री.पब्र्य.क्रिय.विय.क्ष्य.क्ष्य.लय। पर्वी.रूब. न्राय्तरम्न्रवादावि वह्नवादह्वर्यायात् द्वारा स्ट्रावे ता ग्राय्त वहिवा ळॅराहुराबेर्प्याञ्चरा ने हेरालवानवानिवाववा "म्रावाकेवा **घॅर-५वॅ,५र्च्रेथ-श्रेन्थ-वर्ष्ट्रच्य-५.तृ**-तृष्ट्रच्य-५.यी-५.व्य 

① (বৃশ্ব:নব্ট্র:নইন্:ব্র:ইঅ:640-641)

बु.इ.निह्नान्त्रात्वयान्यात्याचर। इयाय देव च्व.वयान्रार मुल लाक्ष्रवालु नेतान्त्र वेद्यायदाने वेद्या केत्य में दानु द्याया ने दानु देया व लवार् ने देव हुट हेल विवास गता देव के हं लान्टा दे इस व क्ष.इं.पग्न.ब्रेट.ब्रेट.क्षेंचया.झ्बे.ब्र.इं.इंबया.पा.चै.वेब.ची.पी.बंया.ब्रॅप.ध्रंच.ता. त्त्याहेवाहान्म्यानगातार्श्वनातुः विन्तुः ग्रामा अथानवातुः उरः वैवा देयायेनया विव वारवार्या। वावराश्चा कवाकु द्यं वादे केर त्तृनः सरः महे बः क्चः न् सं बः वृवः **उ**तः थेः न् सं बः न् ष्रेनः खुरः महे वः स्वरः न षिते.अल्बयाः वृते ते अंदुर्गाः निराञ्च वृताः क्रीनः ग्रॅं मान्याः कृतः ..... (पमुर्यः) नयः शुयः हु दे वहूर्यः यह्री "① ह्रेयः न्यायः नर्रः । *ॾॅॸॱ*ढ़ज़ॕढ़ऀॱॿॖॱॸ॓ॿॱॹॖॱॸ॔ॖढ़ॻॱढ़ॱॿ॓॔ॺॱख़ॱॸ॔ॸॱॡॕॺॱॸॱॺॕॣॺख़ॱॾॕॱॱॿ॔ॸॱॹॖॿॱॱॱ पक्तु : सवारा : र हुं ता स्था में ता वरा है वरा हो । "ने वरा हो र स स पर स म्रायानम्यास् केवास्यायक्षयाति पुराष्ट्रियाक्याप्तीतात्वाः स्पर्यायन्ति न्ता इत्याश्वर्तरास्त्र विषया पर्देश्वर विषया पर्वा विषया पठला "७ नैयापदीव मु न्यं व क्या न्र स्वानु वरा तरा पर्सु न पर न्ता केटबावश्चित्राश्ची येनबार्श्वर मृत्या केव् स् व्वत्य न मृतः भ्वतः र्वादःपदीयः रहा पह देवा सहवा हिया ग्री व्याप हे नहिया या स 

<sup>(</sup>इज्यानिक्तिः वृद्याः इत्रिक्तः द्वाः ६४७)

② (त्वतःनवैःनवैःच्दःनह्नःन्नःन्वः652)

बर्दर्यं व अराज्ञ ठव पर रेबाया ने शुबायदे हें ना नृत्य वे वार्वे व सं য়ৢ৾৻য়ৼৢ৾ৼ৶য়ৢঀয়৻য়ৢ৾৽ঀয়ড়৸ৼয়৽ৼয়ৢড়৻৻ঽঢ়ৢঀঢ়৽ৼৼ৻ৢৢৢ৾ 551 ग्र्डरः बर्द धर् र्डलः घरः घम् दः केषः ध्वायः धर्दः क्र्रेरः र्वादः घर्दः । "द्र-पर्वेचयालयानवःशि.धे.चेष्ट्रयाःग्री.यर.पर्वरःश्रेचया DAI **नर्टः बर्दः पर्ः क्षापः वर्षः हॅरः र्विदे हेरः दर्वे र्**गः स्वाः हुः नञ्जिलः ... मदै ने वास्त कु विषा तु मिहें म कु र म गाद क्षेत्र सुम विषा विषय है । ग्रैं न मृतः न श्रुरः ह्रम् देः दिनः इं राः हुं राः श्रे धरः नदेः हें ः न् श्रः हुनः न मृत्याः" मुश्चरत्रः धरः विरः तः ते । यन्। क्षेत्रः धरे । यन । क्कुत्रः लु । मुद्राः तर्तु म गुरः । "ईवर् वर् न्वरः न्वेव केवा प्रदेश्या निर्मा केवा वर्षा निर्मा केवा वर्षा क्षृदः तु - सुत्यः शुचः तर्तु वा । यतः शुः । वत्यः क्षेत्रः हे तः वा यदः द्वीं दतः व ...... बह्रा "ा डेलान्यालेटा "इंराब्रेटारु क्रुन्यायम् वाक्रुय र्वटा मयतः ठन् यद्विन म्डिम्य केव मॅन पर्ने प्रयादन मुन्दि म्वा म्वरा द्वा व चःन्दः। श्वम्यःहेतैःश्वर्-चङ्गयःग्वेन्-धरःचम्यःश्वान्ययःअश्वर्नुदः विनामित्रः में वामित्रेवा स्थन्यायक्रमा क्षेरा हे ते स्टान् नुन्या कुरा र्परः मध्ययः ठर् यष्टिवः पयः ग्रुरः खयः पवः गृहेयः यः गृशुरः व वः यहं रःः र्वन्धी सु लला र्वे ८ व . प र्वे व . ये . य . य हे व . दे . व या थे . विश्वयायात्रहें त्रुवा ७ विश्ववास्त्रवास्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स रॅं**व**ॱ**स**न्ह: त्र ने र्डंब: बैग:यदर: " वॅर:ग्रे:श्रेर: रॅंव:ग्रुय: रम्ब:"

① (ব্ৰব্ৰেৰী ন্ব প্ৰহ্ণবছ্ট্ ন্ব ইল 656—658)

② (বৃশ্বংশৰী শবী স্থুমান্ত্র্মান্ত্রি ইবা 656—658)

चेर-प-रेते-वरः। "गर्डर-अर्त-र्घेव-पर्-र्ख्या-प्राः स्रिः-र्गतः र्रः। यःर्गत-विर-पिते-वेयः-पर्याः विषय्न्यः र्घुरयः गवरः।" Фवेय वृः त्यते-न्नः अञ्चन्वयः प्रगतः वेयः गवरः र्ह्यः पर्वेयः तर्मुणः मि

बर्नेन:व:बॅन:विरे:वर्डव:यहंब:बेर्ज:यनेवे:ब्रॅन:वर्तृ:यदे:ह्य: • वरःवरः। "मतःष्रवासदैः गर्देरः वेदः यः रहः गैः वसुयः नवेतः सुः नैगः पस्रमान्त्रा मगापानबमार्था सेनलायमा सामस्यकास्य । ढ़ऀॺॱढ़ॖॱढ़ॾय़ॱ<sub>ख़ॕ</sub>ढ़ॱॿॖऀॱॾ॓**८ॱ**ळॱॾ॔ढ़ॱय़ॖॸॱॸॗॱख़ढ़॓ॱॾॖॱॺॱॿॖॺॹॺऄॸॹॱ**ॱॱॱॱ** मवरकी न्मिया हरा छै अहर पर पर पहें वर्ष मवर । देर छै न् वन बै:र्ट:वॅन्वाय:य:द्वायद:यहंर्:कु:बेर्: ठेव:खब:नद:दवानगद:नह्नुर: सुल। "७ विषानवलाना स्रूरानेंदा अळवा सुराववा न सना न सुरान्दा <u> ধূৰা অ.মূৰ, প্ৰৰাশ ৰেদ্ধ অ.খুই. ক্ৰী অ.ই বা. কৰা বেল্ল ই বা. গুৰা ক্লী বা. ক্ৰী বা. ক্ৰী বা. ক্ৰী বা. ক্ৰী ব</u> चमार इन मेबर र देवा ग्रह्मा वा नेववा शुः व्यान वा में र देव । विवा वयः स्टः मृत्रं वर स्थानम् विष्यः द्याः स्यान् विषयः मृत्याः मृत्यः स्यान्यः । नर. वु. ब्रूज. लूट. वनया बचर. श्रुज. चुया श्रुव । सूत्र. हु नवा र दि. व वर. नः संग्राप्तः प्राचिता कुता तुः म्राप्तः हो । नर्दनः ग्राहे प्राचित्रः ग्राहे स्राप्तः विस्त्रः ग्राहे स्राप्त क्वि. देश. श्रेष्ट्र इंट. प्रया क्रि. देश . प्रया प्रया विष्ट . प्रया विष्ट . प्रया विष्ट . प्रया विष्ट . प्रया बळव देव ल कुर धव य विष हुर बै तर्ष

① (देव देवे कूर क वर देव 628)

② (বর্ষান্ত্রীন্ত্রব্রের্ব্র্র্ন্ন্ত্র্রের্

न्द्रायाः न्द्रायाः

ने हिलानि राष्ट्रिण्या वृत्राचे प्राप्त प्राप्त विद्याले इर्.पर्वेग्य लबापयं.प्रेथार्टा प्रयोपः रेब्र पट्यातः हेव. त्त्यालु की भेव रहें या ग्री क्षेत्र तु की दार केरता की माया भर की इसाता केन मु खुन पर्य हु ज केन पर । इन नवर क रे कर खुद्द ने खरे क्र-देनवास्त्रिक्ताः विकास्तराह्यः विकास्तराह्यः विकास्तराह्यः विकास्तराह्यः विकास्तराह्यः विकास्तराह्यः विकास बरायासम्य वे झार्राम्यमाने सुर्भूरार्गा अर् द्वरातु वृ र्वर चषु.ची.चीळातकीर.खरा.झवा.चील इरायायकथा.की.यरायधरापट्टरारीटर. मबेदी चुरामहर् बर्ग "ने अनवा सराम्बदा करा बवा वक्षा विदे ब्रैन्ट्र-धेद-१म-वय-धेर्-र्मगवाग्री-८कर-झॅं-४ यायानुर-उर-। क्रेयासु ढ़ऀ**य़ॱय़ढ़ॺॱॾॖक़ॱढ़ऀॱॿॖॺऻढ़ॱढ़ॺॱ**ॣ॔**ॱढ़ॵॸॱॷॾॱढ़ॗ** वर्षवतालु दत्ता वेदे संया गुता परामा देवा धेदा मार्चेरा वाकवा पदे गुः वस्या प्रि.स. इवया क्रि.पवा क्षे. इ.स्व. श्रीर. पक्री. प्रा.परी वा उरा *ৡ৲*৽য়৾ঀ৽য়৾ঀয়৽য়৽য়ৣ৽য়৾৾ৼয়<u>৾ৼয়৾৾য়৽ড়৾৾</u>৾ঀ৾৽য়৾ঀ৽য়ঢ়য়ৢঢ়৽ড়৾ঢ়৽ঢ়৽য়৾ঢ়৽৽ঢ় **४ॅ २.बॅ ४.**८ वर्षा बृथा लूटालका से ब.क्. ब्राया क्रीटा ब्राया के प्रवास की .. ..

चंद्रः क्ष्मेयाश्च स्तर्भ व्याप्ता व्यापता व्याप्ता व्यापता व

श्रु.स. 1790 म्ट्. क्ष्मयाष्ट्री.स. क्र्यान्यास्य पाडे क्र. प्रतान क्ष्याय प्रतान क्ष्य प्रतान क्ष्य प्रतान क्ष्य क्ष्य प्रतान क्ष्य क्ष्य प्रतान क्ष्य प्रतान क्ष्य क्ष्य प्रतान क्ष्य प्रतान क्ष्य प्रतान क्ष्य क्ष्य प्रतान क्ष्य प्रतान क्ष्य क्षय क्ष्य क्ष्य प्रतान क्ष्य क्ष्

कुल-५नर-अक्रम्मे,श्री, अकुर-इ-दे-दे-द्र-द्रश्ची, अस्थर-द्र-त्र्यः अस्थर-द्र-विक्र-त्र-विक्र-विक्र-त्र-विक्र-विक्र-त्र-विक्र-त्र-विक्र-त्र-विक्र-विक्र-त्र-विक्

①(「四月、日南、日南、日南、日本、日本、一百五十五、日日日)

पहर्याक्षय श्रॅ-रायूर्य कुर प्रयुक्त क्ष्र-प्रायुक्त कुर प्रयुक्त श्रू-रायूर्य कुर प्रयुक्त श्रू-रायूर्य कुर प्रयुक्त श्रू-रायूर्य प्रयुक्त कर्म प्रयुक्त स्रायुक्त कुर प्रयुक्त स्रायुक्त प्रयुक्त प्रय

पर्वा स्वा स्व त्या स्य त्या स्व त्य स्व त्या स

① (न्यव पति पति चुर पहें नेप दें र 714)

बेर हे वै विरामहेबादबासु मावदातु महादसहेबासु में रासदे हे """" च्याळे द्रात्व म् व्याप्त त्रुम् व क्या म्याय वित्व म्या ेब्रायावी वृ त्यते त्ता अप्तात्रा अप्तात्र त्यात्र स्तात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र विषयमाची वृ त्यते त्यात्र त्या स्वः है न्यः देवः यः ने : धेवः यः न्यः। न्ययः व्वः नेवः यः वृ यः वृ यः क्रेव्रःश्चरःयतुव्यादीः व्ययः हेः व्यवः या श्चरः न्वे ततुवः न्दः ग्नियामानी द्रापितानु यान कुरायते कुराय इ.च.दे.र्म.लुद्र.पर्में कुरा पर्न.मुद्रेशः कुल.वरः र हिरा नर्में र हेर् भ्रमताकाषु:प्यम्ताचेरामार्चेरताळ्या ठंवाधेवामावी:न्यादानवी:मदी:... ब्रैट.न्ट्रं-पथानुयास्तानु प्राप्त व्राप्त व्र यवैवःसतेः श्रम्यशः शुं में दः करे नगायः सदः सम्बद्धाः स्वरः श्री देवा हृ 'यदे 'शु 'हेर 'हेरा कर माउँ र 'शे कॅग पा है 'शु रा ठव 'शे श्व कर 'यर में ' नया गुराळेत् सुनामा देवा प्यापान विनामा निमान विनामा निमान गुर्। म्रें रेब देर बेय वी के श्रव श्रीर श्रीर श्रीर स्रेर विवल श्रेर लानेति बहा। "इर् तर्ने राष्ट्री र गु वहा विष्यु ग विषय विषय हैरा नवयान्त्रंतात्वर्तान् चरतान्तर्ताता केवर् वर्षात्वर्तात्वर्तात्वर्तात्वर्ताः ग्री पहूर्त त्र्री स्प्रिं त्रा पा पर्हे प्रता न में रहा है। श्रुप्त अमें द में न में व्याम्यान्यम् द्वार्षियात्रे व्यवः ने व्यवः विद्याः वि

<sup>्</sup>र (क्.वे.क.भट.म्.इ.क्.म.म.म.थेश.पष्ट्र.तपु.मवेट.पुय.वेथ.थ.

ब्रुया: व्याया: वर: के.वया नगत: विच: नहेर: क्रें के.के.वर: वेर. ব্রম-ট্র-জুঝা্হ্ব-ব্রাইন্-ন্ন্র-ভর্-ট্র-শ্রুন্র-র-মুন্র-মার্ক্র----য়ৢ৶৽৴৴ৼ৽য়য়য়৽ঽ৴৽য়৾৾য়ৢঽ৽য়৾৾য়৾ঀয়৾৾য়৾য়৽য়৾ঀ৽য়য়৽য়ৢ৾৽<u>৽</u> ठ८.श्रुवे.८ल.चर.ब.चक्रूंश.सर.थ.चर्या. दुर. मूचे.लब.चेथ.चेर.क्रूंत....... भूर्-ग्रि-क्र-स्तु-वर-प्रमुबाद्यायेवयायद्वर-व्युर-भूवयादि-स्-रुव्------थ. दच्यान्यतः महायाची : व्राप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता विश्वास व য়. बार्चा क्रिंट मी त्या है। स्वाया से म्या स्वाया Bर.चयश्चरं श्चीर.वि.चयाक्षचयाचश्चाः ब्याहो सं.चर.क्षवे. सं.चर. ন্ৰ্ব-নেনু শ

देन्त्रक्षेत्रत्व्यायम् वित्रक्षेत्रः व्यक्ष्यायम् क्षेत्रः व्यक्षः व्यवक्षः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्यवक्षः वित्रः वित्यः वित्रः वित्

**ॻ(र्वतःवते वते व्हःवह्रं रेवःर्वः 715—716)** 

हैं.पपु मि.बपु.श्रेपु.वि.मू.श्रे, विनयाला वि. वयायान्य । स्या व विवा र्।य.चलु.ग्रीट.मङ्गे.५.बहुब्रामयासीया सम्बार्श चेर पर्दे रूरा स्वः द्धंवः ग्रीः न्वं र न्वः न्वे व धेन् विवा क्षेत्रः ग्रीः संन् व्यं नः यहावः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः मोहेयावयाश्चावित्याव्याश्चानिवयायायावहानान्ता न्मातः मब्रे. प्रक्रे. रे. रे. ये. हे वे कुरा श्रे. ये ब्रे ये या ब्रू रामका स्वया विमायनका <u>हे हिर्द्धान वेदा शुर्श्वा रहा र नदाय वे प्रमृद्धा स्व</u> तहेंब-५५०:५५५५४ हें खेनसः बुह्न न्**र्**ष दर्वराज्ञ कन् नहेंहः .. चु-र्यम्यानह्र्न्। ह्यं या द्वाराष्ट्रं या देवा विष्यान्ता वित्रह्रित् खेराहे वि **पॅर-पलुग्राक्षया-२ दाइया गहेला निग्राय-४ ग्-परुराय क्षेत्र रोटा देवा** हुरः चृत्रेक् म्रायित्य मादाय विवासः व्याप्तः विवकः स्रायः प्रायः विवकः इं**द**्रम्तरमित्रमित्रम्या देवा के निर्मेत्रम्य स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर्मा स्वर नदे बेट हैं में स्रिन्यर स्ट म्वेश में र म व न्या लाख नव न कुर में ट स केव'र्दर'ग्रेर'क्रव'यार्क्चव'पर'त्र्वं'वुर्याचल'म'या बर् । ह्रार्व्देरे ह्य देव क्ष्र तेव के के क्षर पर दे किराया केव में दे मारी राष्ट्र व र दे दे राष्ट्र र केव र दे दे राष्ट्र र केव प्र-पर्वे बेयालयानय विषय प्राचितान्य प्राचिताना \$ 81 मठला ५२ क्रॅंन ख.रेंन्य के चेता वे चेता **क्षे.बंदेश:घर्.लंबूट.**ब.कुब.त्र.ब.चेव.पक्क्ष्य:पविष्यः

इनासं प्रज्ञन् अद् दुर्द्दिया "० वेषास्वराज्ञु केव विपादिदः क्री.मूर.क्यल.र्टा ल.वि.झे.र्टर.थ हेचा झेश.थ.हेच.श्रवंध व**ड्.ट्व.** पञ्चलाने व्यापन केन तराञ्चन भेगाय बेन निमा केरान्येन पने सुना न.मेबेथ.भे.क्न.पे.अरब्यार्इट.बेबटा व्रट.बेबेथायतातीता. थे. ৭য়৴ব্রান্স্ব ব্ল্ব্রান্স্ব ব্ল্ব্রান্স্রান্রান্স্রান্স্রান্স্রান্স্রান্স্রান্স্রান্স্রান্স্রান্স্রান্স্রান্স मॅ्र-ब्रुंग्याव्यापम्य व्रुंद्र-संग्या ब्रेट्र-ठद्र ब्रेड्र-व्य प्रेट्रप्र ह्य देव र क्या होन् समया सेन् र द्या विं व मन् केरा सेन स्त्र द्याप्त न्तरम्बन्य बेर् यम्य राकु यात्र्र्रायि मुद्राम्य राक्ष्र् र्यम् व्या ग्रॅंट्य.त.र.रेटा रे.ड्य.ड्य.र य्व.परे.ब्रैब.तथ.धे.बर्बेट.पह्य.ब्रंय. लट.लट.व्यातपु.वावत.वार् च योप.व्यं वे.चंत.चत्रे विवाद्यं वापती. निविद्यानी श्रु क्रिय स्वरा निया ध्या निया मुल्य स्वरा मिता विद्या स्वरा मिता विद्या स्वरा मिता स्वरा स् त्रुवाशु तर्चे रायाचा न्वेवान्ता ने प्रसूच हा वावृ न्वरायवा स्वाता केमा ग्रीता नाइया परि मूना न स्था में वा स्था तम्पुरम्बी, रेटिलाझ. क्या. मुया. यक्क ये. सूर् निलार् नर्या लया. ह्या खूरा परी ला. र *ज़ॖॱॸॣॺॸॱॻॱॺॖॖऀॸॱफ़ॺऻॱॻॸॣ॓ॱढ़ॾॺॹॱॠॕॸॱॹॺॹॱॺॕॹॱॾॕॺ*ॱ ダイ・イエー बदतक्रिट्याचु वहूँ पहूँ प्राम्ठयाची न्ब्रीट्याम्ब्री राष्ट्रवाद्या हैता रहें रा मरामहेबा वॅन्पल्नायान्यताष्याम्बन्तान्यतान्वः मायकार्रम्काय में नृत्र का सुराधिनाने मानुवान्य मानुवान किया में वा छ निर्मेका बेरः धरः । ग्यायः खया पवः र्रः । इगा परः श्रेर् कुरः वै व व व

व्याह्म स्थान व्याप्त व्याप्त स्थान वृत्र अन्य रत्य द्वा भाषा या वार्य स्वा क्षेत्र के ता के राय मुक्त के ता खेर खेर खेर हो राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र बेव नव रन रर्टा हैया विश्वया बहूना न ख़ुवा नविषा मुन्याया है से न्दरः तुः भुः नविनवा 🛈 अनवा ५ दैरः वॅदः ग्रेः तुवा नवः नह वः हैरः बेदः परः पहेव में र या कव सिर विषा व स्वार हा यह कर हिर्मी विषय स्वार क्र.क्ष्याः श्रीताः पद्धः अ. भेराः भ्रान्यरः नक्ष्यः पद्धः यात्रीयः पद्धः पद्धः पद्धः पद्धः । नवरावत् ने पराश्चार्यराया च र् क्वारेवार्यः के व च या श्वर्याः शुःगयवः नवयः गवरः भनवा मॅंदः बदेः नगवः बळें न नुवः रं सं वेदः क्चै'बयन् न्नः वरः **वे**नरा **र्नेतः** न मृतः खरः त क्चॅरः सः न विद्यः ह्रेनः क्वॅरः क्चैराः "हॅ़ द.पह्निर.क्श्वयावना छ। नि.वयारेवा च्चें दाचे पदी छ। छ। द्वारा रया ... בקקים שיארמין יפֿרמיאָרמים אויפֿרים יפֿרים तु 'अरग्यायते' (ग्रॅर'नग्रातः) व्रथयाधेर'र्यव्यापातुराग्रांतर्येवः व्या इ.र्ट. पर्यान्थर श्रेच. १. पर्वर त. च्रेच १. इ.र्ट. नवश मु . वे . ब्राट . ब्रेय . व्राट्य . व्याय . व् इराक् विन सु तायवायया कु विन सु हिन् चन निवया सदा पदे श्चर-ग्नायारुव-ग्री-म्रायाधेवा यर्याग्रुयाग्री-पद्गव-पद्गेत्यायाः स्वायाः मझव्रास्त्र च्यारा न्द्रक्त स्वावाय स्व देशस्य त्रिशेर की पहें वा मार्टर या श्रुट परि श्राय की द **ผมาธิราคากคายีวิวิรัสา**ตัวากส**รายีวายๆาชิรา**ตัรากวิวิธีกาญ **ब्या न्वाह्म कें** व्याह्म ब्या केंगान विवान केंन्य नात हूं व्याप केंग्य व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याहम व

वितः देव नगः राग्य वानवि विवेद वितः विन् विन मुग्य कुः विवः स्वय कुः विगः वि. १५ - जान हे ब.त. जान यवा वया है. श्वा. वि. वू. श्वा. वे. वी. व्रू. जा ने ट. **६.यम.** (त.) वे.श.म.चर.तर.बुब.कर.च येत.श्र्य. क्षाय. रंट. पठळ विषातृ 'यदे न्ना याया रेषाया हो ए की । यया देव । पही पा हो या के मा के न वेव । न्द्राची के स्राम्य द्रापत स्वापा स्वापा स्वापत नःतुः र्वेषा तुः व्रिंदः श्रीकार्दः तुः त्राद्याते दः श्रीवा वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व युराश्चि द्वायान ने श्चित्राया वित्राम्या निवास माधवापराचेर। ब्रह्मर सुना न्द्रः ब्रह्मव स्पराय ग्रीया व रेशेर ग्री पहूर स्परा में दर ন্ম-ট্রন্য वृ त्यति न्त्रा अत्यार्भ माया ग्रेया वया में वर् मा गुरा भागा न नरः শ্ব-দ্রমীথা च**इव.तर.**च ग्रेथा श.क्रॅर.तर.च ग्रेथा , र्षेय.त्रचय. ⊕िंच-क्षेत्र-पूर्-ति-क्षेत्र-पूर्व-पश्चित्र-प्रविच्च-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प्रविच-प् "......शु. तिवरक्तर अप्याधन अर्ह्न दे दे दे त्या छन्। येन ता मूर्यं व्या मूर्यं रायराय वीला श्री अध्या श्री ला है । मूर्यं है है । मायरा श्री रायरा स्री नव्याद्धंतावयाग्रमः। दे अनवाह द्वाराषा वि (वृ त्यदे न क्वर यदे । ि ) लग्यास्ति सदे निर्मा नेया है प्रतिव में व विवास मुहा विदा नवः महिकाक्षे ने अनवः निव्यान् सुनवाक के नवा भु वकेन के नवा के खु-५व्रम् मामवर्गः (क्षम्यः) व्राप्तर-र्मर-स्व-र्मयः ५मरः (क्ष-यरः ष्ट्र-पर्वः श्रम्याने देः न्यं क्षाप्टः देवाः) तुः मलु मायाः "® देवाः मायायः मः द्भरःगल्दः द्वायः न्यरःहतः क्रेरःगव्दः वः स्वा

① (কু : র্ছ না : র্জ: রুর: ব্র: বর্ : বর্ : বর্ জ: র্রা না নার্র জ: 140)

②(ड्यारनव कॅवापड्ड स्मेयान्गर वे क्रा होता वा में माल्य स्व १८८)

"लामु लगवा में नवा भु माने वा ( पू प्य दे भू माने वा कि रामे म क्रयामदे में देन वन्यो प्राप्त देन पाति में विन क्रवाश्वर येनता मु ॅब्न्: (ह.क्रन्:) क्र**रःव्रययः रम्**यः तद्वः त्यादः च्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः व्यादः न्दः मॅरे वदः च हे नवा वदः सवादः म्हा कवः वदः र्वेनवः देवा ग्रीका पश्चर मा स्वापा स् सदै वर न्वेन्य सदै स्वयं प्रं कुर्य दें दें के स्वरं स तपुः चिता कु. रहा विचा निवा विवा झे. कुहा लक्षा पव प्रतिहर स्त्र चिता प्रमुख स्या महिला क्या र सार्मा मरुवा स्था निर्मा कर माने स्था मिला स्था मिला स्था मिला स्था स्था स्था स्था स्था स्था ववःपञ्चेदःबह्दःगुद्रःषयःपवःग्रुषःदस्यःश्चेत्रःवेद। धरः स्वाधिवयान् क्वा चुरा " <a> विवादिनः दत्त्वा सः क्षेत्रः व क्वाः</a> विक्तिः स्वार्थित्यः स्वार्थियः निर्वेशः स्वार्थितः स्वार्थियः स्वार्थितः स्वार्यः स् चुर-५५-१९८। वेर्य-हेयाय-इ-यर-धेनय-तृय-वर्-। **"......ह**′&नाहेर्द्रश्चेरीनाहु\*कु\*वेनलायशनरःवलाहेरःनकूर्ः \*\* \*\*\* बह्र-पथा (अन्यत्मन) इ.प.चक्र-पद.क्र्य.चक्र-वेब.सं.यर विवयःह। संदेरःबॅदःयायळॅन्ने दर्वनः ययःश्चे रवादने नयः ववयः **ঀ:**ঢ়'ড়৾ঀ'ঀ৾৾'য়ৢ৾৾৴'ঀ৾৾ঀ৾'য়ৼৢ৾৾য়'ঀয়ৢড়'ঽয়'ঀয়ৢ৾ঢ়'য়'ঀয়ৢয়ৢ

8. व्राम्यास्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्यान्त्राम्या

<sup>(</sup>मिलार पथाक्र्यापद्वीर वेला व्याम्बार्था ४८),

②(देन:बेर:बंद:बंदे:द्वेन्व:वु:वृ:वृन्न्न:चह्न:19)

मन्तः क्रमः मन्तः क्रमः विष्यातः क्रमः विष्यातः क्रमः विष्यातः विष्यातः विषयः विषय

वेनवायदे गरने न क्षुर धर हैवान् वें वान ने हुना मानवा नहीं निते श्रेन्द्राम्दास्य विषय्त्राचेत्रयः न्मेयायदेः धिन्ने तम्रु राद्येतः सुदानरः महेवा दे तस्यार्वद् मलुवाराष्ट्रयान्व महेवा व्याप मातः ह्व द न्यादः नवे नम्बार्टिन नियात्वेरायात्वयाद्वान् में यापरे नमारा नम् इंग पथाऱ्यायाचगपास्त्रं वायाः विष्यः द्वायाः विष्यः विष्यः श्चिरः ह्. ञ्च. श्रेषः चक्ष्यः श्वेषः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप रा.चया. वृथा.स्व. स्व वया. च रुषा. ह्वे या ह्व रा. च क्षा. च रूपा हु रा. च क्षा. ह्व रा. च क्षा. ह्व रा. इयाय्याय्येत्राच्या व्यवस्थान्या श्रीम्याः য়ৢ৴৽ঢ়ৼ৴৽৻ য়৴৽৻য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়ঢ়৴৽ঢ়৽ড়ৢ৴৽য়ঢ়৾৾৻৽ঢ়য়৾য়৽ डेन्-न्म। हाम्यार्वम्यन्। ययान् वेम्यान्ययात् मृन्वं वास्तान्ययात् <u>५८७० जु. च्र. च्र. द्र्य द्र्य प्रमाद प्रवेश प्रचर द्रा पञ्च ता प्रमाद प्र</u> नैता क्षुव भी दिना वा क्षु विवास क्षिया है कि दान है साम विदार दे ने वा तपु. प्रणेष. में त्या अवायात्या. प्रपु. श्व. प्राप्त. प्रपु. वर. प्रणेष. <u> ब्रॅब-२नदःन्धःन्द्रेय-२८-वङ्ग्व-ब्रेट-इ-यन्-४-यय-२४य-६-यन्यः -</u> ह्नाः व्रवः श्रीयः माने या द्वारा स्वरः प्रवादा स्वरः प्रवादा स्वरः प्रवादा स्वरः प्रवादा स्वरः प्रवादा स्वरः स 2. मूर्रिकुल कुर्रित्यम् र व्यक्षास्य ह्रा स्वर्थन्य स्वर्थन्य स्वर्भित्य र म्या

चडराम्बर वदार्द है नदी राय थे दि है हैं र दें र वेंद्र वेंदर हैंया .... न्दा डेलान्यवापने स्वाप्यास्टा हर्षे वात्र स्वाप्यास्टा विदा वयाञ्चव प्राम्यायायाया विवादस्य हराया चात्र विवास्य स्वया ग्रन्नर्विष्युं न्यान्त्रव्यः वरः स्टर् दः तत्तु याः श्रु वययः न् व्याः स्थाः विष्ट्रायः क्र-मिव्याके छे अ.क्र.क्र.हे.हेर.रेस्। तत्राक्रिया प्रेर्टि हेर.हेस **६ यॅ द**-पने <u>ख</u>्ना य दिन्या ग्रॅन्य र्येट पदि न्या द्वारा द्वारा क्रिया । स्ट मवतः वरः वः यदे दः क्यान्यः। मवता यः में वरः यः यवता वर्षा थः ने सुल न्या हा या तु न्यर प न्रम् न्यम न्य व इस या देवा ग्रं के त्र सन्दरम् स्यामकयायाये विष्ट्राञ्चे राष्ट्र सम्यामन् द्यम् बै:द्रः दब्रकः द्वाग्रदः नैदः हु:बरः व:वैम:दब्रुं र:पवेदः प्पंतः ..... क्षरणः श्रूषाः मवरः तीयाः मविषः वरः क्षरः पर्यं याः पर् প্রস্থান্ नब्बि-लास्यासु द्वा परामृत्र वदा द्वेया कुरा है । द्वा न न द्वा है रट.ब्रुच्यायायदर.क्रिट्याक्चितात्वाचा त्सुटाय व राज्यहाके 95.22.1 **ेवन** अन् व क्षेत्र के ते हिन् द्धंत्र रूपंत्र राज्य का क्षेत्र के निमार्वेद के ते निमार देश.५५५.५५७ । अ.क्च. इषय.ग्रंथ.५४५.ग्रेथ.४१ वक्षयय. द्वे कॅ नदे क्रुव रोट द इं र दें व इ बया है यर कु ने र ज़ र दें व हे व . . . . म्याःशुः हु । चयः देयः च कु न् विंगः स्वाः स्वाः हे । न ग्रायः यवः यः ये न यः । नेयः । । र्गर-६-श्रुग-र्र्र-छरा-५५ग-छरः। "कु-वर्-छ-रवर-छ-प्राप्त क्ष्य-मृत् मृत्र-हेर-व्यान्वर-क्ष्य-प्रदे-प्रमाग्रेय। क्षर्यामुनः **न्यम् बेन्द्र-द्रा**द्र्यर-क्रे-द्रिम्-द्र्यम्, द्रिम्-देन्

ह्य स्वय र गुर्य वेदःरेय ह्रा नेर् ह्या प्रेय प्राप्त वर्रा र वाया वर इसराम्हरादरा राष्ट्र देव द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त है । द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त देव द्राप्त द्रापत द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्राप्त द्रापत द्राप र्में व हिर विया मी कु र ठरा रे छियर ए र र छ र र म राय व र र में रा में व "" क्रमा श्चे रे व ग्री र वा वव इ र द र व र र र रे र र व र र र हे न र र व व व र र व व र र र र र व व र र र व व र र वदः अर्हेदः यः नज्ञयः वद्यः विदः हय केदः यः दद । नज्ञदः कद्यः र्वण्यः श्चर राम केर श्रे केर हर्या द्वरा मा इस्या मा द्वर दर केर तर् तर राम हरा मा स.र्य.र्धः पर्ट. व्याक्षरः या होत्राचरा विषयः क्षयः होतः र्याया सु ग्राम्या निर्मा के के के के त्रीवा मते कु नरुषा ने के प्रतास्या में वा यह न न्क्ष प्र प्र पर्वे वर लवा लवा प्र क्षेत्र के या वर वर के वर के वर के तर्नु मः केष दर्जिन। " (1) बेषाम् वायानः स्ट्रायम् न मृत्रः वेषाः वे विद्रः नवै र तर्दा तर्दे द से पु । इस तर् मा मर न हे दा मल द में सु । सं प इयल न्दा ८ म् ल हिते शुं कंग वर्षे व व वे र ल हिन य न्दा हर हिन हिन बूर-रेटटा याश्चेषु-भै.क्ष्य-चरुध-पुत्रापदूषाया केषा केर्या कुपः न्यम् श्रेष्वयः ∴ कुँरः देलः वेदः प्राप्तः । र्यः वेदः केरलरः यव्यः विदः बाळॅनि:ळे न हुना गुरः न्दाबेर् पठला न्वना बै त हुनः नेते त में त न्याः च्.लयाचे. ¥ अ.थयार्थरास्टरास्टर्सराम्बनाः हे। नेवरा वटा अहरायाः वट.इट.पर्यं थ.थे.पर्वेरा ८ई.अंचय.चंघेत.शुर्.यूचेय.य.बक्ष्यय. इट. ७ म्. इ वया जा पट विटया वया या शिट न वयो श्राम के सूर् रे महिवाया यर' न्यम् इत् क्ष्रिं न हें व प्राप्त क्ष्रिय हें मृत्र खु मृत्र खु के क व कर र

Ф (र्वाय पति पते पुर पहर देव देव रेव 749)

य्यान्त्रेश्वरः तहूनः नवरः क्षेरः नवरः वीः श्वः क्षः तहूरः ह्ववः ह्वः तन्त्रः ग्रीतः विदः तन्ति विदः तन्ति विद याषान्त्रेश्वरः तहूनः नवरः क्षेरः नवरः वीः श्वः क्षः तहूरः ह्ववः ह्वः तन्त्रः ग्रीतः विदः तन्ति विदः विदः तन्ति विदः

नग्रत्ज्ञं व ग्वे रार्टा अर्टा र्यं व अराधा उवादि व रायकरा मृत्रतः वृत्तः वतः वृत्तः वृतः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वतः वतः वतः वतः वतः वतः वतः श्च-इंबयः नवर वर वर वर वर वर्षे अर वर वर विष्य वर नवर वर्षे .... ন্ত্ৰাকা শ্ৰুম:য়ৢলাকারকামের রিলাকার বিলাকার নির্বাধন বিলাকার क्र-विन् हुं नवाञ्च कंप क्षा क्ष्र- नव्यापन नवेवाहा हुया स्परा *ञ्चन्यान्वना* तनेन प्रत्नुराञ्चन्या न्हेन ज्ञेन ज्ञेन ज्ञेन प्रताप्त । त्तुःवावुः न्वारः मराधिः वो र छेन्। मन्नान्नाः "त्तुः वावुः न्वारः न्नानः न मॅरापिते वे इ इवका गुर देर तुका मृत्र वर दशका तु व व र व्या त्रै ध्रेन्यस्र**ाइवासुः ई** नेरानम्दार्स्त्र नुरासुः व्ययः वयः देन् वृ न्वर प नेष वनव ग्रैय दहेन् प तु द सुन प गुरा है। मल्मायालयामन्द्रयाम्द्रेयाची यतुन्तुः द्वेतात्त्वालः क्वेते। मतायेनः बह्र-परामहेबालयानवानवेयानया देवाञ्चन हियानुरावया न्वराह्यराहे र्पराची के लिप्राच्या में राज्य न्वा में वा नवरा मुद्री वरः क्च्यायाव्याचिषामुद्रायद्र्य्य् स्त्र्र्य्त् स्त्र्र्य्य स्त्र्य्य स्त्र्य्य स्त्र्य्य स्त्र्य्य स्त्र्य स्त्र र्'त्रमानकरान्ति, बुलाया ने अन्यान न विवाचेन् चुरावर्ष्ट्रवाक्त्रवाक्त्रवाचित्रवाचा वात्रवावाविवाचे श्रु.क्च. ट्र. वर्ष. व्रम व्याप. वर्ष. वर्षा की. विवया ही. ट्र. क्ट्र. द्रम् च

ॻ (न्नव निवे निवे नुर निह्न नेन नेव निवान

स्वारा स्वारा हुं नाविता वर्षा स्वारा प्रस्ता प्रस्ता स्वारा स्वारा हुं नाविता वर्षा स्वारा हुं नाविता वर्षा स्वारा स्वर

ब्रै**८**ॱहं 'क़्ॱऄॕॺॺॱय़ ॻॖॺॱॸॣॱढ़ऄॗ॔ ॸॱॺॱॿॺॱಹ॔**ॸ**ॱॺॱ २हें वॱय़ड़ॗ**८ॱ**ॿॖॺॱ**ॾॕॺॱॱ** क्रथ. धेर. र्राष्ट्रेय. धेय. वया वया या या वया क्र्य. त ट्वेर. ह् . या र्रं र. ह्. या र**या** र्रः। अर् श्रुरः वृ र सरः नवेः य न्याः य न्योः ये नवाः न वे सः न ग्रंदः ह्वः द्वातःचवि नवि व्वेशःहरःतु र्षेदः हे नवा हिते नवादः व्यापातः विवा विनया: प्राचितः म्वावितः महीयः यवेषाः पद्मियाः मृतः प्रमुद्धः शुःरेवः सः क्याः महिरः शुरः मव्रतः वरः तश्यः वरा स्रदः तर्तराशुः मिन्यः परः लाक इस्राल में राषा भाषा मुद्रान्त नातृ सः गुद्र नु शुः । । । । । चॅन्-मृत्यान्यन्-तम्मा-छेन्-छेन्-छेन्-छुत्-छून्ता-नेति-स नशियानाः अर्माः द्वारात्रवाः श्रीयाः नैरामदे स्थारः श्रीयः श्रीयः वीषाः नीषाः । য়ৢ৾৾৴৾য়ৢ৾৾৴য়ৢ৾৴৾য়ৢ৾৴৴য়য়ঀ৾৾৴ড়ৢ৾৽ৠ৾৾৴৴৻ড়৻৴৻ঀ৻৻য়ৢ৾য়৻ঢ়য়৻৴য়৻য়৻৻৽৽ न्शुयःग्रु :न्वर:व्यायव्यः हे :न्य्यंव:पञ्चर:ग्रुय:प:न्दः। दे.पस्य नगादः अन्तेः त्यताः च त्वाराः म्याः इ अयः न्दः में नः न् समाः यदः ईवः त्याः । । । पहर्मा ग्रीया श्रे स्वर्धः श्रु : र्मा संग्री म्या स्वर्धः विराविषयः स्वर वितः श्रुका धरः दर्वेषः भ्रुषा व्यवरः पः नृतः । भ्रेषः स्रुः धः । भ्रेषः नृतः नृतः नृतः नृतः नृतः नृतः नृतः न विषाक्रिए क्षित्र स्विता या निष्ठा स्टा प्रमादा स्वर् दा निष्ठा स्वी स्वर्णा स्वर् बर.कु.च.कुं.चढी.सबी.पबीप.चथाग्रीयानरःज्ञूबी.स्थानपरःबीया........ तहर्याययान्त्रम् र वाष्ट्रम् वेद के विषा पर्यत् स्वया महरामा पर्या महत्रा वरःभ्रावरःगेः छे वरः करः व्यावनःगे हिरः हु र्रः श्रे रंतावर्गः प्रेवनः वृत्तः व्यवतः नग्रतः वर्षः वर्ष्युवः वर्षः व्यवः वर्षः व

मु देगल न स्व छ्रा सर विव महेल न दल ৰ্বৰ্ত্তেদ্ প্ৰাদ্দ म्र-८थन.मी.रस्था.शे. १६वा.हे.५ बंबा.रे.स्वा ने वया गष्ट्रवाश्चीरा मॅर-न्यॅब-इर-सुब-सु-ई-न्र-वेर-घ-न्द-। वर्तु-इर-वनवाशुव-প্রহার হা अर् ब्रैर वृ र् यर परे वृ रे व्यापार ब्रूर वेर वेर वा कुल য়৽ঀৢ৽৴য়য়৽য়৽য়ৼ৽ঀৢ৾৾ৼ৽৻ঢ়য়য়৽য়ড়য়৽য়ৢৼ৽ৼৢয়৽য়ঀৢ৾ৼ৽য়ৢ৽৻ড়য়৽ঢ়ৢ৽ড়ৼ৽ঢ়ৢ৽ मु की न्यं व स्तर्म वे वर ने विंव विंव निंव की वे व विंव स्तर ने वा निवास न <u> রবিংক্ষারে বিষয় মান্য মান্য মার্য রবিংক্র মার্য রবিংক্র স্থারে ক্রিমানিমার্য রিব্যক্ত স্থারি রিক্তির স্থানি</u> न्दा नगदाबन्दार्थम्यार्थन् वी इ सम्मान के नुषायार्थयान र सु न्नद ह्यनानी र्स् : श्रु: ह्र : वर : मव : मुल: तु : नवरा मिरे : हे : त ग्र अ : य : वृ : दे : स : ह्यु : ते : ष्रामद्वर्भः व्यक्षः विदा इदा चर् प्रवेषा यम् साम्या वरामः **ळे८्-५ु-**पर्झ-पङ्ग्वादयादे-ग्वर-पर्छद-झ्वर-पर्छ्ग्याहे-ञ्च-प-व्र्व्य-क्ष्य-**४** या प्रतिवार केरा। दे विषारीया प्रतिवास विषय स्था से या से या से या स चलासुलावळॅन् हेवा चु रठराव में रातु चववा या संग्राविचायान्वतः मले नदे चुद्द महू न् वट म् वय में न्

क्ष्याची स्वयाची स्वय

न्तर्वर वह पक्ष प्रति निराम्य इस्तर देर वेष विष <u>ञ्चॅरायापञ्चर्रायदे अ</u>त्राह्याह्याह्या द्वार्यायम् ज्ञाना यतुर्वायदे व्या "तुषायदिनम्बिन्याम् वी वित्रक विद्राहि हिता वित्रमा विद्रायन विकास षय नव-रूर-विराध भर-क्षेत्रक्क राष्ट्री-वर्ति र्- पठर-वर्षा मेर-र्वान-इवयान्या वियासुन सं राय हुराने । यूराय निया या ववा वा वा हुनाया त्रैरः धरः बैं : क्ष्मल पर्दे : रेलामः बैं : यह वा माना है लावा हु : यह वा स भु·न्देशःपराने दिन्नान क्रिना मार्के राज्या के क्रिना निक्ना क्रिना क्र मतु खार दत्र दत्र मह केंद्र देव में के मद्द सहेद लुका है के कि है र ख़ र्वस्यायत्रीत्रास्त्रेत्रास्त्रेत्। हेलानेत्रादुण्ट्यायाक्ष्वानुसायरीत्रस मु र्वाप्रस्तुरायः क्ष्मारा सुनः सम्प्रसः श्री त्र्या यहः क्रेवः नेवः येः के विनयः न सुन् विनः कः नशुदः स्या अहं न् केना छेयान मृदः वेनया "① विषानिष्या विष्या ने म्हेलाय हा केंद्रा में के म्स्या स्वया श्रीया मस्या मॅर-५वम्।इवयाम्वियाचेर-५५५-५५ म् म्र-६वम्।यम्। वैया क्षुवः यं ते : न्वावः वहः तहं यः हे : न्वोतः न्हु यः क्षेत्रवः नेवः ये : केवे: नेव्यः ....

① (तह्याम्चीर वहत कृतः मृत्याम्यः)

न्दा न्द्रभेषार्यम्य द्वमान्द्रयाञ्च तानेदा श्चरम्य हिदा न क्रमा न क्रमा विकास में निवास क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रम क्रमा क्रम क्रमा म्बर्धिता ग्री श्री राष्ट्री श्री र श्रम् नवार्षर् कर् हुर नवा रै'न'र्राम्यान्त्र्यान्यम् स्रायात्रम्यात्रेमामीयायास्यामी 'न्यान्यमा बेना बर्हेर र ब पर व हुर २ र हिर हिर हो ल हिर ५ वन ह बता *ढ़्रे-*ॱगशुअःक्रेवःन्*तुशः*श्चेंग्यःशुःर्वेवःयतुगःच्याःयदेः गृहवःयकयः ·····ः मझ्यामरामहेवा स्वामवामहेयान्तावानाम् इयाके स्वामी श्च-पठराष्ट्रीया "न्काराञ्चेदाधरामगाने प्रायापति ग्राया स्वरा हिता हिता केव्यवेरमायावरम्यापदेरमुः कवः हुः खंदः म् नेया न्द्रयायवः म्वर क्वु'द्र अतः लअ: नव् क्वे 'द्रबॅद्तर-पुर्-दृद्दः अधुवः धरः देतः ईवः धरा रहेवः म्राज्यक्रवन्त्रप्रमान्निन्द्रियानान्ने विकालान्त्रवान्त्रप्रमान्त्र वित्रः क्ष्म्यात् स्वान्यः श्रीष्यंद्रः स्वतः द्रानुद्रः देद् : वतः यह मृष्यः ह्रोत् : केटः । विन् महिसान्या ग्रम् न्में स्यामा यहें ह्में न्या यह न् न क्रॅन:ब्रून:बॅट:बरळेव:बॅन:ब्रुव:लु:ब्रेन:न्बॅव:बेट:। ्रेडेट:क:ब्रूट:के: बह्दर् देत्र थेनला "क्षित मृत्यान दुर अयानव मृत्रेता वता वदी अन तुषा-रशुद्रवाश्चरादाश्चर्राम् भी श्वांदाकी विषय विषय विषय के लिया है। वै वाष्वाय न्रा प्रमात ह्या सम्माय स्वाप्त न्राप्त हेव वेषाय हर

①(तह्यन्नि:बन्दःक्व-मृन्न्प:197)

व्याययान्जुद्य याः अवातुः द्वा म्वया द्वारी से साम्या श्च.म.पय. झे. कु. प ग्रीय. क्रं. ८ ह्र वया. ग्रीय. ता. व्यं त्र वया. वया भ्यं य **यदः हृदः अ वदः द्रः यदः राका वि स्यतः न सुदः तः ने र वा त है ग्रायान् ग्रा** भैदा मुलामा अपा स्वारा तरी मारा रहा नु न व मा या यह र है। क्षे द्वार दे वार्षेत् परि श्रेष्य केरावे क्षेत्र वार दे राशे रहे वा या नवा के नना न्रात्रेतिःहेव वर्षां मार्च नित्र के स्वरं महिना में हू **ष्रदे वरा**म् बुन्या कुरान्ये राम् द्वारा मुद्रारा स्वारा मुद्रारा मुद्रारा स्वारा स हेव'अळॅग'र्म्' ६५'वॅर'इ वर्षाचुर'वॅर'ववर्षाळग'र्हु'चुर'व'श्चर मॅद्र-अ:केव:य:न्बॅद्रव:५ळ अव:ग्री:बु:ग्रेन्:४०। ने:नव:८:ठण:हो: त्रक्षान्ने न्युवाम्चे त्यान्व विक्या विकास्य विकास श्रीद.क.वियालेव.खे.चया.वै.पापु.वी.वा.स्.वीटा.वी.पावीया.क्र्या.ता.र्म्यया. ब्रियःब्रियःयः व्या व्यापवः मृत्रेयः ग्रुटः श्चित्यः यम् वः क्रेवः यः वयः मृतः न्यम् द्वम् द्वम् द्वम् द्वम् द्वम् द्वमः द्वमः कुर्यान्य विषयः प्रत्यः विषयः वयाक्षेत्रायान्तर्भाष्ट्रात्याक्ष्यां काष्याचेत्राक्ष्यात्याचेत्राक्ष्यात्या महेवा मूर.व.कव.त्र.केव.वि.चेय.त.वी व्यापव.चेवय.रर. नैशक्तावर्रे नरम्प्त्वाददेवालु न्याधिवागुरा हु यदे हा वा रूरा बे त्र इक्ष मः ख्रें मृषा द्वार में दान दिवा में का मृत्य त्र दे वा लु या मह्या हिता । र्नुवः ईरः विष्ठः प्रदेः क्रुवः दुवेः द्वाः हे । यदः सुवा "① विषः विष्ठः त्रुन अन्यायर्द्र-त्त्यान्दर्धः यदः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क

**<sup>(</sup>१९६वा मेर.बधर.बेथ.धेय.धेय.वेथ.वेथ.वेश)** 

<u>५५२,५६०,५३५.४ वर्षः श्रेप्यः हुवः १,५५७५.७५८। श्रेर्यानीः श्रेष्यः वर्षः</u> नशेर-विषाञ्चर-सहयाग्री-श्चेष-यस-दिनशः यार्शनवाश्चे ऋगवादिषाशु बैं वेनरा परि म्वता र्द्धाया केन स्वार केन स्वार मिन का में निवा में दार केन यं ते. मृते रः धेम् प्रमृतः स्वरायः या । अयः यवः मृते वा वृतः वृतः वृतः वि बाक्यावर्द्राम्द्राद्राहराति । वात्रुवाव वार्ष्ट्र हेलाच्या यत्तु मा **गुरा** दूरलरे न्ना अन्य र्मे दा साम के वा में रे दे निया न करा व्याम कि सरम्बुम्यात्तु मृन्यः भैदानुः सेम्याक्षंयः न्रा प्रतः अवायता स्राहः . **ळेत**ॱखेर-हे-वै-मण् -वैष-क्षुव-मॅ-वष-विर् यतुष-ध-खेर-हे-वै-क्षु-व-स्--नयः केयः मः ब्रह्मा व्याप्तः की । व्याप्तः स्यापः व्याप्तः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्य ঀয়য়৾৾য়ৢ৾৾৾য়ৢ৾য়<sup>ৼ</sup>য়য়৻ঀয়৻৸ড়ঀ৾য়৾ঀ৴ৠৢ৾৽ঀ৸য়৻য়ৢ৻৸য়৻৸৻ড়য়৻৸ৼ৻য়৻<u>৾৽</u> वानवाराम्बेरायायन्यान्नेवायवरान्याः व्यावदावीरायाये ह्रवारुः खु द्रमें तः द्धं तः र्यम् तः ग्री प्रमादः भेषा श्रेष्या विषयः में दः वाके वः सः ! व्यातृ त्यते न्ना वार्ता वार्या मुवारा में वार्या मुवारा में भूर **रबन** छैर पर्जेन छैर अप्तबन पर्वे अध्यान केंद्र चु दिर्ग दे द्वा में র্মাথার্ম-র্ম-ঞ্-জ্-ব্রী-জ্ল-বর্ম-মান্থ্র-প্রেম্বর্ম-জ্ল-প্র্মার্ম---नग्रतः धेन् गुरः बेनला "D बेलान्याय दतुन

9. ਜੁਵਾਲਾਕਖ਼ੀਦ ਗੁਖਾਗੁਵਾਰਤਪਰਤਪਰਤਪਰਤਪਰਤਪਰਤਵਾੜ ਭੁਖਾਲਕਰਪਰ।

①(dea. gr. add. ad. 44. atu. 100)

बॅदःयःकदःएरःदवादंदःग्रैःवदेःव्यःसःश्रॅदःश्र**द**्वःदद्यस्यः ्रवदर्भर। बर्दायान्ययय वाक्य वेराधेवाकरायवार्द्रात्यान्यान्या ंतु**ॶॱख़ॕॱ**ॹॖढ़ॆॱॸॣॸॱऻॎॾॖॸॱॹॖढ़ॱऄॱॸॸॱॹॖढ़ॱॿॖॸॱॸॖ॓ॱॴढ़ऀॴॵऒॕॗॿॱऄॗॱ र्यम्'बै'हॅर-सम्'नवि'विर्'रे'र्रे खर्रे'व्यार्वर्'हूर्याशु'नक्कर् र्मेयानपुरम्या वार्नम्बियाग्री सम् त्राप्त म्याप्त वार्मिया *वेव* लक्षाने ने प्रवेद न्यायं न प्रक्षुन् ग्री प्रदायता वृत्ता का का सुना वेदा केव-य-न्दा विद्यास्तरमुद्दान्त्रदे त्यव विष्ठं व केव বি'শ্ বীরাগ্রীরাঝর শুরারার বরা নর্মানর ন্মরান্ত নর ক্রান্ত নর ক্রা दवनःबाव्यायदेःशुद्रःखुदः(दर्नःयार्चन्:धेषाःदरःशः स्टःचेरः) न्वयाः बु.कूर.स्व. बेडेथ.विर.रे.इ.जर.वयाच्र.कूर्य थे.कया लर.पद्य. क्षे.वेथालीयार्थयो क्षेरास्यास्य र्टा पूर्य क्रियायरा व्यवस्था हैंदार्यन् नशुक्रान्त्रेंदल नेदा दे हेल ह्यूरायदारी विवासी प्रवासी <mark>ঈুঁ ন'</mark> রন্ম নার্ব্য নর্স্ন রে'ন' ন ত্র্যাস্থ্র ই্রাই্র্যাস্ট্র্র ন স্থ্রর ন্র্যা রা**উন্' :** ष्ट्रि नि, वर्षे देश क्षेत्र क

क्केलारहेबाडेराकुदेरस्यायम्बद्धारार्म्याम्या वर्षान्या ष्यानव कॅ तेव या कवा बर्ने व्यान् तुवा व्याच दिन वर्षी न् स्या कु व्या क्रियायदेव चेर कुरे त्याय स्वाव तिर द्वीया वि वि वि चे ईर जुड़ दुते किटायान्दर स्नित्रत्राचयायाया मुन्ति न्या प्राप्त निर्मा कित्र म्या मुन्ति निर्मा कित्र मिन्ति निर्मा कित्र मिन्ति म कुम्या श्रेषा पर्टे बर्ट्स अपि . ब्रेट् . ब्रेट् . ब्रेट् . प्याप म बर प्रिट . ट्रेम्या परा चरुतः क्री.च मेषः स्टा व्ययः म्वः श्रीचः सरः श्रीच्यः श्रेः श्रीच्यः श्रेः श्रीच्यः श्रेः श्रीच्यः श्रेः श्रीच्यः श्रीच्याः श <u>ज़ॖढ़ॆॱॸ॔ढ़ॱऄॖढ़ॱॳॖ॓ॷॴॴढ़ॱॴॳॴढ़ऄढ़ॱॴढ़ॗढ़ॱॴढ़ॗढ़ॱॿऀढ़ॱऄॗॴक़ढ़ॱॻढ़ढ़ॱॱॱ</u> वयास्ताववेवान्स्यान्स्राव्याः त्राव्याः व्याप्ताः व्यापत्ताः व्याप श्रम्यानेरावर्गम् म्यान्स्रिताया असे व्रकाविर <u> इंर वेर के दे दर रे वर विषय वयार वर पड़े व व व दे रा</u> क्येयायायर.कु.चयर.श्र.व्रिय.क्येयायाया.क्रेर.वे.क्येर.च हेय.तथ.स्य व्रूर. ॅब्रिट्यः न्दरः व्याः श्रुटः स्युः द्वाः विष्यः निष्यः विष्यः द्वाः विष्यः द्वाः विष्यः द्वाः विष्यः विषयः द्वा वर्षा वि द्वा व वेय देव द्वा द्वा है व वि त व्या प्रताय है व वि देव व वेय र्दयाची र्या महिना ने पञ्चर कता तर्दा रेता भेना येता है के बाज्य द नि वयानियान्नेयाः क्रेंद्राञ्चना मञ्जना नहु के नियान्या न्द्रा हिंद्या शु द्वाना महि क्रेयायहेव छेन परारेन्। नवन यहान हेरल ने राक्त वाहेन वया द्रम् मॅं द. ५५ त. यूर वि. स्म किया क्रें र. पक् . यूर वि. प त्र्यराष्ट्री प्रति कः मुरुष् अवराष्ट्री येदा "® देशान्य विदः न्यु म

न्यं व के व भें । सु । तर । स्व स् । यर । ये न या । य व भूरा द्रायताञ्चरायते इयावरानु विद्राया क्षेत्रा "ळे वाने" श्रम्बाया नेत्राम् स्टार केत्र में स्वे नवा चुरा वे त्यावा ग्री हा या यवा है इसका न्दा विदारी के दिन के के मिन् के दिन के दिन के दाया हुन पद म्ध्रायामान्यसार्थेनरामशुः नदा। अवार्यादान्यान्ते वया हो नविदे नि न्दःर्स्याक व्या नेवान् रेट् र्स्यव्य कुयावन केव संदे अवेट वार्चेत न्नावा के ता के विकास के का के ता के त ग्री मुद्राद म्वा व्याप्त विदेश में या विद्राप्त विदेश में विद्राप्त विद्रापत विद्राप्त विद्राप्त विद्राप्त विद्राप् देव-द्य-क्षेत्र-पत्वावाती वर्षव-द्य-व्याद-क्षेत्र-द्य-त्य-ब्याद-त्यवा म्यानः मञ्जा- दश्यः तपुरा पत्राप्ता । विषाः ह्रेनः अत्रयः मञ्जापा । अयः यव संग्रान्य म्या म्या इयस त्या हुव प्य विव ही हा ही न हिन क्रव-ए.इ.पह्बाल्ट.क्रट-पा लय.यथाक्षेत्र.येथाव्य. ळ्ळा. कुष. च च्चा श्रुंदि वर र्च या हु ' ध्या श्रुषा च कुषा वर्षा चेर स्या केवा ' ''' र्दरः बढं बतः लुः बर्द्रा दर्दे स्वा म्हिरः वा केवा दे वता गुरः परः स्वा र्ले र्याया यह ने वा विद्या वि स्वायः स्थ-म्.क्ष्यः च के या न्या व्याया का का मान्या विवादिता विव मात्र्याम्बेराम् मृत्रीदाक्षे ने व्याम्बेराष्ट्रियातुवानु अहतान्त इ.मूर्। ल.धु.२.५. कुब.मू.चरीजानुरानीजायातास्रारणानिरानुरा क्षाके लेवा वर्षका लु वर्ष द्। युर वर केत् में व्यव गुर हू व्यवे हा

अनिन् त्र्याक्यान्र्याधिन्यते विनयाहे यानहेन। देन् इस्रायाया देन् द्रवाञ्चन दर्कतालु वास्त्रनायालु प्रवान्त्र त्याती ह्रा या नविनाहिन । । । । ฿ิสฺนัส์ สำพุรพาสุลพาธรุาฏิ เพลาผุรลารุนณารุฐภุพารุรัส .... देन् है । या हु वा ह्व ग्रा ग्री । वस्त्र या न्दा या । वदे । देव : नु । ह्विन् । ब्रा. अ. क्रेब्र स्त्र श्रुव्य श्रु . त्र व्याप . त्र . त्र व्याप . त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् **ढ़ॖ**ॱतुकाञ्च वापन्न तासुना तक्षाय सुन्न कार्षेया याया श्रेन राका ने रहेराश्चेर । बह्द यानु विवादवाकेराबह्दा धरागुरा घराकेवा में विवा लदुः शः अवशः मूदः अञ्चरः द्वारं श्रुद्धः छः नः तः नृ मूद्यः हेन् ग्रुः श्रु गः तक्षतः **धु.**यषुयः बश्चरः यः द्वी ह्यः परः वरः वी. खब्वयः ख्रां यः अष्टि वः परः हे नायः *७*व-५५ुग-५<del>४-५</del>-१६-१) नव्यन्त्रन्य-छ-छन्। अन्वेय-५८-हेय-छ-सुत्य इंग.य.रटा वृ.लयु.च.य.वेर.वु.यरय.चयार्ट्या वययः ठर् ग्री वर्षा कुवा वर्षा वर्षा स्वयः केवः प्रतः तुः तुः त्र स्वयः ग्री वर्षः प्र धेवः ययः देनः त्यः विः तदे । द्वः तुः नवनः वः न विन् वययः त्यः नविन् । ययः .... देशःधरः द्यदः यद वः वैषाः यः दत्तुषाः क्रेषाः यः दर्षे शः वे शः व वः वुः · · · · ः मह्री श्रिम्याः सम्बन्धितः स्वयाः तस्याः मृत्रम्याः स्वरः स्याः हेनः विद्रावः विद्रायते । यो पार्या विद्राया विद्राया विद्राया विद्राया विद्राया विद्राया विद्राया विद्राया विद्राय म्बेरायाक्षात्रीत्र्वाक्षेत्रहेत्। यह्मायत्राम्यायात्राम्यायात्रेत् केतः म् क्षेरायान करता है। मूराया क्षेत्रा स्वीत क्षेत्र हिरान नुमारा तरा वि:र्वेग्यासु:पश्वयाधायावाधाया वर्दरायापतुग्यादाञ्चायादेन्ः

पत्रयः धः व्रेष्ट्वतः देतः वृ 'पन् रः यहंन् 'धः रंगतः प्र गतिः वेपतः क्वँ 'ह्य**तः ''** व्राची सुन्वराञ्चल प्रविदार्भे न्या अन् पुरायम सुन्य स्वरा अन्य स्वरा अन्य स्वरा अन्य स्वरा अन्य स्वरा अन्य स् विषयान्न क्षा तु तथेयाने सुनया सर्वेद केद यदे सुन दया दहा ते .... कुर्.कु.र्ध.इंच.ध.पथच लय.श्रयःचकुषःरटःचक्यःश्रःश्रदःचखेचयः विरामकुषान् वृष्याय स्ति। दे वृष्याय प्रमास्यय पास्य प्रमास्य शुनः चः नृहः। धनः श्रवः नृहेकः ग्रीः वयः नृ गृनः सं रेते व वयः नृ पेवः म्राया केर की यर मन्दर विदे हिंग यन ख्रा निवेश न्दर । युर वर केदः यदिः वयः र मूरः रु रेयः यविदः ग्रायः हः वु राष्ट्रं ग्रायः र यदः रा स्थान के बार्या कि बार के बार में या वार में वा के न्तुराञ्चर क्रुराकेद सदि देगवायाम् रायाहायव्यापने गवावि व न्रा **ब्रे**न:ब्रह्मप:म्बेय:म्बेर:भे:ब्रह्मप:ब्रह्मप:बर्मद:केद:स:हेन्: म्ड्ना:हु:: मंक्रेन् पर मही पर दे निया ने वा स्वी मिनवा मुद्दा मही में विय मॅर्: अ:केव: दॅ दे : व्ययः यह व : तु : द्वेगयः द ने : यतु व : ह्रं रः ळें : यि : ययः यः पक्षेत्र प**गु**त्र ग्री 'झॅन' श्रुपरा अमॅत स्टेत् सं 'WE' हॅ नवा न् तृवा शु : श्रुत '''' दर्जेब्र दर्ने र ध्वर चर्या रेका चरा थेनवा श्वराया विवा रहा। महाता वेता क्षेत्र वितरा वहर । क्षेत्र वितरा वितरा वितरा **घॅद**ॱ५१ ॱ**ॾॕ**ॺॱॸ् ॸॱॸऄॱढ़ॊॸॱॹॱॸऒ॔ढ़ॱॺॾॕज़ॱॺऻॹॖॺॱ**य़ॕॱ**ॺॄॶ॔ज़ॱॸॖॱॱॱॱॱॱॱ बहूरी रे.वय.र्व.पारहेब.ता.पीबीय.यूच.लवे.तया र.जय.वूच. য়.ড়ৢঽয়.ঽয়য়ড়য়য়ৣ৽ড়য়য়য়ড়৸৻ড়ৼ৽৸য়ঀ৻৸ঢ়ৢ৽য়য়য়৻ঽ৴৻ঢ়ৣ৽য়য়৻৽৽ बर-२ ने 'ततु क् कु : से 'लान हे क् म गुर- यह द : कु ते 'तु क 'तरे नका म के """

वित्रहारेगायाविता इन्नित्रवर्षणाम्याची वर्षाय हेवावया नमून हुराग्री त्यरा र्व तरी धर देश धर स्राध्य सुव सुव स्राधि से स म. बुबे. पडिंद. यपु. हेब. पड़ेल. पड़ीबे दिय. केट. कुथ. हे. से. सं. ला सर्ट. हुवामुल पाउँदावामाळेव यंयाद्वामी प्रतामयलायामहेवावयाही .... वरःमी मतुन् मववतः ठन् म ठॅबा पर्वः तुवा भेवः ठेटः । कुलामः ठॅन् । मः केव् सं न्दः ब्राह्म अकेव् सं मानेवा दे नहं वर्ष्व प्रह्म न् प्रह्म के वि प्रा म्त्रुवादाः शुः इदः यः श्ववादाः कुन् विवाः धेदः यदाः नुताः ने विवादाः स्व वादाः स्वेः । । ब्रिंग्येमयासम् गुरः वरः क्रेवः सं : धरः व्यवारम् : क्र्याः समः त्रेवाः हो। मल्यायावी त्याया इता प्रवेद्या यह न वया सुयायाहे के लेया लु मा यह न। " Û ठेरापद र्ह्य गुरापता न र प्रतास के स्वार्थ र केंद्र केंद्र स्वार्थ र स्वार्थ र स्वार्थ र स्वार्थ र स्वार्थ र स है न वैद न विद न द व न म न का दे दे न का खें वा राज व का दें का का का व ₹য়ৢয়৽ড়ৼ৾৽ড়ৢ৾ৼ৽য়ৢ৽৻য়ৢ৽৻য়য়৽য়য়ৼ৽য়য়ৢয়ৢৼ৽য়ৼ৽য়য়ৢ**য়৽৽৽৽৽৽৽** न्में यारे या तत्वा क्रुवा दे व्या " गुरावर में त्यया दें वा पा दुवा के पावी ॅर्न-लिबायाओं अवानवानक्याञ्च वाहुवाहु न करावया बक्षवयः वि, वि. यह वाया नदः यठ या या वक्षवयः ग्री व्ययः मृदः मृदः ग्री या या व वर्द्र वियासरा श्रुवया सम्बन्धे के वा संवित्र स्वर्म स्वरम स्वर्म स्वरंग न्बॅरलही न्द्रस्ताक्षे पर्भवास्य व्यवस्य ने अपरार्धि स्वर र्देव चेन् वेया हु नेंद्र र्यंग विमया सुन्य सुन्य । नेरामहेव विमय **८व**.त.वियाची, प्रवास्त्रात्त्री, जूपु, प्रवास्त्रात्त्री अथाची द्रात्ते व्याप्त म्वयार्थः इत्र्माराया केवार्यया देन्द्रार्थः श्रुप्तर्थे श्रुप्तार् मृद्या

① (বর্ষার্থনেরব. শ্রুব্র্না গ্রহম 200-203)

वयायायतायहूर ग्री.श्री.पत्तराष्ट्री.श्री.व्यक्ति.रं वीप्त.रं त्याप्त. मः इतः । वृतः प्रतायः विश्वयः व मन्तिः व्यव केवाववागुरा विराय केवायतान् विरया याववर विवादरा वह्यतः स्त्रा सुः हे नवा मुदास्तिः द्यमा वदै । प्रवेद है । यदे । द्येप विदर र्रात्सर्परि सुद्रापाय विदार्व सेवा सेरार् विहेरा पा हिवाय हेता म्बेन्यायान्द्रा देन् व्याख्दानु व्याख्या गुरादर् देवायद्या गुरा नह्रवारामवर्के भेवाराया यह रावया श्रमायाया मेर हिरा त श्रा रहिता ট্রী'অইকে'ন্নে'র্ম'র্ম'র্ম'র্ম'র ন্মান'র্ম্মর ট্রীক'অইকে'নেরে' द्रम् अ:र्मः वर् जरःश्चरः यः द्रं यः यः वर्षः ये हैं है देरः र्मे यः ग्रूरः ये ति बेर् सन्देशमुदे नमेर् सम्मित्र मित्र वर्ने क्रें र सन् नर्दर केंन् रेन र ने व ले व प्रमाद न व के पर पेर व <u> विराधः स्थलः वर्षः ग्रुरः ग्रुरः घरः क्रेवः येतः ने ' मैवः लुर्षः यमु ग्रम्</u> ष्ट्रक्षत्र कर् अञ्चित्र प्रदे र में रताया न् ग्रे ता के त्या चना केरा न के राम धेवा .... यत्रः क्रॅब्र क्रं केव् वं प्यरः नेव् क्रु र् र् ठिरा सुरा यहर के क्रेर् र्रा म्राम्यक्रियः स्राम्याच्याद्यः स्रम्याञ्चरः स्रमः विद्यः स्रमः स्रमः ब्रास्य मन्यार्थ के ब्रास्य सुन्न या अहे या है । न मान प्रवास मान प्रवास रःमदेः द्वमः हेरः संम्याम्बरः ह्वेष्वः यदः पद्धःय। "① देशः म्यायः विदः। दे वया के त्या महीन वन विराद्य है में चरानी से स्वरा से दार से रा

10. ଶ୍ରୀମ୍ୟର୍ଟ୍ ଛିନ୍'ମ୍ଷ୍ୟ'ର୍ମ୍ୟ'ସମ୍'କ୍ଷ'ସମ୍'''' ଶ୍ରମ୍ନି'ମ୍ନ୍ୟ'ୟମ୍'ଞ୍ଜମ'ଦ୍ରମ୍'ମ୍ଷ୍ୟ'ର୍ମ୍ୟ'ସ

स्तर्त्त्वर्तः विद्या विद्यत्त्रः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर्तः स्वर् स्वर्तः स्वरः स्वर

① (বর্ষাশ্বী**র**'বর্ব-রূব্'র্ব'গ্রহন'204)

지종 मुलार्ररात्रावठरापदे न्सुरान्य वा ग्रीररा स्वरा गुराह्रर क्चित्र प**ङ्क्त** : क्चॅब हो। क्चित्र : क्चॅब्स व्यक्त चेत्र प्रदेश कार्य वार्य राद्य राद् नुम्बरात्रान्याग्रमः वर्षेन् न्यादायदे स्वयन्तर द्वतः धिति हु स्वर्षेता कृत्रः मुद्रार्थक्या र्या स्वर्ता स्वर वर्श्येन्त्राचरा पश्चित् प्रविदार्त्या वर्षा महात्या म बर्दरेशकी सुनुवार्वयात्रया दुर्दि त्रिवियाया र्दा कुल झ रूट श्रीत्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या द्रैदः वर्रा वे त्वर्तः द्रिः वर्रा वे तरः रत्यः श्री दे तस् वर्षः वि राशीः श्रीः वर्षा वि रा र्मण्यास्य स्वराक्तास्य स्वरास्य स्वराय स्वराय में प्राप्त स्वराय इट्-बिट-प्रे-त्रु-न्द्र-ब्र-र्निट-इवयायरट-बिट-ग्रीयास्वाहिःवह्रट-प क्रिस्ट्रिंट वर्ष्ट चिका हे . दे चिका खंबा च्रिंग वर वर वर वर्षा चे . च्री दे का कर व. 12 व. पश्चा. थे. पश्चा. के. गति व. १४४१ इंश. तर. मैं व. तर. मैं व. तर. हे गया. ग्रै-ठ-बळॅव-श्रेन्-डेन-ब्रेन्-प्वेब-५-६न्-ग्रै-ल-ब्रे-पञ्चय-वर्गा য়ৢ৾ঀ৾৽ৼয়য়৽ড়৾৾ঢ়৾য়ৼয়৾ড়৽ঢ়য়৽য়য়৽য়ড়য়৽য়ঢ়৽ঢ়ঢ়৽ঢ়য়৾ परुषाचना न नेता ग्राप्त स्तात का स्वाप्त के प्रेया स्तात के प्रेया स्तात के प्रेया स्तात के प्रेया स्वाप्त के प वायनेत्रायनानेन् इवयाची गर्डन् शुरातु व्यन्यते में नान्वमाम् विनः म्हेन्यं ने प्यतः यहता ..... १ वेषाम्ययात् न्यान्ता 炋.

① (ব্ৰব্বৰ্ণ নিন স্তুক্ৰেছ্ব্ব্ব্ৰ্ব্ৰ্ব্ৰেগ্ৰেগ্ৰ

संस्या मुद्रान्यम् न्स्रा न्स्रा न्स्रा न्स्रा न्स्रा है न्या য়ৼ৽ঀয়ৢৼ৽ৼ৽য়ৼ৽য়য়৽ঀয়৽ড়য়য়ৢ৽ৼয়ৢয়৽ড়য়৽য়য়য়৾য়য়ৢয়৽৽৽৽৽ विराने न्यमाप्याम् वैयाविरातु प्रवास्याम् वराम् वराम् बरः म्या च्या है न्यू व्याय दिन्या चेत् परः महितः कुः मया पठत् पायाः वर्-द्वम् त्यत्र पन रे द्वा में से त्या पर में त्या कु रा में र भ्यापर्व, मधिराविषार्व्य, स्थि, स्थि, स्थि, स्थि, श्राक्ष क्षेत्र स्थि, रेस् ন্দ্রবাদান নির্মা উরান্দা "খ্রী রা 1792 মার ক্রান্তান নির্মাদান ন वियाने : श्वापार ब्राम्य क्राम्य स्ट्राम्य स्ट्रा क्रिया मक्राम्य स्ट्राम्य स्ट्राम हुरः(लॅगः) वयःयः ब्रुट्ला देः द्रः दुलः अवयः दुः द्विरः हेः लॅगलः ग्रैलः विन् परि न्यम् न्स्र मेया ग्रम् महत् वर स्र निम् वर वर स्र निम् । स्र स्र चयायाञ्चरतायाचन्। मॅ्रामितायम्। संतर्भायाळेवायाळेवाराजायान्। (संया द्रः) ४८:वाकेनाव्यवानहाराधराम्यानेत्। अनवारेताश्चेनवा**रुवा** क्षेत्रः पर्भूत् : पहरः प। **केटः न्यग् :** पत्यः सुत्यः शुः यद्यतः यद्यता शुः यद्वतः मःमरुषः सः एहे वः में नः भिः मुलः सं ः सः वः (न्हः) श्वः तु नः ग्रीषः ने ः श्वः व संव सम् नहरावरायात्र किंग्वेहरायायह्या व्रेन्टरेरे हिं छन्।

न्डेन् गुर् ध्रुर् र प्रा द्व-ग्रेट-स्-रिट-लव-ग्रेश ग्रेग-एव- २५८, द्यापर्वे या. श्रेन . र्वनः सुरः सह्वः क्रुंदः द्वेषः पर्वः प्यादः धदः स्वः क्रे। ह्वः वः वः पर्वः स्वः **बेर**'मिष केद'र्धर'केद'रे'मॅर'मिते'बदय'मॅदर्श शु'मक्कुर्'द्रादे स्व सुद्र-सुद्र-( १.२.) पक्ष-प्याना-धि-पश्च-र्थ-सूत्र-सूत्र-सूत्र-पन्नेथ-दयात्वां मृत्या द्वारा । स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वापता स्वापत स्वापता स्वापता स्वापता स्वापता स्वापता स्वापता स्वापता य.पंचन.तपु.स्.अंचथ.रंट. चक्षेत्र.धे.बंच्टथ.चच्चथ.व्य.क्.स्.च्यल... हे. पद्यः ह्र्यः संयः श्रेषः पहरः। ञ्चः पः द्वाः पदेः छ्राः पर्वः रज्ञुरः वेदः म्रामः मुलायं वाञ्चरः यदः वर्षे । यः केदः यः वर्षे । यहः वर्षः देः सः ः र्वर-ग्री-न्वव-न्वव-इवव-ध्रेन-न्द्रुय-व्यत्। जुय-व-नेव-स्वन-याधि ने पहराक्षेत्र न के अस्य वितास्य र्धर तहन केर वस्त्रक तहन रे लिया ग्रीता क्रिक्त केर विकास यदः धेना त्यत्र नहरः दत्राविता वाञ्चरता सः नेद्। " केता न्यत्य। पत्ने पर्दः चुरा पहॅर् दराय विरामाध्येषा स्वापा स्व बाह्यरागुद्रा देवाश्चेदारम्बाराम्ब्रह्मराम्बर्गा **য়ৢ৴য়৸৻৴য়ৢঀ৴৴৸ঀ৴৸**ৠৢ৽য়৸য়৽ঢ়৻৸৻ৠ৻৻৽য়৾৾৾য়ৼ৴৻ঢ়ৢঀ৾৽য়ৼ৴ড়ৢঀ৾৻য়৻য়ৢ৽ৼ৽৽৽ र्न्-श्रुट्-चदे- दत्यम् सः स्वेत्-स्-सः सेर्-म्-र्न्-भृत्-र्न्-धिन्-स्वित्यः वः द

विना-वर्षा ब्रह्मच के कुदाक्र करा बुदाया निर्मि विद्रा है दिरा ने कै. न. क्षे. में र. कि. मुलाकरा तु. श्रेयका न में का चेरा न में राहा में राहा में राहा में राहा में या का कि ञ्च त्यूर बेर के पहतामित्र वेषाये प्राया में र ज्ञाया र प्राया स् ৼ৴য়৽য়ৢ৽য়৴৽৴ৼ৽৾৾ঀ৽য়ড়য়য়৽য়ৢ৽য়৾য়৽য়৾য়৽য়য়৽য়ৼ৻৽য়ৼ৽য়ৢৼ৽৻ 4g.a.la.a.g.z.a.ga.a.a.a.a.a.lac.a.z.z.z.a.z.a.la.z.z.z.l ৾য়ৢ৾*ঽ*৽য়৾৽৶ৡ৻ৼ৾৶৾৸৽৻ঀ৶৻৸ঽ৶৻ঽ৶৻ঀ৾৾য়৾৾ঀ৾৻ৼ৾ৼ৾৻য়ৢ৻ৼ৾ৼ৾৽ঢ়ৢ৻৽ ब्रे.णुब.चंचतःश्चेथाञ्चे च स्र.यै.या.देवा.वया.चूर.चूर.कंर. वया.पंकया बहुदः धरः। वरः श्रेनवाञ्चः यः तृ न्वरः नवान् गुनः वैरः रवः नश्चनवः ल्बायाक्षी, रंश्यवा प्रधिवाची स्वाया विष्याची प्रधिवाची য়য়৽য়৴৽ঀঽয়৽য়ৢ৽৴য়য়৽৴ঀঀৼ৽য়য়৽ড়৽৸য়ৢৼ৽য়য়৽য়ৢঀ৻৽য়ৢৢ৴৽ঢ়৸৽য়ৢ৽৽৽ म्यान्यमा पक्षाक्षे प्रतासीयान्दावमा केरात् हिराय है या अ रेटामा के रटा दवा मेंटा यदे द्वमा द्वें द्वमी कर मक्केंटा कु. द्र-ग्री.र्य.र्विट.इवयः चता.लेता.ग्रीट.पश्चितावटा.शु. क्षेत्राया.र्टा न्म्यान्त्राक्ष्या "न्यान्याक्ष्याम्यान्त्राक्ष्यान्ता हिन्न्ता नम्तः यन्तः सन्याणीः कवान्दिवाञ्च स्वानः इसवादः सन् दः न्दः दे क्ष्याञ्चित् कु न्द्रा कु न्द्र कु के न्द्र के के न्द्र के कि निक्ष के निक्स के निक्ष के निक् विन्यानी निन्दित्स्य प्रमायम् विन्यान्त्र विन्यान्त्र म्यान्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र क्षे ब्रॅन् मा बेर्ने हिन क्षेत्रकर् व्याक्त व्या मेराया केवारी दरा वर् ग्रु-कुल वः यवः स्वतः बृदेशः यः सं : कृतः यळवातः लुः श्रेः स्वेरे : बृर्टः वदः : · · ·

श्रद्धेरराप्त्युनः ळें र् छे 'र् छ 'हिमार्ड सायसुमार् में रा हुर र उरा । प्रार नवरः क्षेत्रः भे : व्यवासः पत्तुरः क्षेत्रः यः स्व क्षेत्रः यः स्व क्षेत्रः यातः देः ः " हैराकृद लु हो र पर तस्या है दार् में या वेया " । वह र तर्मा परा नगतः क्रॅब्र-र्गतः पद्धै नयः पद्धन् । व्रायः द्वार्यः पद्याः व्याः व्याः व्याः **हुर** तर्बर इंग पर मरेद बेद के दि स्र पर । देव तु के राष कुल हिंद वंग.इ.वुर.विषय.र्ट.जय.पर्यय.पड्र.बुर.विय.क्ज.रटा वं.र्वर. पः तर्कः ग्रॅंटकः श्रुरः धः परे वः वैवः वैः वेकः वैदः। विः वकः देरः श्रुः पेदः बें बुरा है या न मन् प्रमा यह र ज्ञा वा न व र मा वा में में है या न र । यदः व देन् ळे तः पत्र न्यः राष्ट्र व व विव विव विव हिन् स्ट धिन् व के तावा न ह व्रत्रीम विरम्यान्तरम्राम्राम्राम्यान्तरम् विकाश्वेवान्तरम् वर्षः ब्रॅं प्यम्या चेराना न्यं यान्यं वाहे हुर ख्रम्या म्यं वार्यरा पक्रा **षॅर्'नर्यार्'र्मार्ट्ररार्च्चराञ्चला हिर्'न्ट्रान्डेन्'स्'र्व्ज्' के'सुला** ळे. र. प्र. चे वे प. वे य. वे प. व्र. में प्र. चे वे प. हरम्बेलर्रा दे.युक्त्भुन् म्राह्मराकुर्यं व हर बहेत तर्गारातह्रवानवर्गान्तका का वात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्या <u>दे-चयात्राम्बेरावेरान्ताम्बर्धानुः क्षेत्राच्यान्याम्बर्धान्याम्बर्धान्याम्बर्धान्याम्बर्धाः स्त</u> 

① (र्णवःनवेःचवेःचुरःनह्र्रःरेवःर्वः 861)

तर्रः वर्कः वर् वर् श्रेष्टः सर् सर् सर् वर्षः म्हेन त्रणहरःश्चाया विकास तुः द्वेरः श्वॅगः नहरः ळे : भेरः श्वेरः श्वेरः प्रतः द्वेरः ग्वेरः श्वेरः श्वेरः श्वेरः स्वारः । इ.स.चेरः श्वेरः श्वेरः श्वेरः भेरः श्वेरः ननः नेतरः में वःश्चेवः श्चरः वध्यः करः यः वर्षेतः विरवः श्चेः सरः नः नरः ..... मक्षाक्षिरः श्रुषा च क्षा मश्रद्भारति वा सराद् वादा महिन स्र ग्रु.पश्रम.क्षर.केर.य.भेषात्र.प्रक्र.सं.येर.ट्र.घपत्रा ला.वि.सं.येर.था *ऀ*ᡷऀऀऀऀॸॱॶॱढ़ॸॱढ़ऀॺॱॸ॓ॸॱढ़ॸऀॸॱॲ॔ॸॱॹॖॱॸॕॸॱऄॱॠॱढ़ॺॺॱॸॸॱॺ*ॿ*ॺॱॸॖॗॱग़ॗ**ॸॱॱ** बर-वी-भ्रा-अतुव-तु-धिव-र्षेष न्-लय-र-ल-वर-पन्- इयल-विप-म्यान न्यान ऑस्.प्रे.प्यया स.क्.. मू. पूर्वा झ.प्रे.च केया व्या ख्रेया है . प्रे गया छ्या उर'हॅर्-ळॅर'रॅ्व'ब्रेब'बे'ॲर'नदे'मर्न देर्'क्रुव्'लु'<u>चे</u>र्-बे'लद्र न्में न्या हुत है। वेया हुव है। यद की नेया यया मृत्व वया दशे दुया वयत बे.पर्या, द्रया पहूर् मुचे ब.ब बरा श्वेता की. सूर् शु. झे. क्टा बा ब ब ब झेंता. वि. ग्वर में हे हूं । नग्र क्ष्य वर श्रूर दूर र्पर । य श्रुरे हुर धन मु देग्या द्रें व् सुर प्रे य अवय दहें बता गुरा हा या वृ न्बर-म-धैक्-बेक्-सुर-त्य-विम-मह्म-मुक्-न्द्रा लम्म् म्बर्कानी-तहरू तस्ति हिरायतुमा हिरा ्रियावरण नेवाक मन्या सामाना म्यार्टा म्राप्ताम् स्वाप्ति लयाक्यास्य म्राप्ति म्राप्ति यदे ब्रिंब में भा के रे हे हे से रे या रेटा हे में में ये यर प्रश्न हे में विश्व है के.यर। से.य.त्र.परुयायहारीय मधियायरुयायवेषाह्य नेर.

क्षेत्रा स्वास्त्र श्री श्री व्याप्त स्वास्त स्वास स्वास

त्रुत्राचे नव्यास्त वित्त वित

र्भ-त्रः। न्याः वं न्वतः में हिरायः के सूर्। न्याः वैषाः स्वायतेः वरःश्चरः दॅरः र परः। यःश्चिते दुरः धेष कुर पॅदः हुरः पदिः चरुषःबह्यःविरःच नृतः श्रुतः व्या सुः त्रे सुः तुरः दः तिरः वरः क्रेवः सः रट्युर्र्स्ट्रियाची द्विषा शु यत् वृष्य हे कि दे त्व वृष्य द्विष्य द्विष्य विषय बी'बॉबॅब'तु'ख़'तु र'द्यव'वॅ'ळेव'यॅ'ड़द्'सुद'द्दा व्यवाख'ड़े' वे मु.ब्र्ट्स्-धि.पह्न्द्र-प्र-प्र-प्र-प्र- हि.ह्.क्वा-इव्यामुक्कित्रमुक्त-स् ૹૣૻઌ੶ૡ૾ૠ૽૽ૢ૾૽૽ૹ૽૾ૹ૽૽૽૽ઌ૽૽ૼૺ૾ૡ૽ૼઌઌ૽ૺ૽ઌ૱ઌૡૹૹઌ૽ૺ૱૽ૺૺ૾ઌ૽ૹૣ૽ૢ૽૽ઌૹ૾ૣઌ૽૱ૢ૽ૺૺૺૺ૾ न्वलयावा गुरामरावलाबहूतेन्न्रानुश्चलायाह्नवलाहेतेन् *ब्नत्तः देवः घः* केदेः बर्ग्वः महेनः संर्द्धः नः क्रंतः मुः क्रंतः मन् मृनः नुः न म्रूनः हे। दे हेन इंग बर्व कर म्बल पदे वे प्रमाद दे दूर। स्तरा ग्री दे श्री दारा त्रा दे दे दे दे दे त्र भी दे त्र भी भी दे त्र भी दे त्र भी दे ते त्र भी दे ते त्र भी द न्रात्र्वयत्यत्रत्वितः तुः वेवयः याद्युरः न् वेयः यरः यरः न्रेतः सवः । । । बर्दरम्ब्रुयारे लुवा दे हिया कु न्यं द मिराम्यया महाया मा न्युया न्नरःग्रुःक्ट्रंस्युरःके<sup>-</sup>येनवारंभेगः ५५ुगः धये वटः ५ स्थेनवा ववा अवसः … ब्रॅन-१-बहु-१८-। राज्यर-ने ख्र-१८-१ कुल-ब्र-४८-धर-६व-न्यम् र्सम्बर्ध्स बेया के नदे न्यद में दुः बब्द सम्बर्धः सम्बर्धः सुन्यः स नर्भर वर्षा में र विशे क्षेत्र में र में येना इस्य पाय सहया वि में निर्मा करा स्र मालकामग्राद्य है दिनका दी अ है ग्रा " 🛈 देवादि दिन तुन

बेद्यादेवे:द्वन्यवनाकुं बह्य्ववे:यह्न् र्वेदे क्रूंत्र्थं ज्वाग्रद

① (「可不、口骨、口角、豆皮、口養丁、一片口、 ( 886)

बैलायस्यला देयावरायविराधन। "केरान्यवा बैनामिते कुलालना **श्चेतः**ग्रनलः ॲन्:पला ॲन्:िकुलः ऍ'ल'द्न' (रहू:) श्च:तुन्:ग्रुलःञ्च:पः र्सुर मे अतुवानु अर्मे पह नाया क्रेंग परि ने पाल्या या अन्। रूवा कर् वर् वर्षित्रा न्द वर्षे र १२ वे नर नव्या पर्वे केत्र धेया छेर नश्चिया " **षट्-प-र्ट। इंब-कर्-पण-नेय-क्षेत्र-म्-बय-पर्चन- पर्वय-ग्रेय-पर्य-**मूर.क.वर.षुयाराष्ट्र क्षयाश्चरास्य वरायतः वर्षराग्नी तहरायः म्बाक्षे नश्च बहुयायान्त नरुयायदे रायमा सक्ति स्यया नश्चिया स्टा पर-अ:बर्। वु:र्बर-पर्वे:म्हुर-ठ्रव:गुर-धुर-पश्चुतः ऑर-प-रेर्। भव-वतरः हुः। वरः अवः ग्रीयः रः तुरः वियः अः त्रः तः तेर्। हा नः वतुवः त्रते.क्र्यान् श्रु-पृष्, वेष्यम् र.भि. क्युपा स्याध्र र. यराष्ट्र व सरामदे । प्रवास ञ्च.क्र.रंगर.कं.ब्र.रंट.पं.ब्र.क्र.रंगरावि.पर्वेबा.क्षर.रं थबे.पा.संपानर.. बाचरा धाना पहरावया वर्षा पहनाया हेना परि दे पालु या हिन राष्ट्रिया नुतान्वायराताव्यव्यतायावर्वातह्याच्चेन् वीस्तान्ता वेरतान्ता म्.केर.जम्.त्रे बेथ.ईथ.लट.पश्चैर.पश्चे.पर्थ.पर्वयाग्रीट.शु.स्री ·····केन् वरम्यार्थः नेवाम्डन्गा के ने खिन् वे साम ये केरानु पन्न व्यः......गुरायः केवः यं रातुः धेवा व गुवा हे रेन् ग्री करा हु ख्वा व कराः न्दात्रेयार्मेदायाकेवार्वेताव्याप्तायहत्याकुरायाचन् इनाप्त्या इस्यान्ना नेवार्राया या निराक्षेत्र त्या या निराक्षेत्र त्या या निराक्षेत्र त्या या निराक्षेत्र त्या या निराक्ष इतःस्वारान्। भ्रीवान्तरः द्वाराध्या ......द्वेतः कर् संव्यं रेरः वा किरो 

लुकाळ्कना पदी रे मा असा अन् मु नु नु किया विकास मु सा से किया न्यम् मैयान्सुनः यह्नम् अयाने भागः नः यदः श्चे न्ने सन्ययासुः यहँ नः """ भ्रमणः ह्रं व : यह म धेव: यथा हु : मिरः खवः ग्री वः मेरः यः कवः खरः ला १ म् मूर्या की अवय विकास न प्राप्त कर में या है। न ये र व मूर र्मतर्रायम्पार्विवाशुः सं क्रि. व्यापनिकृत् सः र्पर्मत्वु सरावः वः केव-य-र-र-म्,व हु-इन-वय-ईन्-ग्री-यन्। न-यदे-नुव-केववर-इन्दंय-यन् पराष्ट्रवाना नरावताने वाराहर क्षेत्राच्या हिवा करारा रेत्। नर ॱढ़ॱऻॸॱॸॱड़ॱज़ॖ**॔ॱॴॖढ़ॱढ़ॖॱॴ**ॗॸ**ॱऒ॔ॸॱॱॖॱ॔ॴ**ॱऄॖॸॱढ़**ऄढ़ॱय़ॖॸ**ॱॱॱऄॗॸ॔ॱॱॱॱ न्मॅलप्यात्रवातुवादश्चरवायहरादादश्चाय श्रीत्रवार्यं हेला ह्रदातुः ख्या मूट.अ.कव.जट.बु.र्टेट.रे.अंब.बे.टु.प्ट्रेट. ईयाञ्च.वट.लव.ता. नक्षेत्रके तथा यर दे केर वया क्रवा राष्ट्रेर क्षेत्र न याद खर न कर पश्चम्याच्याच्चम देवे.पर्मा.स.मञ्च.क्च.पः विमारा.क्टर.ये.पिट ग्रंटर हो. बह्यायानु व न्यान्य व हराचेरा क्यारे हरा वा देवा भेदा स्वा मुद्रा वा वा वा विश्व मे प्रा मुद्रा मुद्र इ.स.चेर.चचेर.चेष.इ.पट.लव.ग्रेश ब्रूर.ि.मैल.त्य.यब्रू.च रे वेथ. **क्रमः मः विश्वः यान्यः स्ट्रमः दयः निर्देशः स्ट्रमः स्ट्रम २ व्यान्य १** जुल ये वाञ्चे वाळे वा पहरा व वा खु गवा र गारा व गारा रा बनाना क्या अन्त्र भेट हुन पठ राज्य हुन हुन हुन हुन

यून्यः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स

<sup>🛈 (</sup>तू.लदे.च.नदे.च्यावर:व्यंत्रीवा:देव:द्या: 153--156)

ब्रुट.पर्वेब.क्ट.। चेड्.व्.च याप.च्रुट.चंचर.चली.चेथ्य.पायीट.घट. अवरः च ग्रः च श्रुर थयः र्वा "अग्रायगः यं ग्रुरः वृतः वृतः वृतः बुद्रभ्रवशृद्ध्रद्र्राच्यादः त्रुवः मृत्रेशः दृद्रः । वद्दः द्वदः द्वद् नमृत्ति निर्मात्र तर्या देशका व्याप द्याप द्या स्वाप प्रति न्य स्वाप श्रेन्य हेर्र दर्भ रहा स्राध्यान्य स्याध्या हिर्देश हिर्य स्राध्या स्राध्या धुः अ: धरः मॅंटः अ: अक्रॅंट् : धॅव: ग्रुं: ब्वय्य: दरे ग्रय: पश्चेत श्रु: ऑट: प: न्टः। स.र्यासर.रव.लव.णुव की.ल्ट.चपु.श्रुव.लवा.च ध्रे. रचट.रै.जया. ञ्च-तु-विवयः ञ्चे-च्चे-त्याचेन् स्न अवः पवः सः नेवः नः। वः नः रेव-मृत्रेय-वृत्य-हे-कृत-वृत्यय-शु-न्नम्य-ध-के-य<u>न</u>-य-ने-य<u>न</u>-र-कृत्--मिते असं व ने ने न स्ति। न सं त्रा कुन यतर में क पन्न में व र्षेन्यः नर्षेत्यः रयः द्धन् : अदः ईवः स्टाः उदः। । । विदः ह्ययः दयः दे । सूरः ब्रेन् अ.वृत्यःपनः नदः स्वतः न् ग्रुः भग्नाः हुः क्षेत्रः श्रुनः पः द नैः सः नदः नीः स्वन्यः ब्रुल. २. द्रेय. त. ह्र्य. प्रत्र. ५५ व. ह्र्य. बार्पाद्र-परुषागुरामु वर्गानु पर्दर्या नेव पापरुष्ठा विरामग्रा नेव म्बेयर्दा म्बर्स्कुर्या स्वर्त्त्रा स्वर्त्त्रा स्वर्त्त्रा स्वर्त्त्रा स्वर्त्त्रा स्वर्त्त्रा स्वर्त्त्रा स्वर् बे.बर.भ.रव.नर्षे.लर.क्षेत्र.ह्या.बी.वंग.त.हर.स्.यर.री.पर्ता.स्व.. चैन्-न्ब्रायन्-छ्यानग्रायञ्चर-पञ्चयाचुन्। "① वेयान्ययानः---

प्रा पक्षत्वर्वहें तर्वयात हुँ र है या "दे वया के व गुर्या पर सु चै.सुर.र्-गूर.वर.क्रेब.त्र.प्र.शं.वर्व.रं-रूथ बहल ग्री.व्य.क्षेब.ल..... पठरःश्रेनवा द्र्या मृत्रः मृत्रः मृत्रः मृत्रः मृत्रः म्रह्या महत्रः महत्रः महत्रः महत्रः महत्रः महत्रः महत्रः मयानुन् वी तु वा मवा स्रात्र्व वा मे विदाय नित्र तु न वा सुन वा न न न स्रात्र्व पर्वतः ग्रीया ये किरातु र त्यु र प्रमुद्ध में र या केवा ये या प्रमुद्ध या प्रम बर्दन्रॅंदर् बेया बहादया दया हैया पहेता वर्ष द्या रॉदर् । "① न्यायः वृदः। र्नारः न्याः महेषः क्रुपः है । यदः है । यदः देवः ह्यायः ग्रीः यहवारुः **इंब.च्य.वेट.ज्य.चर्चेट घट. येट.कु.कुज.जर.चर्सेट.तद्र.ज्य.चर.** र्रा कुलायदे वर्षे राष्ट्रया यात्र व द्वारा नहें राष्ट्र व रा श्रेवाद हेनया लुग.क्रुवाश.पा. पहेन्त्राव्यायार्श्वराविता श्वनाव्यतात्वरात्वरात्वेवाळवात्वरायाः विकासम्बद्धाः श्रमणात्मध्ययात्री न्दा व्राचितानी वर्षः हिता स्रामान गता वर्दे रगा वर्षा नेगा गवर वर दे वर्षिय त्या बिया है ता दिया निया ब्राञ्च, प्रंतु.क.प्रेयंथायीट, घट, ईवया. वयावाच्चयंया क्षेत्या है। या यावाया . म्बिंदायाम् वास्त्राच्याम् वास्त्राच्याम् वास्त्राच्याम् वास्त्राच्याम् वास्त्राच्याम् लब्रावेयाच मातावद्वी खेनका हुमानमा कि का माना वर्षेत्र मानेका ने पव-तृ। म्थाप्त्रम्वायायायनै वन् क्रिन्ष्रस्य मे व्यापन्ता सुन्मा ८ दें गरा या ८ दें वळे र इंदर श्रे कुता यें के भी । वट वी कुता कुर वरा यें द श्रे **"** 

<sup>(</sup>ব্ৰব্যব্ধীনের স্কুল্নেইন্ন্ব্নইন্স্ক্রে
(ব্ৰব্যব্ধীনের স্কুল্নেইন্ন্র্নির্ম্বা

कुल रं चेन् न्तरार्थ्य प्ययान् ना धेवा यत् वा क्ष्या बुर्या **ग**ी ৰ্প থা न्याया विद्रा व्यवता व् इसरा क्षे न गता न हुर देवा ईर देरा न हे वा तहें वा तहे न्युः ईन् न्यः भैलः द्वायुनः न्वैतः व्राव्यः व्राक्रेदः यः नगतः हेव या प्रथमानर मुक्या में रावर अमें न न गरा सँगरा हैं रोसरा यदः विदः रदः क्रूं नयः वृत्रः सदे । चुः नः तः न हे तः तयः द्याः तयाः तुः हुं दः ः ः ः न्भैलान्दायाळेवायंदेनुदाद्दा द्वायदेन्त्रायदेनम्दार्त्वेवाग्रीन्ताया लूर.त.खुबा.मु.पाबारी.पावबा.पायायायवियाचानेया वराबी.क्.र्याया क्षेत्र ह्रेंद्रताचेत्र-त्र्वेत्रायः र्यम्यान्तुः वर्त्र-त्याः धुत्रः चुर्त्रा त्रेयाः व ठवः तः नह्नतः पर्शन्यः प्रहान्तः कुवः श्रीः शेः व्यवादाः पर्वतः विद्यावादाः । इति विवादाः । ब्रूल.क्षेत्र ब. बेब्य.त. क्ष. चर. ब्रूच. यहा विषय. ब्रूल. वेब्य. ब्रुब. ब्रुह्म. नर-नयश्वर देवारा द्वेरवार् ब्रेट्य धर्या धर्या द्वार हे हिं र रहा नदेवा मा नगदः भ्रवः ग्रीः मं तावरा नवरा नवरा नः धवः हरा ने वहं दरा नह्वः तह्रवार्यात्र्रेरायाय्वरात्रवारात्र्याः के. क्रायाय्वरात्र्याः हेवाः र्श्व वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र वर्षः रे हिलावर क्रें में राया कर लिर वी यहलाय रूर महिन्य विवर **€**त्रः संग्राविष्यः प्रति विष्यः प्रति । विष्यः प्रति । विष्यः प्रति । विष्यः प्रति । विष्यः प्रति ।

①② (「可は、口角、口角、豆子、口養丁、一方は、「白」の29)

名. Lt. Rd. 型u. lbg. tt. 身. とはよ、名. ロエ. は見 4. 当 u u . u g.

ञ्च या च कु न या अळे वा श्रु र दे या च शु व न र वे च रा य व र र व र र व **"ने क्रा**श्चर वर केर में अर वेनरा स्रान्य सुनरा सर्वेद केर में हें द विष्यः इश्रवः ग्रीवः भीतः स्थान्यः प्रश्नाः विष्यः । विष्यः नव्यवः व्यत्यः । रूपा दे वया द्या द्वा यह वा व क्षया ग्री त्या द्वा है स्र ग्रीय परि ऄॣॕॕॕॕॕॕॕॕॕॕॕॕॕॕॕॕॕॱॴॱज़ॕढ़ॴॹॣऀॸॱॿऻॿॸॱॿऀॱफ़ऀॿॱक़॔ॿऒॱॸॹॗॱढ़ॾॕॱॴॹॖ॓ॱक़ॱक़ॗॆॿॱ बावह्रबारा नेता प्रान्त्र ग्रान्नी महत्रवारा नेता वरा वर्षेता नेवा विष्र्राया क्रान्त "रूटा र्ड्रमा क्रीना महे । या हे या करा पठ रा रे वि रू वर मदे थर हैन स्थापहें ने शास्त्र मार्थ महें मार्थ महिला मिर्दे मार्थ र रहिला र्रः। नृत्या क्रिया क्रिया क्रिया स्वाया नृत्रः मबेलामहर्वसार्थः देवे स्तर्भात्र स्वर्यः स्तर्भात्र मृत्रम् मृत्रम् मुन्तरः श्चान्त्रं म्यू प्राप्त प्राप्त विद्या मिल्य मिल विष्यात्र देवा के नामका हे किए किया श्वरा (गुवा मरे किए किया ... ब्रीन् अक्षुद्रः प्रकृतः प्रवेश्व वर्षेत्रः येव) म्राह्मयः स्वा प्रवेतः प्रवेतः प्रवेतः प्रवेतः प्रवेतः प्रवेतः वरः रु. वृः न् अरः नदेः गुः सः नकुः न्रः स् रु : ये रु : ये रु अरः स् रु : र् म् : र् रू म् : र् रू बारवंबः नेन् गुरान्ने त्यान्य सर पश्चर रवयान्व राज्या मुख्या मुक् न्याच्चेन्-हु-पठराधना पठन्-ध-तेन्। मॅन्र-१-रा-वा भैरा-धुन्-घेतेः न्मॅ्ब-पर-पर्व-तर्स्याचेन्-भ्रमण-पर-केव्-भ्र-भेर-दुग-पर्व-ग्रेव-मे वैदारा के मुंबा बिया (प्रयाया क्षेत्र इ. यावा मि. या में . प्रचर मित्र ता ) र यावा. वित्रते र्नोब्राम श्रुद श्रुदाय अवस्य प्रत्य क्रवास के ज्ञव वित्र व्या **र्व**न्याञ्चलाञ्चेत्राचयावित्वणानेत्रान्त्राच्चेत्राच्चेत्रा नेरामहेत्

① (तह्माम्रीट.बचत.केथ भूग.बंट्य. 504)

ब्राम्यःक्षयः क्षेत्रः ब्रोयः द्वेरः त्रः हेर् व्यानुः चेर देवः तृः पञ्चिषः प्राप्तः वर्षः हेराः । कर् ग्रॅंर्-र्वेयायदे प्रायायया रे वेद वेर रियाप्या नेया हुद र्यतः न्व्यंतः यरः यद्वः यहं याचे न् ः श्रम्याः हे ग्रुनः हा यया व्याः यह यः यरः ।यः <u> हेलः मृत्रेलः सन्तर्भेलः इंलः इंलः तृः धेदः स्रूपलः मृत्रे व्याह्मः पः इयलः ः</u> श्रीकार्यस्रवा प्रक्रमाञ्चेर् स्वराया चुराया नेरा ने रापहे **व**ाचेर् वाही हे र हिरा हे निस्ति निस्ति निस्ति । विस्ति निस्ति निस्ति निस्ति निस्ति निस्ति । निस्ति । मधे मिरामा हे दुरा हैं में मुनाम नरा ने रापा नरा मा मा मा सबसा मन्दरायाम्बुद्धान्यान् न्याचेन् कुर्वयामाने। वृत्वरायदे मन्द्राया श्चेर्-भुँद-ह-ळंग-गे-ञ्च-घट-त्य-ग्वद-च-धेव-वय-श्रुय-प-र्दा प्याय-द्धव-वनवः पन्-न्नें नन्न-नें ब्रुव-प-वे-क्-न्ने-व्य-क्ष-पे-वेब-तु-ह्न-*मन्तः*म्बदःद्रवाशेःतेदः मरःतन्ताःश्चंदवार्थाः स्तृग्-धःन्मृतः मद्देः । . . . मदे हुर महें र तथा ने या हुराया या बर् वृ र्वर मदे न बदा हु है। सें यम्या चेर नरे न्र म्या विष्य वे के नकु न न्यु विष्य में र विष्य है या ह्य न या *₹बब*्युट:कु\*वृन्,कु\*न≅*८वःच:दे:द्*न्यःय:व्रेब्यः*व्रेवः*हे:कृरःचठ्रःःः **ल्र**ंबर-ग्रुं क्षेत्राकः अवस्र प्रायास्य प्रताय स्था स्था स्था विद्यान स्था देग्या बन्धा होता हो या बन राम् राम्या विष्य होता होता होता है। हुन हो

① (तृ 'लवे 'त्र 'ववे 'ह्व वद रहें प्रेण 'देन देव ' 157 —158)

म्याक्रिः देवाया स्वायार्थं अप्यादि । त्रा कुरा खु । त्रिष्णं व्याद्य । त्रिष्णं व्याद्य

12. ଛିଟ'ସ୍ଟ'ଅଟ୍'ଅଟ୍'ସ୍ଡିଟ'ସ୍ଡିଟ'ସ୍'ଅ'ସ୍ଟ'ଅ'ସ୍ଟ'ଅ'ସ୍ଥ୍ୟ'ଅ' ପ୍ରୟ'ୟ'ଷ୍ଟ୍'ସ୍ଟ୍'ଅଟ୍'ସ୍ଡିଟ'ସ୍'ଅ'ସ୍'ସ୍'ସ୍'ସ୍'ସ୍'ସ୍'ସ୍'ସ୍'

ने भ्रें र ग्रे प्यंद मुन्द इद वियाय भ्राप्त ग्रद मी पह बहा देन वदा त्रिन्यः क्षेत्रः व व भूनः यः कवः खनः वृत्ता मू । मः वयः परः च यः परेः र्ययाची पहेर् व्यव रहा वर्ष पर्व पर्व पर्व पर्व पर्व राष्ट्र र नयः प्र- व्रिंद्यः ग्री- द्रेशः ग्रायः म्रीदः द्र्याः ग्रीयः न्यादः ग्रुयः व्रायः प्रदः पर् ॻॖऀॱ**क़ॱ**क़ॗॆढ़ॱय़ॱॻहॆढ़ॱढ़ॺऻॎॱॱॕॸ॔ॱऄॗ॔ॸॺॱॻॖऀॱय़ॺॱॸॕढ़ॱय़ॱॸ॔ॻॱऄ॓ॸॱॺ**य़**ढ़ॱ त्रुवार्वयादिवा तुर्वार्ह्मा तुर्वेत् न्यवयाची व्यत्। देरामहेदा ह्यावर षवःस्वायायाः तत्त्वरात् श्वरात् स्वायाः श्वरात् स्वायः हरात्रेवः हरात्रेवः स्वायः तात्रातः व ढ़ऀज़ॱॿऀॱॾॕॣॱढ़**ॺॱॾॖऀॺॱ**ऄॺॱॺढ़ढ़ढ़ढ़ऄय़ॺॱॾॖॺॱढ़ऀॱॶढ़ॱढ़ॖॱॸॾ॓ॱॷ*ॸ*ॱॺॖड़ॱय़ विना-सर-वान्तेर-र्मेषा १ वेषावहित ह्रॅब्स्नरास्त्रा " 🛈 ठेरा नेषयानः न्ता "ह्यामरालवाक्षायरायव्याहेतावृ त्यते वा व्याक्षा व्याप्ता वि तहवार्यायामु वर्षेत्र (र्'रेवामविरार्वमा वामन रेराये वताहन *ज़ॖॖॖॖज़ॱढ़ॸॖॣख़ॱढ़ॸॱॼॕढ़ॱढ़*ढ़ऀॱढ़ॿऀॺऻॺॱॷख़ॱढ़ऀॱॸ॒ढ़ॱॸ॓ॱॸॄ*ज़ॹॼ॔ढ़*ॱॺऀॗॱऄ*ॸ*ॱॿॗॗॱ इसराश्रू दः भ्रुं वः चेतः कुरे र केत्र तुः भेता नः कः हणः नुवः चेरा वर्षा वर्षा ₹₩޶-₽₩-₹₩-₹₩-₩₹₩-₩₹₩₩-₩₽₩-₩₽₩-₩₽₩-₩₽₩-₩₽₩ 

① (वृ.यदे : ब्र.यदे : इव:वर:वर:वर:यन:देन:देन: 158)

र्दे व मुद्दा चर्रा त्य व त हुयानहेदायक्षययायानविषयाकुर्मित्रायया हुरूपानुर्मेदान्याज्ञनः यॅं : बे: बाह्य द: त्या प्रमाद: ह्यं द: र्वे : व्या द: व्या व : व्या द: व्या व : व्या व : व्या व : व्या व : व्य बेदा देर पहेव श्चेग थेग इयल देश धरा र न न व तरेपल इय वता वि: # त्रापडि: शुद्र: च्रेन्: नृषेत्र य: वेत्र: य: प्रेचें त्र विद्या के दि: तुत्र: बेंद्र: स्वा ळेवॱधॅराप्तापतःश्चॅपःविपःश्चः नवदः वराः र्चेवः ळवः रेः रेः पविवः अर्ह्यः…. ॱ इंदः अर्ह्न : ने 'न्यमः न्यं दः केदः ये 'सेन् यः ग्रॅं तः व्रॅयः विनः सः ग्रेन् कुरः ….. म्बर् वरात्राम्बर् वर्तः श्रुवाकी सरामान्या में द्राया स्वरा या ध्रवा रु.सव्राधिर श्वेषायाचे स्वर्धन् ग्री स्वर्षा द्वार्याये हा स्वर्धन् स्वर्धन् स्वर्धन् स्वर्धन् स्वर्धन् स्वर्धन् **ॾेवॱधॅर**ॱयग्दःद्देवःग्रॅं **ॱन्मॅ्यः**यः बह्वेवःग्ययः धेवः पराः दहुदः दशुदः **ः** <u>ब्रुथ:ब्रुथ:व्यावय:क्र्य:क्र्य:ब्रुथ:व्युथ:य:क्र्य:य:पङ्ग्रश्चर:व्याकृ व्यायः</u> श्चित देशः धेवः यः श्चेतः के र में ता मायः श्चे र . धुवः देदः तुः क ग्वारा यदेः मॅंबल म नेल यहिमा पहुट छल द न्यमा छैर द में द हेल में ट या के द ... .. र्वेत्रः वंत्रः चलु ग्रायः स्वरः पदः प्रस्ते वः त्यम् । र्यम् तः श्री दः दिने वः यहं दः ः ः कुःधेवः धरा धेवः करः र्देवः नगः ग्रुटः वतरः मेंदः अदेः शेरः मतुदः मैल समा मर्डेन् हुन हुन ब्रें अव। मर विमायव पा धेव न्र मर विमा म्द्रिन्यः भेदा म्द्रादेश द्रिनः भेदा द्रिनः भेदा दे न्द्राः **बेर**-ग्रैज-म्रवाम-म्बर-क्रम् वेज-मन्-भ्रम्य-द्व-लदे-न्व-अनुः चक्चर्.त.पहवार्यायः अञ्चलायाः जाराष्ट्रांचरः या (र्धियः वेदरः वे. **रॅंब**-५म् ॠॅर-थ-मॅंद- य-केब-यं ता-बुग्क-८,छर-ग्वद-व्रताप्त्रेबका-धुन्ता .

मृत्रत्वेचला सर्न् कु ने त्वुरात श्रुराध्व नेराया न्व्रताया वर्षेता देन्-न्द्र-वेन्-देवायायेन्-भ्रु-इययाधियाश्रेद्र- वव या वया विन्ताहे के ल कु लता ने न्र क्व प्रमाश्व रवा यह के न वा से न त्युरातश्चराञ्चेषाः धेषाः मृह्दायदेनताः सहर्ने स्तारेन् श्चेताः सन् नत्वाताः **षश्चानव-१८-अनुश-तृ-१न्नाव-ज्ञव-१८-। ५८-१ न्याय-अ८-ळ** न्या स्याय-त्तर्भेषात्रार्टरः क्रे.हिर्.केथ.धे.भीथ.ता.क्रुचे.त्र्यात्रक्षःश्चरः वेष.धेयः क्रुयः ह्या वयानु नामर के करा अञ्चन धेन स्राप्त र हुर सन स्राप्त न मानीय हुन हु ने दिन नियान में किंद्या या सब किंदा में मिया देश किंदा या देन् रम् अतम् अव केव र विषय देव भेवा १ वेव अव न मुक्क व भेना " उठ्यान्ययान्यदेःन्यवाद्याः «न्दाःस्ययान्यव्यान्यव्यान्यव्यान्यव्यान्यः भ्रेन्ः रैंब-ढंब-ब्रेस-र्मु-बाबेब-धरे बद-रेंब-पर्मेद-यहुम द-ळेब-देर-दे-क्रे.प्र-य-य-वयःश्री-विद्यान्या अवायः नेपः वरः व्रित्या «क्रि. श्रीरः सर-वु-ह्र-स्यामी-देय-» ठेवाम-व्याद्गरवामी-र्वे व कव-वेर-द्यु----बदे वट दें व पर्मेर् प न न व म न व

द्रन् ग्री स्वाप्य श्रिया ग्रायर तह ग्रायः श्री र ग्री स के ग्री द कं द हे र स्वाप्य हे र स्वाप्य स्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य

"न्द्रसक्तेन्द्रस्य न्यात्रस्य न्यात्रस्य स्थात्रः म्यात्रस्य स्थाः स्यात्रस्य स्थाः स्था

<sup>🛈 (</sup>हु यदे न् यदे न् यदे न् यदे न् यदे न विवादे विव

र्द्धराष्ट्रि द्वा व माया अरम्याया वर्षः भी त्याया देवा विष्या वर्षे वा राष्ट्र वर्षा स्वापा स्वापा स्वापा स्व वरः भुःक्षा च मार्यः अरम्याः चेर् ग्री स्वयः देवः र्रम्याः चेरः विदः धवः रवः परुषाव्याची प्रमान्या प्रायय देन रहिवा केवा विवा (वर्षा) म्रोतः क्ष्रवः क्ष्रवः विवा विदः ग्रीः त्याः देवः म्रायः दिव्यायः देवः व्यावेः शुः न-नेन-मृत्याः हुर-न्ना ने-न्नाः इवायः क्रुव-रेन्-स्नित्यः (स्नियः) इर.चळ्चे.वैद.कु.क्षर.जयारूब विदे.ट्योच.च.(चया) ट्राजशायट...... मञ्जूनः न्वराद्धंतात्रे पविवास्तापान् त्यते ज्ञा सन्दाहे जुना कृष्वाः षु'वयार्नेव कवारी रेवर्से इययायाम्बिगयायरे न्बेंट्या नेवर्द्धराया वस्यानु नगाव अन्या ह्रान्विया सार्यराच या वया करा था है। बेर्-र्स्यावेद्र-चुत्राच्यः नृर्देर-चुर् देते हेर्-र्स्या दर्दे न्द्रास्यन्तः श्र्यान्तरः वहंन्या ग्रीः द्वाक्वाके सुः सः द्युः वठवः । । । **ब्रे**चेय.बर्क्ट्य.थे.सेता के.ब्रेट्ट.र्चेट.ज्र.ट.चक्चेर.तप्रु.ध.क्र्याता

र्देव-हव-मब्रेय-पर्ना मेंद-मी-द्र्यव-द्रयम् वयायायाज्ञ स्वया शु न्स्रायह्रम् म्बर्ग्यरामहेवा म्राम्यायम् क्षुराध्रम् रह्मारळ्या बुक्र-स्रम्यः स्ट्-स्युक्षः यहितः स्ट्रा स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः । स्वयः स्वयः । मिलार्या न्यायावया के यम छ्रामा स्रामा स्राम स्रामा स्राम स्रामा स्रामा स्रामा स्रामा स्रामा स्रामा स्रामा स्रामा स्रामा व्यास्र पतिवादम् प्राचितास्य हिमा स्वापास्य स् न्दः। विक्रिःस्वायाग्रीःस्टर्भिदेशेदःई।पर्मेन् वयाष्ययापरी पास्वनन् देव-ब्रुंत-वेद-द्वता दे अद्धर्यन्य यदि हिराया मार्थित वहाया रे र्दा विक्रिते स्ट्रांस स्रे रे स्ट्रा से प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त न्दः नुः त्याः व्याः इवियान्तरम् त्र्रा व्याप्तरम् निराययाचिन इत् कुरा कुरा है र र दिरा रे'चक्कुन्'वर्षे'वेदे'रेग्याग्यराचर्षंग्यान्यं व्रम्वण्ययाः वर्षाययाः धेर्याः "" त्यवेषान् मृत्रा ध्रुष्याया स्वतः द्वार् द्वारः स्वतः देवारा त्यतः मृतः मबेब सर्म महिन क्रिका की ग्रास्य विने प्रमान महत्व हिला सुता महिन है जरा पट्टर-अनग्रिन-पट्टन-द्वेर-कु-र्टः। नवन-पट्टा पद्चन-प पर्ययः कूर्या द्वरः यः च क्यः सः यरः व्रदे दे न्यायः यदरः मूरः च दे व

तसी नाथ : क्षी । या व्याप्त स्त्र स

रॅंब ळंब महिकारा वंद हु इस्र बहार वाप क्रद सेंद रेगहा त्वानेनावाना विवास मान्याना विवास के निर्मा निर्मात के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्मा के निर्म के मी-न्म्याचिन्-तान्वन्-राधित्रा न्-ताया त्याम्यर हुन् छेन्- न्न-मॅर तय क्षर वेर पर्र परे वर्ष पहर में र पति वर रहा तया एक हर यॅन्'न्वर-क्रेर:हन्'बेन्'ग्री'त्व'पकुन्'रेन'कु'न्5त्य'स्टने'पठवा'''' <u>चेन्:ज्ञु:न्मः। धेवःकन्:त्यःन्यरःयःक्न्ःकःस्वःर्ययःयहमःकेःळ्ल</u> र्देवः कवः रह्ने : धरा द्वानः वीः नायरः दर्द्दं नायः ग्रुयः धरः प्राप्तः नायरः चरुषाष्ट्रव्राश्चरार्ष्ट्रमान्वेतारा यान्वतार्थः स्वि तहेतायईम्याव्या मर्श्वमायार्ज्ञम द्रायायायारा पर्श्वमायारा पर्श्वमायार्थे मार्थि मार्थ मार्थि मार्थ मार्थि मार्थ मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थि मार्थ मार्थि मार्थि मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ बर्दर न्यं वरे इर पदि वर्ष है हिन है न्यं वर्ष है न्या मृतिकाले। मृताले। दिरादे पठवा ग्री ही व पानिवाले व स्वा प्राप्त हु से दबा हो नियम में दान विषय दिवा है निया द बारा ही । क्षरास् म्हेन् लय सर तसुत्र सुन्त र्ना महेन न मृत्र भन हुं

यहॅन न्दा डिन यहायायहन हेन्द्र सन्या की यह कारी न्या हुर हैं हैया यहॅन न्दा डिन यहायायहन हेन्द्र सन्या की यह कारी न्या हुर हैं पी स

रॅंदरळंदरथ्र'यर। इरादरार्व्यमामीरवर्षे व्यन्तर्यंदर र्चयायायायेरावत्वागुरा राक्षायरवार्षेदागुःदेवानुः रार्धेदः रे। उ.र्घव.कु.र्व.थे.पक्.र्घव.कु.स.क्.पथी चक्र.र्घव.रूर न्यन् वै: नकु: न्रः ने: नु: सः सः ने। पकु: न्यं व: कु: देन: हु: देर: न्यं वा ऀबेट-२ वॅब-२ेदे-दॅब-२ बब-बे-बे-बे-बु-स-ब्-२े**-**घठ*रा-*२े-२ब-**बट-य-बे-ब**-निव्यस्यास्यास्यासरेयास्य वैदायह्नावाराम्या प्रमातास्य गुरः क्षेर् र न्च्या वर्षर प्रवाधी द राय हार्येषा हार्येष ग्री:र्क्षप:र्कु:प्रमु दे:र्क्षप:श्रेद:प्रमुद परुष:रेक्षप विद:त्यर: न्म्याला बार्चार्टा हरावित्राधेदागुराम् राचविदान्वया दुश्चत्वर प्या वर्षे तहे गृषः चुषः वी केंगः (धः) नृहः। वी लेरः <u>ৡ৾৾৻৵৽৴৶ৼ৶৻ঀৣ৾৾৾৻ড়ৼ৵৻ঀ৵৻ৡ৾ৼ৽ৼয়৾ঀ৾ঀৣ৾৽ড়৾৾৾৵৻ঀ৾৵৻ৠ৻ৠ৻৻৻৻</u> ग्रैष'दिनेर'न'ऍन्'ळें 'रेब'नवेवन'दधर'**ळॅग्'स**'स्वान गाग्'द**ने**गवा**बे'''''** र्मेला

व्यातम्ब हिराग्र्याक्षयायरायान्त्रीयान्त्रीयायाः व ग्रिः श्रम्द्राप्ति व्याक्षयाययान्त्रायाः क्षेत्रात्त्रीयायाः व ग्रिः र्मेद्र्याप्त्राप्ति व्याक्षयाययान्त्रायम् क्षेत्रायग्राप्ति व ग्रिः

स्त्राच्यात्र्यात्राच्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्य

र्द्रवास्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्यः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्याः व्याप्त

इत्यास्यावया याङ्गराहित्यां अगवादियायाः व्याङ्ग्याः छेत्। इत्यास्यावया याङ्गराहित्यां अगवादियायाः व्याङ्ग्याः छेत्।

र्वास्वाम्बुगारमा मगावास्वाम पहिनासिनास द्याया वर्षा द्वा द्वा द्वा द्वा वर्षा वर वर्षा ल्ट.र्ट.व्यात. कु.क्ट.जर्रमचयातप्र, त्र्राच खेचयालयाता रूटा द्र लद श्वास्तर दरे अ.सेच. मुका स्रीका भी था भी था ने प्राची था भी था ने प्राची था ने प्राची था ने प्राची था ने प्र म्बर् कु र्रः। व्राचन्य म्या म्बर् कु क्या यह नाया व्राचन के विदे ग्रायान्यात्रमे वाञ्चेषा मार्यर क्षेत्रम् स्थापत्रयान क्षे प्रविषा न्रा व्याप न्यवानी करायहन न्यं रार्यायान्यन मे उन्यं वान्यारा दे बैद'रा:बळवरा:ग्रे:ब्रॅट'न्यॅद'र्राग्राय:देव:श्रुय:ग्रेय:ब्रेरायहेरा:यह ब्रुंट्रायायवियान्त्राय्ट्रायायाच्याच्याच्या द्वेतान्यं वान्द्राख्या सहन् मुःद्यायभ्राद्याम्बेरःद्याप्ताप्ताप्ता पन्राप्तायम् । द्वा मा द्वे.हर.भ्र.य.चठयाग्री.ध्वा.वया.चभ्र.चवच महेर.छर.ररा मनेर-न्यद-में क्य-दिवास-न्दा केन्यवा ह-न्यवामक्यावया पर्यु: न्म्या द्वार (भ.) श्रेन्य्व ह. न्यं व पर वर्ग ग्रे स्व ख्वार श्रे वर्ग ग्रे इट्रियं बर्न्ट्रा प्रग्रेट्र भृषा अञ्च ब्राम्बेट्र की खराय में हैं। मुबेर क्ट.रेटा धूलाता सूर्यायाची ता लुचे प्रयोधा खी ततु चे या था प्रया प्रयोधा स्थान स्थान स्थान न्ब्या हराधना छ पर संच छ न् हराधना छरा च न न केरा रूपायान्त्रं प्रवित्त ह्रा.प्रज्ञा.के.पान्ता यात्रक्षवयानी ह्रान्यंत्र स्यात्म् न्यंत्रत्य्यः स्टाय्यं स्टाय्यं स्टाय्ये स्याप्याय्या

इराधिन हरायदे रायहम त्यन बेदे यहु न्यं व त्रा ्मं हेर्! म्वद् यर न्य सईरल के नक्षे नव्य इंग्रिकी स्राप्त देवा न्या इराह्न क्रिं वि ल.रेरा च्राह्म हिर्या ग्रयाय या प्रश्ने विव या सक्यया ৾ঀৢ**৾৾৽**য়৾৾ౙ৾৾৾৾৾৾৾৾৾য়ৼৼৼ৽৻৽ড়৾৽ড়ৼ৽ড়৾ৼ৽য়৽৾ঀ৽ঢ়৾ঀ৽ঢ়৾য়৽ঢ়৾য়৽য়৾য়৽য়য়৾য়৽য়য়৽ঢ়য়ড় मने मार्था परारो स्राम्हरान्यवाचेन् विदेशीयाया सने न्या हू .लरे. म्र .बरे. म्र .ल. प ठर पर र सर मिर्न स्कर मिर्न मुहेर मुर् दें :कंचः तदे : धेवः चेंद् : च बु ग्राज्यवायरः बु राः व्राज्यायदे वाञ्च ग्रामीराः च क्री मामला र्रास्त्र स्थान ह्या पर् द्राप्त हर से स्था प्राप्त भ्या बर्गेन-हुर-दर्न-न्नन्य-हुर-दु-धेन-दर्ग-गुर-। नगद-ह्रॅन-ग्री-म्ब्र नेर्-न्ब्राक्ष्यक्षात्राक्षः काळाला न्द्रात्र्रिन्नेकाळ्टाळेचा परेवा श्रुण मेवा पर्मा प्राप्त प्राप्त स्वापा है वा प्राप्त स्वापा स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत न्द्रेय:न्द्र। हे.ह्र-्नद्रेय:नठय:नभ्रं-न्न्य:स्न्यः म्द्रान्यः म्द्रान्यः पर्भः ৴ঀঀ*৾ঀৢ৾৾৾*ঢ়৾৾৽য়ৣ৾৽ৼ৾৾৾ৼ৾৾৽য়ৼ৾৾ঢ়৾৽ঢ়ঀৢঀয়৽ড়য়৽য়৾৾৽৻৸য়৽ঢ়ঢ়৾৽য়ৼ৽য়৾য়৽৽৽৽ नष्ट्रराष्ट्रीयानक्षे र्वेषा नगराक्षेत्ररा यद्यार्वेत्रक्षेत्र नॅर-रु-नलर-श्रव-र्श्वन-प-नर-। दे-र्डव-श्रव-र्श्वन-य-र्नेलप्य-द्रः लवे निया विकास वित भूगः इर् विश्वा सम्बद्धिया समान्या स्वायेषा सुराया वे अपर रुपा तू प्यते हा अपर द्वार प्रमान विषय विषय विषय विषय विषय विषय क्षुत्र यदि स्वा अहेन् पर्मे न् में या गर्यायान् यदा गर्रे वा में वा विवान विवान विवान विवास विवास विवास विवास नर्भे.च.रेटा वेश्वत.र्घव.क्वे.क्च.इ.टेट.येथ.वंशनभूथी वेड्रज्ञ न्यं ब्राची :क्ष्मा अर्थे ब्राचित्र विश्व राये व्या विश्व राये द्वा विश्व राये विश्व राय

क्र-क्रिय-प्रवृत्त-प्रभूत-क्र्म क्रिय-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रम्य-भूत-प्रवृत्त-प्यव्य-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्त-प्रवृत्

ह्येव कर् में राम व्याह यदे हा वान्या रूप वह नवा तर्गाना ष्यस्यान्य क्रात्मा क्री क्रिन् क्ष्यम् वार्षा स्यान्य विषयः स्यान्य विषयः स्यान्य विषयः स्यान्य विषयः स्यान्य नव् ग्री र्यानम् र्युर ग्रीर् केरा देवा बहुर वा द्वारा विकास धना-पञ्चर-चुर-रेन्या-जूर-चॅर् पत्नावाक्षवा-परः ह्युव-पङ्गर-तु-र्नेवा लट.परीयता पर्रथ.र्ह्रेट्या ब्रूट.ता ग्रॅ.ट्.थथ.घट.पर्रथ.अधू. महिलाक्षे तुरार्ह्मा है न मानका है त्या करा है त्या का है न कि के वा करा हे.बु.पक्य. (ज.) परील च.बैर.इंचेश.ज.च भेच क.बुर.बै.बु.प्र.पेच ... क्रिं। वैरायह्रण यदार्ग छेन्। मुंग्रा झुंग्रासहरे शे देग्रा पंत्र तु . प्रदारी म् अत य ता यह अता रा रिते हिंदान में वा वता की ग्रद्या है . प्रदा **इ.नम्**ट रे.चूर पखेबयालच तराखे.र मूथा डे.चईरथा भेज इ.रटा **१८**:२ेंदे: मु:२ वंद दरा गुर: स्र: गुरुं हो नु: २ में ता यह: मुल: स्रद: रेन्य वयः वर्षः पर्नः पत्नु न्याः अधारम् स्याने चुरः प्रदेः यवः अधाराः रूरः वर्षः … महरावहुकान्या हु त्यते ह्वा अर्थेन्या धाने हुर छे नहें र छेन् र्षम्याः अयः धरः बुरा द्वारे द्वेरः र्षम् छेरः र मेया विमादः क्वेदः धरः कुः विदः ग्री त्यय ग्रेन् क्रेन् रहेन् मित्र मित्र व मित्र क्रिया मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र मित्र धि ने ( मृहर ) बे ळॅम् केर । इंग्राय स्टर द्रा ईर धे मे इर रेत लबायायास्याद्वराष्ट्रायदे न्नावाद्वराष्ट्रयायस्यात्रे वार्षाये विदायदान्त्रम् **ロ・ログ・スケース 後ぬない 別ないちりて、 刻・蓋可** 

দ্রবাধ অমন্য অস্ক্রমন্ত নে মূল স্ক্রমন্ত বিল ন্ গ্রন্থ নি না ক্রমন্ত নি দ্র্যা স্ব না ক্রমন্ত না

द्वः क्षव पश्चीयः श्वीयः व्यावयः स्वान्यः स्

स्थान्य स्टान्य स्टाम्य स्टाम्य स्थान्य स्था

न्रम् न तथा स छट देवरा त न में शे हे न

स्तान्त्र व्यान्त्र स्तान्त्र स्तान्य स्तान्त्र स्तान्त

र्नेष्ठ-विश्व प्रत्य क्षेत्र प्रत्य विश्व प्रत्य विश्व प्रत्य प्रत्य विश्व व

प्यन्ति स्वर् स्वरं स्व

स्तिः च न्याः भी स्ति स्वार्णः स्वारंणः स्वरंणः स्वर

द्व-द्व-दे-त्-विकान्त-त्-विकान्न-विकान्त-विकान्त-त्-विकान्त-विकान्त-त्-विकान्त-विकान-वि

पदे.ब्रेट्रा दे.बर्ड्र्ट्याङ्गेनयाचना.प्रे.न्द्र्यायाया प्रमान्या प्रट्रा पदःग्रेट्राचित्राक्षयापराविषात्र्यायाचना.प्रान्व्यायायाच्या प्रट्रा

स्त्राम् मुक्रास् नृत्या स्त्राम् स्त्राम स्त्र

स्वान्त्र्रम्यः क्रयः मिल्नः त्रेनः स्वान्त्रः क्रयः मिल्नः स्वान्त्रः मिल्नः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वान

भ्याक्षः स्वाक्षः त्याः स्वाक्षः क्षेत्रः विषयः मृत्यः विषयः विषयः

Ф (इ. श्रद्धर द्वासर देव भेरा)

13. ब्रिगःब्रस्यं व्याद्यं व्

वैव में र य के व र ये थे र या थे र वो र या र व र या व व व र र व र या व व व र या व व व र या व व व व व व व व व व भेव-म-भव-मु**-**मुल-सव-वय-खेर-हे-दे-पड़ेदे-ह-इ-मृन-सु-द-त्य-हेया-र्वि पर्दे सुन् अहें र् पर्द्य र्वर्य वर्ष में त्र वर्ष स्ट अर्ब बर्ष ग्री क्रिय ଵ୕<u>ୄ</u>୳ୠୢୄ୕ୢୢ୶୷୶୶୶୷ୄୄ୷ୄୢୠୖ୵୕୶୵ୡୖୡ୶ୢୠୄ୵ଽୡ୕୶ୠ୶୷ୄୢ୷୷୳ୡ୵ୢୣୖ୶୷୵ୖୄ୵ न्धन् यः वेष्वायः न गायः धेरः येनवः ग्रीः न वेदवः ने वः कृरः धेषायः यद्यवः ..... र्वा वी ऑस् वियाद्र वर्ष पर्वा वर्ष वर्ष वर्ष वर्षे वर रेग्याशुर्द्वायदेश्चायरार्द्वायस्यात्वा रग्र्नराराय्याः ने**याः क्षा** यर प्रचेर श्रेन्य केर हे 'दे 'प्रहे 'ह 'हें म्या बुदे श्रु ' श्रे 'खें म्या मर बर्' मञ्जूनः सरः श्रेरः तह्नं ना क्चुः श्रेरः तहु ना सरः। धरः मञ्जूरः देशः दशः रनः *ने*ॱन्-र्नेलःदहेव <u>चलायर तृ</u> त्यदे न्नायावल ज्ञुवान्त्व त्या कें केल ज्ञुदा त्त.क.पह्ना.वेर्.ध्याता.प.र्.र्च.पव्येष्टा.क्ष्य.क्ष्य.क्ष्य.क्ष्य.वं न्या प्रतिव निर्मात् प्रति प्रति । यह व्यक्त क्रिया क्रिया विष्मित विष न्ब-शुप-र्-- कुल-ल-द्रे-प-छल-पर-वि-पदे-ल-रेन्व-शु। प्य-र्पर् नगःभैराःकः श्रुटः न्तुटः सःटः सः पदेः वटः सः **अः** श्रुवाः तुः स्टः वदा श्रुवः शुः ध्रेन्यान्द्रान्त्रा वार्चा क्रवा सुद्रान्वता वदान् नेवा वुवा ब्रूट्राचर ने प्रस्था क्रिया क्रिट्राची श्रुट्राची श्रु नरामानियानी नरातु । व्यत् । ह्रान् नियत् वीता महिता वीता महिता विता निर्माण

श्ररः ह्रम रमः नवरः वजः भेवः धरः पश्चरः द्वेषः छः धरः ह्रमः न ५००। श्ररः ल्.पर्व.रटा म्ब.तब.की ि.प्येचेश ब्रुचा.पर्य.क्र्य.भूर.प ह्रव या सुता व्याल दे न्या सु । व ता सु : इव के पह व हैं है रूपा मुद्र-देव-क्रेव-ह्र-ह्रेर-सु-पठकाकद्र-अ-ग्र-स्-य-प्रवाधनाम्य-प्रवाधनामय-प्रविधनामय-प्रवाधनय-प्रवाधनामय-प्रवाधनामय-प्रवाधनामय-प्रवाधनामय-प्रवाधनामय-प्रवाधनय-प्रविधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवाधनय-प्रवा ग्रयान्य वाह्याम् सुरिष्य निरामान्य स्वती स्वामान्य स्वामान्य स्वामान्य स्वामान्य स्वामान्य स्वामान्य स्वामान्य नम्राप्त व्याप्त दे में के वर्षा की माया वर्षा श्री में वर्षा प्रमें वर्षा के वर वर्षा के वर्या के वर्षा के वर् बियाश्यर्भन्त्रा दे वयाता झे क्या श्रीरावया विभागत स्वापित दे दे दे देना है. ळे.घ६४.६५.५५२३.ज्ञ.ज्ञ.च्य.६४.५६४.३४.४.५,८४.५५५ मी.पी.पा.श्री.श्री.ट्र्यापहूच.चेया (व.) मेथ कार्य ५.लूट.पट्ट. हटे. लूब.पटी मे तर्ने न्ना त्या सहन् नाईन् ग्री के राया या न रुन् के ख्राना यहार दाया तहना र्नेर-तु<sup>-</sup>। त्युं 'देल' पठल' दे 'दें व' पढ़िव' क्षें द' खे के व' खें दे 'प मृद्ध बेचल' ''' नन देन वि इन कु व नक में स् न हु र न कु न न कि न में स न्दः इर् ग्री श्रुपः बेकेदः श्रवाया वदः त्र कि. वर्षे व. व्या श्रुपः वदः यद्यः कुरागी नहन्याने निविदारे राष्ट्री कुरायान द्राया श्रुर्या व व रेरा कु पक्षत्र-प-१-८ विट-भ्रेन्यावनते कॅट-म्या-स्न्यान्यान्यः वह तह्न-----रट. अधिव. कु. न. लशा शिका म. ल्य. संप्. में दे . मी. शिका न धिव. में सामा लब् भूवा या लाक्षे में व वश्या पहें द्वा में दे वर लवा या में वा पर देवा बेद् हिर्। द् त्यवा बेर बॅंच त्र दि द्वा में हिर् चय कंपता के धेव त्र व यायात्र व्याप्तेषात्राह्म व्याप्तात्राह्म व्याप्तात्राह्म व्याप्तात्राह्म व्याप्तात्राह्म व्याप्तात्राह्म व्याप पक्र.र्थर.क्याच्या यरताचेयातुः क्यात्वेषयातात्वेषयात्वे विव्यासः

र्नात्त्व नरायराबेनावत्वाया नेन्वात्याळेनावहिनाबे हेन्वही बेर् पठरादेयादादरीय दयागरीर ग्री त्य याक्षायर पहराईण न्या चरातु वर्षेत्र तत्या ग्री श्वरातृ त्यते ह्या या न्दा । यह केवा के राही वी दे अद्धरता दें विना वु के न रामारा ग्रे मु भे दें राम दें द ने द भावता ने रामा नर्गेन्-य-तुब्र-धदेः वृद्य-पदेः तृ त्यतेः त्तुः यान रुषा वृषा केषा य देवः वियाच्य इर् र्र लया पवर्र हियाया यक्षरया ग्री विर विर व्याया ब्रुवा अक्टर प्रतिषा विशा द्वा क्षर ब्र्या श्राप्त तीषा क्षे हुव विश्व है । द्रथायह्रव वेराश्रेयथा रे.पस्यास्टाम्य ह्रेरायटार्टे.खेयाह्याच्टा प्रविवास्याञ्च विदार्श्यम्या निदार् हरार् विषाः तु । यमिन् वद्या कर् । यहिव हेन् हुः । ग्री : भ्रु : भ्रु : धेद : ह्रं यः र्यम्यः य गमः य दें अवः न्दः। देवः व वः य गेन् : यः नहर-व-तर्-वर्-ब्र-क्र्य-क्र्य-क्र-भरः। पर्व-क्षा पर्व-क्षा पर्व-क्षा पर्व-क्षा स्वाया. यू. प्राप्ता प्राप्ता क्रि. क्रि. प्राप्ता प्राप्ता स्ता स्वापता स्ता स्वापता स्ता स्वापता स्ता स्वापता स्वा ञ्च याञ्चलाञ्च र्वावरायाञ्चर प्रते वि प्रवर् चुरा वे केंग प्रते हर् धेरा विर.१८८। दर् कुलात्मा मे हूं नय सुमय छ नद हा नय हर् तर हा न ब्रान्य दे अद्धरण द्वेम्या वस्तर म्रान्ता व्याप्त वस्त म्रान्य प्रमानक्या वयागुर्क्रास्ट्रास्ट्रास्ट्रास्ट्रास्ट्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म्राह्म म्बिति रेग्या हुराळे द्राप्तव्या गी र धुर् वळव्या र्ग्या हुरा 35

बद्धवराकु देर कु तर्दर दर्द निर्देश सार्वर व सुन्य स्था कुर निर्देश पः पठकारे 'में ब'पाबेब'रेर्'ब्या ख्र-सुवारु' खेवा वनका ग्रुका या तर्रे .... वर् वृ रोर क्रिं प द्रव प खुर प र्रा विषयःश्रेरःग्रें झॅं दयानञ्चनःवि विष्यं मृत्रे श्रेर् नरः हर् श्रेरः वे प्रदानः न्दः। यदयः कुषः कुषः यः यः न्द्रं दळे के व्यदः नदे के दः धेवा र्यर-व-यरमाज्ञयान्यः विच यायद विदायाने वय हेया शुः क्षे विद्या रेग्राक्षेत्रम् यान्दा हु सदि ह्वा यान्दायह केवा छेरा हे वै पर्वेदा वि'यदे तु र्श्वेच के चर राद्य निवा देव द शु हु देव कर व ही देव तह्रव चियावया क्रवा ने दार्थर तत्र्वा केरा हू स्परे न् या स्परा धरा थे कुट.रे.लूट.श्रेट.रुटा ते छुव.श्रे.बूट.बालट.बर्ट्र.रुवायाग्री.लूब. ह्रवःभवात्रः क्रे. वरा प्रति हुः त्यते न्ना सार्थः व सामते स्माना प्रवा ह्रवायार ह्र्या त्राया मेन्या वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे हित् हर <u> इच.धे.स्थ.पहूच वेर.प्या.रचयातात्राक्र्याक्रीराची.विर.च क्रेयालः ...</u> वहॅग चुन सुरा धेरा भूत में निका करा क्रिं में हे दे पर दे प्र विका यद खेन्याक्षात्रकान्त्राच्यायात्राच्याः व्याप्ताच्याः व्यापताच्याः व्याप्ताच्याः व्याप्ताच्याः व्याप्ताच्याः व्याप्ताच्याः व्याप्ताच्याः व्याप्ताच्याः व्याप्ताच्याः व्याप्ताच्याः व्यापताच्याः व्यापताचयः व्यापताच्याः व्यापताच्याः व्यापताच्याः व्यापताच्याः व्यापताचयः व्यापत्यः व्यापताचयः व्यापत्यः वयः व्यापत्यः वयः वयः वयः वयः वयः वयः व तस्यानमृत्रवत्रवेषात्राचित्रत्रित्रत्राचेत्रकेत्। त्याव्यस्याहेवायः ने प्रविकास में र क्रिं क्रिंक के व क्रिंस व व व व मी ब्रिंग हैं है व है पर है न हैं न नक्षायर कर अपहेन्यास्यय हेन् स व्यन्ति वृत्य मा देवा व हेन सिलाग्री के.पर्टे विश्वकाश्चर लट अर्ट् नपर श्चिताश्चर द्याप हिंद निया यारे .. न्त्रा अर्देव म्याया क्षेत्र भेव वत्रा व्या वित् वे व्या ग्रीया कर दहें ग प्रया

वयाया अस्य वर्षा स्वापुर्या त्या सह स्वापुर्या । वर्षा सुदी । मह्मामानदेवापते स्रमण स्राधिमानस्य पद्य पहिला (पर्यामा) ग्री त्रस्थान्दानम्दारम्हित्याद्रम्बद्धाः । दायश्चनेत्राचीः सुयायाञ्चा चरः मर्द्धमः तम् । परः वी अतुव : तु " अर्ढे द : तत् ता ग्री तः ख्रु तः क्रु तः क्रु : देवाः " " त्र्वेच्चेन्-न्व्याचुर्-छे-भेर-चर-त्र्व-य-यवा है-शेन्-वर-छेत्र-श्चिरः दयः देयः पर्देवः च्याः श्चाः श्चेवः विरा ररः प्रवेदः वरः शेः दयः सिर-प्रमुद-तुरा-पःर्यवयायाय गाम पर्दे बरा छेन् सान्मेया केय श्रुरः म् अर्थात्राच्यात्रवेषात्रव्याच्याः भित्रात्राः ह्यात्राः अत्याः स्टास्यायः गुःचिम्म दर्वायाचुन् पर्ने प्यंदाच मृदिराच्छत। विन् गुः प्यंदाद्यवाः लुरायदे विरा न्ने ततुवाग्री न्ने वाका मन्त्रवा वी वे वाव वावा म्बराव्यान्त्रेरान्वेयाय ग्रेंराधराम् यास्यायरेन्वेयाळ कराय " इर रटा। श्रट.स्या (श्री.) परीया हेय जारु. हैया हैरार स्थापकर्या श्चरः रट बर्बबल ग्रे श्चिता श्चर्रे रेवा यहेव । युवा के वा पा प्रवासित हैवा बह्याञ्चम न्द बदानङ्गयायाधराबेदानेम्यायायानम्माळाचेन्यान्मया यरेद्रव्याग्रदः स्टर्स्ययायस्या हेद्र चेद्रद्र्या ग्री पर्मेद्रया स्वायाग्रुयः **७८**। १ वेर-व-६म-६मर-पम् भैवा**वया** वृद्धाः मी.सु.सा.सु.सु.से.स बहैंब चुन् न् बॅराने 'ने बरान्स। यह ख्राम न बदा ख्वा भी न दे हैं **য়**৾ঀৢ৽ঀৢ৽ঀৢ৽ৠ৾৾ঀ৽ঀঢ়৾৾ৼ৽য়৾ৼ৽ৠ৾ৼৢ৽য়ৼ৽ঀঀৢ৽৽ৠৢৼ৽৽ঀঢ়ঢ়৽ঀ৽ৼৢ৾৽ **য়ৼ৴ড়ৼ৴**য়য়৾ৼ৴ড়৾৻য়৾৾৾৻ৼৼৼ৸৾৾৾৸৸ড়য়৸ড়য়৻য়য়য়ড়য়৸য়৻ঢ়৾৴৸৾ঀড়৻ড়ৢ *बेर-चु-पक्ष्व-प-५-र-प-५८-। बॅट-चॅव्य-पठक-६-ख्रे-्-प-र-पन्-क्रु-***ब्रह्मान्त्रिः क्षेत्रः यया वर्षः कुषः ग्रीः नष्ट्रवः वर्षः न्तरः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व**र्षः

हूं सदे न्ना व रूट यह के व लेर हे किर तत्वार स्व वे के न यदै देग्वा वेद प्रवा देर द्वा केट हे रूट व्यापि पर्वे पर्वे प्रवाद तर्-र्गः धरः तश्चरः स्वातः सम्यान् विः स्रात्तः स्रात्तः सर् स्रात्तः स्रात्तः स्रात्तः स्रात्तः स्रात्तः स्रा देशःब्रुषयःॲदःवदेःवर्गेन्ःयःबृहेंदःन्ब्रेषःक्रुरःवर्श्वःदह्वाःग्रेषःबेषः**ःः** ब्रुंन:विदःतुःषयः बुदःवन। देः दॅवः चविवः तेः व्रॅवः व्रंटः बुरः धैः ने प्वरूप नः धेवः वे यः त ईं रः चु रः नर। पर्ने ग्वा वयः ईं ग्या अवतः विगः यः नर्गे रः त्तानक्टान्द्रे हिन स्नि नियालयान्द्र ह्व कुराया निवरा हैया हु । स्या व। वै.लपु.श्र.बर.लट्.चश्चेर.चवशःक्षेत्र.सितः सूर्वे वियायवयः विवी ঀৢ৽য়ৼ৾৾৽য়৾৽৽ৼৼ৾৽৽৽ৼ৾ৼ৽ড়য়৽ড়ৼ৾য়ৢঀ৾৾য়ৢৼয়ৼ৾ড়ৼ৽ড়৾ৼ৽ঢ়ৢৼ৽ঢ়ৢৼ৽ঢ়ৢৼ৽ঢ়ৢৼ৽ঢ়ৢৼ৽ঢ় च नेते छन् दूर वि क्षा अर मृत्रा हुं वा दिन निव स्वा चर वर महार व बॅदः अ:केदः दंदेः नगदेः न्बॅद्राः न्दं दः नदेवः धुं गरा अद्यतः । प्वाः मे अदः .... म्लान्द्रा म्र्रिश्चर्यायाञ्चेत श्चित्याल्द्राचाली हेत्राक्चरान्वयाद्ध्या नु खुल के श्रूम न्त्रीम के त्राम के निवास के काल "" *ढ़ॆॺॱॺॺॺ*ॱय़ॱढ़ॸॆॣॺॱॺॾॕढ़ॱॸॗॱॺढ़ऀॱ॔ॺॸॱॹॖऀॸ्ॱॸॕॺॱढ़ॾढ़ॸढ़ॸऀॗॎॺ॔ॱढ़ॸॱ**ॱॱॱॱ** लट् विच करे ने केर भेन निम्न ने श्वर ठंडा तर्ना सन्दर्भ ने निवेदः ं वर्-र्वण ग्यर-वर्डग्य-ब्रॅ-स्यदर-ब्रे-स-१७२वर्-ख-वे-स्र-स-ळेष:रॅव:ळव:हुष:ॲंद:ष्ठेष:पङ्कष:बैदः। दे:बेव:धे:बे:वद:ॲ**द:द्र** म्भ्राप्तव्याचिन् द्वयायाचे भ्रम् वर्षा वर्षा प्रमानिका वर्षा प्रमानिका श्रेतातहर वर्षी भूर। पग्रत मृत्रिय राज्य तर मृत्रिय राज्य प्राप्त र

स्तास्तर्विते ने त. वे र. विमा त्यामा विमारम् मृत्या विमारम्यम्यम्यम्यम् मृत्या विमारम् मृत्या विमारम् मृत्या विमारम् मृत्या

য়ৢ৾ঀঢ়৻য়ৣ৾৻য়ৼৢ৾৾ঀ৾৾৽ড়৾৾ঀৼৢ৾৴ৼয়৾ঢ়ৢ৻ৼৼৼ৾ৢ৾ঀৼয়৾ঀ৽য়য়৾৽ঢ়ৼ৾ৼ৾ৼৼৼয়**৻৽৽** बॅद्रम्बरे क्रॅर लाक बळें व व व दर्ग दें व मव द मला के व लाहू ला ते हा बान्दायक के बाजिर हे 'देश महें 'दं महदायदे हा हु लाके प्या में आदा श्चिर्-रंशः तहेव . लु . हु ग्राणी . मृहवा तवेवया दे . यम् वहूर हे . हुर . हु र व र्भे स्ब द र प्राप्त मिर माराया मिराया मिरा मदे न्वेतर भेन वेतरा या वन हूं त्यदे हा या शु देर नहुर् पर्या देर ॅब्ट्र त. कु. विच. हु. वाबट : चरे. द्व. याट : च ग्रव. विच. वी : देव : वा "नव्याग्री क्षात्रवार्ष्य प्राप्त मेरायान्य मेरा केवार्ष क्या मुक्त परा नगतः देवः ञ्चः वः बेर्-यः गवरः यः बर्। छैः वगः वृः वेरः तकरः पदेः रेट.पी बंथ.लर. मैथ.बह्र रे.त.रेट.। लट. ट्रेट.पंचरथ. श्री.वैट्थ.ल. इयरा न हे नरा न व दः यः ५६ र न या या तः दे व सु स्व दर हो र यः धेवः ः ः ततुन् करा इन् र्वे हे उराव परि केता सन्ति सुन् स्ति सेर केर *₹₦₼*₯₣ॱढ़₣₦ॱॸॗॗॸ॒**ऒॸॕॸॱॺॱ**ऄढ़ॱॺॕढ़॓ॱॸॵढ़ॱॸॗऀ*ॸ*ॱऄॗॸॱॺॱॸढ़ॸॹॱॱ हे निश्चन याया नहें वाया न्या राया प्रतास माने के वाया वावरः ध्वेतः च्रतः प्रदे । ज्वेदः वाकेतः विदेशानातः द्वेतः नाताः च्वेतः । व्यवानहृद्गु केवाबर यं वर्द्द्राय विषयाय वर्द्द्र व क्रिक के न्दर

रदः लदः वरः यः ददः। वयरा ठद् विषेत्र परिः वं तयदः देवाराः सदान नक्तान्दि द्वाचुकाळे वृ किरा ग्री दिन वृ क्वा क्वा किता कि वर्षे नेट्रश्यट् मि हिप्ति क्रिं लिट क्रिं क्रिं में मिर्ट क्रिं मिर्ट में वविदःश्चेरनः रेताः वहिंदः श्रवताः रेताः नत्याः वन् वन् वन् वन् वन् वन् विद्याः परिः व দ্বনা রুশ-ম্-ন-দ্বী-ব্রশন্তর্বতার্ত্রশন্তর্বতার প্রাক্তর্বতার বিশ্বনার बर्द्धरथ.क्र्य.श्रुर.रिवा.ल.श्रुव.पट्टेब.बेय.वय.तिर.क्रुव.वी.चर.च्रर.केर. **दॅश**-५हें द:ग्रुं क:पत्वण ग्रुंश-धर-पङ्गद्-द्वर-दें द:दु-दें व:पर-पङ्गराधदे-**ब्री:बु:क**'सन् :स्व:बॅन्:चर्ते:धुन मु:न:न्न:स:टॅस:तहेंव टेरा:न्राय:धेद: बैद-रेगल ग्रे थया त्रा बैद द्व हैं गरा हुर दत्न र क में र या पर्गा पे ळेव.त्रुप्त.त्रमेव.द्रेव.ध.व.जूर.त्रुप्त.य्य.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.क्षेव्य.त्रा.कष् वलामके नुरक्ते मदी न्मेरल न्व क्ष्र । शुःशुः रं वार्या नहें व मुलके ब् तेराग्री पद्मवाया हे श्रेन प्रताय विषा विष्य का स्वाय के निष्य सामा केदः यं 'द्रार न में राया ना ना व नेदः यया केदः तु 'पञ्च स्वापित मारी राष्ट्री ..... नुयामान्त्रवास के नगाय बर नवा नुवासुरा व्या ही नाई वा नुवास निया है ... तर्ने म्रार वेपयं हुराया , द्वाया रे वाया के के के व्वा मर्द्वा प्रमाणिया निर्दे इ.इट.प्र.स.कुर्य.सूपु श्रे.यर्थे थ.थे.यकूरं प्रधीतानी प्रविधायसू व श्रीर. क्राम्र् पुष्पाराक विना ने नि साम्रु है। यहिरता द्यानर हिन स्वया य स्पुर्यातियातपुरम् विश्वयान्ता इ.१४० क्र्याचरवाश्चरः स्वीयाविया <u>शर्नार्थं,श्रंत्रानर्थं,श्रंत्रान्यं,श्रंत्रान्यं,श्रंत्रान्धंत्रान्धंत्रान्धंत्रान्धंत्रान्धंत्रा</u> **होयात्रीयास्याद्रमार्थायहेवामान्याह्रमान्याहराहरा रे.र्यायाह्यया**हीः

नुःसुलाईन देन् दूरलदे न्ना सर्रा नक्षुन् कु न्ना सामा नका विदादे निर्माद बह्रवा नशुक्रायायदेवायायद्या वेदा। उद्यावायस्य वर्षयायायहरा व्यानग्यावरम्यावर्मन् नत्वम्यावयान्यः स्वयः न् । चर्नान्नः पदेन तह्व.मी.मध्र.मी. थीय.भर.निर.ह्र.श.स्व.छ.नु.र्माय.भी.भी. पविषाचर-लुब-पर्वेग-मा सर-जिम्बाक्र-मर-लुब-स्य-पह्न-ममः बाद्भर् नियाक्षव की क्षत्र करा । लटाक्ष्याक्षिटा बयाक्षि की बाद्भवान्तर व्या द्यायह्रयाचेयाक्र.ने.रियुः श्रुटा चे ह्या ह्या ने.रियुं चे त्रीराचे टारी ह्या मदी ने अर्द्धरल निराम् दार्थर सेर महिना पठका तुया वर पहना है देखा बेर्-बेर्-बेर्-पर्ने पतिवा पहें वाळें रे र्या हुया हु रे वा बेवा यह ग यः चरुषः धरः चष्रुतः चष्रुतः द्वाः त्यः दक्षेतः द्वां षः द्रः । दर्वे अतः द् र्ट्र-स्र-अन्याक्तरान्द्र-र्ट्रि-कुःद्रियम्द्रेत्-व्याद्रेन्याद्रवयान्द्र-महर् हुरके ने या द्याय वहर देया धेवा .... के या दो दि पत्र व यः हुरारे व्यान्त्र प्राया प्राया पर्वत की व्यान्य प्राया प्राया बक्क, रेटा वर्थ, बर्ध्याता बाद्या बीचा में अकू। वर्थ, बर्ध्याता पर्ह्य . त्रया मु : अळे ' नठरा' दें रा खू या न त् अरा न रो रा ग्री ' अळे न ' चु रा न रो रा प् वरः पञ्चना क्षे वर् पत् नव नया अया पवर दे वया न्यान पर्व न प्रता ने पर ह्यर्राम्बद्धार्या क्रायते व्याप्ता विष्यते विषये विषय (8. 12. 4c. 6. 6x. 6u. 3. 5u. u. su. u. x. x. v. 108--110)

पविद्याक्षार्थन्याम् अक्रानदीन्या प्रमित्र हर्षराचित्र प्र श्चरानवद्गरमा अञ्चरामा मठता या पहेदा में पा स्वराय देवा पहेना ५५५-७वि.पर्थेत.४३व.४४वथ.४५४४५**.७८**-१<u>५८-१४८-१४४-१४४-१</u> र्श्चेदःर्नेदःग्रोरःपुषःर्गुगः८र्नेदःतुःबःर्मेदःधरःथरःश्चेर्<sup>ः</sup>ग्रेगः ईग हु दें या तहें व चुया ळें या परी पाया तहिया छं या पर पहे व वया या हवा ... विषाविद्याप्तकथाश्चित्रश्चराष्ट्राच्याचरावदावायात्रविद्याचराया लया नेया स्वा च क के के न के ने के ने के ने ने मु स्व मान के न मान ह्मिं। र्मी.त.कूय.ग्री.धे.या द्यान्धेयाग्रीया मह्याञ्चार्या क्रिया कर्मा र्षम्बःक्षे:बद्दःश्चेर्:कुदःम्बेर:सुब:र्ग्युगः ५ द्वःक्षे:मृहदःदिवःनः..... चरुषात्मवा चर्ष्ट्रसः क्रुव विद्वारा चुरा दे वा चे दे व म्बेर-न्दः। क्षेप्तश्चेषाक्षीःस्यार्नेव। न्यवःर्मण्याम् स्वेवःन्दः ढ़ॕॖॿॱॿॺॳॱय़॔ॿ॑ॳऄॖॱॳॺऄॎॿऺॳख़ॿॳॱॾढ़ॱड़ॿॳॱॾॺॳॱॻऀॸॱड़ॗऀॱढ़॔ॱ 1911 व्यक्तरः में र व्यवे कुषः रमयः सः वें र तु : य : यर मर स्वरे क : द्याः नें द য়৽য়ৢয়য়য়ৢ৾৾৾ঀৢ৾৽য়ৢঀৢৼ৽ঀ৾৽৾৾৽ড়য়ৄ৽ঽয়য়ৼয়য়৽<del>ঢ়ৼ৽</del>ঽয়৽ঢ়য়৽য়য়৽য়৽৽৽৽৽ वर्ष्ट्रन्थि वर्ष्ट्रा

व्यान्य स्थान्य स्थान

श्चरश्चरारम् र्वराष्ट्रयाविययाञ्चयया द्राप्ताञ्चरा देवे कुया घरता बिदः केवः नविवः न नाः नदः तदः चरः यः नवयः रदः ष्विद्यः शुः नद्वयः धरः । नम्न-तर्वयःक्रन्यः कर्म्यः अदेः श्रेन् मृत्यातः श्रेतः यात् । स्रेन्यः । **रमः बुदः महुः महुबः मदेः हुः वैः येरः वेदः यः मदयः ग्रेः दर्भः कुनः दर्धःः ः** त्यः पञ्चात्रायः वे द्वा " (न्या हुन् पञ्चात्रायः पदे सं पवे पञ्चा वे " हुनाचेर") ठेलावविन्यान्दुलायर कुनावने कुनवाय पान्या। देवा कुन मं 1793 वर् छ ग्रार वर श्वर अर अर वर्ष र अवे न ग्राय हुर "कव खर ।" मर्दे न्वर्टरः" (कदालुदाञ्चनवान्त्री वर्षान्तरः नु वर्षान्यदे नु वर्षान्यदे नु धनः रेगवाम्बेवाविंदः ग्रेन्द्वान्यास्य वरेववा श्रवः भेटा दे दवा मह्मरकेर में राया रेया ठवा सं स्वेश मिन " कु के दाय दा गर्य रा " "न्दंगुर्यस्तु न्दर्भ " "म्द्रिन्द्रिः हैर्युः रेद्रिन्तुः **बॅद**'बॅ'नर'। " वेराम'र्सन्य रेस'सर'सर' दरेनय दन्य महीय हैया इर.पड्र.कं.तपु.केबायक्षेत्रप्र.श्चर.लटा "पड्र.कं.केर.पधु. "ध्या **धरे** त्यान् ग्रन्त्र्याया स्थापन् विष्या स्थापन विषय स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था सर पर्ने परा हें न अव र किर केंद्र अवे र जाय खुर पर वे कु व व व र व निमा धिवा

**इ.**पहूच.की.पूच.क्च.चंदी.चंदा.पंत्र.चं.चंत्.का.चं

मदर्भा श्रीन् मलुद्र मी क्षि ददर ले द्वा रोतर क्षु न्य दर्भ मत्र पक्ष प्रक्री प्रक्रे देवेद .... ग्री'प्यसःर्स्याम् वर्षास्यायाः सन्। हिंगाम्बर्धाः देशसः सहिंद्यदः र्सम्यःदेवःम्ययःदेवःवर्गे**द्:ग्रुयः**धरः"वग्रदःश्वाःकुःदेवः"ठेवःस्रद्यः खु'ग्रग्तरम:देर:यक्षळं द:रे'रे'म विद्यु: हॅवाग्वरक:रेथाय:द्रः तर्वे ···· त्युर<sup>्</sup>षं तुरुः कंपः मृषरः श्रेटः ५ कॅप् रः र्षमृषः क्रुवः रेटः येपः श्रुपः चुरुः केवः स देवःम्बे हुवः गुरः ध्रवता ध्रुः यः 1842 दः मेदः वि प्वब्या नेरः इर्.रच.वर.चर्र.चर्ष.चर्ष.चर्ष.के.के ज्राच्याच्याच्या महिराया ह्मैग्-इक्ष-पर्दे-कु 'देच-ग्रुं 'ब्ला-वशुक्र-द-लक्ष-लग्-कॅब-इन्द-पर्दे-दर्बे- '''' केवायात्री हेर् ग्री विषयत्रीत्र रिविर्या श्री वर हे स्र सर वर व्या मः इयर यान्वयान व्रतार व्यान व्यान व्यान व्यान व्यान व्यान व्यान व्यान म्दर्भः इत्यः पः में 'देश' सम्चार देश' पर ही 'प' ही र' पहर है म इसामानहेव् व्यात्यर सते प्रम्मा क्वि द दुस्य पार सम्या विषय विषय विषय क्षि देगःमृदे र्षेद्रास्त्र हुवागुराके परामहेदाया प्राप्त ह्वागु या दया मग्दामञ्चर द्वतान श्वे मंत्र देवाहे स्टर नेवादिवाम श्वे त्री पहें दर रा .स. केव. स्ट्रे. झॅ. वया वेप. ब्रंटे. झॅ. धेया वव. ५ व. ५ . ५ च्यू . ५ . ५ च्यू या स मु वर्ष्य न दूर पद्मेया पद्मे क्षेत्र में द्वा पर स्वाया या व्यवा पर विग्राधराञ्चरायायार्थी हते स्नर् तु शृङ्गे रीर वर्षे र या नक्ष्याम्दायान्याचा केषाचा स्दाम्दान् । पत्यावा केरा महेषाया छ ।।। हुम् गुलळेल र्मे पर देव वेर म्लर पञ्चे म्लर मार्मे र य ला ....." बेयायविद्रत्रुम वेयास्त्रीयाळव्यन्त्रीक्षेरास्यायाळ्युः

त्व्यान्वि के त्वुर वर्षे केत्। न्य व्यातु त्र तर्वे व्या अ सेर वर्षे म्क्री सः अविष्यः ग्रुपः कुः अस्र देः श्लेष्यः ने पः वेतः र ग्रुषः ग्रुषः ग्रीषः दर्षेतः । कु'भेद'स'ने 'स्व'द्याचाहद'रवेनय'ने 'वेप'स'सव'सेद'पङ्ग' सुंब्**यः** ' म्लयार्थः हिन्वा सुनाया न रुवारी रामा ती रिवामवर्गाया के रिवासनार नियान्ये व्यक्षेत्र व्यापु निर्देत् या सम्बद्धा व्याप्त व्यापत व्याप रमलः"बेरःमदेःब्राङ्गमलानेदेःकमःश्चेन्।सवासुग्रवाश्चे।सेग्।कः न्रा लगामह्रमाणके वर्षे प्रवासिंग हुमार्च या या है या प्रवास रॅन्या प्रमान्य प्रमाने प्रमाने क्षा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स मुड्रेन य.र्थन स्मयान हरान हिंदे ब्रियायय। र्थन स्मयान हरा नयः देवे बदत देव धेदः वेयः नहूर वे धिन। " मेनरः नः स्वीयः रदः इर-वृग-पन्-शै-धेग-रेग्य-रेग्य-दि-सु-त्य-व्-शै-शै-रेंद-य-बुय-शै-मॅं क्रि न्रः क्षे क्रिन् मेर म्वाया मा क्रुया धिया रे व्या स्यक्ष या ह्रेया 🕶 न्ध्रन्युकाक्रक्रायकायाष्ट्रिकासुकायाः श्रीत्र्वाक्षयः

14. न्त्रभावन्त्रवा क्ष्यं च्या विष्यं विषयः वि

ने 'क्षेत्र' स्वर्' क्षेत्र' क्षेत्र'

**केद**ॱसं 'न्यह' हुँ गुरु शु ' थैयस' मेंह' सहसा लु र' थैयस' प' ने हैं स' दर्ग सं वैवातुः मञ्जय हिरा। मञ्जेया हुरा न्यरायरा यहारा दुः द्वेषा कुरा कुषा देवा देवा हिषा श्चितवासम्बन्दे स्वतः य ववागुरान ह्रवा वर्षे दे देवा सुनवा वाया व उरवा है। <u>५</u>ॱผมॱक़ॕ॔॔॔॔॔॔॔ढ़ॱख़ॱढ़ॺॱॺॱॺॾ॔ॺॺॱॻॖऀॱ॔॔॔॔ॺॱढ़ॱॸऀ॔॔॔ढ़ॱढ़ॸऀ॔॔ॱॿ॔॔॔ॸॱॿऀ॔॔ स. इ.प. म्. के. पंचर था. थी. च र्ष था. हे. ळेव.क्रेर.यं.बरचेथ.त.पथा त्व्वाग्रंट कॅर् तु अहर् या न गृत देव केव ये कुटा र तुर के या बुयः धुँग्रायदि राग्वयायदै राग् पारोबया ठव इयरा में राया केवा ..... द्रपु:च मेपः मुंबे की या पष्ट्रा स्थानिया क्षा स्था क्षेत्र में प्राथ क्षेत्र में प् पविव-तु-सुग्रापक्षे पाकेव र्यस्य पश्चित्राय विवाद विवाद विवास विदास केवा दॅर-ऋद-ल<u>ु-</u>र्न्नेक-ईत्य-संग्राचर-र्ने-क्र-र्नेर्क-पदे-प्रग्रद-स्वर-र्ने मु:छेर.पञ्चला ......" ाॐल.स्बलाबलाबेटा इ.प.र्ट. द्रंद्र.छ्ल. <u> केर.र्ज्ञ, येर.वर.के.थ.र्थ्य, व्रथ.व्रथ.व्रथ.व्र</u>थ्य प्रतः व्याप्त<u>व्याप्तरः क्र.</u> ऍॱइ८ॱव्यःक्रेयःबुटःतृॱवनःक्रेयःन्तुःगुरःयरःक्रेनयःमञ्चरःन्दः। *द*ः য়ुदे:सुद:५८:अञ्च,व:४:४५:४ववायाययःश्व:घर:५८:। श्व:घठर:यः**यः** য়ৢয়৽ঢ়য়ৼ৾৾৻ড়৾য়৽ঢ়ৢয়য়৽য়ৼ৽ঢ়য়য়৽ঢ়ৼ৽ঢ়ড়য়৽য়৾৽য়৾ৼ৽ঢ়ঢ়য়৽ঢ়ৢয়৽ঢ়ৣ৽৽ঢ় गहेंद्र'गवद्र'यह्र तर्ग

मुन्त्रम् वर्षात्र अर्थन्य मृत्र च्या मितः मृत्र म्या अवस्तः मृत्र म्या मितः मृत्र म्या मितः मृत्र म्या मितः मितः मृत्र म्या मितः मृत्र मृत्य मृत्र मृत्य मृत्र मृत

①(বেইঅ-গ্রীন্ত্রব্-পূর্-পূর্-গ্রান্ত-207)

**अःअर्क्षेन् :प्यवःग्रीःवनयः नहवःतुः न् श्रेणयः न्दुःयः ग्रुटः ग्रुटः यह् व**र्ह्नः **ः** भूराग्री कु.पर्ग र्टा पर्था है स्थापत स्टान रेपया वराया रूर ग्नायाया ५२ हेर् हु कु वर् र है । हु । वर र वे वर्षे र र र यह या नयर । । । पहींचित्रःच्वरःकुःश्चरःकुंदःकुंदःक्वनःकुंद्रिचनःव्यत्वःविदेवेन न्**मॅव**-पन्गागुर-हाळ्या-देव-या के व्याम्बद्धा तश्चरायश्चराय **बॅट्-बर्-ट्-**वृ त्यते न्नु या संग्रायत्र र क्षुव र क्षुव न ग्राय त्र्रिय नु ट्रिन् मालेया कि.वी. सावटारी. पटाला माले विषय प्राप्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स यहबार्मयार्चित्राची क्षाप्रमानुवामाशुक्रामार्मा वाक् **४** वितेर्म्ण इ'गुव'ध्व'कर'वी'क्ष'पर' (वॅर्'तु'वे'यर'ङ्ग'पर'बेर') कुव'व्युयः" वर कु.के.िट्रचं बरवं बेब्यक्ष्यार्थ्य स्थित क्षेत्र विद्रावर विद्रावर विद्रावर ववै दर्। वरु वर माय वरु हुन झें अहर हेर मेर्। हा हरा ग्र.भग उटावटा रायः झु.हवा.रटायक्यासः झु.चशुटा खुनाया हे**वा** मुकाञ्च पा इवका श्चे का १७९४ चर् किए किया वर लेवका सर प्रवेदका । मुनः धरः हू 'यदे : च्राः अळ्चा व्यान् मृद्ये वेदः पह्न द । पत्र व्या स्वार स्वार द्रा म्रीट. बेया पर्मे बया तर यह दे. ता रेटा इया थी. मूटा या वे. कुटा वि. ज् न्दः मं ते त्र्वाः र्राक्तः व्यायक्ष्यः व्याः न्त्यायक्षः गुवान्दे विदः" बेयामदे न्म्वाबेराम्बान्सा यामास्य स्वाविकार्यम्या वृंच अन्वहूर्न्यकंष्रपहूर्यके व्यक्ष्रप्टा सी वे में व्यक्ष्रप्टा विकास पञ्चलाचेनवा क्षेत्रान् न्यामहारामुदान् भीरावेषायरे मुंकिर

० (इ.क्ष्यं इंब.धर.रेट्.तपुर.त्थू.पट्ट्रं.पट्ट्य.ड्रेट्.ध्यं.चेट्य.183—185

ষ্ট্রীশে 1795 ইন্ নন:ছুন্নস্তু-শৃত্ত্যুব্দরি: শ্বীনার্ত্যান্ত্র ক্রিনার্ত্যান্ত্র कर्रस्र वि त्याचल्यायात्र वा वि म्हा वि वा व वेनलप्ता हू लिते हु स्व त्रा देन ही लें हु ग हु सदे हें ग हु ले र बैन्द्र-पहर् ह्रवापान्या देन् न्युयाया विन्द्रवाह पहरा हेन् न्में तत्र वर्षे के तर्के वर्ष वर्षे वर्ष प्रमान्य वरत त्र पर्वा के तेर वर्ष कनानन्द्रना वे तेराह्मवसायायहँद्रवर्गानुत्रात्ने हें अदारं त्रु । त्राति : इ. वर : य : व्री व. त : य्य व. वे : ट्रे : ग्री : न मूर्यः त : सम्मानुमान्दास्त्रम् वार्षः वार्षः वार्षेत्रात्त्रम् विष्टेत्रात्त्रम् वार्षः वार्यः वार्षः वार्षः वार्यः वार्षः व बरःग्रॅलःरराषु । पार्वित्रवरः वहीत्। के त्यम् बेदः ग्रेः श्ला देवः धु भो में राष्ट्रमाळ महायान रुतान्ता न्द्रभाष्ट्रमाति ळ महायान रुता नवरः नः धवा श्रः धरः याववः सः धरः पहरः ऋगः छ तः वेपताः पदेः न् रूपः रताङ्गवतात्त्वाचर पॅर्प्तत्वावाष्याच्याच्येताच्या प्रतास्य तबेयायहरी " कुथानयपार्वरा। सापर्राम्भारमञ्जूरायाळवातराविः

①(यहंबाब्रेट्ववयः जुन् मृन्य्य रवः 237)

पर्वे म मवरायर अर्दे वाहे हा स्वाह या सरावरा "यदी सा मवस नश्चराम्राम्याक्षःश्चराळ्यायान्यायायाः वित्राम्यान्याः वित्राम्या ख्रताबुः मॅं पठतः क्रेवः क्रेवः में मं मायिः बुलः त्रमः वेनताः मरः मृतुमः तावत म् वर्षरावत्वाके केर् तु वर्षवाया यह महीर मेर् माया या वर्ष संस् करामु वर्षवया व न्दा विषया भेया में या में या के या व दिया परः वर्दा "ि देवः वर्षिनः वर्तु गः देनः। कवः सुरः विः वर्षे यः गवरः हेस-रन-वुर-वी-क्रॅब-पवेस-र्-र-मक्रेद-ह्मारा गठना-ठर-तु-बर्-र-य-य-बर्। यद्रावराष्ट्रावर्, त्रु व क्रु वायेवरा हुराव र्टा। द्रु विदेश्वाय यकुर्यः केवः यं याश्चे ग्यः 1798 यदः याः कः ग्यः हे ग्यः चारः वीः वाह्रेयः हर यान्युवार् त्रावर मान्यायायाया कर्मा व्यावर प्रति क्रिया व्यावर वरः "तहस्र न् मुर्ग मूर् साहेव स् वया म्र हिर्या परे की रे पर्वता " क्रेन्न्रा इन्या मुन्ये क्रिया है । क्रिया मुन्ये क्रिया क्रिया क्रिया मुन्ये क्रिया क्रिया मुन्ये क्रिया मिर् डमापक्षाल पर्व हेव द्वा मूर्य रर में श्रि पक्र वर्म श्रिर है यहेव्रम्दे क नुन् ठव् स् वॅट व्याव्यव्यव्याम् स्यान् स्थाप । कृष्ट वै .... .... निविष्यास्य में निविष्य श्चित्र स्वाप्य में विषयः स्वाप्य में विषयः ह्या मूर्या कुष्या पर्दे हेर् मिलाया भी वारी लया बहुता पह्य र्पलान्वरतानेन् के हिते द्वापरा पश्च प्रापता द्वा द्वापरा प्रापति तहेन हे व गुव शु खन इ निर्मा व राये मवरा धव रहरा। महत्र हव मही निर्मा तारी बेया पाड़ ना कुर न प्यान के पाड़िन क्षेत्र विश्व के में अकूर नर अहरीता

<sup>🛈 (</sup>इ.क्.ब.स्य.सर रेट.तपु .सष्ट्री.सर्थ.केट.र्स्य.सर्थ.रथ.रथ.र

देट.यट.मैय.च.कूट.वि.चधु.चक्षेत्र.च.कुष्य.दुव.कुष्य.मैथ.वी. 91 यल्वाय सम्बद्धाः अविष्याः स्त्री केत् भी न मातः देव भीवः केता देवावः रदः ने द वर्षः नदः ने तर् नदः नदः तः श्वे नु सु द शु वः व्हें न्यायाया यह द र्बेयःवेयःनगरःब्रंदान्तरःब्रंगःन्तः। इःव्रगःश्रयःनबरःक्रयः यम्यामिक्याम् न्यामि न्यामिक्याम् न्यामिक् याम्बियाद्वत्रम् मुलाग्री न्त्राराष्ट्रम् वाष्ट्रम् व्याप्तान्तरे हेरान्त्रे राम् मङ्गिरयायहेयामान्त्र। यद्गान्ताचित्रायायायायाच्याचित्राया मु थिन्य न्र नर्याप ने वे हिराकु 'स्वावाया क्षे पत्रा निर्मा स्वा शुद्धा ঈ্রাথ নধু-বি.প্রথ-বহুর ন.খ.খেন মুধ্র-মুগ্র-প্রথ-ব.বন্ वक्र्य. इंथ. नलवानी वे कि न नदे नतु का सु । त द । हम । न त न क । व न क । व न त क । व न त क । व न त क । व न त क । व न त क । मिलट. वेयाग्री न् धन् या श्रः स्वायाग्रीया**गुव न् अहे या यन यहन हिना** क्षान्ति, अर्षे तियु अक्रेन् श्रेवादिनाना दिना माना विद्यापा प्राप्त विद्यापा प्राप्त विद्यापा प्राप्त विद्याप Û देवान्ववयानः कृतः तृ त्यते : च्चा वा नतु वा या केवा ये ते : स्ववरा ग्री : क्षेरा वा र निरः वृदे : अक्षत् : चुरः परः क्षः निरः दर्ने : कुरः नुः च क्षेत्रयः गरुतः वर्नः । न्म् बेरा मुल में त्रो लाया बडें दाय दे कि मुल में दे पार दे तर वा का का का मान व्ययः मः बेर् मरः हरः मिवेर हे में । इर वी या निव्यक्ष वर वर र はって、とよれらいなとは、事、かん、大!

①(日長知,到亡,如日日,至日,沒可 到七日,563)

**፠ፙኯፚ፞ጜ፠፟ጟ**ዀጚ**ኯጜ**፧ቘ፟ቑፙፙፙፙጟጜፙኯቜ፞፟ዀፙጜቜ፞፞፧ቜፙጜ न्वेन्यायदेःन्व्याद्धंयःग्यादेवेःययःद्यायः स्वातुः दि दुरादस्यात्रः .... <u>हे'पग्रे'न्सुर'ञ्जॅंब'इबल'व'पचल'ळल'नॅल'नगर'यॅ'न्र'पठल'ने '''</u> **श्रृद**:बुर:बेनवा:पर| दे:दल्ल:ब्रूर:ब्रॅल:ब्रु:लव:इवव:प:बुनवा: बेन: **ॻॖऀॱॾॕॺॱळेलॱॸढ़ॖॱॸढ़ऀढ़ऀॱढ़॓ढ़ॱऄॸॱढ़ॼक़ॱढ़ॺॱॸॺऀॱढ़ॸॗढ़ॱढ़ॗॱॸॾॗॺॱॻॖऀॱॱॱॱॱ** য়৾৾ঢ়য়৽ঢ়য়ৢৢয়৾য়ৼ৽ড়৽ড়য়ড়৽য়৽য়য়ৼ৽ঢ়য়৾ঢ়য়ৼয়য়৽য়য়৽য়ঢ়৽ र्श्वेन्य ग्रे प्रस्न्या मु स्र हिर्या र केर र प्राय ह्व मु र हिर् ॻॱॾ॔८ॱ२वेॱ५५ वॱशुअॱॻक़ॖॱऄॣ॔ॸॱढ़ॖॆवॱॻॸॖॖ वॱॻॖ॓ॱदे८ॱढ़ळॅ वलःकुदेॱ२५८ वि'न्रा रॅ'न्यप्रज्ञापवन हेरान्येरान्तुराह्यान्वेता र्दा तसम्य याने वाने के के दाराय दे स्वराय करा है। श्रु बर्धे ब.पे. प्रमे. बक्द्री यु.प राया स्थया पान गोप में . शूनेया पराया थी. चक्रिला यट. धेव.क्र्य. चर्डे. च बुदु. रू.कर. पर्टे. घट. में. अर्थे व. रें. श्रेंचय. वर्षेष्ण्यतः द्वेषः इष्वः कुषः ह्वं न्यार्त्त्वार्षः ह्वेष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः ब्रैर वर्ष्ठ मृञ्जू या रेवा यें के न्रा राज्जेर वें विवाह वा रेवा यें के। इस मुलाना क्रटारा ने रा नहेना न रुवा न रुवा स्वापार विकास व बहुण मैं देवाया नवर श्वेवातु वहर् प्रदेश्यर । मूरा बहार महा बर्चथालयान्य इया नेवेयान्ता श्रुना की की करे की मुर न मृतः अन्तः र्वेष्या मु . वॅन् ग्री की न्या कं नः या वः न वतः में या न मृतः । । । । । बन्नरामित क्रीं न्यात्र मार्मित विष्या पर्वा प्राप्त में न्या श्रुवा पर्वा मूर्या क्रुयः ग्री ज्ञुल स्रा प्या है विदः तु न मे ने न तर्म सुन तर स्था तर स्था बर्दर्भः र्दः। वुन्यः र्वेदयः हेन्यः कुर्यः पर्दः कुरः बर्दरः

ষ্ট্রী:মৃ. 1801 চু ইন্ জন্ম এ. দুখ-দেছ ছেব্ শ্রী স্থিত নে প্রথ, ন শ্রুব सप्त. हे. य अक्रम दर्य था स्वयं या स्वर्धाः स्वरं हो। या मा अ प्रमा अ प्रमा में स्वरं हो हो हो या क्षं विवाह में प्राप्त की विवाह कर हैं निया मानी या विवाह में ... बह्द दे. पश्चेष ह्र्बाय ग्री. र्वाय परीयाय बुधारा ह्या प्राप्त क्र्या व नवरःश्रमयाग्रीः वहर म्रें स्र राष्ट्रिया व्यया होर येन्या स्र म *घर*ॱवरॱ<u>च</u>्न'पःपतु वःधवेःळेलःपञ्चःपवेःवेवः"गुवःमचेगलःपः छेवः ःः **२ैव-सॅ'क्रे**-न्तृषायेनवाग्री-बुन्याङ्ग्रत्यत्यस्य कुर्वेनवास्य-गुन-सदै-म्बर्शः द्वारा म्बर्शः व्यापन्या द्वार क्षेत्रः म्बर्शः स्वरा प्रति व म्बर्शः म्बर्यः म्बर्शः म्बर्यः म्बर्शः म्बर्शः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्शः म्बर्यः म्वर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः मदे केन् नु मन् मल्याय नु । अया प्रता (क्रेंन ब्रीटा) कर हैना *ॸ्*य़ॖॱॺॄ॔॔॔॔॔ॺॸॱढ़॒ॸॱॵ॒ॸॺॱॴॕॣढ़ॱॾॖॖॺॱॸॣ॔ॴऄऀॱॱॾॣ॔॔॔॔ढ़ढ़॔॔॔॔॔॔॔॔ गुराय तुन् न्राय राष्ट्री पवेरया नव्राईग । षया यरा मेरा या केवा येवे चगादःधेषाःहु। हूःयदैःच्चःबदैःचुदःहु। यहःक्वेदःक्षेत्रःहेःदैःद्युषः क्षेत्रयःग्रु:बुग्रवऍग्ययःदत्यःपवेदाःसेग्रवःसरःग्रुतःसःने रविदःसा देन् खेबल वेव हु न्माय वेलाय गाया महर या हा वा चेन् या न्रायक्ता नेति:केन्-तु। दू:प्यते:न्न:यनःगवदः हेवायः यहगण। हु:ठवै:नेदः म। मुर्थर ग्री शुरू तु। विमा अस्ते मास्त्र। सुरा माने या पर्या पर्द्वया

<sup>(</sup>१८५<sup>- यदे - य</sup>र्- यहं अ: मृंग् ग्र स : 222)

विषयः महत्र श्रुपः स्वायः वि श्रुः भेव वि मः नव्दः । " () वे यः नय्यः यह न नविष्यः सः महत्र ने से केवा सं से केवा स्यायः स्याय

15. दूं.पदि.वं.भ्यत्व्याच्यत्यत्य्यव्यः अक्ष्यं येचेवयः त्यं यं यं यं

न्नादःचन्नै नदे हुन्दःचःचह्नं चदेःबन्तः हुःसः १८०४ वन्तः । चुरामञ्जरमञ्जरमदे भेराचे "मवयायातरी वरामी यामवर वेवार्रा नः धरः क्रेंच्या ननतः मृतिया व्रार्थित तुः ब्रार्थाता मृतिः राषा मृत्या ब्रा यः द्वेतः त्रे: सुद्रः स्वयतः ठतः त्र्यतः येतः श्चेतः ठेतः। वृत्वः अरः त्तुतः मर्डर विव में मवरा हे व न्रा व मंत्र मर न गर मह व र मर विम ल.चब.केथ.र.ब.त.चि.चथ.वैर.धेर.घट.च.चक्य.क्ष्य.र्.र.च.ल.च हेब. वया मत्या रुव : बार्चन : भुनया अर्मेद : मुख्य : न्या स्वयः रुद : यहिदः र्मत्मः मु व क्रे र्मत्म न व र में हिर् पर्म र मित्र म परि देव र व ही सुव **ब्रट.चर्**कान्ते,र्बट.ट्रट्स्च्याच्यर.श्चे,प्रधिचेकाक्षे,क्षातकानश्चेष्य... नवेरामानेयार न् ग्रीयहरासन ग्री स्राप्तान्त्रामहेरानमा है र्यासूर *५*५ वायरामहेवाञ्चमवाव्यवि हाळवा वे वेवा क्वारी वा के निरा

① (বর্ষাদ্রীন মহব কুব্ র্শ্ শ্রহ্ম 292)

च मातः व्लंब : कुषा खँ नाया नाव या प्रश्लेष : नाव : खूब : खूँ : व्लंब : खूब : ই'র'নর্মান্শ্রমান্দা ন্নান্ধ্রান্ত্রা <u> नृतुषाशुक्तः सम्बद्धः देशाह्यः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः सम्बदः स्वतः सम्बदः स्वतः सम्बद्धः स्वतः सम्बद्धः स्व</u> रैयाकु के तन्दार ने ता श्रुपः नदा यहंदः श्रु। श्रु पठराञ्च श्रुवः बापवःसः इवयः ग्रीः स्वा द्वायाः वाद्यतः तक्षः न्त्रेनः ज्वनः यविरः ययाः येवः यः बावयः भेटः वटः वः हे . स्ट्रं इययः यदरः च ग्रादः क्रुं केट्रं च हुतः ग्रीयः ..... नगीना है. स्वा. इ.कर . के बादारा ना बुबायार पुर बार्य पा श्रव परी पा श्री र र र ૹૢૢૢૡ૽ૺ૽૾ૢૢૢૼૢૼૡૹૡઙૻૢૢૢૢૢૢૢૢઌ૽ૢ૽ઌ૽૽ઌઌઌઌૹૢઌૡૢ૾૾૽ૢૢ૾ૢૢ૽ૢઌૻઌઌઌૻૣૢઌૻઌ૽૽૱૾૽૱ઌ૽ૻૢૢૢૢૼૢૼ<u>૾</u> बेर्-बर्दरः ब्रेर्-ब्रेर-उरः। देव-तुः वेर-द्वे-क्रॅर-ज्ञ-वतुव-धर्व-क्रेयः पर्छ न कुर् ग्री र्र्यूर दिन रही कर अर्द्र पा यहत अदे न है अ हिर अदय मदे द्धं या प्रवेश अहं राय पुना 🛈 ठेरा या विराधित । देरा सुनाया न्या नायया परेनयः न्रा न्न्र्यः ह्रन्यः अक्र न्रीवा शुरः व्वास्यः परेनयः र्षेन्तः हराययः द्वरायहर्षाः नृतः। "तर्ने स्नित्तः हे स्निर् श्री हरायः श्चॅर्पायक्राया मुक्ताया विषया त्र्याया व्याक्त क्षु ने क्षा क्या क्षा के दा श्री व स्व द कि दा कि स्व व स ष्टियाची अक्रमान् वादा करा वादी भीषा मान्य वादा वादा मान्य प्राप्ता वि निर्मा मर् म्राम्यावियान्ता वर्षाम्या हे द्वारीन्या द्वाराया विष्

①(त्यव नवे नवे चुर नहेत् नेव स्वाधान —1218)

न्र-ख्न-रेन्याक्रके रं कि. यान्ता द्वे या न्ना निया यळ वार् में वा ग क्रदः अथा स्वाया स्वाया "ा विषान्य स्वाया निर्मा " श्रुवया सर्वे व श्रुवा पर्दे र्मरः सं र्मेर्यामः नव्दः र्देदः तुः यान्त्रेन्या मेर् स्राम् मदाम्बुद्रा म्दायाम्यार्थि केवार्धितम्बिराक्ष्रवातु महुदानम द्विः मदे मवता है ता तत्या मवद अहर पर पर महेवा ये हर मवेर में है प्रियः क्रेवः सं 'वया दिते : खाया प्रवाद क्रियः क्रियः खाया विष्यः क्रियः विषयः क्रियः विषयः विषयः विषयः विषयः **र्यक्षाक्षर**्ष्र्रायह्मरायश्चात्रम्। देःत्याः इयका चे क्ष्या वि जुरा प्र्रेरःश्रम्यः कुलः न्यन् मध्यः ठन् अष्ठिनः यः न्याः वेदः नुः यभ्याया स्वाः । देव सं केर कु खनव ग्री अर्केर परीय होरे तारे रें रें रें रें रें रें रें रें रें श्चितःसरः वदः वीः श्चरः में 'के रुवः द य व । विषाः स सवः स् श्चे 'रेसः व विवः """ < इत्राचित्रः नग्नत् अर्ग्यत्यः न्व्राच्चे चित्रः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व 

① (न्यवःचवैःचवैः चुदःचह्र्नः देवः देवः 1221)

②(「「中中、中南、中南、東下中華「「中中、下南·1226)

मुंदानदे मुदान दार हु स्वादा नहेदा ही स्वादा त नद मर्दर या पहेता दार मुलानदी भराने दा सहया हुता देव से के त्यु वा निवारे वा हे रावहरा .... · इर चेंबर.केंबा अख्या विष्ट. रूब. खे. रेबा. बेंट. जंदर खेंचे बेंबा प्राप्त हैं वेंबा प्त हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा वेंबा प्राप्त हैं वेंबा हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा प्राप्त हैं वेंबा है वेंबा प्राप्त है ळे.पर्वयः लूटः पर्व चेश्वयः पर्वयः विश्वा , त्राच्याः च्चियः स्वायः क्षेत्रः स्वायः क्षेत्रः सिर्धित्याचरालरायार्र्यापरास्यास्यात्रेयात्र्वे राष्ट्रियाः स्वान्त्रे विद ज्वारे वित् श्री इस्राम्या प्रति पर्द्वा वित् वर्षा वित् प्रति वित् प्राम्य रे.पर्च के.बी. ही.स. 1802 च्ट. नेट.बट.स्टा "च्ट.ब.क्य.बी. ष्रम्य.त्.वेर.सैज.पप्र.सैज.क्त क्र्य.श्रीर.मवेयार्स्य.मी. ক্রীএ. মুথা <del>डेद्र-धॅर-द्वद-वङ्गुर-वदे-वृद्धेर-धैव-द्द-वङ्ग-द्व-दु-द</del>ग्वाब-ब्व मदेः कृ न्तु व्याचे नवा अत् । वायव स्यतः कुरः नवा देरः बुरः खवाया कुरः .... मञ्जूषा हैता केंबा हेरा प्रविदेश है वा श्रुप्या सर्वेदा है ता हु के **本可・素 数切・ケエ・** लयः पव गावेगा गाविरः रावे : श्रे गार् गावि रः द्वार्द्धनाः हुः हुरायरः नधुतायरः नविरः धनाः नीः कैनवाः नवुरः व्यवः निः ः ः बह्यात्रभ्रत्र्रा देव्याचेत्रकेत्रकेत्र्यात्रभ्रुत् ग्रीयाम्बेयाकुरायदे स्व द्युत्पःतुःश्चित्तःअर्मेदःअर्केगः (हः क्याः) गर्डः द्रनः पत्ववातः र्वेग अरः शुः रैव-य-ळेब-गर्ड-ब्रह्म-प्रदे-न्न-श्रुव-के-प्रिय-र्--। सुद-प्रग्रद-ब्रह्म बे प्रचरा ग्रे मि का प्रचार के मिन् ग्री प्रवर्ण करा महावार निर्मा अवा বৰ্ক্ষণাপ্তিকা স্ত্ৰুশন্ধী ধৰাকা উদাৰ্থনা ক্ৰান্দ্ৰ নিৰ্ভাৱ বিশ্বী ক্ৰান্দ্ৰ दह्रवसार्चेन नग्रावरम्याङ्ग्ह्रायाधान्याच्याच्या **१.**५९ ल. पब्रे थ. ह्र च इर. लुब. वया श्रेष. परी जा शहर. त. स्ट. वर्ष. श्रेष.

लय तु पह्नर प द दि ह्नर तु नवल है। के दिर नद य गु ने कर पर्वास्ताला हेरा स्राया तार्वार प्रमानिक स्वार विकास के तार विकास के तार के तार के तार के तार के तार के तार के कु विवासु रवेषाया द विवासे विश्वस्था कर ही स्वाय हा स्वया दरा। प्राय ञ्च यादी राहरा कुरा ग्री राष्ट्रद ध र्या द्या ग्री वह दर पर्वा শ্র.ম.ঘরশ্র. ङ्गातकतः प्रते नावया धेवः गुरः। *रः रेया* तस्य तुः श्रुते पर्मे रः या क्या र्नुर्याशु न द्रुयामदे हिंया न ह्रवाम वियामय देर् ग्री सुन्याय नेवा हु । सर्यासराश्चर। हुव कर्.वे.लपु.श्च.बपु.लर्.शुर्.श्चेषाश्च.वार्वेव.हु नर.री.श्र.भ्र.भूब.भूब.लब ज.नश्र्य.हे.लब.ट्र्ब.नग्रीर.री.परीब.च... न्त्रणम्बर्धाः वी: क्षुः तेरः वयमः उन् ः यः यदः विषयः यः यद्दुरः नरः यद्धरः … नयान् हेर्नुरानु में मृत्रि हेर् हेरी ही मायया हिराक्ष्यायार् मदानरा बाक्री क्रायून्यवाश्चरान्वराज्ञारान्वराज्ञारान्वराज्ञा हे र तथा वर्ष दावी तथा देव प्रविकाय देव में विकाय देव वि द्राच ना गुदायात्र यदे न्ना अप्राम् ग्री वा वहुदा प्रमुवा है । इंता प्रदेव हुँद् देवे क्षेत्र-द्वाराण्डर-दु न्वावद-धरे क्षु रवेत्र गुव ग्रेय द्वार पविवातु न्द्रायर शुराधिर श्वायळवा देते श्वीरादेद वका हिनाया महत्त्राय महिन् बह्न किर महिन् सर न्में र या हिन् कि हु स्परी हा या दिर मृद्व परःतःहेःहुदःत्रःव्यात्वःष्ठ्रं ग्रेकान्नः व्यातेरः**व्यानः व्यातः** ग्रेग्यान्यान्यः ही नहार प्रीतायाया है या ने स्वास्ति है स्वास्ति है स्वासी है स्व **लट्यः पान्ने व्ययः पञ्चयः म्हिन्यः प्रदे र मृट्यः प्रदे र अक्रमः र्टः बहुदःः** सरः लु : होरा के दारा न्या कु का न्या स्वा की निया के विकास में निया के त यर ग्रेला द्वनाय देर तिर्प्त श्रु तेर व्यय उर्प्त दे श्रु राज्य ति मूर यदेः श्रुं र.च.याय **१ व.तर.**च ग्रीया याववाञ्च नगायः श्रवः यद्यः द्**रवः** शुग्र दगः नै: क्षं द्रा हे : दुरः हु : व्या हु : तः र्म्या राम्या पर्मा राम्यी त्यते न्ना या वृत्या पत्ता कुर्या के स्वा विका की ता व्या क्षा विका कर कर के स्वा विका कर कर के स्वा विका कर क देर:वृष्ट्-यसाचेर्-यायव-ग्री-अयायव-याग्रसातु-वग्रीर-दे-वियसाञ्चा-नव्दार्श्वरा वद्भारत्यास्य नव्दान्त्र नश्चरायः चग्रीन् हेन केन् नु न्यादायनया स् वेयायेनया मते में वास स्वापा सुनाया सुयानु अद्याप्तरा अर्हन् केरा प्रमृषा मी रायेषा वा पर प्रवेश " कि वा बर्कन् पु: न्ने प्रते ने द अने द र ने न् ने द अर करा है। कुरा में दे नि र ने र है। नग्राचार्यायायार्थः द्वाक्षेत्र। क्षेत्रः चठरा त्या चार्यायाः भ्राप्ता बर्मेद्र-त्रीदः बर्धेद्र-त्रात्तरः केषार्चरः बर्षः ब्राचीः केषाः क्षेतः क्षेतः हितः । मृत्रैतास्व भी भेर् रायर वर्ष रायर प्रवेदता प्रवेदि । वर्षे वर्ष वर्ष महिता बहर्। ..... "७ठेवार्यम्याति तर्देवारी बहर् रह्मा विवासनाम्याया तर्वन् त्तृ वा पा पठरा तरी 'लारा क्षेत्र पारे खिररा तरे वा न वे रा में वा अके रा ..... 

<sup>1 (5&#</sup>x27; क न द्वा वर ५५ पर पर पहुंच में न जूर व 444 --- 447)

**पॅर्-राम्बराधिर् मृत्रः मैं संदर्धितः हवः ने पन्दर्धः क्षेत्रः मृत्राम्बराधिर् छै ले पतुन र्वे**म् न् में द्राप्त पाली प्रकीत के स्वापती स्वापती स्वापती स्वापती स्वापती स्वापती स्वापती स्वापती स **ब्रॅब**्मदे प्रमाद धेमान् में ह्ला ने बा हे खुर के ब्रेम बु खु या है प्रके हेन् अर.लट.क्र्य.श्रीर.श्री.िवन.ग्री.बह्रं स्र.र्वट. वश्रेर म्बेर-क्रुव-क्षुव-परे हिर-बेनल-पग्त-प=र-र्र-ह्यम्ल रे-क्ष्व-बे-स्वा--इं र निर तु चे र प वे रा वार्त परी प तु या वा वा के के लिए के प ति है ने प नक्षुत्राचः सेनता " ① बेता मृत्या चाराया स्र्रः क्षॅरता होरा ही हो से स्रा वर्ग्वेव वर्षा देश में . सुया चार्य यह त्यांचर . येद . वेहर । दृह या ह्या के . वें विक्ति श्रे. १७५१ वर् ४० वर् १० वर् १० वर्ष अस्ति से स्वार स्व बॅदःयःळदःखदःवीयःवर् ग्रीःजुलःळवःद्द घॅ दे वॅ वर् वे विषयः जुः .... बर्ळे र न वर पर दे 'धेव' छेर । दे है ' क्रॅर वय देप वर दे कें न हे न्य ह्या "कव्रस्टानु पत्र्वायाते महियामा है । इ. हा महित्या पर्दे । ख्रकेवाने स्थापे केटातु सेवलायते कॅ क्या विन्यान्यात्वता हेता है न **₹र.**घ.७.घ.) प्र.ईद.विर.न्रघण वि.स.घॐ.घश.त.बह्र.वेथ.थु. **ढ़ॱय़ॱॺॣ॔ॱॱ**॔॔॔॔॔ॱख़ॱॿॖॺॱय़ॗ॔ढ़ॱॻॴढ़ॱॹॗ॔॔ऻ॔॔॔॔॔ढ़ॱॾॖ॔ॱॿऀ॔॔ॾऀ॔॔ऄऀ॔ॱॣऄ॔॔॔॔॔॔॔॔॔ इत्मा क्रमा हिन्दी मान्य क्रमा मिन क्रमा मिन क्रमा मिन क्रमा मिन क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रमा क्रम क्रम क्रम क्रमा क्रमा क्रम क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा क्रम **श्रवाळेबाळॅ दे** ऋदे ऑस्ट्रेब ऑस्ट्रेब ये किये दे जा कुब अनुद्दु जाबर या दे द्वा

<sup>(</sup>देन:बेर:लंद:पदे:र्बेग्य:सु:ध्य:अ:अंग्)

दे दिना-त्यायद्य दाण्ची-वित्त प्रत्य न्य वित्त व्याय द्याय वित्त वित्त व्याय वित्त व्याय वित्त व्याय वित्त व्याय वित्त व्याय वित्त व्याय वित्त

1. यद'विन्'देरा'नदेन'न्द'ग्रेन'विन'सदत'ग्रेत'लुर्गं दा

म्बर्स्, स्ट्रायटका श्री, पविष्या श्री ।

म्बर्स्, स्ट्रायटका श्री, या विष्या श्री ।

म्बर्स्, स्ट्रायटका श्री, या विष्या श्री ।

म्वर्स्, स्ट्रायटका श्री, या विष्या श्री ।

म्वर्स, स्ट्रायटका श्री ।

स्वर्स, स्ट्रायटका स्ट्

①(स्थानेन स्टान्स्तिन्त्रेन्यः स्टान्सिन्यः स्टान्सिन्यः स्टान्सिन्यः स्टान्यः १७००

म्राचित्रक्षित्रम् विद्याप्ति विष्याचित्र विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति विद्याप्ति विद्यापति विद्यापत मदर्या मद्रायर पर्सर मर्हर मुहर मुनया श्रूया सु मदर ने दें सहर परिर बक्षव-केश्व-चन्नर-जू-कंब-तपु-वेश-क्ष्य पूर-शिपट-पुन्य-क्षेय-स्य महेवामुयाकमाहाकणाद्वा वेवान्वा सक्षेत्राम्मा নশ্ব:শ্লুৰ:নৰ্ ल्बायाक्षः मु म्बययाक्ष्राच्यायाच्याने ही या 1807 म्राप्ता हीरा पर्दे नव् निर्दे म्या अ अ ज्या प्रतास्त्र भ्रु में दा अदे ह्यु व न राया म ने अ त म म न न नह व मु : अळे : केर् : नु : अरग्रा व्या देश द्वा या न्व व तु र हॅर : नर्द · · · · न्वरागःक्रार्थःनेवःत्त्रान्तुःमवे वर्ष्यं श्वा देवार्यः क्रे भाषाः करः श्च<sup>ा</sup>्विरः न्दः व ठराः यः देवः ग्रेल वेषस्य ब्रह्मरः रे विवाः वेदः वा केदः यं रः ः नेश्र क्षेत्र. हे. चर्नाय. च हेन देनेय. हेन्या हेन्या हैन्या हैन् मुद्धंग तम् । पर मु म द्व इरल दल प्वा म्व दल मला भ्रवल देर ने श्रेव ग्री देश हुया ग्वव र म ने जुर स्पर यम बर्देव है। लया ".....डु वर्षे ह्यारासुव सुवास क्रिया मारा पर पर दिन सक्या वी श्रुयाञ्चराहेराबेरातुःशुयाञ्चेवावतरा वर्गामरहारवाशुःशेषयासा के वे देव धेव या पा दह नाया व अर्थे बादेन या भेदा अनु द माया व देवा बेद्रायरात्रह्मायायान्वरायं चहुत्यायदे तह्मायवातुम्वाया क्षर्रारमः रेमः ग्रुः क्षुत्रं ग्रुकः श्रेमः क्र्र्रिकः यः न्षाः मैः श्रेरः हेषः म्यययः नदेः … ध्रेर· (ॲ·२ेदे·) ह्र·पःपञ्चःपदे छेराःदर्गरःम्हेयः छुटः ने रॅद् प्द्वियः परः वर्धेय.इ.थ.चेय.तर.पर्कर.धे.क्र्य.श्रेंट.क्र्य.इ.श्रेंय.रेंट्या न्रांतान्त्रेयावर्ष्ट्रन्त्राह्य इत्योग्न्यायान्त्रे स्वाराक्टर्मन् ग्री

पाया स्वराया स्वया रुप्ता व्यवा विष्या विष्या हो। श्रुप्त या विषया स्वराया स्वराय स्वराया स्वर भरःशेन् वहं ना ने श्रुता परे श्रु में नवा नव वा श्रुटः नः वरे द ववा यवा नटः विमाधिव चु मायायाक दे नगात सारा व्वतः क नाया लु ना नावर न ना हेदै-नग्द-सुद्द-सेनल-स-दै-दिन् श्रूद्-डेल। यः धे-देव-गुन-ह्र्या-यदे-यदः नुः द्वारः द्वारः द्वारः द्वीता विषाम्ययः यदः देवराः विषाम्ययः बिदा मह केव देव में के व्याम में कंद्य पर सुदा खु नव्दा परे सव-तुन्दरान्चे समुब्राची पञ्चरायेनवा चुदावतुन "दवा चुदान्तुन मञ्जेग-पर्द-पर्द-परि:ग्रेर-पर्वेद-तु-तेग्राधर-पह्नग्-पर्वे-हिर् ढ़्र-ॿॱॻऄऀ.ॴढ़ॖॴ.तपु.क्र्या.धे.सीपु.धेय.माचप.क्षेप्र.सीय.शिका.क्ष्र मायाता. त्या सुर:बर:नु:पृठ:केव:बश्यरारुन्:अधिव:म् वीम्याःकेव:यं:न्रः। मुला स्पार्त विदान्द्र रामा है स्मी देवार है। विदान विवास समान इयाम्बेल देन्ने अंग्न (इयाधरा ह्यापाय ) द ह्या देन देने प निर्-श्चित् श्चित्रप्रदेशी के 'अकूबे, श्चेट्-श्चित्रप्रपु श्चेर् श्वेष् वु:के:द्रम्:इयय:र्ट्रा नगदःर्व्चवा यद्दःर्ववा हुटःधम्:इयः मार्यम्यास्टारहेवयाग्री हिम् देयारहेद पह्मा न्ध्रि । स्वार हेद्र मी न्त्रेयःह्वरःवतःभूरःद्वेयतःक्रवःदुःश्चवःद्ररतःयरः.....न्रंतरःहःशुदःस **र्र**ान्कृत्युवे जन्नान्त्राच्यायम् वात्राञ्च स्तरातु स्तरात्रे वार्षु व्याचित्रा इयतः हिन् ग्रेतः इतः ठेतः नगतः ग्रदः नन्। हिनः मन् देतः मन् वे त्रे व्ययः ठदः कुंबाबरवाक्याताञ्चरानाञ्चरानाक्षरानु तत्वा प्रवासिक वित्तात्व के <u>むしていれていいまた。というないないないないないないないないない。</u>

<sup>🛈 (</sup>इबाबर द्रायदे धर् तझ ग म ग ग ग ग र 23)

नविवःस्यानःवी न्रायंत्रःक्वयानःश्चःस्रान्यः स्यातः श्वरात्वे सुन्यान्यः हेवःगुक्तः बढ़ वा बेदः हैं - वें - (लाहे - वे - ) केवः वें वें व व्यव्याश्वरः हुः गुन्याणः । त्रु म्रू तामु ताम केवायान्ता हे नर्यु वास्ताम केवायि स्टा नक्रवान्या भेरार्म् ।याया स्वयादेशा स्वयान्या सुरवेरा ह्रवया *ॸ्*रॅंतः२*ज़*ॺ्तःबृत्रेयः२ॱख़ॺ्ॱॸॖॱॺॖ॔य़ः२ऱॱ.....श्चॱर्रः।वेरः२५२ॱर्रेॱसः । बर्दन्। ८६ अन्यासु जयानव महियावया में दाया केवा परा अने केव *वेर-*८६८-श्रम्यायायाद्यायद्वयायाक्ष्याप्टा। अस्ट्रङ्क्ष्राः सम्या न्रामी क्षे वर्षान्व दाव मुद्राक्षेत्र स्था मुन्त्र मुद्रा मुद्रा स्था भ **ळ्य.धे.से.टें**चे.मु.खेय.से.८त्त्र य.क्ट.पह्र त्रय.च्च.८ग्रीयाप्रव्र-ईटय... व्यास्या "च वेयान्ययामास्या वेद्या दर्दीः मह्ना द्युन द्या दहिवा <del>ଌ</del>ୖୣ୵ॱଊ୶୲୳୶୕୴ୖୢ୶ଊ୲ୖୖଽ୕୵୳ୢୄୢୄୠ୕ୣ୵ୄୖ୕ୠଊ୳୳ୣଢ଼୳ଵୖ୳୲୴ୡ୲୳ଽୡ୶୲*୵୴* बर-ग्रे-ळेग-२रावराम्ययार्थ-वळव-ग्रे-यरुम

बान्नेयायवा में दाबाधनाहे केवाया (कवायदा) ने किना ग्री श्रा तुवा कु.धीय.वपरा पर्.पर्धां वर् तार्यां यात्रां यात्रां यात्रां कीया वर्षा देशःमङ्गः नृतेरःसुः स्यानः वर्दे दः सः दर्षे यः सर् । वर्दे हे दः सदः हुः न्वर हेव । पर न्वरा के र मन् बेर ग्री सु नक्व। देव-य-क्रेदे-न्धेर न १ ई. देया पठवा प्रमाद धेवा अर म्याया यह उराह वा हे के वा महिर **ॾु**ॸॱॺॻॖॕॺॺॱॻॖऀॱॺढ़ॸॱॹॗॱऀॺढ़ऻॱढ़ऻॺॱॸॺढ़ॱॸॣॸॱ। ॸॣढ़ऀॱॺड़ॗॺॱख़ॖॸॱ मलेयाकुते क्रूंन कु क्रूव मयदाय प्रायर विषय पर् दि क्रूंवा विषय म न्ययः ह्वा प्रमुषः हुवः हं राषाः च्चः यः पठषः येघषः धरः यह यः ध्वाः मञ्जूषा "भित्रेषाम्यायानाः क्षेत्र ने व्याक्षे त्रेद्रायतः यहः क्रेवार ह्रव स्यतः बक्रम् श्रुतारे द्रासं केदे नृतु श्रुता वर्ष्या सुन के. ब. बक्रू ग. मेथा न्षेयाने स्वक्तम् न्यान्य स्वर्धित्य स्वर्धान्य स्वर्यान स्वर्यान्य स्वरत्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य स्वयत्य मु अर्डे दियाम्यापरायहर्। "हारामहियापरे छेयाम्यायामी हिन्। मॅ्र अ: यर्ग यं 'केव यं 'वयः स्वार् ग्रायः ठेवै: स्वा यगवः यत्र रः यः """ सेनलपानविवानग्रानञ्चरानर्। जुलाक्ष्मार्वे वेवान्वार्वे केला न्तुकः नृतुदः राष्ट्रे वी: इयकः नृदः । यग्यः यद नृषः यदेः वेदः यतुतः र्चव त्रिंदा न्रायक्षाया (क्ष्या मुद्दा मित्रो) मृद् क्षेत्रका केवा तु ख्रमा महेन मल्ता हि केन विते बहुन सुर हेर हैं में या परि हैं न हन दबर न्द्रेर्न्तिः हेर्न्यक्रवाः ह्यान्द्रवायः केः ह्या वा वियान्तरः रु ह्यावा

① (इब:घर:५५:घदे:धर्:वर्धग्र्मण्य्रत्र:27)

ख्यात्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्य

स्तःश्चरः त्रवः त्रः के नाविषः विषयः महतः त्रवः विषयः विषयः

यः नेतः म्यातः विवाधितः विवाधितः विवाधितः व्यापः विवाधितः विवाधित

① (इयाधराद्र यदे धेर्'वझ्य व्याग्रह्या 28)

विद्रा ई के र्श्व म्य न्यं द न्यं प्रत्य है त्या है त्य है त्या है त्य है त्या है त्य है त्या है त्या

① (नैयन्ते कृत्क पर देव 669)

ळेला १ सु महाया ना में दाया के दार्य दाया या के मा स्वाप्त मा स्वाप्त स्वाप्त के मही द तुब-त्युन-ब-र्ॅन्श-२८- ऱ्न-**कुव-ळेव-धॅल-४०**० ६व-ब**६**८-५८**ः** नगतः देवः गृतरः नगः रहिषः नरः गृत्ते अः हुरः सः गृह्यः द्यः जुषः हुः गृहः बायमाहेदैरतम् स्पर्मा द्वाक्षेत्रभी वर्षत्र हराश्चरवातुनातुः बर्ह्मन्याञ्च स्थि श्रेव-न्याच्या बर्ह्मन श्रुयः देव-सं है। जुय ह्या वॅ बैन ज्वा केन प्रदे न्यवामा हराय व्यापाय वर्ग हैया ल्ट्यायह्रयाचिताययार्चयाचा ह्या स्थाने स्थान ह्या ह्या हिता हिता केव-क्रें-बेव-न्वा हें वह माहीर है या यह है। रोगया निय हिया परी भु.र्यम्यात्राचार्यात्री.हीतासे.कु. ८म. इद्यार्टरा मेथीर.कूमा.वेचया हु :दशक्ता मा स्टर्नी श्लॅंप र्यं व र्यं : व ह्री अर् : यहर पा पठला व्याम्बुरः ॐम् क्रुवः रेरः प्रतेः हम् वुग्यः ञ्चवः क्रुवः वर्षः यहर्। **⋚ぬ.丸て.む.ぬ棄山.爲の.よせ.丸.要.せむ.むめ.こととも.爲.炎む.くェ.もて.誰む.** या दे तहें व हो द सं इसका विषय पर न क व या पक्ष व या न ह व **८हें ब-५८-५ ठकायाकारी खुदे सुकाया क्षुत्र प्रदेश या में दाया प्रदेश या ग** क्रेन्-यंदेः व्ययः यन् यञ्चयः यः विः स्वयः योः यनः नु रः नृ नृ क्रमः। क्रयः श्रेन्ः बर्द्राचराङ्ग्यरार्मेरावरार्मेरातु द्वेतानदे द्वेन्तानर्द्दे देवायायरा क्षेत्रविदः तहेचया सवै । न्युदः न्यूयः अर्हेत् स्यायह् द्रायः त् रुद्:गुद:र्द्र:पदे:द्रु:पःक्षॅद्र:पदे:द्र्यद:पदे:थेद्र:बर्ळे:गुद्रद्रुद्र: 

① (त्र्निः यदे ग्येन् व्यव् मृत्र्वा श्वर् का 69)

ষ্ট্রি'ম'1810ব্র-প্রেশবস্কে মান-স্কর্মান্তর্মানি শ্রীরাস্ত্রে শের र्षेम्यापम् ठेम् यात्रवयाम्या वर्षा वर्षा प्रमाना वर्षे वर्षे के के क्षा वरा वरा वरा वर्षे लट.मैल.चरु.रं वट.तू.कं.त.कुर.तूर विवाय.मुरे.रंट.मर.वेट.पहार्य. लयान मार्च त्या के खेर देश र कर की या ये ये ये या स्टर पश्च पर स्टर है । वर केवार्या सर्देवापरा सर्वे प्राप्त स्वे र्या स्वे रायराय स्वे प्राप्त रायराय स्वे रायराय स्वे रायराय स्वे रायराय मुन् गुरारेश मिन्यम् निया मुन् र गुरा पर पहेन वह र वि निर्मा निया र्मूर्यायान्व द्वारि क्रि. क्रि. मान्या क्रि. मान्या व्याप्त प्रमान्या न्यं चेर्पार अनवा श्रापनवामा नववा जुवा नवे र्पार में वेर विद् लकान्तुरानु निव याताञ्च का केन्यते सुन्वाया मुक्तेन की असु सूचाया । **कृ**या क्या वृष्वे विवाय क्या ये प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्थ्य क्या विवासी है। Bसः अविदः सं प्रेम्यायाम्यायः प्रश्चेताद्यात्वेताः मृत्याः स्वर् । सर् स्वराधानाः मंद्र्रान्। वर्द्रात्राचानायाची वर्द्रात्राचानायाद्याचा ॥ यदे मुं ग्रंत उव विवाद द्वा क में दा धारी किया दिया। के धारा वह द्

न्नतः एव द्वारायराष्ट्रर द्वा वर्षे देवा यर इया वर्षे द्वा । ग्वदायायास्यानुः क्षेत्राया यर् दाद्याया दे द्वाया वि वा के त्रेता यह या दे न्यानु निर्मे नविषा यहं न विषाविष्या नहिता है। विराहेरा में न कुर्-भूरा ग्रंथः वराकेट भूरा व.त वर वर केट भूरा ग्रेयः क्रिंद्रत्वावाः स्वायाः ग्रीयाः सस्याः स्वाद्रः स्वयः स्वरः स्वतः स्वरः स्वयः हु कु के न न्दा वे अंतर ग्रे न विदान देवा न ल र ने न ल के अ तह्न 'क्रुब: पदे: म्देर्क: द्राः स्वाया वर्षे 'पर्मेद् सुव: स्वाय पः श्रेण गै.पर्नुन् हेरः श्रुरः धः ५६ १ इ सम्मानुत्यः परिः न्यदः मॅ देः इसः न्यारः .... पह्मव.पाय र्टा वी.चि.मी.वी.वि.प.ट्र.रब.कु.स.ग्रमाया.वी.क्ष्मा.प्रया. इयापर न्यापदे सेवसाक्षेत् न्याह्यान्ध्रिन् कु स्थासुव श्रुया स्यास्य तपुरत्र्वाराष्ट्रीयाञ्च नार्म् वि स्वारा कथा ही विरया ही हि नवा होर् हि नवा होर् धरःश्वानःधःचिष्ठाः....." ादेवात्रविदःधः स्राम्यान्देवात्रवात्रवे चु-धुत्यःग्**रॅ**-चॅ-न्र-कून्-चॅ-च्र-ची-विंट्ताः शु-धेत्रःयन् स्त्र-कॅ|

मृत्यान्त्रभ्यान्त्रभ्यान्त्रभ्यान्त्रभ्यान्त्रभ्याः भ्रम् । भ्रम् ।

र्दे श्री "म्.1811त्र. क्षेत्रायाले मृतुः श्वायान्य विषयः यः हेर लट्यः रहेव दे सं कृ विन वि विन नहेव तहे नाय अर कु सळेर. श्चिरः क्षुंदः नक्षं विवया यवदः वहुय दवः ग्रदः "नदः ग्रीः श्चिदः देवः कुलः रवलः" बेरःवदेः ब्रद्धः देः क्रॅरः" ..... चगवः श्वाः न्दाः विद्वारविः श्चिम्यं व त्या सुना मृत्र विषया हो सु श्चि व स्व व दे स बिर-हे-दे-दे-देन्द्र-ह्य-ह्य-प्रस्व-प्रह्मिश बेर्-मुल-कंग-ग्री-दिर-पर्झ----मलगालुया "पिलेयान्नेयायतुग निर्मेताने में जीता क्रींना क्रींना क्रींना क्रींना क्रींना क्रींना क्रींना क्रींना ॻॖऀ॑॔॑॑ॹॱॾॕॺॱॹॖऀॺऻॱॺऻ**ढ़ॸॱॸढ़ऀॱॸॣॱॴढ़ऀॱॸॣॹॖॱॸढ़ॎऀॱ**ॾॺॱॿॸॱढ़ॸॱढ़ॸॣऀॱॷॸॱॱॱॱॱॱ चिश्चरताही अच्यालचा. अ.च.चश्चारायहास्याच द्वार्याच वतः श्रेयः तस्र-क्षुर-सुत्र-सुत्र-स्वाचित्रकेष्व विद्या में द्या केषा ही क्षा में द्वार में क्रुंद:वी'चेद्-'ऍत:र्वद:पश्चर:व]चेद्व:खु:पक्ष्रंद्:धदे:पग्व:धेव:थेवलःः पर। न्गरःह्या वयः पश्चरे हिन पग्रदः धेनः नी न्ने द्यः देवः पञ्चता क्रियाश्वराह्र, हु, पकरा विचयानर्- इवाना श्रीक्रियाव्याच्यान्य व्य क्र-नृत्तु : मञ्जा क्र-नृत्तु जानि : चॅ : ठ वा : यः ये वा जा क्री तः क्री नि : प नृ वा वा वा वा रः " **७**विषाम्यायायायायाया श्रीन् मृतुन् मी सादिन वसाने पावन पुतना "इं क्वा देव यें के विवेष्ण क्वा वर् में दृष्ट्वित व स्वाय विवाय विवाय क्षेत्र क्षेत्र प्रते प्रण्याप्त प्रण्या द्वा व्याप्त प्रत्य प्रत

<sup>🛈 (</sup>देव:देवे:धर:रॅब:673)

② (বৃব্'নই অব্'নইল্'রিব'নব র্ল্'গ্রহন'123)

वियानह्रवादि वाया क्षेत्र कुरा कुरा में प्राप्त मान कुरा में प्राप्त किया देशमध्ये न्द्राया ह्या के दार्थ न्द्रा ने स्था सुर्गे दाय वि सुर्गे न्या न्या ह्याराच्याप्रयाष्ट्राक्षेत्राष्ट्री पत्याप्रसु द्वापारास्यायास्या मःनशुक्रामदेःळेलःमञ्जःमतुवःनेन्दःने सं देवः यः केरः हे सः दसुत्यः नव्हः । नयारे केव वया नहर सरा महीर नहीर या वि केनया है नाम ने क्रेस्टिं में कृषा पायह्र रेड्रा मु : व्राव्याम् रायापाया ह्रेर : सि : हुरे: क्षेत्र-दे-द्व-क्षेत्र-द्व-क्षे-क्ष-व्यव-प्रवाधनिया " 🛈 वेदानदाय-वन **४८.५५५ हे. अ.५५ श्रुट मे.५५५४ हे ४.५७ हे ४.५७ हे ४.५५५** बेर्-ग्रे अर्दर्भ क्रुंद्र-पत्नेर् पर्-पर-क्ष्ट्राक्षे इयाधरावदः "तर्दे श्रमकाम्, मृ. क्या जा ही र श्री स. मी जिया नवा नया विषा नवा अर्थ व रर. हेर्न्वा हे.म. ब. हेर् बर्जिया हैते हर हर हर वाय राजा हैया मबेरायाश्चमान्यमार्केराश्ची पश्चिमायरश्ची विमयायमे गया बुर्या मे म्या विनयानहन्द्रत्वत्रिनानञ्चनयाहे क्षेराययाहराहरार्व्यायया होरा ॻॖऀॱख़ॺॱढ़ॸॣऀॱय़ॖॸॱढ़हॖॺऻॱ**ॺॱॸ॔ॺॕॺॱय़ॱढ़ऀॺऻॱॺॊॱढ़**ॸॖॖॿॱय़ॱॿ**ॾ**ॺॱॻॖॗॸॱऻ इव.ग्रे.लय.ग्रेश.पर्य.भूर.। पर्स्य.ग्रे.ग्रेय.पह्य.रग्रेट.यपूर.यपूर. नग्रत्युर,पर्व्य,तूथ,इव.नथ,वे.हनय.वेल.नथ रेवे प.र्वंय,तू.वेट. तपु.क्र्याश्चरं यर्था क्रिया पहेंदा तपु. सं. ताना हैं किराना पर्ट, हेर् वेशका म **अर्**-धर-बूट-बुल-शु-८ बुर-रेल-बर्ह्न-लंब-गु-विवल-बर्ने बल-वल्यायः -ब्र बेर् परि क्रें वयाल क्रुरा वि रं ठ म वया क्रें एम मैया क्रें या मैया क्रिया

① (देव केर लंद चते दिव का तु विष् क्रक 22)

न्दियःन्न्द्रके के कि स्राध्याया मन तहे द र न न न द वया व कि कि सा मुलान्दर्भंदास्य देन् ग्री हं लग् न्नास्य स्वरं स्वरं तहें वार् हें न्नरः नृत्रेरः यः वञ्च वा यत्त्रेना या दे । वारा द्वेरः वत् वा वा वा न्रा म्बर्ध्याः अर्द्धेन् द्वायः त्वायः व्यवः श्रीतः यन् वा द्वीतः श्रीतः व्यवः विद्याः विद क्षॅ.बट.कु.बेवट.वहेब.बुट.लट.केथ.टटा अटय.उटटय. घटे.स. त्रॅन्-वनयःर्यम्यार्येन्यः अळ्न्-प्यंन्-ग्रे -न्यंन्यः न्वेन्-न्यून्-त्र्यः नः विषाः चुरः वः ठेः यः उरः श्रुयः यः श्रुरः व्रषः य वरा यळे राः व । श्रुपराः यह षः कुव् रहिंद्य सुन्य हेवान ने नवा राजा होवा वही वाले वान राजा है न्यतः र्चे र त्रेतः प्रेर हर् ज्र न् र क्षालाला ज्ञाला ह्या सहरा वियायकारदे रात्रद्वायाधेव।

न् म् स्वास्त्र स्वास्त्र

① (বৃদ্ধের অব্বের্শ র্শ গ্রহণ 123—124)

बर्यारपाईषाइचीयापावेश्वया चयूर्याद्याच्याच्यरपाईषाव्याच्यरपाईष्यः च्याः स्वायः प्रायः स्वायः प्रायः स्वयः स्वयः स्वयः प्रायः स्वयः प्रायः स्वयः स्वयः

मञ्जूब-पदि-ने वा अळ्बा-म्डर-द्रया-मन्द्र-लु -न्र- द्रोयाळे या ने रा मनिया **ढ़ॕज़ॱय़ॱॳॱय़ॺॱॻॻॺॱय़ढ़ॱऀ॔ॺॱॶढ़ॱॻऺ**ॿढ़ॱऄ॑*ॸ*ॱढ़ॾॣॕ॓॔॓॔॓॔ढ़ॿॕॗॸॱॻॿॸॱॻढ़ॗ**ॱॱॱ** वैवा इंस्वान्ड्नायमाप्यान्याचे हेवान्डाहार्यान्यान्यान्या इर प्रके के व शि. हिर प्रवेश ता बक्क वे वे वा व्यायि व स्राप्ता वि के वे र व र्टर क्षेत्र चन्य पर मार्थ क्षेत्र मार्थ क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र नय. इंग. वया नय न न न न ह में व हैं में र्यट. ५६४. रेतल. क्ष्य विषय रटा क्र. बक्रूच. श्वट. श्वेल. श्व. ५६४. र्नाया भेरा महर्मा स्तर मुला स्तर हिंग हिं या हु नहर विषयः पदः निषा श्रीनः विषः श्रीः श्रीः नवदः निषे : लेवियः श्रवः वहः न लार्यम्यायान्त्रायदे न्वे तत्तुं ना हु । स्वा स्वा यदे न् त्या हु। श्चितार्य में के अक्रम मेयार्मे हिता में स्थाया इयायर र्माया में ति दुरःश्चेग्-कुयः बळव् श्चेदः यः द्वयतः ग्रैः गर्द्वगः कुदः तुः श्चरः यदेः बर्दः र र्ञ्नः इययः ग्वा कुरासुद्रासुद्रास्य हेन्यः पञ्चितः धरः सर्दिः है।

कुं संस्थान वि नर पठर कुर पदि नव वि संस्थान वि स्र क्याः अवेदाः य देवे व दारु । म्याया व दाया श्री : तु वा सु : य दे : य में दा धेदाया । ..... 1611 स्तु: च.च.व.च.चेथानपु: अथानवी: च्यानवी: च्यानवी: gt.g.2.45.45.45.45.45.45.45.45.42.42.42.42.42.42.42.42.42.42.... ह्य-याध्यम्यवादाविषान्दा न्यानार्धयाची सुवायाकः 空口点 र्चा पञ्च : क्र्रंब : क्रेन् : चर्या यया गुपा : पदे : या दे : या पञ्च : क्र्रंब : क्रेन्य व : वे व र.चक्र.वर.ब्रेथ.त.क.चक्र्च.वी.क्रेर.री.लर.जे.चर्बच्याताचक्य..... बह्याने व.रे.सेयाल्या चेवयालर.प्रं.पन्नार्था स्थराधिया ङु: बब: य: न्रः विव: क्षेत्र: धरः ग्रद्य: न्रे: न्रः विव: वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित शे.श्चे.के.के.रं.व.ब्रेय.सं.केर.श्चर.तं.तंत्राव.च्याव.चयार्थ. ववः ठैवः ग्रीः हः यर्षेत्रः क्षेवः विषाः ग्रुदः व्रितः व्यदः यदः यदः यदः व्यवः व्यः यर-न्त्रीव परी-न्रेंर्याच उरकेवाच विषाधिव पर्यायया सुरचर तहें प्रक्षे व्यापालिया हेर् देशाय देश हिन्या है स्वर्था है स्वर्था है स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर मीयासियायाः क्षेत्रः व्रि. तार्यः मि. बार्यः सिया मिर्या वर्षाया वर्षाः विद्रा क्रेवः (श्रीनः श्रुष्टः ) यदम् ध्रमः स्रेमः विषः समा तक्षतः श्रेनराः श्रुं तिर्दरः श्रुविराः हवारा कं न्यः विवाः विवाः हरः देशः विवाः यदिः । नेतार्यामी विश्व वदाकुर्दे यावियाच क्रिस्वित्तु विद्यापारेत्। विद्या ॡॱॴऄॱॼॱॺॸ॔ज़ॎ**ॱढ़ॺॱॶ**ॴॱॾॆऺॴढ़ॖॱ**ऄॕॱॶ**॔ॱढ़ॺॱॾॗऀॱॸॕॸॱॶॺऻॱॸ॔*ॸॸॱॱॱॱ* ब्राय:नेर् रे.केर.भीथासेबाश.क्र. ह्या.वें.पपु. थियाया विदे बित्र शुः विद्रायदे त्या बहुत से दातु । वस्त वस्त हा त्यु दाया से दा

देव ग्रदः तृ त्यते ज्ञायते इयायान्दा वयता र ग्रुनः भेदः तु द दि ते विदः र् वे ः इर- व्व-य-नेया विते भेन-नगर-रग- हु- स्वाय-हे- रोबया या हु- यदे हा .... बदै द्वाराधिन तु दिराया दर्ने सु तु वे क्षुव र वा वी यहूँ न वु स्वाया विषानेराम्यवायाः विराधानेरा अन्यानेरातृ व्यवे ज्ञावान् सुराधाः मतुन्दं यातुः सेनवा व्यन्तः नेत्। विदः श्चितः नविषः व्यनः सेनाः विनः न्दः रेग्यः मजुन् पत्रदः पॅतेः च्चैयः पतिः धः रपयः ग्वैः श्चॅनः द्धंयः स्न् तः वेदः । स्वायन्त्रियाः भेवान्त्रेत्रा स्वायन्त्रः विदानियाः सवानितः स्वायन्त्रेत्रः म् निम्यान्त्रास्याय यायद्या श्रदालेगात्यविष्याने प्रत्य केर्यान्त्राया [मन् : हुरामः ने :म बन् : हुराबेगाः सुः श्रुराधंनाः स्रोता अव हिरानेताः र्विदःपत्र् सं प्रेर प गर्चे अपिक के रदा मे लार हु रे यह रदा श्रेमा वियायरी धिव पर वे ळ या येर् छ या हर गार वें प्र गोर् धर्म पर देर्। श्च.व.स.पपु.व. ततु. मि. यार्था व्यव हो द. तान यो प. खूता कूर्व वि. चेया..... न्श्रम्यः द्वा दयः यदः न्येतः अतः श्रमः । अतः **য়ॗ৴ॱनेराः कुॱश्ननः वंगायराः अवः केरः मीः ग्रनः मेरेः हुनः** येगः यः न नन्। इर्णिन्देशयाहिरानी अन् वेंगावया अवाहिराया वन् या देन वन *वैदः* वैयः दरः वैद ग्रेयः र्वे पर्योदः यः देवे वदः दु। दः देवः दूः यदेः हः ् बाबह्यानानेवान्द्रा हिन् यावेबवादमुयान् उद्दाक्षेत्र में विन हिनवा .... हिरा द्वर द्वर त्य विवा वीया हे वा द्याया वाहे वाया वेवा द्वर मॅर-म-वैन-मर्जेष-ग्रुद-वेष-ग्रेष-पॅर-स-रेन्। " Dठेष-न्षय-म-ने-दे-**र्**चैद'है'न द्व-मुल-५८-अन्यायाययाप्ट्रिन द्व-५६'लाचु-ईसान्चे-----

①(ব্ল ব্ল ক্ল অন্নেম্ম.189—191)

इवा वद वर वेच नेन्द्र महामा मालेवा मालेवा धर इरा मालवा धर श्रम्य मेर्दे वार स्वारी मूर्टी स्वार दास्त्र में प्राप्त मेर कि रेट्र वर्षाः वृत्ताः स्वायाः सुन् । वृत्ताः वृत्ताः । वृत्ताः स्वायाः स्वायाः स्व देश<sup>,</sup> बैद-श्रेंद-दट-ब्र्द-५ ब्रुव-र्थ-श्रंथ-ब्रुव-प्रवाद्य-प्रवाद्य-प्रवाद्य-प्रवाद्य-प्रवाद्य-प्रवाद्य-प्रवाद्य-म्बर्स्यम्बर्धियास्तरेषु धिमारेश्वरात्र्येत् यापर्माम्बेराषायाः स्वा सरायहेव अधरावेरामा न्राया स्टाया स्टाया विषया मान्येव सेते स्वाया शु'वि'वक्ष'न्वेक्ष'वृद्द'नुव्। हेल'शु'न्द्वेव'हे'वठव'जुल'रेट'खबल' मयाम्बद्धाराष्ट्रायाचा श्रीताचीता स्वास्ता स्वास्ता स्वास्ता स्वास्ता स्वास्ता स्वास्ता स्वास्ता स्वास्ता स्वास वदःवियः तर्मेदः मवदः यर् मः गुदः धिमः इति महा के देमहार दिनः सः श्रिष् म्राचित्राच्याच्याक्ष्यान् न्याची व्याचित्रवाष्ट्रवार् भ्रेषा श्रीता श्रीता त्तुः रॅवः क्षरः वॅरः क्षे : क्षे : दशेयः ययः रॅवः **हवयः मॅरः य**देः श्रेरः गृतु**रः ः** <u> चर्-भ्र्-लयम्बर्ग्नेर-भ्र-ल्र-मान्ययम्बर्ग्न्सयः</u> बर र्स्यायः ग्री-वद-तुदद-श्चे-श्चयायः वयःश्चेन्-न्द्रवः नदः तन्नेवः नदेः **ल्ः** लम् तर्देर र्षेत्र र्मिया त्रित् या अ असूर्ी

श्ची स्थान स्थान

35'a

"ద్రార్లు దానా **ద్వామం. ఖి. బ్లాండ్ మి. బ్లి. బ్లే**. బ్లే. బ वै:रेम:न्द्रम्बे। "देग:न्रः। दर्वे:न्र्रंन्या हि। वर्-विवायानुः वरः अयानवः इवः क्रयानयाना विवयः द्वा ঢ়ৢ৾৾৾৽৸৾৾য়৾৾৾য়৽য়৽ঽ৾৾৾৾৾য়৽য়৾য়য়৽ড়৸য়৻য়ৢ৽য়৽য়ৢ৻য়য়ৢ৽য়য়৽য়ৢ৽৽৽ **য়ৢ৽ঽৼ৽ঽয়৽য়ৢঽ৽ঽ৸য়৽ঽয়৽য়ৢ৽য়৸৽ৼ৽ঽয়৽য়ৼ৽৴ৼ৽**৸৾য়৽য়৻ৼ৽য়ৢ৽ড়৻৸ श्रीरः। यः म्रारंश पठका में ने पः भ्वा व्याप्त व्याप भ्रुतः विषा ग्रीका मुनः न्द बुषान्या वर्षे प्रदेनेयायमेन्यमा "वेषादिन्यनुषायदे वरः" ড়ৢ৾ঀ৾৾৽ঢ়য়য়য়৻য়ৣ৽য়ৣয়৽**৾৽ৼৢৼ৾৽ঢ়ঢ়ৢ৽ৼৼৼৢঀ৽ড়ৢ৽ৼ৾৽ঢ়ঢ়ৢঀ৽ঢ়ৢ৾৽য়ৼঀ৽ঀ৽৸৽** मः य त्र न्। कुः श्रंग ष्रिलः कुः न्नः श्रुयः सुर्। मृरः न्र रः দিলথ প্রিন গ্রী:মি:বাংন শ্রী:ব্দ:গ্রিম:স্কু:র্ম:বারি:র:ম:রারি:মু:··· ऄ**८ॱॸ॒८ॱय़ॕॱढ़ॺॱॸॗॺ**ॱॹॸॺॱॸ॓ढ़ॏॱॸ॒ॾॕॺॱॸढ़ॖॱॺॴॾॗॺॱख़ॗढ़ऀॱॸॸॱॻॖऀॱ**ॺॾ॔ड़ॱ** र्टा विद्यालया नेत्रेन्य. द्या ग्री. त्युटा ग्राट्य पठ्या हटा या लर्पा न्ये अळॅ व महेना उरा पर्ने न्वा "ने सं देव यं छेदै" क्रे : देर दे। जनवारा रेय इवा में : इना या हुया सुन्त्री वा यह गा रहुता मवरा बर्ने हैंन भेग लेखानर वहारया नगुर संप्त कुन रहे मराम्भित्रा देते हुता सुरम्पता त्र हरा ग्रा भिता न्गारः इतः विद्या न्युरः सं न्वा विद्यापरः विविद्या देवे हुत्य सु स् द्वर हुन्य त्या इया कुवा मेर र न व र वि ग्रंटर **ळेब:२:**नहारण र्शुर:ॲ:र्शु:नङ्गं:ड्रुग:सर:मञेनहः।

ब्रिय शु.के.र्यट.प केथ तपु शिप. बस्य। ग्रंट. त्र्य. श्रेप. व्रि.) तिप. ञ्चर्रु त्रष्टु द्रम् द्रमुर सं ले हुन पर ने ने नहा दे दे हुत हुर म न्यदः वयः वायवः वहवान् चुद्या मेदः यः वयः व कुः र्रेदः तुः विषुद्या <u> नृजुदःसः त्रे न्वाह्यस्यः वृत्रे वृत्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्व</u> र्मतान्ते केन्य कु बही में र में तु कु कि निर ने जेंदा अल तु ₹·口ゑ॔**ढ़ॱय़ॺॺॱॸ**॔ॱॺऄॗढ़ॱय़ॱऄॗ॔ॱॻॿ८ॱॸऄॣॺॱॸॿ८ॱॿॖॱ बर्ळे दे वेद् दे विष्ट्ष द्वा विद्यु प्रेम्य अन्य सहय द्वा द्वा विद्यु द्या विद्यु द्वा विद्यु द्वा विद्यु द्वा विद्यु द्वा विद्यु विद्यु बःक्रेव-त्या है। वश्या रुट् । अधिवा न्या मुला स्वा मुला स्वा मुला । वि । होरा ॱऀख़ज़ढ़ॕॱऄज़ॱज़ज़ॱॻॖऀॱख़ॺॱॻॱॸख़ॗॴ॒॔ॻॏॾ॓ॸज़ॱॸॾॕॣॸ॔ॱॸॸॣॻॱक़ॗॆज़ॱॺड़ॕक़ॱ नर.कु.च.चळेला रेबीट.ज्र.ट.कि.नर.बेचेबेळा ब्रूट.श.कुब.त्र. वयान्ने इन्याञ्चरा श्रेमा नित्रा दिया श्रिमा हिमान्या नित्रावराया तर्मेग्राकुःवरः बहें नः तर्में वापविः वा वागुतानुः चिवेराधिः वाधः <u> इतः र्ट. पठका प्रणादः है व के व र्ष का पड़ला</u> देते श्रु श्रु सं प्रचटः त्रवान्चरतान्यतान्द्रितः मृष्युपः **मु । बळ : क**यः सर्ने : चुस्यायः स्त्रीतः वी । <u> के.परंचय.य.झंट.री.पविंच्या</u> य.पश्चे ब.ठे.कुर्य.त्रि.पखे बंधा च के.री ब. लक र्व. तम् करक श्राम् मानवन न्दा व व विव क्व मी के ल र्दा चत्र.म.पञ्च.पञ्चत.प.र्मीट.ज्ञ.चे.चे.चे.च.त्य.ज्ञ.च.च.चेश्वय.तप्त....

म्यायात्वां ने द्वायात्वां म्यायायात्वां ने द्वायात्वां ने द्वायात्वा ने द्वायायात्वा ने द्वायायात्वा ने द्वायाय्वा ने द्वायाय्वायाय्वा ने द्वायाय्वा ने द्वायाय्

ह्यात्वयाक्ष्र्र्याताः स्वयाः स्वयः स

<sup>(1)</sup>(पूर्-र्ष-प्राप्तवयः श्रुःश्वा-प्रवयः ग्रुः श्रुःश्वा-प्रवयः ग्रुः श्रुःश्वा-प्रवयः ग्रुः श्रुःश्वा-प्रवयः ग्रुः श्रुः श्रुः

②(素或·呂木·大丁·디名·帕丁·凡哲可·肖可·到二句·173)

व्यापन्याक्षेत् भ्री न्यापठत पहुंच ता याप्या मान्या मान्या मान्या मान्या भ्री न्या मान्या प्राप्त मान्या मान्या मान्या प्राप्त मान्या मान्य मान्या मान्य मान्या मान्

<sup>(</sup>कू.यदे न्नु वदे न्द्रवाहर वदः विन् देवः देवः 193-194)

म्बरायराश्चरम् मारावश्चर रहित सालास्राम्यायदे स्थान वेयान स्वीतः पष्ट्रवारम् अवः पर्यः मृद्धाः क्रवः द्यः परः त्युरः परे दे राके अतः तु। ষ্ট্রীকে: 1815 ইন্-ন্ম-ছুন্-নন্তু-নন্ত্রী-মের-স্ন-ধন্-মের স্ত্র-ন-মেরে: वर-र्र्स्वा अनुवादक अभी नह्नुवानि विविधायाञ्चरः ह्ना ना विविधाः मधु.क्ष्यात्व्रस्यक्षेव्याच्यात्वरः क्षेत्रः क्षेत्रः वरः। "ने वयः षयानवान्त्रेयान्तार्वा वि व क्या (दे क्या श्वेदः श्वेदः श्वेदः ) द्ववः क्या न वेया हुनः कुं द्र- दुः हुदः चर् न व न य हे र हे है रे न हुदः न विदे न न र दरा विनयः पहतःश्चितः स्वाताः श्ची 'बक्केन् स्रातः वितः श्चराः श्वराः श्चराः श्वराः श्वरा क्रिय-स्यास्य हे हे श्रीया गुरावीया पत् वाया हे प्रश्लवा वारा पर बेद्-यः द्वर-वतु नवा गुरायतु दः इत् तु दर्शे वर्षा वर्षा दर सुया है । पश्चर तर्रे वियासर। पग्राय थया व्याप वा महिया श्वर अहेता च ता हुरारवा नेरायर सुन्या होया के नारर केरायत के लेया विवया यदःस्यानः न्रा यदः वगादः यया देनः वदः सः त्रः नः र्टः र्देते अह ग्राप्तु तक अध्यति वृत् गृषिषा दुरः चत् अध्यति । तम् वारा स्टरः श्चव-रहर-रुवा ग्रॅल-र्चा श्चेर-हिर-लर्। लर-पश्चर-श्च-पानेवेयापदे. ळ्यातम्, ययाचभीर र्वा ग्रीयाचन कु. द्वा चैरान। अव र सेर् प्रय गॅ :चल:श्रॅंट्-हि-क्षेत्र:चल:ठट:द्वा:श्रेट्-ळेत्र:य:बुट:यट:क्षेत्र:ळवल:शुः... नवरानिमा न्वीनामालमा क्रिवासमा अर्गुनारा सामा ॲट्र:बेरायद्र:मृदेराशु:म्रायय:बेट्र:द्वायदे:घग्व:वेश:यॅट्र: (केट्:ग्रेरा: न्यायान्तरे केन्) न्न्राह्म राष्ट्रे विवया ...... १ विवयान्या विद्या दे द्वया

ह्न·पःमृद्रेशःयःदेःरहःबैः**ळेशःपङ्गः**यवैःवेदःवैःपरःमृवेग्यःयनुग वयारेमावराव्या "ठू केवामे प्रवापा निर्मा ब्दैर.पर्श्व.पर्ष.पुर.त्व.म्.च.ब्रेय.तप्र.क्र्य.पर्श.व्रेय.पूर.या.... घषरा ठर् विष्ठे व.च चुचया श्र. होर. र खे. त. जर. कू. य. क्र. यक्ष. र खेर. जू. নস্তু-লৃতিল্'র্ল্লা-লৃত্রীরা বরণ তব্ গ্রী স্কুন্ম নম্পু देवे मु वळव म्रोत-क्ष्र्व-भ्रव-द्वित-विवय-न्द- भ्रवाय तहत-यावेवयः नेव- द्व-ने झ.ष्ट्र-श्रुब-२ब-५<u>व-</u>म्न-<del>. क्र</del>-मृत्य-प्रदे-मृत्य-क्रप-प्र-ञ्च-पञ्च-पदे-क्र्य-गृत्रे*यः-*केवास्तरम्बर्गा " केवाम्बर्गाराम्स्य इयाहरानुतरा "मेराया यर्ग रं के द रं द्या अग्रिं र प्रेर प्रे द र प्रेर के द्र र में कुया रं र अकेंद्र तरीयाञ्चना पक्ता श्री.क्रा.पे. ब्रा.श्री २. च्रीया लवा यव. ब्राट्याया रा.से.र. । लवा नव् इया नविषाधेनवा हे । अपनि क्षेत्रवा निष्के वा विष्के वा र्दिल:श्रर्-पक्क रे .ल्र्-पद्ध तस्य सं पद्ध सवारा ररीला श्रेवा स्वा विश्वर धेन नै देव म्नेन्य ...... दर्भ म्राचा हु दि दे रहन या मिर स के दार दिया मग्रदायेनवात्त्रः ने सं के में मृत्यु हु न् कु वा दू न्यदे हा स्रदे सह न स्र मययः इरं छिरः रु : श्वरयः वयः ग्रेरः र्मेयः मनिया है : वयः ग्रदः व्यः रेरः म्ने.य.पश्चिम्य.त.रम्यंय.भृटः। हर्-वयःमवयःद्वा.म्.भ्रे.पर्च. वययः कर् ता चु अया प हे या प ही द्या परे दे में द्या पा नृदा अहि दा पा मू त्यारे

म् न्यतः भ्रीया विष्या भ्री न्यतः भ्री स्वर्यः भ्रीयः प्रवर्षे भ्रीयः प्रवर्यः प्रवर्षे भ्रीयः प्रवर्यः भ्रीयः प्रवर्षे भ्रीयः प्रवर्यः भ्रीयः प्रवर्यः भ्रीयः

① (देव:बेर:बंद:ववे:द्वेन्व:वु:ईन्:च्दव:22)

याक्षेत्रः स्वास्त स्व स्वास्त स्वास स्वास

①(ব্ব্'ন্ব' শ্ব' শ্ব্'ন্ব্ন' প্রব' প

②(तृ 'सदै' ञ्च'यदै 'ह्याधर'वॅर्' थेम 'रेप' रॅंग' 187)

**७**(नेन:बेर:बंद:नवे:न्बेन्व:सु:मृन्यदव:35)

मिल्याम्याशुः स्राप्त स्राप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत

चिन्। प्रतित्वा अपन्ति। स्वाप्तिस्या स्वाप्तिस्या स्वाप्तिस्या स्वाप्तिस्या

मुर्चनाची द्वारानु : ब्रोदाना वा बर्गा वि । ब्राह्म स्वरा क्या क्या वा वि । वि स्वरा क्या क्या क्या वि । कु देश थे नता न् कॅटला न् व स्राप्त न् ता क्रा न व ता के ला च ला की क्रावाल के ला क <u> श्चेर-५५५ त्यारायाचे व्या</u>क्षा क्षा अस्य अस्य स्वास्त्र व्या स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स मयाने न्वात ग्रम् वा वे नियामा हेना मही इस निया के निय सॅ'क्रुपरा' अर्वे व'र्म्गु'य' क्रेव्'यें 'म्रोर'वय'रे रा'य' हेर्'यरे 'यय'र्थेय' · · · द्भरः मत्रेरः एवः रेदः यें : केरः यह मः र्धरः लुः वेः र्वे वार्यः विष्टरः ऄ॔ॴॱड़ॖॴॱॾॖॕॱॺॸॕॸॴॹॖॱय़ॿॖॸॴय़ॱय़ॸऀॱॿॸॱॸॕॴय़ॾऀॺॱॿ**ॸढ़**ॿॎ**ॱॾॕॺ**ॱॱ य'वेन मॅद्र'य'पद्ग'ये'केद'येर'न्येर'क्रुद'र्श्चेद'प्रजुद्र'द्युद्राधिद विगयाहे के न्मेयाल कुरे अराया के स्वा ज्ञा हराम डेया हरा है दॅर्-तु-ल-इन्न-ज्ञ-प-पञ्च-निवेश-पदे-ळेल-रनो-पदे-वेदा पनादे-छेर-यर.क्षेत्र.कष्ट त्रीम्प्राच्या श्रेप्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्य क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्य क्रम्य क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् अत्राच्या क्रम्भूम् व्याच्या क्रम्य क ॻॖऀॹॱॸॵढ़ॱॸॏॕॹॱॿख़ॱॸॣॿॱॻऻॖऄऀॻॱॹॖॱढ़ऻॾॕॖख़ॱॸढ़ऀॱॸॣॕॿॱॾॣॕॱढ़*ॹॗॸ*ॱॿ॓ॸॣॱॻॖऀॱ;ॱॱ परीयात्वराष्ट्रियात्रा दे द्वाश्चित्रयाः वर्षे वा श्वेताः वर्षाः वर्षाः ग्वेदः लट. श्रेन् मृग्यः मृद्याये वहरः श्रें : यर्ने द्या शुः दृष्ट्र स्यः सः दर् हेन् ः सः .... डेर'क्षराह गयार्टा क्षु'ग्राह्मग्राह्मग्राह्मग्राह्मग्राह्मराह्मग्राह्मग्राह्मग्राह्मग्राह्मग्राह्मग्राह्मग्राह्म  वैन् रदः या मुडेमा हु हे अहुव हुया ने रामहेव में राशे राश्चा हु यदः तर् ने ने ने दि तर से साय तुत्र त शुर से नि हे नि हे ना के ना पर हे . हिराया म्रोत-पुबान्द्रिक्ताकेरामह्म् न्ध्रिन्तु क्षेत्रम् वायरके व्यक्ता ढ़ॸॱॸॕॺॱॱॱॾऀढ़ॱॿॖॱढ़ॿॖॺॱॿॖॺऻॺॱॾ॓ॱक़ॆॱॸॿॕॺॱॿ॓ॺॱॼॺॱॻढ़ॱ**ड़ॺॱ**ॺऻॗऀॺॱॱॱ ㅁ霻ㅜ·ㅅㅌམ·ད밓ㄷས་ནོང་མ་ཚས་బ్రै་རྒྱལ་བོར་ཤ་ལེག་ངལ་རྡེན་རёན་····· वंशाय तुत्राचरा अर्ह्य "ा के या न यता विदा कृ त्यते हा सते । यह ख़िर्'बळॅन्'ह्नुय'सुन्या नित्र'यादियापदी'पर'देर'क्नुय'ळंप'दे कॅं'कॅं'' ैर्मणः बु: बळॅम र्हे :हे :ळें र: बादे : बर्न : धबरा ग्री :क्रुब: मबि :घर : हे :बिमा :घॅम : · · ह्ये .प्र. 1810 प्रंट. थ. प्रथा प्रप्राप्त म्या विश्वास्त्र ह्या न शिक्षा मुना । हैव-श्च-तुर-श्च-विवायायान्दा श्चेत्-श्चेदाक्यावायरःश्चेर-द्यावरः वदः। ज्ञापः महावाधिकेषायि है । दितः ही हिन प्रमादे क्रिंवः है व इस्यय:दरा है:न्नि:वर:यायवार्क्ता हुर:कुर वा ট্র 'স্ল'ঝ'ঝে'ৡ'র্মশ্বাম্'ফ্রী'এই অব্যান্তী'র্মশ্বা ガス、独口公・野る र्नेनरः समयः उर् मान्नेनायः केवः यदिः महिनः श्रुयः निरोतः वयः देयः ः यं याहेन् परी विना ने सं हैं की व ज़व ने व में के प्यम से सुन विपय पन् यापह्रव पान ने शुकाशु श्रुर विमका या वळिका मका ने का वा विकेषा बॅद्र-अ:ळेव'सॅ**:र्**गुद्र-ॲं:डुग्:छुर-वेनल:मदे:झ्:येर-अवि**व'सॅ**र-वेनल:\* *ঀৢ৴*৽য়ৢ৴৽ঀঀ৴৸৾৾৾৾৺ৼ৾৾ঀৢ৾৾৽৻৻য়৾ৼঀয়ৼয়৽ড়৽য়ঀয়৽য়ৢ৽ড়৴৽য়ঢ়**ঀ**৽

①(इस्राधरः दें व्यव्यतः द्वेरः तुवैः श्रेटः मः भृटः धरः खवैः भृगः श्रद्धाः

<sup>35-36)</sup> 

यं न्वत्रविग नहें स्पर्ध्य द्वा व्या हिला पर्दे श्रुप्त ने हिन दे हैं है है है **५व**.ग्री.पथ. इत. थे. प श्रे.च ७ ब. ८८. घटना मूट. य. कुब. तुपु. चेथुर. श्रेब. . दुतरः भ्रवः मञ्जूनः सुन्या हे के न्म्राः वेया वर्षा वर्षा मे भ्रायस्व म्राम्बिचेयाती वाषान्यस्याच्यान्यस्याचे थानी तानी तान **बॅव**रतु : बंदः याम क्रुंदः दे : क्रुवः यह ग्याः लुवः देवा वृः वेवः ह्या गृहेवः द्यागुर-दॅर्-ग्री-यया-र्द्रव-बुग्यायम्बर-क्रे-पर्य-प्रीयाने वस्यापह्रद केंद्रे म र्रेट के ब्रॅब ब्रेट व्यास्ति व्यास्ति व्यास्ति व्यास्ति व्यास्ति व्यास्ति व्यास्ति व्यास्ति व्यास्ति **रॅंब**-५२<sup>-</sup>, शुकान्वान्य शुकार्य र न्यान्य न्यान्य र न्यान्य न्याप्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्यान्य न्याप्य प्याप्य म्रास्थ हिव स्थि विश्व श्रुव निवर श्रुव विश्व क्षेत्र विश्व क्षेत्र विश्व क्षेत्र विश्व क्षेत्र क्षेत्र विश्व क्षेत्र विश्व क्षेत्र क् ন্ম-ছ্রিঅ'ন্র'স্ত্রি' বৃত্ত বৃত্ত বৃত্ত ই ক্র' ই ব্রান্ত্রি এঅ'র্কন' ট্র' এঅ' ইব্ বৃত্ত **६. मवर. र म्या.** पश्चे. पवना नवर. य. पवेबी ही. हेव. क्रय. सं. वया तथा. र्नेनः त्वरः र वेया मुस्या "Dवेया म्ययः वेदः । दर्भेरः समारेयः ने 'कॅ 'कॅ 'केव् 'हव'" रा प्राय राज्ञ म् श्वा मदी के रा मश्वा होवा पक्षेत्रः मुद्राः ऋषः रूरः श्रुः ग्रेग् वा मुद्राः न्यारः म्यारः करः अहितः मदेः परः श्रीनः बर्ळेषाः श्रुवाः ने रायः वा केन् । यो वा स्वराः ने देः खवः नवः मॅं इया न हे या द्वारा ह्वारा मिना न्या बद्दा ग्री अना है रागिते बतुवाञ्चवास्य देवाञ्चर वास्ता दे तस्य हेना वर्षा *ঢ়৽*য়ৢ৾৾<del>ঀ</del>৾৽৸ৼ৾৾৾ড়৽য়ৣ৽ৼ৾৾৵৽য়ৢঢ়৽য়৾য়৽য়ৣ৽ড়য়৽য়ড়ৢ৾য়৽ড়৽ড়ৢ৾য়ৢঢ়৽ড়ড় बुकार्स्य क्षेत्राने देशुः वाने प्यमिदाश्चाताश्चारमा र्यार सवा र्याया

①(इब:बर:इॅर:बुदे:झेर:व:वॅन:ग्र**व**:ग्र**व**:36—37)

क्ष्याविष्ययाश्च अद्भन्य याल्याञ्च वश्चियायते छ्यास नेव ने सं भेव ने सं दे 'हेर्' ग्रु 'र्ट्या सवार्ट्य कु 'सवा ह्यारा सवापठरा हेरा ब्रॅन्'नक्रुयाने'ने'नेवावयात्रेन्'ब्रॅन्'यात्राह्मनायह्नात्राह्मनायह्ना ञ्च न कु न् पदे छे ल न हु म हे ल न र ने से दे न य शुग ले छ द सु य सु न र स तह्रवासामवरायरा मृहवाळ्यायान्या क्वानवेद्वार्यम्यायाया पञ्चला महोराक्ष्य इंबा क्षेत्र हो हो राधे पहारामात धेना न में रहा ने वा क्रि.क्रुब्र.प्रि.पर्वि वाया क्रेन्र.पर्वि.ता.या. ग्राया.स्.ने.वाद्यः श्रायक्रितः पर्वे या.ता. नश्च-बेद्देयाचे व.याचा है .त्यीत श्चित श्चिर्या निया प्रमान स्थान्या स्था विवयः मु : बहु : श्रीन् : श्री : तः बह्द न श्री वा ..... " वे यः नहा " अन्यः । त्ञुन्'यॅर'श्चेर्'श्चॅर'केव'यॅर| नशेर'श्वव'र्श्चेव'यदे'रुग्नद'धेन'र्ने**रश** रॅव अर हे वे वॅ केव हव के के या रहर राज रह का थे पा वा विका म्याया न्याया वर्षा म्याया क्रिका र म्याया क्रिका वर्षा वर वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा व संस्टायान्द्रात्राचित्राचेवत्। इयावतावत्। "मुलावदेश्यळ्णा त्रिंतर नदे ही र वे नवा हा वि वि तदे ही ही र क्रें र ल है ही त म्बेर-तुब-तु-पह्नम् न्धन्-चुकाक्-खम्ब-र्ख्यान्द-अबुक्-कैद्रा श्च-क्र.लट चक्ष्य.त.पर्य.लूट.५.ज.मु.चट.मु.शु.शुर.रूब्याया मवया.रूब्... स्ट. ह्र्य र.१८. तश्चर. तश्चल. व्याप्त. र्वाया व्याप्ता वाहेया हिर. नक्षेत्र महोत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र त्रामहोत्र नहेत्र देवे वर्षे वर्षे

<sup>(</sup>दिन वेर बॅट्रनदे र्वेग्य सु मृग् श्रूट्य 23)

वेमला "किलान लय मासूराले क्वानीमार्के बेना ज्वान ला **ሻ**5. न्तुलान्डरा कून्यरस्त्रेवा । इस्त्रेमवा इरान्मव ग्रेरान्सुवा बर्।विश्वतः हूर् श्चर् श्वावारी इत्यविषात्वे त्यर क्रा वर्गा स्र बक्रवाः श्रुषः द्वायः ववयः ग्रुः द्विषः द्वः बक्रदः मः हैः यदः दः नहे यः ग्रुः ह्रवः . तु.प.तृष.नृष्यः ष्वपः प.द्रें **ययः ग दरः चः क्रः ग्रॅरः यू** प्रत्यः श्रुरः व्यः । । ष्ठिलु विचार्त्रा देवाशुर्या् ¥राद्रवा वयाविच मुः शेर् गरा उ.चयान्छेन करासर्थाः सामान्याः महान्याः स्टान् हेन करासर्थाः सा म्बर्यार्थाः र्थं र पहन् मान्ध्रनः विषा यसन् होनः श्रीः ह्रायः केन्। महिनः । मवरामा धेराविका प्रवा इवा धरावे । हरावे देवा हैवा हैता मवरामवर्न्य मैं वर्न्य राष्ट्र महिर्द्य महिर्द्य महिर्द्य महिर्द्य महिर्द्य महिर्द्य महिर्द्य महिर्द्य महिर्द्य श्री. मंद्री. लूरी भीवा न इनिय न हे कुवा न हे वा नह है । सर श्री निया मह्नालु नवर त्या थे सर ने हुर रेंन् स्व कर अर्द वर्ष धेव मदे हुर हिर महिला है के स्वापित्र निर्मा है ज्या है में 1821 में र् द्धन्याः श्रुषः स्ति हा मान्याः प्रति देवा सामान्याः स्ति । स्ति सामान्याः स्ति । सामान्याः सामान्याः सामान्या न्व अळेंग वयानगत व्यानगत न्व्या नकुन नगत नकुन नकुल न्वा **ਗੁਕਾ ਸਕੇ ਘਟ ਲੇਂ ਜੋ ਨੇ ਕਾ ਦੇ 'ਲੇ 'ਸ ਨੇ ਕਾ ਨੇ ਕਾ ਨੇ ਕਾ ਲੋਂ ਕਾ ਲ** विनः न रायः नशुस्यः विन धेवः हतः है 'क्षेत्रः च्रियः येन्यः क्षेत्रः या प्रया ग्रॅंबर-प्रॅंट्र-प्रमाद-दर्दे खेपवा दर्धिना सर्। "ह्या ग्रंबराय में व्याप मा के व्य

र्क्षिः वर्षे छ्राञ्चर र्षेत् र्षेत् र्षेत् र्षेत् न् वर्षेत् स्त्र মধুব রা त्याचरयायाः क्षया अर्द्वायम् मृत्रेयाय वया गृह्याया या व्यायम् या विष्याय व्यायम् केद-यंते-म्लेर-ह्रद्-रुक्षंद-प्यकुर्-सुग्याहे-के-र्व्ययाग्री-लु-प-ह्न्ययाः दे· दॅब-बॅद-ब-ळेब-यॅन-ब्रोत-सुब-तु-नहुष २५२-लु-५**सु**ब-ग्रु-लु-**धेण**-न्दः पठतः पॅन् पत्वावा ज्ञापवा तु व येदः इ यः गृष्टेवः शुः सदः शुः पञ्चलः नरा अधानवानविषावषानम्यायेनवात्। दर्नः भूरः पर्नेष्ट्रे बर्धव.मी.श्रेब.चे.पर्वय.म्बराचिर.परीवा.मिरा द्र.पपु.श्र.बरु.श्रे. रॅं व· सं 'तवारता के बावितास्य के वा खेरा है 'वे वित्राग्रुरा श्वें बाता वर्द्ध रहा ।' ग्री.सर.सी.ध्रेचाया.कथ.र मूचाया.ध्यात्राचाया.ता.चाच्याच्याचाया.ताघा केवःेवःयं के:वयःग्रदःवदःश्चेदे लु:च न्दःवसुवःयदेःसदःसु:न्वःश्चरः ने त्रेषाः ष्रवायत्र केषायाः मृत्रेषाः वृत्राः वृत्रः वृत्रः नर्वानदे छेया केरा र्यु दे के द्वार छर छर देया न तुया न श्रु र या 🏾 🛈 वेया न्यायानान्ता में मार्था क्षेत्र स्वारी सामित स्वारी सामित यूपु-एविरया-बेच्याश्चा-बेर्चि.वी.झ.कुर्-इर्याकु-प्र-धुन्यकु-युपु-वित्र- न्वेव-म्वराद्यापन संस्थान स्व न्या स्व क्वा वा नम्तिः देरा द्वा द्वा व यया मेर्यर त्या नहमा न्धन् म्वर न्में या स्वया ब्र-१नुकाचेनका नज्जा सान्देशज्ञानान्ता स्तर

**तुः त**े क्व-क्रेब-विश्व-पह्ना-दश्च-श्च-दश्च-श्चेत्-क्रें तानतुः वा-**१९४ वया मेश्रर रीया के या मेश्रिया लया। हरा वया ३ म् स** सरायी मेडिया **छरा** वया धरवातहेव-नवातः स्वाधिः ह्य-र्मान्यरः कृवः ग्रम्वरन्तुः पर्वेच्याः ग्रीयः चेरः कूथः इं. शूच्याः अः श्रीयः कुः विः न्राः । इताः क्याः र्गे.क्ट.क्र्म. वेनया. पर्या. पंया. प्रीया. स्रीय. मधिट. क्र्म. श्रम्या. क्रीयाया.... ८**तुगः ठेटा ग**रोरः सुयः न् गुगः न् र्दे **त**ः न् देराः न् विते क्रॅरः इयः इरः वरा 1922 रॅन् रमचुरामञ्जापते छ हा ज्ञामान्रामे के वामहा ष्ट्रं नेत्रा "ने त्या हे प्रताय गुत्राम् वे ग्राया के केत्र देवा थें के दें रा श्चिरःव्याद्धेरःक्षेत्रयः वयः पश्चिरः हे व्यक्ष्यः स्वाद्ध्यः स्वरः स्वर गुर-वुंब-हे-कु-र्न् न्यंब-स्व-कुरा-पर्व-व्यं वहित हर-धेय-**इयसःत्रः** संदे: छटः हुदे हॅसः शुः हॅम्या मृद्या छटः श्रेट् । प्रमः मृद्याः । **४.५५५.वक्ष्य.वट.वर्डिंप.त्र.व..वट.**। वट.पंप.ट्य.व**.**व्य.प.ट्रंट. येग्रापरायह्न हेरा यहालयान्य व्याम्येर स्वासे केरा स्वाप्तर्कत्रात्रवाष्ट्रवार इत्वतायक्षेत्रच्याः महाव्यायः त्वाद्याद्याः प्रा पर्श्वेषाः हेरा येश्वरःक्र्याःसःक्ष्टःअःन्दः र**०**शःसयः बक्र्याः यश्चियः वितः हे निश्चिता नदी र देव क्षेत्र श्रुव त्यया श्रुवाया ह्या त्यव वाह्य या विदया म्ति के बा वक्ष व्ययाशास्त्र व ज्याया व व व व या श्वया प्रव त्या यव व व श्वया व हिं र .... तपुर्स् वयान्यावरानी सक्यान्या महीयार्थ होनाहा नर्

ब्रे:ळवाबेर्-पर-वु**र-तुः ग्रेग**ःव बेद्र-पर-वर्षर्-पः वर्षद्र-पर-पहेग्यः श्राचदावेया नशुदाळे वृत्यं या द द्रायरा वर्ष् हें मि∄ग्राय व्या विदःलबः वदः संग्रामुः इद् : ह्वः द्वं द्वा वि: इगः संग्रायः रोतः सुः देतः विष्न्-हर्म्-ब्रिन्-ब्रिन्-व्यान्तु-प्रकृत्-ह्रेर्-ह्र्याम्बर-तुवान्द्रेन-व्या-क्रिते-क्रेर्-तु-बर्ह्नर्वत्व्यानम्हान्दिः व्यानम्बन्धिन्वानिः वरः तुः बर्द्धदः सुरः देः सुवि स्त्रीरः রু'নল্পামান্ত্র' শার্মামানমান্ত্র্র'বের্মান্তর্নী'বের্ব'বের্মান্তর্ क्रॅंर-तु-पक्षु-बेर्-द्रष्ठ्र व्याव्यायम् हेर-राव्यायम् स्राप्तायम् व्याप्तायम् न्न्-परिः यदः स्रेन्, वितः तुः कुषः यरः श्रुरः ...... १ विषः मृष्यः परः र्षम्यः .... **दॅश**प्यहेंब्र्जु देश*र्दा*। ग्रेंट्रस्य स्युगप्य देंब्र्ट्र**राणु :५००००** बर्दर् क्षें र ग्राप्त्र्या वरुषा यरुषा यहीया धेरा तु वा तु त ग्रा दिना इया वरः वदः विषदः यदे : क्षेत्रः देवः देः यः देः पविवः इदयः यः दे। वदैः अतः "वदः कुंकिर्र्र्र्क्षक्षरम्ययः "बेर्र्स्निर्द्र्य ".....ब्राम्र्र्मिते छेत्रः नर्डे ॡ 'केद'कुष' नदे 'अप्ट'र्शेन 'क्रॅन 'न्येन 'सुय'न् शुन्न पर्ने द'चुरापर' " য়৽য়ৼ৽ড়৾ঀ৽য়ৢঀ৽ৠ৾৽য়ৼ৾ৼয়৽ড়ৼ৽ঀ৾৽ড়ৼ৽ৠ৾ৼ৽ৼ৾ঀ<mark>৽ৼৼ৽ড়৽য়ৼ৽ঀয়৽৽৽৽</mark> स्ट.प ब ब. च य. वेच. पश्च बया बचट. चया हे , वियाया कु. बंटा खिबया पा हेरा वर्षा वर्ष म्बेर-स्य-र्युग-वर्नेव-य-इक्-ग्रुट-। हर-इट-रु-र्युग-य-क्र-सु-नक्षेत्र-नथाःअव्रःहिदेःअयान्वरःभरान्यवानः ह्यायानः ह्यारः स्रित्रः स्रित्रः स्रित्रः देरःयहेवःक्षयः धरः मर्रः ग्रेरः तुयः न्युगः ५देवः ग्रदः यदे यः क्रुकः

① (축조·중요·청도·다·취계·제도제·60)

पश्चतीयः प्रमान्त्रम् । पश्चतायः प्रमान्त्रम् । क्ष्याः प्रमान्त्रम् । क्ष्यः प्रमान्त्रम् प्रमान्त्रम् । क्ष्यः प्रमान्त्रम् । क्

मेश्रीयाक्षेत्रास्तान्त्राम्याक्ष्याः स्वास्तान्त्राम्यक्ष्याः स्वास्तान्त्राम्यक्ष्याः स्वास्तान्त्राम्यक्ष्याः स्वास्तान्त्राम्यक्ष्याः स्वास्तान्त्राम्यक्ष्याः स्वास्तान्त्राम्यक्ष्यः स्वास्तान्त्राम्यक्षयः स्वास्तान्त्राम्यक्षयः स्वास्तान्त्राम्यक्षयः स्वास्तान्त्रम्यक्षयः स्वास्तान्त्रम्यः स्वास्तान्त्रम्यक्षयः स्वास्तान्त्रम्यक्षयः स्वास्तान्त्रम्यक्षयः स्वास्तान्त्रम्यक्षयः स्वास्तान्त्रम्यक्षयः स्वास्तान्त्रम्यस्तान्तः स्वस्तान्त्रम्यस्तान्तः स्वस्तान्तः स्वस्तान

①(ব্ৰান্ত্ৰী:প্ৰান্তৰ প্ৰান্তৰ 60)

कुल पति धराशेन देशामृत्वाचितापति स्वस्वस्य ति निम्न स्वाचिता स्वर्णा मेन्य प्रति स्वर्णा स्वर्णा मेन्य स्वर्णा स्वर्ण

① (黃不) 五下, 其可, 到 云 如, 69---71)

नश्रेरःश्रुवः श्रुवः द्वार् । इस्राययान विवादः यदे श्रुवः श्रुवः श्रुवः श्रुवः **ळेब**ॱऄ२ॱॸॖेॱबैॱॺ्**ठं८**ॱरुॱध्रे२ॱॲष्ॱॿॖॺॱळॅष्ॱऄॿॱॲष्पःॱॻॖॆॱॠॕ*२*ःइंदरः…ः मा तू स्वरे मु स्वरे हुत्य मु रे रा म हे न हित्य दुव मव ठव वरा मवरा मुलाब इव इव स्वापनापहणान्धन र्वा बक्ता स्वाबित। वृ लाते न्त्रा बते श्चिलःश्च-तिविक्तः अप-विक्तान्ति । यो क्रान्ति । यो क्रान्ति । यो विक्रान्ति । यो विक्रानिक । यो विक्रानिक । य &८:য়:৲৽ৢঀ৻৾য়য়ৢ৾৽ড়৾৽৴৻য়৽ৡ৽৸৽ৢ৾৽৸য়৾য়য়ৢ৻৽য়৽ৡ৻ঢ়৽য়৾য়ঢ়য়ৼঢ়য়৽ঢ়৽৽৽৽ ৽ करा र त्या हुवा हुर न विवास र विवास करा हुन के र वा के न ग्री:भ्रु:पङ्ग्व:म्डेम् ह्रि:देय:ळ:ळट:म्डेम् ड्री:दि:पह्नय:सट:म्डेम्: पठरा: वर्षन् : पर : वर्षाः न्ता रगन्तरायहवान्यवाह्वाविषयाकु वाह्य पठवार्था वर्मा रथाश्वी वि. पह नेया हि. रच हरिया हरिया हि. सि. पह वे. रे. पठवा स्रेर पालर. ड्रम्या सर्ह्य स्वा हु स्वते ह <u> चकुर्-पदे-ळेल-पकुर्-वेद-चेर्-चुर-संद-मधेल। दुव-मव-ठव-वस</u> Ba.a.a.2.4.8.0.Bc.a.2c.1 &c.B.2.2.2d.8.020.a2a. <u>ब्रेल ग्र</u>ी दिन ५ हुना ग्रेन ५ ने ब्रेल ग्री १ दिन है । देन दिन है । देन देन दिन है । ¥ल.ग्रेथ.घ८ वय.श्रूर.ग्रॅट.ग्रुटे.वय.लघ.श्रुवय.र्2टल.श्रूर.श्रुघ.तश्रु..... वयायाञ्चर् र्वेषार्वे दावेदा। वृ त्यते त्ता या रुद् त्या वर्ष्ट्र त्या वर्ष्ट्र त्या वर्षे त्या वर्षे

लुच रटा। रूरालयाचार्यारयार्यायायाद्यटाच्याञ्चरावटावयाद्यार्याय मुद्रेवः केन् व्यरम्वा मुकार्सम्बारमा मुन्ने क्रा स्ट्रा केन् किन् केन् विन्वत इसाम्बुरायाने देवास्वाम्यान् । श्वरं व्या श्वराष्ट्रा स्वरं व्या मझे तह्ना ग्रीया वेया श्री खेनक ग्री दावर्षा नगात रेन स्वर **ब्रॅंद**्यूनःबहुगःश्चनराः वर्षेद्रः केदः ये । यदः युषः पराः व्रेदः न्दः । वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्र वि.क.विव श्रास्वाश्वराश्चराश्चराय्याव्याव्याव्यायाः अवत्यास्यास्यार् धुन्या शुः सहित्। ..... १ देवान्य वा विद्या सहिता सहिता है वा स वेममाञ्जा "तुदामदारुदादमामोराक्षदाञ्चदाञ्चदान्दा हू सदी ञ्च अते : व्याप्त स्वाप्त मान्य विष्य विष्य विष्य द्वार स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त मिने मु शु अ है प्र ही व्याह प्रदे हा बदे प्र द्या रहें व के न न ही का ..... प्रवादिता र्वायः स्वावि हाराम्यार्वराञ्चराण्यायाः । पह्रयात.मु.५. (श्रिलाश्च.) तह्रयान्यत्वाचा.भ्रेयानश्चर्यात् मुक्रा **ल्रां प्रमान के कार्य के कार्य** श्चराक महाके पश्चित्र द्वेता श्ची स्वेनवा श्चरा "@ वेवात्रा दे नवेदा ष्ट्र-लदे-ञ्च-बदे-म्बुर-वब-लग्नाज्ञ-क्षर-जन-क्षर-क्षर-विश-५५ग्-धदे-**छैर येनल र्नेटल रें व.दी "हदं नेट हैं नव नल ने के सदी हैं .स** 

① (इॅर.धेर.घंट्रच स्व बट्य.22)

② (黃不見名:晉下中,有可可下如.87)

विवासित क्षयाचिया हेदायापायाची ही छेपया ही । त्राचि हदावदा न्त्ररः क्षेत्रः भूतः भूता ..... इ. श्रूरः तृ त्यादे न वा सु भू मा वादे ग्री र वयः वि तर् वः श्रवयः ययः तर् याः यः स्रा रः ययः यदः श्रुवः सु वि तर् वः अंचया. बेब्बया हं कु. खेप्त. खेब. लुब्ब. हुंबा. हैं. इंदर. लवा. लच. प बेब. लूट. प जूं. ... नल-दे-द्व-नक्क-दह्ना-ग्रील-विल-श्वी-वेनल-वुद-न-द्दः। यद-नम्द धैगःश्चे 'वेनराह्या । दुव मव ठव वरामरीर कृव श्चेंव देवा ..... दू 'यदे' ञ्च अ मूट्रअर्ल्य अर्थे वेश वेशका श्रुप्त द्वार है । से से से से प्राप्त से प्र से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप्त से प्राप म्.पर्थानक्षेता रंधेच तालेच विषया वै.पषु भ्ये.श्रुप्त श्रीया लेटा ন্মাব:ইব্ৰেব্ৰন্দ্ৰীন্ত ট্ৰত্ৰেস্ট্ৰাত গ্ৰহ্মত ঠান-মা श्रवः श्रदः श्रदः प्रच्यः क्रवः तथा क्षेत्र विया प्रवियः श्रदः वा विश्वः विवाधिय ेषाङ्गी.स्थयाञ्चर............ । व्याचयवाच घटयालटाङ्गर.ह्य. र्दा वि'वर्देव'अम्बद्धर्यराष्ठी'अर्धर्यवाह्मसम्बद्धर्यः विचःर्वयःविच्-तितुष्यःपदिनःन्धे<sup>-</sup>वळ्ळवःतु<sup>-</sup>वव्यः<u>न्</u>रत्यःपःधित्।

① (ইম্প্রম্প্রম্প্রম্প্রম্প্র

<sup>② (ইমাইনার্ম্বর্ম 94)</sup> 

त्रिन् तर्म

वि'येनल' क्रॅन' यदं 'र्वं या महेन्' व्रा क्रिंन 'र्ज्न' ति नक्रिंन हेल' स् वेदाक्षे वर् नरे पारव में क्षारावया वर्षा है वर्षा में वर्षा करें में है पारव में के में निया वर्षा के किया में घट. थे. च श्रा. छे प्रया विषया थी. पथि चया ॥ इतर. श्राय. कुराया पश्चित. कु. इति मुलानम् र म्बन मुलार् र पठला केनला वृता मुला "गनुन व्यापर वर्षा वी विष्णा में दर प्रक्षेत्र प्रति पर्या में ते हैं । प्रक्रेत्र (हैं) वर प्रत्रा । इते.रे.ब्र-१वेनयावना-नर्भयावना-नर्मा अवानिनरः) या क्षेत्रानया-नरा অবিশ दे.चयाक्षेर्-अर्-सेर-रे.चेय्पाक्ष-चवरः। श्रेर-लर-स्वया ह्रव-ग्रेया "मुल-पर्-संलानी ने तर्पत्र हा खेतरा पान पहन हो राक्षेत्र न्द्राध्याम् वाक्षाया मान्या न्या विष्या क्षा विष्या क्षा ন্মথ্য. **ह्याः भेदः हुः के पा न्राप्टरा येवरा येवरा पशुः यन् प्रमुखः ह्याः ब्रॅन-र-र्यम्यायस्याननर-व्रम्म म्हिन्यः ब्रॅन-**यक्षेत्र-पर्वसः मन्दरः श्चेत्र-तुः पश्चरता " दे वया व हव ने दे ही राष्ट्र पत व वया श्वर के अंदे द्वया शु थेनतः वता अर्ह्न : क्रॅं क्रवता शुनानसूव ने क्रिना वर्ळवा महिया छेटा सुना वद्रायत्व म्यावम् अर्द्रा यद्र ने विक्रेश हुमामी स्राह्म अर्भ दि ने विवाहम बर-सं-सद-क्रेब-सं-रेश्यल क्रुन-र्यद-वश्याप्य वर्षी हे ब-दस्य-पु-विनयः त्या नुः दिष्ट् न्यते न्द्रात्र त्या वळेग् न्ववः वर्दे । इन्यः चर् थपु. में बारा है. वी. विषा अहता है. है बया मा इसका ही में मा प्रमित्र है वी. क्रैनयः मृंगः पुःचेनयः वः वेयः भ्रुः वनयः वे वेवः व्वः वयः बर्दर धेरा क्षेत्र वु म्व्राम हेराय व्राम्य क्षेत्र क्ष्य क्ष्य म्या व्राप्त व्राम्य व्राप्त वर्णे व्राप्त वर्णे व्राप्त वर्णे व्राप्त वर्णे व्राप्त वर्णे वर्णे

नक्याव्या गुरामवेया हे सु मिटा सदि किनया केत् केटा या न्या मारा कन्या गुर न्ग्र-तेवायाकेनवायर्वा "स्र-प्यकेनवानशुम्बना मुवान्ता नक्षानेका क्षेत्रका क्षेत्रा क्षेत्रका क्षु निवासका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षु निवासका क्षेत्रका का विवया नुकुष्टितुः श्रुः क्ष्यः शुः हुं त्ये न्द्रः। इन् नवि वया वयः नवः ब्रेश्व. यू ब्राय. केट. व्यय. पश्चर. पठर. पर. शि ब्राय. यू ता. पव्चे द. की. वि. ...... पष्ट नवा है . हूर र र र पठवा छ वाया छ व . र . विषया व वा पति नवा हिर .......... व्ययः र्वेरः यमें दःदे। क्रवापितः न्यं वाम्यान् न्याष्या मवास्याय या नगादुः तक्षायः पर्दैः स्वायः ग्रदः विचः स्वाः नृत्यः न्वेयः पर्यथ.श्रूषेय स्रम्थः इर्थः में द्र्यं द्रव्यथः इद्रायः स्रम्या " बह्यः स्रम् र्यम्यायास्त् क्षां शुनः नसूत्रः क्षेत्रया नश्चरः शुः स्ररः तया न् मृतः वि । त्रारः म्रेट्य.र्ट्ट.। क्रव प्यट्य.ग्रु.च्.चवय.श्र्चय ग्रेय.चर्चराम्रेय.वय. ইঅ'ঐনথা "चन क्रेंग मुद्रेद बळ्बल व्यार्थ चट छेव यर म्याय पञ्चवराःग्रेयः पशुः परः वेषयः परः अधुवः ह्या ञ्चवः दरः दरः पर्धवः पर्देल'पठरा'पश्चरता दे'द्रवादेल'मृत्रुद्र'र्झ'पश्चर्'र्द्र'देर'द्रर'वाद्रवा क्रमयः पयान्येयः हे . वेनयः व्ययः शुः वेनय। " के . मुदेः श्वयः श्वरः न्रः पठलः मृत्यः क्षे न् व व स्व मृता यह । लवा मक्किन् पर्ने : धर्मा भूत मृत्यः । से मृत्यः । से मृत्यः । से मृत्यः विश्वयात्वरायम्याविद्या मृत्या श्रदे हे व त हो या हर् सर र ठव या र में द्या हे.लय.मेट. (नमेट्य.) मी.नह्र्य.मेवज.अर्.निट.मे.हेय.में द्वाराया. रास्त्री मु रदे ह्रद्रायक्ष्व या म्बर्ग महेम्बर ह्रव प्रार् ह्रव रद्या रूटा "ने न्या म नेया हुराया महाया ह वा कुया हु पह्या न प्रतामें राया के या गा स्पु प्र-विद्याः विवारम्बारम् प्रमुद्याः व्यायेनयः विरः विवारम् विदः प्रमुद्रः वि ब्रीट-कुव-गर्डग-र्टा व्रीट-स्रें अं ग्रीट-व्रव-यदे स्रु-वर्षायरः %व.चेतावीचेया.श्रूच.चश्चेरयाचेया.चे च्याचे चा क्षेट्र.चे पूर्य तिषा.चय. सुनया. . नमॅर्-तझल न्बर्न्यम् वर्षः विन्यः वर्षे वर्षः कृतः न्मरः व्यः न्य्यः न्य्यः न र्यम्यः सहर प्रें स्वाया धरः हें दे सुयः चः मृत्रेयः मरे स्टें स्वायः स्वायः स्व ঀৢ৾ঀ৾৾ৼৼ৴য়ৣ৾৾৽৻৽ড়ৢঢ়৻৻৻ঀঢ়৻৻৴ঢ়ৼ৻৸ঽ৻৻৻৸ঀৢ৾৾ঀয়৻ড়ঢ়৻ঀৢ৾৽য়ৼ৾৾৻৴৻**ঀয়৻ৼৢয়৸৻৻৻** ळेव-हेर-य-युन्-विदे-सुन्-ळ्याय-सु-वेनय-य-न्रः। ळेव-प्रदे-सु-ळ्य-অয়<sup>৻</sup>য়৾৾৾ঀৢয়৾৽য়৾৾ঽয়৻৸ৣৼ৾৽ঀয়য়৽৻ৼয়য়৽ঢ়ৢয়৽৻য়৾য়৽য়য় मूट. बाळेब र्घते मवर भ्रेता देव घर राया प्रति रूर्या य रावर विरागु क्यापा इययः क्षेत्रयः ग्रीप्र-र स्व रहेर् ग्रीयः नश्चेत्रयः त्रेवः प्रदे सुः यतुवः त्रा विदः य.बक्र्म.चलेबेय.बेर्ब.केर.वेय.चेत.चेन्य क्रे.चंच्य.स्य. ... पर्श्वम्यः वयः पत्नु मयः पह मयः प्रः। श्चः विषयः वृः वेवः क्वः देवः यः केः र्टा स्ट्यापहूबक्ताश्रम्या बिटा यमपः श्रवायायाः र्मान्द्रवयः ग्रीरः सुवः ५५ ५ । स्वापः स्वापः ग्रीयः पत्रः स्वापः प्राप्तः खरामबरायेषायरॅवायर ग्बेर्वाखायहॅन्यते ग्वेरायेषा ह्यु रहे. म्न.र्वेरय. येथर.री. कैय.च विर.ल्या. व्यवित्र.त्या विराधः प्रथः येथरः अव-५:अॅव-परे:ळेग-६व-वे-परे-ह्नर। ळे-२८:मवस:ग्री:भे**-४८:** नर्वन्यं ताता हेरा वर्षा ता वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा मद्राश्चायायपाया देन् वर्षाम्बन्धार्यम् ता हेर् मी हे त्र्री स्राम

ট্রিঅব: ট্র'দে-শে-বন্ধু-নে-ব্রি ধ্রনাস্ত্রন্ব: শুব-ট্র-স্ত্র-রের প্রবন্ধ কর্ন কর र्षे 'वयामने 'भ्रेन् 'ग्रेया पर्स 'विमा क्यानमार्थन ग्रेन ग्रीया स्वा <del>ऍ</del>न्:ष्रवानवः गृहेरा:वराञ्चयःश्च-छिन्:श्च-प्रकृष्यरा:यः वराः रॅः वर्ळन्:सन्: " हुर-वै-र्वे-अर्क्व-अर-भे-अर्देव-शुब्र-तु-हुर-प-र्दः। रद-प्वेव-**द्धगाया सुना केटा।** वु र श्चें द खान शुरा समन द न न ने निर्मा हिंदा सरा रु.पत्तवायामा क्रम्पट्ट.वयाक्रयाञ्चवापर्ट्वानेयामान्मा वृ.यपी.श्च. य शुः मॅदः ययः यक्ष्रदः पदे हे दः महाय ददः हे रः ह्यु दः ग्रीः पं उदः वययः .... ठनः रे. वेषायरा पहेवा वेन वयर **षाञ्चा सेरावस्य एट** ग्री षा सर्वे रायः न्दा व्यापार्थयामुलाधेन् केलान्दाव्यामुलाहे महेना तुना म् नर्षेष-तपु-क्र्या-बिर्य-सिष-शिकाक्क्रम्या-तपु-क्रेषे स् मे प्रपु-स् निर **ळेव**ॱऄॅन:ॺॕ्वॱतु\*सृ\*ष्ट्रं म्याः सु : स्वयाः वयाः नेवः पतु वः ग्रीः नेदः क्रायः नेवः \*\*\*\* न्दःरेवःशॅ 'यः यद्दः केदः। यहः क्षेत्रः कोरः हे 'के 'ठवः वदाः मार्रे यः यः नहनः केट्रन्ने वर्ष्ट्रन्यान् इत्राध्यायायाया निस्त्रा दे हर्षे वर्षा वर्षे र् अक्टर मद्र, ये छ . इंस् बेश क्यों स्टर् हु द स्टर हु बर्देव.शे चेश्रर ही.धेंबातावयाहोर.ही.वक्ष्व.वेराह्मवाद्धताय्र्वया लुकान्नरा देराववानेवानुर्ग्नावार्श्वाच्यान्द्रा हिराष्ट्रायदे न षयानवासवागवा कवानुदेशायानवातुः हुना हुना हुना हु 

इव केन मु हु ता हु न में मू त्यरे मत वित्र सद व महिता हु र न चन्त्रतः वनः वन्तः चन्तः स्वत्। यदः हिन् स्वतः वक्षुत्यः वतः वन्तः विकासतः हे**द**ॱळल'ञ्च'ळॅनव'र्सं' प्रें विवयः ग्रदे 'त्रं**द**'सं'न् ग्रुक'वाया केता श्च**र 'रे**। तुर-तु-हेव-कय-इय-ग्रद्य-चेय-पदे-मु-धिय-सव-**गव-**य-चें**र-पशुर----**चुराः विन्। दे ग्वरः वर्चे रः के रह्युत्यः श्लुः द्विदः द्वराः यद्वाः ग्वेरः वर्षे द्वा **श्लवसः** त्रैरःह्यूयः भ्रुः छिन् दे भेवः रचः में दः तुः वियः चर्तः तुवः धेवः यव। देनः वयानश्चरयापदै नगत देव हेया शु द्वापविवास स्त्रीन गविर प्यवा । **५व**.ग्रु.५वथ.ल.पत्तर्भव.क्ष्र्य.ज्ञव.ग्रुया ब.श्रय.ग्रु.पक्ष्व.त.स्य. बिटा कुषाया नृदा । श्रु किराकवा दिया या सम्राज्य करा वर्षे श्री ना ग्री का तस्री मदे मनता ता तन् न मा के विश्व के में मा के मा श्चिनः नरायः मं ने नरायते मार्नियः ज्ञा श्विः महीयः पदिः स्टे रा हु गःया *ढ़ेब.*ह्रेनय.त.जुबेथ.त×.बेथदे.पड़ेय.बैंच.ह्य.पीबेथ.ब्रॅज.चड़्रेद.ब्रै.सें.. ध्यान्त्युः ध्यावा सुन्या दे त्रवा वेन नत्वा वा वा वा वा वा विवा प्रिते त्रान्यं व त्रवाया या वह या न्रान्त हैं न्रा च वह । वह व वह वाया वयाम्रास्तरम् वयाक्षेत्राचयावयावव्यव्याम् स्वान्ता स्वान्त्रेया स्वान्त्र नल्नारा वि केद संदे हेट दु स्यानदे हें न वि नरा हुट हे दे स दु न हु । त्रेग्राय:पर-पर्वेद्रय:व्राय:बुग्राय:ह्रम्य:चेव:यस्या न्वद:क्रेय:विदः वयान्तुःप्राद्रा श्रुःचेरः मृत्रेयः श्रुंवः यस्या अस्तः ध्रास्तः स्वः स्तः क्र-तिव ग्रीतार सुव पापविव प्राप्ता सु महाम्या प्राप्ता स्व हार द्वा परःशुरःपः वै त्यः पञ्चीष्यःपदि हेव त्दे वा सुव सुव स्वयः परः शु ...... १ देश त्रिन्य राज्यात इर स्थानि सेनय भेगत दिना की वर्ष

① (青木·岩木·青可·羽木和·95—104)

म्न्य वा क्रि. केथा तर कर्र रे

तृ 'यते' त्रु 'यः पर्कु 'यः यक्कॅ वा क्षु 'वा वृंदे 'सुंदा प्रवेद क्षा पर वेद क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा का क्षा म् अर् र्व्यायः चित्रः स्वयायः में अष्ट्रः यायायः प्रयायः च कृतः में रवीयः स सर अह् र स्पूर अधि तथ जिर हूं बया ग्री श्री लूब में सालर हूं पुराया था. त्रावःपःपत्रवेवःचेदःवयेवःतुः । अः वेदःचवेषःपः न्दः। श्रुःषः 1824<sup>म</sup>न् भैदः हो : ह्वा प्राच्या प्रदेश के ता पर्रे : हो ता हो ने के ता है दे । के ता प्राच्या के दे । यदःश्चेत् देशःश्चयः विश्वरः तुवः यह गः त्धुतः श्चे व सर्वः र्श्वरः वर्षेतः वर्षेतः व **ल्य-क्षेत्र-क्य-प्रमा** स्र-पर्विचयः अत्र-पर्व-स्त्रः चेष्ठेयः पठयः स्र-चेश्चयः **७८.**थ.चशित्रा इता चैपा की सूरा वपुर पटे. घटा ची वर्षे देरे. चेरे वे पहुंचाया बद्धवाद्यान्यान्यान्यान्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या ब्रैन् ग्री वस्त्र महत्र महिन्द्र स्त्र स्त्र महिन्द्र स्त्र ञ्च.च.चबु.चदु.क्र्य.चर्ड.चेश्वर.दे.क्र्य.जूर.क्रुर.च्.द्या.ब्रिय.चेश्रर. **नुबान्गुना-देव्-कपः बर्देवे:छुदःश्चेद्-ग्री-बळव्-इदः हेव-५५**न् 🎱

क्षेत्रच्यायाः भ्रु तः श्रीत्रकृतः । ध्रुतः देनः तः स्वाद्यः यहेतः स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः

① (青六) 高六, 南山, 湖南山, 141)

② (ব্ৰাইন্প্ৰাহ্মণ142)

ह्मारा सहर में का प्रति में वार स्था में स्था म

दे.श्रेष पश्चित्रः श्वराधेन्यः श्वेषः द्यान्तः स्थान्तः स्थान्यः स्थान्तः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान्तः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान्तः स्थानः स्यानः स्थानः स्यानः स्थानः स्थानः

र्भायः अलम् ल में कार्ने सकद न्याय गुरातु येगरा पर विषयः मन् য়৾ঀয়৻ঀৢ৾য়**৽৸ঽয়৽৸ঽ৴৸**ঀৢৼ৽ঀয়য়৽ৼৢয়৽৸ঽয়ৼৼয়৽৽৽ भ्र. चन्द्र-इ व. के का जी. इट. कू बेथ. लूट्या थु. पर्यं र वे प. गु.ब्रह्म ब्रह्म व्यक्त व्यक्त महायाची के करा के वा लुका कंदा सराद में दार्स का पति का ची का साम खुका कें बाका केदा दु पा मुद्रा " ज्ञितःत्रवित्यः स्रेतः «ञ्ज्ञालाः स्रेलः विष्यः मृत्युतः अत्रे। ते ः स्रेतेः चित्र लः म्बर्याः श्रेन् मृब्दः में अर्यः मिर्यः स्थाः स्था पश्चरःविषः चलाः विषः विषरः विषरः येषरः येष्ट्रे से स्वर्ष दे । दे छिरलः कुः वित.क्ट.अर य.र्य. पर्व. र्टर.र्ट.। वित.वेत.श्चर.कव यहम्य. नश्चरान्दर्भे दिराय स्वर्षेत्र केत्र प्रत्या मन्त्र के विवर्ष र्चेंद्र में के निबादे थेवा वेंद्र यादवर वा महिता वह का वा मा का वि मशिबाक्षरावयारे तामितरामितरामितरामिता म्रिकी है छ्याया हैरा यते कॅ तुः के द्वार्या द्वदः त्या शुन्ना ता वेषः तहु नः वुः कु वे द्वादः । ..... महिदे भिनाक नाया केवा में निना भेवा या वा ना हिना नहिंदा दें वर् भ्रमताने दे पर्ने म्र्ने प्राथमान मुक्त गुरा वस मायन वित्या मरूक के करा र के. सूर र्रा भ्रिट क्रिया लुवा क्याया परवा बावेश विट्या वी विट्या वी स्त्री Ť١

ষ্ট্রি'শে 1831 में र : इन्या ऑया संदे : त्रः न न सुबा मारे : वृद्रः । " व दे :

① (ব্শের্শের্শ্রনের 253—254)

स्र. स् . च ८. ८ वर. स्रु. ५ वर्षे . पश्चर. ब इव क्षेत्र स्थान्य वर्षे वर्षे . र वृश्रयः न्यं न्यू न्यू व्याप्ता व्याप्त्या चित्रः वित्राचित्रः वित्र पल्याया सुत्रार्श्व 'श्रुयाया न्दा में दाया सक्रया ग्राट देदा से दा प्राचन **&**ঀয়৾ঀয়ৢ৾ঀয়ঀৼ৾য়ৢ৾৾য়ৼ৾ঀৼয়৸ঢ়ঽয়য়য়ৼৢ৽৻য়য়৸ঀঀৼয়৾য়ড়য়ৼ৽৽৽ *ढ़ेर*ॱड़ॗ*ॺॱढ़॓ढ़ॱॺॕॸ*ॱख़ॱय़ॸॣॺॱय़ॕॱक़॓ढ़ॱय़ॕढ़ऀॱय़ड़ॖॱॿॸॱॸऀढ़ॱय़ॕॱक़॓ॱॺॿऀख़ख़ॗॸॱॱ व्ययः विदः तुः शुं "भुवायः असं दः ज्ञुर। चंदः चलुवायः अयः चलः वालेयः सेनयः य:र्दः प्रभुवः राम्शुवानु : अहमार् र हे : ह्यं र : र्दः वर्ष्यवान दे । पठवाः । न्दरःवर्ष। रूपःकः न्दः यः नहरः नः न्दः म्दः रा सक्रेनः न्दः। अयः नदः मृदेवा श्चु विनवार्त्रे : श्रेव : इव : नक्या वया तर् : वर : ता श्च वा : द स्वा श्च वा : हेरा च गर क्रॅब च मर क्रें ब ब ब ब द वर मर व ल र द न च च गर क्रेंबर **र्वेव्-पःव्यःबद्धवः** छ्नः**मन्व**-वृत्यःयःमध्यः ञ्चँग्यःव्यः द्यः शुः ने -शुःःः भूर.ग्रेथ.थर.म्रेटक.८८.। नेल्ये.व्यावा.यया.घा.च्या.य.म्रेयावा. झे**र-५र-२ठल-३ल-७ ने ले पर्य-अपल-** चुबल-विर-तु-न् न् न् न् ले ल की ल **गॅरःजःबळॅगःवजारदःबरःयदरःबर्षः**चेतःबेरःचेतेःक्रुवःवयःदस्यः .... नवर-र्ट. परुषा स्माप्त मान्या म्याप्त मान्या १ के मार्चन्या " के बियान्ययम्मयया म्रम्यान्यम्बर्ध्या क्या का का विवास **यः वृक्षरा गृर्थः विगा म्वदः परः वार्द्वः यदः गृवि : कुः के** देग्या केवः वर्गः ः मानी साने मित्र मान वर्मित वर्मी "इत्राम् निम्मित्र मान **डैरल:र्**रा े हे.ह्रेर्.की.लट.हेट.री.चड्डब.क्टर.चेथर.केच.बह्रंत.त.

① (ব্ৰুমান্ত্ৰমান্তৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰমান্তৰম

मञ्जरतायम् @

मञ्जरतायम् @

मञ्जरतायम् @

स्वायः भ्रमः वितः मृत्यः प्रतः म्यायः प्रमृतः भ्रमः भ्रमः

श्ची स्त. 1834 व मून्ति निविष्य प्रश्चित्त प्रश्चित स्त. श्चीत स्

① ② (考不·発下·并可·明도·初·260—262)

म्ह्रम्यः मह्र्यः यात्र स्वरः यात्र नविदः क्रेयः श्रियः यात्र यात्य यात्र यात

म्डलक्षे द्वा इवराया में वा ववरा के मा क्षे व दे द्वा र्याया व द्वा मुद्रिः तयरः न ने नवायः प द्रुत्यः पदिः से गयः त स्त्यः लु । से स्वयः तः सहतः सुग रैस पर प्रसूर्या "ा डेरा प्रिंद प्रतृ वा ग्रामा देवे ही सं श्रुर पर <u>पियाः भव न प्राप्त करः पञ्च श्री सः मीयाः प्रियाः य वीयाः यं ग्रीयाः य नियाः भव ग्रीयाः य नियाः भव ग्रीयाः य</u> प्रवेदःस्वः भेर् : ग्रुकः नेवः र तुकः नवं सः मृत्यमः रूरः नुः । प्रवः वकः । । । न्यम् न सुत्रः र्राम्यः नेयः हे त्या ग्रुयः या सन्। न्युतः न्यम् हे विनः तुः नगातः ह्वं न सं सं स् ता न्यगः न्युरः तमें व न्ययः व नम् निर्देर'निवि कु'के'र्रथानिदर्दन्तिषाचुर'तत्नायाह्यस्य हरातुत्रा वे छ त्तर्भात्ति पर्यः वरः। "तर्ने अनवार्श्वः देव अतः वश्चरः नुः नेरवः भैगायामहेदार्वम् मञ्जरायरानी र्युरायहन हु यहाँ शे हे में र हुरा त्रिंदः द्रः। द्रवा श्रीतः तर्मे होत् उ वक् हेरः संग्रा द्रः। <u> नदर-</u>र्थन, धु. हु*रय. धून्य. ५व. मूच. भव्य. ५. दी न. रचर. श्चेन्य. ५ हुन्.* व्यव वर्रात्रेयास्य पश्चिम् वर्गातः व्यव साक्षायाः विवसः विवसः द्वा न्ह्र्रिन् मुङ्ग् र्मेयाया द्राम्या याया च न्द्राप्त या स्राप्त बह्यामान्वदा दे स्नित्रार्धे द्वना म्झुरायदानीयावी तेराया मह्यया पश्चार्ता मुल्राम्बर्यायायर सुम्याद स्वांत के के पठवा हुर पर ह्यवाराम्येर न्रा ह्याया थेन तहुर निर्देखं या थर निवा "७ वेया त्वित् वेदा त्सुदायहण्ड्यायवर वेदाश्चर वेत् गृहे द्वाय यवर

① (青木) 高木, 黄本, 到土如, 228)

② (ব্ৰংইন্প্ৰ্ল্ব্ৰ্য্য)

लते हा य हंता विवय कु वह वह व "हु विवय हु त है न दे न दे ह्यामबेया नेहा नहेया शुः हुव नुग केर येर गुरा न्यं या नया म्राया तर्द्राचेर् पर्दा विषयाक्षण मावदः पदे के विषान् सुत कुर चर तक्रतः वेशवादीरः क्षेतवादी तस्तात्रः श्रवः इशवादवास्त्रः वियाते ..... म्यूप श्रव-सिपालर-रेट्या भ्रेट्-शाम व्याप्त स्था मेरा मेरिया मेरिया स्थापन युरः ह्व : क्षरः यह वा तु वा हे : विषयः रेवा कु : क्षेत्र श्चेतः सूपः रूरः। 줘. श्चन यापन र त्र वृत्र मृत्र स्वर्थन स्वर्यन स्वर्थन स्वर्यन स् तर्वा मुना मेता सन संदूर्ण भ्राक्ष्या था विता तह ना में न हर में न म्यूप्तःश्चर्द्वतः बूटा श्वरः सटः मृत्रुरः मृत्र्यः वयः वयः वयः पह वः कुः केः मवर कु . लेव . ले मे या र दा में अ . के . व न या मर . च के व . र में या की या शि. महत्मु के सुन गुर क्यार्ग्र धेर ततुन मत्यु र र्रा ने तत्र या त **ॅॅंट्-उट्-विन्य-नहवान्य्र-श्चिन-नेर-नःश्च-य-न्यन्यि-श्च-नवेट्य---**बेर'नदे'न्मे'कृर'णेवां ऋ'र्सर'र्सेयावयाह्य वास्ययान्य वाह्येन्नुः द्याताक्ष्याः वितान्द्रियान्द्रायद्येया वितान्देर् न्याय्येया वितान्द्रया वितान्द्रया वितान्द्रया वितान्द्रया हुर-व-क्रुब-धरा-व-वे-इन्दर्भ वेर-र्त्न-हुन-वन्त-इन्वन

वसात्मुनान्द्रना वर्षन् के इराम करास समान मु निरुवा वरा ने .... विनाचेन् क्रुंन् के न्वेन पदे के लाग्न राधिव ग्रमा क्रिं में राम राधिव ग्रमा नैरःकः रे : र्रः। देशः ब नु गरा गृषे : श्रे : मदे : मदे : स्राप्त रुरा स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त केरान्यार्वेदा वर्षेयायकेवाय्विदावीयम्बद्धेय्येरायराकुर्न्दा वेदः विषयः ब्रेदिः चरे विवयः सम्बारायायन्य नामा के विमा चुरावा क्राया <u> ५५ विश्वाचेनस्या ने ५५ वाची अन्यरा सुराज्या हुता हु । ५५ वर्ष हर</u> वरा के र में रया रूरता मदे में हिया पर्ने मता है 'केर' विया ग्रीरा र्श्र-ग्राम्याकेराम्केरामेकेरायेन्यायायायाः व्राच्चा नार्म्श्राम्या न्देन ने व न वेब हर सुव के न्या तर्द्र मिया हु विद ने र ने । वरा विषयानपुरम् विषय हेर्या ग्रेयाम् विषय है। पवर सूपुर स्थानाम्बर्धाः बह्र-पिवेव परि रूर्य बह्र-पिते बह्रत वा बु रूव वाया वर्षापरि र्ह्न्यः नम्भव दें। "अवेषाम्यायाम् स्राया म्यायाम् स्राया च स्राया म्याया विष्या म्याया विषया म्याया विषया विषया विषया न्तरन्ते व न्त्रीयर क्रिंग्वियस्य न्युयः क्रुव न्यळे न् देशायः निद्रा बळ्द-र्क्ट्रत्रह्मा हिट्ट कुव-म्डेग् मी म्प्यंव-र्र्याशु-मतु गरा-पर् এক্স.পূৰ্

श्रुतः मृत्या ज्ञुतः सर्वा न् क्ष्या ने क्ष्या न स्वार्या मृत्या स्वार्या न स्वार्या न

① (ব্নাইনার্শাস্থ্য ব্যায় 20-322)

व्यान्त व्यान व्यान

हु स्वते म् स्वादि हिन् की प्या महिला हिन हे स्वादित रमल र्दरञ्चतः ग्री 'श्रॅल' विदेन केता सं 'न्यु 'हॅन' केटा सा लंदा हता सर्ने दार्म रा बक्र्य मु.पविरयः मध्याक्ष्रक्षर जिरावितारी मिता ह्रम क्रिटाक्ष्याचा ख्रेयाया रे.चेष.शुक्त.चेर.चेत.केर.घष.शु.चेर.तथ. थॅर् छेर। दे दे यान्यत व्याप ज्ञास्य मेल्या विषय कुरान्य में শ্ৰদ্ধানা वित्रात्तुः लु न्यायः स्वरः तृ : अदे : च्चा : स्व : या क्षु : चित्र दे : या क्षु : या क्षु : या क्षु : या क्षु भ्रमणायन्तराष्ट्रायदे मञ्जापति क्षिति के निम्या भेषा न्माम केना श्चेना अर्हर् प्रत्या नर क्षेर्र न्युष्ठ हिना रूट हुन श्चेत्र हुन या विद्या हिन्य हिन्य हिन्य हिन्य हिन्य हिन्य क्षे-म्-तन्-त्वन्वःश्चर-न्द्र-च्र-प्य-प्यतःन्विनावः मु-ळे-द्यःश्चरः तहन्यान्त्रः तह्येयः दुषः श्रुषः ययः नृष्यः नृष्यः मृष्यः संविषः नृष्यः मृष्यः सः नैः \$4.04.\$£.

① (黃不)各下,其可,到云母,333—334)

ব্রিংব্রুণ "চুর্গারণে ব্রিংশ্রুত্র ব্রুগ্রা 1835 🖓 সং व्यक्षवतःग्रीःमुव्यःग्रीतान्त्रः भिःन्तः तद्यतः वृत्तरायतः ख्रतः यदः स्तः वृतः विट. अंचय. मूरं ि. मिल. त्य. प्रं ट. चिले बेय. लाशाच व. लू. में वे. लावे. ला. • ধরকার্ট্রেরছে নথাকারছলকানব্বানপ্রিট্রির্ট্রির্নার্টির্নার্টির্টির্নার্ট न्ड्र-ड्र-इत्कः अत्रायानम्यः अतान्वरः रम्यानवरः १वेषः अवानिरः बियामारेना मूटायाने द्रामूटा मुयालया प्याचा यायरा ने प्राच वामवा मॅं व रेट्र र मर्दे रता र सक्ष रादर है वर महिमा मेरा है वर सका महिरा र ठर् रे .... कर्त्रुवायाध्य राज्यत् वातु विदाय करा स्टा विदार देश विदाय व इतालादेगान्धन् छेन् न्म्यामराया अन्यानस्याया अन्यानस्यायाः म्बर्भ्ययाधियाधियाधियाधिराचित्रम्ब्रिया म्बर्भासिराधिर्भित्रम् म्बार्यक्रिया के बार्य दे क्षा कर्म के बार्य के बार के बार्य के बा रदः द्वा कु द्वं द्वं व देवाय लाव लदः (श्वे श्वे रः )वव श्वं रदः हव ः *दर्बेन्'न्यःचॅ 'चेन्'न्वॅ्रांपदे'नग्दःचन*द्यःवे'न्वेन्'नेरःगुरःरः''''' बक्षयायायाच्याच्याइर्म्यविःश्वर्रम्ययाच्याद्याः व्याचेर्म्चुःर् वै न्यायात्याद्या के विषादे ने देता १ ( ( स्ट्राय लु यहा स्वाय हिया ढ्रेच.वेय.त.≫ष्य.तर.वयतः) **३**य.ब्रूच.क्रंच.वर्षट.लूर.त.५री श्लूच. **हॅव**ॱनेते वरातु वॅराम नरात्वया द्वरतात्र शी हॅन् वले ने यर हैरा मनान्वर्हर्न्न्द्रः देवा केर्न्न् व्याल्ले प्राप्त्रे राष्ट्रे वा स्तर्वरा व्याप्तराय वर्षः विष् पतुंबान्नेबा नवर ने लुका अपका र न्डिव है ते शेन मलर नेक हेन न वि दे प्रज्ञा श्रेन श्रेन पर में प्यव है पह माने पर में प्रज्ञा से न्या के निर्माण

## ವಿ.ಕಜ್ಞರ್ಚಿಕ್ಕರ್ಗ ವರಿತ್ತದು ಹಿ.ಆರ್.ಆ.ಕ್.ಕ್.ಕ್.ವಿರ್.

<sup>(</sup>हू.यदे.ञ्च.बदे.इंग.बर.वॅर.लेच्.रेच.र्य.199—200)

*क्षेत्र:श्रूचेयः.चेट.कु.वेयः टू.चळ्ट-नट*-श्रेत्र-ग्राचे*या* **वर्षाः इत्। तर्पः इत्याधरः द्रायक्षरः क्षेत्रः रूपः क्षेत्रः वर्षाः वर** "न्तुलान्डराने हूंन्लाय देनायाँ न्याये हुं या अवतान्ना मुलानितः न्वदः वित्यदः श्रीन् ववाये नवायः अभ्यायवास्त्रः देन् यास्तरः श्चर-द्वरा ग्रीय-बाञ्चवाय मान-क्रय-घव्ययाकर-व्यञ्जेय-म-स्वायाः सः न्रः भ्र.बर.वियासपु.विरानहेषा अश्वरासरामिश्रवाङ्गेययश्चरासरा.... नर-नहेबा ...... कु 'वॅन्' जुद्र-३ बेल' ब्लामग्दामग्रॅल' ग्रेल' खेरा अर्ट खेन् त्युया बेर् न इर् न इर् रु वार नवाराय है की झार नवार ही रवा परिवास मनम्। उ न्यं व स्ट न्यान ख्राह्म अर्थ नयाय मु स्व न म्य न्या नियाने या क्रीयाहे. क्रेंप्रापटा बेश्या पक्षिया अक्रूबो श्रीलाय इर्या ब्रह्मा <u>१</u>, श्रेयथा <u>१,</u> श्रेय र्रः। (ञ्चन्यःद्वेः) "संरदेदेः ज्ञः नः न्तुः मदेः ..... ळे यः नञ्जः नशुक्रः ने द म्राम्यायान्यं व नायमः इ अयः महियान्दः नुः वेनयः वया न्गुलात्रिनः इन अरा अहता नगा नैयायरे इन विवासिन दिन **बैल.च.क्र.बचर.लय.नपु.श्री.चक्रेच.चक्य.सेल.चर.र्षता**र्यं स्वाचना.र्टर. मरुषाने न्यो पास्त्र केवार्य पामलेया "ा लेया ययपालेटा निष्ट्र प्र **ॱॷॴ**ॱऄ॔ढ़ॱॴ॔॔ॸॱॳॳॱॸॕॱॺख़ऺॸॱक़ढ़ॱॺॕॱॷॖॖॖॖॸॱय़ॸॱय़ढ़ॆढ़ॱॷॱॹॸॱॹढ़ॱॿॖॴ र्रः तहेल र्रं तुर में र बर मेरी र क्षेत्र में तर में तर हिनता देता हुल । (जू 'मदे'नडु'ग्डेग्'मदे'इब' बर' दें' बढंर' झेदे 'रॅम' बॅ 'प्रेग्'ग्रदण'

11-12)

केंद्र.क्ष्म्या चर्म्याः क्ष्म्यः च्याः च्याः

हु सं 1841 द्र क्षणयाम् स्याप्त स्याह्म स्याप्त स्याहम स्याप्त स्या स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्या स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याव स्याप्त स्याहम स्याप्त स्याव स्याव स्याव स्याव स्याव स्याप्त स्याव स

म्यान्त्र स्वान्त्र स्वान

① (इसम्बरः द्वेदे स्तासं मृग् ग्राम्य ११०)

र्मा-त्नर्भवानवर्ग्वस्व परिः व्यव विषया युगः मु वळे न्यया मनर्षे लेयान्यस्य मर्मा स्थानराम्य । केवाने नराम नुराधरावया रै कु प्रवासन्तर्भित्र निष्य । "नवस्पर्मेषान्तरम क्रेव् : यं नः मेशेन : रीया पक्ष्मा : रीय र । श्वा या परि : मेवा या से या नया हिरादेनया ये नया दीया है। (श्वापा न हुन पर्दा) के या हेरा ने हुन श्चिर-तु-सुयायावा यह छेव वयरा उर् यहिवा महिन्या छेवा में न्रा मुल नदे मुल इन वि केन में अन मन में केन में केन मिन केन केन नव नव लयानव स्व कुरानगदि न्तु ८ क्षं व र्याय के कु र र हु या कु ग्रन्तः नृतः अव्यापते : नृतु ता शु विते ने ने ने ने ने ने ने ने ने के नित्ते ने स्यानन। पह्नाय भेटावुबाया बेट्रायरे ज्ञाता क्रीया नाय व केटा स्नाया भ्र.प.पश्च.द्याः विमा पत् म्याप्या श्रूरा

① (着方,美切.翼.复山 到亡以.18)

मिविदेः श्रेरः इया घरः वृद्ः। "र्स्यः कः नृदः मृत्रेराः ग्रेराः श्रेरायः श्रूरायः यं के तेर बेद नेव हुन न शुका है न द न लु . द द । दे न व अ अ न व बर्मदं मु र हर हि र केद र बर्के मा र दा । विताय वित्र **&**ব-দ্রনা স্থনবাই স্থ**ন** স্থান করে । ইব স্থান করে । ইব স্থান করে । ইব স্থান করে । नेव" **光似:あ:町別ぬ:ロ:てた:は当心:ロス: 翌す:ほうす: 動:別た:てた!** मुद्रासम्बद्धाः क्षेत्राचनुद्रा मुत्राक्ष्यः देवः यः क्रेन्टः व्यवस्पन् र्सम्पराग्नीयाञ्चराञ्चर अस् ८ मे म्झ अयाळे दार्श्वर वि सुदाळे म्यार्श्वर वे नयारा तस्यापत्वारा मन्त्र हेंगा भरा महेग्यास्यापर्यापर्या म्राज्यक्रवास्त्र मवराहेवायस्यायहेयार्या महाराधनाः क्रवाध्रवः युनानसुन् सुन् वस्यानसुर्याहेराजयानन् राग्यान्रान्यस्यान्राहेर ः इंद्राम्बुद्याने। म्बेरावि केदार्बर विषया र्वेराविद्राम्बद्धा क्रिया कॅं. बेव : फ्व : व का अहता न्र : त्र तुषा प्रवेश : न्र : हे : खुर : कु : देव : कॅं. के : वयाबह्याद्रास्यावयाम्ब्राम्बर्गात्राम्या । ..... १ वयान्नाश्चया र्चे द-दे नवा राजनवा की व्यह्मा स्वा न्दा। द्या र श्व द के द राजनवा स्वर पाया ग्री अर्ह र क्षे अवतः र्गा माचन ग्री या नाम र तर् ग

শ্বন্দ্ ইন্ত্র্মন্ত্নন্ত্র্মন্ত্র্মন্ত্র্মন্ত্র্মন্ত্র্মন্ত্র্মন্ত্র্মন্ত্র্মন্ত্র্মন

① (考古·芙山翼·黃可·可云如:19)

श्रीता नेरा नवा श्रीता प्रदेश कुरा में ग्रा घुरा है । त्यम न्यं व साहिरा हैं। राष्ट्र सरान्ता वे हमारीतायार्यम्यान्स्तान्यम् दर्वत् केवास्म्याव्यः विष बराय न्वायायाय दवायहीया च्रयाया न्या । भू**नया न्राया न्वाया छै** षाबळ्बरा शुद्रायावन वावरान्यें दारा सुन् वता विरान्यदा हुना वास सुना र्वन्यम्यम्यात्रक्षेत्रं र्वन्यः दवनः दवनः दवनः दत्रः हेः मञ्जेरः चुनः यद्वाः स्वा बक्षवःकः पन्नदः विवास्या बन्नरः म्राम्यायातम् द्रावा विश्वामः न्यम् विम विन न न्दा विकास न दिला विकास न विका श्चॅुव'र्घन'प्रर'५अन'*५६६*'भ्रेट्स' **घॅर'वरा'र ग'र्घर' अर्वे' ५५ॅ**त'**र नेस** ब्रिट्रान् निरुष्य भारते वा साम्या स्थान स्थान स्थान मा स्थान स्था न्रेरायुन निष्ठेष भद्देष त्यान् वाषायु कुत्य वस निर्म्न वषाया है । स्व किर् त्त.रेट्य.धूर.धू.रेंची.कूंट.प्र.परीजार्चे.वेयाययात् कं.वश्यायेयात्.वेया. ततुः भूर. यू वय पा. श्रदः र श्रवा. पवि व कु. प्. के या व्रवा ता. ता ता व क. व व वर... प्या नेयानर वि विर । स् विया सर नद इंतर शया न स्य स हर श्रिर लर.पार्वायाशुर्वरः। नक्ष्रेवायह्रवार्द्रवाश्वर हे व्याधन। त्रुर:गुव-८म्दर्भयामुवावार्गनात्रे गुरु गुरु नर्भव। वाह्यर:द्वेषवा म्रीयाग्रीताबदयादेताम्भरामश्चिमातु ५ सुदा ४ हुण ग्रेन् भ्रमतास**े हराग्रीता** विदान्यमा है । विदाह्म व्यवस्थित । या न्या विदार वयरान्दा पः क्षेते प्रमादः ह्या में प्रयामना छम् सहिता सम्बन 

<sup>🛈 (</sup>म न्याय कुषारमय हुबायर नेम हैंय 70-74)

र्व विदःसान्वत्रं विषा वरातः विषा रहेवा दे तिया গ্র্ শথ **ইবা** র্মন্-প্র शरप.रंजाभूर.चिशाश्रर.तीम.रंबत.र्जाच वि.च वे. व्याचल। न्वग्न्सुरावहुरावासुनाम**सम्भादन्त्रान्यन्त्रे अस्त्राहरा** महेन्स हु रह रूप। ठ देन र्म राम स्टर्म वन रूप वार न्यं दः नम्भवः दव्यः वद्यः 🗓 झ्यः स्वायः व्यव्यः दत्त्व । वद्यः देवः इतः नश्चानु त्याकेराकी द्वना वस्तातहतात्व स्वायावानम् क्रार्पेत्... न्याक् त्यर मुं द्र क्षा मुक्ष वर मन्या क्षा तर स्वा तर स्वा तर स्वा न्दर्बद्यःह्यंद्रःश्चेत्यःववे नःदरः। द्युकःबद्वःहुरःह्दःयःदरः **बर'ब्रेट'डे'**'वहद'न्स्टल'डुट'स्वय'ोुर'वर्त्तुन्'व्यन्ता **34.** 身, 都, 七仁, 站山, 四, 四百七. 日数十. 五四 少仁 之如山, 京, 七登, 及公, 便之, 九. चलर.र.प्र नलक्र.नविद्री र.श्रुद्र,लब.क.एइद ६ व. श्रुब,त्रक्र. मुब्र.श.वितानात्राचरी पाश्चरार्थनी यार्चे चेतात्री सूर्या है, खानक्ष्यया म्रं वयाश्चरततर रेशेर.रेश्चना प्रहे प्रश्नेला क्रेश्च यापर ब्रॅंब'ळे' पहव 'र्ने 'हेर' द्रमण 'र्नेब' ब्रे 'हप' नक्षेत्र हे 'द्र्येव' द्रमण अर्गु गता' स्रीयः हेर. द्वे गय व्याव्याकः हेर.ची. च्राचा क्वायातः चारीयारी. मम्बर्वायम्यः मृत्यः व्या अमयः मेरः न्यमः न्यव सः हेरः कुषः वास्तर र्वन् ज्न पष्ट्रवार्ष रदः मैवा न्यन है विन्ववाह्य रदः हुना वा वावरः मान्त्रीतः कुन् विया द्वागुर द्वान्य नेया नेया हिर दर र द्वा का नहर **ॲन्'इनल'रीट'**न्द्रण'यटार्थ'ने'क्रवातुर'| अनवानेन'द्रवात्वात्वात्

① (অ'ব্ৰাৰ'ৰ্ড্ৰ'ব্ৰ'ৰ্ব'ৰ্ব'75)

न्नराश्चेमसावर वि.च.छव.त्रं प्रवस्तावस्त्रं स्रम् चरान्त्रं विष् मन्त्रमञ्जूषामञ्जून्त्रम् वार्यान्य वार्यान्य वेर्त्यामञ्जून पर्या स्ट्रिस्मा त्या स्ट्रिया कि के प्रसार्थ न के न कि न कि न स्वाय पर क्या था यदः इंग्राया प्रमान्य व्यवस्था इत्राया वात्र वात्र हिना है स्ट्रिय है वहरतायल खेनल महेलामर है जनाकेन में हिरा है अरे पर मेर न्र-तुल वर् न् वस्ति व रा (य र्वर) वेगन् वर क्रिक् विर्ने न न् अव् अद् र्थे 'वेद्र प्रदे क्षर द्रा रु 'अडेंद्रश व् रा वे 'डे ब' वेद्र पर """ विदेशभावता साहरावि ररारराम् वर्षे वर . त. शूर व्याष्ट्र ना स. हूर प्रयान मू. नेया यय शूच पाया है **या नर अर्टर. .** ण्चरः बद्धाः बहु ब्राहु र मुङ्गेरा हे खरार कुलाहु र हु बराया बाहिरा अद् लट.ग्री.मे. भवे. विताचेया केट. बाई बेया ल.सूर.ग्री ब. बर्टर.मे. पर्वे ब. वसानेन्वराधी पहें वाहे वाही वाही वाही देरा पहें वाही वाही न्वन्द्रवरान् विन वन्यरे न्दर्भवन्य वर्ष्याः इत्रक्र **८ बन् ने** प्रमें पार्टापार् म्याराश्चर ना इस्त्रा चरा चेरातु श्चराव्या व्या त्रिंद्-यः क्षरः वॅद्-द्वम् मुलः बेदः। लाद् मुका कु व् व् व् व् व् व् व् न्ता वाक्षां व

त्रुण केट.र्बन्प्त्रुट्रिग्याच्डलःर्युत्रःश्चेग्याखःत्र्र्रतः

ने देश 1842वर् छ इन वर्ग कर बुक्य ए जार कर ने क खर जर न्मण्न्यं वर्ने व्यव कर्ने उव न्त्रा वर्षे र कु व वर्षे र वर्ष र्थन्तम् नियुन् र्षेट् द्या पठवा पहर है ता श्रीर वी द्या निय केता हर. म् लात वया देवा वदा वदा चारा निरंता में देवा में न्वन्क्रराधन्। त्रराक्ष्यं केवा पदुवा विवा क्ष्राय नेवल पुराव वरा प्र न्यन् स्यान्यान्यम् न्यन् क्रेम्पायते न्मा तुरावर विन्न्यम् सः बन्दरतुन्दिन्दरक्तरः यदे प्रतः अव अव किर्या व्याप्तः वया याः ..... **६ म्या-६८ विद्याने विद्याने** मन्यायवेत्रचेत् ह्या मन्यव्यावविदः ह्याः पर्मा व्याप्यावयायः स्यात्रास्यायास्यात्रे विस्तास्यास्यात्रे तात्रात्रा विरासप्रास्त्राचात्वान् विकालात्वा क्षात्वा क्षात्वा विवास्त्रा वि पा.क.पह्रच.वे.के.वेश.तर.खेबयाश्री

द्यायर वृद्धा छुन् वृद्धा प्रति वृत्त वृत

बर्चिदः इतः पठवान ग्रादेवः छ। "धिवानवाम গ্ৰথ-প্ৰদ্ৰ नः भूरः बहु म् ति वु के केरलः र्वे व मईन वावव में र माराया इ बरा धेव .... 1843 ব্-জে.ল্ল.শ্র-ছা-নামুন্ত্রানরে "ইবা धराबद्देव विदा र्मु केव अर्तर्यं राम् न्यू नामित है ना য়ৢ৾**য়৽**ড়৾৽৴ৼ৾৾য়৽য়ৢ৾৽য়ৼ৸৽য়ৢয়৽৸৽য়৾য়৸ৼ৽৸ঀৢয়৽ঢ়য়য়ৢৼ৽য়ঢ়ৢৼ৾৽ঢ়ঽয় नगर देव न दुया बेटा केंगन दुन शुरा बेव में रार्य मार्श्व । इस ल.वी.चर्चर.रंबच.क्रंच.च्रच व्यट्ट.य.चक्रर.ल्च.वी.क्षंपु.वर्धेच.य.चया প্রশারপ্রধান ব্রাপ্ত বিশ্বর বি गु नवे हूं व से ते हर व या न ग व संव सु र न न न र स या म है या न न प्रा वि.स्.माळ्या.पर्थातर.ज्याया.य्यु.अहताञ्चया.व्या प्यापःव्रथः अत्रः मुद्रेय.प.म् इत्रः ध्रुमः हु **.म**ह्रायः हः प्रदेशः दश्या चर्ष्याञ्ची जयाचि. <sup>ৼৄ</sup>ড়৽৻ঢ়৾ৼ৴৸য়ঀৣ৾৾৾৾ঀ৽ঢ়য়ৄ৾৾ৼ৽ৠৢ৾৽য়ৼ৸৽ৼ৴৽৻ঀৢ৸৽ঢ়৾৾ঀ৸য়ৢ৾ৼ৽য়ঢ়ৢ৾ৼ৽ नञ्जूषा "®ठेरापदिन्पत्तुग्पानविदान्तुरासन्पान्यद्वानवन्ञुः बान्द्रं म्हारायानुबान्द्राचान्द्रात्रं वाह्यः हित्रान्ववाह्यरान्द्रान् दे-ब्रेट्यन्ट्रे*-प्रवा-संद*्यन्-द्यम्-क्ष्र्यन्त्रचन्-क्रुयः-विवाद्यन्यवादान्द्रवा গ্র-মধ্যমান্ত্রা

① (美知日本:希及:共四朝:村町:町下切:29---30)

म्दं नु दू त्यदे नि मा भी लिट तम् दे त्यति भे तथा भी त्य क्षे नि वी तथा **ব্দ:** রুস: রুষ: শ্লীদ: ম: শূর: শ্লী: শ্ল: 1793 র্ম্ব-ম্ন: শ্লুর: শ্লুর্যা ঘরি: " **छः ब्रद्धः स्ट स्वरं मायः अदः मेयः महत्रः यायमः पर्वः स्ट् क्रें में मारा** ब्रॅल:र्म्बन्धव:ब्रे-सु-स-र्म्यु:पदे-ब्रद्म-बोबल:र्म्बन-पर्ख-मुठेन-प-सुन्रः व्यान्त्राच्या विष्याची विष्याची विष्याच्या विष्याच्या विष्याच्या विष्याच्या विष्याची विष्याची विष्याची विष्याची विषयाची विषया त्वेव चु लया र्स् ल महवादिल या या चर्। विया सदी हिंगा मव्या देया मःबर्बः न्वदः सम्बदः म्बदः सम्बदः मुक्तः विष्यः विष्यः मुक्तः भीवाः मिकः लन्नम् मुन् कुन् वहिंद्या चुका स्र्रा धरा श्चीरा यह राष्ट्र या कुन् र "या तर " . नृष्-कु'नेपः" ठेल' दर्वेन् : धःने : पर्मेन् : वृष: तुष: रूपरावाः छेन् : मा : ठवः : · · · · · श्रद्भा इव स्वा श्रम्यात्रीतात्रश्रमाञ्चर हिलागुर के विरायक्त तम्र-वि.लीपालट.बुट.तर.कैर.चेच्या १८४७ प्र-प्रवाचिट.चर्थ. सदी कु द्वा वित्र निवास दबॅद्-इसन्दुन्-प्रत्ने नहॅद्-ग्री-दद्-द्रयास्त्रिव-ब्रु-नरुराधेन-क-दर्ने रेग्याने ऋते या मृद्या श्रीन् मृद्या मृद्या निम्मात श्रीवान्ता नगात.हर. <u> चैन्-ब्रॅ</u>ट-बावन् ळेलाया न हें न्यान्य न देवारा न्या न्या न ने ना ने ता गुरान्देता खु:बर्झर:न्माद:वर:वहेव:कु:वं:वेरव:वा:क:कुव:दे:वव:वा:वा:वांवांवां 

तः ची चित्रः ची वित्रः चित्रः ची वित्रः ची वित्रः ची वित्रः ची वित्रः ची वित्रः ची वि

(b. 22.)

"म्लुट्रन्यतः स्वार्थः त्र्र्ट्रायदे त्यार्थः क्वार्धे व्यटः कृष् म्**न्यः** क्वार्यः देवः वेदः देवः केवः सेट्रः व

ब्याचि या प्रधिवया स्री

য়ৢ৾৾৾য়য়ৼয়য়ৢ৽য়ৼয়য়ৢ৽য়ৼয়

क्ष्मानवयात्रकात्रित्रित्वराष्ठी तुर् याम्रा

विम्य व्यतः महार वी म तुर ब्रेष वेर मा

इंर.वृदे नदेरया गा वर्षेत् वर्षेते क्रे.क्र.या

म्ट.यप सट्निय.यक्षा-रंबय रहे.यप स्था

व विन बर देव न स थे हेवा अद र है।

नेय वेर क्रे पाय प्रति व मुला द हे द लग

वव्याचेर्-र्वरवाक्षे राम् ववरातु वञ्चववा

बेश. नेश. पर. प्रहें ने प्राप्त पर के स्वार्थ ने स्वार्थ ने प्राप्त प्रकार प्रति के प्राप्त प्रति के प्रति के

म्यान्य अग्रेय १ विवाक्षे कं चल्यु र्माया प्रमेत्र स्वार् के चार्याया कृत्यः स्वान्यः मुवायः प्वावः स्वान्ध्यायः व्यवः स्वान्यः मुवाः प्रवेः स्वान्यः केव-सं-त्री-विन्-ग्री-व्यय-रेट्-तु-त्रिन्-य-ध्री-वट-क्रे-सॅन-स्याय-स-इस्रताला मृद्यान्र्रेतात्रह्यान्युर्याः मृद्याः यन्याः से व्यान्याः से व मद्यान्त्रक्ष्यायः म्रे देवावर्षे द्वयः देवायर द्वे नः ह्वेरा नहरार्षे म् इयः हेरा यः महे**दः दरा** दयः यदः मन् वा कुदः मञ्जूषः मः र्राग्यः विमः ग्रायः ग्रीः मश्चर-पञ्चलामञ्जी-सूर-बू.त.धे.रस्-भेयार्पाष्यानक्षेत्र म्री-पङ्कराताक्रया. यदे क्षं वय वेप सदे हैं थेय वद प्रवाद र मुन्ने र में या कु व स्वर र **५८**'५३ेल'मदे केंग्'में **द'**पम्' बुर'म्बारा'या कुषरा'पर् ज्यायाः सर बानन्यायं के बार्यं कृतं में राष्ट्रि न वि माता वेरा मा वेता पा खे वा र्गे पर रेग वेर म्यर पश्चिम्य पर्मे र या

रेयायाम्ब्रुयाम् नम्पि यतु वादर्वन नविवे श्रया नम्पर ह्ववाह यशेवाळे न्यमा

स्वान्त अ.इ. च्यान्यक्ष्याच्याः स्वान्यक्ष्यान्यः व्यान्यः स्वान्यः व्यान्यः स्वान्यः स्वान्

नगत् व्रंत हे नहत हैं है।

चक्षः मुन्न त्रवः मुन्दः मुन्

नग्राम्बानस्त्र व्ययः मुलास्

स्थान्त मेथ्या स्थान स्

नग्तः व्यक्तः व्यकः व

ल्या) च.म. महेश्वराये छ्यान् मृत्ये प्रति । विषया हेन्स्य स्ति । विषया हिन्स्य स्ति । विषया हेन्स्य स्ति । विषया हेन्स्य स्ति । विषया हिन्स्य स्ति । विषया स्ति । विषया हिन्स्य स्ति । विषया स्ति । विषया सिन्स्य स्ति । विषया सिन्स्य सिन्स्

रैअ'स'यदे 'स'न्सुरा'ब्र्डर'वे|अन्त'न्धॅद'डुव्।वे|ख्रा न्सुरा'अन्त'न्धॅद'डर'ब्रेट'ळे'यहद|

मुवेलाकुः क्ष्माञ्च नास्य स्वराहेलाया महेना हेना महेना निवासकुर्या ]

न्तुल'यन्त'न्यॅव'श्वेल'चवे'च'न्नद'धुन'कुल'यँ।

[र्क्ष: म्व.रंच्या य्यर तथा र्च्च क्ष्या क्षेत्र क्ष्या क्षेत्र प्रम्य क्ष्या क्ष्या

म्बर्यं वर्ष्यं वर्षः द्राप्तं वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः

प्त्यामञ्जूषा ] विष्यामञ्जूषा ]

मर्डर:बर्य:द्वॅब:घ्वं तह्व:पःक्रंद्यर:ब्रॅंर स्

विराम् तिया विष्या च क्ष्या .....]

न्दर्वर्तर्वर्त्वर्त्वर्

**गुर्डर**'यर्दर्देव क्रुव ग्रॅर'य कें र तु।

[इद्राम्यायाः विष्यायाः विष्यायः विषयः विष्यायः विष्याय

रैयायादिवा डिलान्यवारे या महायात्राता

ही दिवाया रूप व शिया क्षेत्र में वा

[द्र्यान्यूरावि विवायान्द्रान्वे मानेटान् ज्ञान विश्वयान्दे छ्या

पड्र. ज. थेय. पश्चे . पथ्च . पश्चे मा

क्ष.र्चट.त.पश्ट.वंश्वय.क्षेंचय.मैपा

[इद्.भूट.वि.चलेब्बय.चर्थ.रंबी.त.ब.चवेथ.तपुथ.तपु.क्रयं...

出亡、玄英仁、む、美、手、童の、丸

```
[क्द्रम्टावि पत्नाव के सु मा अनव के जान वे का परे के का मा
पर्र. ले. बेब. पश्चे. पब बा पश्चेला ]
     देश.प.चढ़े.पा अव.मह्रं .त.वडेश.ग्रे.चेश
     [ तर् द्रं में राष्ट्रे व्यविष्ठेरा वर्षे वापरे (इव्यव्यात्ररा) हाया
च्या पते छ या हे रात्मा हे वा पश्च था ..... ]
     म् अन्याम् निम्म
     [.....]
     ञ्च व अंत अंत अंत र व र न र न र र न र र व र
     [.....]
     ३.छन्.बह्द.त.न्यराष्ट्ररान्द्रेराक्षेत्रस्व <u>स्व</u>धा
    [.....]
     रैयामासामा रस्याम्बरामी उ.र्घेदावरु महियाम्या
     इ.४.२.२ र्वेड. क्र्य.पहुला [.....]
     हार उर्वेव सुव ळेनव प्रा निवा [.....]
     क्ष-यान्त्रान्यवान्त्रम् व्यवाध्याः विवा [.....]
     इ.य.२.र्म्ब.इर.र्गर.च.पह्निय.बर्-क्रेंचय.चेला [.....]
     म्बिलाक्षे . द. र्यं व. प्रम्यं व. यहं र. प. हे . पहं व. संव. हे म्या [.....]
     म्बियाके र र्मिन सुनार माळे र यह सुन ळे न या [.....]
     म्बिराक्टे ठ र्में व र्म्स म्बद्ध म्बद्ध ( ..... )
     न्वियाचे तार्वे प्राययापरा के स्वा रिया ( ...... )
```

```
कुल हे उ दर्व द बुर बेरा [....)
     मुल हे द द्व शुर्र र प ज्ञ प के देर ( ....)
     रैर<sup>-</sup>रे ठ र वॅब भे जेवा (.....)
     द<del>ैद</del>-दे-दु-दूब्य-बुख्य-बुख्य (·····)
     रेबायायाया अपानेत्रक्रायानेताया
     इवासाइयामुया देवास्या ( ..... )
     रैबायन्या इंटाईं नग्बीन्यं वार्वेयाग्वी
     श्चर्श्वेयः त्रः के नहवा ( ..... )
     वावरावार्दरायाळे देराद्ररायतुवा [.....]
    रैबायास्या प्रवेरान्यरायान्वैकाग्रवा
    वेवायहरामा क्षार्चेत् र्या ततुला [.....]
    द्रवासः स्या विषासः मृत्रेका श्राक्ष ( ..... )
    日天·日·別大·彦·日寿有 [·····]
    मदे विषयान है निह्न प्रमानुका [ .....]
    रुवारा सं मा वायक्ष्या हिंदा स्मे पर्वे पर्वे दे ग्री
    सर्वित्रक्षः ह्रेर्वि (क्षे.यः वयः वयः वयः यहा
                                                   वे'र्यर
3500]
    र.बर्.स.स्व.क्रुचरानरायाः याना ( .....)
    हॅन्-ह्मर-न्यव-निवेश (इ.य.वय:वन:ह्य-च्ह्रा
                                                  ये द्रम्
                                                    433
```

```
3500]
     पद्मेर.मेथ.त.इ अ.मेल.कु.चेंचे [.....]
                        (.....)
     बक्ष.ध्र.बट.क्रब.ता
     वनाकि.पम्.त.थ्र.भि.पम्.विरयानेथ्या (क्.य.वयाचना.नदी
ম'ব্নব'700]
     इ.रे.६्प.विषय.चनर.शेन। (.....)
     बर. श्चर. द्व. श्वय. छ. दरा [.....]
     षक्ष. इ. इ. रूर. श्रे. पुर. प्रा. विरया न वेश (क. या वया वन
বস্তু ঐ'ব্বব'700]
     नरे 'श्रॅब' म'र्नर'वर्ष'हैं हैं। [.....]
     सुव रवःयःळे वह्वर्पययः वर्ष्ट्रा [ ......]
     यमाने हिन्हिन् मु दिते त्रा विन्याम् केया [ क्षे यान्यान्म न्सु।
A'5 বহ'630]
     ロのA:到口:到下:ロ·ス:動の後:えた", (……)
     वे.स.र्ग.परेज.संब.क्र्मला ( ....)
     महिराक्षेत्राष्ट्रराष्ट्र क्षु दिते त्रा हिरता महिता दि ता वरा वरा
মন্ত্ৰপতিশ নি'ন্নম'770)
    षः श्रॅवः धेगः पञ्च रः दॅवः श्रुवः ळे 'द्यदः वॅतः श्रुंदः। ( .....)
     क्षे'ल्र-भात्तां (.....)
    मं वर. बर. बूर. कूर. शे. पूष. पर्या. विरया ने वेया ि के. या वया वेया
२8. पर्वा थे.र्घर.1190]
```

```
⑤、大可、で、美・美」 (……)
    क्रम.क्ष्रब्र.म.चरुन्-वरुषा
                                      [••••]
    श्चेर:ब्रॅट:र्ब्र्-श्चु:व्रेटे:प्व्जॅ:विर्यःगवेया (क्ष:य:वयःवयः
नेर हा वे र पर 1750)
    म्.पह्राङ्ग्राञ्चराच्या विरया बद्दा (क्.य.वया वचा वे.
열 · 취· 두 지조· 3150 ]
    र-सूर-त-सेब-क्रुब्य-चथन्न-बीच
                                  [.....]
    ब्री.इट.इट.इट.श्रु.प्रु.प्रज्ञ.विट्य.चेश्रुच (क्र.य.वय.वच.श्र.
ম্ ঐ'ব্যব:2450]
    वॅव-ग्रॅट-वॅर-य-रेग-वहेंब-इय-ग्रुव्य [ .....]
    ब्रु.स्टु.इंट.क्रू-.श्रु.स्टु.५र्ग्न.विट्य.चेनुया (क्र.य.वया.वर्ग.
शुबाह्य वे द्यर 2100]
    वियान् मानः श्रीराया कुया सुनान् नराय नुष्या ( .....)
    र-द्वर-ध-सुब-ळ्वायानययागुना ( .....)
    भूर.इ.ध्याव इर रूर् श्रु दिर वर्ग विरय महन (के.य.वय.
ৰশ্ব্যা ঐ'ব্যুম:630]
    ब्रॅब्र-वळ-म-ळ-न्नर-।
                             [.....]
    ¥८.४≺.५्.त.ৠ.५५्.५५्.७८्य.चकुच (क्.थ.४थ.७च.च४.
    मतुवा ले.र्घर:1190]
```

```
बर्यः श्राप्तः ह्रंदः स्र्नः श्रुः द्विः त्यां ख्रित्यः गृतेया (स्रायः वयः
वग्वे स् वे र न र 3150]
     नगुरायहीरायाळे न्यरासुन ळेन्या ( .....)
     यान्ठेनान्द्राङ्गाहे द्वान्य क्षा (.....)
    मवयाक्रामितः ह्रिंदः रूद् देशायास्यामञ्जूदेः ग्राया
    डे.मर्रेट.इंट.कें.पूर्व.प्या.बिट्य.म्बेया (के.य.चय.वेय.
मली वे र्यर 280)
    नव न्यूर्यः इयः कुषान्य न्यू नेया ( ..... )
    इर कुन य के न्यर अर्चे क र्यं ( ..... )
    पञ्चरणः मुरास्टास्ट्र अु. पंदेर त्युं ख़रणः चवेषा (क्र'णः वर्षः
ৰশান্তা নাৰ্নম:350)
    रन् क्रियास्र स्र त्रात्रात्रा
                                           [.....]
    नग-वर-प-ळ-४र-५ नर-५५४। (....)
    मॅर-२गर-हर-र्न्-भ्र-भ्र-विदेश-प्रिकान्वेय। (स.य.वयावमः
मुद्रेश वे र पर १४०)
   र्-निर्मिट.त.क्र.र्यटाक्र शामिता
                              [.....]
    श्रूव गुप प के निर जुल में
                            (....)
    क्षुव हे 'हॅर'क्र् क्षु देंदे त्र् पुट्य मुक्ता (क्ष या वर्ष व्
महना वे न्यर 490]
                                 [.....]
    後す。「ログ・ロ・ストタ・イコドク」
```

```
लुबा-पश्चिर-इया-शिवा-स्वेर-स्वाथा
                                    [.....]
    वे स् वे र्यर 3150]
                                  [.....]
   रग-र्यर श्रेथ हेवा
    बर्करःहरार्दे र वा ने 'वा केंगा परेवा [.....]
   म्राप्त, झ. श्रर ह्रार् र्रेट .श्रे. प्रपु. प्रज्ञ .विरया चेड्रेच (के.या वया
वगामञ्जानेया वे नमर 840]
   ञ्जन्यार्ग्रह्म ( ..... )
    चिता हे . इंट. क्रॅट. शें. ट्रंड प्रांचिट्या महेया (क्ष. या वया वया.
नत्वा वे र नर 490]
   क्ष्य. म्र. पर ता गाव र न न न
                                   [.....]
    मेंब्राङ्का ह्रास्टार्श्चराश्चरा विदयाम् कृषा (क्षारा वया वया
र्शु वे र्वर 630]
    नियान् ग्राह्म ह्ना ले राष्ट्र में प्राह्म स्वार्थ । विष्यानियाः
নষ্ট শু ন ন্নন 1050]
    €.24.9.1441.1
                                   (.....)
    |本で、在町、七、青、田町町、一一一
    वेन.क्ट.पम्.त.शर.भ्रि.पग्र.विरयानवेया कि.याचयावना
```

```
हेर:हा वे:र<sub>नर:1750</sub>]
     [.....]
     ळे 'ब्रॅब' ब्रेट' हं 'राग' ञ्च 'यदे 'दें र 'ब्रेंट' [ .....]
     रेबाया हुनायदे हेना नवरा ग्रा
     न्तुल नर्दा ने पक्त न्यं त है । शु उ पहेंदे विद्या द ला
     क्ष रवि नकु न्यं व नकु न्।
     मविषा हिते प्रमु द्रा प्रमु द्रा
     मुया दे ते पमु र मॅब पबी
    रैर-रे-वज्ज-न्यंव-नवी
रेबःम: हुना:मदे: हॅन:नव्याव्याव्यानी:मवा:ळव: ग्रा
    क्षेत्रर द्व मानेया
     चर्याय.चर्या.च्रिया.क्राया.क्र.च.च द्रेया
     बर्ग् व म हेर महाबा
     रेयः यः हु गः यदे रहें गः गव्रका ह्राः यद्वे रव्यकु वे र गह्य या श्रा
                                                           췿.
इट.इट.इंट.अ.दुपु.प्यू.विट्य.बेंडेया (य.धव.य.चंट्ट.)
    会、多、七四、七口七、美、号
                                (.....)
    美工. 多之. 美之. 如
                                          [.....]
    हेन.इ.इट.रूर्.शे.प्रु.प्र्.प्राविट्याम्डन
                                               (इ.य.यय. वय.
   438
```

गुरुवाकि:र्घर:70)

ন্মরা এবিম: শ্র্ন রিমার্টির বিশ্বর ব

ঘর্ষাইন্সূর্বিবেশ্রিরের প্রত্থা (ৼৢ৽য়৽ব্যাণ্ডা ঘর্বা ঐব্বং560)

देव शुर्यः हॅरः कॅ्रः श्रुः चंदेः এই 'ख्रियः वृत्रेया (क्षे यः व्यः विषास् वे देनरः ३५०)

रेब.इ.इट.ईर.झे.च्यु.पं.पं.विट्य.बेब्र्या (क्षे.य.बेब्र्य.वि.य.बेब्र्य.

म्बान्नी सेर्ट्र क्रि. क्रि. त्या वित्या पृत्या (क्रि. या व्या वित्या पृत्या वित्या वित्या पृत्या वित्या वि

রুমান্ত্র বিশ্বমান্ত্র ভূমান্ত্র ভূমান্ত ভূমান্ত্র ভূমান্ত ভূমান্ত্র ভূমান্ত ভূমান্

केर.चेश्वरा के.रेचर.1910] व्याच्या कुराच्या कुराच्या कुराच्याचेशा (के.य.चेयाचे

बर्दे ब्रद्ध स्प्र्त तेर क्षु त्यू विद्या गृत्रेय। [क्ष ता व्यावण स्था विद्या गृत्रेय। क्ष त्या व्यावण स्था विद्या गृत्य विद्या विद्या गृत्य विद्या विद्या

इत्रः ह्र्रः क्र्रः क्रुः विदेश्य जित्रा पृष्ठिता [झ.य.व्याल्याः चक्रः स्रा वे:र्चरः 1050]

\*\*\*\*\*

चु-बर् तःह्र्रः हु-वित्रः वित्रः विद्यः विद

.....

सुॱइयाऍ८'ऍ५'खु'वि'दर्ग'षु८याप्ठेम (क्ष'याद्रयाद्रम्' २सु। वे'र्घर'630]

न्श्रम ते.र्पर.510] नश्रम ते.र्पर.510]

....

क्षतः ह्रा (श्वा) ह्रा व्यास्त विराधित्यः विराधित्यः विष्यः व्याविषा विष्यः विराधित्यः विषयः विषयः

**७:**शुरः इंदः क्ष्रः श्चुः विदेश्या शुद्धाः विद्या विद्या विष्यः विद्या विद्या

र् हर्ष्ट्रक्र्जु वित्या वित्

त्रह्मा से.र्वर.र्क्र.स्व.प्त्रा.विस्य.चेड्च (क्ष.य.वय.च्य.

इ.इंट.ईंट.ईंट.शै.पूर्य.पश्ची.विट्य.चेड्च (क्षे.य.वेय.वेच.वे. चर्चे जु.रंचर.३५०)

ठ.व्रच इट.र्थ्न.थ्रन.थ्र.थ्र.व्या.विट्य.चंड्रच (क्ष.य.व्या.वच.

स्यान्वियः स्र्राचित्रः श्रुवे त्याँ । श्रुट्यः मृत्यः विद्यान्वेय। (क्षः या व्यान्वाः

र्यः न विषः स्र्रः तेरः सुते त्यां । ष्ट्रार्यः न वेषा ( क्ष्यः वयः व न । न वेषा वे : र परः 140 ]

चुत्रः श्रृंद हिंदः श्रृंद् त्रेतः स्रोते त्रेतः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्त चुत्रः श्रृंदः श्रृंद् त्रेतः स्रोते त्रेतः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत्तः वृत

ची सी.चंच्य.क्रंच.श्रम.श्रीय.पञ्चातियाचे व्या (क्षे.य.च्या.चेच.

वृत्यम् इत्रक्ष्रक्षुः स्वात्या विस्तान् विश्वात्या विस्तान् विस

ब्र-ह्र-क्र्-क्रु-चर्यः विस्याम्डेम (क्र-य-व्यान्ना-पड्डा

ळ्. इट. इट. व्या. व्या.

শৃৰীকা ঐ'ব্নম'140)

व्यापर-इ.इ.स्ट.क्रंट-भ्रि.स्.प्.विट्याचेड्च (क्.य.चेय चेच.ड

दॅव च्या पि यदिया स्ट्रिंग स्ट्रिंग स्ट्रिंग स्ट्रिंग विश्वा (क्रिंग देवा व्या यदिया से स्ट्रिंग से स्ट्रिंग स

\*\*\*\*\*

ढल पर्ने (इन्. लुट्र) इट्र इन्. लेन्. अंदे. त्याँ खट्र प्रमुठेन [इ. ल. ब्रुं विच्या विच्या

न्जर्। तेर्पर:560] पंजर् तेर्पर:560]

इ.इ.इ.इ.५८ थर.भेषु-प्रा.विट्य.चेष्ठ्या (क्.य.व्य.चेन.

(অমান্র্যা) গ্লীমান্ত্রিকাইন্ রিমাস্ত্রু নের্যান্ত্রেকা দুরীকা [স্কু কার্কান্যান্ত্রা নি ন্যমাধ্যত

इन के:न्यर:420)

(ব্ৰু-ডাৰ্যা) শ্ৰীন্য ব্ৰু-ছেন্ট্ৰ ক্ৰিন্ত্ৰ ভূমিন ক্ৰিন্ত্ৰ ভূমিন ক্ৰিন্ত্ৰ ক্ৰিন্ত ক্ৰিন্ত ক্ৰিন্ত ক্ৰিন্ত ক্ৰিন্ত ক্ৰিন্ত্ৰ ক্ৰিন্ত ক্ৰি

यार्या केन्द्र तर्में या केन्द्र स्वेत स्वेत स्वित्य मुक्ते (क्षा स्वेत स्वाप्त विष्

बरःकुरः तर्चे यः तेरः बेंदेः तर्चे 'ख्रिरलः न्हेन (कु'लः न्वा न्वा पति। वे द्वरा १८०)

वर्षः स्ट्रायः देशः या यत्त्रः स्वा या व्या या व्या

क्षेत्रक्ष्ट्रह्म् स्ट्रह्म् स्ट्रह्म्

श्रद्धाः इतः अतः अतः विदयः वृद्धे ि सः यः वयः वयः

मुडेम वे:५४२:70]

•••••

\*\*\*\*\*

म् शुन्ना वित्रः व्याप्ति । वित्रः वित्र विश्वा वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः विव्याप्ति वित्रः विव्याप्ति वित्रः विव्याप्ति विव्याप

••••

র্ন্ শৃলিক শৃন্সু নি নি শৃন্তি নকা শৃতি শৃন্তি কা বি কি কা বি কা শৃতি কা বি ক

•••

नकुर्। ते:र्नर: 560] नकुर्। ते:र्नर: 560]

\*\*\*\*\*

न्नरः इतः मृदेवः क्रिंग्ञुः दृष्टे त्याँ । हिर्द्यः मृदेव (क्षः याद्रवः वनः नज्ञुर्। वे : र्नरः 560)

\*\*\*\*\*

कु अळ न्विषा क्रि. क्रु. प्रते त्या हिन्या निका (क्रि.या विवास क्रि.या विवास क्रि.या

\*\*\*\*\*

इ.पट. नेव्यः रूट् येर सेंदि त्यूं प्रिट्य ने हेन (इ.य.व्यावन

## न्या वे न्यर 630]

•••••

ळ्यात्र्रः मुलः नृत्रेषः स्ट्रः सुः स्ट्रः स्ट्रः

ळ्याम्बिरार्स्न् सुः दिते त्या हिन्या मुहेम् [क्षःयान्याव्या छिन्। वेन्द्रा 35]

क्रेय.सर. चेब्य.ईर्.सर.क्रुप्त.स्त्री.स्य.चेब्र (क्रे.य.चेथ.

चञ्चम् त्राचित्रः वृत्तिः हिन्त्रः मुद्देन विक्रान्त्रः विक्रान्तिः विक्रान्त्रः विक्रान्त्रः विक्रान्त्रः विक्रान्त्रः विक्रान्तिः विक्रान्त

न याया ) न याया विषा स्र : श्रु : विष्य मुडेन (या ह्या अः

ग्र.चंद्र, तंत्र, वंद्र, भ्र.चंद्र, भ्र.चंद्र, वंद्र, वंद

इं र्बरा नविया स्न : क्षु : दि दे दे । विद्या न दे न (इ र या व्या थि र

595.15]

\*\*\*\*\*

.....

श्चर-त्र-मृत्वेष-क्ष्र-श्चर-स्त्र-स

\*\*\*\*\*

ইও দ্বিক ইন্ কিন ইনি নে সাঁ ডিনেক দ্বিক (জ্'ক ব্ৰক এ' ব্ৰন্থ 20)

•••

वृत्तः निवेशः वृत्तः अति । वृत्तः निवेशः विद्यान् विष्यः विद्यान् विषयः विद्यान् विषयः विद्यान् विषयः विद्यान् विद्यान्

\*\*\*\*\*

•••••

श्चि.परीया घटा चोषुयार्स्ट्र श्रुप्तासूपुर प्रमूप्ता विष्या ची है वे

\*\*\* \*\*\*

(म्यर तथर) मृद्यापदि पः ह्या दा हु हिन पा मृद्ये (या वम्

मृत्राहु नः त्या तहे वा ( ..... ) स्ट्रिया व्याप्त के स्टर्भे ने स्टर्भे ने

ग्रै-इंट-ईंटी ग्रै-तर.क्.चंटेंच-ध्यायक्य.पंड्र-तं क्र्याङ्ग्योध्यायह्ने. भवयाद्वेत्रात्वेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचे

देश.स.र्ट.सूपु.धूब.चबर.सुव.क्षच या वक्ष्म.ची.क्षुपु.चब्द्र-सूच्याचक्ष्य.च.क्ष्य.च.(४ त्यपु.चक्षु.स.)

[तर्-इद्ग्नाराष्ट्रिम्ब्न्यायान्त्राम्याक्षेत्राक्

क्षरःक्ष्यः सुरः क्षे: न्यरः त्र शुरः वे न्।

न्त्रेश्वरति नत्ने नत्ने नत्न न्यक्ष्ण ] भित्रेश्वरति नत्ने नत्ने नत्न न्यक्ष्ण ]

कूर.विट.इ. थर्ब. टूब.बीच. बीता. बीता. बीता

र्र इव वायव ने बुल सु र्वे पत्र तर्वे व त्यव इय कुला

पर्वेच्यान्द्र-चेड्र्यान् क्ष्म्याः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वयाः स्वयः स्वयः

(लट.मै.देव.दे.पट.बी.बीचवाकर वि.विट.ल.)

"मृत्रान्यतः स्वार्धः स्ट्रायि हैं स्ट्राये स्वार्धः यदे त्यवाळ व् हैं । व्रार्हेणः मृत्वार्थः में नेवारेवारेवारेवारेवारेवारेवारेवारेवार्यः ।

म्बर्यानशिवासारम्बराष्ट्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य

[ 전로도. 환. 여호 [ 성고. 최소. ]

श्चर्यः वृद्धयः न्यं वृष्य विवृत्यं दिवा न्यरः यह वृत्ता (र्यूरः

.....]

(तर् क्चित्रवाद्य न्त्रक्तः व्याप्त क्चित्रः व्याप्त क्चित्रः व्याप्त क्चितः व्याप्त क्चितः व्याप्त व्याप्त क्चितः व्याप्त क्चितः व्याप्त व्याप्त क्चितः व्याप्त व्याप्त क्चितः व्याप्त क्चितः व्याप्त व्यापत व्याप

```
श्च पठर म्बेश र्वे दायम्दार हैं पबर रन कुरा [----]
    श्च पठर अक्षर न्यं व अविव में नहें व त्यु स कुता वक्षवा [इका
۵.)
          (.....)
    য়ৢ'¤ङर'য়'য়য়৻য়য়'য়য়৾ৢঀ (•••••)
    श्चाप्य कराये विषय विषय विषय ( .....)
    원.나오노·너트의.나라보다.다 (·····)
    मवरानवे पायाव छूट हे दुर थेवा रे र सं न नवे दे ग्रा
    夏下、向山、型、口田下、寮村、小道工
    [तर्नै:न्बॅरव:बुव:ळंग इंत्य:विश्वतःकॅव:वधेय:य:ब्रन्ड्र:
वि'नब् ग्रान्तु'यः (1859 राख्यां स्ति ) ह्वायः ग्रह्मायदे छेरा ग्रह्माः
       श्च.परःश्चिषः ध्वतः वयाः पञ्चः पवयाः पञ्चला )
नेना
    हर थेग हैं पवर राय हा (मवरा मवर )
          [ ......]
    विराधना (वराक्रेका
         [.....]
    इर.ल्या. व्याचराय व्यापहेवा (न्या.व्या.)
         [.....]
    শ্বর্মনের্শা স্ত্রুমত্র ব্রেমন্ত্র আমর ই ক্রুমে মি ন ক্রুম্ গ্রুম
```

শ্ৰথ

```
यानवादुराञ्चारवाराङ्करास्वा (.....)
    बाव्यः छटः राज्ययः यः सुना ( .....)
    बिष्य.क्टर.म्.च च्या (.....)
    नव्यःक्टःश्चे न हेवायायाव्यक्टाश्चराचराक्ताव्या
[.....]
    नवायायवासु नहेवायावाद्धरायत् रहेनवानवाया [ .....]
    बर्षियः क्ष्रायं व्याप्त विषाः क्षेत्र विषाः विष्याः
    व्याप्त्र खुर हैं । पचर कुषा वर्ष्त्र [ ..... ]
    बावव छर. संबाध स.रच. के था (.....)
    मद्यापिता हे सम्बद्धार से राज्य मित्रा
    मवरायवे या महायान्य कराया
    म्बर्यामित्री हैं सर्वेद हैं न
     मवरापिता सम्बर्गित्र
     मवरापिता माश्चराकेपा
     न्वराष्ट्राया रोराब्रामदी त्यराक्ष्या व्याप्त वा निवेरा पहुती गुरा
```

न्द्रात्या अर् श्चर यं द्रायः विते श्वरा

म्बर्धा स्थित स्था

•••

मवयः सः न इ.महेरः क्ट.न मधियः ग्रीः ग्रा

म्बर्ग स्था विन्निकेर स्ट यं तेर सं यः म्हेम

म्वराः सः या वियान वितः रोतः सं या नहिन

चेर्यासः मा इर्र्स्र अर झ.चष्ट. चेरा (स.)

••••

.....

\*\*\*\*\*

म्बर्यान्याः क्षेत्रः स्वरमः मृत्येषाः स्वर्यान्याः क्षेत्रः स्वरमः मृत्येषा

म्ब्रुल:ड्वांस्य अक्कर्रः ह्वारं निवेशा मान्याः

न्त्रतः हुनाः या यदे त्वियः शुः न्ते दः न्हेन

नव्य हुनाया अर.स.पत्रः इट. रूर् ज्ला (19)

শ্ৰমান বুৰ দেই তাম ই দেই থেকা হ'ব বা

इयाययाना नहुन

\*\*\*\*\*

इ.गडेर.गड्रग

.....

धेर.बड़ेर.बड़ब

••••

इ.च इयार चेचा पत्री र्या

••••

तर्न्-र्मणर्न्-र्यामान्त्रेया

••••

यञ्च । वटः रू : न्यः यः मु**ठे म** 

\*\*\*\*\*

इ्याप द्रे द्राप मार्थ म

•••••

ब्रूट अक्षर रें र या या मुख्य

\*\*\*\*\*

ञ्च न्या विष्य

•••••

¥ॅर-सु-ब्रीट-वादे-।वट-वाक्रेर-वाक्रेव

\*\*\*\*\*

## শ্বশান রূপ-ঘরি কিন-স্কা-ঘরি ইনি ইন্ শ্ব্রা (10) ......"①

मदियाम्बा देवा द्वे र हिंदा है। विद्या शुः हिंद् धार्य व्याप स्वारा स्वा क्र्य विर.लूर.त.ज्याच बर्या क्रुप्त.ज्याक्ष्य.र्टा इट.गर्वया हॅम् म्वर्षाः गुःरेयः यः पठराः कंटः यः न्यद्राः म् उदिः पठराः पञ्चरः यः गुराः नर के लं न मु र्र दु म रु स्म रं वा रेर का रेर का रेर की म म विदे सवा रा खुग्वारे न्दर सं र ग्वद्या धर् पर श्री र ग्वा दुर गी देव वि र रेवा ठद र र र म्बर्स्स्याः क्ष्राः स्वरः मॅं नवरारेया या ने प्रमार्थेदा करा «यगाया भगा कु प्रेमा » दराया विराणा वयाम तुरादेवाय में प्राच्च या या यह या यह राज्य दे राज्य है राज्य व्याचित्र म्ब्राची क्षे वरायक्ष कं वा तेरा क्षु न्य वा ने म्बर्ग के ति चेरा कुरा मृत्य के मॅं म्वरा इंग वर में रेया या यवत र्ग केर में रायते शेर् म्व रामेणः महत्रायायायास्यायास्यायेतायस्याची वित्रायायायास्याची सार्वेता धैग-रेगवादरे-विग-ववार-दाईन्-ग्री-धेन्-ध-वात्तन्। विन्-वानववा श्चिर्मवुर्मि त्ययः र्वे व र र्वे या शु हो र व या व र या व र व व र व व र र । अ चरुरःश्चे : इन : बावदः मा वादरः न्यें दः र्येषायः न्यें दः रेगयः के । वा । विवा **ॐ**ण-पश्चॅपदेवेद्रःश्चचराष्ट्रः त्यदेः ह्वः सरः प्रग्नादः ग्रॅलः र्द्रः दहेवः दंर् रूपः स् ष्यामव वर्षां में रायम क्षेत्र प्रतिया हो राया र्मा वर्षा में दाये में या हिर

① (६ ह्र न ल र र ) नेर हुल सर रेब मार् प्रमाद निया करें र र

<sup>ৢ</sup> নাৰা নে ভ্ৰিন বিশ্ব না ভূমি না বাৰ্বাৰে বৰ মাল ইলি না বাৰ্বাৰ বিশ্ব না বিশ্ব না বিশ্ব না বিশ্ব না বিশ্ব না বিশ্ব कुतै तकर तत्ता । है दूर धेन के द स नि संग्रा नि से **२ेग्रा प्रम**्टेग्'खबाप**द**'याबै'नन'ड्यु द'लु'न्ट'दड्रेय'नङ्ग'नल्ग'र्राग्रा विनः इति । अर्थः विवादिक विन् भी विनः विवादिक विवादिक विन णुरः "हर्णुः श्रेर् द्वामुलारमया" नेरामारेवा वरा "अमयारेवा तुषायव हिते अया मव ग्री स्था मिते गर्डे में दी में न वर न में वर ने में प र्मा न्मॅंबर्यायमा त्या चीर्या पृष्ट्री कु र्रम् भू र्थिया (यवः) *बेषा*-घ-तन्तम् व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत **४**बः यतः न व दः यतः मा न दः यदः यदः यदः यः ते द्। " 🗓 ठेतः श्चेतः यद्गेन देरामहेबार्या कुषारं वालिया वाला की हे नावा वाय वाय कर ना वाला यम् <del>चैन् य न्दा विद्याप्त प्रमानिक विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त विद्याप्त</del> ब्रैन'नदी ब्रे'र्रा वे चन हरानदीय ग्रे दय ग्रद्य संग्राय क्रिय वैनः य**हना** न वरः यानवः स्र २: २५२ न वैः ॲरः चुः श्रु यः यरा स्व दः दर्जे · · · · · ष्ट्रित्रः इवराधिमा स्वन्यायाया यहे वया पराय देना स्वन्धिया भेटा। **ૹ૾૽૾ૹ૽ૻ**ૣઌૺ૱ૹૢૻ૽ઌ૽ૢ૽ૺ૾ઌૢૻઌઌ૽૽ૣૻૼ**ૻ**ૣઌ૽૽ૢઌ૽૱ૹઌૹ૾૽ૺૹ૽૽૽૽૽ૢઌ૽૱૱ઌૺ म् रायानान्मा मुक्रमा सर्ह्वमा सर्हिताया महेता सामिता मा निर्मा दे स्वीता सर्वा स्व वयः हॅर्न्य विषाद्धराविः नेवाषाग्रीः श्रेष्ट श्रेर्ट्रिश्चर न्त्रा वर्ष्ट्रे विवासीः र्थ्याक्ष्याः विद्याः दे.र्थ्य.चु.कु.नय.पक्ष.बट.धेय.वेथ.त.लु

① (ব্ৰাব্ৰি:ধ্য:ইজ:679)

য়ৣ৾ঀ৾৾৾য়৺য়ৣ৾ৼ৻ঀৣ৾৾৻য়ৢঀ৻ৼঀ৾৻ৼয়৻ৼয়৻ৼয়৸ড়৻৸৻ঢ়ৢয়৶৻য়ৢ৽য়ড়ৣ৻য়ৢ৻৽৽ श्चिरःगीः यथाः तत्र व सं श्वे श्वः सं श्वः य व दः हे य। व दः यः ह दं गिरः ब्री.वर्षाप.क्षेत्र.ब्रीट.ब्री.व्री.लय.स्ट.क्षे.ब्रिल बट.टी.ब्रेट.प्रटीट.वेय.त.. ञ्च चरनी पहें वर्ष पर क्षु के कर म ल दरन वे वर वे वर वे वर कर क्ष्यथःक्ष्यः द्वास्याः वर्षे व द्वः श्वरः वेषः सः चरः च्यः अत्रः व्यवसः त्विन् पर्दे धेना रेन्या सन् रॉक् नित्व वर्षा अनुता दया ने न वर "के **য়ৢ৾ঀ**৽য়ৢ৾ৼ৽ঀয়৽৾৾য়ৼ৾ৼ৾ঀ৽ঀ৾৽য়৾৽ঀ৽ৼ৽ঢ়ৢয়৽য়ৡৢৼয়৽ঢ়৽ৼ৾য়৽য়ৼ৽ঀ৾৽৽৽৽৽ पत् ग्राकेर पदि स दिर दश्य में केंद्र शुद्र खर व्या म् तेर हुद् क्षेत्र .... तह्रीय श्री द् भी वि त्यवा यदा है। हु अवा दु हु नेवा " कि वा नवाय दाः न्दा भू: इव: ग्रूट: वैवा २ देवाव: देव: वदा "वद: वत्ववाव: ववः वदा **ଌ**ୖୖୖୖୖୖୖଌ୵ॱङ्ब-न्द-पॅन-क्री-श्चेन श्चॅद-क्रे-श्चॅब-श्च-प्र-विवास न्वेता श्चे स्वस्तुव-प विराहेतार्द्रात्व्यावय वाक्षेत्रक्रियार्वेरायान्त्रात्वा श्रीत् श्चिरः ५२ चुः बूँ र . यः यहवयः भैरः श्चे र : शेवयः छे : ययः यहः हे न् ग्री : यग्नः : प्रवेतः हेरा:खयः कृरःखरः ठरः तुः कुरः यतुरः यतृरः क्षेः यमे रः क्षेत्रा कुराः ।

① (नेन:बेन:बंद:नवे:न्बेन्य:सु:म्न्न्यरय:25)

म् स्वास्तान् क्रिन्त् वर्षान् वर्षान् वर्षान् क्रित्त् वर्षान् वर्यान् वर्षान् वर्षान् वर्यान् वर्षान् वर्षान् वर्षान् वर्षान् वर्या

② (देन:बेर:लॅट:नदे द्वेन्य:सु:न्न्य:यर्य:25)

प्रकाग्री म्या भ्या विकास मिन्न मिन

भेनयार्नराष्ट्र, श्रुवाश्चराताश्चरम्याः श्रुवाश्चरात्राच्याः श्रुवाश्चरात्राच्याः श्चिरः क्रिंगः तरः त्रुरः यगायाः यवरः विरा के श्वेवः श्चेरः योः धियाः रेयायायः सम्बन्धः विष्यान्त्रम् निष्यान्त्रम् विष्यान्त्रम् विष्यान्त्रम् रोर:श्चर्-तु-विर्-प-राम्यायः द**र्मम्** मृ**याय विम्या**म्बुद्र-मी-वेदः कः विम्-वुद्रः त्तृ "मॅ देते त्त्र पान कु महिकायते के ताम के मा हे व में द स् द आया नव **न्याकुः मृद्राकुरान्यम् नष्ट्रयान्याक्रान्यः वर्षः अर्गःयान्युरः यह् मृष्ठः कुर्देः** कनायनर्यान्यानगायायान्द्रात्र्वानेन्याः सराञ्चराम्राप्त्रा वर् पर्ने प्यार् प्रविषान के करान्ते। कुलाम कराने विवयार्थे पान्तिका वर्ष्य द्वराष्ट्रिया देन् रूट् वर्षा द्वरा रहे वर्षा प्रति देन् रहे वर्षा देन त्रा श्रुरायक क्रिक् रेव में के व्यालय प्रवृ श्री म्बरम् तर्र है रापवे रा

① (以上 要 4. 全 至 之 之 )

महःकेवःत्रेवःचःकेवःमलुदःषैःश्चेनःत्रमवःमलेवःवैःन्भैवःपत्रःः **ळ्या हु नवा ग्री हि नवा र अ.ड. न इन. ५ . र श्री र था छू । ता हु नवा र पु र ....** बह्दरद्वित्राम्बद्धन्यम् निह्ने वि विन्देन् । क्ष्रवः तुः सुयः नदैः नग्नदः यवः तु। यहः क्रेवः क्षेत्रः हेः वैः गरुंदः तुः ययः देवः इसरा रोसरा यस केदाय प्राप्त राज्य रा ब्रेट.ल.कु.५ू.व्रन.वी.ज.कुकाब्रट.ट्र.नेट्र-वेचयाववीयावेयाचकेता. त्रुन त्रायदे ज्ञायदे स्यावर वर रुद्र ही या 1845 वर नेर हित यदि:त्त्र'नःपदी'सदि'केषाद्रेर:दुम्'देव। "त'त्रेर'ल'के'हा'र्दे वेदःद्व केव-यंना नवशः ग्री स्वापह्यान्याम् प्रतामेदाः सामन्याः सेवायाः म् ठ केव देव में के वरा स्वादेव में मिया गा न इसवा हे कें र हिर वरा क्षेत्रकाश्वर मूर.क्र्याग्नी.वे.या.झ.चर.पा.य.ग्रीर.था.क्र.वी.से. . क्षेत्र व्याक्षेत्र पञ्चित्र मृत्य व्याप्त 

① (以下,要d,至如,日之,)

विविद् । अला े विविधानिया विवास विविधानिया । विविधानिया विविधानिया । विविधानिया विविधानिया । न्त्रेयःद्धरःस्त्रःस्त्रं न्यःःद्रेन्ःय्वियःनुःम्यःगःयनःख्यःस्त्रःमुयःम् ब्रह्मः ध्वन द्रा राष्ट्रं र ब्रह्मः द्राः त्तु वा पवि वा वे वा ने वा वा ने द्राः म्रायाहास्या इताहास्याहिकानुःदिन्तुः धनास्यान निनः त्रिंत्-तक्षुत्रःश्चितः भी त्या न्यात्त्यात्वे याशुनः हेयाः शुः खणान्ता बाइता हेव. चश्चा सियावया चल चया विराधे नाया न सिवाच विरावया ये नाया भुषाञ्चव मैयाया विषयाय इस्याया श्रीष्ट्रायाय स् द्र- व्व सम्बर्ध इ दू वि वि व्य सम्बर्ध के के कि दी हुर:इन:दह्यर:वृता वग्रव:क्षुव:ब्वव: इव:दन:दह्या इराहें गायवाववाबह्यार्त्रासुयाहे ग्यायायायवित्। व्यावयाणी व्यावया हा शुःबद्धरः प्रवेषायञ्जा रगरः ञ्चः प्रग्ने पशुः र्येगवा गुपः बहु गः शुद्रायतुर्ग्यक्र्याने प्रत्वावराया माना "धिवरायां राया वर्षा स्त्र रहिन् दवाग्रमः वर्षे श्रीत्र्व मुल्यास्य । भीतामि वर्ष धर्। प्रक्रिक्तिवासिक्तिः
स्राप्तिक्तिः
स्राप्तिक्तिः
स्राप्तिक्तिः
स्राप्तिक्तिः <u> इर्-ह्रिंद्यः श्रु . श्रु बोया. येया. पश्ची. घ व बो. श्रु या. श्रु . श्रु . श्रु . श्रु . श्रु . या. ग्रु या. ग्रु</u> 95ग

① (芒·aਛང་శुदै・ギベ・ਕ・취呵・羽도점・62)

नहरानरार्थराज्ञववालु चु च्याहे तिव्वावन हराया है तिराज्ञरायरा "विश्वत्रा ग्री : त्रा न प्रता त्रा विष्य ग्री : त्रा व न प्रते व न विष्य न न व व व व व व व व व व व व व व व व विरःश्रेनयाःच्यांच्यात्वःक्टरःक्टरःचःवयःवरःद्रिवः विद्वःविद्वःच्याः हे . वि बर-त्र-पश्च-द्रव-श्रीय-ब्र्-इव्द-(क्र-इट-) श्री-बर्-द्रव्-द्रव्-द्रव्-द्रव्-द्रव्-द्रव्-द्रव्-द्रव्-द्रव्-द्रव क्र-निक्र-निक्र-निक्र-मामान्या तहतासान्र-विक्राम्नि वॅराह्राप्तर्भ्रम् नर्डे अर्द्रा बेरा महेषा महिता विदा विदा विदा ह तर्स्व भे देव तथा स्ट हिंद्य द्रा वर्ष वर्षा वर्ष भेषा अवा अवर कर्पा ने निर्मात्वा वा कुवा तु कुषा क्षेत्र ता विता तुरमा र्ने ब:क्रे ब:दे 'क्षे 'तु 'बु सः प्रेंद्र 'यदः य**हे ब**:वॅद्र 'य**्व** बक्षः अञ्चः यवः 'द्र रा चनान्यपराग्री र्वेष से पन्न र व्याचनान्यपराष्ठी क्रा निर्देश करा न्हर्छिर्यराष्ट्रिव हिन् कि विवास निवास नि *ब्रेन्-*नु-ळं-र-न्*र्डेन्-*न्न-यॅ-छेन्-सर-छेन-**नज-लं-न**्डेन-झ्न- ठंब-ऑट-- -हेरान्वि वराराष्ट्रयारे नविराग्धे जित्रक नवसाम्रमस द्वा नविराग्धेरः वियाया ब्रिटाचा ने र्या 🐧 💮 हे का यहिन या स्ट्रेस विया विया प्राप्त स्ट्रा स्ट्री राजदा रुषाचेरामञ्जरायरकारीयाञ्चरामाध्यायतुष्याचेरा। इयावरावरा রবিদা ব্রীকে: 1855 র্থ-জ্যাদ-প্রবাশ কর্মনার্থ-নার- "জ্পানার্থ-**ঀৢঀ**৾ঀয়ঀ৻ৠৄয়৾ঀ৾য়য়য়৸ঢ়ৼ৻৸য়৻য়ৢ৾৽য়ড়য়৻ঀয়৻য়য়ৢঀ৻য়৸ঢ়৻ৼ৾ঀ৻য়ৢড়ৼ৻৻৻৻ हेरान्डर वृह्ण में द्राया में द्राया के द्राया विकास मा में द्राया विकास के किया में द्राया के दिया में द्राया के द्राया के दिया में द्राया मे द्राया में द्राया मे द्राया में द्राया में द्राया में द्राया में द्राया में द्राया मे

① (ছু.অব. স্ম্র. ব্র. ব্র. ব্র. ব্র. এব বি. ইব. ইব. 206—207)

① (ই.গছ্ব.ৰ্ড্.ইঅ.খ্ৰ.এইএ)

② (等名:美四萬:其可:到5四:109)

यात्रा प्रत्ने प्रत्या भूषा अया प्रत्या क्ष्या क्ष्या प्रत्या क्ष्या प्रत्या क्ष्या प्रत्या क्ष्या क्य

1850 दर अवाया है। सर किर बिर यर सर ने र जिंद ग्रें र र पर पर पर नेते खे सं ख्याय स्या स्र मिर सं दाय विष हिर हि सा विष र हिर मिर स दे भेर रु मुल वर हल हते र बन रहान रर वि परे नव ब मुल में .... न्यरायहेव न्यनात्वना पठवा नसून्यरायरवा परा पहेन केरा ..... मैल.रचय.ग्री.र्घट.चर्डीर.र्चर.मेंबेल.लूर्य.ग्री.विष ल.बेल.पंचील.वीर... ळ्टी रुष:भेबाया:मुब:स्टर्स्टर्थ:लट:म्रायाता:सुर्य:सुरा:कु:जारम्या नेरामहेवावर्गाम्बर्याष्ट्रियार्थयातु याज्ञन् मेंन् क्षे अवताव बंबर्या .... याविकाकाकर स्वर के किराका के या पर दे या महिता की महिता का स्वाद मित **इ**य.ब्रिट.य.क्री क्रिट.विज.एकर २४.ब्री.बिबट.क्रुट.तर.ज.टब्य.तथ. इरालक्षामु हा दुलाक्षायहराय द्वारा वा द्वारा हिर्मा हिरमा हिर्मा हिरमा क'यः न् गरा पर्या प हुरः मः र्रागरा न्रः। दे 'प विव सँव हियः ग्री 'पॅन् <u> द्विर्यः श्रु. थुयः रचः ग्रेचियः सः इरः नयः विष्यः श्रु यः यदः राष्ट्रः यदः राष्ट्रः यदः राष्ट्रः यदः राष्ट्</u> पहेव। यानवयाह्रदास्त्वयावह्रवाच तुराचेत्रम् नहितान्व पः<u>चॅ</u>रान्नेरान्नेरान्नेवाहेते कुःवराय ठवाम तुरान्नेरा केते रामरा उद्याम तुराने न्द्रम् ध्रम् द्वेन् स्यार्थन्य द्वारा स्यार्थन्य द्वारा स्यार्थन्य द्वारा स्यार्थन्य स्वर् न्ध्रं निक्षः पहर व्यायव सुव वे पदे पद्मे व स्वाय स्वाय है नि स्वाप

① (考名:美四:新·持可:司云初:117)

देन्य सन् में स्वर्य स्वर्य में क्षेत्र स्वर्य में स्वर्य स्वर्य में स्वर्य स्

4. वॅट्स्स्र हूं स्वते प्रकृषिन् प्याप्त प्रिया विद्या स्वर्ष स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्

① (ই'অর্ল্ড্র'র্ন্ন্র'র্ন্ন্র'র্ন্ত্রেও)

द्वादःक्ष्वःव्यः त्याः विद्यः क्षेतः विद्यः क्षेतः व्यः विद्यः विद्यः क्षेतः व्यः विद्यः विद

श्चे सं: 1854 वर् भेर स्म देश ज्ञान प्रज्ञुन प्रते वरा "वर् नव्नतः गुवःषयः नवः सः नरुरः ईनः श्चे । छनः वानवः यः वालरः नदेः दलः । । तकरःश्चु'नठरःन्यंत्रान्द्रंद्वाळेदार्थः न्द्रः। श्चु'नठरः खुन्य यास्रावदः मं मुद्रेया शे. प्रमा शुद्रालु माद्रा "वेया प्रमा "केया प्रसा प्रमा सेया प्रसा सेया प्रमा सेया प्रमा सेया प्रमा न्राह्मस्य देव के व्यास्य प्राप्त प्राप्त हुव प्राप्त के किया व्यापित स्त्री स्वरास्य क्य.पश्चे.पर्वं पश्चित.पप्त.पश्चेय.यहत्त.पर्यं त...... नश्चिर्या "D वृयानययानास्र-द्व-भूर-श्च-वर-प्रयाह्य के वि तर्ने. रेग्रापक्ष, पर्वे, स्वान् सेप्या वे, त्रापु स्वाप्त क्षा क्षा प्राप्त करा था ने देश. र त्रेबराञ्चन्नान्वरः र्हेन् वर्तः र्ह्न्एलयः प्रवः त्यः वे । प्रवः ह्यु वर्तः प्र त्रुष:नग्त,श्रंप:ग्रुष:शु:दंश:ग्रंच हेग्:य:यश: कंत: नर्ज़: नव्ग:ग्वर:श्रे। षयानव वरा वेदायर क्षव हैं यो विद्यान ग्राय स्व दिरान हुव हैं । बदै के दर्दे व चेन् पदि सब र्स्या न त्राया न र बह्र व पता दिन पत्रे न पत्रे न न्दा भराइवाधरावदा। दानेदीवदा नवाबाधवामाईनाया।वद

क्टर्श्चय क्षर्यः क्ष्र्रः महर्मा व्याप्ता व्याप्ता क्ष्र्यः या क्ष्र्यः व्याप्ता क्ष्र्यः व्याप्ता व्याप्ता क्ष्र्यः व्यापता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्यः व्यापत्ता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्र्यः व्यापत्ता क्ष्यः व्यापत्ता क्ष्यः व्यापत्ता क्ष्यः व्यापत्ता क्ष्यः व्यापत्ता व्यापत्ता व्यापत्ता व्यापत्ता व्यापत्ता व्यापत्ता व्य

① (दें बद्धर क्रें रें यह में मृ मृ मृ र व र 246)

र्रयः कः न्दः ब बे वर्षे : श्रुपवर न् हे : चदै : धेष 🔻 छे : व्रुपव वि : क्रेवः **ब्रुटे** ्रान्स् वाशुः ब्रुविवर श्रे वार्य श्रुविवर श्री विवर श्र रेज र्यः क्रेवेः वहतः **ल:न्दः बयः गाः न**्वेरः ग्रेः वहतः ल:न्दः बयः गाः मक्यात्तिवायाश्वात्रव्यात्रम् अन्तर्भा अनुवानुः अक्केन् मा यात्रात्रात्रायाय व्यवः न्मा नगराष्ट्राश्चराञ्चनार्यम्याष्ट्रव तुः चेवा एश्वा वि दरावतुम् न म् क न्द्र चेन ने लाक महिवार निहास स्वर्ण वहार राज्य सिंदा है न्द्रा क्रे.कंब. मंद्र्या प्रयाप्ता क्रे.ब्र्या १३ व ही ग्रेंट विवास द्या हा हा तुराद्र तहरामयरयातुरार्यम्यात्री यहँदा हैवा है वरे परया परा दुः वं विष्यानिषा न्दार देवा पर्या विष्या विषय विषय न्यर में हे दिन् क्षेत्र वि केव सेन व्यव रिन स्तिन में न विदानका मन्तरार दीया बह्या देता हेता हेता क्रिया क्रिया अध्या अहंता हेता बह्य-द्र-त्र्यः विवेशः वरुषः ज्ञेष-वर्षः धर्षः त्रहेषः विः देषः छः वर्षः **हेव**.स्*छेब.र्*ट्य.रचेला ग्रैल.लच.**बेट**.। खेचळ.सर.ऱ्यारा श्चै विपायमियाम् वियासप्राप्त वावनाम् राज्ञेरास्यमः र्वात्त्रीरार्क्षा इयाग्रीत्रायात्री विषयाव्यायराचग्रावराहतः **६'-५८**'| ঝামৰ-ভূম-খ্ৰী-ভ্ৰনাম-শ্ল'-মনম-স্থল-মানাম-ভি'-স্--विनयः म्यारान्य वाराच्या यह या क्ष्या व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व्यवस्था व षुवाहे ज्वा वित्रहें वा वेर्वा विवास र्षेन्य वृत्य हे चेला ...... १ देवा वृत्य विषय व दे देवा विषय व देवा विषय व विषय व विषय व विषय व विषय व विषय व

<sup>(</sup>द. अच्टर. केष. इंच. श्रेच. श्रेच. ग्रेट्य. 5255)

अन्-न्वर्णा अन्-न्वर्णाः अन-न्वर्णाः अन-न्वर्णाः अन-न्वर्णाः अन-न्वर्णाः अन-न्वर्णाः अन-न्वर्णाः अन-न्वर्

① (ইন ইন স্থান্ত প্ৰায়ধ্য 22)

वर्षातिवातस्यापक्षेत्रीत्रिक्षात्रा स्राह्मा स्राह्मा বেইশ্ৰ স্ব:ইব্ৰ গ্ৰীৰাইৰ হুব হুব বাংহ ব্ৰং নুইব ব্ৰ এম হাইট্ৰ सदि कु है . ्द विश्व लेव नव दें व नद कुर र न व हिला है। दल व के क्रेरास्यावाराय पहराययात्रारायरायद्यापद्याव्याञ्चन श्रीरार्यरा न्दा प्रतावदा ह्राप्तावर्षात्रेयावविषावर्षात्रुषा विंद इंद अधारक हैं के दें के के विवाद मार हु न क्रिंद के कि दा कि कि के कि रेग्रार्ट्स्स्य १ सर् ५ राज्या है । जैरा द्वेंग्रा ग्रीरहें र्राया ग्रीराय वि **२८.क्रे**बेल बक्षाये.**८९**कारी**र.क्रुबे.**प्रि.क्रे**र.ब्रे**र.**वर.प्रे**बे.क्रै.**..** ব্যাদ্রাশার্ম প্রথম রেইশাদ্র্যিক মের রেপ্তর্পর্যাশ তদ্যাদ্রা <u>ञ्चेण्यावयान्ताकेषान्यान्यणान्यम्यम्य</u> बर्द्रान्त्रियाची श्रु द्वराह्रेट न्द्रा वर्द्रान्त्र ची स्टर्म पत्तराध्यायायात् केरान्ययायी:न्ध्राञ्चराखायात्त्रेता 母村 当日の子:、、14日、夏4、夏・日辛日、(三回の上日に、17日、日子、) *ৡয়***৾ব**্দ্ৰণ্ড্ৰিদ্ৰেমাৰ্শ্বশ্চশক্তিলেব্যন্ত্ৰ্ব্ . वियानवर् केरा विवादिर स्तावितः में राववादिर । विवादिर स्वादित्य विवादिर । क्षेष बेर्-नु-पहर-व रूर-नृवय-प्रस्कुर-व्यर्थाः व रूर-र्-न्य-पर बद्यतःव्यापञ्चरः पारत्वयः व्यापः व्यापः व्यवः स्वयः स्वरः प्राप्तः प्रापः 

① (ঋু'দ্ৰ'্যুম্'ন্'বঙ্লৰ' ইন'ৰ্ম্'ঞ্ন'ন্ম'ইৰ'209)

मृत्यात्ताः स्वात्ताः स्वात्ताः स्वात्ताः स्वात्ताः स्वात्ताः स्वात्ताः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्व स्वातः स

ब्रेट्ल देर बॅर द्या प्रवाहिल हुर जट राया सुल द्या है ते . " ङ्गाञ्चनायतुवःह्रंदःर्वयाययरःह्र्वाष्ठ्याने खन् गृतः गृहरःवृदःतुःःः पद्देया.स्टार्चय सटाचश्चराचेषा वटासराचरया श्रेनया.र्रेराचेषा वटा तु वि परे मवया कुला की प्रवाप प्रवाप प्रदार पुरा की प्राप्त पर हो व **क्रट.ब्रट.बर्**.ब्रुट बिंबट.ब्रुय.ब्रूट.वि.च.वे.टे.च.क्रे.वे.वे.वे.वे.वे.व्या... बेर्'पर्याद्मर् क्र्र्'लक्षरचर्यीयार्ययातियावयाय्याः द्वारी म् श्री द्वायाः वेर *बैना न्यानेंद्र : यर शे विं न इंदर पेंदी : लुया चंचा प्रवार विवार श्रेमा : सें*या : . गुरामुराभुराम्बरार्मम्यायठवानुवाबरा। वापन् मुरारान्यम् त्तर्वा (वर्षा प्रत्येष प्रत्य दॅ**व**-णुर-चॅन-ञ्चन्याशु-न्तुलान् **४८**-विश्वलानशुवानु-न्यन्।यशुवानु-स्यान्यम् वि क्रूर् अर र स स्याप्त स्यापा के त्वर न्यर महास वयान्तान्त्राच्या विवाके विवासीय विवासीय विवासीय विवासीय केवा थी **इंग्राप्तः।** वया रेग्राजिसः ह्रेंबाय मान्य या विश्वार प्राप्त प्र

① (तू.लंदे श्र.बंद्र.बंद्र.खंब्र.चंद्र.चंद्र.खंब्र.चंद

संप्रदेवे वदातृ अते श्चाया सामा विषय के विषय वहारा वहना बिदा इया बराबदा ज्ञानामजुन् मदी बदा "न्युदारी विवासु विश्वतात्व नित्र दर्भा देते देर भार विषात्र विश्व श्वा र्व स्वाता व क्यो. कुटा शि. श्रेच द्वाया राया ना श्राया श्रेच प्राया ग्री प्राया श्री पा श्रिया श्री पा श्र मास्यरागुरायद्र्राक्ष्याभ्रायवेषाकावह्रा ......ञ्चाम पञ्चाप पञ्चाप प्र-तिबेब्याक्ष कारवे.सूराया अष्ट्रवी.सी.सिश्या की.प्राप्ता में चेब्या हूं व मु.क्रेर. १. ज्यापरा अया पर्या श्री. मिर. पा यह पा पर्दा हे में श्री है. क्षेत्राचन ग्रीम् व्यार्क्ष वार्यम् वया मृत्या महाराम् व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त क्रमाञ्चर मुद्दे न्या मञ्जे दाया में या मया स्राम्य म्या में म्या में म्या में म्या में म्या में म्या में म्या अरायर वर्षा वहें व वि देव में के व कु न न हैं ता व वि ता न र व करा विस्तानर् रहत्रप्ति ग्रावारिता निया ...... ही हो र कर् या व्या वहता ग हेन् मह्या रूटा पठवा यदा गरेना गहेवा या हेवा स्थित येदा स्थित वा हाया वा वा ब्रु.चयत.ठ८.वय.क्.स.क्.जूर.क्री.वयय.घर.सेव.च के.व्री.चययंत.....

तन्त्राचारा तुर्वास्त्राची स्वुरानार्वेषात् वेषावुष्वेष धेरास्वुरा यया ने विवा विद विश्वयान विव धंवारी निर्मेद्या विवेदा । हिन बेबायदे .... न्दर-वैद्याञ्च-व-छ-वृत्रेद्यापदे-ज्र-व्दय-्रिय क्रतार्थव्य क्रेन्द्र-क्री..... न्राया विदा हुन नि देश हिराबे न्या "ि वेस दिन्य पुराहू अदे ন্ত্র'ঝ'অইল্'ন্যুদ'স্দ্র'্ডি' ্ডুন্'রু'ঐনর'ঝ' 1855 ইন্'ঐ্চ'র্জের' ' लूपु. ञ. न न के बाबे बातपु. कु बाड़े र क्षेत्र ज्ञा प्रस्था क्षा पार बूरव या... **ळॅल**ॱन्डिट्ल'लु'चैञ्च। ॐल'लेर'डु ग'्रेव'वल'त्रुर'यद'र जेुद्रल'**ळ** \* कॅृ.**झ्**च.धे.स्च ४ぺ८.७.५थ.ीयश.धेषश.चेल.घर **४.५४**.४८ श्रिट.मु.... विनयः रन्त लु स्ट्रा ्रुरयः वयः निरयः ह्नय सक्र भीवः ग्रीन् भीतः स् बळ्चाः श्वायः श्वेर हेव ही वाल्याय देवया श्वाचित्र विवायास्या न्द्रा मध्य-क्रियाच परित्र प्र-प्रवर्गावर-गविष्यः शिष्य शायह्नीया है। स्विष्याच्या विष ह्या स्वाप्ता ह्या स्वाप्ता ह्या स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता म्बर्द्ध्या के अद्भारत स्थान द्वार स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स क्रियराधनामित्रान्यरामञ्जवायासुन्य क्रियाचे विराम्यरान् ग्रम्य पयाणय चिविषासुव । यदाया वेषा पर्।

हूट्स्यान्य स्थान्य ह्या स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान स्थान्य स्

① (द बहर इंदे देव सं म्वा ग्राह्य)

बाह्रेद्राया मुकाय तुर्वा द्वा थिव केटा वर्षा या वर्षा प्राप्त वर्षा वर्षा बादी दर्भव या न्दा हिंता होत झेंबा हेव स्था न उदा न स्या मी पाल निया यर स्ट्रम् वेया र त्या म ह्र र में र में र म व्याप मुला म व न য়ৢয়৽ৼয়য়য়য়য়য়য়ড়য়য়ৢৼ৽ড়৽য়ৼ৽৸৽য়ৢয়৽ঢ়ৼ৽য়য়ৼ৾য়য়৽ৼয়য়ৢৼ৽৽৽৽ क्षा मर विय हो र हि र महिला में र ित ही हो र सर माल र वरा मह्मद्राह्मद्राह्मवा स्थाप्तियाः स्थाप्तियः क्ये द्रम्याः मद्राध्याः वर्षाः कैं केद बेर पर दर बहुबा वर्ष दि द्वाप हैंद प बुर रा है प विषा पर दे श्रीदःमदी-नृष्णम् श्री-नृद्धः। नृष्णयाः नृष्णम् त्यान्यः विद्याः निष्णियः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्य बॅरि-१ देर देश ने देव ने क्षेत्र ने स्टर् केर् केर् के ने वा क्षेत्र केर केर वर्षान्राम् कुल वराया धेरा श्रेना छेरा ह्या वर्षा केर हा वि र स्वा केर रहा क्किन्ग्रम् नवत्त्मा ह्रम्म् व्याप्ता ह्रास्टम् स्मान्यक्रा ট্রী'রী'রীম'ক্ররারা ট্রা'রাইর ভ'ন্মা শুলাশ্রতর্গ শ্রম'র্থর্গর্মিন্যা मूर. भि. केल. वट. वया होर् झूंबा होर् के रटा । क्रटया परी बाया कर. हेराधु छेरा र्रा भरा भ्रेन् ग्रा ह्रान्या प्रवास र्रः ब्रेरः। यः हे द्वा ग्री में रार्वा द्वारा हरा पहुरा ग्री राष्ट्रा **ब्रॅंबर-१९८१ क्रॅंबर-१९८५ कु. २८. नवी ६. ५४ ५२. १. २. ५४. २९८७ क्र्या** P. में लापट. वंबारण. तम् श्रापह्च वार्या पह्चा में रेटा के स्वर इंग र्यायास्थ्यायर्द्र्यायवित्यी क्षरानक्ष्यास्यापः र्रा इन चलालेल.बट.के.थपु.शु.४.क्रट.त.इश्यावधिव.त. बैट.ब.मूर. क्रि.क.र.च.वय.विश्वयान्ड्र-च्याचे क्रि.यदे. या नवयाशु स्र-

तपु.च्र.भिषु श्र.थ्रर.श्रद्भां लश्च.पीषु.चि.क्र.इश्यापविवास.वीदा.च. र्यन् मुल हिन्द विश्वराम् इन श्रे क्रम मून मून मुल भी श्री श्री रे त्विबारा श्रुद्र छे 'बॅर पॅर प्रत्या के ता श्री 'श्री द्वा क्ष्य क्ष्य क्ष्य हि वर्षा विश्व ता विश्व राष्ट्र र ট্রিঅঅ'ন্ ইন্ ট্রন্ প্লবঅ'র্ন্ ট্রি'র্রা র্রান্ট্রিত দুর্বা র্ব্ব **多5**7到1 पति शे द्वा वेता ते द ज्ञा मॅर १० ते वे ते र सं र पर द । पर वे के इसता तेरः दबाबै नवर् दे 'दॅद'ग्रे का विदासु 'द्वेष'द' देंद दबावेंद्र मुखाया " क्षेत्रः <u>ब्रे</u>न् : ब्रेन् : ब् ইঅব-শ্ৰ-৮ বঅইন্-ক্ৰ্অ অইঅ-গ্ৰন্ ট্ৰন্-ক্ৰ-ন্-- ব্ৰুন্ नर्डंबानुबाळे बॅन्स-१-के बेन्स कु क्रिंग् की न्या में की न्या न्यें का <u> च्चेनः ब्रें न्या चु न्द्रं न्य ह्या क्षेत्रः नेवान व्यवस्य स्वयः नुवान गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः गुप्तः गु</u> र्वेर:कृते:कॅर:वर्स्यय:वॅर:वे:५वा:वय:वेर:कु। व्ह वे:येर:कॅर:यदे: য়ॗॱढ़ॕॸॱॺॕॸॱढ़ढ़॓ ॿऀॱऄॸॱढ़ॴॱ(ॻॖऀॴ)ज़ॾॕॻॱॸॐ॔ॴॻॖॴऄ॔ॱय़ॕॸ॔ॱॿऀॱॶॸॱॱ कु दें र ग्री प्रद्या से रामित के देश द्या द है व र या प्रदार स्ट्र न्हर्गुलान्द्रिराञ्चर्रात्र्वान्त्रेर्गत्र्वान्त्र्वा **ढ़ॕॸ**ॱॾॕॖॸॱॺॱॿॖॸॱळेॱऄ**ज़ॱॸॱॺॕॴॹॴज़ज़ॱग़ॷॸॴॱॗ॓ॴॱ**ॾॕॸॱॹॗॗढ़ऀॱ**ळॅॸॱॱॱ** तर्में बता में र दि थे द्वा वता हो र हु र र र तु । र त्या र वर्षा भ्रवता वर्षिक्षे के से र में र भि मुलाहर र र बहुव वर्ष वर्ष के र र । भिते : श्रे त्र त्रे त् मुलाविदान्दा समुवाविषा स्टा श्रे त्या केदवा पञ्चे गवा करा

हेल.चि.रि.चु.चूर.ला (1856) वर्र.चे.रचुण.च्याचेल.च्याच

दे-भ्र-तिर-ह्म-विका-क्ष-द्य-द्र-द्रिन-विका-क्ष-क्ष-क्ष-क्ष-विका-क

म्रायमार्थः स्वायम् केत् हर्षः त्वा स्वायः शुः पहरः प्रयाः कृत्वा स्वायः शुः पहरः प्रयाः कृत्वा स्वायः स्वयः स्

<sup>(</sup>Deg: अवै: व्रावदे: द्वावर: वृंदः धेष: देव: 210—212)

## चि.शक्षयु,धन्या पचिर,ता यें,पापु,धि,श्रापड,गोश्रेय,तापच्चेय,पाय,

प्रिन्त्याल्याः विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः विष्यः विष्

इंस्वाहिक्ष्यार्थं वया स्ट्राह्म्यार्थं श्रेतः श्रेतः श्रेतः श्रेतः स्त्राह्मः स्त्राहमः स्त्राह्मः स्त्राहमः स्त्रा

<sup>🛈 (</sup>तू 'यदे 'ञ्च 'यदे 'द्र वाधर'वं प्'येष 'देव 'देव '213)

**७(ब्.सट.त्. ५ पतु.ज्.ब्रैय.व्रै**यंय.च्युत्य.क्येय तरःईतःट्य.वे8)

<sup>®(</sup>इस वर-पुर्व नेया वे प्रतः नेर-पर-मृन् गुर्व '24)

बर्धः द्रथः भूरः नश्चिम विराध्यायः भू पति विश्वयः प्रक्यः ग्रीः ह्रिरः म्बिरापमान्दा म्बदायदायरयाथे वदा मुयावदा दे न्मा कुराराराच्या विराधार्याराच्या श्रीया अन्यायास्यायास्या शु मिना कर स्र्रा " । विष दे सकर के न के वर् विन महेशय यर २८.चेच झेथ.रेट.। हे.चब.बुर.सपु.श्रेच.खे.पल्लापल्लापचीय. न्मॅल'रादे' न्माद कु स्थित मावद पा स्रा इं स्माल स्ता रे न्दा द्य-१ वेदा भिष्यिता रेचयात्रासः चयूपा विराह्मेचयाया विला इस्.नु.बिस्.सू.चेश्चर.झा झ.र्चब.कु.पव्चर.वेस्.ववा वस. ঀ৴৽৽ঢ়য়৽৻ৠৢঀ৾৽য়ৢঀৢ**ঢ়৾৾ঢ়৸য়ৼ৴ৠৢঢ়৽ৼ৾৽ঢ়ড়য়৻ঢ়ৢ৻ঢ়৽ৼ৾৽য়ৼ৴ ७**व:ृह्माह्यसः ्विः ऋदातुः तैयः ५५ इ.स.म.द्वरः मृष्यः मृद्वरः के तैययः न्तः। गुन याग्यायाक्षः । मन्ययाक्षः न्नः नुः । स्य स्राः नुः वर्षः । बर्यः ने न्दा द्यान्या न्याया द्याया हितः इयरापदरान्दावेनरा नृतेषा दे द्वाया विवायते यह वाद्धरातुः बै पर्यं यस्त्री वरा ग्री या सु 'कॅर' यदी यक्ष द 'व्यव 'क्षें यर 'र्वे 'यदी या स रमः ५८८ वॅरः सु: ५८। वेरः श्चरः में **८२ वे** । ५२ वरः स्थः विषयः ११ के न में ८ माया छित माया छै । तिविरयः माया सं सं र छेरः \cdots *ୖଝ୍*ଦଶଂ୩ବ୍ୟ:ବ୍ୟ:ୱିଞ୍ଜ:ଐ:ଝିର:ଅଟ୍ୟ:ଶ୍ରିଷ:ୠ୍ୟ:५:५-५-ୱିଦର:ଅଟ୍**ଟ:**" 

① (हू:पदे:पङ्गवेष:पदे:इब:इर:पृत्व:वेव:बे:पॅर:वेट:पर:वेव:

बर्ग्य र इंद साम्राम् देवान्यति हराश्चिन्ति मावव सर्व विन्ति त्रवाय राष्ट्रिरः र रायाय क्रां विख्नाव्यक्षा क्रां विक्रा र्रा हे र्वित्रस्य के स्वता है है न है नवा प्रवर्शन नगवःग्रंबः म्रन अर पर प्रदयः वहेवः म्रान्नरः बहेवः रवः द्वरः हैंग.(र्ज.रेंग) रटा कि.च चटाला नेया में अक्षी रंगपार पर हैंया श्ची. तक्याल विवया प्रचे वी. र्टा वा. मू. मूर्याती प्रयमालय. मूय. यि.र्थं वी.क्र्यातात्रकथाक्र्याक्र्याक्रीरावशिषातातिराखे । प्रव्या मवरः न्या वृष्टः नव्ययः वृष्ठिः नव्ययः नवेतः त्या नः वर्षे दः वरः **बियायान्यस्यक्षाम् अधियायान्या प्राच्यायान्यस्य विद्यायान्यायायाः** ग्रीयायक्षेत्रायदे न्य्वार्थे के नियायी श्री यायय है न्रा मुल्टावियया अर.भ्र.रेब.एड्रार.रेबैश.बेश्वेश.प्रथ.घवेश.रे.एक्रुंध.श्रूर.ब्रुबे लट. श्चेन्:ऑ्न.ऋ-धेन:पहन्प:न्धन्:पहन्:वेप:घुकायदे:न्ववकार्स्व:न्दा। **तु**: भूगाम्य तरान्न्यालुरास्तरान्यातालन्यराञ्चाञ्चरवासर् विष् "मृद्यापञ्चरामेरायान्यायाः केदायराष्ट्रवाद्यापम्यायस्यः। इत्राच्यान्यायाः श्चेर हिंद नशुक्र तक तहें न हेर रवा दे शेव श्वर पर हिंद न वव न्मानसन्दर्भवानिन्द्रम् । ..... श्रुवान देव वेत् सरावाया कर्मेव क्रियापः वियाववान् वास्त्रियाया स्वारायन् स्वराया र्भक्षकथ्य वर्ष वर्षेत्र वृत्र वर्षा श्रीत्र यश्री व स्था र पर वर्षा रुद्र ए विद्राण ने ग्या के द्रार्थित अकेंगा नी हुता हु दे दे के पड़र् गुरुर्

वदरः खब्यायः तर्रे : क्ष्वा वदरः घनतः बेर् : यत् व्या चत्रः बह्वा : ह्यु यः देताः 🔭 दहेव्ययरात्युद्रवाशुः अव्याप्तराम्यः ...... कुदःश्चेत् वित्रे वाशुक्षः कृत्वतुः **म** २ व : बु षा ग्री षा ग्रु : वॅ २ : ऋ : २ वॅ व : झ श्रवा : छ : व रा श्रु प्रायः विषयः म् अ है। बिर्मायाधीर क्षेत्र देश हैर के निर्मात विद्या देश हैर महम्म र् युर बह्दर्षुपायान्दा देवाबेद्रष्टितादर्भावाश्चाक्षाक्षाक्षान्त्रान्त्वालुवा ग्रैयामह्मार्धरायार्म् सम्बा विम्याधराद्धेया वेदाहुराहे स्त्रूर लटा हित्र म वदार्मा पसर्य सहिताया यह राय सुरा यह राय दी राय प्रमाय राम तर त्उरव्दारतुषातुषायरायहेदा **ने ने** दाराञ्चेराहा वेषा सु ने दारा के व्याष्ट्रस्य नव केव संरादर्भ क्रिं राष्ट्री व्या व्या द्धारा विना ग्राया श्री सर शु देयापर पञ्चल। "वेयार्टा "इना पर ने वेर पुरा पहना र्धर या बह्र-ब्रि-ल.क.च्र-ह्र-ट्र्यंय-घवल.कर्-वल.क्ट-ह्री-क्ष्यरात्पन्नम् न्धन् तेन्या स्राप्त वर्षा वर्षा वियान् नाता है न्रॅल-परुवाशु-वृत्त्र-प्रदे हिंदाश्चित्र स्वयातगुद्रवा श्चेव क्षा स्वा ष्ठॅम्तर**शुःन्द्र**लुकाग्रुःपहमा-द्युद्रःवैषःकः अर्द्दः र्ह्म । म्रोरःसुक्र **नमॅंदरायाबुदाळे ने ने व मवसार्खयान्दायर राज्या है व के ने पानस्या । ।** *ढ़*न्र-म् चर-क्रेश-वेन्याय-वेन्य-य-नेशेन्य-तेश्व-प्रक्रेन्य-प्रक्रिय-क् **ेवाम्यान्याम्याळेवाधाराञ्चनाञ्चनात्रुन्**लु ह्याया हे प्राचिताले या लबानव् केव चॅर सर सर सु नक्ष्मा वद सुर । लबानव वस वह वा वहा

यद्भा मद्य स्वायास्त्र त्राच्यास्त्र त्राच्यास्य स्वायाः स्वायाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्व व्यव्याः स्वयः स्वय

दे 'दबाहर श्रेद् 'गृह्व' क्ष' यर मृद्द 'दुवे' बे' झ' सॅ रॉ स्टेंद् ' · · · · **ऍ८रा**न्दर-वःक्षरः धुः नः 1857 वर् के ब्रुवार्यते ज्ञानः र खुः यः दरः " **६८.**शुर्-्रेश्वानाः के.थ×.जुनथाः श्रीनः कुटा। ≌.नः नर्थः तपुः कुथानिये. वैद<sup>्</sup>वॅर-ब्रैद-वङ्गवानबद-वॅ:बद-तुःष्-वद्व-देव-तुष-वे:ब्र-वॅव-ळे: मु द्वारहें बरा राम हु त्यते हा या भु दिराव ने या मु हि ग्रा न या हे व .... য়ৢঀ৾৾৽য়ৢৼ৾৽য়৾ঀয়৽ৼৼ৾৾৽য়৾৻ঽৼ৾৽য়ঀয়য়৽য়য়৽ৼয়৽ सु.क्रया वहेंद्र-अहं र्-एकुण्यन-दॅल-र्ग्वे कुर-शेर्-नेव-चॅ केलाक्ट-अ-अ-कॅर परार्दे अवि व नवे या परा गुन्या "के या पर्वे व ने व ने दे राष्ट्री रा नन्नयःनबरःषः घरःवैःववेवय**ङ्**रःवेःदन्तुःतः क्वेरःकुः **व**न्निःवुःन्रः। लबानव् केव् यं नरुषा कु . चं न् . चु न द्वेव . द्वेव . तहे बषा ग्री . न तुषा शु . हु न <u> श्रेन् : इयल: इर : क्रेन् : बर्च : ब्रिल: श्रे : अयः नव : वल: ब्रुवल: विनः नश्चेटल: . . . . . . . . . . . . .</u> क्र-रेंद्र-पद्रे द्वयवः श्रुदे छ्द्र-द्येववः र्यम्या नेद्र-त्विवयः बह्यामार्थं वाय्यान्यामार्थं वायात्रेषामार्थं पवन्वयाग्रम् स्टम्येन् वर्षे इवयाग्री यक्ष्य ग्रम्बर्गम् स्वान् केया सः विषयायाविषायायहणान्ध्रम् लुक्क्रियायादेक्क्रियायायन्याया केदाः द्रायत्रर के सूर्य के वहरी अक्य विकास के राष्ट्र वर के वे ...

बेदालुकामदे नग्रद ५व । वितास मन् १८५६ वित् का हार्यदे हान न्दः धंदेः द्वेतः नृत्रेतः नृत्रः न्त्रं तः देवः धं के द्वः तः नृद्धं नाः यमान्दः । वया हे . स्. चंट. चु. स्ट. वप्. पटं. घट. चंचे वर्ष शिता या चेश्वा र्य या चीता री न्द्रद्राह्म स्राप्त स्राप्त हिन्दुर हिन हिल हिन हिल निह के.च. क्रबरा-र्ट्ट **क्र**बर केला ची .क्रट.च. ५ २ थ.चथ.च क्रट. प्रचील. टीया श्रीच. . ग्रु-क्र-म-नेव-पश्च-म्रेन-र्रम-विम्-। ज्ञ-प-ने-मरि-क्रेयापञ्च-नशुवानिवानः भ्रम् भ्रम् । वित्राम् वित्राम् । श्चित्र इत्यत्र शुः अळवा धवः हते धिः मे : नृता । इतः तुते देता महेना तः वरिव हिटाइवल वयाम्ट्रियाची वर्ष्व छटा होताहै। क्ष्य क्षया श्चेष वि. त्रा. तर् श्चेष्य क्षेष्य प्रवाय तर तश्चित्य ह्या त्राय वि वया तु न दुन ने न्वराक्षं निर्देशन ने न स्माने रात्रिन स्मान्या न स्मान्य षक्र्या वियाया हुत. ररा न वियाय ररा बक्र्या महीवा के व्यक्षर वियाय हे .... पश्चितः प्रदे । प्रदे व : क्रें व : प्रदः श्चें व : पर्य व व व व : प्रदे व व व व व : प्रदे व व व व व व : व व व श्चर.लट.खब.पव.वयाञ्च व.पक्ष.रची.सैववय.रट.पक्य.रीज. **3**1 वदानी अळव व व दान ब्रांबा से निया पर प्रांचा के निया में साबेद पर वदा सु मुर्चम न हैं व है। के में मु सु केव में न्र खब म्व म्र क्र व का मु ने म्र हॅम्यायाय€न्द्रम्य द्रयान्त्रम्यः हेन्द्रम्यः विद्रयान्यः विद्रयान्यः विद्रयान्यः विद्रयान्यः विद्रयान्यः विद् यक्ष्यः मुः क्षेत्रः पातुत्रः त्या सञ्चान्यः स्टरः यह दः तः त्वा व्यळे नाः न शुक्रात्यः धिन्-ळेलाग्री-नन्-सुल-न्म-न्मन-ङ्घ-मर्देन-नु-की-मर्झ-मध्ये-मम्-न्य-क्

मुल उर-ज्ञेल न्ता अवर्ष्य द्रान्त्र क्रि. श्रेन्त्र व्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत

<sup>🛈 (</sup>इवाबर-पूर्व-वेवाबे-वेद-वृन् न्यर्व-32-34)

परुषानुः विराधेरान्दा। **यात्रैव वरा**यम्दाधेषा मन्व बुरावयसः यद्। सुराहं राम वरायायाव के छे छ हरामी यह रामे रहा के द नक्किन् श्रेषार्चे राब्वेदानु निवाद्याया प्रमा विकेषा दस्यासळ्ट्-विते: स्वाप्तश्चे ग्रामरासळ्ट्-तित्यान्ना अयापनः विनयः हेरानगदः धनाः स्रवयः स्वतः तुन्तन्तुरा र नेर हेनः हेनः वुराः म्ब्राम्बर्वित्रव्यायार्थे देशस्म्बर्यायन्त्रायः कर्यायः वर्त्रः प्रवेशः ब्रुंगः ब्रुटः चेवः पष्टुवः कुः यंदः कटः अवः ध्रमः तकतः न्तुः सुगव शुः व्रवः पः । बक्र्याः श्रीयाया बह्या न्या त्राच्या व्यक्ष्या श्रीया व्यक्ष्या व्यवक्ष्या व्यवक्षय व्यवक्ष्या व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्षय व्यवक्य यदे दे या मतु व की के व व मारा या अर्थे मा की प्या ता व दि या के व र ये व या सुद्र-वे क्र-वे रूप्त-देश सार्द्र-विते हें ना नव्यान वे नवा न व्यापक्षिया " ইরালার্থনের না
 ইরালার না
 ইরা

① (র্অব্দের্দ্র প্রার মিন্র শ্বাল্ব্র ব্র —44)

② (বুদ্ধানীন জ্ঞান্ত্রেশ্নান্ত্র-49)

नदेवाज्ञ अस्ति विषयः देवाज्ञ अस्ति विषयः देवाच्या पर्य- स्थाय ये. अस्थ. नर्से र. नर्धे ये. तर. র্মনারান্ত্রীথামার বানার্ভ্য **ঈর**্দ্রশংজয়'নর'শ্রী সংখিশ'নতথারী নথার ই রভা'ন্ম'। मन्याःसः केदःसदेः यदा मान्याः क्षेत्रः याः मान्याः क्षेत्रः क्षेत्राकाः गुः। वरः नर्गेत्ः मेन्य सहस्य पर प्रवेषय पर यह वा में र त्य वह र प्रवे ह या न हेया मल् नयः स्रेदः हेरः लयः नरः न् ज्ञेन्य ग्रेयः नयः स्या स्या स्या स्या मुद्राचग्रात् क्षेत्र्राय्यात् सुर्याचर्ड्य्यायामुर्यात् दुर्वा केत्र वेत्राया विद्राप्त इंग मूर.श.पर्वा.स.कुव.स.चयाचीतार्पराशकूर.लूव इया गेंगुया बर्दवःधरः न्वेदलः शुः नङ्गं न् धिरः न् श्रे रः धेनाः बदः हुतेः हुरः येनाः न्रः। व्याप्त-हुर-परुव-द्वराञ्च-र्ग-ग्वराय-ग्राह्य ग्रीव-क्ष्रद-क्ष्र्व-विवागुन-----तस्याय**ळ्ट्रायं न इयाम नेतार्यम्यान्यान्यान्यान्याः स्या**र्धम् न्यान्यास् न्। खयानव् मृष्ठेशाव्यावळॅन् प्यवायाने मृषाय सुयायहर्या न्रासुयान रहा । ञ्जॅग्यह्र् मूर्यायक्र्यापह्रययाच्या स्ट्राह्या र्याट स्ट्राह्या विक्र ग्रैकामहेन्का पर्दे मत् नृका वि केद यं र वि नृक्ष स्वर व्यव कर कर स्वित् ..... पद्मा अयानवावताम् दायाकेवार्यतान्त्रम् न्याता ह्युवालया तु-महराने सुमा दे हे यार्यमयान्यं व दु हिरा हु रा बह्मद्रास्ताना नहार्श्वेषा नृहास्य प्राप्ता स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्वाप क्याम् अन् न्राये वाया वित्यहता न्राये न्या वित्र हे न्या वाया । विरायमित्। दे हेल संदल यहें बावि हुर देव ये के दरा वहूद क्षरा के वक्षा क्षरा द्वार्यवा क्षेतरा वरव रेवा हुवा

च्या-मृक्य-मृक्ट-पतेः क्र्रं र-विनः पर-पत्र-प्रमृतः प्रम्यः मृत्यः प्रम्यः प

ষ্ট্র-শ্র- 1861 ইন্ স্থেশ্ব-জ্ব-শ্রন্থন্ব স্থ্রন্থন্ন ন্না নুষ্ঠ-স্ট্র-শ্রন্থন্ত ক্রি-শ্রন্থন্ন নুন্না নুন্ন নুন্না নুন্ন নুন্ন

म्ब. रमक. दुश. छ्व. वट. मनेट. क्ष्म. वट. मूं. क्रिंच. पह नेवा थी. लूट. प्रम. मुंच. रमक. दुश. छ्व. वट. मनेट. क्ष्म. वट. मं. खेट. प्रम. मुंच. प्रम. विट. वेच था. प्रम. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. क्ष्म. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. क्ष्म. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. क्ष्म. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. क्ष्म. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. क्ष्म. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. क्ष्म. मुंच. प्रम. व्या प्रम. मुंच. क्ष्म. मुंच. प्रम. मुंच. मुंच. प्रम. मुंच. प्रम.

① (₹a.ध४.२८४.५५a.ध.५५.५५.१८४)

वन्याय हरा भर्दन है। धराक्रेदादी नरा स्वराधिना या चेदा 91 য়য়৽ঀয়ৢৼ৽য়য়য়ড়৻ড়ৢ৽য়৽য়য়ৼৼ৽য়ৼৼ৽য়ৢৼ৽য়য়৽য়ঢ়৽য়য়ৼয়য়৽য়৽৽৽ न्दः। नृतुरःनीः सकाः मृद्यः सदरः गृद्धम् नृत्वे स्वायाः क्रम्याः स्रम्यः नग्राभिकावराज्यराचराज्यराज्यान्ता रे हेवानग्रायाभ्या ह्रवा त्रवारा में नापन् निष्या निष्या के निष्य में निष्या में निष्या निष्या के स्वार में निष्या में निष्या के स्वार में श्चेरःक्षुरःनेवःयः क्रेयः वर्रः क्ष्यः **गवरः वः** ग्वाहरः गैः क्रयः श्चेरः व्ययः देवः ः नगांद. भवा वंदारवाव. सुवं. वे. चनदा चंदार सेवादा सूचा है। ज्ञांत वंदार वंदार सेवादा सूचा है। ज्ञांत वंदार वंदार सेवादा सूचा है। नर्द्रेब.तर् जयाऱ्चयाचग्रदाञ्चव.चश्चवत्याचिर.चयवाक्ष्या । ह्या. बर्धियः लुष्यः सम्बद्धाः सम मवर्षाक्षार्मे क्रिंद्र इयरा वर्गार शेर् क्रिंट रदा था वर्षा वर्षा न्त्र-तु-क्रुम्याः वर्षेत्र-तू-प्रदे-त्त्र-वर-वर-वेदे-स्वम् नवाः यदर-क्रुः ..... नदरः श्चे क्ष्यावान्य राजा वया दहेव ना लुका विवा श्वे वा वया पञ्च या श्री पक्ष हुर-धन् के सं नदी नरुवायहरा पहें यव ग्रीवा न व ता व ता व ता व ता व माक्चु वर्ष्य तु नर्गेत् दे अत् श्रेत् वया यद द ने सु तु विया यह द द्रान्तुर्द्र्वाचलास्याक्षेत्रव्यान्तान्ता श्रीत् क्रुंद्राद्रेत्यं केते सक्द्र र्वेद सदर ब्रुव र विन वर प्रति द्वी वह द के हुत राष्ट्र महार विव वद ब्यापना श्री मुंदार ब्रेट दे न नय देन वया नट ल्या हर यया क्षेत् अन्य शे अधित व्यापने स्वा विन पा विन प्येत सहना निन 77

भ्रमका स्थाना न वरात्र या कुरान्वरा ने वर क्षा क्षा वर्षा नियायेन मृत्राम्य प्राप्त स्वायुक्त का विवाय वा ञ्च अर्थर सं पार्विषा प्रभू पविषा चेत् न्वा प्रवा प्रमूद ज्ञेत से ह्याञ्चराष्ट्राञ्चरामायार्थन्। नगदान्गानुन्त्राह्या <u> ज्ञाप्त क्षेत्र व्याप्त व्याप ज्ञाप व्याप ज्ञाप व्याप व्य</u> क्षेत्रयाने त्ययाद्यामा विष्यु अन् स्था की द्वा यान निन् श्री या या निन्नया श्चिर ह्यायाय हरा द्वित चुर श्चेत्र श्चिर प्रया ने रेत्र ग्ची पळ रागदी पर्चया हे.ह्यर.क्षर.ज.द्वा. ध्वाय.खे.द्वार स्वयाय.यी इर्.क्षर.लट स्वया. र्ने नृष्यः भैनाः द्वारात्यारा व्यवस्य कार्यः भेरान्यः स्वर्यः भेनाः स्वर्यः भेनाः स्वर्यः भेनाः स्वर्यः स्वर्य बार्क्स्य मुल न्यर हुल शु रं । यहर त्रिक् लका बहर न्या वर मेका रे ... ब्रॅंन्रार्च्यात्र्रे वहर्पमा डे.व्रंन्र्येन्य्येन्येन्येन्यम् कते वर्षायर प्रवासर प्रवास मान्य वर्षा श्री ता वर्षा हो । । । । ष्ट्रन्यास्त्र<sup>भ</sup>रेय। दरे ते दें त्रम्स्य या श्रेन् श्रुट्नी द्वटाक दर्वा कुरै-क्रियानाया दिनान्येव देतात्वा दे क्रियान्येव विकास विका बार्वि.शि. मुक्र-पश्र-पाक्ष-र मुक्र-प्रमुखा द्धारा श्विरा स्वर पाक्षेत्र प्रकर मुक्र-धनाः हुनायः यः न्वरः परा प्रमायः ञ्चरः प्रवितः वरः वीः यताः विषः ्रः न्यर-पाने दाने दाने हिंदा है नियम हिंदा स्वाद दान है । चग्रात्रे क्रि. च्राय्या व्यवस्य वर् भ्राय्य व्यवस्य वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे 

दे.पस्याद्वास्यास्याचेववात्वायाक्षराच्येष्ये हे.चनराञ्चाचगायः भूष-बी.प्राप्त प्राप्त प्राप्त वर्षा वर्ष वर्षा वर्ष प्राप्त प्राप्त वर्ष भूष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष য়ৢয়৾য়ঀঀৼয়ৣ৾৽ৼৼ৽য়৽৻ৼৼয়৽ঢ়ৼয়৽য়য়৽ৡ৽য়৽য়ৢ৽য়ৢ৽য়ৢ৽য়ৢ৽য়৾৽য়৾য়য়য়৽৽৽৽ तर्न पन्ना के स्यार्थित अवया में या मिया में स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स वी.पद्मिता वी.विवाश व्यत् स्वया वि. तथा पक्ष्यया पट्टे दे. वी.वी.विवा पह्न प्रीत्रायान्त्रीयाग्रदाष्ट्रायदान्त्री मविषाक्ष्यास्यकार्ष्ट्रायदेखनाः लब्दिन्न नहरानदे चेव चेवालन नहरा वारे नम् मुदे स्वाद्या वर्षा ॲवार्, छिराने : छवा अहँ र : र्वरायर्ज वाकुलायें : वकु र : दा केरा क्षेर क्षेरा लासुलाव्याकृवातेरालुवात्तुवा दे त्र हेर्पये हु हेव वर्पय डामायहॅर्मनेरेशक्रमामुन्तात्वयायहार्याचेराग्री<sup>™</sup>र्यर्करा। राबेर ञ्चन्यः न्हें न्यः प्रयाधनाः अहे नः न्दरः यह वाज्यः सं स्ट्राप्ता ना वयाः · · · नन् अते च ब्रूं न त है न विच वर न वे व च क हे . न व व रहे व न न र स्ट . . क्रेब्र श्रेर-र्नेश्वरादे बर्गवा द्वे स्त्र-तर पहेब्र दि प्राची राव स्राचि पर्वीय.व्य.त. नेय.पस्ता के. क्ष्य.त. र पे. पश्चेय. ग्रीय. ग्रीय. ग्रीय. में प्रमान मह्मान्कान होरामास्यापारे नित्र विवादी मन् मु द्रार धुन कुल प्राप्त राष्ट्र न ने के र निर न र अदे र विर र . क्रिन् चे र मदे सुन् अन् केषा चुर स्वावास स्वा क्रेन्, के. क्रूर्- क्षेत्रका के. क्षेत्रा क्रूर- वि. जर्था वेशालया वेथ- तम् याहे - या क्रूर-

मासुयामानेना न्रास्त वत्रा "व्राम्यायाभियानाले दिव केल्युमा चेनावरेन्ये देवा हिंगा हु त्वियामा विवा चुराव हुन

ই'ব্যান্ত্রি ট্রিন'প্রশ্বান শ্রুমান্ত্র'নত্র শ্রুমান্ত্র नगातः नग यानगातः धन है। ह्वीमा ह्या या हतः दर्मनयः नरः द मायः वदाः क्षे:ञ्च ग्रायायाया रशुया**ञ्चरा** मही के ता हो सामा महास्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा स्वरा यान न्यान न्यान मिन ने प्रस्य में ब न्ये का परि न मान महीर महिना चगावः रश्चरः अनवा चननः श्चः नवानः नवानः वेवा वेवा वयाः नवानः । बेर् गुर् द्र स दे बेर य प में र्षे य दे य प प दे बार प स न् ने न्र अधुव पते स तहें व लगा तहिन विग गुर प्र स्र पर चन्या अन्तर्वे स्थानायम् न्यन् नवराष्ट्रियाचीयाक्षे स्राप्तर नश्चित् स्व नन् श्चर्रास्त्रिया च १ श्वर्षा महितास्य विष्या मित्रे र्षे 'पिर' दर' र स्र-' पॅर' पर' दया मुर' त्या ने दे ' अद्यद' वॅर्' द्वावा नी रा'''' नश्चरः ब्रेट । इव.म.बर्षः न्यंवः विषयः चठवः वरः क्रियः वरः नुः वहंतः भ्रम्यः मन् भ्रुयः दद्धं मः अदः स्ट अयः वदः नुः क्रूं दः क्र्यः गुँ वः वयः । द्वासिनः पर्वतः ह्वा वर्षः न्यूवः श्रुः विषयः सन्या पर्वेषयः न्द्रतह्न्या देवा स्वाया के म्या स्वाया के म्या स्वाया के प्राप्त स्वाया स्वाया के प्राप्त स्वाया स्वाया के प्राप्त स्वाया के प्राप्त स्वा य. म्. चेल्ची वि. चेथा जया अर्. तम. चेची चेल्यं रामम के मु. मु. प्राप्त वि. . . . . . न्धे म्बेब न्यं ब न्यवा यह ये रेनक न्यं क म्व वह स्व वह स्व व न्दर्र्ेरायदे कु क्वेदान रे कुरान भेव दवादेवा व हरासर अद्रा न्यंव वहा द्रे वे न्न न्यंव में र स्वरे न ग्वर धेवा म्वहा है य हिट.ए.च.इ.पर्चर.चथप.ल्ट.इथ.ए.च.इ.इट.चर टर्ट.मेथ.पच.

দ্রিনান্ 'অর্ম' র্মে র্মা নামিনাল ক্রেনার কার বিশা ক্রম অংশ ক্রেমার কার্ ह्म इप हेर हिर प्वमान्या वेरा वेर्राहिम हम सरावा हेरा मान मेर्ये मारा हिम बै'ग्रंब हरी' म्बर्यासम्बादि सह भीव विदाय हिंदा सह मुन्या मृत्र । । । विषयाचियामा विद्यापञ्चरात्राक्षया स्वया मित्रा स्वया प्रमाणि । विद्या । न्दः। याक्षेदःन्वमःतवनःव्दःन्दःक्षमःवर्देनःकुकाग्रीःव्यक्षःश्रीःवुकः यरःकुः वॅद्-न्नुः द्यं दः वॅदः यः द्वाः द्वेग्वः प्रत्यः पर्वः क्रुवः दुः प्रादः .... भूष-पश्च-प्रवेग-पञ्चल-स्वाचा ब्रव-म-नेय-रच-ग्रन्य-पराश्च-मुक-लai, ~ ga. au ga. Ba. at. gt. ag. ba. 2. Lat. 2. a B. L. j. .... শ্রম্মর্থা तारव ष्ट्रियः संग्रायः यावेदः **न्ध्रं**न् नु ग्वर्श्चेन् व्यावेन् व्यस्त्रायः ग्वन्नः । । । विवान्तर्भवादिः चुका हेवा हेवा हु वा सुन्य विवास व ञ्चनतःबद्यतःबद्धतःशुःनङ्ग्रन्-वतःत्ररःवृतःग्रे-दनन्-य-वनःॲन्-<u>च</u>तः खुम्तः सम्यायाः वर्षेतः व मृत्रान्तः। क्रमः तमस्यः वे तोतः त्यः यवः यवेः पराबः श्वेर हैं 'बुरा रे' रे पिवेद प्रम् देंग व्यव वह ग हु 'द ग केर *देश*प्तबेषान्ते न्ववयन् हुर्राराष्ट्रीरात्ततुन् हुर्रास्त्यान्ता न्यायार्वेरा श्ची महोतापानुका मुन्दे के करा पर्दे वासंवका ग्वी पहीत् भेषा पहुँ रापरा .... पक्षथान्व द्यान हराना वर्षा र रटा ह्या वर्षा ह्या वर्षा नराना वर्षित 

यः नृज्ञं व बळ्वान्यमः चॅनः चलुवायः व्या । मदीः वावयः द्धायः ने न्याः नुत्रः चै**दःहेलः५ःळॱन**ऍ५ःपह्रदःश्चेगःनशुव्यःगदःवैगःमवदः५वॅलःगुदः\*\*\*\* हिन्-ग्री-श्वमान-व्यन्-ययानगदान्देवान्द्रम्मन्नम् मन्न-र्मम्यान्यः व्राप्त स्वर्थ द्रि स्टर पहूर अपया वृष्ट स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वय स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स विवामीयः प्राच्या म्या विवासीयः मिया मिया भीतः भीतः अति। मिर म्याम्याक्षत्रक्षःम्बुद्राव्याच्याः च्याः च्याः म्याः स्वरः स्वरः स्वरः व्याः म्याः रदे शे सु ग्राम्ब केद पर्ने पर्न म्बर्ग म्बर ख्रा हुरा हुरा शु र रर लवर श्रेर वता न्र केषा ५ के व से में के लिए के शे व के ता नता नवनान्द्रस्यास्निकास्याकास्त्राकास्त्राच्याः <u> न्वरः न्वर्रः यहरः वरः श्रुवः यदेः वेदः श्रूरः न्वरः वेः द्वेषः विदः ग्रूरः</u> नगाद वद दि देश थेनवा चेद प्रवाद सुवा वर्चे द्राप्त दे । सा **षटा वर्गा अर् : डेकार १र् : दकारे : ब्र**ाबुट : चु: र्वा द्व दा र दुंगका भेटा। ठरः चरः पर्यः क्रे : क्रुतः च्रेनः न् मॅवः पर्यः ततुः ।वरः मी के 'र्से गः तुः यर्देवः " क्ट.मी.मद्भवीवट.मद्भार्त्र, व्यान्त्र, मं व्यान्त्रम् यथर. श्रियः श्रीयवर. व्यानेराम्हुगाक्षे कुष कुर्रम् व्याप्ति त्यारी त्या क्षे त्या कुर्म व्याप्ति व्याप्ति लट्-प्रकृट-भ्रेन-क्षे-प्रवृद्ध-प्र-नृष्यिः क्षु-क्ष-व्याः विकास्त्र-प्रवृत्यः तस्र-छेन्-तु-वर्षुग्वीः कॅग्-पदीः अम्ग्राकः व्व-दन्वराष्ट्रवाराष्ट्रवाः विमान्तिः। वः **व**.चन्द्रञ्च.लटःश्रेटः बटःरे. लूट्-श्रुवः श्रुवः लटःश्चः नेयः चयटः म्यारः स् न्यानञ्जन्याच्यान्याच्या चन्नाह्यान्वेनायाने नुवाचन् ञ्चेते

सन्तर्भा स्वास्तर्भा स्वास्तर

क्यान्तर्का नेया सूर्य सूरा नायथा सूर्य ता नेया क्रमानिया क्रमाय नेया सूर्य स्था नायथा सूर्य सूर्य स्था नायथा सूर्य सूर्य स्था सूर्य सूर्य स्था सूर्य सूर्य

न्द्रार्थम्यान् सुकास्याची मु ने मया या या स्रा सा द्रवान्ता नि सी मवा इता शुक्ताला हरा च्या सम् हमा झामा मारा प्रोत्र विकाले. स्वित्यान्द्रमा क्षेत्रास्य स्वित्र स्वा स्वित्र स्वित् स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र षदःश्वां भेरः महेवः द्रम्याः स्वः देव श्वा गर्मावः श्वेतः द्या वः स्वः तप्त. मी. त. मूं यात प्रिया विया प्रत्यया श्रीया विया स्रता स्या द्वा प्रया प्रत्या प्रया प्रया प्रया प्रया प्रया वयायरम्याकान्दायरमञ्जाकान्द्राच्याम् वर्षायाम् वरा न्यर प्रति थे ने भून हर हुन्य है न्यर म्यर म्यर क्रिय प्रति हिर हिर वयः धेनः यदः स्टाचनवा चुः न्में वाले वान न्। युः धः ने वा कुता चेनः ष्ट्र-च-र्राग्याची में भ्रम्यान्दान्धुव व्यामन् भ्रमेत पर्दे न्युदा होत्...... बाव निर्मा में निर्मा में निर्मा है निर्मा हैन या है या है। सहरा मह निर्मा है निर्मा ने नज्जन्त र जारा नश्चरा न न न कर हिराधि कर धिया लव में या ८**६८.**चम्चैन.त.बुर-श्रुंल-श्र्वायाची.पड्डेल.पथापद्यापद्विताताचीर..... **५**5ग

मन् भू मान हरान दरा बहर १ १० देश विदाय है । दे हे ल य.जेबी.जूर वर्षाच.व्रूबे.प्रज्ञर.वैद.च.ब.बेथप.च.रंटा इब्बेथ. **ॿॖऀॱॿॖॱय़ॱय़ग़ॖढ़ॱय़ढ़॓ॱऄढ़ॱज़ॖॖढ़ऀॻॱढ़ढ़ॱॴ॔ॱॷऀ॔ॸॱॸॖढ़ॱय़॔ॱऄॱॕ**ॸॱॿॖऀ॔ॸॱॻॹॣ॔य़ॱ तश्चरः के. श्रदः क्रमयः समयः विमयः विमः ....... श्रुवः यमः सम्बद्धः यह व वः २ द्वः इयः नवे ...... "वेषः वनषः मन् नवे गाः भन् । सः नुः सः देते अद के **देते हैं . इ. या यह दायदे "के अम्म के अके दार** है या हो या सर्हर : ळॅब. म्हेंब.क्टर.पट्रेंट्.पष्टिय.ट्र.म्लॅय:ह. द्वेटराः झें. देव.ब्रेटराः हा धनःश्चॅॱर्न्न-्यरःचग्वःञ्चॅदःचञ्चॅ चवनः <u>५</u>वःद्वेते चग्वरःवद्वरःवः । । न्रांत कुत कु तन्त्र व क्षुर सहय र र सुव क्षेत्र स र र र दिया कुत कि स नरः मृत्रं यः हः ब्रह्मर् । वित्रः सुरः सुरः ब्रह्मरः नरु रः नरु रः नरु रः । त्रिन्यन्त्रः वि सेन्द्रन्द्रियः नृति च नि नृत्रः वि त्राम् श्वाः ने त्रः बर्दर् बुदे विवयायारे रूरा बे हुराह थेनबादहुव "ने दिराववत वि **ॾॆज़ॱय़ॕॸॱढ़ॸॹॱॺॕॸॱढ़ऻॕॎॸऻॗ**॔॔ॸॴढ़ॱॸॖॕॹॱक़ॕॖज़ॱक़ॕॗॱॱॸॕॸॱॱढ़ॹॱढ़ॸॹॱय़ॸॱॿॹॸॱ बह्यानु प्रतासक्ता व्यव द्वा कुता त्या सहया प्रतास सहया हे वा महास मा परीयार्ट्यास्वयाश्चित्तायारी, पर्वेरा न्यापाञ्चयार्ट्या स्वयापा तकर.प्यर.ग्री.ज्ञां म्वर.कर.पश्चर.पश्चेता "@इथ.म्यया...... ब्रिटा दे.पस्ता. **द्राया. क्रया. क्रया. क्रया. व्या. व**्राया. व्या. व्य बर्निः में न्या क्यार्र हिन्या न्यु व न्यु है या ने न्या या निवास

<sup>(</sup>इंश बर दृद्य नेय के केंद्र)

<sup>&</sup>quot; ② (इम्बर-दूर्य नेया वे स्ट्र्म् व व्हर्य :57)

न्नतः भृतः स्वायः श्रीनः श्रीतः त्रायः स्वायः स्वयः स्

**र.ब्रेट.र्पर.प्रमण.प.वीम.त.५म.५म.५म.**प्रमायष्ट्रम् अपयार्ने प्रस् ब्रिट.च्या प्रचयःब्रिट्य.तपु.च्या.पु.ट्यायःस्व.पःपाट्याने स्.स्याचः करामहरामुनायान्तर स्वाञ्चनाया के सामानिक महामानिक विताया बिटाकः पश्चरता भैदा अपता देरा द्वादा वा विकास वा वा भूदा **पळ.**स्ब.प्बार.बुबा.स्ब.प्रंथया.कुथा.बी.प्रंथ.क्य.क्य.क्य.क्ष्याया. स्वाया. वयः श्रे : सरायहरः श्रे। कृषा क्वेरः र्वेषः यावषः यगदः त्रारः यन् राज्ञः मर्द्र तर्भिन नेया है यर मित्र है । हुया या सन्। ने र्ने र र्ग्र स्थ मूर्यात्वयाविरयाचयाकेषाक्षेत्राच्याच्चेत्राच्याच्चेयाः हिया क्ट्रिस् स्ट्रिस् वितः वश्चा व्या श्वारा श्वारा दे व्या प्वरा स्ट्रिश्च श्वरा मब्यामहेन्या परे तर् विते ह्ना मब्या हे खेन्या मही न्र हिन्दि हिन **क्रयानभूरावयार्थयात्रेवाले,यरापद्चराभे**यया ष्र्याई.हटाडी.बदुः प्राया. ये. ने वा प्राप्त व्या क्षेत्र या के माया है। सूरा व्या घर्या प्राया प्रसीता की या है। म्राज्यान्यान्त्राहः वु न्दान्यानः श्वां र्वेषयायान्यान्या ने न्यानः য়ঀ৾৽ঀড়ঀ৽য়ৢ৾ঀ৽৸য়৽ঀঢ়ঀ৽ড়ৼ৾৽ঀ৾৾ঢ়ৢ৽য়৻ঀ৾য়য়য়৽ঀড়য়য়৽ঀৢ৾ঀ৽য়ৼ৸৽ र्रः वर्तित्व प्रमान्त्र वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः मु वर्षः नन् मु वे जुल न् नर अळ्न ने नगर न हो स हुर हे तर छे नता पर है ... वृते इर वकर रूर क्षेर क्षेत्र हराम लेग पर्चे या रे वया नर कुग वसाविदः मीसार्मादः न्यात्रात्राः हैं द्वा वर्षे मारा सामावि दः रदः मी **१५.**लेब.१८८.४वेब.१८८.५५.१९वा.प.४वी.१८८.१९८.१९८.१८

विष्या विष्या । विष्या विषया । विषया विषया विषया विषया । विषया विषया विषया । विषया विषया विषया विषया । विषया व व्याम्बुन्या दे न्यार-प्यादावार्यी: श्रु-श्रु-साम्बुन्यः नेदायळव् स्या दे-रदःवानदः वः पञ्चरः वरा इः यरः वर्षः पदः गृतु दः वर्षः यरः शुः ।।।। न्मा नम्मार व्यवस्य विद्या श्री विश्वता देवाता स्राप्त विवास स्राप्त यदः व्यायात्रा व्यार होतातु । अवाया यतु तः व्यार द्वाया यत् । व्यार व्या व्यार व्या व्यार व्या व्यार व्या व्यार व्यार व्यार व्यार व्या व्यार व्या व्या व्यार व्यार व्यार व्यार ळ्याया द्वानाराध्येव यानेयामा प्रवासी छे. त्री में विदाय वर्षा साम् विनाः तह्मवा अन्याः वर्तुः नेतिः र्वेनाः नमातः तुरः न वर् श्रुवाः विरः रहः । म् क. हे दे. ल्. ब्रैय.र्टा वर अपया ही क्य होर हिंद्य है। बा हेया है मिंबर.पर्यापाना में बूर.तपु.जियायापानी र.पह्रापायाचीया वियासीया पन्रायम् राकाराञ्चेराश्रीराञ्चीरायारी में वावा बुराकंरायया यहारा शुन्य केन होया ह न्नियान्ता ने बेदा देव सदी तहर ह या क्र र्षम्यः छै : व ८ : वी : वर्गे ५ : श्रेव : इ अयः क्वायः शु : ह्वं ५ : ४ : ५ रा व रा " ५ व दः " ८च्याः इतःश्चेः" वेरः नदेः श्चें गुलः । नगः ने रक्ष गुलः सः अः वत्। न्तान्द्रन्यान्तान्तार्वे र्वे राष्ट्राच्यान्य व्यवस्तान्ता दे वे द्वारा न्वारा **ૡਜ਼ਜ਼੶ਗ਼ੵ੶ਜ਼ੵ੶ਜ਼੶੮ੑਜ਼**੶ਖ਼ੑ੶ਜ਼ਗ਼ੵ੶ੑਜ਼ਜ਼ਜ਼੶ਜ਼੶ਜ਼ੑਜ਼ਜ਼੶ਜ਼੶ਜ਼ਸ਼੶ਜ਼ਖ਼ੵ੶ਲ਼ਜ਼੶ਜ਼ਜ਼੶੶੶੶੶ श्रीर् क्रिंट र क्रेट पत् न्या ध्या पति मरे क्रा श्रद ने वहर पक्रें र द्या कॅलामहेरका छरा सर ग्रामारा सिरी क्रिया प्रमाण विश्व वर्षा देवा बर.रियरा "कुर.मिल.रचयाहीर.चिराचेयाद्राक्र्याहीरयाहीर

मञ्जूर-वेर्-स-दे-बळ-दन्तुत-वुर-वक-...... र्वर-बूटक वर-वित-तुत्रर··· हिर्-८ ह बाका क्षेत्र मदि बाद का हुंया हेत रे र विदार कंपका के दि प्याँ वी .... त्रकाशुरकान्नॅ**व** पदे न्वे तनुव ॐदे रूराकातवायान शुरावेर ..... दश्रतासुन्यान् मृवः पदेः नृषे 'दतुवः ळेवायाद नृनः पञ्चयावया वे स्टार **वॅद्-**न.बु. गृताक्षत्रान्यद्र-स्त्रद्र-भृतात्त्र पुत्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त्र-स्त קקבישבין भ्र.तियासि १. त्र्या प्रस्था स्थान मूचा नद्रा हि चेया निया इत्याम्बर्याः वृत्यः वृत्वः देवः देवः हे न द्यायः शुर्यः न वृतः पदः न वृतः वित्र इयता ग्रीतार्मातः स्वार्मेवा परि र्मे । ततुवा इयता र्रा तहीया पानुता ह्म इ.६.पड्रास्यान्यं यहर्गी स् डि.वया अ में वया प्रमेश है श्चिन् श्चिम् विश्वास्य स्वास्य स्वास् <u>डिट, र्रेय. र सेट, रूप, विथ, विषाय, १९व, वय, न्ट, वव बयालय, वय. .</u> <u>जान्त्र इंज वृत्त वृत्त । इंज्याय वृत्त वृत्य श्रे अराव हु पा वृत्त</u> श्रे बर्दरमञ्जराष्ट्रे दर्जेन क्रियानेदान हेना छरा हेता तुरानसा बरा राजा र्ने पर्या र ब्रिट हैं में मुखा सकत कें र छेन् क्रुं द मी समामि र है देवा 'छेव पः नेद्। "णेडेल' प्रिंद् प्रतुष

ति क्रिन्दे स्यावर ह्या विश्वा विश्य

त्रवार्ट्टर्ड्रियः वाव्याय्य प्रमान्त्र व्याप्त प्रमान्त्र व्याप्त प्रमान्त्र व्याप्त प्रमान्त्र व्याप्त व्यापत व्य

नन्तुं व्यादान्त्रः व्यादे व्यादान्तः व्यादे व्यादे

<sup>🛈 (</sup>वूं निवे इंश्वर वर वर् भेन देन देन 216)

ब्रुट्यान्नेन्य या केव संदे न हिंदा स्री कना स्रेन्य वया ग्रीटा यह र विदः । **गै**षःश्चेर्-ग्रे-व्याग्-वञ्चययःहे-श्चे-तुर-ह्व-ह्व-ह्व-ग्रुट-व्यु-व्याकु-व्या-मु ने नवा दिते जुल हैं न तव न ने न रेट लट र हुर ही जु वय श्चरः सः स्वरं सः ध्याः वीः वश्चर । व्यावः स्वरं याः स्वरं स त्रात्रः तहेव वृ तोरः पद्मव यः तहेव चुेन ले हे वे व व व व च च च च च माजुला वेताल्य प्राप्त व्या विष्य विषय विषय विषय विषय श्चेर् वश्र भुत्रभु र्वर धुन कुल र वर्गर रे न्ये र स्वर सुद भुद वर्भे व र दे र र बिद्रान्द्र ग्री के त्या पङ्गल। "ठेवान्दा। "श्रेन् पहेंद्र पर्ने ते ने दास्त मला मुला मंदी त्या हवा देवाता बेदा " किता दावद या क्षेत्र में दा बाता ..... **ब्रद्रायदे** श्रीद्रा स्रवा श्रेद्रा स्रवा राष्ट्रा पति वृष्ट्री स्रवा म्या वृष्टी स्रवा स्रवा स्रवा स्रवा स्रवा न्रियेष्य बळेव ग्री प्रता दव ग्रीर "द्र ग्री श्रीर देव ग्रीय राषा" बैर-प-रेदे वर-द-बेर-कु-वग-ह-व्यव्यव्यव्यक्त क्रूर-२कॅर्-यामग "ने तस्यान्मतात्रकात्रमाञ्च कार्यम् श्रीकार्यम् विष्यान्यान्याः ड्डी. वियाने । अ.न. नशियातपु. क्या पर्वे नवेया हेवा श्वेनया सम्वास्या र्यर अक्रमा र्मुर ग्रस्य प्रत्न त्या वा वे प्रता ग्रस् मृत्रेयःग्रे सुग्रायम् व दरः द्वा ध्वा रॅग्यावनयात्ररामातात्तुरामन् भूर्मात्रराष्ट्रयाक्ष्यायारा क्रिके क्र **ॻॖऀॱಹॅॱॺ॔ॱॸ्ॸॱॻड़ॺॱऄ॒ॸ्ॱॷॕॖॸॱॸॷॕॱॻॿॺॱॺॿॸॱऻ**ॕॱ॔॔॔॔॔॔॔॔॔ऀऄढ़॓ॸॱॺॕॸॱॺढ़ऀॱ

① (देवाबेरावंदावंदे द्वेन्वासुः मृन्यास्य 26)

② (ব্ন-ব্ন-স্ক-ব্ন-ইব- 40—41)

য়ৢ৴য়ঀঀৼ৴ৼ৸য়ৢ৸য়য়৸ৼ৸ৼয়ৼয়ৼয়৻ড়৽ঀ৽ঀৢয়৸য়য়৸ৼঀৢয়

रॅ्व-२्टॅश-य-तृ :यदे-ब्व-य-व्रु-गृवेश-यदे-ह्या-वर-वे**ट-यरः**\*\*\*\* बर्दे वदः। उ प्रवृत्तवयापदे क्रिंति व्यवादि वेत् ग्रुटः। इ **"**ढ़ॸऀॱॠॸॺॱऄ॒ॸॱक़ॗॕॸॱॸॱॿॖ॓ॸॱॸॕॱॺॕॿॱॿॖॱऄढ़ॱय़ॕॱॸੑॸॱॸॿढ़ॱढ़ॼॺॱॻॖऀॱॱॱॱ **८८ त. ब्रुट. र प्रकार प्रकार** बैद्राञ्चरः वरः वृद्धे के त्यर्वः त्यः त्यः क्षुः वर्षः केदः रहा। বম্মপ্র. क्षेत्रञ्जः द्वतः न यूजः अर्चे वे कंबेया कुषः यूबेयः कुषः चयः प्रियः चयः परिवाधः कुषः । *ॻ*ॖॖॖॖॖॣॖय़ॱय़ज़ढ़ढ़ढ़ॱढ़ॱॿॗॗढ़ॱढ़ॱॿॕॖॴॄॱॿॖॱढ़ॺॱॺॖऀॸॣॱॻॖऀॱय़ॺॱॸॕॣढ़ॱॱॱॱॱॱॱॱ बह्रिवः ग्रीयायः केवः यः केवः श्रीतः खग्यः गृष्टेयः ग्रीः तम्वादः प्रवेषः ग्रवः <u>रम्थान्नैर.पर.ञ्च.प.चशित्र.तपु.क्षय.पन्धीयानुवाद्भर.पीपु.पहताय</u> र्रादे तर्वेषाच्याम् नरुषाद्यम् नवेषा नश्चरषा ...... १ वेषा मृष्या न र्म्-तु-क्रेंत्-श्चे-न्सु-सहेव-बेन्-धर-दहेव्-धमका बेन्-धरे-ववकः.... क्ष्याद्रम इरद्ध्यातृ त्यदे हा यदे यहमा हुया व्याकेट में टा या देवा ठव गुैलासुवानदीः तहतः वान्दान् वोतः बयायान हे वाववाधीनः नगरा वळवाः पलेक मुक्ट पर ने न्टा अपनि श्वर श्वर श्वर श्वर श्वर श्वर श्वर प्रत के क ब्रुंच-व-द्रे-र्ना-४-विर-अवस्य पश्चि-ध्रीय-रन-द्रव-पर्च-इयाच्य-पर्चन दे हिलामम् ज्ञान हे जिन पर्त्रेलाय न्य के लिला मि ने से बादी है वान वरक्रा मन्दितः त्राप्त वर्षा "म्राप्त वर्षा मन्द्रमा वर्षा वर्षे वर्षा वर्षे वर्षे

<sup>(</sup>इबाबर र्ट्य मेल वे. यूर में न गर्य 90)

अर्डेन वया रेता श्रीत सम्बद्ध महिता मी द्वाप तम्द्र मही द्वाप तम्द्र मान क्रिया दे अन्या भु न्या भू नया क्रिया क्रिया विष्या हो न्या है । यह । **द.७७.५%, २७००. १६८. शैर.८५४५ ५४४. शैर.५४% ५४५०. १५५** नगतःतुरःनन<u>्श्व</u>ापःमलुदःसःसर्ह्मःन्दःसुम्सःवर्द्रःम्रेगःश्चेतःः बर्द्र-हुर-बॅरावधुर-ब्रॅरा मॅद्र-ब्र-हेव-पॅर-मरीर-हुव-ब्रुट्र-्मग्रातःभेग्-धेतःसेनयःश्रयः नदः ग्रेतः द्रयः तस्यः तुः क्रनः श्रेतः ययः त्रेदः । त्ववः लु न्वीत् न्वेतः कुर सदः दर्शेयः ह्वा न्वरः छे यः हेरः व ठेवः वैवःचग्यः जुरः यश्रदः ञ्चाः च वैदः <u>ज्ञाः चरः ब्रे</u>रः वयः ज्ञेरः यञ्जेदः । "® वेषः न्राया ह्या केंद्र विद्रायद्या वन्द्र श्रुत्र केंद्र क्रवर श्रुर केंद्र क्रवर श्रुर केंद्र क्रवर श्रुर केंद्र केंद्र क्रवर श्रुर केंद्र रर हुर लेवा वा ता धेव हे इ या बर वरा वरा व दे दे हैं ना र तु पर **"ॐ**राप्ततुव् नेव में राषा क्षाबेदी ह्या यहेव खुन्या मनेवा की प्राप्ता प्राप्ता की स्वाप्ता की स्वाप् यूर-बर्य-बंब्रज-व-र्टा चग्रय-बेर-वनर-झ-र-ट-विब-बेज-<u>वू</u>र-न्गु गः ह्रं व : केव : मॅं : बार्न : कुर : ..... केवारा केव : श्रेन : बेवि : सुव : केवारा शु : .. क्रेनरा नश्चरः ग्रेरा अया नवार्टा यहाया तस्त्र । में दारा श्चरा नदार हे वा मॅं के न्मा के बेव कवा के में मान के मन नुमार में वा ही वापवः द्वरः पठवाववा वार्यरः ध्रमः श्रुम श्रुदः लुवा श्रेवः पष्टुवः संदः वावाः षॅदॱयॱ**ळेव**ॱपॅरः**गुरा**ः५५५ ग्रीःधनाःदद्यः५म्, धुन्नयः*कुराः ......*"@देवः 

र्सम्बरम्बर्धाः विद्याः विद्या

प्रम् अः निर्म् अः निर्म् विद्वा कुर्यं विद्वा विद

3. ୨୩·ギニ·5·「日ニ·ন馬୩·「ニュ 현·원」「ロット」 গ্রান্থ লব প্র বিশ্বর্থ লব প্র বিশ্বরথ লব প্র ব

व्याद्यान्याच्यान् त्यान्याञ्चयान् व्याच्याच्याच्याच्यान्याच्यान् वित्या <u> २८-छ. सब. ५८-४४ पथ. प्र. तपुर. चे. सबूष. तु. खूष. तु. खू. पर्य प्रीय.</u> पर्श. यय. वे. थ्र. वे. वे. श्रुप्त. व्यापर. र्ह्सर. दरा प्राप्त व्याप्त विरामी. **बबायाम्**हॅरायाबद्। बर्देॱक्षराद्यंदाग्री'म्बुदाहायर्डबादर्धम्। न्दा मु-विन्यवेतः तथा श्रेन्यवता मुब्दः भेषा स्वावा ववाषा है। न-र्र-भ्र-्-वञ्चर-पत्तुर-पश्चिष्यार्थण्याः विषयाः वेर्-सर्-वेर्-कु-र्रः----ब्र-र्थ्यन्तः नियः क्षेत्रया ने क्ष्यं न्यान्यम् न्यान् न्यान् क्ष्यं न्यान्यम् तर्भः नृतः। विदः नृष्यः नृष्यं नृत्रं वा गुवः सुवः स्रे नृषः रूपः दिनः बे.पै.रे.प्रस्त्रा, विरादे, व्र. बे.प्रस्ति व्याप्त करा है. है या है. न्ने त्राञ्चन्यान्ना न्नेव केवान् गार्यम्या वया ग्रम् नुना क्रुरान्सून लामव्यान्ती कु में र तमें तहें व इयल नगत नग्र ल में म व्या में र मी हनान्**ठें** वर्नेद्रः इ.स.मुत्यः स.तु. यद्यरः पश्चेरः ग्रीतः त्रेरः कः व्रेरः ५ हतः শৢঢ়ৼ৾৻ঢ়য়৽৻ৼয়য়৽ৼয়য়ৢ৽ঢ়য়৽য়য়৻৽য়ৢয়৽ড়৽ড়ৼ৻ৼ৽য়৽ৼয়ৼৼৼৼৼ৽৽৽৽ नक्षं मल्या व्या व्यापाय व्यापाय विश्वेष्य विश्वेष्य विश्वेष्य विश्वेष्य विश्वेष्य विश्वेष्य विश्वेष्य विश्वेषय द्रवाया। प्रस्टा द्राया ह्याया श्री या 1863 स्ट्राई स्वा स्वर श्री श्री स्वा ने बेयातपु क्रियान्तु के वा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा प्रमाणका विया में बर्ने न्दा इर हरा इंस्ता दे विका कर बर्ग न्यय मृत्रवाता व्याधायान् वर्षा पश्च पर्वे त्यान्तः वर्षः वर्षा देवे पर्वे त्यान्ते त्यान्ते त्यान्ते त्यान्ते त्यान्ते त्यान

क्रिनः श्रुं प्रस्ति विकास वि

ষ্ট্র'ম' 1864 দ্ব'.পুম'ট্র'ম্র'.স্ল'ন'ন্র্র'ম্র'ক্রম'ন স্কু'শ্রারম'''' *ढ़ॖऀज़*ॱॹॱॴॶ॔॔॔॔ॴॱॴॴॱॸॎ८ॱॹऀॱॾॕॱॸॕॱॸऀज़ॱॻॕॱक़॓ढ़ऀॱॾॗॗज़ॱख़॒ॸॱऒ॔॔॔ढ़ज़ॱढ़ॾॕज़ॱॱॱ ष्ट्रि:तुरःक्रे:हुनःत्त्रं तत्रदः अष्टिकः रमःद्वरः धुनः मैकायविकः ये वहंदः ..... तृ त्यते न्त्रा यदे यळेषा ह्या ये दे से रे केर र प न हु र वी प स्वार त्तुष:प्रवे**रा:ग्रे**:ब्रह्न:क्रू:ब्रह्न:प्रवा:क्रिन:पञ्चिद्या स-रेते.च्र-त्त्राच्यात्राच्यात्राच्यात्रेत्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात् शुवार्मे होन् हो त्ववादाष्ठर व तिरावार विदान विदार वा विदाय वर स्वावार स्वावार ववर ग्रेयार्वे र तु श्वेराष्ट्रे म वैया हर सुव ग्रुय र मादा हरा श्वराण <u> चिर्यसः सः तर्वः स्वर्ति स्वर्ति । सः न्दः स्वर्ताः सः स्वर्त्तः सः स्वर्त्ते । सः स्वर्त्ताः सः स्वर्त्ताः सः स्वर्ताः सः स्वर्ताः सः स्वर्ताः सः स्वर्ताः सः स्वर्ताः सः स्वर्ताः सः</u> क्रिया पर्वतः श्रीपया वि. परीया पर्चे राक्षरा श्रीयाया श्रीया पापरा हेया ...... नश्चरमः र्यम्या इयावरातु म्यायायायाया ॥ वारात्मायाये छ म नवेय.वेद.ग्री.पक्ष.पह्रदेग्नथर.पश्चेत्.श्चर.पा विषय.क्रट.क्र्य. श्चिरः केदः यं रः खरः लुः नृरः। ष्रयः मदः लः सरः लुः मरु राः स्वाः नृयः

पञ्चल" ऐ देशात्रिं न्याक्ष्रातृ त्यते हा अवळेषान् नु रान् सुरादा अः नर-पहेब-झ्वा-स्वाय-श्रीन्-भ्रुट-वायर-पश्च-वाबट-कुटे-भ्रूर-य-यय-भ्रय-पचरःवव,कूथःश्चेरःजातिरःविदुःशःच्वःररः। श्चेरःश्चेरःबयरःयःगश्च. नवनानवरःस्विता वर् नेर् नव नेरा अया नव ता त तिया क्रि सर वि स स्याचर वरः त्रापः ने वि के वा ने रात्मा ने वा कू वि त्रा वा वा के वा व वा वहें बर्चे द्वा अष्ठिव र न न न न र खु वा त्या वहे बर त्या ही व न वा वहे वा वा म्द्र-भ्रुट्र-ग्वर-र्न्वयायथे नग्वर-पश्चर-पश्चरायद्वामायायया "र्दर् ग्रे श्रेर् द्व जुल र परा "बेर परे वर श्रेरा थ भूर । " भे हुग য়ৢ৾৽ঀয়ৼ৻য়ঢ়ৢড়৽ৼঀ৽ৼঢ়ৼৼৢ৾য়৸য়৽য়ৢ৽য়য়৸য়য়৽য়য়৸য়৽ৼৼ৽ঢ়ড়য়৽য়ৢয়৾৽ <del>ॅॅ</del>न्यःश्चेन्ॱश्चॅन्यं सुन्यः तषुरः यहे यः न्वॅयःश्चन्यः **८ह्**ना लुयः यः वयः **ः** चवेषाश्चिषाळेषाकेरान्तु केदाचग्रादा मुद्दा सहसान्ता दर्दाया चवेषा .... *ॸ्ॸॱ*ढ़ॹ॓ॺॱॸॺॱळॸॱॹऀॸ्ॱॹॖऀॱॿॖॖॺॺॱढ़ॺढ़ॱॸढ़॓ॺऻॎॗ"ऀऀऀॿ॓ॸॱॸॱॸ॓ॱढ़ज़॒ॱॱॱॱ बेव्-धर-हू-सदे-ह्र-अवकॅग्-द्वा-द्वा-प्-व्वव्या-व्या-प्या-प्या-स्-तु------त्रुत्यःमव्हः रृतः त्रेत्यः पङ्गे प्रविषामवहः यः विषाधिवः यः वा वा हः तुमः इयः वरातुः "कॅषाश्चेन् त्यत्रे वरायतः श्चेर् मेणतः श्चेनाश्चेर वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व हुर ऑस्या वहें व रेव में के व या बहर हु में स वा केव में र मे येर क्रव " ब्रुवः पर्वः प्रगृतः धेनः श्वेनः येपकः नृतः पश्चवः यहनः व्युः धेवः वृत्रः। व्ययः नवः इव कुरावरा न्याररा वेव त्या र्वे निर्मेर कु अर प्रोय हर

<sup>🛈 (</sup>इबाधर दूरल वेला वे लिंद वेण ग्रंदल 121)

<sup>@(</sup>देव-देवे अदं क.धर-१व.42)

प्रति-प्रति-प्रति-क्ष्रिया निर्मा क्ष्रिया निर्मा निर्मा निर्मा क्ष्रिया निर्मा नि

ॻ(दवावर द्रवातिस्के ऑर मेंग्जरवा 122)

<sup>@(</sup>वृ लदे व् बदे ब्बाबर वृ भिष्देग हैं व 217)

## ग्राया राम्बार विकास

न्यम् देवानी रियाममा हा प्राप्ता विराम विराम विराम विराम वाराम वयाञ्चरः धरः कु न्यवः "वेः ध्रयः सुतः स्त्रान् र व्यवः न्रः वरुषः न्रुषः वहन वुर्-धर-८ हरा ह्रेन किरामुलार पर्या ग्रे खेर्-मृत्र-मृत्राप्यरा ग्रे अर तुर्क्षर (इरावातुर) मे तुर्वे निर्वे ने व्यवाप्टर कुला प्रा हर्ने मु कि कुया सह द रेद केद अदर न्यम इरल हे म विम्ता तरेग्र कु 'यय पर्वित द्वा प्रक्रूं कें या कुर र्वेत परि प्रम्य प्रम्य प्रमान देन्। "ऐडेल-न्लल-न-न्म्। अन्त-न्यंत्र-वि-श्चेत्र-पल श्वे-विन्ने-मन् <u> न्यमामील झॅंगाुव वराधर र्सेल शुमल केव छल हेम हॅं में रूर्रा प्रा</u> র্মুন্-ব্যা-শ্রুন্। ত্রনা-স্কু-দিরে-ব্যা-শ্রুন-র্মান্য বানব্র-দেন্-**ইম-দেন্র** न्नर्यायवरान्नाय यतुव यदे वरा वर्मे द.स. इस मिया मी कि. नद. बाष्ट्र-दर्जन्तुम् क्षेर्-दे-वदः हॅदः चेर-पदै-बद्यदः पक्षंट-वरायम् नः " क्षान्त्रा रवः रेटवः ग्रे : हवा वा वे विवा विवा विवा वे विदे द्वा होत् सरः पहेक्'लॅ'नेते. त्त्र'प्रचित्रायते. कें लान केना केवा केवा स्टर्म व्यापरात्रा के प्रचुवः । है वर्षेव इयाय तु रूटा बिच.ड्री ल.स्बा.पर्याश्च.पर्वे.स्ब. त्यतः १वः १वः गृहेयः हु : गृह्यतः पश्चेषः पहरः परः ग्रम् व। हे : दह्यतः क्षेग् खरामवर्षा ठर् क्षेरा वर्षे क्षेर देरा क्रिय रहे पर पर्य करा बलारगदान्डे विवलादियानु कुर्वा वहताद में बलाइका हे खन देराने वैदः कः देः विदः यह गुरा यह राष्ट्रेषः यह दा विदः यदः यदेः यदः

<sup>(</sup>तू प्रति ञ्च यते द्वाप्तर वर् विष् देव देव देव 217 — 218)

**५८। "**ञ्चन्या कर्स्यर समान्तु नेयया १ ज्ञेन वमान्य वास्त्र न पञ्चत्यं स्या द्वरे श्चिष्यं स्या प्रमृतः श्चरं हे देव शुपाया देवा मःमहैकायदैः हमः मदक्षा चमादः भ्रुंदः सुद्र ह्रम्याः (सुःस्टः) हेः द्वरः ¥-£x-२&:4:46%x42;54.44%x44;44.44%x44;44.44%x44;44.44%x44;44.44%x44;44.44%x44;44.44%x44;44.44%x444,44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444,44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444,44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444,44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444,44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444,44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444;44.44%x444,44%x444;44.44%x444,44%x444,44%x444,44%x444,44%x444,44%x444,44%x444,44%x444,44%x44 म्बेश्राश्चाम्बर् हित क्ष्री यगत ह्रवा स्वार ह्रवा स्वर स्वर प्राप्त स्वर त्या क्ष इते क्षे सद्द्रा श्वेष्ठा सम्ब में क्षे पवर दिवर में के न्द्रभी के दिरास्त्र नवराल्य ने वात्र न्द्र के प्रताय हे निवाय हू : इ. बरे : में वेया वर्ग : वर्ग : इरे : इरे : इरे : देर : देव : वर : इरे : ब्रॅं'बर्दरण न्युकास्टरन्येदावि ब्रॅंदाया ५८ हेरादेवाया म्बेरामदे म्यान्य स्रोहि कुर्द्र महिम अप्व स्रुट्र वया अप्र चिलाबक्ष्यालाङ्गास्त्रम् याद्विनाम् स्वाप्ता स्वाप्तास्य स्वाप्तास मुल<sup>-</sup>र्स् : हेर:रेब:य:बाह्यब:यदे:हॅग गवरा ५८वा:बर्द:र्**यंव:बर्** बाष्ट्राक्टे न्वराक्ष्रास्त्रार्थः देवाया नशुकायदे किंगान्ता साम्राह्मे साम्राह्म बर्देरला प्रदासद्वानु देन्यायायात श्रुप्ता हेर हेर देश या न श्रुया पदि हिंग नविया द्वियान्यवा तुरावर ख्रात्य पराक्रवा केवा वेर सुरा देवा था मह्यस्पर्वः मृत्याम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् वर्षाम् मृत्यम् मृत्यम् मृत्यम् मृत्यम् मृत्यम् स्वरम् २. तमु क्रि. मधियात्रया में वास् में वास्य में वास वास ता स्वास वास है . ... नवरात्यर प्राप्ति वर्षे रक्षात्र नवा क्षा यव स्वर स्वर मुक्ता महिमार ना न व्यानग्रान्त्रुरान्ड्यानान् न्यास्ययाक्त्र्रियागुराग्रीयासुरात्वन वृषा मूर्यः क्रेवः मूरः स्वायः ५५५ मु : ध्वाः ५ क्यः वृषा 🛈 वृषः ५ व्हिन्यः

①(ব্রাধ্নান্থ্রান্ত্রার্থারে ব্রাধ্নান্থ্রার্থারে নার্থারে নার্থার

क्रूर-वियःक्ष्यंथःभ्रेषः ।व्राप्तरः स्रह्वः क्र्राः क्रूर-वियःक्ष्यंथःभ्रेषः ।व्राप्तरः स्रह्वः क्र्राः व्राप्तः ।व्राप्तः ।व्राप्तः ।व्राप्तः ।व्राप्तः ।व्राप्तः

1867 मॅन्:रव:बुर:वर्ष:ख्यि:यं:न्रःमं:बे:ळ्याञ्च:व:न्रःमंदे "ळेळ:वर्षु:वृद्ध्याञ्चेद्र। वृवा:श्रेन्:न्यव: ववा:येव्यःयर:कॅन्:यर:कॅन्: बामन्वा:यं:केव्:यं:व्यःकॅन्:यः

प्तिन्त्र वि क्षेत्र व्या क्षेत्र प्रत्य प्

क्र-देते. इर-श्-नर्थ-तर्थ श्री न्या क्रिय-व्या क्रिय-व

① (नृद्यः नेवा वे प्यदः नेव श्वद्यः 139)

Àv 20444. £, 22£. 2x. 48x वया चेरा श्रेन्या विनया धर् **ढ़ॖॱ(ॸॺॱ)॓ॴॱक़ॕढ़ॱढ़ॺॱॸऀॺॱय़ॸॱॸॄॸढ़ॱढ़ॖॺॱ**य़ॺॱॺढ़ॺॱॺॕॱॺॕॸॱक़ॆॱॸढ़ऀॱॱॱ <u>५८। इनल २.प.जूबल वय छुरा इरा इराज</u>ल झे.डी.ब.वय. सुदःचग्रदः ह्रॅवा ई रहू : ह्रदे : हे : ख्रं युवा व व व या यहा या प्राप्त व व या यहा या या या या या या या या या **इ**८ वे ४५ - दु ४ अथेनरा ग्रेष ५ दु व व अ के द के बे ब र हो ब र ग्रे हे ८ दु ..... मन्द्र-इत्राने वर्ळेन् त्रुवा अयानदायेनरा मुद्रायहवान्त है मॅर्-रायळॅर्-ऍव-र्रा इं-इंग्-ह्या चग्रत-सुर-शे-र्यः **पठकान्न मार्या केन् कॅम सुना २५५ क्रिन मार्या क्रिन स्टार्स मार्या केन्या केन्या मार्या केन्या केन** मराष्ट्रन द्रान्द्रया हवा केदा कें मुना हु न सुना महे सामहिता सम **पदः र्थन्यः कुः न्धेद**ारमः दयः में रः राः अक्रमः यः यहयः न्रः सुर्या (য়ৢ৾৴৽য়ৣ৾৴৽য়৾৽য়ৢঀ৽য়৽য়৴)ঀয়৽য়ঀ৽য়ড়য়৽ঢ়ৼয়ড়য়৽ঢ়৽য়ৼয়৽ঢ়৴৽৽৽৽ हेव-मशुब्र-सुत्य-स-सम्बद्ध-स्यव-पिय-मी-मवर-क-र्रः। मेर-स-बर्द्र-**ऍद**-पःश्चे:र्गः इयरावयाग्ररः यहतार्तरः तत्तारवियानग्वः देवः ...... पश्चरत्राःगवदःद्वःश्वराचत्रद्वाः श्वराध्याः व्यत्याः प्रताचितः श्वराधेतः देवः पर वर्द्र। "किता न्याय पर्द्वा वयके के दि केट केट वर कर सुर য়৴য়৴য়ৢ৽য়ৢ৴য়ৣঢ়য়ৢ৽য়ৼঢ়ৼয়৽ঢ়৽য়৽ঢ়ঢ়৽য়য়য়৴য়য়য়৽য়য়য়৽য়য়য়৽য়য়য়৽৽৽৽৽৽

<sup>(</sup>इबाधरान्द्रा नेवाबे रहा नेवा ग्राह्य 141)

4. न्ययः च्र्रं न्यायः ग्रीः त्रः च्रेनः च्राः च्रेनः च्र

म्हर्मे के हिर्मे त्या है निर्मे हैं के निर्मे के कि निर्मे के हिर्मे कि निर्मे के हिर्मे कि निर्मे के कि निर्मे कि निर्मे के कि निर्मे कि निर्मे कि निर्मे के कि निर्मे कि

शु-श्चित्रायाः वात्त्र दिवदः श्वायाः ग्रदः केष् सं हितः वरः ग्रव्या विदः ताः देवा वंद्रशः मु देवा व्यदः स्ति । स्ति वंद्रा हिवा दिनः विवादा केवा संदर्भ । श्चित्रः वर्षाः व ह्रियः व ह्रित्रः व हित्रः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः क्षार्यक्षा के रामा क्षेत्र रेश पक्षर हिराय दिराय रहा वा वि वि रिया रहा वा वि वि रिया रहा वा वि यम्याः सदः नितः केन् नि में दारेयायान विदायन विवासे राज्या विद्रारा भैवा पर्श्ववाता हे 'तेर 'श्रु' न्यॅद' भैवाता वि म्ला द्वापा वि म्ला खेता हु 'न्वें**रा** रैषायाक्षरायान्या प्रवेराकन् यने नाम्बेयामधे ग्रेयायकर विवासहें द्राः म.केर.कूव. शक्य. व्या. वया. वर्ष र. कुयार्वन निर्मा व्याप्त प्राप्त प्राप्त ष्ट्रित्तः भेगा नर्द्धगता सन्दर्भ देवे दि दर्भ गाउँ तर र द्वार स्वर देव गुन रदः ल. नक्षें नव्या चेया वया खद्याने दे त्यया वया यय राम हे ने नित्या [म·रेकाहे कृरः वर्षेत् र्वेकाहिरः यः देकायर | "कुँगार्थः" चेरः वर्षेत्रः ঘশ্ব-বের্থাশ-উঅ-ঘর্ব-ঘ-অ-লব্। ই-মে-বের্ম-ঘর্ব-ট্র-রেঝা <u>इ.स.चेबिट.मु.जयाम. ५.मूच. २ य. ५च. ३४८५ प्र.पम्. ५४५ मूच</u> दे.र्ड. वृष: विष: पर: परा विष्य: की. पर्यः रेडा कि. प्रेच की. विषय: विषय: विषय: ৭ বিদ্ : অদ্ : ইকানইদ্ : ব্রুকা অদকা গ্রাম্বাকা গ্রাদ্ধা नदः नेदः वयः वेदः ८६म्'डेर्-यःश्रॅट्न ययाष्ट्रदर्ने न्युंन्यावयाष्ट्रे वरायवाष्ट्रद्यावन् र्राष्ट्रमाविकार्यम्याम्बुरायास्याबुराम्मावास्यान्यास्या पनेर वव र र्रा कर रेग्या कर देन् च्या नेर पन् र र्या ेष्पावरायवाष्ट्ररवाणुः **क्षे** त्यायातुः चरवाक्रेव्रावर्ष्णवायाये वरा वाणवाः गू.रीयाम.र्थयः झरयः पर्वताः है। बिंदिः करं ञ्चः रैयः क्ष्यः कः प्रगानः द्वेद

मदर्शिय व चियान्त्री रसूया वक्तपत्राह्य क्ष्यरमहिराक्षर के विया तह्नाया श्रुत्या द्वरा श्रून् . यंग्रय ग्राह्म . गृत्र . गृत्या स्वर्या स्वर्या यह न्यया . . . . . . . . . . . श्चमा श्चे पा विषय स्वर्म मा स्वर्म स्वरंग स्वर्म स्वरंग स दॅवःगुरःविः नरः यः वेदः नेतुनः चेदः बाववः **छेनः न्देवः यः वदः यदः** यदः यदः य ॱ इंबाप्त्रं के निहें राप्ता। वदाकेर बेर् पेन्या गुराकर **हेना नुरु**त्कु चुराने मलुदाकर ज्ञून यरे किंदान चेर जी किंदा दे स्टा चरा मुल्दाल्पला अरामें विनान्दर् नु पक्षापान्दा ने विनामि परा हा चर-खन् अहेर-रूर। दग्रदः कंतः त्रः या र्यम्यः में न्वराम्यः के देशः सर-पत्तर-पानन् श्रु-ल-१८६६ वर्ष-ल-सुन-ल-र-प्रान्द्रन ब्रुवालाञ्च नठराञ्चे विवायम्बार्या नञ्जा रव्या चुरावावठरा नज्जूना विवास **ने'न्याक्कुं'**कृवान्दान्वदाकेन्। कवाश्चिन् ग्री-न्वदाकः नविर.कर्राष्ट्र नयाक्रिया श्रीया श्रीया श्री ह्या रविया वर्षे स्वाप माना न्रॅं १९८२ न्य र न्य र त्य र त्य हुर ही हेर नर्व हैं या र या है हैं नर्य चलमान्द्र-विकर्षे। स्र्नि स्रम्याने देः निवर्षः के म्या स्वापः वर्षः नेवालव नहें व वर के यान्या इवा पर वि परे वि न्यर है की वर्षे म'इ बका रे 'रे 'पदिव 'बेर् 'ध' पर्वे ' व्यक्त वुका धर मा विका प्रिय वि वन्दर्रित्रद्वानीत्वन्द्वन् विष्ठित्त्वन् विष्ट्रत्वन् इद्दूर्वर प्रम्याय पर्टर इयाच्याय क्षेत्र विश्वयाविता द्वा विपानेर स्त्रा नर लब ने ने ने में ने प्रति तथ तथ र दर के हे द विया स्वरा न्त्रार्यर तह्यत दुव कुरातु ह्य कुर् अपन्त बर्य द्रिन्द्वन ...

- प्रत्याद्या वृद्धेन दे क्षेत्र क्षेत्र विस् । दे द्या की वृद्धे अप्य क्षात्रराष्ट्राक्षे क्षे वाष्ट्रान्या स्वार्द्रवाश्चरायातु ,यद्द्रक्षुवया वर्ष्ट्रया विराष्ट्रमया विराधारा विषय विषय विराधार विषय विराधार विषय विराधार विषय विराधार विषय विराधार विषय विराधार विषय रदः वी नव्यव सः त्यु नः पदे र वाया हूरः श्रुरः देवाव ग्रीवः सु खिदः सः विव्यवः व्यार्थनामदी व्यवस्तर मु : बेदाया व्यवस्य ब्रैट.भुवे.ज.भूरे.क्षेट्य.ब्र.पट.च.परीच ग्रेचेय.क्ष.चप्र.चर्चर.क्षेत्र. द्वर-व-र्मण-६व-र्मव-शुन-शुन-र्श्वन-र्श्वन-र्श्व-स्व-स्व-स्व-स्व-स्व-बः बुना क्षेत्रः ह्रेटः क्ष्ट्रः त्या पहरः क्षेत्रः सुनः स्वनः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः त्य श्रेन्यान्त्रं न्यूयावेयावित्र्यन्यन्त्रा ह्रान्यंवा ग्रेयायाया मञ्जूलायाः बुकारम्या सदायाः सुना न्यायम्या सुना स्वारी सुन्धारायाः स्टाला पक्षेत्रभ्रम्या सः सराया गरा क्षेत्रः ध्याया श्री स्टारा भेवा व्या वितः <del>ঀৢয়৾৻ৢঽয়৽ঀৢয়ৢঢ়য়৽ঀয়৽ৠৢয়৽</del>য়য়৽ৠৢয়৽ৼঢ়৽৴ঢ়ঢ়৽য়য়ৼ৽ঀঢ়য়৽ঀৢড়য় चयःपदेः हेरः वयः विरः ररः वी सु . विषाः यर् सदरः यत्रयः सु . दवेषः वयः सु ला क्षेत्रता रा नेत् चेता विष्य हिया मालवा हिया में वा शुम्य विषय हिया मालवा हिया हिया मालवा हिया है वा शुम्य ঢ়ৢ৵৽য়ৼ৾৾৽ঢ়৻ৼঢ়ৢ৾৽য়ৼয়৽য়ৢ৵৽য়৽৻ড়ৢ৾ৼ৽ঀয়৽ঀঢ়য়৽য়৻য়য়৽য়য়৽ঢ়য়৽য়৽৽৽ भेट.च दिर.ब.इ बरा नग्रेल.बराई.ज.बन्।च.च.च,चराहे नवार हे .च हुन हुने च हुन. वयातहराश्चेना नक्ष्या श्वरा श्वरामा वा हेरा निया श्वरामा निया वर्षा पार हो व रहे ' चर्या प्रमुद्द र पश्चित्र व राष्ट्र है र पार हेत् । चेत्र हर दिराया र्याया इव देव शुन श्री मार्वे र तके स्वा वका श्रेर व्या वेयका क्रि.वी.पर्य

म्बद्गायरः स्वत्रार्देरः क्षायरः स्वर्ग्यदे नग्वरः स्वर्ग्यः यदेवि बर्व बाबहें द्वां पा केषा न्यर हें भेर ने बा व्यत् के में बा धेव पर " यहेब्रिक्रिया अप्रान्ध्या स्वार्द्व स्वाया न में प्राय्य विष्यार्थ न स्वार्थ प्राय्य प्रायः प्राय पर्म दे.लपट. व्रमा अपु.पम् ला पह्ला विटा वेट्या दें ता विकार श्चिरः सम्बद्धः स्वायः विषः स्वरः नश्चः हिला श्चः तर् ना तम् वा विषा तर्म न्येर व त्वा व दहें व हुर हुव अंद वा राष्ट्र हुव मैं भु क्षेत्र खमा अहें रारे यह रार्धियार देवा ग्री खम्बा शु यह वा ग्री यहा *ज़ॆज़*ॱॺऄॺॱय़ॺढ़ॎॺॱॳढ़ढ़ॱॿॖॹॱऄ॒॔॔॔॔॔॔ॻॾॏॹख़ऀ॔॔॔॔॔॔ढ़ऄ॒॔॔॔ऄॗॕ॔॔॔ढ़ॱॴ॔॔॔ऄढ़ॱॶॗ॔॔॔॔॔॔ बुर-वेनव-वरा-धुर-वन-भ्रनवा दन्नन-वर्गनान-भ्रव-बळ्ळ-श्र-नव-श्चेर-श्चेर-त्य-र **बॅर**क-वर्श्नेर-लि.कै. **ब्रिय-पर्ड्-र-त-क्षे-र-** कि.वी.के.के.लट-पश्चेर-म्इबःक्ट्रानु तर्हुताव्यार्श्वन् क्रुंटाक्ट्रेन्डु माला ষ্ট্র-এন অনব र्वते च र्श्वेन् न्नान् त्या यह ने ने ने त्या यह ने त्या यह ने विकास में त्र त्या यह ने विकास में त्र त्या विकास में त्या विकास लट. बुद्र-नृष् वनरा श्वेय भी अर्-न्य क्षेत्र सा प्रतिन व न हें से भी. ८छर:बुन्यान् क्रान्टायार् देवायाःबुन्यान् नवाःक्ष्याःबेयाः । विकास न्यतार्वेष् तालक्रावञ्चलामणास्यालाञ्च क्ष्यायार्वे न्या

भी, तथ्र ८. तट्रे. कुबे. त्. ट्रे. चोड्रेथ. त. ट्रट. वि. प्य. प्रचेत. तथ्य वि. प्य. तट्र. व्या. व्या. त्या. व्या. त्या. व्या. व्या.

**८.४८.**४ वे थ. ह. ५ व. म. क. त्या थ. तप्त. त. ५ . १ वे ८ . ४ व दे वहा दे यद्र'विषाः सारेन् प्रकाः "विषामनन् याने विष्णां में वावी अनवाने नामू 'यदे ञ्च : वा व भ्रेष : व्यक्त : वाळे वा न्दः प्र केष वा न क्षु न : वा व्यक्त स्व : प्र वा वा वा वा वा वा वा वा वा व **ड्डमाम्बेड्रेकामा सुरदास संदेशका ह्या मार्च मा** तु.पवनावयारसुराष्ट्रेखाः कु.र्टा इरि.श्चेटानीर्घटाकः यस्नावयाः वि रदः गड़े यानग्रदः दगाने हे दान् उ रहे दान प्रदे सु नक्षा ने नगु सा **चंदे**-षि.च.५.५धिर.चेथ.६वे.६.कुव.झेल.वे.केंदु,श्रवेद.भेंज.दुवे.वेथ.... वा <sup>क</sup>र्न्न ग्री:रम्म्सकः इसेव ज्ञुरन्ने वेव ग्री: नवर्न्न ना वेर्ने सेर्ने धेवासराग्रम्य। वर्षे क्षाप्राप्तां स्वाप्तर्भाग्यत्र में देवारे हेम्याव्या बन् ग्रा "म् भारते ने त्र दि म् राया है है स्वार् प्यम हेन वामन यं व्यागुर-न्में रयाया ने क्षानु उत्तर यायाय वे या से गया नवरा। " बेक्यपन् भूपल विवा कु कु बेक्य मन् में केव में बेग प्रमन् दे। दक विनयः मन् भी मिनामाना सुन् के विनामस्य पा धेवा ने वायाने वह न ला श्रेन . इया अवस्य स्मानित स्वा भिरा विष्य भिरा विषय स्वा भिरा ने यहा <del>য়</del>ॱऄ॔৾৾৾৴৽ঢ়ৼঢ়৾৾য়৽ৠয়৽য়য়৾৾ঢ়৽ঢ়ড়ঢ়৽য়৽য়৾ৼ৽৾য়ৼ৾৾ঢ়

प्राचित्राच्या स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान स्थान्य स्थान स्थान्य स्था

न न न : र्ह्या न व व : विन : वे : न म न : र्व : र्व : त्यू न : ग्री रा : व्य न न म व : न श्चेग.क.स्ट.ल्ट.तप्ट.श्च.बया ग्रीन के. अक्रम श्रीर मी. श्रीर मार **ग्रीर** चकुवःवलः श्रॅःश्चेदःवहदः श्रेष्टगादः श्रंवः व द्रं ःश्रं वः वर्षेवः व व द्रं र् য়ৢয়য়৽য়৽ঀৢয়৽য়৽ড়৽য়য়য়ড়ৼৼৼ৾য়য়৽ঀৢয়৽৽য়ৣৼ৽য়ৼ৽য়৽য়ৢয়৽য়ৼ৽য়**৽ৼ৽** मॅं रे चुका क्का क्षेत्र व्याया यह हारा प्राप्त का श्रीया श्रीय की प्राप्त का की प्राप्त का की प्राप्त का की प क्षेत्र:प्रमा:श्रमकः मर्थर:द्वेदे: मृत्य:रु:श्रेमक:रुका:अन्य: स्रका:य**स:श्रं**पः न्यंद्र-न्यं न्यु-स्कुर-विद्रा श्रु-कुर-म्रा-रंग-वेनवायदे श्रेर-कुन्य मञ्चलायान्द्रा क्रांतु वावायाया क्षेत्र इ वाया दे वावादार ना वदा <u>⋛</u>祝ୄୄୠॱॡॱज़ढ़ॆॱॻ**ॸॱऄॣ॔ॸॱढ़ढ़ॱॻऄ॔ढ़ॱॻॱॻ**ॹॗॗॸॖॱॸऀॺॱय़ढ़ऀढ़ॱॴॶॱॻ॒**ॴज़ॱठढ़ॱ** दे वह दें प्रति इ न्या धेव पर दें ने या है नि व या है या पश्चर पर राजा त्र्न् पानेन् छेला चेन वाधाने हेला खाने का में राष्ट्र विकास का विकास का विकास का विकास का विकास का विकास का व बद्ध क्षे मार्या विद्वित्। वद्वि विद्वा विद्व विद्वा विद्व विद्वा विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्य विद्या विद्या विद्या विद्या विद्य विद्या विद्य विद्या वि अळ ॱक्षं न्यः न्वायुन् ळे न्वेट्न्ने अन् ग्री अव ग्यायन्यवे व्यविदानिका -<u>ने संज्ञ के ज्ञान के ज्ञान कर ने अपने ज्ञान के ज्ञान के</u> म इम्या श्रुर विद्यार काम श्रुरक श्रुर।

न्द्रक्रर्द्रम्याः इत्र त्त्र्यायः विकायक्षे क्षां तास्त्र राष्ट्रस्य क्षेत्राः

म्बर्-यहर्म्य देन र्देव न्देव मुक्त स्वर्म हिम् सुर् व्यास्य स्वर्माय धेव हिर् हेल.चग्रतः व्रवः ब्रह्मः चः क्रुवः य द्वाः श्रुवः श्र्वः देवः चर्वेवः श्रेदः व्रवः श्र ळ्याया चुराया न्या दे केवा ची मल्दाल्यया मल्दार्या समारा लेगा ग्रैट. बंद. श्रंट. क. ब्रेट. ट. क्रैंट. त. ईंब. श्रंट तत्त. दंब. ह्व. ग्रंच. ग्रेंब. नर्टात्याक श्रुराञ्जेया गर्यर स्वामानक्या र्वा ग्रुव देवा ह्वा स्वाया श्चिर्-श्चिर-वे द्वा-मेका वि न्यते च र्श्चेर्-श्चे खर्या दे त्य तः नव यहेवः क्रेच्या विराविरा दे तहाया तहाया श्रुर्या हिरा तमा है तहाया र्रः वे दुन ररः ने दुन बहर् प्रक्रायः र्रे द्वारा बळवः व र्रा ररः यः गु । १रः प्रदःव्यादहेव् प्रतृतः द्वायः श्रु त्यते क्रितः व्याप्तरः दे राष्ट्रः राष्ट्रः व विव म्लुराय हेतात त्या न में वा पर्ये न में न्य दे वारा कं विव न वरा न \$~.其.異.異.など、知. 日. ととまる. ロヨと. ヨか. れ. とと. 24. a 発とか. नगायः भ्रेंत् इययः न्रः भ्रुः नठरः श्रुः वावतः यरः विवायः भ्र्नः वा नेयः हरः नुः विवयः नृष्या ग्री वह दे मावदः विदः। न्ययः स्वः द्वः ग्रुवः ख्यायः वहेवः 다 명 다 명 다 한 다 한 다 의 한 의 दिन्दः रदः अद्भदः अः मृ इत् धरः श्रुं गुरुः मृ हे गुरुः मग्दः श्रुं वि वि मृतः भि । श्रुं वि वि वि वि वि वि वि इट्-र्यट् वैन्-क्रेट्-बन्बाविर्-ख-स्न-र्य-न्य-र-पठयायक्र निर्देशका विकारी किया रे बार किया रे ब्रिया रे ब्रिया प्रतास किया विक्षित्रेक्षान्याम् द्वान्यं विक्षान्य निवास्य विकासित्रं क्षेत्र विदान्य निवास्य वि.क. मुब्द वेथा मानहरामा सामर्। र्याय विव वि. श्रीर विवे देशामा अवस्थान वयाता प्रचित्र प्रकार मान्य

**षयानवः सः नग्रः नश्रुरः ग्रीराः क्षः रारः यदः परिः ग्रुः वदः न् वतः द्रवनः यदः व्य**न्त्यार्थान्न्यान्त्रम् वर्षान्त्रम् वर्षान्य वर्षाः विष्याः विष्यः त्रवतात्ती.स्यार्थवा.मिट्राचर्त्रेट्यार्ट्स्यायह्र्या क्ष्या.तर ते'र-न्मॅद्र-पन्द्रवाने'स्र-द्रान्चेद-न्न्रम्याग्री'त्रम्यावी'न्द-पठयायः.... नश्चलान्द्रकाञ्चरकाञ्चेकाक्षेत्रान्यम् व्यत्यान्यस्यान्यस्य दॅवः गुरः न् मृतः व्हेवः नृ व्वेवः यः त्रे ः श्च मृः देशः क्षमृषः वा राज्यः व राजः या वा रोटः । वहं वार्गावायार्या र्वेदाग्द्रायाम् रूपियार्थाः विष् रे विना न्यन न्युर नेया यहत पर्व स्यान्य मान्य प्राप्त माने न्या । द्व-द्व-श्व-इय-दिय-द्वय-द्वय-पद-द्व-इद-द्र-। द्वेनय-म्ब् वृगावयातविराक्तान्ता वचताका वानिराह्मवायारम्बाराद्देशया र्बरमञ्जूगल केव में चुरायर गुगल। अनवरित में र्रित्वग केत चेवयानहर नदे क्रिया

> च्यातः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः । न्यान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः । न्यान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः।।

व्याष्ट्रेन् वर्षेत्रः वर्षेत् वर्षेत्रः वर्षेत् वर्येत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्येत् वर्षेत् वर्येत् वर्षेत् वर्षेत् वर्षेत् वर्येत् वर्य नैयाहेयायरेर्'महर'मर'वुद्'बेर'मदे'सुर'मदे'बर्र'बेर्यारुया' वर्षेत्रात्री क्षेत्र वर्ष क्षेत्र वर्ष स्त्रीय वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष ¥ग-रॅग-४८-त-के.ये.वुग-बर्झर-वया र-वियाय-श्रद-पस्ट-रेपट. मगोबी.क्र.परीबी.च्र.पधुब.पक्षत.पक्ष्य.स्ट.चेब.पिट.तपु.सीय.च्र्य. ग्रांभ्राक्ष्रावर् वेर् देराम्बुरार्वण्युरावे जरावठरा स्ट.कंचथ.व्र.त. व.वे.च.चचथ.चर.ग्रीथ.ल.स्वे.च.चच्च.त्र.र.र.च हेथ. मि. इष्ट्र. पाना. तर् छ न्य. व. के ने . त्र . र मी. श्रेर. की. पाय. शरी मथार्-रर-विश्वेयात्रव द्वेदाश्चाय्य त्याप्त व्यापक्ष सु दे त्यय द्वा यथै समयाम्वन सेन् हेर न्या के सन्ति मि हूँ न् नु मि नु न ने मि केम मुद्रेय। महायालेयानमुताने यम्वार्यायाचे यात्रायान वर्षाया याते । न्रातके नार्ता र्यतास्वार्वे वाश्चाता श्चे वा शे वर्षद्धाः वाकि न्यः मन्या दे वर्षाः न्यावः स्वान्यदे वर्षे न्यद्याध्याद्याव्याव्यान् भूतालुयाने विषयाधन् मन् मु छ देरान्यर विनान्द्राहि रावे ला सुना संग्या बेट र्ह्मेट नहें दे तन व लेन पठला वर् क्षेत्र.वट्नाकु कु कुरावित्र क्षेत्रयर विवानक्षेत्र वार पुरावा गाना दे न्यामग्दादीय तुरावहम्या ग्री के विषया इयवाया बहुम् वहुवः मार्न् स्वत्रान्ग्राव्यक्तितासम्बद्धाः वासम्बद्धाः वास्याः विवासमा पहेब.नथर.स. इ. इट.र्यट. वैच.जय. वेचय. चेचय.र वैट. वूचे अपर. न्यर ग्रुर प्रे वर्ष के वर्ष के वर्ष में राष्ट्र कर वर्ष दे राष्ट्र कर वर्ष दे राष्ट्र कर वर्ष दे राष्ट्र वर्ष म्चर् छ । प्रत्या सहर्ष त्राम्या स्ट्रिस्त स्

**२ॅव**न्त्रेबन्दरे-ॲ्वरन्तु-लदी-नङ्ग्**न**नेषायदी-इब्राधर-तु-धूर-क्रेब्र-' र्सम्याम् वदार्मा न्राम्परा न्यायाची तत् मा ग्रामा । 1871वर खता सम र्देते ह्वापायहाँ अपवे वदा "ने कृषण ह्वाप्य वर्षे प्रथम इदार्च त्त्राचा है। हमा हा विवया है। विवयं से सिंदा ही देवा हा है दाही ..... इस्रामका द्वारा हे महा (संकाशमहा है) र मुलाहिंगा) है। ईवा व्या सहारा तु विदेशस्य हिन्दिम् स्याप्त स्याप्त विद्यास्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त लामहेब्रासदी:न्वादास्वादुः चेदाराधीवालाद्याः अववा व्यन्तात्वावा ष्यानवःवयःवरःश्चरःश्चरःववयः वयः वरः हिरः तुः सरः न वया 🗸 🗸 **रॅल.त्र.वय.अ.ट** ब.चे.श्र.ल.श्र.ल.श्र.च्य.श्र.च्य.त्य.श्र.च्य.त्य.व्य.च्य.च्य. मृद्धेयामा द्वासु शुद्द पद्ध वया द्वे वा शु कु र दे द र है। ५ सवा से र दा। वे त्वराष्ट्री यु श्राराच्या श्रु श्रु र पर्द्धन्य स्टर दे १ न्या करा दृषे १ न्या द ब्रुंदाळे प्रमान हेवा हे । व्याह्म हिन्द हिन्द वा मानु देवा वा क्षेत्र वा वा विकास हिन्द हो। न्यायानाने व्याप्ते वाक्षेत्र द्वाति वाद्याया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया र्मयास्व र्वे व श्वर के र्वा श्रे की स्व विष धेव मा श्रे म्य स्व दि व द **ইন্জেমান্ত্ৰজীবামিকাকুমানু মিন্নী**বেল্লমান্তকামান্দীন্দ্ৰীমকা**লা** <u> इशः हे 'कॅरःब्वैरः रु 'हू 'यदे 'ब्व'यदे 'क्वं' द छुरः द नवः शुरः ववः य 'डुक्ययः ''</u>

<sup>(</sup>इबाबर दूरल विवाबे कर में न जरल 184)

पटका वळव न कुँ त्रुव

रे विव अन्य देव माल र भेग सम्बद्ध स्था । युरा र्वेव क्रेवः वरे प्यरः वर्षे क्षे र्नरः वर्षेवः वरः व्रियः रुः वृरः वरे स्यः क्षियः ल्राम्यः क्षेत्रः विषाः भवि स्वर्मा देः स्वर्मः विषः विषयः स्वर्माः क्ष-यदे.शु.रनय.र्झ्व.यदे.वर.रेदे.श्लर.शु.च.वर.श्चव.यर.स्...वेय. यर... यः नरः ने में में त्रार्थं वायः स्त्रार्थं ने वायः व्याप्तारः विष् ग्रु:क्रे:र्नर:ई. इ. अक्र्यं.रटा क्रेंप्रावटः नश्र्रः व वर्षाः द पताः द परः यम् न्यू न्यू त्या यध्यः अक्ष्या स्वायः वृत्यः विषयः प्रमुयार्थाक्ष, क्षुया बहु वे. स्व. स्व. ता. इंबर्या ता. केर्नु स्वाब ह्या ांग पदि प्रमाद श्रेम खुरा देव च्हार असारम मी नायव ईसा नम् प्रमा क्षिमा । । । द्र-ऱ्यथा-रथा-यवर-विराम-केर-पन्-विव-श्र-पन्-वा-श्र-रन्-ग्वेर र ग्राय वर्षे र ख्रायेर विकास कर मिर्ट है व के वर से है र र हिर पर न्या छे देन्या इयमान् हेन् यसुन सम्म हे न्यन से त्रुन हेरा ब्रुंट में द्वा म्राह्म प्रायम् प्रमान्त्र विताले व्यान्त्र वित्र विताले वयाय मान्तराचिर्या) त्वराष्ट्र वया पश्चिरातु रते स्वाश्ववाल स्वार्ष्ट्रवा यथर.श्रेषु.वेनथ.केब.पह्ब.र्ट्ट.बेट्थ.पट्चेय्थ.हेर.पक्षेत.हेट. पर्ना ग्रम् म्रास्त्र न्यातः कमा नविषामा न्या। श्रेषः श्रमः स्ट्राम्बेषाः गा छ. १ म. हे. मह्यामा इ. घर. ८ मयः क्र्यान्य स्ट्रेय त्र १ ४ ४ ४ ८ ४ ८ ४ इ दूर धूर वया यथर स्पृष्ट द्वा कुष्ट नामर अहूर छ्या गेवा कुष्ट प्यापर ... एड्नाम्ट्रसः विना स्र्राम्द्रिः वटः नी न्द्रेयारेतः इयया इयान् न्रुः प्र

मलेश्वरक्षर्भात्ता करा क्षेत्रर में नावा ग्रीका तर्द्र र स्वाद्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

द्वाया क्षेत्र व्याप्त व्यापत क्षेत्र व्यापत व्य

**इयाय्येराक्ष्याय्येराक्ष्याय्ये** कॅट्रायायर्वायं केवायं राष्ट्रवार्ष्ट्रवार्ष्ट्रवार्ये वायर्वाया वायर्वाया व्याप्त क्र-द्वार्श्वेदार्श्वरार्थाः श्चादाराष्ट्रात्रायायायायायायायात्रायास्या वहुद्दः केन् श्रेन् श्रेन् विषा श्रुनः तुनः तुन् विष्ठेष् वा वा विष्ठे विष्ठे वा वा विष्ठे विष्ठे वा विष्ठे व नन् भ्रानान्ता स्राप्तारहेवाति तुराविव नरा नगर हुना वठता वकरिवासराधिराधी रसेवाया श्रीहराबीहराया सेवास के दिशुहराया चतु दा मर-देश-विकाश्चिक-देशीद-जू-प्र-क्र-मश्चद-देश-विकास-व। इव-वका मूद-बाकेन पंदि नगदि । न द । यह अया सुर । खन्य महिषा ही मुन्या न न्वा .... **ॻऄऀॱ८८.** क्रि. १८८३ जू. १९८३ क्रि. २ व्रि. ४ व्रे. व्रे. व्रे. ४ व्रे. व्रे. व्रे. व्रे. व्रे. व्रे. व्रे. व्रे. व्रे. व्रे त्र्रत्युन् ह्युनः न्वे प्रते केवा क्रा संस्था ह्या भरा होरा वरा में या का न्या न्द्रेतःश्वराञ्चराञ्चरता मुचेया हुत् देन् हेव् संदे न्द्रित कदे ..... पतु नवः विदे : न्या अधि नवः शु र दे र स्वा गा र दः। विदे र स्व र में र स्व र राधवागा नेते बहुवरु वळें न होवा होगा न मियान्सा में सारा वळेंगा म् त्यर द्वे स्नर् मृत्रा मान्य वा सहतार्र विरायिक्य के सहतु नम्रिना हेव-मृश्या सव-स्रायस्व-य-न्त्र-मृत्विनवायन्-ववायञ्च-हुनः हूनात्मव र्रा इया गुरमा है र क्या द्वा यह सार र स्था ..... स चर-लर-केर-रर-के-प्रता क्रीय-अइ व-लिय-विव-वय-चय-चय-इय ह-···· पर्दे रया.रेय. पत्रेय. श्र्योथ. अष्ट्र. तत्र. हीय. हीय. हीय. प्रियंश ग्रीय. न्याय. ग्रीय. न्याय. विदा ने नवा नग दे हैं न केन निर है । इन रामा वना है या है या निर न **लु 'र्र**' मठरा'र्वे 'ह्रर' र्वर'प्वरे' ळेवरा केव् श्रेर्'वेदे 'सुव' ळेव्रा

न्द्रातुषाग्रीषाक्षेत्रपानश्चरानश्चरषापान्दार्द्रानतुन्वाषाक्षवापदापदा ইন এইব টুর অহমের ব্রস্তুর বা ক্রান্ট্র করের বার্ড করে । ক্রান্ট্র করের বার্ড করে বি बह्यान्त्रास्य वाधिताञ्चना इयान् इत्तान्त्राचा पठल'व्यास्त्र वियापदे ळेव्या शुप्पठन् संन्नन् रल'क्रुव्येर पहें न्रे न्या नियास्यान् व्या कुत होत् इ न्युव र्यावास्याने के के नि वी कर スピー ······ / 直の於文·道口·公共心·為氏·文書如・発仁·2. 多口如·口麗子·夏如···· मया देवायाव में वया यह या न्राहेवा मृतु हा निवे सं सं **वता** सहसार् नर ने सुसावता नुसर् नुष्ठिता नुस्ता मुँ स्वाता से नता हे ता श्रुव भ्रा र्वा राष्ट्र व वश्र सुन् र श्रु द्रा य श्रु व र श्रु व वरः अहेर्रर्रा ई.हरः इवयायाया ने रे पक्ष्या " किया म्रायाना क्षेत्र बेर्या वर्षेत्र श्रीत् श्री सुम्राया मन् नृह्म्य श्री माने स्वर् लर ब्रूट.श.कुथ.तूपु.लर.रट.चग्यु.रश्चर.श्चराक्षयाक्षराक्षरा स्वराख्य न्दरम् धेव द्धंय वदान्द्र केव संया न्याय प्रम् चुया यहुन

1874 वॅर्नेट्रिक्ट्रा वृत्यते च्रायते च्रायते

1875 র্ন্ রিশেশনা শ্রে স্থান্য নারী প্র নারী শেষ করে বি নারী করে বি নারী প্র নারী শ্রে নারী

लास्य न्ता मूराया पर्वार्य केवार्य विराधे ववया विवाय ग्री द्राय छ । ५३४.५३७.५८.५७वथ.लब.५४.४४.सर.१.६०। धूर.अ.५५०.मू ळेव-सं-तर्-हेर्-अर्क्द-ब्री-अर्क्-य-नेव-म्-के-मनेवा मूर-य-अळ्य-वयाग्रीटा बिवाया पड़िटा की इसामा सहरी हुरा। कुया शिया है हो वे क्रियाया सक्रन् तिर क्षेत्र त्य सुन्य दिन नक्षुत्य हेया मृद्य या नन्न सं केद स्रि .... र्मेट्यास्म्याशुःहेटःस्र वयया ठर्षाया नवया न त्रेम्याशुः केवया मञ्जूरा ग्रै**यः** हे **वः इयशः यः सुग्यः ञ्चवः अवः** नयः नत्यः **गवरः नरः।** हें 'देवेः য়ৢ*ଵ*ॱख़॒रॱख़ळॅॸ्ॱय़य़ॖख़ॱढ़ॺॱय़ॸॕ**ॸॱॸॸॱय़**ॿॸॱॺॕॱॺॗॕॗॸ॔ॱय़ढ़ऀॱॿॕॖॿॱख़ख़ॱॱॱॱॱॱ ल्याया भी विषय देवा रमया के हिंगा है मवरा महिनाय है सार्मा के द्वे.र्चे याम्बेरमञ्जेशकारहेव पर्ट्या रूपा हैन पर्टा हैन पर्टा हैन विकास स्.वट-र्डंच-कुर्य-र्थ्य-र्थे-प्रश्ने.पर्वश्वरात्र-श्वर-विश्वरात्रीय-विवादाश्चर-. ध्रवः देरः द्वायहर् । ७ "देवः नवयः वेरः। रे व्यरः नेरः या मेरः वुः विः। অ'ইবআ

<sup>🛈 (</sup>इ ब बर द्रा देव के वेद में व वर व 231)

वयन्तः वदः वत्यायः स्टन्दा "मॅदः वृदेः वि चतु वृतः दरः यः (1875) वेट.सन् ज्ञानः नश्चिमः परे छ्या है सु स्यामेट र मज्ञान द्रारा नकुः महेत्राया केदाया द्यारा वाया है सुति मिना महिया वि समर रहता ग्री द्वार न स्वा विष्य प्रमानिक स्वाप्त का स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व इर्-हिंद्य.क्र्ययापर्थे.क्यापद्मायायर्थे अ.ज्याच्या श्री.श्रयाक्र क्षमः हे : हु र र हे में मु : र म : र पर : र पय : व् व : क्रें य : ग्री : मु त्य व व व व व व व व व व व व व व व बुदैःवि'नबुगवान्दःचदैःवाने'ग्वरःशेन् श्चैःवि'वान्वदःनश्चरः"वेवाः.... न्यायानः इतः वायान्त्रः पत्याच्याः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्यायाः व्य ผสาส<sub>.</sub>สาวฏาส ๆ สาวคุณายารุธา "สิ.มีะ.(182.2)นู. มีพ.ฐพ.ฐ. इट. वय. में. ऋ. ज्ञानवा , कुषा चया ना केर. ने वया में जा क्रा. में. त्वव न्रद्र द्रें शहु प्रवेष प्रश्न हं वा त्री त्य झें द्र व व के हें व व हु 'ब् याधिवा जुला ह्रवारम्यार स्याची ह्रवा व्यास्य वर्षास्य वर्षास्य न्तरः क्रान्यर प्रवेरः ने श्रु । वर्षः द्यारगादः श्रु दायदे । यादरायः । <u>ব্দা স্থানত কাঠ্ৰী ভ্ৰমানাৰ বিশেষ কাম নত কাম স্থানৰ কাম বিশাল</u> ढ़नः वितः **ऍटः ्र्या**श्चिरः कु**दः विर्वेश्वीः व**ष्णराष्ट्वं वरा शुः विश्वनः ऍटः ःः के. ब्रुवः द्रनः तयरः वयरः नवेद्यः न्रः स्यः व्यवेशः ख्रवायः विवयः यरः "" "

四世八

भुःद्वेदः यद्वतः न्वव्यः यव्यः मुःकेः यः देः द्वेदः स्वायः यये व्यः द्वे । त्रः यये व्यः द्वे । त्रः यये ययः द्वे । त्रः यव्यः यः यव्यः यः यव्यः यः यव्यः यव्यः यव्यः यव्यः यव्यः यव्यः यव्यः यव्यः यः यव्य

<u>र् चैदः है 'नर्जदः जुलः रेदः खुल्या पर्याञ्चः या द्या गूरः नेंदेः पर्याः स्</u> <u>র্ছিশ্রে.জ.বর্থ,বর্থা,বী. প্রথা,বহুশরে,লুই,বা.জুই, টি. নাণ্ড, র্লি, বর্</u>থা, बेबेब.तपु.श्र.प्रट.पा रेडेब.हय.प्रचय.ह्रेंट्य.प.रेसेट.पर्टब.नेब. बद्धर-र्मुद्धर-रम्बर-रम् वाद्यान्य विद्यान्य विद्यान विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद **बुद्र-द्वावद्रा अद्र-द्वेव-हरा-व्य-**यावन्ने अपवन्नुयान्नेद्र-वदे-व्यद्र-वदे-नुह्रवादिनकार्यन्याच्याच्याच्या द्वागुराद्वाच्याद्वाच्याद्वेवा हितैः **बे.इ.चट.पद्देल.इ.लूट.पद्म.प्यापञ्चेच्या.घघत.चे.इ.पे.पे.लू.लू.** पर पहेदारि परा द्वेषाया मुक्दा विगादया करा मेटा यदे गुरा द्विर श्चेन् ग**्निरः १४०० ज्ञुन**्र स्वाउत्यानुः श्चनः याने त्याम् वे वाशुग्राह्यन् ने ''''' द्र-पाश्रुवातद्वीताच क्रुदे वनवार व व्यत्त व करावे व व व व व व व व व **শী-দঙ্গরান্ট্র-বিন্দ্র-বিশ্ব-বিদ্নাল্ভর-বিশ্ব-(ক্রি-**ক্রেন-বর্মা कुःभूरःक्ष्यःविःसःबहेयःयः)५**डेवःहः**पद्वःक्ष्यःद्ररःख्ययःययःयस्यः सदै देव के व दे राम नामर हे किर कुल र मरा है है र महर ला त्रेन्त्रः इर प्रमुख प्रत्यः केर कुका र प्रश्ने के प्रेन् मिलु र मेल के किर किरा के किरा के बराश्चितार्थान्त्रेयाहे खराच्यात्राचना स्तार्थिता है से महिरास्ता ...

'न् भुन् चुन है साममायाम् राहे ग्रायातम् तर्ने न चुन 5 त्रस्य त्राच्या क्रि. च्रि. च्रि. च्रि. च्रि. च्रित या व्यापवा री. क्रया व्यापवा शिव .र्र. अष्ट .र्र्च . क्रिर. ग्री. ती पा श्रे बोया स्थया न क्रिर. वेया यथा लर.व. वरास्वाक्षान्वकार्यक्षास्य विरवाक्षान्त्रे विरवाक्षान्त्रान्त्राभ्यकार्यः चेर्-कुदै-र्विष्याप्यायान्दै-दर्गे प्ययाहर गर्देर चेर् केर् थेदा च्चेन कुर द वें रापदे प्याय भेग न्दा राज्य राज्य राज्य ने द से द के द रूर म्राम्बियायालाक्यान्यान् नम् निर्माक्षियं यविमाल्यान्यास्यान् दि है रॅंब-ब्रे-विनः व्याव्यं व च्रीयारमा यामक्षावयान् व न व ने माने माने या चेंद्र ... म्पारीत् प्रति प्रति शे झापया रते व्याया है वापरा हु नारा हु । हितै:ब्रॅब-क्रेब-ग्री-ब्रैम्ल-फेब-हब-हब-एड्डिस-एड्स-घॅन्-पढ़िब्बल-स्रयः \*\*\* यवायाम्बुराधिमायहरावयाम्बयाईयायार्पम्याहे के यहरावयाहव त्र हिमा हिमा केरा हे पा छेर र ने राया वा चरा वा वा वा वा वे सम् केर सर पान्चेन् केन् भ्रे 'नें वार्श्वे 'स्वाया अवार्श्वेता अवार्श्वेन् 'नें वा 'वेदा पन् भूर सन् दे । दे वि प्रदेश है वे के के कर वर्ष व र केंद्र वि व व ब्रे.**बुन.नज.बळ.,रूब-८८.४**.वृच-बय.चू*र-*.कूटथ.शु.पञ्.नजश.बय..... वर्ते दःयदे ज्ञर ज्ञे विवासे द्वा 1879 व्यर (क्रेट कुवार ववा कु जेंदर व्य

तिॱसॅॱख़॒ॱय़ॱ) ॸ्**ऄॖढ़ॱहिॱॻॐढ़ॱॹॗ**ख़ॱॸऀ**ॸॱॶॖॻ॑ॹॱय़ॹॱक़ऀॸॹॱॵॻॱॻऀॱॸॕढ़ॱ**ॱॱॱ**ॱ ৺ব:৴**৽৸ঀ৴৽৸য়৴৽য়য়৽৽য়য়৽য়য়৽৸য়৸৽৸য়৸৽য়য়৸য়য়৽৽৽৽ लपु.,धूर्यायानधराक्षे यञ्च र्वयं वया त्र हिर्याशी. तितासूर, जापत्रा... इयाच्चियामात्राचन्। ये किदादयार्चन्। पत्रावायायायायायायाया में वियायहराय देवे बराहा यगाय भयाया कु द्राया दरा में दावाया न्यं वर्षा वर्षा के बंदर श्रीर श्रीर श्रीर निर्मा वर्षे र देवे वर्षा परि नह से "" न्तुल न्दर ने लेर कु पर्ने परि म्ल के न्या प्रकार्य न में प्रकृत केन्य श्रमका क्षेत्रीतायात्र वित्वा शुः वित्वा शुः वित्वा क्षेत्र वित्वा क्षेत्र वित्वा क्षेत्र वित्वा क्षेत्र वित्वा सर या त्र । श्रे श्रेमा मव मु सु सं के विमानवमा में मातू त्यते त्र या न्र मह केव्र इस माने वर्षे के वर्ष दर्भ में नाम में त्मेश्चे क्षेत्र विवास्य वदाकेट मुल र नरा ग्री में ट अर न कु र लु म न द र र न्बॅलप्पते ब्रह्म उपने वर्ष्यन्य ने न्या वर्षा (श्री क्षवर) ने देश थे जे क.क्र.च वय.रे.चयता

ढेबे.कंमःवा**र्-र-रेन्द्रन**े क्रुवालेरः लु 'र्म्णल' मृदरः लु 'कु 'वै। <u>ቜ፟፟ጜጜጚጟዹ፟ቒ፟ጜፚፙዀዀፙጜጚ፠፞ጟጜፙጚዀቜ፟፟ኇጜቑ፞ዻፘ፟ጟ፞ዺ፠፟ጟጜቒዿ፠ኇጜ</u> मैं बर रु केर्राधिमानवमान्यामिक स्राह्म के स्राह्म स्राहम स्राह्म स्राहम स्रा न्क्षलाम् क्रां त्यान्यत्यास्त्रत्याः वेष्ट्रियायान्त्राः न्याः न्त्रत्याः क्रैंद्रत्रक्राचिथाञ्चा क्र्यो तथाक्येता विचावी क्री श्रेष्ट्रीवला द्याक्षा श्रेष्टा इर्.त.क्र. व्ययाक्षे क्र्या रटा श्रीट श्रीट ने रे में या ताया इर् में ये য়ৄৼ৻৴য়৽য়ড়ৢ৴৽য়ৢ৽য়৴৽৸৽য়৽য়৸য়৽৸য়৽য়য়য়৽য়য়য়৽য়য়য়য় नर-देर्-ग्रेय-चु-बद्ध-सर-व्यासर-तु-व्याय-दर-व्या वर्ष्ट्र व्या शुः श्चे : श्चेरः या का वर्ष व्या व्याप्त श्चेरः श्चेरः यदे : ह्ये व्याप्त के वर्षे र्रःक्रयास्यायान्राहित्वात्रात्राधे क्षेत्रयाक्रयान्त्राधी स्यास्या तबातामुव स्ट लेव के स्वय विदा र् दि स्ट र से दिया हो न सदय ल्रा की श्रे अवरा विषाने ने ने ने निव ने वालया नवा ने निव की वालि करें नवरः ब्रे न हुर् लु नवर रे ववर ये हेर् है प्येर्। र्त्ता नर्र न विका क्षेत्रमयः वयः क्षेत्रमयः परः मृदः यः क्षेवः म्यानग्रदः देवः ग्रीयः पश्चित्यः हेः वृ तेर पष्ट्रव पार्र श्वेल र्टा के स्व स्व मु . खु न स्व सु न सु र सु र मवरामवेरमावर्द्रवाञ्चरवाञ्चर्यास्त्रेत्रकः र्वयः यदाम्ववयः वीत्रास्तरः र्रित्र्रेग्रायः श्रेग्रायर्द्धंबायः ग्रेयायायः ग्रेंच्यायायः व्याप्तायः श्रे श्रीतः प्रदे न्भैनान्रान्त्राद्यावार्षः स्राचीत्राच्याः स्राचीत्राच्याः न् यट्यामु यागुः मह्रव माञ्चमान्द्रमा वी यावाना क्रिं मान् वि याधिव प्रा न्दे**षः नृद्यः वे : ह**: बड़ ब: नृनेपरा नृत्रः द्याः हेन् : हवरा बेन्। 气管.

**兵人·黃七四·少士·劉·贞七四·집四·昂·對七·日·共人·黃七四·治·贞七. 3. 31、4年山.** मद्रे सवतः मञ्जलः मवा न्या मान्या न्या न्या मान्या न्या मान्या मा श्चान्यत्वर भी वहां के स्टार्थ का सम्मेश्वर स्टार्थ का स्टार्थ है। श्ची रा नहर्वश्रित्रः श्रवा विकायव स्वात्यं निर्मान ने त्रात्र निर्मान होता स्वात्र स्वात्य स्वात्य स्वात्य स्वात्र स्व नापारीन् भन्त द्याच्याच्याच्याच्या म्यार्थन् स्त्राधार्या स्तर् ब्रुंग-र्ट-पर्व्यावयायायायायायाची नुन्कु ध्येवा गवया गुः झ स्यया ग्रैकः क्रकः स्व: ग्री: श्राक्षक्रकः व: श्रीमकः यह व: ववर: ग्री: व्रेट: । व्रेट: बाकुर्य.त्य.यट्य.मेथ.पर्वेद.त.श्रेट.श्रेट.पा.वेर.विर.चर.चर्य्य.थहर्ट. मह्नेब्र.स्न-प्रथाम् इतः मङ्ग्याम् स्थान् व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप नहवःवस्याद्याने स्थाने निवास में स्थाने स्था न्यव्न्वर्वा प्रत्या श्रीवा नुवाया केवाय या श्रुवा केरा तुवा वे राष्ट्र से प्रता होता । अन्यान भन् पर्दे ते वया वियान्ता ते वया द्वा है प्यंन है क्षेत्र व ता तु है । बाहे निवेदानमें रारे केर बर नवा श्रेषा कर निवास वा निवास वा निवास भ्रेषावि सेते स्वयः यह र रे पक्र र ल भवर थेर प्रति रे प्रतु व र र । त्राँ पानवर्गान् राष्ट्री ह्रांना श्रुपा वर्षा पर पर्वे ते तर्मु व सवत महेना हि ले की ल्टा ध्यान.क्रव.त्य.स्या

 तर्रात्त्रण्या स्वास्त्र क्षेत्र क्

म्राच्यायात्रम् विकासी स्वाप्ति स्वापति स्वाप यहरः स्ट्रा स्ट য়ড়য়য়৽য়ৢৼ৽য়ৣঢ়৽য়ৢ৾ৼ৽য়ৢয়৽য়য়৽য়য়৽য়৽৽ঽ৽৻য়ৼ৽য়৽য়য়৽৽৽৽৽৽ न्रायायराम्बाद्धत्राप्तराम्बाद्धाराम् द्वार्म्यत्राप्तराम्बाद्धाराम् नहर्नासरायात्वनाधित सामान्या मुलानहेतानु। र्यायामुद्रास्त मदे मंद्र के द्वर्य कु के र क्षेत्र दे कि सु के स्वर हे या अर क्षेत्र व के से व वि वि र स्र मिर केर सर स्व मार क्षा साम ने दे वि लुबा.क्ष्वाथाविर्यालूर्यासम्बद्धाराज्याना राष्ट्रप्राध्निरासायाः बीरा য়নবা:র্থ:য়ৄনবা:রূয়:ঀৢ:৫৻ৢ৾৾ : क़ : য়ৼ:রূম্ব:৭:৻৸ব। रेग्रानेदे वरा "प्रनिष्ट्राया ग्रीमिरार्य करा स्राप्ति श्रीराय प्रना ፝ቒ**ጚ**ፙፙጚጜኯጚጜ፞ጜቑፙቜጚቜዹጟ፝ጜኯፙቔጚጜጜኇቜ፟ጚቔ፞ፙጜቔቚጜኯ፧ नेति:बतुब-तु-वॅन्-वल् ग्वाज्ञायन् शुद्र-**गु**ते-के-चु-ग्*ने* व्यवेन्-तु-कुरः--हे मॅं र अमें र तु काया श्रेन् मृब् र पर्े का क्षु मृकाया न् तु मह् मृकाया है ... नःविन्नाम् सुर् छ्याने के बार मे हिराख्या स्वार म्या द्वारा मार् हिरावया र ঀ<del>ॕ</del>॔**৴ॱয়৽ঀৼ৽ৡৼ৾৾৾৽য়৾ড়ৢঀ৽ৼড়ৢৼ৾৽য়৸৽ৡৼ৽৸ৼয়৽৸য়৽৸৸৽ৼৼ৽**য়ঀ৸৽৽ 🛈 (तू :बदे :ब्र बदे :इव:बद :देव:बद :बेव:बेद:बेव:देव:देव:260—264)

त्र-प्रम्य-प्य

के ब्राव्यान्त्रेवायम्याः स्वयः येश्वाः कि क्षेत्रः च क्षेत्रः च के व्याव्यान्त्रः च के व्याव्यान्त्रः च के व् के स्टाव्यायः स्वयः च व्याव्यायः व्याव्यः व्याव्यः च व्याव्यः व्याव्यः च व्याव्यः व्यावः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्यावः व्याव्यः व्यावः व्याव्यः व्यावः वयः व्यावः वयः व्यावः वयः

<sup>🛈 (</sup>वृ:मवे:ञ्च:बवे:इवाबर:वॅर्:धेग-देव:दॅव:264—265)

## 

म्तः क्र्याः क्रिन्तः व्याः व्याः स्तः क्रिन्तः व्याः स्तः क्रिन्तः व्याः स्तः क्रिन्तः व्याः व्यः व्याः व्

स्रा स्रा क्ष्यां क्

अनकरेरातृ वादे ज्ञा वास्नु हेरा न दुः मृत्रेशाया महेदा वाता कु वाहे " महिवाति वचन रुवाति की प्राप्त की की से में देवा देवा स्टा है नया पर ही न देव-य-क्र-पद्भन-द्रकान्द्रकान्द्रवानु-ध्रम्यः व्य-तु-क्-न्न-व्य-तु-क्-न्न-व्य-तु-खरःह्रवायःक्षरः तळ्ळान्यां व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्य न्यः वृत्रायनः यदः श्रीनः ने वृत्यः के श्लाः न वृत्याः ने वृत्यः या न न यद्गे. चेन. क्रेंद्रे. बक्ष बया श्री. लून. क्रिया बीच या चे न वया बाव या क्रिया है. है. र्ना स्व र्वाया ऋषा श्रुरायन श्रुव तरेव अपर विवासनवा ग्रुर देव-त्.क. चंद्र-अक्ष्ययाश्चित्रे वर्षेष्ययाज्ञेव-तपुः चर्याचालरः वर्षायाः चॅर-वृष्ट-वर्र-वहेष्-कुल-ळव-ह-ळव-रूट-वर्गद-व्य-वी-वर्गद------पविव न्येव ने वका न्या हा का सका है अर ये विवा पर्वे व हे प्या है रा पक्षतानरायम् श्रेनयाक्ष्याप्रम्याज्ञाताम् । मुन्याम् । मुन्याम् । मुन्याम् । मुन्याम् । मुन्याम् । मुन्याम् । बर्वे.रे.हेंदे.स्.वक्र.व्यं.बुब्स्स्यक्ष्यःक्ष्यःक्ष्यःक्ष्रं रःश्रेवःश्चरं वियाः 출신,眞신,회난성 열고,뜇, 너희단,신고,효성,몇시,최,신본, 너호성, 차. N

यान्वयार्वेगाः तुः हेना विषान्वदाः परायेषया श्रीप्या अध्यायक्षाः प्रहारा हो । ढ़ॖॴॱॿॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॗॖॣॖॖॖॖॗॴॱॺऻॶ<mark>ॺॱॷ</mark>ड़ॱॶॺऻॴॱॸॣॾऻॴड़ॗॴॱॱॿ के.चबा.धेलायवी.क्षालट.बुट.चट.बुट.चेबेट.चा.केव.वे.से.ता.वेट. ब्रैट.पस्तार्थे.पर्यः श्रोधये.कुये.वेट.क्षेतः च्यात्रात्यः रट.चयोपः वेट.के... न्वराद्वेरासुः श्रुप्तवरान्दावर्गाम्हरामदरामद्री म्बेश ग्रेश सूर भर ह्मा वियः वयः वदः यहं र वियः भवः ध्यः म्बेश तः क. हिर.कं. केथा रावर. त्र. चर. चर. वर. केर. र्याथा था. क्रंच. पह. हे. राच... ह्युं च बायदा बेद् स्मर धेवा हैं वा हि र में दा दे हैं व लु व स्वा दि व सुवा हैं र्ब्रायायरे नगाय स्वा श्वाप्य स्वाप्य नगर-इर-क्-र्नर-ब्र-ति-ब्रेश-ग्रीश-लन-तिश-ब्र-ल-ब्र-त-ल-ग्रेरःइर्यःग्रेःशुःचक्रवःर्यग्रास्यानेः वे.ध्याज्यायात्रार्टा हित.पर्.हेर.वेचच.लय.हर.१.पत्रवेश. तपु रू.वक्र. चया ग्रीय.कु... हरासाबिनायतम् नायतः क्रुवातु म्यूर्याः स्यान्यात् न्राष्ट्रे अः म्ववार् चर.वैर.वृथायहता.पसर.चबर.व.पग्रेच.श्रव.ग्री.पपप.पर.पर.पश्चत.वे. गर गत्रवा वर्षा

म् व्यास्त्र स्यात्र्वृत्यां म् पञ्चिषाः स्ट्रिं म् व्यास्त्र स्यास्त्र स्य

दे.पस्यायक.कुर्.श्रे.जुर.पक्चर.त.चहेर्.तपु.रचर.क्चि.रस्.। मुला स्वात्त्र मिराहा स्वातिरालवा द्वारालवा स्वातिता स्वातिता स्वा न्द्राक्षक्रेत्रः केराव्यकार्व्याम्ब्रा म्यानिकाञ्चना मृत्रा विचयः विरःश्चः न्यं वः रेणवः स्ट्यः च ठवः ञ्चः विचः यञ्च वः यञ्च वः व्या <u>शुरःगुते ' पञ्च र् 'गवस्र' पञ्चेत्र' कॅर्नर स्था में र 'बुते' स्था गर्वर 'सूद्र' स्वेद 'धवः स्था स</u> अम्रायायक्ष्मानीप्रमायाधिरायेनयायाः गुन्द्रन्वरायेन्द्रम् छितः । व्रापन्नर विषया अभिया कु 'यळे 'दे' पावि **व**ा ग्री र पुरा पाह्न पा रुपुर (वृ या । । र्बेषायर तस्यातस्यातृ यदे ज्ञा वारे दाये केदे वक्षा ह्या तु रहेषा । दहेव्-चुवा-दह्यव-ऑर-'दर्शे-"®वा-नगव-नवेव-नजर-सं-ईच-सवा- ·-निवर निवयान्य क्रा क्रिं श्रेन् यळेन हुन्य देव में क्रिं त्यू द्रा निवया म्रायायक्रमानीतम्परायबाद्यवास्य विश्वतास्य विश्वतासस्य विश्वतास्य विश्वतास्य विश्वतास्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष **कें 'र्यर'क्ॅर'सु'र्र'। क्रु'यठर'ब्यरा**खुर'के म्बेबर्यं व बावव यें : ग्रन्तः यतुव र्वेषाके वे र हु विर त हिर्यः ववरः य हर स. स. स. स. स. स्वा प्रति स्वयः

<sup>(</sup>१) (इस्टर्स् वर्धर देव्हेर नेर पर हेर् क नेन ग्रंग 43)

हेब.चशुक्ष.पक्षेद्र.च.स्वाक.हेब.पशुक्ष.कह्ट.सू.चवर.। कर्व.ये.पुच.पुच.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर. कर्व.ये.पुच.पुच.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर.पश्चर. पञ्चर.च्या.च्या.पश्चर.प

बे.बद्र.(1877) व्रवे.ब्र.चर्ड. तपुर.क्र्य.क्रे.चे.चे.च.च.स्र..... त्र्रन्<u>ञ्</u>राच**बटानयाङे वयान्य्रायान्ने वया वर्ळ**न्या रणतः व्रवास्थान्त्रमारा क्षेत्रारा है। देश है स्वार तर्में वर्षे में वर्षे त्रेरःक्षु-न्यं**द**िर्माराष्ट्र-पञ्च-द्वानन्दालु रःमञ्जून-ने-प्रष्ट्वन्यामिद्वाःगः नुगरार्थः ब्राट्स्यतुवः तुः तर्इतः तर्वायः नगतः व्रवः ग्रायः व्यवः म्याः गर्द्याः वैनतःनशुःनःॲटतःग्रैतःगुत्रःसुत्रःनःन्दःदन्नेतःश्चे**नः**गतुदःत्वन्तःः म्बर्भे र व्यास्यापि स्वीयायात्रिया सहसार् र र र र । बर्षेत.ध्र. म्युर-विम्यःहेवा व-पन्नदः ध-कया म्येर-रह्या 到4.七七. ख्यंयान्ध्रेचेयाः चेरा स्राप्तः च्यान्यः क्षेत्रः च्याः स्राप्तः स्रापः स्रापः स्रापः स्रापः स्रापः स्रापः स् न्दर्वता यम्भुअः श्रुः विष्रः यद्यायः न्ते नः न्द्रायं न्तरः विष यम्याञ्चेयाम्राम् वर्षा वर्षा वर्षाम्याम् वर्षाम्याम् र्वेष-द्रम्याल्यात्वेर-ज्रूर्याताध्यात्यम् म्यान्यात्वेषाः बर.जबया.बिया

मृब् नवर्। नुप्य पश्चिम श्वाप्य श्वाप

ই রব ট্রি-র্ ন্রবান্ত্র-অন্ট্রে**র-রবান্ত-রবান** ভ্রমবান্তর রবান ইবা · · · · न्रद्भायान्ता हार्या श्रीपार्वित श्री मुल्या मुल्या मुल्या स् त्रका के .स्राम् .प्रिया चित्र चित्र वित्र चित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वि प्रितासिता वी.भी व. की. के. कु. कु. कु. लू ट्या वेया सुनया नया ट्या रेटा। युर. **ब्रे**ट्यः इ. नहेट. र र. पश्च र. यूर्याया शु. थे. न**र्या** र. क्रे. थे नया. क्रे. नं - 'ट. जुर्याया. बुकाने देशामहोदाक्रमतामञ्जून सहित्। दे स्वि ज्ञामह न स्वी महिता सि **इय. पर्दे. पर्व. वेय. वेय. पर्य. पर म्य. व्यास्या स्यास्या स्यास्य स** चल्का म्या विवादा अवाय विवादा स्याम्बेखान्यम् स्थान्यम् वर्षान्यम् स्थान्यम् स्यान्यम् स्थान्यम् स्यान्यम् स्थान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्यान्यम् स्थान्यम् स्यान्यम् न्द्रम्यान्त्रा देवे.सु कु न.ह.कु ल क् न ह न न न न न न न न न क्षान्ता स्टलरह्बान्नाब्वामास्याद्वान्त्रवान्त्रका ह्यान्त्र न्यवानियान्य प्राचीता विकास वि रब्राह्यर खुदे व्या भवें दाया पर्वा में केवा में ता हूं त्यते हा अराह्य पह्रे नियाताल्या " वृया " भ्रात्याता स्त्री मा श्री मा श्री मा स्त्री मा श्री मा स्त्री मा स्त्र लक्ष्रः अः अक्रमः चीता वता नरातुः महीमाता ने खमा न्या हुनारा विता हेता । नविन्तानिरःविनकार्यरःविद्रिः णिष्वयानवः श्वरः गुवे न्दा वकार्यवा शिवे **ब्रह्मान्य विश्वान्ति । व्याप्त विश्वान्य व्याप्त विश्वान्य विश्** रका ने तर अर का मिरा है पार्ट मिरा के वी अर हिंदा में ने प्रार्थ पर स्वार

<sup>(</sup> दवावर देव छेट हूर् क म्प श्र व 47)

मवर क्रेया ग्राइं याया मवर।

दे 'वया हेव' एडी या यहंद 'झें खंगवा हे 'हेंग' यद मुया संदाह संया . .. रमः न्दरः न्द्रायः द्वः ये : वेकः बर्ढमः चैकः श्रेनः मृतुरः चैः श्लुः छ नः सर्दिः ने बह्यान्रान्दा बह्या देवाकेवाद्वा न्राम्याकेवार्यम्या तत्त न हे क्षेत्र म सुवा दे हेल ग्रव ल केव में नम् भेव सुव में दे भुं कं मः अभू वाय वे रान्ता ने पि वे वा वु विषा वु विषा निर्मा भूषा भीर.इ.थच घषु.हा अर.पर्य. १५४.वश्व.मी.पर्वेश.श्र. र्वमायान्यायाहर्याः न्यात्रा याः स्वार् (1878) विते ज्ञाः न्याये वि इट.टक्टे.त.र्हेच.तपु.रटट.हैच.हे.थर.नुग्या अ.रट.तुपु.क्रय. म् इनि केन केन मुन्न निवाय प्रकालेन देन देन के अल्ला न्रा क्रमः हैं क्षेत्र विदः विदः हैं विवादी र्या नियर निया है वा नश्चिर्-ग्वरः हे : »ज्ञुलः नते : भरः श्चिर्-र्रः वृतः दहेवाः ग्वरः ईवाः मवरः ः हुव् अहलार् रावर्षारे या अहरी रेड्याह्र त्यते न्ना या अहमा मे **र्सः**श्चितः वृद्धवास्त्रः यान् कृवियात्तः श्चेत्रः द्वाः वृद्धवास्त्रः वृद्धवास्त्रः वृद्धवास्त्रः वृद्धवास्त्रः इबल-द्र-हे-रन-विर-बे-क-लन्बल-बन्त-विर्ा न्वेबल-हर-हे-*ॅर्-* ग्री :हेव:ब्रॅंडिव:ठव:ग्री:श्रुव:स्र-:ध्र-:क्रेव:२व:४:क्रे:ब्रॉंस के:ब्रॉंस ग्रीय: **ॡ**रःश्चेन्-नेव्नःसं ॱहेदेःन्सुःश्चदेःन्र्र्याःसुन्-प्वेषाःनेः"हेःपर्वनःस्नाः ः ः र्टर. मृ. रबर. धैव. रक्षेत्र मि. यक्ष. ए हे बया राषा र यर दिवा हि बया प्राप्ता **₹**མ་བན་རྒྱལ་བద៝་སྡེ་དབལ་བੜ**ང་པ་་་ེནས་མཚན་**བུན་མ་ན་་་

भ्रु. अवस्तः र्वा र्वा त्या स्व त्या स्य स्व त्या स्व त्

स्ट्रिंग क्रम्य ने वर्ष स्मान्त्र स्मान्य स्मान्त्र स्मान्त्र स्मान्त्र स्मान्त्र स्मान्त्र स्मान्त्र स्म

(1879) विरोधी ज्ञास्य प्रति वरा में रायदे प्रमाद वळवा छेरा येपवा शुः "हू .पदे न अदे के हु पा देव में के दें रा दहें व न व व वि पा है व हे . दि ज्ञाचा चुन्त्र । के या प्रकार के वा वा के वा अर ता ने वा के का वा के वसाम्याः भैकामदेः द्वानवन् म्वरायेनः सराम्भेव। देवागुरान्नदः ब्रान्द्रमा स्टान्त्रमा व्रायदे नियं विष्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व पह नाया रो राया के वा श्रापक वा प्रवास के वा स्वास के वा स क्र-मुर्गान्वरान्द्रसार्धर्। श्वारायद्वररान्त्रात्रे स्तरमा न्द्रुतः ह्रमः हुरानदे रोत्रमी स्वयम् दे नित्तृ दि तात्र या मेरेरानितः विषया विराहा श्रायद्यार्यम्यात्वा विरायार्यम्यावरावर् मा विराय इरायवा हर् हुर् प्वश्चिता स्वागुवार्वा स्वागुवार्वार देव छवा सामान मल-न्न्रत्र क्रिंग्य वे वात्र म्यून

①(র্থান্ম-র্ণ্-র্-জ্ন-র্ণ গ্রন্থ-52—53)

श्च. बा बाकू बा निर्मा अज्ञुला ह्या हु न हु बा निर्मा निर्मा निर्मा हु बा निर्मा र्सम्याञ्चर इं र तर् र मु नदर र प्रतिष्वाय इर नग् नेया यह व पर ..... वेशयार्वापुरम्ब्यार्न्र क्षेत्र प्रमुक्त म्यान् मुक्त म्यान् विषया म्यान् विषया म्यान् विषया म्यान् विषया म्या ्रम्-पत्वम्बरश्रदःगुते ज्वयः यव द्रा विषयः पश्चारः से रः सुः द्रमें व देग्यास्यास्यास्यायाः व्हाराविदा। वृ त्यते ह्वाय सहया सेमया ह्यस्याया मविष्मुवा भक्षियार्य क्षिया रवा नियर निया स्वा स्राप्त हेव स्र **資山・型・ヒヨエ・発い**、国日か、近日か、近日か、日日か、万円、日本の、日日、一次一、八八八八 म् सर्मानविष्याक्षरार्भरार्भित्या अयानवार्गायस्यार्ग्रेश्रे ब्रह्मन्दे व्रह्मानुन् केव स्वेदे व्रह्म पत्न न्या विनः व्यवा र्वेनः व्यवा विनः हेवः क्रियः द मः ह, क्ष्मां बिरः विच रेते. व्र्मां बी रचा र्यरः र्याया देव रेटः ग्रीवः . . . मेड्रिमयाम् क्रियाम् वर्षात्रा निया श्री में किया मेर्गा सहया स्थापह्रेता मेड्रिम व्याक्षा वार्या है वार्ष है वार्य है वार्ष है वा पया.रच. मैथ. यूर्वया श्रीता श्री. कु. विव वीर.र्ट. विवया तरी वूर्वया वर्षः कुयाय्या स्राम् इतः क्या हे इत्या महिला होरा तह्या निर्धा नहिला । لمعا عبري عوارخ المديم المديقي المنها عديرا كارخد मः ल्यायान्य तारमः रमः वी वी रामः क्षेत्रः रे या महिता यहता रूपः स्थाः हे लाः हेव-पड्रेयायद्र मुं इंग्या

क्रयान्त्रुं मृत्या क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मृत्य क्षेत्र क्ष

विवा विवयः लग्नः न्यायः न्यायः न्यायः हेनः त्रेतः न्यायः हेनः त्रेवा च**र.केव. स.स.५** . ज. पर्ना प्रस्ता प्रस्ता वर्ष वा स्तर स्वाया ही . लट. हेट. रे. वर्षेत्र. रेटा चील बक्ष वा च. रेवा चर्च. वेका वि. रेट. स्विया ग्रीया सह्यात्र र पश्चित र प्राय क्षे.या पर्ने स्वर स्वा है र या क्षे स्वर स्वर स्वर स्वर स्वर स्वर स्व <u> श्रम्यास्त्रः स्ताब्रुपः स्वाग्रस्याग्रेः श्रुः ५३८०० क्षृदः धरः श्रुं मार्यः प्रिं ५.५° ।</u> हूं .पार्यः मि. वा वाक्रवा क्षेत्रका चिवाया श्रेतः में चिवाया य देवाया या पक्रवा ग्रेता " लूट्यः पहुचे से प्रकृषे में स्वार हिला विषय। रेवाच के वि वि वि वि से रे. मूर्य वि. विय श्रे. श्रेला कु. विय मुरा विषया परा विषया विषया विषया व्यक्तिके हिराभुः तेन केवायायान्य नेपार्वे काला चत.स्.ल.द्रेचे.श्रचथ.क्ष्चथ.वेचथ.र्ट. ५०४.क्रचथा नम्चैनयः हे. श्र्यः श्रे. श्र्यः पह्नियः वृत्यः व अन्यः न्वरः रहेन न्वयः हरः देन स्वर्गरः वरान्यः परान्यः। न्नियास्त्रःश्वाद्याय्याप्तात्रः न्यास्त्रः विकास्त्रः विद्यात्रः त.रट.वैट.र्ज.र्जय। ग्रूट.पद्ध.श्रेत्राम्। मै.पचप। टपा.गचर। र्यतः स्व द द र र व्य र हेव महीयाम्य त हेव प्र प्र प्र र व्य र व्य न्द्रणन् वेन्याकु अर्द्राकु के ब्द्रा दे द्राव है में न्द्रा ने वयान् वेशवाह्या है दिन्तन्य पान्युन् सेनवाही में दास्य तर् तर् वर । ।।। न्दः तथम्या अर्क्षेम् या मे । मृ । न ते । सू दः यक्ष्य र र्यम्याया भु । सु मा दा सू वा । ।

निसंत्रियः निवरः सहर्। दे वया ळे या पर्वे वे वे वा नवरः श्रदः समुद्रः <u>ॾॗॕ</u>ॖॸॱॺॖॖढ़ॱॹॖय़ॱॾॕॺॺॱय़ॺॱॾ॓ॱॺॕॱॼॸॱक़ॆढ़ॱय़ॕढ़ऀॱॾॕॺॺॱक़ॆढ़ॱॹॆॸॖॱढ़ऀॱॶढ़ॱॱॱॱॱ स्वायाश्चारविवायाः विराव्यवास्तरात्रित्रायतः क्रे तर्द्वा सद्याः स्वायः व श्रेमया भूर साक्ष्य स्तु भी क्ष्मा लक्षा नय माक्ष्मा यथा भूर सादु न्यू न स्तु श्चेयाद्वयतः हेत्रायाग्रीः।र-रा-नश्चयाः हृताः ० मूरः वाः छ्वः स्यानः वारीः वारीः न ส.อิน.ล่ยน.ล่ยน.ล่ยน.ลาฐพ.พ.พ.ฆฐล่านิ.น์มิพ.กฎ.ล่ยน.ล่ยน.กัล้น... ग्रै'नम्दःधेषाःनङ्कुलःमःदेःबार्दाः इ.र.मग्रेषःमराञ्जदःबादारः वाद्यदः वाद्यदः । । । । **र्यतःश्रुवः श्रुवः लुतः अध्यान् नृः लबः नवः शुदः गुदेः बक्रं गः वदः** विग्रादित्यः बह्मान्राधुकाथेवातावर्षवान्दा। व्यापानिः स्वाधितः विवा मूर. ब.क्रुब. च्या प्रकृता पदि ते नवा क्रुया मूरा ग्रार श्चायास्य यानिता द्रेव प्या मुन प्राप्त विष्य स्टा के स्टा में के मार्थ में मार्थ म हेवे.वलान्गराधार्यराम्डेन रहिलालाकः महोरायहरायदे तहिराया न्द्रेन र्टलाग्री अर्डलाकु.पान्द्रिनाग्री रिलाश्रीर कुर्वाप्ति स्थापा स्वया देवः वरः चलायते : नृदेशः वे : हे : हेन् : या यहं र । तुराने र कुलान्यरः विग्नम्भवाकु नविन्न वार्यान्य नविन्न वार्यान्य नविन्म वार्यान्य नविन्न वार्यान्य नविन्य ॶ॓ॱ**ॾ॓**ॸॱढ़॓॔ॺॱॾॕॱॸऀॸॱॹॸॱॹॱॕढ़ॱॻॖऀॱॺॱ<sub>ॱॱ</sub>ॺॺॱॎॺऻॱॺॺॱढ़ॺॱय़ढ़ॸॿॸढ़ऀॱॼॕॱॱॱ मःन्वतः मः न्दः। द्वः मः नतः सु । न्यः सु । न्यः ह्व । द्वः स्व नतः स्व व् निव्व में से निर्य प्रयाद र्या प्रयान व ना यक्र राष्ट्र से न्या स्वार है ..... रर.नेवियानवरावाची अन्यर्गिययान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्यान्या ब्रु.क्रे.ल्रह्मानु क्रि.इ.यहरान्त्र, (न्यार्क्ट्रीर,र्यायायान्तरम्या

दे.वय.क्र.प्यक्षक्र.क्ष. खे.च्य.याव्याः व ह्रंट. बे.च्य. व्यत्यं द्रं व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्यापत

क्.इ.(1882)यूर्य श्विस्यान्त्रभ्यात्त्र प्राप्त स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

महामाजिक स्वास्त्र महिना शुर्त स्वास्त्र स्वा

स्यान्देन,धि.यश्चर्यप्तान्दर्श स्थयः तप्तु थ्यर्प्त्य स्थान्य स्थान्य

① (表如日本:元有:台本:黃下:本:黃甲:到二內:140)

यान्त्रत्वर्णाः वितान्त्रत्वेत्। यात्रत्वर्णाः वितान्त्रत्वः वितान्तः वितान्यः वितान्तः वितान्त

र्थान्ययात्र्रित्सु द्रियात्रे द्रियात्र हिंद्य हिंद्य हिंद्य हिंद्य हिंद्य हिंद्य हिंद्य हिंद्य हिंद्य हिंद्य

① (इबाधर देव हेट हुँ र क वृंग ग्रद्य 148)

ने के र क्षा वा सते देर अन्या न्राय व मुल देर सम्या है द्वा स्राय । यद्य.मेण.इर. सब्धाय.मेण.पिन्न.पिन.रंगर.हूर.र. লু'স্ক্রীনল' ই'ম'। इव्रभुर्-बुःक्यात्र्याः रेवानुर्-स्टे-र्वणात्रवाः यर यरः तुषानेरःक्षेत्रगुरान्धरःश्चेर् गुल्दान् रुव्ययः वृत য়ৢ৾*ॱ*ঀढ़য়৾৾৽য়ৢৼড়ৼয়৽ঢ়৾৽ৼৼ৾৽য়ৢয়৽ড়৾৽য়ৢয়৽য়ঢ়ৢয়৽য়ঢ়৽য়৾ৼ৽৽৽ न्दर-ज्ञुर-वेन्-पर्व-बुक्य-पन्द-च्य-पक्य-प्वेन-हे-न्द-खु-ठ-खुक्य-चे-विष्युः स्ट्र-देन्युः स्वाह्ययाच्याया श्चे : क्रुयः श्चे : क्रुयः स्वाह्यः स्वाह्यः स्वाह्यः स्वाह्यः स्वाह्यः न्राष्ट्रातुः सुदेः न्र्याः ज्वान्याने । न्याः यवः ह्वां त्यावः हिन् । वेदः स्रीतः हिन् ब्रैर-अर-अर-अर्थ। र्थः नेत्र-न्ध्रेषः ह्यः नद्यन्य त्रुरः में त्यः कः कुः **क्रे**द्र-कृत्त्र-प्र-द्र-द्रियायः पद्यद्र-त्रीद्र-प्रते-त्रीव्या-स्वापः केन् इंतर्श्वायान्ता ध्यानभूता महेन् रेम्यारहमा वेतर्धन्या gala.a.b.1mx.da.s.5a.8.alac.8m.ac.1, 12.2.1221 बर्-ग्रे-ब्र-दे-प्रम् ने-ब्र-द्यरयाग्रीयादि या स्रिदे न्या स्रुदे स्र्वेर-यान्यया च्र-भ्रेचेथ.धे.स्.भ्रेच.वर्ष.चेश्चे .धे.वेश.केच्य.रेवेच.हय.चव्य... ... पद्दितानी न्द्रीम्यापाया में पञ्चिता केन् स्वत्या प्रथा मृत्वे विमान द्यापा है **इब.**बर.पूर.ग्रे.थ.पद्रस.मैल.पि**न.क्ट.?.**पिब.बकुब.पद्य.पद्य.पद्य. म् न्येर व् वर व्रि. (1814) य्या न्वेव ह्या या ब्रुट ह्या मधार सथा कूरवा पर र सिर में बावा से बार है राजा से देश वा व व व व व व व व मृद्रैवायर्दद्रायम् मृत्रवा हुवाने्द्राययार्द्रवास्त्रम् केमान्ववान् चैतः है पर्वत कुल न्वम ल है किल बचत गृर्वम तु चुल म न्हा न्वन्देव्वत्रार्वर्रम्

र,**१८**:कुरै ने प्राप्टे १३० लुका कुरा ने का न्सुर रे ना का न है राकु १३ वें न "र्व बेर्र्ह्मार्यावर्षाव बेर्प्योग्"ठेरामिःहरायहरा चड़ेब्रस्याच्च चेत्रः श्रु मा सदाया स्वता स्वास्त्र चुरा व्याद् चेवा है । वर्ष तहलासरावर्षाक्षणाचेर्षावन्तात्वेवासवैगानव्याः शुरुवाववासवरः पविनासियरः ब्रेट्-र् क्रून्-रहर्। र्बेद-ह्यानयः में ज्ञूयः विन्द्रः ८.५४.५६ म. ६ म.म केथा सबर ग्रीयायक्य पर स्था हेर स्पेर रेश्चेयाया.... त्रियान् द्व. त्य. त्यातिया. र्ट. या. पंत्रीया. त्या. ववायान्ता र्वेषान्त्रकेषान्व्याववास्त्रम् वैप्तर्रेत्रकृता न् चैक है या बहु वा धि ते औष वा विचेवा न्राह्म देवा चेवा चेवा है की वा व हिरलः ब्रॅब-२८-। अञ्च-झ-र्यम्याय-४४ व महिराद्येन-परी-ग्रम्य-मृद्य-वियासायात्र । विवासियान्तरावियाक्त्रात्र वातहियावेन् इ पर्श्वया अनयाने्रास्त्रणाङ्गरणाञ्चेर्रामा वर्षः क्रें नया द्वाराणाः में **ब्र.**के.पग्न.ब्र.वर.पे.क्.बेल्ज.शै.चर्चे बया.क्षेत्रय.र व्रे**व.**ह्यापह्चेया.... **過い、イエンを、かん、男とないなと、日か、身、下上、事、ず、て、美、、教と、り、、とりない。** न्म्याब्याव्या द्वागुराम्राचियावयायेव सामावयायवराचरा बे.वे.(1876) दर-दबुग्यका ब्रुंद्य-द्रा विस्टर्स वेत्र्वरा ह्मान्द्र मह्मालवासु हेम हुम्मान्द्रा न्याय ह्या न्याय ह्या न्याय ह्या न्याय ह्या इ.ध.ज्य.चेल बूर.व.रंटा चयाय.इब्.च.च.ल्यंब.ध्वा बर्ट्.बावर.

मक्टें देर दें राह्य न्या विवाल दरर दें हे। रवाया विवादर ক্রমানতকা বদ্যী দ্রবে ইশ্বাক শৃষ্ঠ বা ক্রমান শান্দ কেনে দুরী বা ই বি क्रम् म् म् व्यदे चेन् प्रमः म्राम् व्यस्य स्याम् स्याम् स्याम् स्याम् स्याम् स्याम् स्याम् स्याम् स्याम् स्याम **ढ़ॕटयःक्र्यः**चंब-ग्रीःब्रेटःयरःयद्वःपह्ताग्रीयामुवःयदेःपश्वःयःरेवःयः केरःक्षः त्रेषु वृग्वे : चुः द्वा श्वेषः क्यु : वृद्वः वे : चः दे : खूरः द्वंषः वृष्णः ये रः : बर्द्धरः ततुमः पर्यः देवान् न विद्राम् विद्राम् विद्यान् विद्यान्य पत्रमाम्बार्यम्याञ्च म्माराज्य । वर्षा वराम्यामा वर्षा । वर्षा <del>ঀৢঀ</del>৾৾ঀয়ৼ৾৾৽ড়৾ঀ৽য়ঢ়৾৾ৼ৽য়ৢঀৼ৽ঀৼ৽ঀয়৽ড়৾ঀ৽ড়ঀ৽ড়৾ঀ৽য়য়৽য়৽য়য়য়য়৽৽ म्रान्मे ते वहन् द्वम्यालमा विदारहरादेवाग्रारायवव इता वेन् म्रावा स्ट्रेम्यावि.की.,, वृद्य प्रह्में तप्र श्रेचावि.क. इंग्यायी. पर्ट्या थिया अर्थ्या व्यवतःशक्षायायाः विद्यास्तान् विद्यास्याः वृद्याः गुराष्ट्रियः नेद्राः विद्याः नेद्राः विद्याः नेद्राः विद्याः **बह्मर-ह्या-द्रेग्यान्यश्चाः अन्यः अन्यः विद्याश्चान्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्यः विद्या** द्भगायरातुःसमाने नदामायाया हिताना महितावता हुवा हा देशासुयाः " व्राम्यामा मुक्त स्रेया स्थान सर्वाया या र हे या ग्वर के निया है । विया क्षेत्रयाग्रेयाश्वराद्वेतायाद्व होत् श्वर्शः हेयाशु यहराना नान्या नाव्यापरा **ल**प्तर्भाष्ट्री कुला बे लेराया तहेया न चुला हे ता हुता हुता एक न वह न चुला स.इ.वधेव.वैट.घर.चक्षेव.रंग.हे.ब्रीट.घथ.४८.ह्रेचेथ.थे.चक्र्व.पर्देश. Ð.बै.प्रथार्थर्ध्वारकर.वृथांवरःक्ष्रुः वेवरं लूरं शुः अं रूरः रुष्टः . **य.अद्भाय.**लय.त्राच्या.चंट.य्य.अट्च.क्ट्ट.बु.चू.चू.चंय.वेथ.वेय.वेय. वे.स्ट... क्षे.ल.पसंट.<u>५</u> बं.थर.पत्र.पञ्चप्र.याच्या.पुन.पत्र्में र.वेश.तथ.वा.क्र्य. ... रहः श्वेनवातुः द्वेनवाद्याद्याद्यम् वी पश्चः नविना द्रा र्यम क्रियरा

ग्नक न विवादिन निष्य विवादिन व वब्द्याके ब्रियामुकावबद्याका सहिते देश्व्रा विवसायमा "" मिलेक किं किंद्र त्रे हु दर् क्ष्र मुंत्र व्याप्य व्या र्वात.इ.ज्यायाधिवायानात्रायाः श्राचा श्री मा अहिव "हेयाना **८इर-८स्थाय्र्**चत्व्वायास्यरः गुते खयायव्यस्य व्यस्या स्रा क्र.क्रमारम्परगराद्धायाः वर्षा यगायः वर्षात्या राज्यायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः व्यायहर्मा यायह्यसा निर्मात्र विक्रिया [वनः ग्री: नर्मा: न्वर: न्दः वर् दः श्री: रेम् का विष्यं वि शे सदः वी: ्रें का र्स् व सः । विनामते स.क्रेरे वे म. देन क्षेत्र मया पस्ता र त वह वहा वदा वदा र देन .... **कृष्यः विमः छेन् : सॅनः अश्रम्यः अश्रम्यः स्मायः स् ४५:५०म् अन्यः ५४ दः** न्याः विषः न्यः कुषः म्रेषः छे नः नुः नङ्गे 'नव् मः । । । **इंन्-अर्ग्यः मृद्रेट्-अर्ह्-अर्ह्-।** प्रि.त. मृद्रेयः वेशायः श्रद्धेययः स्ट्रः न्वेन प्नायाद्र न्र क्रुंन् व्याहेन विदान्त यो न्र क्रिना वितान्त यो न्र क्रिना विदान्त यो न्र क्रिना विदान **ॾॕॖॸॺॱॾॺॱॻॖ**य़ॱॺॕॺॺॱॸॣॕॺ॔ॱड़ॿॴॱज़ॣॸॺॱज़ऄॖॎॸ॔ॱख़ॗॳॱय़॒ॸ॔ॱॿॣऀॿऻॺॱॿऀ॔ॱॱॱॱ **र्डेदर्नवम्:**रहरः वेर हुरवाबेर्यं माठेवाहरा देरामवाहा देवाः .... ब्रद्यायान्द्रयात्रायात्रद्यवान्द्रन्द्रवान्यात्रकः स्वतास्य्याः वित्रस्रा **क्रॅंबल: हे. ब्रेट: क्रेट: यूट: पट्टाय: या चारा श्राः । हो व**ाहे या नहें या नहें या ग चिन्यान् भ्वायर र्वा श्वे या उरा वर्षे दिया श्वे रिया श्वे स्या वर्षे रामि रिया स्था स्था स्था स्था स्था स्था स श्रूरा ने वर्णन् हैन है पर्व तह सम्बन्धि में दर्भे सम्बेर हे हे हेर नियान

वव्यः वृत्यः मुलः द्वे दे ने व्यवे लः हैं वि व्यव्यक्षेतः मी वः ह्वा मुलः द्वा ॅॅं म<sub>ॅ</sub>र्राञ्च याचेरामा मृत्रिक्षा र्राट्य पालम् तडे ता गुका तड्या क्ष्रिंद्यः मा ्यम बे: र्रे रिनः र्यम सम्यामा श्रीम हेन् भरे है मन्य विमानु < इल क्रियान्तात्व्य ध्यान्धेव हिते यमात्वाहाक्ताहरहेताः रमः चुक के रेण्यामणा वी की ्यम्या म्मा ६ मा सरा रु में न के बर नेया म्बायाञ्च व किराक्षेत् ग्रेया स्ट श्रुमा स्व श्रवा स्व श्रवा क्षेत्र । भेषाय **चयास.र्ट. इर्य.** १वश होर्याविट.ध्याजिट.यात्रक्षत्रयास.र**स्**व **लट.क्र-्रटा** पर्यथः**र्ह्र्ट्य.**त.र्ट्ट.प्र्यंथःच.२४४१क्रे.पर्वेष.च. चन-प-**न्रा** श्रेन्-श्रेष-तद्द्र-घा वर-प-यन्य-कुर्य-पदे-स्रव या-न्न-গ্রুবান্ত্রিবার প্রকাশ এব ক্ষান্তর ব্রুবার্ট্রের প্রকাশ করিবার প্রকাশ করিবার বি इवसः इर.में. वर्षः वर्षः याचे वर्षः वर्षः वर्षः वरः रेमें याचे दः राष्ट्रे वर्षः वरः पश्चितः च त्याः क्रियाः क्रियाः च विष्यां क्रियाः च विष्याः च वि য়ৢ*৽*ঀৄঢ়ৼ৻ঀৢ৾<mark>য়৻য়ৢৼ</mark>৾৽ঢ়ৠৢঀ৽ঽ৾৽ৼৢৼয়৻ঀয়৽য়ৼ৾ৼ৻ৼ৾ঢ়৽ঢ়ৼঢ়৻য়ৢয়য়ৼ৻৽৽৽ गुरामा महिता स्वार्थया यहा वाता हिता ने रान् है वा है। यह वा यह ता यता त्य्य.कूर्याचील.मू.चर्च.कूर्या.च्याचील.चक्र्या.पद्यता.मुद्रायाचील.स्य न्म्यावेयाः हे नयाः श्रुत्या वेदया यदा गुरा गुरा विदा मेवा राया दराया दराव या । ब्रद्राद्यः हे त्वववायह्यासराधना ह्यावका वित्रावा ह्या द्वापा या वित्रावा वित्रावा वित्रावा वित्रावा वित्रावा र्ये वर्षा वर्षे वर्षा प्रवास मिला हिर्या के पर मिला है र्रः के अवात्रः नेवा क्रियाया इया वानेवा के व्यरः द्रावे ववा विवा व वाया नेवाः म्मादः स्वान्तः व्याद्वः । व्याक्ष्यः क्ष्रं द्वाः व्याद्वः व्याद्वः व्याद्वः व्याद्वः व्याद्वः । व्याद्वः व्याद्वः । व्याद्वः व्याद्वः । व्याद्वः व्यादः व्या

प्राण क्षित् न्या के त्या ने त्या ने व्या के त्या के

६ने तत्त्राह्म द्वा द्वा त्व स्वा ते व सह ता ते खा दिन ते का त्वा का का विकास के कि का विकास के का वि यवरः। त्रःश्चंतःकुःयःकुःवत्र्दःश्चे विष्ययःसदैः ग्वयःहंयः स्यायाः यदः यान्वयार्थिन् । ब्रिटानियाक्रें नवाहेयायेटाकेवाह्ययाश्चाह्य । न्द्र क्ष तर रग्द द्याग ग्दर हे डी कुल की के कुल सक्यत दक्त है " व्रत्यतः खरा शे ळवा परि नगता कु रनवा र्रा रेया मा खर्पा यो विष्र तुः ध्रे के नन्न इन् हे तः न्यान का विकास के स्वाप्त क **พระดิสะอร**์.พระจฐสะฮโสะสโสระรับระจัดีสะบดิสะระจังสระจะ ययान्वसार्ध्या के में मारा संका अन्य स्मार् कुरया यस्ता निर्मा बन्दरः कुः बन्दरः ह्रेटः नुः चर्षे द्रवा ध्रेष्वा वर्ष्ट्रा वर्षे द्रवः नुः चे वर्षः तुयाने न्दर्ध क्षेत्र खुवा वाष्ट्रवा कुवानु कुवा हे न कुन् वरायवा धराव व्यापा मर्था क्रीम स्वारा ता विद्या सम्मान क्री क्रिया क्रीम विद्या क्रिया विद्या न्द्रण्ड्रीयाने मंत्रायद्रशासीन् च्युर्नेत्राह्रेन्याहेराक्षेराधाः स्राप्तेरा **ढ़ॾॕढ़ॱढ़ॕॸ॔ॳॱढ़ॾॕॸॱॾ॓ॱॺऻढ़ॏॺॱऄॱॴॺॱढ़ॺॱॺॕॱॸ॓ॱॴॺॺऻॱऄ॒ॸ॔ॱॺऻढ़ॸॱ**ॴॱ कर्ष्वरा नेर पहेन केर पर दि पर रेश किर पर रेश केर <u>देशःच्र-श्र-देवलालाकुवाविष्ट्र-श्रेश-देवेद-हि</u>श-हेशाद<u>य</u>न्यायःग्रुया

स्तिः खेवतः तेत्रः त्व्वतः त्वतः व्यतः त्वतः त्वतः व्यतः त्वतः व्यतः व

गूर-र्इर-श्रेर्-मलुर-धर-क्रूर-मै-र्सुल व-मवल पर्द ध्व-शे-स्-तुर-युरा दर्ग्री के रेन्या प्रमानि वी के सर र्रा कुल म के या न देन रेन्य त्रेरःश्चु ।पणः गैराःश्चेराःश्चराःश्चे । सहरः सक्षेत्ररः पह्न स्थुरः प्रारः देतः क्तुं **बहेरा स्वा**स्वादि का धुवादि न दे त्या हु की विरापि केर हु के ইন. (1866) মুখা প্র-এই এ. গ্রু এ. গ্র ष्टि:र्ट:श्रुट: १ अन्। पर्श्वन्यः हे .या अक्ष्यया शु .चेटा ग्रुट: मेया क्षटा त गुला चुेन्-य-न्दः। न्चेव-हिते-बै-न्दः अळ्यल-ग्रेल-वन् ग्रे-ल-विद्यासु-व्यन नरःनगम्। तर्मम्। चुला र् रुरः खरः बुरः लरः मदल छरः दर् स्व र्गरः इप्र- हेब्र- कर्म देवे वर्षा रेवे वर्षा तर्वे प्रति स्थान श्रास्त्र 대조·전·육· [ 도· 다 왕 미집· 다 : 회탈도· 다 된 대· 집 · 황미· (1866) 전요· 월 · 큐 · · · मञ्जु म् रेना मिते देवा हेन र्मु हेन गुर में राम रूप स्र र् <u> न्द्राक्ष्यक्षेत्रं नात्र्रक्षेत्रचेष्ठक्षेत्रम्युरान्द्यार्थन् न्वुरानेः</u> อิเอนาพาสัสาณ"ราษารัรามสารปิสาธินามารัฐานักเละสส<mark>สา</mark> न्नरः नजु र व रा चु र तरः क्षुं नलः हॅ र र नजु नः स दे ते र व नलः धु तर है केंद्रः " त्युवारमामा क्या चेन् किन् नेन्। न्डेव हिन का बळवा वा क्रांचित का क्रिया का क्रिय का क्रिय का क्रिय का क्रिय का क्रिय का क्रिय का का क्रिय का क्रिय का का क्रिय का क्रिय का का क्रिय क **₹**८:२े:बहॅर:बब:३:४:४५:३८:| ८**:**ౙदे:कुव:विव:कुब:कॅब:५:३२: वर्ष्त्रेत्र्यान्यान्याः वर्षाः वर चेन्-तु-दह्दन-र्रम्यानवर-"वेयाधानी-वहराद्युर-वृद्धातस्याक्षेत्र-युर-१५८-१३१ मुल्र-१८८ अम्-४ म. १८ के १५ मूर-४ म् १५३ १ १ १ १ द्यायर श्रे व मेर्पर वर्ष र विषया वया वया व व स्व र स्व व मुर् व त्र र त व्यवराश्चित्रव्यविद्यालास्य स्वरः यदे रखः द्वारः मान्त्रान् मान्त्रान् विद्यान्तरः थनःग्रुटः वॅन् लः ग्वलःश्रेन् ग्वल्टः न्टः लेनः श्रु**ः कै** कटः व्यट्लःग्रे**लः केवः** युद्द-न्युद्द-वी-व्य-तिविध-यी-विश्व-विद्य-नग्र.वेषाञ्चन म् ेर्.े.शरःश्च-अन्यावयानवादवास्य न्यून धेवः मराः सं : द्वापटः वयः धटः द्वेतः वेतः वेदः ग्रीः येवः "वेदः ग्रीः स्वतः र.१८.१३४.५.व२४.५६ज.त.५४४.र्बर्था.व्रत्याया র্মুবা धैरः द*वेव* ग्रेन्: न्वॅल: यदे: ने 'च: वक्टॅंब' केंदा कुष.र्था.प्रथाशी. **ॸ्**ॾऀ॓ॺॱॾऀॺॱय़॔ॸॖॱॴॻड़॔ॺॱय़ॾॖ॔ॴॼॖॺॱय़य़ऀॱक़ॕ॒ॱॹॗॹॱढ़॓ॺॱय़य़ऀॱॸॆ॒ॻॱॿ॓ॸॱॺॸ **"तुरानेन:न्डेद्रोहे** प**र्दद्राज्य अन्य म्याया अन्य क्रिया वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा** वयार्नर्या पुरुष वर्ष वर्ष वर्ष केर्। क्वी या 1887 वराया बद्धवराशु न् वर्षा वे ने रा हिंदा ह्रण र् या न ह्री दर्श रा न ही प्राप्त है । न्वॅर-म-अ-बन्। मन्-क्र्र-अनुब-वेष-पदि-ष-ज्वष-नेर-न्वष-अविदे-**ॲ'कराप्यूर, कुबेर, सूर्य, व्यानूर, ये. यह्य, मुन्यूर, म** न्रेंतासु नई न्या "वेया विन्। श्रमया ने राया न्या ने या रात्रेया स न्वर-दिव विन्यावव अर विन्दिन्याय भिव स्वर प्रवर्ष यान्द्रव तहीयाचेन् देवाळ्न याचि द्वेवानेवा हेवावाचुरा व स्वान् वरा ८ देव : तथा श्रे. ५ में . च. या वरा दरा कुषा वेषा पार व दा श्रे . या पार व दरा व

यदै प्रवास स्वास मिन मिन स्वास मिन स ह्रवायवतार्ष्ट्रियाचेर् छर् यवतायक्षया शुः वि नार्ट र्य यदि त्यता र्भे त ग्री न में न त्र में स्वार हु या स्वार म ने मा म ने मा न में मा न में मा न में मा न में मा न मा मा मा म नवर न्नेयावर न्त्या वर निरा दें नि न्नया में नि विवयः विया वरायव्यान्यक्यान्यत्यम् न्यम् न्यम् स्थान्यम् न्ता न्तुरन्त्रिया चुरक्तेन्त्रेव के के तहिरायम क्रा रेरन्यम र्टा व.४.क्रियाना १६.५ में ८.१ में ७४८ ८.४ में अंति के या प्राप्त के या के त्रिरः वै:श्व:पर्ट्सं प्रवृत्ताः न्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः बे क्वें मुनरा निर्वाय दिया विकित्य हिन् में अनुरा मन्तित्रः मन्याक्षरः मिन्धेनः न्दा धन्या अस्त्रान्यमः धन्या स् रैम्बराग्रीकाम्**डॅ**काम्बदाळवाम्दान्ते ५५५ तम्दान्यक्ष्या ५६मा ५८ ..... न्द्र-तर्व-र्यावयःश्वायः श्वायः म्द्र-राज्यान्यवाः ग्वयः तस्या च.कै.केब.पकेट्य.चेब.परीट.पे.ज.श्रूट.च.जय.पब्र.पहेब्याकै.टंटा रे'नदेव'र्श'दर्भेष'र्यष्यान्त्र्र्भेष'विषयार्थेयान्त्रुत वर्र्र्भेष' ॡवॱढ़ॖॏॱॺॸॣॺॱॿॖॸॱॻॖऀॹॱॺॄऄॕॹॱॿॖॱॷॴॸॺॱॴख़ॖॺॹॸॱॺॹॸॱढ़ॗढ़ऀॱ**ॱॱॱॱ** न्नॅर्यः न्व-मन्व-यः केव-सं-इयः नवि-न्दःन्धयः व्व-म्यरः केव···· र्राञ्चन्यार्न्यार्वन्यार्वनायव्यात्रक्षावार्वेनायदेश्वळ्ना नह्या 『女伝· 、 プログ· 動口・ 類 ス・ 犬 ス・ 類 ・ 口 類 ロ・ 重 ・ ブ て 、 | दे दिशेषाम्बद्

रुवादेर वर्षावयाक्षर विराद्य सेर ही व बर प्रेंट्य व्या र्चेत है नद्यातहाल सर त्वांग क्षिय छेर् सदे र्या श्वर छेर् क्षे दे न्डेन्-तु-न्वरः। बे-धन् (1887) स्ते ह्र-पत्त-हेन्-पति-हेन्-पति केष्य । প্রমান প্রমান দ্বান ক্রমান ক শ্ব-ব্ৰন্ত্ৰ-নৃদ্ৰে ব্ৰহ্ম ই ন্ৰ্ব্ৰিষ্ট্ৰ্ৰ र्सर: र्वण तेर: श्रु : स्पन्न के स्वार्य दिन र स्वराया विकास । पश्चित्। य. बक्ष बया. ग्री. चे बया. ब्हें ज. हे ब. न हे ब. हं . टे च. कु. न हु. चे ब. शी. ग्री र. न हु. . <del>ৠ</del>ৢৢয়য়৻ঢ়ৢয়৻ড়ৄঢ়য়৻ড়ৣ৸ৼ৾৻য়ঀৣ৽ৡঢ়য়৻ৼয়৻ড়ৣ৸৻ঀৢ৾৽ড়৾৽য়ঢ়ঀয়৽৽৽ **हे ॱ**न्चेदःहे ॱन्दः चन् नबुदः धन्यः न्द्रेयाग्रः वे 'नदे 'ग्राक्यायंदः '' '' नदैः ने न न हें ब : धर द है व : है : पर्व ब : द हुं त्य द अया वी वा व ब : द हैं या हु "" 

बुब्। यन्ने ब.ह.च्डब्.वह्याम् बन् ब्रे.चर्याम्ब, पक्नु ख्राने स ब्रॅं त्रानु ल्या तुरायान्य व्याप्य रिवारित इर. विव इवल श्रम्मायर वी छे तरीय में वेष कर हर हर देव रेगार बर्द्रः च्युवार्वतः न्वतः रवता ग्रे वळ व क बदः म विहेर हे - न्हे व हित न्यम् सिराधर क्षार्या द्यार्थ द्वा केवा द्वाराया सु द्वेवहेल येन् या मर्जन र मुं तर मुं तर दे र तर मुं तर दे वर " तु तर में र म् वर्ग करा हो र " मं कुं न मित्र मित्र मा न में मित्र मित्र में मा न मित्र इयल'न्ट्रल'ञ्चन रव.ह. क्रेलाहे द्वेर व्या व्राप्तवा प्राया क्रेंब. कः दः यदः यः वुदः वदः विवानिकः पतिः छे यः पत्ति विवानिः विवानिः विवानिः विवानि **ढ़ॱॸढ़ॳॱ**ॸढ़ॖऀॴ**ॸॴ**क़ॕ॔ॸॱज़ॹॱॸॿॕऀ॓॔॔ॱऄ॔॔॔॓॔ॾढ़ऻॱज़ढ़ॗ॔ॸॱऄॣॴॱॱॱ चेथा <u>रूपा-वर्षा जूरया ग्रेथा ग्रे</u>शीया अराध्या स्वाप्तर स्वाप्तर स्वापा बेद्रायरायर्बद्रायह्र्याद्रवम् द्राद्रवम् त्वयाचेद्रवाबद्राचुवाने वर्तरा न्डेव हिरेन्यण वे नकु क्षा ठ्या नत् क्षा न न्या की पकु<sup>-</sup>्यॅव-्ठिन-न्द्र-। खुल-न्यन-हे-शु-क्षन-र्य-न्यम र्यन-ह- व्र-" लेया निम्। र्वेय.र्रे.र.पर्यथ.र्बेट्य.श्र.श्रर.च्या.श्रेट.र.ंत्रय. 'व्यय. न्यंत्रत्नेन्याः वन्यंत्रवेतः विश्वत्यंत्रत्यंत्रः म्यन्यः । वया पद्यापद्वापायात्रराकृत्यायात्रराष्ट्रयावत् इत्या **त्राम्बेरापदे केरा पञ्चान्त्रेरा ने वार्ष्ट्रेर में वार्ष्ट्रेर में वार्ष्ट्र केरा वार्ष्ट्र केरा वार्ष्ट्र में वार्ष्ट्र केरा वार्ष्ट्र** खर्'र्क्षणर्ष्ठेव'र्वण'व्यरकेव'वेष'र्दे' र्रेर्'र्वण'व्यक्षरः... लट. खंर. मूं ज. च या अ. श्रुं बया प्रेषे न या अने छ . च र न या पर्व . उ या

चिषामदे.र्मेषेषार्.क्षेर्याक्षेत्रयाचेष्यामूष्यं मूं अच्यालच में मूं चेषामदे. ६८. वर्षा इयय ६ व महिला बर की निवस्त वि निवस्त ষ্ট্রনথ্য গ্রহা रविव इ.पद्धारिष्यान्यास्य स्र प्राप्रद्याश्च **ૹ૾૱**ઌૢૹૻૻ૱ઌઌ૽ૺ૾ૢૻ૽ૼ૱૽૽ૢ૽ૺૹ૽૽૽૽ૢ૽ૼ૱ઌ૽૱૽ઌઌ૾૱ઌૡ૽૽૱ઌઌ૽૽૱૽૽૱૽૽ઌ मधे वर "इर र श्वा स्थय वर्ग वर र र तहर हे य वर्ग वर हर देय रे दि है कि न्य न है लाय बहा स्ट्रिक बहारे दे तालन न है न हि किन हि ।। श्रुव क्रूंर : स् : नर् : पर्ने : पत्ता : द्रिन : द्रिन : राम् वा क्रिन : व्यून हैवः है ग न में मार्ची न है वे र से मार्च मार्च वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा है स इबिय पर्'र.रेज लट.लट.विय.प्रट.च्ट्र्यंट्रच्यब.ब्रुब केट.य..... बर्चेर क्षेत्रय रेर बद्ध व ब्रासिर प्रचीत वया वर्ष र क्षेत्र अया हिन् या रेर ब्रुट गुर तहें बल भेट र्पंपत वहं दल इव परे में ट न्वम मेल बहें दे. **इ.** ंथट.केंचय.६ य. रेब्रेच.हपु.रेशची.सेंच.ब्री.षघष.घषु.ल्रट्य.धी..... पर्भू र हे में र र अम इसर क्षेत्र भागा हु के रमम रस रे प्रिया हुन ग्रेग्, तुः क्ष्यं ग्रायत्वे व्यव्यव्यव्यक्ति द्वार्गि के के विवाद राम् द्वापाञ्च **है**रामाहुरार्श्चेषामध्यार्भिक्षा विकासिक प्रमानिका विकासिक प्रमानिका र्वम् बर्ध्यः दर्भ्यत्। दे व्यान् हेवः हे वर्षे न्वम् मैयः वर्म् वर् <u> ३८.६४.थे.५२.२७च.घट.घ्.लूट.घ.चेथ.पत्रपाध.श्रृबेवय.लट.लट....</u> ८ हे व शे. हे र्-ह च या शेर-हे - व्या शि. हिर्म व्यव प्रायत शक्ष यथा ही - व्यव हंया हेन पतिन सं र्मा के र र पतिन न मान परि के वा ने र प कुर हेन

ने हेबः न व ्नवर्नेन विदान्दा वेरा हु वासु बर्धर-रेड्डेबर्ट. क्षारहिलासरासर.ध्याडेरासप्राचित्राच्या नेबाडवा नदे नगद नव नु "न्द्र सं न स अव न न से न परःगः तः रेग्वारः "वेषाग्रुर्यः पः विवा सुः वहुरः र्वेवः दर्भगः रहः शुर-द्वम् त्वतः वु कु महदादियः चु का यद्दः द्वद्वः सुदः र व । । । । न्यर तत्राई हे न्रा इ अयं व च अया पा पह व तहे व गहे क छ । विषा त्यका च । द्वार के त्रा क्षा प्रति । त्रा के त्रा के त्र के त्रा के त्रा के त्रा के त्रा के त्रा के त्रा के त वा हे इरा वापानकशाहर प्रमानविदेश स्वापा के मा हिन केश.चमु.र्टः। क्रे.च.ड्र.चेट्रः रटः। ५द्वर्थः मेथा प्रया र्मत। ई.रंग. श्वेया.की.लेल. रंबन.क्रम. हेर. रंग. पची. लेल. रंबन. श्रं र्वित्वर्षे त्रम्यकातुः न्यवः न्यः। वज्ञः न्यव। वेरः न्यवः वरुकः व्रि**यः** पक्षयः तम् । न्यमः ग्राम्यः क्रेयः क्षेतः पक्षनः पक्षः त्रामः । इवि.पे.बेर्ट.बर्ट.बर्टी बैजार्टर वितारके वे. में अह्म अस्तान्ट. न्त्रान्द्रवा इवराया स्वराया स **व**'मञ्चर'र्सम्बाधिर'क्केंबायाम्बद्दाक्षेप्यवार्मेयाम्बुम्यारुव इववारा रा वदरः श्रुं र र्वे वासदे पञ्चर छ । यद । यद । यद । यद । वद । **९व्-**ङ्द्र,लुक,चूर्-कु.शु-श्-अं,श्व-बर-बृथ,बेका,बेक्य,बचप-श्वर-ब्री-वे ..

बुर ल बेन श्रुर अवतः विषानु जावर नः या बरा न्यमा र हन है . म न्यकास्यका मुक्रार्यका न्रारेका मात्र्वा न्या व्याप्त हित्या क्ष्यान् न्यान् वित्राची क्षेत्राच्या क्ष्या वित्राची क्ष्या वित्राची वित्र **डेन्: बनवार्ने र वें ब**नवाइ **व**ं या डावा पर " न्डी वा हे : न्राखु : ठा वा वा वा **古春年、七、七七、大下、仏母、劉七、劉中、司十、日本、司、劉十、司、成七、司、四十、十四、** मःविषाः भव्याः केवः श्वरः न् इरः श्वरः विषः नेवः क्वरः श्वरः । वरः **६मॅ लः" वे लः गवला सुतः र मलः र मः रे अः मः वु सः ग्रु मः वृ वः** यहँ गः शुः र अः **बान्नैयानर.ब्रिट. नवया.**रचिट्र स्वाप्ते राष्ट्री. प्यवाक्त प्राप्त व्याप्ते राम्याः **४५:५:बर्त्रायलादेश:केव्रागुर:५**३८:श्रीर्गबुर:बी:सर्वे।तदेगाल:देर: खन्याराध्यात्राच्याक्षेत्र्याः स्ट्रार्थाः त्यान्याः तेत्रः नहेराने म्द्रार्थाः स्वयाधन देन नग्र हुन हे र देन न में सारा यहा न हे व हे र त में मा से या हे र की इन्। तपुरम्या वि.स. इपुर असूर पर्म बया पुर खब्या है । वेर विषय दे.लर.र्ग.त.लुबे.स.अळ्डेब.कुर.लेर.बिर.पर.थ्र.के.पर.चर्च्याया स... स्त्रे स्तु व द्वां न्या तु पश्चित्। "म् सं स्त्र केव स्त्र हिया तु र्वत् प्रते र्दर्र्यम् द्रिम् वि क्ष्म र्डयारे र्मा क्षेत्र विद्रम् विष्य न्वयःश्रेन्-मृत्वर-त्यन्-तव-यर-यर-प्रम् अवयःनेन-न्धेव-हे-८६व.पद्धातमा होर.पद्चव होर.की.के.ख्या वर्षा हर.पंतर पद्धिर.पद्धिया **য়৾৾৾৾৽৽য়ৼ৾৾৽ঢ়ঽঀ৾৾৽ঢ়য়ঀ৾৽ঢ়য়৸৸য়৽য়ৣঀ৾ঀ৻ড়ৼ৾৽ঢ়ৼঢ়য়ঢ়**৾ঢ়

रवाय इश्रह श्रीर. व. नर. व्रेयानप्र. य.वियालव. रे. य. रेयर. पर्वे स्यान अल छूरी तर्व प्रवास ने श्रम हैं . स्वयः प्रतास साम स्वास र्रिसावेय मादः वार्ययः मदायन दे ह्याष्ट्रयम् इरावयः ग्रैयः ुःक्किंग्नेग्नित् न्वम्। त्र्याः प्रिक्ताः विकान्याः न्वेकः न्वमः नश्चर-तु-पॅद-व-र्चन्-स्व-लबानव-द-त्य-श्चन्-क-द्वेत्र-क्वन् "केत्र-्वान् वाः २ळवायर र्वयाय १८। वर्षा वर्षा श्री र मिलु र मिलाल वा रवा ग्री : न्ग्रात्रच्छे न्गुरु लु । द्वया द्वा यया द्वा नु । द्वा नु । द्वया । वा या हे । द्वया ने ्रायान्त्रम् दे देवालयान्द्र छेटा वर्षा क्रीयार्य र र देवा ॱॠॕ**ॸॱॶ॔ॱख़ॕॸॱॸऻॖऄॿॱढ़ऀॱॸॣॸॱॶॕॴऄॗॸॱॿॖॱऀॿॱऀॿज़**ख़ज़ज़ॸॾॕॸ॔ॱॷॸॴऄॗॸ॔ॱ ब्रुट-दे-ब्र-ट्य-द्यट-ब्र-यबट-दिवन्यय-रय-क्युयःब्रह्म-द्रः। यगदः পশ শব্দকাৰী বাৰ্দিৰে বিষয়ে প্ৰতিষ্ঠান বিষয় বিষ षयानवः हेर वरायासर वु ीवास्यानदे न्वानु "गृर वुन् वि सः … रम.वैर.पर्.र्ज.तपु.यु.वै.पू.वया-विव.ह् थार्ज.ब्री.चर. तिवित्र. २. ५८. थर. इ. ८. ५वील. वियर निर्देश विवाध वित्र विवास विवास रर्जमाने रर्जन वहां माने राख्य माना प्रति । सरा नती विराधा परिते । सर <sup>ৼ</sup>৴ৣৼ৻য়৾৻৶৴ৣয়৽য়৽৻য়৻ড়৻৻য়য়৽ঀয়ৢ৴ৠয়৽ঀৢ৽য়ঢ়য়৻য়৻৸৽৸ৢঀয়৽ र्राष्ट्रकान्याः अर्राष्ट्रका रहीयाश्चराच श्वाक्त विषया महित्रकारा स्वरा तत्राकुषास्व तु सु र जरा त्रेयवा स्व । वर । वर । वा व वा वर । वर । ब्रेट्-दयः शायक्ष्यत्रशुः दर्वा - द्या नेया यह दः मैता वर्षे वा श्रुटः हर्यः वरः

**डेन्**-वर्ष्व **धेव गुरा ५ ७ ७ ७ ४ वर्ष हर वर्ष हैन ग्रे**न्वं रय तकर ने म्बर्यान्भ्रत्भ्ताम् स्यापन्याम् केवास्तर्यात्राम्याधेवावेत्राण्याः व्यवः नन्- नवरः नः कुरः न्वनाः अळ्यतः द**हेनः नृत्ते तः नः** सः दर्धे तः ग्रॅः **वेरः** प्रेन सदै: न्डैव: दर्गेषा हेन् : बायव: वॅन् : न्यषा : इय्या : या व्या : प्रेषा : तु : र न क्र्नाय नृत्युयास्यायायायाययायत्वायाय्यायाया । क्षेत्रायवे वासाया वयालु य ने में यापान्या। म्याजीन क्षेत्रात होवा व्याजान्या राष्ट्रमया परेते में अपया ह्य पाविष रहा धेवा प्रवाहे वापरा हु । व्या अपया रहा रे दें दारम येव रहार क्षेम या विषालुषा क्रमण देम हो र क्रें र बक्क्यं.रटा च्यांच र्यां येथाक्क्यंयाय.पर्यंद्रानयकार्श्या नेवं र संबद्धिः ष्यात्व केत्रवाय व्रत्येया है क्षेत्र वृष्ण गुर्नाव प्या "दे प्यत् स्यीया" बैं। बः रेत्। वॅत्रत्यवा विवार हैवा यवा रेत्र तहेवा या सुत्। ते है दवा धिरः विव चेर् न्वेषः "वेषा अवतः म्हेग् हु न नन् धैंग्वा अहं रक्ष केः २ैष्रताग्रीॱॠरः २२ेव सालबायवाकेराखराखेरायानेराग्**रें** ५४ श्रीर… : बर-न्डेव हेरे न्यम् बर-तु-पर्क्रुन-ने-न्डेव-न्लुन-क्रु-ळच-ब्रेर-न्न-অও অ.বি. ধর্ম জুম্ম দ্ম স্থান মেরা অ.ম.মছ অব. দ্রী - ট্রাম্ম স্থাম ন্রাম . শ ब्रूचा चेया वाज्ञर (1889) स्रा च्राया विवाहीर नेवर में हिंदा रगात व्यापानमा नेवान्त कुषार्यम्वा कुषा व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त मन्द्रित तथारम क्रियायळ्या र्दा म्यून क्राक्रेन मा न्यून मु द्रं व देवारा सुव सेंद्र वी लु किया मरिय सुव हे दरमा से हिना सेव : **डेन्** खॅन्य क्रॅन् नें न्ने नगान नविन लुया क्रेन न न न का सक्त सका न डे

प्रवितः मृत्या स्वार् म्याः स्वार् म्याः स्वार् म्याः स्वार् म्याः स्वार स्वार स्वार स्वार म्याः स्वार स्वर

**शुःव**-स-नयार्थ-५६दे:ब्रु-५८-दॅदे:ब्रेक्-५५-देन्वकारी-रा<u>शुः ----</u> **ॅपट्यःग्रेयः**अभे**दः**र्गुट्यःग्ठेगःग्रम्यः **ह**नःग्रंयःनः नहनः सः नहेदः हः **न्दः स्वाक्तः त्र्याः ब्रायाः कवार्यतः व्याप्याः वर्षाः स्वाप्याः स्वाप्या** लन्। पर: तु: ल नका कॅरा प्रिंदा दे के कार हु: न है न हे कार से मु गु: हु: के रा **केर्-तु-न्द्र-र्य-प्रदे-सुन-र्य्य-सृ-सु-र्य-य-स्नि-न्द्र-**ष्टि<mark>च. चु.श्चेच. कं</mark>ट. क्षेत्र. अकूरे. श्चेच. योचन. येथा. प्रचारा राष्ट्र. थांथे थे. थे. **चलुन्यः द्विरः विचयः स्यरः चर्नान् दी** स्टबः ८ ह्वि. सुरः द्विना चुब्रवः यः कुः **अट. क्रेब्य. पहें व.** पहें व. पश्च. पश् ब्रैलाश्चरम् नवरारनार्नरायक्ष्यात्रे वा क्षेत्र वा वा वा वा वा **र्वन्यः न्न्ः धर्वः न्ने** त्र्नुवः श्रम्यः र्वः न्त्रियः श्रुः पक्षेवः धरः ≹व्वायः सः न्ने श्रूराने स्वायायवेषाने रा दे व्याष्ट्रवया राक्रेव वे राश्चर श्रूराने **ૹૻ૽૽ૼૢ૾૽૱ૼૺૼૺૼૼૼૺ૽૽ૡૢ૿૽ૺઽ**૽૽૽૽ૻૣઌ૱ઽ૽ઌઙ૽ૺ૱૿ઌઌ૽ૻૻ૱૽ૹૻૹૻૹ૽૽૾ૻ૽૽ૻ૽૽ૣ मुद्रा प्रमृद्र र्ह्ने व् राज्या हरे है। यूर्व राज्य शुक्र ग्री र हुरा श्री केरा **क्रु**: न्यं व: रेग्या व्यं द्या पठका व्या सहया न्रा न्या वाह्र या हे व: म्युस পুৰ্বাব্য-ৰ্য্ট্ৰাপ্ত প্ৰহাৰ্থ- শ্ৰু-ৰাখন শ্ৰীব্য-ৰাখিব-প্ৰাব্য-প্ৰাব্য-ৰাখ্য-

पतुन-नरः मक्षारक्षेत्र देवाषा ० तुषानः में 'क्षारा पानाकी रान्द्र स्पन्र" " म्बार्श्यवायात्रव परिवा राष्ट्रचार्राहेव.बाक्राप्त वार्यव.स्वाक्राक्रिया न्ना क्षा ्राचे वारवाया यक्षरा होव हा छ रायस्या गवन यह रा ह्या यथ ग्रॅं यः हेरा श्रुपता अमृत हूं .यदे हा या अळेवा हे .यू .च्टा छव .यू .चं .हा . लरा हिराने नवा ने क्वा स्राप्त हम सालेरा वापना में वार ग्वा हे तहन र्वेट्य प्रूट.य र्रोट.विद्र बालूच पार्ं थ्रर.केच.त्रीता वि. वैच तद्र क्रयः यहें बारेब मूराव वहान मुकारण इपास्तानमें राजन हरा तर सर स्टर लपु.श्र.वा.व्याश्च.या.रंदा कुर्या द्वा. कुर्या हुवा श्वेच ह्यां या इच या. तर्-द्रम् नम् द्रियः भो सक्षत् क्ष्मा सर क्षे नया ह्रयः मुक्तः भित् क्षे प्रम्यः । <u>য়৴৻৸ৠৢ৾৴ৢঢ়৻৴৻ঀয়৻৸য়ৢঢ়৻ৼৢ৾৾৻৸৻য়ৢয়য়য়য়য়য়য়য়ৢঢ়৻ৣ৾ঢ়৻য়ড়ৢ৴৻৸ঢ়৴৻</u> पद्भव रट. इया वे. श्वर. ग्रे. टकेव. त में किया पष्ठ पा भेया । में या ह्या प्या न्यं हु यदे हु व यः गृद देव तयर वदे व वयर वह व व हु उदे ..... ल्लाम् विश्व विष्युः त्रारायदे ल्लाम् विश्व का विष्यः छे । बेडुब के हिबा हिरान बेडुबा हिबाय अर्थर या स्ट्राय सहय के मि क्र.प.चड्डच, रंक्य. क्ष्याऱ्रं.,, क्य.ह्यप्यात्रं दंर.क्रं. व्या चे.पबैर. इर्ग्युलाहेबावर्णान्यय इवियानुः श्चार्यानुः विरायन्त्राव्या हा प्रते भ्रात्मक्ष्यां में स्वाप्ता प्राप्तिकाले प्रमेश स्वाप्ता स्वाप्त स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स

नश्चरतः ऐ तृताने र वृत् वृत्ता हुत सार् श्वर स्वा र र हुना तहेरः । 5.2८. कुच त्.विट.त. ही हिंद वर प्र प्रमा तथन तथन हंग. सूर वि গ্রী'ক্রমান্ত্রীর'ব্রমান্তর প্রামান্তর প্রমান্তর প্রামান্তর প্রামান্তর প্রামান্তর প্রামান্তর প্রামান্তর প্রমান্তর প্রামান্তর প্রমান্তর প্রামান্তর প্রমান্তর इरावृत्य हुरावदे जुरासुन हेज या सन्द्री ही क्षेत्र की तराय या ।।।। सुम्बारा केरा क्षेत्राया न्दान के म न्द्रीता है निव्या तहीं वा प्रवास में प्रवास इंचय व.ज्.च्ये पर्य. छ्रेर. ये. पद्य. पहें या रचना प्रतिन वर्या हें य सः ह्रारायते मुन् छेर् सार्राम् केवा केवा मेरा वर्ष गुरा छर श्चेन् नृ**तुमः दे हिम्मो** न्**त्राय व नवयाय दे श्चेव वे प्रमा**श्च नया छे . . . वरानी तथा देव वाद्य र्ना त्या वार्त्र र द्वा या हिंदा प्रति वुवाया द्वाया र द् व्या विकास ম গুকা **৾ঀঀ৾৾ৢঀ৾৾ৢঀয়৾ঀ৾৾ঀয়ঀ৽ৼ৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾ৼৼৼৼঢ়ৼয়ৼঢ়৽ঢ়৸৸ৼ৾ঀ**৾ৼ৾ৼৼৢৼৼ৽৽ ख. २. ध्या. में स्वयं ने न्मा न स्वाने प्राप्त में न र्रः पत्री पक्तरकारा-त्राष्ट्राचककार्या **म्रा**चिकाराचेवकार्श्वकार्-त्रचार्का पहेवा श्रीतः श्रुंदः ने 'सॅ 'यळॅ न' नीयान् नेंद्रयालु 'नेयाया यहं नाने 'हू 'यदे ह्वाया या वित नक्षेत्रकु अक्षेत्राश्चित्र तम्वा सद्वाश्चा प्रवेता न्म्या परि न्येत्र क्षेत्र र्शेन'विरा पगाव'नमा न्रा महना सेरा सेरा वह साम महा हारा देन्या सेन हु अर के मान करा ग्रीया ग्रुम हू । यदे ह्या बाक्र माने वा से द् त्राच.र्द्र्य.थ. - प्रेय रम्यायपु. प्र. पर्थे त्राय हेरी वेट

<sup>579</sup> 

खन्। (1894) यं र श्रेन् क्रुंन्ने न्त्र क्रुंन्ने न्त्र क्रुंने न्त्र क्रुंने न्त्र क्रुंने न्त्र क्रुंने न्त्र क्रुंने न्त्र क्रुंने क्रुंने न्त्र क्रुंने क्रुंने क्रुंने न्त्र क्रुंने क्रिके नम्बर्भान्म। मृद्वाराक्षेत्रावह्यसम्बद्धा क्षेत्राञ्चर ঽ৾ঀ৴ড়ৼ৶৽ঀঽ৶৻ঀৣ৾৾৽ড়ৢ৶৽৻ৼ৾ঀৢয়৽৻ৼ৾য়৶৻য়ৢ৾য়ৢ৾য়৽য়ৢ৸৻ঀৢ৾ৼ৴**৸৸৽** मद्र. प्रमाद. ह. नुप्रथा पर्वथी क्रुचाया पर्य. क्रुया पर्द्वया ह्रचा. ज्ञूया स्था चन ववा बुका हे : वॅटाका अळवा या सुता नदी ऋवा बु नदी ख़राही **"वॅटा** य.ছব র্থ.ছব.গ্রু-এট্র.বর্ড, ই.খ্র.পথ.৫**ৼ্ব.ন**.ই*ட.*কুর্থ.গ্র.শ্লি. श्चै.क्र्याथ पा.मृ.पथान च्र.पर्वे.प.म्ब्रीयाञ्ची.पर्याप**्रन्यः भेर.क्र.प्रम्ययः** ७व. ध्रम. ७ ४. म. १८. म. १८ ত্র বি.ব.ৼ,নধু,সমুধ্র,য়ীব্র,শির্মন্ম, শ্রীক্রন্ম,র্থান্ম,ব্র,ব্র,বর্মান্ नम्नतारादे ते के नानर ता स्वाधि स्वे स्वाधि स्वाधि । व्याधि स्वाधि । व्याधि स्वाधि स् बर् .र्च्याया गविराधियाया मु .बळ् रा गया नयाया नरा। चश्चिमः चाल्ले , स्राम्याः शुः च्यायाः स्याः स्यः न्ते र ब्रॅल:र्गुट:ग्रद्य:यङ्:प्र<u>ग्</u>रुट:व्रंग:खग्य:ग्रेय:ग्री:ब्रुग्य:दग्**द**: • • नर्षयान्यान्यान्यान्यान्यत् श्रुतात्वाक्षत् न्यत् स्वान्त्रान्यानाः शुर्-र्र-वि-पर्र-क्रॅंग-ख्रंय-ब्रह्म-य-प्ना-य-विव-हिर्-क्रे-प्रहेंग-মরে অট্টব্ ক্রমতা ব্যান্ট্র্ব রেম বৃত্তীকার গ্রাক্ত লা ব্যাক্ত প্রাক্ত প্রাক্ত প্রাক্ত প্রাক্ত প্রাক্ত প্রাক্ত केते:क्षॅ व्यान<sub>्</sub>या रुण् नग्न त्यादयाङ्ग की येत्रक्षु तेयायु या **क**र्ना चयय. वर् म्र्रे. यूयय. इ. च कु च. पचया थे। र.क. म्र. कूरय. म्बेन्यः केवः यः वक्ष्यः १८, वयः न्यः प्रत्यावः प्रत्यावः हैवः के सुरायः देयः

सम्बन्धितः स्वायः स्वयः स्

রমার্মান্তর বর্ষার্মান্তর্বানার্মান্তর্বান্তর্বানার্মান্তর্বান্তর্বানার্মান্তর্বান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বানার্মান্তর্বান্তব্বানার্মান্তর্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান্তব্বানার্মান श्चार्या मा स्वया ता हे याया यया या या सही ते यहे ही दा विवया है। ते व्यया है लिय-म-अष्टिया ई. ई. पकर है. पार्ट मि. या मूर य अया रेट वि रे अरे. मा देन् मवस देव राष्ट्रेर वे जुल में सेयरा ठव मयरा ठन की प यदे र्मेट्यामान्द्रायमुद्रायमा के या दु न्या दु न्या हु न् म्बर्या कर् म्बर् नरे त्यानम् । क्रिया श्रेर् मृत्रे वा श्रे पर्वा में राहे । तकराष्ट्र त्यते न्ना वाहिरार्गरायश्चराय नेर्या पर्हेर् पर वे श्वर केरा है " बर्गलायदे गर्दे मार्वे तारला नवर ही व कु केव में नक्ष्र तार मुतायता " イン・シャンは なとない事か、うとなる、たいてと、かない、をな、生なないとう。 **क्रु**र्-अ-नम्द-धर-पर्स्र व-ध-क्षेत्र्-ध-ग्रीषा वव-हव-ग्रीषा "@वेषा <u>রুবর্মনানহর্মনোন্ট্রা</u> প্রনির্মা(1895) মুধু খ্রা ৪ জ্র**রা ৪ ढ़ेवॱॺॕॱग़॒८ॱक़॓ॺॱॺॕॱॺॕॱॸ**ॱॺढ़ऺऀॱ**ख़ॕॺॺॱक़॓**ॺॱग़ॖऀॸॱढ़ऀढ़ऀॱॶॿॱख़ॕॺऻॺॱॹॖॱॿॖख़ॱ**ॱॱ** र्यट वियानहेष में अळ्ळ या ते ने या ने हेया में में में या प्राप्त में में प्राप्त में में में में में में में

① (इसम्बर-देव-अद-क्रून-क-वृग्-श्रद्य-255)

② (র্মান্মান্র্রাইনার্ল্র্ কর্মান্র্রাইনার্লাইনার্ল্রাইনার্লাইনার্ল্রাইনার্লাইনার্ল্রাইনা

मश्चिर था प्रतिक्षात्मान्त्रात्मा क्षेत्रात्मान्त्रात्मा क्षेत्रात्मान्त्रात्मान्त्रात्मान्त्रात्मान्त्रात्मान्त्रात्मा क्षेत्रात्मान्त्रात्मा क्षेत्रात्मान्त्रात्मा क्षेत्रात्मान्त्रत्मान्त्रत्मान्त्रत्मान्त्रत्मान्त्रत्मान्त्रत्मान्त्रत्मान्त्रत्मान्त्रत्मान्त्रत्नत्यत्यत्मत्त्रत्मान्त्रत्नत्यत्मान्त्रत्मान्त्रत्नत्यत्मत्त्रत्यत्यत्पत्नत्यत्पत्नत्यत्यत्यत्यत्म

क्र्याचा विट्रायपुः लाट क्षेट्र. यथा शेट्रायपुः शुः क्ष्य ट्रेय शुः क्ष्यः विद्या श्रीयाच्याः या कृष्या श्रीया श्रीय श्रीय

582

स्वायः रंधियः भी . क. स्ट सः प्राययः श्रीयः हुयः भी म्याः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्व

मिलार्ट्ट्रिय रक्षेत्र मि.स.स्यालिबायार्वेषामि विवाय प्रात्र ल्राम्या श्री मिले वा में दे हैं . - व्या क्षेत्र या ते श्री में मा स्वा न से दे । मान्या महेबा हुराबा दरी स्मा नरा मान्या महासा मान्या मान्य में नवरा हरः रहेव नवरा गुरा केवा में रायरा वर्षे तर्मे नवा ग्री स्था ब्रुंगरायमा येव र इस्र हे र हैव क्रिय रवामा विध्य मा महान क्रिरा या हराया विवार्सर र्या चेर त्यार्य या स्वाय या रहेव में राम् विवाय स्वय नव-रूट्-हू-विदेश्व-वाकळ्य र-राग्री-विदेवाय-हिव-हिन्द्रया-हु-मानेश मा केंद्र में द्राया में द्री कर मी जिल र देश सहत श्रुद्राची दश्या तश्या ता सुना श्रुद्र हो द्रा हु । दही दा है । दर्श दा दर्श ता सर.स्.रव प.व रूट.बर्श्याच्चेर.कर जिट.बर यात्रयात्र ब्रह्मा ने इं दें तर दर्ज न र दर तर के के जिर न देन हि र म र् न न तर में न तर म षपु.यं.व्ययाक्षे.ये.वीर.र्ततर.रूपयायकूष.धे.र्वेचे ह.तक्षे.पहेंच त. बन्दरः भूरः तदः वनवा चैया वयः त वेचा शः विदः वनवा अर् रि. चैरा **ढ़ॳ॒ऒ**ॸॱऄ॔ॱॶ॔ॴक़ॣऄॴॶॱॳॖॱॳ॔ॸॱ॒ऄ॔ॳॱॼढ़ॱॳॳॱॶॴढ़ॱॣ वानश्चरापदे ने रव रक्रका हे त हे लग व र ह र त हुर व

वि.रचा.र्टर.ध्र.पव्यत्तस्य लय रच.क्य.भ्रंर.च वर ख्रांपाश्र.पट.च... बरार्डबाडुरावाद्येरावा यायवादे अं हित् हरारहेवा वहरा छवा इथायक्षये. विटा मुं मुन्न विवास होते या निवास होता है वा विवास है विवास है विवास है विवास है विवास है विवास है दर्भग् केरा चेर् म चेरा मदेश्वत्र क्षंयारे 'रेग्य क्ष'म व्याचेर मराया" रॅव-ग्वर्-दर्देते: बर्-दू-त्वते: ब्रु-वाश्चरः च कु-ग्रुव्यः पदे: क्यः वरः · · · दॅ'यबरादेवावें केवें छेटा पराय्वित् धायदी स्वरा "शेत् सुरा दें सें ८ष'र्वर'त्रें वचर'वधेव'यय'रव'कुष'दे'वेद'वे'क्र'य'अकॅर्' ४व'' ग्रीयान्त्रीचेषय असूराक्राबुरा। मिलुरायक्षेत्रायाञ्चनाहेषात्री न्यवाया बुबा-लुब-सर-जबाब-क्रेटा। धर-जब-पश्चव-क्रेब-क्रिय-भ्रीट-भ्र-शट- बी-जब-बक्रमानी बरद सर बर्द र पासुन हुव है न्या प्राप्त प्राप्त है । विकास केटा वन् क्षेट्रवास्य श्रीन् यहतः तनहत्वान् रानकवायः नहा ने नृ ही । <u>ব্দন্দের দের বিশ্ব দের সূত্র শ্রুম নের দের পরি বাই র শ্রী মা ক্রুম নের স্তুম নের স্থাম নির্মাণি করি নির্মাণি স</u> **हे. इ**बाबर ब्रेट शक्रेबर राज्य ट क्रुटे के लाग्ने ला न्**गुट है** ट अर्ड ब ...... म्रायाची ज्ञाके ज्या गृह्या सिक्ति र देशम्याध्या नु र स्ति । स्ता **ঀৣ৾**৾৽ড়৾য়ৢ৽ৼয়য়৽ড়৸৻৴৸**ৼ**৽ড়৾৾৴৻৸৽ৠ৽৸ঀ৾৽ৠ৾য়৽৸ঀ৾৸ড়ৼ৽৴য়৽৽৽৽৽৽ नद्यः क्ट्रियः शुः स्रावेदः वृद् सुन् र्यान्यः वर्षः श्रेषः यः निर्दः कुः यठतः

ग्रे.रव.ने दे. ह्या म्रें र. क्याया प्रिंर विया यर रंतिय है हिया में ररी वृषाः श्रुषः चेरः परः श्रुः स्वः श्रुरः रवः ग्रुषः वषः पर्ञे पर्श्वे परः ग्रीरः रहे · · · · लप्ते ह्ये बरा प्रवे न्दा पराया परा कराये हो विव पर है। यह हे के व चंद्रयाया मैल.र्यर.अक्ट्रचे.ल.प्येल.मैंद्र.वय्य.सेच्य चंदर.पश्चे য়ৢ**৾৾৽য়য়৸**ড়ৣ৾৽য়ৢৢ৴৽ঀ৾৾ৼ৽ঢ়ঽ৻৽য়ৢ৽য়৽৻ঢ়ৢয়৽ঀঢ়৽৻ रे विषापर श्चिमया अर्थ व. क्षेत्र प्रश्चिमायया द्वेषाया निर्मा श्वेषाया निर्मा म्राया चरा ुर्दाना तन्त्रामा विश्व राष्ट्रमा वीर्रमा वर्षामा म्बर्य कर् वर्षेर्य कर् तु श्रुर द्या हे या है या है र पहे या या पा द्या ब्रुयाथानियाग्रे ज्ञुन एव र्या गैयानिया हिया स्राह्म रहे गया या स्राह्म राह्म **ब्रुॅ**८-ग्रु-अक्टर-पर्हेल-प्रतापस्ट-क्टर-हे-मिल्ट-द्रल-प्रियल-सम्बन्ध-सः वैयःरेंग्रः पविवः सर्दरः धरा ५२ में राम्नी में रामिन सर्वे रामिन विष्टि इवरावरा देश मेव विषय विराम्या विरामित विरामित विरामित विरामित चेथताक्षेत्र.क्ष्र.याचेयातपु.वेयाक्षेत्राक्ष्ययाच्च.क्ष्रेच्याचेथा <u> च्र-ज्राष्ट्रम्याच्यायर तर्</u>षे च्रायाच्या क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया व्याप्या विश्वास्य विषयः गर्डेर् र्राप्त्रेष्ठ श्चेर् र्षेर् प्रत्रुर् गर के स बेर् गल्र प्रतेषः .... **७.**केपु.तकर.गेषु.सीता.....शूर.बीर.वेर.किर.वर्षेच.शूर.क्र्याप्टर.... अक्षया पठन । पत् न्या शु पद्धन में न मुन मुन अक्षा वा कर । त्या ग्री में ता प्रते · · · । **ॹॆज़ॱ**ॴ॔ॸॱॴ॔ॸॱऄ॔ॸॱग़॔ॸॱग़ॖॸॱग़॔ॸॴढ़ॱख़॒ढ़ऀॱॾॕॴॱॹॖॱॹॱॾ॓ढ़ऀॱढ़ॹॖॱॿॆॖॸॱढ़ॸॕॸ पते लेल पहुन "" वर् क्रें र स्रवास देर में दासर हुन क्रें व दर वहीय" नग्र-१५५ हे हर न्दर न्दर र्जन्य हा हुत हु रेन र्दर व सर तुरे

देव विद्रार्थनार सार्वाद्र "िह्ना प्राप

म्राधियात्रीत्वाचीम् वयाश्चित्रित्रीः श्चर्यास्या नव्यान्न्रियालु म्वराहेय ने ब्रिते सु कं न्या , के नेरान्दा र्नेता हवा सम्बद्धान्य महिम्बद्धान्य महिम्बद्धाः रेस्वर रेम्बद्धान्य उद्धा सम्बद्धान्य महिम्बद्धान्य रहे सम्बद्धान्य प्रमा विमानियानर हैन् में न्यर में रावयातू सि हा य यह म या थे य रहता यर मर्ग्रेर विवश चुरा हे कि या के राश्वर अदा में राया दे राया श्वर शेर : 1. खुर : 1 वीःश्चिन्-द्रवास्त्रः क्षेत्रः स्वायक्रम् अवाय्यः ने न्याः बावियायहॅयाहेराकेटेराकेटे.वेट्टाव्याहेराकेट्टाव्याहेराकेट्टाव्याहेराकेटाव्याहेराकेट्टाव्याहेराकेट्टाव्याहेराकेट देतै:हेल:५इ८ल:म:ब्**डॅ**:चॅ:इवल:५हेद:५इन:७: न बटल:५ल:.. र्षः र्याते क्षेणः हे वान्सवायः स्वायोव लुवा भेरा। रे व्या री राजी र ज्ञारा राजा イロド、湖、コヨド、内路内、内の、イロ、遊り、内の、村下、山の山、山内の、海山、東西の・・・ इंबारस्यावेव देवे बळ्बा में मुराद्या में द्या भ्रवता देन. न्सुर-सं-बे-न्द्र-बे-स्र-सेनर्या ने-वय-वेन्-य-न्वय-शेन्-मृतुर-*ब्रेय:च्रेर:ब्रहे:*झबल:२ब:पद्धव:क्षर:पठरा दक्षव:ग्लेट:ब्रु:क्षर:ब्रे:क्यु: 「たべたられる」では、10mmでは、10m ड्रे.गर्टरय रेटा। वयःम् सुटार्गरःस्म्यान्वियायम् नृत्रः प्रवेशः ईनः रे**.सः ত্ 'র্বা প্রবি'অঙ্গর্গরেন্' শন্র কার্লার বারি শ্রান্র প্রবিলি এই বিলালি লিলি বিলালি বিলালি** तह्रव व शे क्रमा छ या नगान स्ता

म् स्ट्रान्ता इ.ट्रम क्ष्मायहराष्ट्रमाथ्याच्याश्चरात्राच्यात्रात्रा

त्त्र'लम् म्द्र'त्रम्ह्रम्य।

त्रुक्र'त्रम् म्द्र'त्रम्ह्रम्य।

त्रुक्र'त्रम् म्द्रम्यः म्द्रम्यः क्रिन्द्रः।

त्रुक्र'त्रम् म्द्रम्यः म्द्रम्यः म्द्रम्यः क्रिन्द्रः।

त्रुक्र'त्रम् म्द्रम्यः मद्रम्यः मद्

## 4. 선'5'전라'여호'여미'즉독'5'여필드자'다라 '취득

हा. २. श्वे. ऱ्या व्याप्त १. वृं व्यापत १. व्यापत

① (हू न्यते ज्ञ वते द्व वर वेष मार्चर धेष देष देष 399—400)

श्चे.शु.बर.ल्रंट्य.वय.दू.ध्या.बचव.च.दुच.पे.वय.ल्रंटी यद्वय.मेया **छ.२.श्रेट्र.**थेपात्रात्याचात्व्यान् नुरायदाश्चरा हे.य्या हे.य्या **इ**च-धि-रच-रचर-रचल-कंब-ल-चेब-ग्रीथ-पूर्य-प्रिच्य-प्रथानव-शिर----गुदे नज्जुन् मॅर्या केव र्यं र क्षेव लि स्वामा दि दिन । "मृत्रामा "मृत्रामा **दॅव**ॱढ़ॅनॱॾॗॅन:चॅन्डेन्-चॅन्डेन्-चुन्-कुन्डेंग्-बुन्वकःथे:गे-सुव्यन्देव । वे.कनः क्षयानव्यक्रम् व्याप्ति व्याप्ति स्थान्ति । याव्याप्ति स्थानि । याव्याप्ति । याव्याप्ति । याव्याप्ति । याव्याप मञ्जूनः ज्ञंबालु व्यान् मंबारासुन्। यश्याने मंबानु व सुवा स्वास्त्र स्वास्त्र **इट.**पर्वेष.श्रेर.श्रे.विर.पथ.ट्रंथ वेट.त्रु.त.श्र्य थय. वेथय. व्या.व्राप्त न्या में दावि दे वि पत्व न्य नि क्या पति हा स्राप्त क्या पत्व के वाही में पा मुलापन मुन्ता स्वा देव मुन्ता विकासी स्वा के ना सम्बन्ध मुन्ता स्वा । । । । त्रुरः म्यापातुः रूप्त्यं वानुक्षे त्रेत्रः त्रायः श्रेष्यक्ष्य् प्त्रः व्यायक्षः प्रतेः **य. वंबय थी. तर्श्रे र. थें ज. थे. ब्रुं व.** कु. वं हर. कुर. क्रूं हर. ब्रुं था. में . कु. लूर. वंबय. क्रामन्। तिष्ठेराम् विकारवाम् विवासान् विवासान् विवासान् विवासान् विवासान् विवासान् विवासान् विवासान् विवासान **ॿॖढ़ॱॾढ़ॱॺॖढ़॓ॱॴॱॿॕढ़ॱढ़ॹॱॻख़ॻ**ॱॺॻॱॿॗ॓ॱॸॕॱक़ॕॴॹॖॴॸॻॱॻॖऀॱॿ॓ॱॾॣॸॱॱॱॱॱ **केश** ह्वर श्रंदरम् अर देर द्वेद केरे यह राय हेद अप राय प्राय हिराया म्बिम्याध्याम्रूटान्ब्यायन् नेट्यान्य विम्याध्या विम्याध्या विम्याध्या न्म्याः व्याप्ताः स्राप्तिः तहेषाः चेन् न्यं यातेषाः वर्षाः वर्षा रगाद भूव द्वार पर्टा श्रु विवाय विवास र वश्चर प्राप्त र र मु-ब-त्यत्यायास्तर्भु-क्र्याः मुत्राच्याः नर्ग्न् । विवाल्यायः त्रेराभुः ह्ये । बहुव-ग्रेस-तु-देन्याह्य दे-इ-वद-क्र-दि-चतुन्य-चर्ड-व र्वन-चर्द-**ल. चर्री तृ. मु. इन्थ. ध्रेन्य. च्यार. च्य** 

ฏิ'สซุส'มาระ | อีรากผลาฏิสิ'อริ - ลิฐาน ปฏิราชสสาพั**ราศสสา** ल.पर्-अविश ह.केर विश्वजिट. ब्रेट्र-खनश्चर.तिवश वर्षात्व ही... श्चेना हमल श्वरा व्यना संग वर्रा व्यवस्त्र वर्षे वर्षे वर्षे प्रमान के वर्णा सराविताक्षेत्र क्षेत्र मार्यम्यायु भेर् देम व्ययाय वर्ष रहाविह्या वान्ववानन् ववार्दै न्ववादम् । दर्गारहर में राष्ट्र पवन भेग । दशुवाः द्याधरान् ह्रा तेवा वे क्षेन् परे प्याप्त व व व व व र रे प्राप्त व व पश्राद्रास्य श्र इवाया प्रनास्त्रवाय श्रीयायरा ह्या ग्रेया न हूटा हु रामा नवनानव द्वाया वी नवसामित्र या नवसामिता स्वापार ना वादा वयान्दै न्दान्दै नद्भ नदी त्युत्याययात्रम् : ख्वायार्यम्यायान्द्रम् गुरा षा बळ बवा विष् की तह बावा परी जिस्ता विषा प्रा विषा विष्य विषय ब्राया श्री देवाया साव विकास तर्मा स्वाया हो दार विकास हो द त्रुंग् बे लु : ब्रह्न : बेर्- त्यः दे : र्रह्म कु - वेर्- यात्र व्ययः तस्य या तु : व्यद् । या ले वा । **७ व ब ७ के न्द्र** व**डोब नज** ले**र** हु के नबद्दा व या दें या तु : ही गृ.श्च . . . . मन्द्र ह्रव ह्रव व्याप्त व व्यापत व व्या **घॅरः पर्यक्षः ऋषे ऋषः बु ॱहम्बरः प्रग्नु रः पठवासुयः इग्वेरः ग्रुद्धः प्राथः ः ः ः** नव बळ्ना म्बॅरल दूरल छेर लेर भु ही ते क्षव ल ह नव स्टुर हुर र तत्याल्यान्य त्यावादीय ग्रेया मुक्षाविया यदा स्वार्ट्य दारा श्रुवा ही । विवार बहर्षेत्रे. व. क्रें व. व. ्वया क्रें व. ्वरा ह्रं या व्यव वर्षे व.... श्चरक्षिः देव वाया छनः वित्या गवेषा ग्रेषा संग्या श्वरम्य ग्रूपः श्वरा कॅर् उत्पर्व : विन निर्मारक अहमक क्रिन माली देश के दे हैं। बेर

भ्रात्म क्ष्या क्ष्य म् न् स्वास्त व्यास्त क्ष्य स्वास्त स्वास स्

म.लट. अंचया ने र. के. यर प्रवेद र. हे. र तता वंच , पर्व या शिर्या रे मूच . थे. वरः क्रेया अयाः वृष्ठः श्रदः वृः सं है । योधयः नृदः विदः यव वृतः युत्रः ब्रद्रासं श्वराक्षा श्वराण्याया वापराम् वापराम् दे हे हे ते राष्ट्र प्राप्त प्राप्त है या है या श्चरः व्याद्यरः विद्यात्वर् श्रीति श् बै'५५'न'बर'न'क्रे'खु'ठ'खुदे'धेन'हॅन्'हु'ई'हे' <mark>, खर''३'न्रा न्डेन</mark> धेना तः इतः है। जुःधेना तः हैं नारा हो ने वादिन दुई दे धेना ने ₹-हे-न्धिनः क्रे-सं-क्रुषः अर्देनः पहुषः वेषः प्रदेन्द्रा **"**श्चे-स्र 1871 ल्या इ.ड्र.बल्च-प्रट.ल्.बुर.लंद-श्रव्यः व्याप्त दे रे.ट्र.ल्यः वयात्वयाश्चरयान्म्वाधरारमा मु । श्वरा प्र.श्रेत्र. र्थे. प्र. कंर.श्रेपया न्निन्यान्नेवायानेति स्वाप्तान्यवा रेगामवया श्री न्दा क्षाप्तरातुः बद्धवाहितायां व्यवस्थित । व्यवस्थित । व्यवस्था । व्यवस्था । व्यवस्था । व्यवस्था । मुलाविन भ्रे वरावी करा शेरार्या स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त हेवा हेवा प्रिया प्रदेश *षया* त.मृ.मृ.मृ.म. व.मृ.मृ.म. न्या मृत्या वरामह्मार्वि धरे वर्षे स्तर्भ में स्तर्भ में वर्षे स्वर्म वर्षे वर्षे स्वरम्भ के विम ल.व. न हू नथार्टर छेया श्रेव पहूंत्रया अर.ग्रेय प्रवा प्रयान मूल प्रविषा ग्रे ॻॱनॱबरॱर्वः नद्रवर्गः पराः र्चे ॱहे ग्षेतः तेरः वदे विरः रे गाः वि गाः हू · · · र्मा श्रे मु र्यं न्या तर्दय मिर् राज्य स्वर स्वर मिर् श्रे १८९८ सर् अद् गूरि रूरा शुरु शुरे नर हैं हिर के निमान ता नर्स र हैं ब ष्ठे<sup>-ब्र</sup>र-व्हेर-व्यानक्कुर-अन्याख्र-ठ-ख्रुदे-व्हेव-<mark>ख्र्य-</mark>-कुर्-क्र्व-क्रव-

वेबातस्याम् यान्तास्य तस्य स्वावत् स्वावत् स्वावतास्य सात् कुन् म् हे.बाल्य.के.थप्र.पक्ष.कूर.खे.ये.थे.ये.भे.क्य.पे.र.भू.यथवा.चेय अग्रीरी दे हे या है : में भी या देश प्रतिक प्रति । है देश प्रति है : कुल रे व राहित पहें व कु'अहर तर्मा न तर्म र केवा तर्मा दे न विवास मार हिंदा र न न र हिंदा रमतात्वुर हे हे संग्राचर राज्य वरा हो राग्वर में र मंतर है " ब्रियाविचा प्यतर न्द्र्यास अर द्यासिया ही. ये. शियु च्यार हिया त्या विरयःग्रेयःनम् वर्गवान्यान्यः। ई.ड्र.चल्चाग्रेयःव पदःश्च.यः स्बोधाला अवाया स्वीटा स्वीता केया विष्या हिना स्वाया स्वीता स्वीत इ.ध.में त. विय वुर्ता र के.श्रूच श.कच.रेश.के.रीय.कैंट. तथ.रुय. पश्चेयात श्रीत श्रीम श्रीत स्वीत स्वास्त्रीय स्वास्त्री स्वास्त्री स्वास्त्री स्वास्त्री स्वास्त्री स्वास्त्री बैक कैरा। न् बैक है ने पहिन तर्ने न जनम हमाल बेन नरा थे मुदे **ॾॕज़ख़ॖॺऻॺॱज़ॱॺऀॺॱॹॺॺॱॾ॓ॱॸॺॱॿॖॆॱॸॱॸॱॿऀॱॾॕॺॱय़ॱॸ॔ॸॱॿॖऀॺॱॹ॓ॱॾॆॖॸ॔ॱॻॱॱ** बान्नन् वन् क्रे.न्नाबित्नु,न्नार्ख्याक्रेम्ड,खन्नु,न्निक्रामेवा रॅं मॅलिंप्सर्ने पित्ने वा मानवा स्वानी हूं पर्या श्वारा उव् धेवा व न्युर स्वारा हुर के न्हें न है न त्या श्वा प्रायाय कर्। दे में दे में र अदर हिन रर नी क्रयाया तहना हुन पा न्या है जिया क्षेत्र निवास हो निवा नःस्प्राचाला में पुरार्मे प्राचान करा श्रम् अपया ने प्राचान कर्मा वयाकेवागुरान्डराशेन्। मल्दायादेनाशेन्। यहंवाकियावना क्कुर-ऑद-प्रदे-रे-प-हे-क्रर-व्याय-स्ट क्रा विद्याय स्वर्ग-दर्दे वाता शे \*\*\* त्ययः क्षेत्रात्यम् वेव प्रमूत्र हे 'वं द 'बे 'बर' मे 'द्र चैव' व में मा अवतः शुर्" "

वैन्तुलन् देशनी न र्वेद्रास विन्यवदानरन्तुयातु कुन क्रेंद्राये वेद्राय र्मः। ब्रैन्यः बर्द्धरयः क्रवः क्रवः रचयः रमः हेर् गुरः रेवः न हेवः सुवः वर् भ्रवः वे १ वे र वे र वे र प्राप्तः व्यव्या वे विष्यं विष्यं विषयं विषय तहराके नदी मुक्या खु गुराहरा पहेवाई हे म्बिया गु म्यू मृह्या दे .... *न्ग्-*रॅ्ब-२्रॅंश-र्ॅ्ं-अर्द्ध्र्र्लप्यदे-यदेव-शृह्य-देव्-तु-वृञ्चेय्वारि-विग् निषाः र्यम्य न्यवः रेष्यायायानः भ्रुः व्याप्तान्तः। व्याप्तान्यः व्याप्तान्यः व्याप्तान्यः व्याप्तान्यः व्याप्ता য়৴৻৴৸ঀ৻৴য়৴ড়য়৻৸ৼ৻য়৻৸য়ৼ৻৸৴৻৸য়৻৸য়৻৸য়য়৸য়য়৻য়৻য়৴৻ स्रम्याङ्कयान्वरः। त्यापः भवा वृषान्वष्यः स्व ने भेषायस्य क्षेत्र न्रस् ॻॖऀॸॱॹॖॕॖॖॖॖॖॖॖॖॸॱय़ढ़ऀॱऻय़ॺग़ग़ख़ॣऺॱॿ॑य़ॸॱॿऺढ़ॎॸॱॾॣ॔ॿॱॿऻज़ॱॿॖॱय़ढ़ऺॱऄग़ऄ॔ॱड़॔ॱड़ॕ हे मध्यम मुडेग सुरायग्रतावसुरायहर ने ख्या गुरुं र गुवराय वे न्यर कः तथा चर्च वा चरा वा वा विद्या व भु-न्यं न-ने न न निवास न त्य.चड्डेब वयानगाना.पज्ञाना.चेया.केयथा.श्री.ह.ज्ञाया.चेयर.चयया.चया यानवा (1899) स्या ६ हार छन अया सराखा उ खराव केंद्र ने खा उ श्वेद्र.ग्रंट.व्यय बह्तातस्य निवा विष्या हि.स.ख. २.श्वर.वर्श्चेर.सदे श्रेर.स. र्वेदःहे राज्या कुलायन बरायं या दे स्वर केदा सं च्या भेरा। देवे कुल कंग्रामर वंगामा दिया "हु सदे हा स्यू हित पदे **४.७.५४.८.१४.८५५५.५४.७५४.५५** ५.७४.१४८.५ र्<u>दे हे चेत्र</u> विते न्वेन्या ध्यान है दे ही खु ठ शु न्द वर्द त सहन चुै'तद्येष्पप्रन्यातु'म्हॅर-ळेन्'न्र्प्। द्व'खदे'त्व'यदे'स्यम्'द्येषासम्

ने विन शु . उ श्रुवै:मुलाला हेर री है पद र र में र री जा लुर कंप पठत हैर वह नाला ... व्यवास्त्रम्याः व्यवास्त्रम्याः स्तर्याः स्तर्याः स्तर्याः स्तरः स्तरः स्तरः स्तरः स्तरः स्तरः स्तरः स्तरः स्तरः बह्द व बहुद : व्यंद : पा चुरा द : वें : देव : पा पा द द : वहुद : वें व मु यळव पा र दे र में वर हि र में या मार्च या संग्रें र पहें र सुन याव में मुलाविव ह्रं नवा स्वाविषा क्षेत्रा स्वाविष्ठ वा स्वाविष्ठ स्वाविष्ठ स्वाविष्ठ स्वाविष्ठ स्वाविष्ठ स्वाविष्ठ स्व दे र-५ च्रेव-हे - पठव-कुल-देर-लुग्य-पर्य-हू - पदे-न्न-या यहँग्-गैयार्थ - ह बरविष हे. शु. २. शु. रूर. ५ हे ल. न. रूथ. चन र है ल. न दे त्या है ल. . . . À&~ स्वावर वि:&द:य: वर्षाने: "तृ : वरे न्न : अक्र र : ॐदे : हुतः हुतः । धिरापराय परि पर्डे नुमापह्रव पाने निमानु के भेव पर मार्डे हैरा बेना पर्टर पाया वर्ष वर्षेत्र श्रिया पहें वर्षा वर्षेत्र श्रिष्ठ श्रिष्ट वर्षेत्र वर्य वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर नः श्रम्यान्त्रन्त्रान्द्रः द्वार् ते ते विन्यान्त्र मान्यान्त्रः विन्यान् दः विन्यान्त न्-तृन्-न्नव्यासं-वे:नेवा मन्-ग्री-न्-व्यन्-न्वव्यःह्वायायाम् नुन- पर्देवा रायान्युना समया चेन् स्पर्धः द्वेनाया क्षुमानामा विनायदमावा सन् स्नाम्स्ना । वनवाजेर्"वेरा

मि.च.चकुच. १व. श्रूट. ईय. ह्.चे लच.श्रूट.लट. थरू. ये छे.चे अंचय. हु 'व्यदे : न्नः ययः नगदः नग रामायः रो रः हु 'द्यं दः रे गयः यरः ययः ह्रवः हुनः बुवानर नेयव पहिंग इ.च.वयाया नेवट चर से ग. में बुर श्रे वट यक् वे ..... विनवान्तरक्वायाव व में में नवत्र निन्नत्तर्मा मुनदा में में निन्न हैं र नि <del>ঙ্</del>রংমর্মুব,ফ্রিল:গ্রন্থ রিব ছুনাথ:হুব নদারীদানফ্রি*ই.ইম*:এই রা क्षेत्र'र्न्न्र्र'क्रेल्'दिदेन्'र्र' यात्रा न्र्राम् तेर्रान्त्र त्राच्या क्षेत्राची ..... मिट्टरम्बर्टरम् दियासा छाउ छार दिरा है ता मेटर सरा सहारा <u>ब्रुप्तः स्वाहेशः हू 'यदे ज्ञाः सहयाञ्चानया पदः ईदः ग्रॅशः ऋषा वृत्रा मदेः द्रेद</u> क्ष्यः वरः रु क्ष्रेयः सरः इः लर सरम्बारः स्र्रः ग्रीयः ध्यः स्वः स्वः रुपरः ग्रीः सर्यः ग्रॅबियाश्चिताश्चर्याः प्रदानी प्रदेशी प्रश्चियाश्चर्यास्य वाचपुरखा २ हा प्रदान *ॱ*इं.ब्र्याः के.पड़ां त.रं.डोर्.रंगायः यदः र्ह्रयः ब्रुटः के.ट्रं.ब्र्यः वयः वियः । जुब-स्बोया-रञ्ज हैं। ह्रम्,वयाबीलप.धु,बोलप.यार्गीलाक्रीपा विचा द्रिट्यःशुः यट्यः क्रुयः ग्रीः नक्षेत्रः यः द्रवेषः क्रुयः वृहेदः क्रुः "वेषः द्रितः यः देः श्चेनरा:अम्बर्द्वः त्यदे:श्वः वा अक्रवा:यास्याः हवा ता वहतः वहतः वहतः विषयः बहर्गुरा वर्षान्वरार्श्वरान्वरान्यावरान्या ष्ट्र-पर्वः ञ्चः या कर्ष्वेन, नृबेद्यः द नृषः ध्रेदः नृषः ग्रेवः या व्याविकः व्याः व्याविकः व्याविकः व्याविकः लुकायाकात्रा दूरविरञ्जाकारे न्वारकार्षेत्रकार्वे वार्वे क्वार्वे क्वार्वे व्यवस्था बेर्-तु-शुर-हे-बर्ळे व क-ग्रन्य-वृत्रिय-ग्रेर-केर-ई-हे-वृध्य-श्वर-धर----

व्यव्या श्रु द्वा स्वर् त्रु व्या स्वर् त्र व्या स्वर् त्रु व्या स्वर् त्र व्या स्वयः स्वर् व्या स्वयः स्वयः त्रु व्या स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः

भमेष रंगर.र्थन.पर्वेच.मे. अष्ट्र्य.पीव्या.व्येथ.ग्री.**रीव्य**ार वे**यः...** ॲ८वार्धः खेवार्डेवाक्र-प्रवेदार्धेवारम्बाधावराश्चरामी अस्र श्वेषाय ख्याः रङ्गरः सहं नः द्वेनका चेनः का । वका छेनः १ विहः न्हाः सा । वनः छे। त्यायान्त्रः त्राहे के नाधे वा वेदाने ना भहे वा न धे वा है । व**ठ वा** कुया ने **दा** खह यर-वॅर्-र**४**व-चतुर-छेर्-धिर-वॅ-श्रम्या-व्यर-ध-वेष-क्रेर-रे**-**र्-छेव----है :पठव:पहेंप:पदे:५वन्:५वॅव:५वें.द्वेष:५व्वेव:५वन्:७ेष:५व्व:७वः। वित्रिन्ने ग्राय हिंदावित्रा मु विद्रा वेषा प्रवे ता कार्ने वर्ष वा मुद्र मेवा ५इवि.तपु.४.अवि.सं.क्रंट.६व.२८.५इ.वलवे.वेब.५७३.६व... নপুৰ: থি अन्यान्त्राच्याक्षात्र्यम् क्षात्रम्यान्त्रम् अन्यान्त्रम् ज्ञा बद्दरः क्रेन्व्द्र व्याप्त म्ह्रम्य म्ह्रम्य द्वेदः हितः दर्ने न्वन् इयय हेरः ः प्रेव-बै-चेन्-बनव-बेन्-ग्री-मृद्यासु-ग्रु-१ ने'व्य-न् चेव-हे न्वर्व-ঀ**৾**ॱয়৾*৲*৾৽৽৻ৼ৾৾৾ৼৢ৾৽৻ঀ৾ৢঀ৽ৼ৾ঀ৾৽ৼ৾৽ড়ঀ৽ৼৼ৾ৼ৽ড়৾ঀ৽ৼ৾ৼ৾ঀ৽য়৽ৼ৾ৼ त्त्रुण-कुल-घॅते-कुल-कुल-कुल-वकुन्-अन्द-**ल-**कुण-ल-धे-के-हेल… ष्याराष्ट्रेयातस्याने द्वायते त्वायास्याने स्वायत्याने स्वयाने स्वयाने स्वयाने स्वयाने स्वयाने स्वयाने स्वयाने **२५.१.४.४४४४४८८। ८१४५.५५८५४४८४४४५४५५५५५५५** हुदै रे पान हें दायरा के दायुरा ् 5 राशे दायु वरा दरा वेदा ख्या मन् नकुर्ने व गृहें न्या कु कुषा म र्राधिन त्यु व चुका के स्ना ने राधि ।

শ্রীরেন। র্ব গ্রীব শ্রিম্নীরেন্দ্রের করার য় ব ব্দ্রের্মির মান্তর্ব বি রেন্দ্রের্মির নির্দ্ধের মান্তর্ব করার য় ব ম্ব্রির্মান মান্তর্ব বি রেন্দ্রের্মির নির্দ্ধের মান্তর্ব করার য় ব

महायामा छाउ छात्राग्रमा छात्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स

 ने नियान् वे नि है निर्द् न कुता मेरा सुन्या याय या यह स्या सु नरा इर-४र-४र-गुर-६ न्याया महारा पहुन्याहे त क. बर-मू - द्र ... हम्याम्यरम्यर्भः दे द्वययः महें र पर पहें व र वे व है र वं व ः हं य र र इर्.र्थनं मुथाया अक्षयया प्रयासम् पानार्टा क्रूट्या न्या रूटा मुटा त्रम्यः च्रुक्षः सः तेत् च्रुक्षः त्रम्यः व्या-म्यः च्रुक्षः व्या-म्यः च्रुक्षः बदःर्वयः नर्ज्ञेष। देवः न्द्रेषः व्याः न्यः द्वेष्ययः वयः व्याः वयः न्यः न्युयः रु केव पहरा र विरवा भने दाया केवाया कवा सर हि वह नवा मार र र न्यु । (1794) सर्वित्र तिन्या नवर नवे ता सक्ष्यता वे चे त्यता व्या पर ब्रे.चर्च पाच र.पट. अष्ट् अथा पहें वे. तू र. प्यं र. प्यं र. पूर्व ग्रीट. की. तू था. (1903) लूर-१ में वर्षिया निराष्ट्रियाया वया में रात म्याया या स्थाया शुः वि नदिः मुंता सता चुता है ता सक्याया मन् न् रें न वमा वि न चे न र में ता सदिः रे'म'मह्रव्याक्ष्य संदेतिः त्रु महुस्यतिः स्रेरामङ्ग्यति वृत्

भ्रम् द. श. हु व. ज्ञ पु. प्राचाया अर्थाः विषय श्री. क्ष्या स्वयाः 'श्रीय तपु. गुःह्व-दृः दुव वेव-र्मा गुः बेंदे न्ध-प्रतः शेःखः दम् मगदः नगरः नगः गैः द्रः क्रमः इतः विषक्षे विष्यः विषयः वि न्नरः ध्रुवाः कुषः यं न्वरुषः दश्चरा वै न्दाः स्वरा चुः हे : हुरः न्वे न्द्रुवः क्यान्यान्या यकुन्यवात्रक्षात्रक्षा য়ৢ৾৾৾য়ৢৼ৾ৼয়য়৾য়৸ঽয়য়ঀৢয়৸ঽয়৸ঢ়ৢৼ৾য়য়ৼয়ৼ৾ৼয়ৢৼ৾ঀ गु.नरुष.र्स्ट.न्दीव हेर्प.ग्रंब.र्च क्षाची मेहियाग्रीयान्दीवाहिया..... ् बुताबेदे े रः विरावनान्यम् वे नेन मकु र्वयाङ्गा निर्दे ने प्राप्ता ্রেল.ব হ্র লেব র বিএ ন্র.থ অঙ্গণ ব্রাব্রে ব্রাব্রে ব্রাব্রি । 'রান্র্ব্ ईष्राशुः दॅरल| रा∹्द्रय रॅ्रक्र् ग्रैय रुण्य वर्षेषः **है** :क्रूर**:३य:ग्रद** वनः १६म वेन वा १ वा इरान्यं वा यदरावे वा हरान दे বর্ম ্র মা<u>ছ্</u>রেইব্ এরণ ঐসাদ্রেম সান্য্রার্ড্র নার্ব বেরুব্ । শ "गात.रेबो प क्षेत्रिबे.सिजायपु.क्षेत्रालय.क्षेत्रया.बेथारे? "वे.क्र्य.पूर. " **इ.**चेश्वरातपुर्वरा-पृत्तेच्याविराचयात्तुः च्यात्राच्यात्राचे वार्ष्याः শহ্লপ্রথ. ব্দা শ্লুদ্রে এনা শ্লুদ্র প্রথা প্রথা প্রথা পর্ব প্রের্থ প্রথা পরিকার প্রথা পরিকার প্রথা পর প্রথা প্রথা প্রথা পর প্রথা পর मत्रत संदर्ध वया शु शे श्रू में केंद्र म्ह स्या म में मार्च स्य क्रिय के मार्च स्य पविवादि वतावि श्रामा वह दार्च र प्रामा विवादा स्थापन व स्यापन व स्थापन व स् निवान्ता वाववाद्वराञ्चारवादेवायय। न्तुयावान्ताकार्यम् र्षर-व-प्रविव-विव-वि-मर-र-प्रथाव्यायस्य स्थार्थः स्थलं स्थलं शु-र्वेर् ----

क्षेत्र तह्रवराः वरः मुः तर् पति वित्र वि पति तह्रवाह्रे वाह्य विषया भेषाः धेदःतुरः। यः रस्यायः ह्यनःश्चेतः श्चीः वयाः हेः नयः नः तुरः नययः इं राद्यान् व्याहे व्यद् यादेया वृत्या नवाया दे विवादी ना हा हार नी ... मॅलाबैन्द्रराम् द्रराम्दे त्रवेषाम् विषाचेषाच रामा मु तर्मारा केरा में ना रु'नर्द्वत्त्रह्रियात्रे प्रदानते दि द्वा वनसः क्षं न्या यात्रा में वह र् क्षेत्र पर्वे स.चय. लूरे.त., र्षे थ.प्रवृर्त.त.केर.प्रया क्षे थ. थि. ये या. प्रे प्रतिषा. श्र-श्रु-न्यंद-रेन्द्राध्याध्यात्राधी स्वायायतु निर्द्रात्स्र तस्य न्यार्थमा न्यायाः **₹८.ॳॴ.**৴ঀৢৢঀ৾৽ড়ৢ৴৾য়ৢ৾ঀ৾৽ঀৢ৴৾৽৸ৡ৴৾য়৻য়ৢ৾য়৻য়ৢ৾য়৻য়৾য়৻ৣঀ৾৴৻য়৴৻ঀ৾ঀ৾৽৸ৠয়৻৻৻ महः केवः देवः मं केदेः श्चः कंवः स्वायः केवः बाववः मं शुवः नवरः श्चायः श्चायः क्रे. श्वम. प्रश्नाय स्थाय वि । ब्रें र : श्वर । प्रश्न । व्ययः र पर 55" तत्त्वा व्याच वे तकर वर्षा केव श्री र र र र र । लय.क्षेत्र.र्वापरा। सीलार्व्यात्वीत्र्रेश्वरा ळव व्य द्वा भून-इर-क्रेट-य-स्वायालया-हवायाख्याः चवा-तव्र-क्रेव-तिहान्वयाः .... **┛タヒ.**┛┛ヒ.₲ヹ.┢ヹ.₽थ.८४थ.८४०८८०.८५२. हे.७४.३४७८००८.४४८००... र्रायराम् इरावेरा देवलकेव युरान्डराधेन मव्रान्द **ल. प्रता**श्चेर् विद्रावी श्रुः क्षनः इवला व्यापः हॅरारु तड्डरा तड्षला न् ड्रेवः **द्धन्यः न्दः** ५द्वेतः गृहुन्यः चुन् क्ष्ने स्वः द्धं नः व्यः यह्ने रः न्यायः ह्ने नः **बि.**चत्रः स्थान्त्रेयः स्थान्त्रः स्थान्तः स्थान्ति स्थान्ति स्थान्ति स्थान्ति स्थान्ति स्थान्ति स्यान्ति स्थान्ति स्थानि स्य **चियान् शे**न् शेन्या वे या प्रमा द्वायुरान्ध्रेवाञ्चन्वायायेवानुबा पर्देग्सानवतायाच्यापन। रातुराधे केरातु पकतार्व् रात्विताहितः

न्यव रेगव वू न न्येक केव गूर न्युर वेर न्वुर ल म्या क सं वा स् व्या <u>बेर-घॅर्-ऋ्र-अबःपव-रूर-पग्य-धॅ्रव-विग-गृहेर-र्वेश-पहॅर्-प-क्ष्र-।</u> aुषाबेर्-मृष्टॅर्-सुर-सुर-सदे-केद-गुर-र्चर-शेर्-मृतुर-मैश-वॅर्------रलु ग्राष्ट्र**वर्ष्यं ग्राम्यायस्य त्राम्यायः हरातुः** वर्षु रादेः ग्रॅंत्रः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः न्याः । त्राः स्वाः स्वाः । स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स यमःगुरः। वृदः सःम्वसःश्चितः मृतुरः मृत्वः सः से दः सञ्च सः त्मृतः नश्चरा ग्री तत्रुवर शेवर देन प्रत्व नवा खबा प्रवास स्राप्त देन पुर कुर दे क्षां यहतः यहिया द्वारा है । यह दार्चिया "इवाक दासुरास्या स्था वेयाचुरायर राक्षातञ्चराव्याचेरा**चेरान्या वर्**रावत्व्याययानवाचेरा वतु.लुयार्थाची बे.तर.च गे बे.पचू गे.वर.तू.वीयाक्षेत्राया.याक.धूर.त... देन्। न्:देलान्याने:श्चराधदायम्बादर्गनाः चुराळे: दंन्:वलु नयाखयाः नव् ग्रीवाश्वर भराववाग्र रावश्ववार्षर न्या र्या रेत् " देवा वन्त्र भ्रम्याः ने रः म् नः मृत्याः व्यव्यः म् न् व्यवः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः **इ.**हनस.रेचुब.तपु.चेब्य.श्र.बैंय.चेंद्र.चंट.ग्री.चेब्य.क्ष्त.सूंद्र. विषःग्रायः क्षृत्रः वु स्थाः ईग् यायाग्रद्यं द्रम् दर्यायः वु याने दः। लय.क्च. १.५ वि. वर् वर् क्र लया पव र्राह्म केव लया र्वाया शु.... पश्च.पथ्चा क्षेत्रा

स्वानिकः स्वान्तः स्वानिकः स्

ই'বৃষাস্ভু'অঁম'(1903) ন্ত্ৰ'10ঘন'ন্ট্ৰীব্'ন্মণ ক্ষম্ম'ন্ন''''' त्युषा है या है रात्मेव चया मैटा। र्डिवाम् बुरावया वे राते स्या न्यः हुते हुं र प र व य भित्र विरा र त्र त प र न য়ৢঀ৻৸ঽঽ৻ঀঀয়ৣঀ৾৻য়য়ৢঀ৻য়৻য়ঀঀ৴ঀয়৻৸৻ঀয়৻ড়৻৻৻য়৸৻৻ ৾ঀৢয়য়**৾৻ঀঀ৾৸৾ঀৢ৾৾৾৾ঀ৴৸য়ৼ**৾৻ঽয়৾য়ৢ৸৾৾ঀয়য়৾৽য়৽য়৾য়৾ঢ়য়৾ঢ়৾ৼ৾<mark>ৼৼ৾ৼ৾৾ৼ৾ঢ়৾ৼয়৸৾</mark> वहिंद्रमन्द्रमः चुन्ना न् चुन् देवे न् वन् न् में द उत्तन् में ज्ञान न वन क्ष्याने नेवातस्याम् नव्याम् व्यापान्यान् त्याने वानेवाने वान्यान् स्राप्ता न्मॅलमान्मा सुन्यलमान्डेनाहिताईनाई नाई निका बेर'म'र्सम्बर्धस'बेद'ग्रे'रे'५5ुद'बर'र्डब'म्हॅद'ग्रुट'। म्दर्भार्थिन् मृद्धरः नृद्धरः वित्रः विद्यान् विद्यान् विद्याने विद्यान ने न्यात्य**र्वात्यविवः स.घ.वयाया त्र्याः स्रेचया च्यानः ह्र**ाविष वयाच्छाः न्यन्तित्रात्रकुर्वयान्ता न्द्रवार्षे त्रक्षेत्रकेवार्षे न्वरायाः सन् न्गानः वर्षाः , यः है 'श्रुं वर्षे त्रायकं स्रवः श्रेनः वि । यदे 'श्रें वर्षे या ये ग्राह्मयः ।

या चुरायदे तम्बन्धं संस्थान्य व्यास्त्रिः मृत्याः वृत्याः वृत्यः वृत्याः वृत्याः वृत्यः व

तुषायद्धरतार्वन्याय्वतार्थन्यवृद्धाः वृद्धाः वेदाः व्याप्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः विद्याः व वयायर् रात्र्वायाम् देवाञ्चेताञ्चेतायम् वान्या छे ज्ञेराधरात्रां वा ज्ञेता बावतः नृष्ठेन् . कु . कु नृ . केन् . न् वाना शुला सः केन श्रेला प्रति वर . ने वान ने 유지 बद्धवरा ने न न गुर न् चे व ग्रां रा हिंगरा दहें मा विमा ग्रां रा है पा चे न न विवा द्वःग्रदः भ्रुप्यः पृत्रेषः ग्रायः तक्षयः यशुवः ददः वयः ववः ळॅर् खॅर् ५६म-वेर्-विन-स-देन-लूर-५-७-४--। न्याक्षेर-र-५--ष्ट्रित्रासुराबेर् मदी ने ततुवाय हें वा हुरावा नराने वा देवा समातु की ..... म्रं क्रियागुः श्रीशीचया वर्षा व वर्षा व वर्षा व क्षा वर्षा वर्षा व वर्षा व र रया ता मुंबा निया ने दे र दे न ता ने र र मिया प्रमानिया प्रमानिय प्रमानिया प्रमानिय प्रमानि च्यामदे द्वा वरा रुक्त व्यापर पहरा पदे हो रापदे प्राया रुवा विता रेरील. तुपु. वितारक या. रेरा विवाय. लूया. लूया. ह्या. विवा विवा विवाहिया. विच. पश्चिष्या चिया चर्चा पहिंदा क्षेत्र होता हो । दे **ऄॸज़ॱॺढ़ॸॱऄॸॱढ़ॕज़ॱॺॷॴॺॸज़ॱॻॖ॓ॱ**ढ़ॾॕॺॱय़ॱऀॺड़ऄढ़ॱऄॗॺॱॼॎऒॸॸॱड़ॗ*ॺ*ॱ रे.प.र्थन.श.रे.पवि.श्चित.वेर्.र्मेश मेवय.लट.य.वि.प.र्याची.श.

इसरा वना वर दिया दे वरा देश प्रविद संभित सामका नि मॅं सं देव केव ब्रह्म द्रा धन दे हिंद या गु.उ द्वेन वा वि दे द्रा म वियानिहरी अनवार्रमाव्यवावित भ्रेक्ष्रम् क्रें बिश्वार्मा सम्बद्धः इ.कर.रंतर.चशिया रेचय.ग्रंट.इंट.चंधुश्रायच. ন্থাই.ন্থ্ৰ पश्चरी रंश्**य.**यंश्वर.इंट.यंध्य.पर्थी हे.ि.इंट.यंध्य.ियं.पर् चकुर्। वनाः क्र**रः** क्षं क्रुन वुरः रेन्। व्यः क्रें निवे र्वे निवे रेन्। वुरः निवे रेन्। त्रॅव-२्यम् इयतः रेयः निवेषः मधुतः त्रते : यतुवः द्वं म्याः सुनः सुनः ने : ने : र्वमा शुक्र हिंदा देवा दवा यम रेटा वर्षेट वर्षा वर्षेमा केंपा वर्षा मार्थेना ह क्षेत्रगुर-५३८-छोर् मृतुर-मैता मेर्-पत्मारा अया ५ त 24.07T.1 म्राच्याच्या स्राच्याचे पश्च या श्राच्या है। T. WG ' 87 75" र् चैव स्वाय रूट में व स्वाय रूट में व स्वर्थ र ने व स्वर्थ र में व ୡୢ୲୶**୵ୄ୶୰ୢ୰୰ୖୣଌ୷ୢୖୠ**ୣ୶<mark>ଌ୳ୣ୷ଢ଼୶୰</mark>ୄ୵୵୵ୄ୶୷୷୷୷ୣୢ୷୵ୢୢୖ୴୰ୢୢୠ୵ क्रेन् . श्रु. यही र. ५ मू ने . मू प्रायय पर ने हु ने . ये. ने ये ने ये प्राय में र. ने ये ने या था . . . त्यान्तान्त्रीवान्यमानीयायमान्तान्यवान्त्रीया त्रवेष.केष.झ.स्वेषयाशु.रंबचं.तभ्नेर.केर.तप्र.चंचय.वेया.केर.। न्यग् गै कुन धुन्य न्सुर र्म्या है व्यन् स्वर्भित्य ने सम्मार्य ने स्वर्भित्य ने स्वर्भित्य ने स्वर्भित्य ने स र्वेरत्देवाचेर् बारवावर्ग्वाविषायास्वामाववराक्षेवाञ्चरारे **रॅ**न्न्नान्दर्भन्द्रियःवेनःवेन्दर्भन्तिः विस्तान्त्रेतः

ऍषाःभ्रम्याकःसः <mark>सः । स्वा</mark>श्चरःग्री**यःश्चः**षाठेषाः व**द्देवः** - ज्ञुरःग्रुयः यः न्राः। ग्रेगःम्यः व्याप्तः व्याप्तः द्वाराष्ट्रः संभाग्यः पश्चनः व्याप्तः व्यापतः दह्ताः न्यम मे दर्म द्रंदाया था कु विमाम मिंदला में दरा। ₹ केवा क गाः य र्यम्य वा न्द्रम झर-रेश्चरविदः व्यन् रान्ता जुन स्वाप्त न्सुर-र्वम् गुर-दर्द-क्रेव-पॅर्-पदे-न्यर-पदे-न्वका-स्वा-स्वा ষ্ট্রিশ্বনঅনষ্ট্রশর্কাশ্র তব্যহ্রশনে স্ক্রান্ট্রকার্ন্ত্রশ (1904) हैतयाचन बेट्ट अ.विच.नया.ट.क.रंचट.क.लूर तपु.थु.झ.रंटर.ट.क्.रू. *दर्-रम*्तुःदष्टुव्रः कॅर्-चु-कुर-मः कॅर-कॅरायतुव-पॅर्-केमा न्चैवः वित्रत्वे भूता वे ख्रु नित्रत्व कुन्तर द्वे वर्षा च्यु चित्र कु कि से वर्षा वित्र के वर्षा वित्र के वित्र के व ข**้ารุ**นัสารุลฑฺสุล๙รุลฑฺรัสารุราธกาฬิราชิาฮาลาฮั**ราฮรา…** र्वव पर्रा इ.प.क. देवाया ववत र्वा क्षे र्रा व्यावत त्वार स् म्बिन्या हे निश्चन न्वें रापया न्डिन न्यमा मे न्या श्वित श्वन न्यम न्या न्या श्वीत श्वीत स्थान नर्भूर-तु-ह्यू-र्-भूकाश्चल-वेन्-हु-।मकान्नदकानिदा ने नुकान्वेन हितः न्यव-न्यमः र्व-त्यन्न-न्यमः न्यमः न्यमः न्यमः न्यमः न्यमः विकार माञ्चा के सम्या देवा पहित छ वेगा म मिरता में दिया या शु मिरता या ग्राम्य रे न्दे राष्ट्रम् मं र्रम्य र्रम्दे नदे ग्रंश्यास्य मानुष्य स्वाप्त स्व

इयरान्तु गरा सुराईंग र्चे दःर्यगः गैं कें ननः पर मुं व इयरा सं हे रैबासामञ्जात **घॅरासबामगराम्बदाम् राघॅराञ्चनवा**रस्य क्रुवाबेराः बुषात स्तावर्तार्यं न के स्रीता ह्या क्षेता । विषात स्तावर्तार्यं न के स्रीता स्वावीता । उ.रंच्य श्चेर.सैबाता वट.सरा त्रेड्य.इव.स्व.स्.कुर्.श्च.स्व.झ. म्ह्रायान्यं वार्षे मान्यान्यं स्थान्यं स्यान्यं स्थान्यं स्यान्यं स्थान्यं **बै**'नक्षाव्दः ग्रॅंषा वेदा मृत्या अर्हर् 'हेंबा क्ष्वाया 'हेंब हैर 'ग्रॅंष' इता में देन वायव गर्दर सेव र वि में हे हैं निव मान वाय वा महेव निव रा र्चेत् वर् र्रराष्ट्री मृत्र र्वा इयल वर्षा गर्हर् स्टाम छेर् कु र्रा म्पार्श्चन् वि नदि मूं या झूं या चे या हे । यव क्षेत्र यधिव वि चयाया य वैराक्षा प्रदाः गुरातम् मः स्तायवतः न् रुगः तः गुरान् राष्ट्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम् राष्ट्रम् रायाः स्वयः । । । तहरात्रताम्यात्यानम्याने वाने । या वार्षा सुराने श्वरावया स्रीतानम्या न्ता भी बर्दा उर ई स्वायामा भ्रीम क्षरामयर न्द्रियास यया तक्षतः तक्षतः ग्रीतावे नवन्तः वि मेन हे नि में वा में वा नवे ना रूपा वा नि वि वा न बेर्-ग्रु-ग्र-पदे-रेग्व बे: र-प ग्रेर्-र्म्याचेर-रह्न विपायहरित्र दे वया र है व से र हिं गया गृहे या गया यव हुव सही या अहर है या है ग र स्वा बन्दःन्यॅदः कुं केट्रार्यान्दः इया ख्राया द्वीतः। ज्या के उन्यंदा क्वीनः **र्यम्यः दर्** द्वम्यः ग्रीः तद्युयः श्रेः नृतः। त्राः नृत्रे द्वनः व्याप्तः नृत्री वायः नृत्री वायः नृत्री वायः ढ़ॺॕॱॸ॔ॺॻॱॻऀॱढ़ॺॖॖॖॖॖॹॱऄॱॾॺॺॱख़ॖॱऄॻॱॻऄॕॸॣफ़ॱऒ॔ढ़ॆॱॸ॔फ़ॗऀख़ॱॸॖॱॾॕढ़ॆॱॸॻऻॹॱॱ क्रुंत्रः विष् व्यत् रत्रः क्ष्ट्रः यः वहें बत्तः हिष् प्रवः हिष् वे वे वे वे विष्या विष्या संबुन्नवरःरेषावहन्। तस्यान् वेवःहते: न्वनः न्वंवः उरः न्वं छरः **ঀ৾য়৽"**য়ৢয়**৽য়**য়৽৳ৢৢৢৢৢৢৢৢৢয়ৼয়ৼ৽য়ৢয়৽য়ঀৢয়৽য়ড়ৢয়৽য়য়৽ৼৄয়৽৻য়ৢয়৽ৼঢ়ৢৢৢৢয়৽৽ द्र-दि-पदे-पर्व-वर्षात्र्यायाचीर्-प्रवितः स्पराद्याः करायहेताः नेवराः मलामव हुंदा न्यम शे हिंदी शे यन्दे न मि यने त न में ल निम् विन्-न्यम् स्था सुन् हिते वे म्यूर्न् न्यूर्यं प्राप्ता प्रि विन-न्यम् स् बल बे बन्दे विमान्दानी बदे दि किया यदिन कु धेदा वि लानहित्। भ्रमकाने र वित्र न्यमा मी भ्रेट प्रवेद प्रवास त्यु व्याय प्राप्त से या महिन्दा न्यम् न्युकाः इयस्य यार्चन् यन्यारे न्या मी न्ययान्यारे यार्व सेन्। इर-ब्रैचेथ ग्री-पम्,-रंबच-रंत्र्य-रचिय-क्ष्य-रंग्र-ब्रिचेश-ग्री-वि-ब्रोट्य-क्ष्य-तह्य याधिन् केषानुषायन्तान्यं दाक्षाक्षेत्रामार्यम्यात्वव्याः व्यव्याः वरा ने 'क्षेत्र'नु रहा येव 'श्रीहा चेन् 'न्यम्' इयहा या या ता ता न स्पन् राज्या प <u>न्डैबःवर् न्बर्न्द्वामण्यञ्चर्धरायदे रे ङ्गरावञ्चणः श्रे त्रं ङ्गर्यदे </u> रट.पर्ट. कुटा रेड्डेब.इ.पक्ब.पर्ह्यारा.बु.बाल्र.पर्ह्या.बेर्या. **ॻॖऀॱ**य़ख़ॱॺॱॗॸॱॡॖॖॖॖॖॸॱय़ॱढ़ऀॺऻॱफ़ऀढ़ॱख़ॗॸख़ॱक़ॣॕॺऻॱॸॖॖॱॸ॔ॻॖऀढ़ॱॸॣॺॺऻॱढ़ॸॱ॔ॏॱॸॕॸ॔ॱॱॱ न्यम् मी यद्यतः अतः रु. धियः हे राष्ट्र छिरा। वे अय्यत्ते विमान्दरः मी बरेदु पहें ब्रायद के बद्दे बहिता की हुवा हुन्य रहे वद वदे दि स्वा है करा दे वया सव रहेव वि पर्व ग्रॅं या केंगा हेन रव में रहे गया हे रहे र भर बान्हर्भ द्वार्यम् अत्रान्द्वित् न्य्यम् मी न्ययम् न्य्व देवा मीया संस्त्र रु.व.वर्ट.क्ट.क्ट.व्य.प्टूर.वयाक्ष.क्ट.ज्य.र्टा इयाय्याच्चर. र्वेषयः र्रे दुष्या भी प्रमुक्त भी स्थल त्या वा वा निर्मा प्रमुक्त मिल्ली स्थल मिल्ली स्थल मिल्ली स्थल मिल्ली स

त्राव र ज्ञान व्यन् राते रूप हिनाय त्र त्रावीत नायाना सना सना द्रा ... ๔๘๗๕<sup>,</sup>ৡ๎८.४๗๗,ฒ.๘ื่อ ๔ฃ.५๔๛ฎิ๛**८.җ५,ฆ.**๖๗८.५๔ बन्दःन्धंदः इं रेन्वे कैनलः मते इं व वे न्यदःन्यःने शुन्ता यता इत्याने मी में इंगरिव ने राज्य मिया तय ताविया में हे ति निर्देश #याशुःर्वय पदः येदः पदः वर्षेद्रयः हे : द्रिव द्रवगः रः द्र्यवः गर्रवः गर्रवः गर्रवः गर्रवः गर्रवः गर्रवः गर्रव विना तः नी पहुन हे 'चलन् सला पहुन । वहत पहिन परि परि परि परि न्यम् इयत ग्रेषागुर-न्यतः रूपः बुयः य खेन् यरः रूपः मै र सुर प्रवेषः बर्ह्सरायदायदार्वे वर्ष्यमा मैता बह्यर पति पत्रें दाहे वे बादर सुमा ।।।। इययार्पतः इता क्वा ग्री र्पतः माला द्वार् रात्रा तर् । परा व र्मेव मते म्वयाशु सुर्या विरा ववर में र हुन है। प्रविषा श्री स्याय्या ब्रीटः यः न्टः यहः केवः देवः यः केवेः श्लुः कंवः ग्रॉं यः न्यं वः वायवः यं खु र … [म्द्रानुन:नृद्रा] त्रेत्रात्र्यार्ग्नृताम् श्रुवःश्ची त्रात्र्यंत्रः विराग्यरामान्वरायाम्बद्धारी मान्यरातु मान्यरात् ने अवार्ष्य न्या **ल.**च्यी. १४.च. ५८.। ५८.८ थ्या. १४.० थ्या. १४. व्या. व्या. १४. व्या. १४. व्या. १४. व्या. व्या लग.ल्ट्य.ह्र्यय.ब्र्यय.व्राच्या वर्ष.र्म्यय.क्रे.क्र्ट.श्या.श्रमः व्याप्य रं.ल.र्ग्रेज.रे.चे.चर्च.च्छे.चर्चे वर्षे अंचयारी.या.या.या.या शु'र्डेद'र्यम् मैं हॅम्लेस्रान्दर्यात्रीतम् देवार्रिके प्रेम्लेस् क्षेत्रायेषः स्वायः नृदेशः सः तक्ष्यः प्रनः स्वयः विद्याः । वहायः ॅब्रॅट्स.तपुर,धेर.चेठ्य.चीय.बर्ट.ट्स्च.के.क्रं.क्रंट.शय.ग्री.क्षेत.सद्देट..

मु :बार्थरःश्ची-क्रबायावियः क्रिया व्यदःयः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः विवारः हेव हे " बर्दियः श्र.बाक्टरं तरः प्रटथः तथः के क्टरं यथः वे द्री विक्र वी क्रियायः वियायदी हुन्या श्चन स्कित्या सुन्य प्रेन स्कित रंशच पार्वशर्यं यह सा क्षेत्रा स्वाया वेषा पार पार विद्या देव ग्रार बॅलाम्लेर ग्रे केम्लाविन रे हंर ज्ञरल हे र् ग्रेन है ते र्यम क्रिर गु त्रञ्चरः हेरा:न्श्र:न्यमः य पॅन्:न्यमः मी:न्यमः न्**र्येनः** दिनः न्रीयः न्रीयः नुः " <u> वैॱरह् 'नहराक्षे'नक्र्'त्र्तृषाकेषाञ्चलायसान्धेवान्यणापीसायर्दाः "</u> न्यवाक्षाक्ष्रित्वत् प्रत्याद्याना विष्याया विष्यात् । हे त्याया नुष्या विष्या *ॸॖॱॸ्*ॴॸॱय़ॕॱढ़ऀॺऻॱॿॖॸॺॱॸॖ॓ॱख़ॖॱॿॺऻॱॴऄ॔॔॔॔ॸॴॏ॔ढ़ऀॱॳॸॱॾॣॕॴऄॖॱड़ढ़ॱऄऀॸऄऀ॔ॸऄ॓ <u> इय.च्रुप्य.क्षेप्य.र्वेष.र्वया.च्रुय.च्रुच्य.५४८४.तय.कै.कृट.ळ्य. ..</u> न्यदः दरः द्वः पदेः दरः सुः नभेन्याः स् ने नवाः य उत्र वळवायः द्वः न्गुलानु ने नहु पहन है पहन् प्रति के नियम न व व ह अला व ला है व २.र्मूबःश्चेरःस्वातालयशाल अ.वर्षःस्वाश्चे अथावया 4.22.1 लुकाराविनका क्षेत्रावाइंदातस्याञ्चलायरा तिवराना न्दा। ठःन्धं वाहेदा मालर अथ क्षेत्र रेड में ने क्षेत्र क्ष न्यम् वे र्व्य गुर्व वर्षेत्र वर्षेत्र द्वारे वर्षे वर्षेत्र गुर्व वर्षेत्र वर्षेत्र प्रविदः ৡৢ৾৾ঀॱয়ৢ৽ঀ৾৽ঀ৾৽৻ৼ৾৽ঀৄ৾৽ঢ়ৼয়৾৽ড়৽৻ঀ৽য়৾৽ঀয়ৢ৽৻৽য়ৢ৾৽৻য়ৢ৽ঀ क्षुन्व व पुतान न्र तहे या ने वियान्यमा क्षर निमाया तम्मा कुर हिन् ..... वनमः क्रूरः लः नम् रादेव क्रुलः नरः नहरः विरा वर्तः नमा क्रम 

क्ष्यक्ष क्ष्यं न्या स्वयं विष्यं स्वयं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्षयं क्ष

महिराइव केन विव के हिराहित के छे रवा हु व वराविव न्छे व है ... मर्च व तह ता पर तक्षे व में ता सहता मुठेवा हु हो न परि से समा हवा न रहन करा इरायात्वयास्रियाचेराचेयाचिराच्या स्ट्री स्थान ल.श्रेल.श्रंट.श्वेच्य कुव.वेय.धे.श्रंट.लट.रंबच.श्रेज.चक्केच.वंय.पट्टंव.... न्वमान्दा धुलान्वम विरान्यमानक्ष्यकाळेमान्निः हुमाक्षेदाक्षमा ब्रुचया-रंबना पद्मया क्री. पचना इ. याचे यथा थिना पाया श्री द. री. पचन विश्व नेन:हु:बेग:नॉनेंदरा:में 'वरा:डेन' दवेव:डिय:पर्द न्यम बे:क्ष्म दर्धरा:हुव तकु नकु न् दुः दं अरथता अन् गुर-कुनः कुन् न्या कुन् न्या कुन् न्या किन् न्या किन् न्या किन् न्या किन् न्या किन् रेबापदेव व्यक्त हे र्वा मार्थ है राष्ट्र मार्थ व्यक्त में राष्ट्र या वेव .... मन्र-न्र-वर्षेयः इतः अनेयः न्यमः कुम्यः र्यम्यः य वेम्य र्षेम् द्राः ... বছ্র. বিথ্য. রুনা मेश्रायर्थाय्येश्चरातार्था मेल झ.यर्था দ্র্র ব্রুমের ব্রুমের ব্রুম্বর বর্ম ব্রুম্বর বর্ম ব্রুম্বর ব্রুম্বর ব্রুম্বর ব্রুম্বর ব্রুম্বর ব্রুম্বর ব্রুম্ব গ্রীঝ-ব্রুষ ব্রুষ-ব্রুষ-ব্রুষ-ব্রুষ-বর্ষ বৃদ্ধির-ব্রুষ-ব্রুষ-বর্ষ-গ্রীঝ-রু-बर्धर् क्षेत्र के क्षेत्र वा श्रु व्या श्रु व्या दिन त्या त्या प्रता वा त्या वा त्या वा वा वा वा वा वा वा वा व श्चादनुवान्में वायार्वे वायान्में वाक्षे यहार्या के नारा हिना वाया है। मुशुर्-बिबेयाक्षेत्र-राज्यर-स्वेबेयाक्षेत्र-र्याच्याच्याः निमा ने हेलान् छेन न्यमान स्वलाममान्य राष्ट्री के नुवारी कुर्मा म्वराधि में वया न्में व तु त इं रापि वया श्चन्त वर्ष न्यं व प्रमुखाः ब्रिट्स-द्र-द्रयामाम्बेर्याग्रीयान्यमान्स्र्रादिन्दे यळवादचेवयः ... इना तबर व्रकायबर र्वेद र्यान ६० इना दवा नगर् स्थारहरायः

र्चे वर्वम मैं वे वर्वस्य हर हर वर्व विम हिंग दे वर्ष र्चे व र्ययम् मुल हेर त्यू रादे लय तुर वर् र्यय वीदा तथीम केला न्यमः तम्म निर्यायर ग्रमः निर्मः । स्य धरः नुः नृष्ठे व न्यमः द्रथया इ.प सर.रबीर जूर.श्रेनथा.है.वि.र्ट.रेबया.बूर.विज बी.पर्द्रव.. न्यम न्रा ध्यान्यम शेरान्यम र्यम्या श्रम् ३००० ঠম'নস্তু'ব্ন'ট্রীশ'মন্ম'ন্র্র'ন্স্র্রান্ম'র্মান্ন'। ब्रॅब् क्रिन् श्रीमामा विमान्यामी तर्वा तम्बरा त्वरा श्रुम्या नवया **इ.**चर्चेच.पहूच.क्याक्रिया श्रयात्रेयाच्यात्री.व्याप्ता चेवता व्याध्या है निया राष्ट्रिया है निया स्था है निया है नि विम्यानुयाने रची वार्यमा संराग्रें राग्नें राज्नु दे र्या पठताप्वम स यद्गराक्ष्याक्ष्याच्या विवाधिवाबिता देताम्यवाम्यवाम् देतान्यवाम्यवाम् पहूर-प्रचयानम् थाने .सूरार् अचा स्थया ग्री पर्से पात्ररं पर्टा सूर बर्दा बर्दा ग्री बर्दा महिना महिना विवादा महिना विवादा महिना महिना विवादा महिना महिना विवादा महिना महि दे.र्या. स.स्या. में स्. में स्. कुरा कुरा येथा यो स. परा र वर्षा में कुषा यो था या बर्दाय में र स्रवार र्डे व र्वा में वर्दि में प्राप्त में वर्द् र दें न्या में ष्र्रायानेयाने के क्रिक्यार्या तस्य विद्यालया विद्या कर्मा के सुर मञ्जीयाने निष्ठे दान्यमायाञ्चलाञ्च दान्यान्य तक्ष्यकार्यमायायकार्यना । स्ट्री

महिंद्र-विदे न्रीम्याध्याञ्चय यास्या दे त्रान् ही दर्म मे मेयासु यस्ति । बर्वः पश्चेतः व्या द्वा द्वा विष्कुषः हिते । त्या वा व्या केदः न्या व त्युं र हे 'कॅरा चे न क्रेरा तु 'इयरा य यव र मुर्डे र 'कं र 'येर रहरा। र में व स.रे.चक्ष र बियाई र कथा की र की या रे स्वर पक्ष में र रहर हिरा म्र-रंबत्राम्ब्राचेयाचेयाः क्षेत्र रं. श्रेयातस्ताः चनयाः म्राच्य वर् वे वे वि वैव-विषा-यर्क्षव सं :ऑ*रः* र्यया-वैदा-विवादिक केर-न्वेव-यदे-यद्य-यक्रेंन्---हे. म्रे. पीर. पहर भूषा विया है परा र कुर्य ने प्राचीया मूर. र या अवया. ... षद्गरः यः चन हैं . र्रस्य श्रेनं . रच. हैं . श्रेयः हैं यः हे या चनयः चैयः ग्रेरः यः चर नर-र्डिव-र्यम्, अक्तर-नरुर्-रुट्। म्वर्य-क्रेट-र्मेव्-पर्-र्स्-र-<u>╤੶୴ᠵ</u>᠒᠗᠗ᢩ᠗᠉ᢘ᠙᠂ᢡ᠂ᡠᢣ*᠗*ᡯ᠂ᠪᢍ᠂ᡶ᠂ᡥᡆᡃᠸ᠂ᠷᢍᢩᡩᠩ᠄᠉᠂ᢓ᠊ᠸ᠕᠂ᠵᢡ᠃<u>ᢩ</u> विर्म हेरा-१ देरा शुः अर्हा धुया ने विषा ग्री न सरका न व का शुः "ल.र्र.म्र.चंदे.र्यम.मेया र्डेद्र.यम्.य.प.म्थ्रम्य.यूर्मरा न्वराकृरार्द्र न्वरुष के व्या न्वराधित प्राम्य नेवा प्रमुद्दार्श्वरा " *बेषायाने ने अन्यानेत न्यमात्वन ग्री म्वस*र्ह्यान्ने साहु । यह द *षैग*ेरे । रे हे शर् छैव र अया या र सुर रें या शरीया पविवाद छें र हे । क्यल. झ. तद्व. तर्थे र. ब्रूच. पर्थे. ऱ्येया विषाः क्षेरः स्च ने विषयः नियानाः । विषयः इल.गूर्वाव. वर्षाञ्च वरायाया चर् चिता हे हिरावी विराध सरा हे या मनेन र् हेन र्यमाने र्यमार् में त्रहर क्रिं ह्वर में ल हेर हिर है ल तपु.र्नुव.र्बंबाक्षयाज्ञर्छपु.प्रवायाग्री.दिर्म्याभ्रीर्वियाभ्रेय. विवा ष्ट्रे पश्र्-पर्वः श्रृपताशुः बळवाळे विवायाचि , प्रया ळे वा श्रृपः स्वा ठवाः गुरायम हु गु रेट म् नवाहे स्वाव हेट हु या या यह बदाय या स्र र दे हे द ...

१६ न ने १८ न भू भू र पु . धर र में या चुका सूचका र र व . द ह या या या या या .... ... न्द्रत्यः श्रुणः न्यः हुः श्रुकाहे : खः यः वळ्द्रयः यः न्दः। य यः न्यनः न्यंन् नहरः बैरा नवनार्यं वा उराक्यं क्वरान्दान्य नवी नहीं क्षेत्र **६स.** र र प्यापक्षतार र में . ब्रू. प्रवे. स्र . ये . स्र . ये . स्र . न्मतः वृत्तः मृत्रम् अवा अः श्रीतः व्याम्यम् ना नितः व्या नहरःररः गुन्ना उरः इदः ञ्चरः रूतः हः दवे सः चरः तुः दब्धरः दनः द्विद हिते.र्बन्।र्वेद्रःकेद्रःस्, सर् सि. घरः झे.ल.र्बन्।र्स्न्या प्रस्तान्हेरः ... त्र्य: केवात्ति : दे: देर: रावा कवा श्री : कें नवा दरा । वे : वर्वः स्वा য়ৢঀ য়ঀয়য়য়ৢঀ৽ড়৽য়ৼ৽য়৽৻ঀৢ৴৽ঀয়৽য়ৢ৻৸৽য়ৼ৽৻ঀয়ৢ৴৽৻য়৻৸৾ঢ়৾৾ঀ৽৽৽৽ न्यग् त्रः ह्रं रः र्क्ते त्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्र *ख़ॸॱ*ॲॱॹॖॆॸऻॺॱॸ**ॐज़**ॸॿॖॸॱॾॕॺॱॸॺॺॱॸॕढ़ॱॻॖऀॱड़ॆढ़ॱॺढ़ऀॱॸॶ॔ॺऻ॔॔ज़ॸ॓ड़॓ॱॱॱॱॱ <u> इट.३५७,वघर.पश्चर.वय.२.२८.३५.५७,५५५,वय.४.५४.५५५, व्य</u> भ्रमणानेनाम्बराक्षेरान्म्बर्निन्दा मुलाक्षेत्रकेन्द्रम्बन्न्गलम् हु 'वॅर'म'अ' बर् । कुल' के 'ब्रॅस' अद' र् गु 'स्या है 'वॅर' हे व' के 'पदे' हे प नराया केषा वि त्याप व्यवस्था वि ना पक्ष रा प्याप र भना है । स्याप र र रे ... **ૄ૾. ૹૼ.** ૹૢ૽ૺૺૠ. ૻ૽ૹઌૺ. ૡૹ. ૡૹ. ૡૢ૾ૡ. ૹ૽૾ૢૺૡ. ૹૣ૽ૢઌ. ૠૣ૽ૣૻૣૣૢૢૢૢૢૢૢૢૢઌ૽૾ૺ૾ૺ 乙.岛. ৾ঀ৽ঀ৾৾ঀ*৾*য়য়য়৾৾ঀ৽ড়৾৾৾ঢ়৽য়ঀয়৽য়৾৾৾৾৾ঢ়৽য়য়৽ঢ়ৢঢ়৽য়৾য়৽ঢ়ৢঢ়৽য়ৢ৾য়ৢঢ়৽৽৽৽ য়**ৼ**৾৽ঢ়য়৸ৼ৽ঢ়ড়ৢৼ৽ঀৢড়৽য়ৢৼ৽৻

विश्व द श्रे.पश्ची पर्य.पश्चर संस्थित द.पर. र के. धी बारा परा বरे-बेद प र्ग क्रेस-वर्र सक्षायाकुरा हेर-वि-ग्रें रा केर-पर प्रां क्रु .... धेद "वेषायहर हे देव त्युर्या व नाय तुर् ग्रीया द्वी दा द्वा नाय सर् तर्मात चेर् मते त्या धंनात कुत तह रता च्या सारेत्। तुतारेर मंद्र न्समानी में स्पन् वदासन्दान्समा से लुर्य में स्पन्न र्गाय द्या है निस्त है लपु. भि. या भीया पर्षेथा भी अक्ष अक्ष बाजुबा चुया चु त्रापु म्यू या म्यू ता निया है । रेडिया न्यमात्वम्मान्यत्ये न्यम्द्राः द्ध्यात्रे व म्यम् यहं न् ने नम्याद्धयः । धिना प्रस्ता विदा मुद्दा स्वा ना देवा ही हिया या छ दा ना विवया त्रुत्रः या चूरः वृदः त्रुतः स्वरः क्षेत्रः यत् तः वृतः श्रीः वृतः त्रेत्रः शुः द्वितः द्वा मैका इंटा डे र वे क्विंगका रूटा वे व्यवस्य विष्य में विषय है के र द्वा ह्वर । यनः वेदः। अनवादेनः हेदः हेदः न्याः न्याः हेदः वयः व्याः विदः नाः लालन् करार्वेर् अन्तर्रा वर्ता वरता वर्ता यमा अर् मुद्रान्यत र र बुद्राय स्थान न्द्रेग्रिं च्या दे द्वा क्या के दे दे चे व दर्मग्रिं वर्ग द व म्या श्रुर परि स्व रप्य स्था र १८ र देवा " र ही व हे । यह व र र है या र अया ने या **इंग**.वर.र्हर.ज.अ.श्रुंगयार्टर.अ.वर्ष.स्रग.स्रग.लर.लर.चम्या रे. व्याम्टर्वन्नेवाद्धंरर्म्याबेदवावटाच्याच्याद्यराह्यं वार्यर्थर्या 55" वर्तः ग्रे वर्षः ग्रुवा दरः है । येषायः यः यहेदः दयः दर्षामः कॅप्पञ्चरायावात्। अन्यप्तर्न्रायळ्वाव्ये रे के वर्षायन्यके प्रेत्रीयः

ह्यानित श्रम् वी स्वाक्षा स्वावित स्वा के. यदे. वेषा शे. के प्राचित्र मा क्षेत्र के अवस्था सम्मार्थ । यस्य । विष् बिदःधरःबद्धवःबःदेःष्ववःग्रेःहःक्षेत्रव ज्ञद्यःहे न्द्रः। 챙디쇠. ८२, र.सु. श्रे नाया हे नाया हे . ना के**द** . संयद . यह द. श्रें द. " ने र । 子.美似. कैंचया. यु. मुन्नया. ता. दुन्ना. ता. दुन्न दुन्ना ह्या हिना अन्यता हिना । ロス・美に・多な・美の「ドビ・ロ・コ・カメータ・ガー・ガース・ガーロ・カス・ガー・カット」 「カス・ガー・カット」 「カス・ガー・カット」 「カス・ガー・カット」 「カス・ガー・カット」 「カット」 「カス・ガー・カット」 「カット」 「カート」 न्वना नैया में 'अन्या ने 'न्म नसून नया हुं र में या द्र न यें ' च्या स्नया में 'हे वर्षः र् न्यमः इयरा श्रेनः स्थेवः श्रेनः स्वरा थेनः श्रुमः ने वरा समः ब्रेट चर्-र्वम विम मुडेम्-रर्ध्याः रु:ब्रेट्र सम धःर्रः। रोर-द्यम् न्म ध्रायाच्या यमा के प्रतम् । या स्वार स्वार द्वार विमा ने हेल प्रया र्ने व श्वी क्षिय य यापाय क्ष्य मा खा स्वा या या से व श्वी द्या न्दा । श्वी स त्या ना aར་རྐང་། क्षे.श्र.पर्था.ग्री.तीजार्याची.कृषी.क्षेरापुराची. द्यारर्थे. त्सुनानीयात्में त्रें ब्रयाक्षे व्यापायानामें त्राया न्ता वित्याया न्गार तर्रे व त्यया न्या तर्त्या । न्या हेरा वर्षा न्यया न्या हु या सम्मा लाबन्तर्वेवर्र्रित्र्वेवर्वेवर्वे শুর্ট্র-বর্মা বৃত্তীব্র-ব্রেশ্ র্রেমাগ্রীমান্ত্র-মত্র নর্র-ত্রেমাইমা **ঀ৾৾৾৴৻ঀঀৢ৾ঀ৾৾৾৾৾ঀ**৻(1904)য়৾৾ঀ৾৾য়ৢয়৾ৼঢ়ৼৼড়৾৾৽য়৾৾য়৾য়য়য়ৢঢ়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ় मदी पाया पर सु 'र्गार हे र प्रमुद्द स्मित्र मेर् 'र्यम र्र स्थाप र्यम मैक त्र्वेन:क्र्यः, **र**.वैच.वेय.वेट.ववर.तवः वेय.वैट.वेटः। रे.वयः वट. न्यम् न्राध्यान्यम् इयरा ग्रैसन्य मान्यं वा श्रीष्ठा प्रयानिक स्वी

विस्ति हैं से क्ष्या हैं र है

बी न्रस्ट त्र दे न्रस्ता न्दी द हिते न्रब व न्य द स्ट हुवा मुँ का स्राया <del>ট্রি</del>ন্'মরি'স্বামান্ত্র'ন্তা'ন'ন্**র্লার** ট্র'য়ু'ম'ন্তিশ্বীন'ন্ত্র'ম্র্ল'র্ন্ত্রনান্ত্র इलाहे मात्रव दंगा शे रसदार्या वैषापकुषावला श्रे सुराहु के लाग श्रया बर:बी:र्डेव:र्वण:बी:सुर:वर:बळॅर्य:४८४:हे:र्डेव:हेटे:र्वण: · र्घवःम्रेमःर्दा र्वमःश्रेःतमदःविमःनगरःस्थःप्रहरःश्रेःश्रेरः बक्रम्यात्या प्रति श्रम्या ने साम्रम्य विष्या साम्रम्य । साम्रम्य त्रव्यक्षात्मेवरा म्डीव्यम् मेषा सहत पर्मून वर्षा पत्रुमः **इ**मा-रबर म्रॉर्-४५८'म्दे-र्कुन-बुद-हेरा-ये-र-क्रु-बे-बद-क्र-थः • त्रवात्रेवाते के रेटा हे जिया हुन हुन त्री अया गुरा परि वटा "की "" शुःधेदः उदः ५ ही दः हे ते . २ व्यवाः स्वयः क्षयः खुयः दे । त्यवः तुः , वः व्यवः , दूरः । म्बर् १८ र्यम्य दे छ्टा मे त्रेयाय म्हर् दे में मार्थ के हि म्बर्मिन्द्रं व म्वराके दुर्िश्याम् त्रेयान मुराव वेशत्रीया । नः न्दः आदः "गी गाउँ ना न्दः में 'कें का ना शुवा वदः केंद्र वदा न हो। चुःचनवः यः चत्रेषः नुः न्यः श्वरः बह्रद्यः दृदः। नेः वरः स्रेः पुदेः न्धतः च्या छै: ब्रीटा धानवन् वया दें स्वर्धनः हिन् से नह वासयः <u> न्ड्रेद-न्यम् इययः इंबर्गः । " वेबर्ग्यम्यः इवरम्यम्य न्ड्रेद्रः </u> न्वन्ने प्रक्रिया क्रिया दि स्वर्थ क्रिया वहें वृष्टं प्रः वेदः चेदः यः प्रः यः व्यायः विषयः व्यायः विषयः व्यायः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषय पर्स्न-त.ध्रम्थाः क्रे.वर्म्नात्मिक्षाः में व. इ. य. त. खे. क्रुम्याः पर्स्न-तथः प्रनः . . नविन्ताष्ट्रयान्य मधितः सर्भायम् । केर्या धेना वहेन न में या परे । । रे'न'नहॅब्'हेरा षवारव ्धुतु'इन्'वे' वृज्ञवासुर'इनवाजेन् हमाध्येत्रस्य रम्दःन्यायः वहत्रेत् भेत् भ्रीताक्षेत्रस्य ध्यादह्या द्वाता मदे नग्त स्वाहेरा होर सुर तार्मेर ता सूर सुर हुर वा विरापित नग्त । लव.१.इर. रूर्या क्ष्येया परि.र. ग्रंथा परि.य.विकाने क्षर्या ले ने परि. ... **রব**-দব-শ্বন গ্রহ-म्बि ब्रान् क्षे भूत्र व्योव हू त्रात्रास्त्र स्त्रात्र के पत्व वक्त केत् स्रम्पता दः क्र तास्त्र ना मास्त्र स्तर उदः दृदं र द्वदः त्यः मृत् परः त्याः नृत्येषा चेरा ने र हेषा क्षः यरः वठतः स्त् वे.च.लपु.श्र.क्च.च.च.चे.वे.र्टा पर्वेच.तपु.श्र.क्च.ल्.भेचे.र्टा ध्वा महिलाग्री तातहबा समका तामहेता त्रा मंत्र ता मंत्र ता श्वीतः मातु राताः े वि: पर्वः में का**र्वे का** ने **वरः वः ने ने वर्वे क**े सिन्य करा के वाले वाले के वि ब्रुंग्रय पर्यातहेन्याः श्रुतः नृदातहर्याः श्रुः विवयः ह्याः पः श्रः स्रे ग्रयः श्रुतः । क्षेत्रयः र्रायः । वयः श्रेर्वा वृद्धि । न्यरं दि वृत्यः इययः वृद्ध श्रेयः यः पहुर-प-ङ्ग-हु-र-चु-वनरा-बेर्-पर-चु-र-हे-वेर-पहुन्-(1904) শই ল र्मु मिरि से वापदी देव स्थापि से प्रति के द्वार में प्रति से कि देव से कि लग्नाह्म अवन्यकुः स्वर् स्व विष्य तहें या द्वारा विषय विषय विष्य हिन स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् २३८.शूर्.चेथ.कै.थपु.कृट्य.लूच.चियाचा श्रेट्य.त.र.रंटा। सहरः ववःक्ष्वःग्रं याञ्चे याची याचे र क्षेट्र क्षेट्र याचे या के ता या विष् नेदे. वर: न्डेव देव देव वर है न्या वर है न्या वर वर वर्ष है न्या वर वर वर है न्या वर वर वर है न्या वर वर है न्या वर वर है न्या वर वर्ष है न्या वर्य वर्य वर्य वर्य वर्ष है न्या वर्ष है न्या वर्य ब्र.प्र्य.क्षेत्रयात्राच्या विष्टात्या विषयाश्चरी या गेहेरा पर्नेव चेन् परका चे न्वार का वे केवा गुरान् चरा खेन मिल्या कराया । पर्नेव चेन् परका चे न्वार का वे केवा गुरान्च स्थान कराया । म्हें न्या है क्या क्या विष्य है न्या है न्या

## 6. ग्र-'न्डिन'वर'नेल'वर'र्न्न'न्न'वेर'ड्रल'वते'ल्ले

विद्रात्त्व्रव् (1904) यदि त्व व्यव्य दे त्व व्यव्य विद्रात्त्र विद्रात्त्र व्यव्य विद्रात्त्र विद्र विद्रात्त्र विद्रात्त्र विद्रात्त्र विद्रात्त्र विद्रात्त्र विद्र विद्र विद्रात्त्र विद्रात्त्र विद्र विद्र विद्र विद्र विद्रात्त्र विद्र वि

ग.म.म.भ.४ वर्षाया मूर्टा चेया इंग स्थाप कर्षा कर्षा स्थाप स् यक्ष्य.वेर.ब्रुच्या.ब्रूप ब्रूच ब्रूचा.लेव द्वर.वेय.वेर.तव.पव्य.चेर. लर. दे व्याहर क्षेर मधिर वर् मिल स्मा हे र्मेरण लु *खुषा-मदिः क्षं च- कु - म्यू स- दच्चे ब- मस- पङ्गे - पव ग- चुषा- के - खु- यमु द- दे- वि - पदि-*য়ৢ*য়*৽য়ৢ৾য়৽ৢয়৽য়৾৾৻৴ৼয়ৼ৽ঢ়৾ঀৢ৾য়৽য়য়য়ঢ়৽ৡ৾৾ঢ়৽ঢ় बदर बे हैं (1906) শ্ব-র-প্র-রে-র্বাল্প শ্রেম্বর্ প্রেম্বর ক্রিম্বর ক্রেম্বর ক্রিম্বর ক্রেম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রেম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রিম্বর ক্রেম্বর ক बिंदिः बुंदिर क. क्रम् निविदःवी:र्वराक्षःस्टाकः स्ट्रायदे त्यत्वी त्या क्षेत्रः निवित्त क्षेत्रः विद्या য়৾য়৽য়৾৾৽৽৽ৢয়৾৾ৢয়৽য়৾৽৽৽ৢৢ৾ৼ৽য়৸য়ৼ৾ঢ়৽য়ড়য়য়৾ঢ়৽য়৾ড়ৼ৽য়৾৽য়ৼঢ়ৢ৾য় য়ৢ৾ঀ৾৵৻৸৾৾৾ঀ৾ঀ৾ৼয়৾৶৸য়ৣ৾৽৻য়ৢ৾ঀ৾৽য়ৄ৾৾৾৴য়ৢ৾ঀ৾৽য়ৢৼ৻ড়ৼৼয়ৼ৾৵৻ৼৼ৾ৼয়ৼ৾ ळूटे. श्राच्या ग्री. श्रें रा क्रेंटे श्रीटा २० २० टा कुचे . तू. विटाय वरा सवा क्षेत्.... "፞፞፞፞፞፞፞ዸ፟ጜዀ፟፟፟ጜፙፙኯ፟"ዼ፟ፙጜጜጟ፞ጚጜ፞፞ዿ፠፟ጟኯቜ፟ዀዀጜፙኯጜ፟ዿጜቘ፞፞ዻ፟፟ዀ <u> इ</u>न्। ८९व अन्यः ने रः ग्रह् देश वरः ने यः ग्रह्म दि । यः हराधिया गरिया पहराद्या प्रतास्त्र श्रीता श्रीता ह्या व्यापा विवादि दा दिना *ज़*ᠵॱऄॺॱॸॆॣय़ॆॱॺ॔ॸॱॹॖॱ"ॸ्ॾॖऀॳॱॾऀज़ॱॸॕॸॱॸॕॺॱॺॿ॓ॸॱॿॖज़ॱक़ॆॱख़ॖॺॱॸॆॸॱॱॱॱॱ इयया.ग्री.पथायातीयात्पयातर्थातपुर्यात्रीया मित्रीयात्राचीयात्राचीया ख. २. थेपु. क्रूं नया से नेया चेरा चेरा ने सा दिया है या सा के बार का सा

रदः कुष मुःदेवः क्रेव धद धदः वृदः यदे गं अववः ददः वस्त्रवः हे য়৾৾ৼ৴৻৸৻য়ড়য়৻ঀয়৻৸ঀৢ৾৾ৼ৻য়য়৾৻য়ড়ৢঀয়৻ঀৼ৻ৼ৻৸য়৻য়ৢয়৻৸ৼ৻য়ঢ়৻য়য়ৢ৽৽৽৽ नः द्वे 'येद 'म्र म्म मा लु ल' भेर कु' म्र मु क्ष्म लायर मा मा मु केद हिला ।।। त्र कुष्ट स्ट वि त्यु भी श्रा श्रा श्रा श्री वि त्या स्वाया स्वाया स्वीत है व য়ঌ৾৽ড়ৢঀ৾৻৸য়ৣ৾ঢ়৽ৼঢ়৽ঢ়ৢ৾৽৸য়৽য়৽ৼঢ়৻ড়ৢ৾ঀয়৽ঢ়ৢ৾ৼ৽ঀঢ়ঀ৽ঢ়ৢ৾৽য়ৼ৽৽৽ ढेल<sub>ं वि</sub>न्न प्रश्चन चुन्न संस्कृत स्थान द्रवाग्रम् म्हे ब्राग्रीयायम् रहेषाया नमा वृष्या समया ग्रेन् गाया सुमा त्रे दे दे दे वि कुषा गाँद किर स्वाया क्षेत्र केर प्रते वा क्षेत्र कर वि क्षेत्र वि क्षेत्र वि क्षेत्र वि क्षेत्र **१.**चर्-श्चर-स-देग-रट-देरी ....स्व.ग्ने.चयशनर-हर्-ग्ने.नर वयाबुमामरावे र्मरा ५५व हिंदा हुन छवा न्दा है वया छ्टा मरावे """ **र्नर:७.क्रेंट:क्रेब.व्य:लूर.व्याल्य:व्यान्य:व्यान्य:व्यान्यः** स्व,ववा इव.बी **ग्व**-शुदु-नरुषःविदःकेवःचविदेःतम्मःङ्गःधेवःस्न्चरःमयःमयःश्चेनःस्रदःवेनः तु र्राट व विट केव पविदे तर्वे गासुर हैव क्रें सेन र वे राम साम मान बहरः द्विना न दशः द्वितः है। व्यदः हिन्द्र न मन्यारा नावानः विना नेद्र बार्कन् विदः केवा विषा वीता सहतः सक्त सरा शुरः श्री व होन् धनः न् सम् श्री । । । वदःयाः यवमान् मेरा x4.0x.x2.3.9.2.4.2x.0.00000 दंबैल'सर्'पर्'यहत'यहबार्यं क्रांत्री'ईर्'वि'हम्'म् हर्नेन्'हेन् विरा**ळेव**ास्यान्दाकीयइ यादेवे वेवास्य तरास्येव क्राह्म तर्माकीयइ " नःवैनानेना नार्षे तनाव पविषायापव व्यव केव ग्रीका नशुरका क क्रा व न

ॖॱॸॾॕॴॹॖ॓ऀॻॱऄॗॸॱॹॗ**ॱढ़॓ॱ**ॸ्ॸॕॴॻढ़ॺज़ॸॱॸॹॖॸॺॱॶॸॱढ़ॺॱॶॺढ़ॱऄऀॱॱॱ न्नरः ह्यं रः शैः तेवः सनवा सेन्ः न्रः श्चेन्ः न्यरः ह्यं रः तेवः न्ये वः न्याः ः सुग्रात्माकी पहेदावया बेर् देर् ..... शु द्र ग् मे वे कुर् द्र ग देवया मुक्षास्य स्वास्य स्वा न्यं व केव विवा विवा न्या र वा ने व विवा है व विन ने व व्या व व व व व त्रे'व्रिन्त्र्युर्**र्दर्द्वर्**ष्ट्रिन्त्रुर्द्वर्ग्यान्य्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र नरुतः रून् 'ग्रेयाश्चन' स्ते 'ने द्वाव 'नवात हे 'हिं व 'स्ट्यावया हेट' तहनाया चुर-हेरा:देश:प्रवेद-प्रवाप: क्षेत्र-प्र- क्ष्रिर-प्र- देवा-क्र-देवा-क नविव मु नेगल नवग थे लुरातु ८ हरा हे नवग ग्रम्ल स हरा ठवा मन लामलना व जिराक क्षेरायाम्ब ला म् न व व छेन हुन मेर मेर हिनाया मानङ्कषा ह्रमा मिन् कि रहे करा की मन्या में सार गुरा बिरा वरा श्रीना नरा हि । । । । ब्रुट-तृ-पड़ेल-व्य-वॅर-ब्रेट-व्यथ-पर-कुल-विच-कु-र्यट-सुब्बल-य-वर्-ने पहेन कॅना पान तुमा क्षया परि धेन के ता क्षे पान व तान कुन हेन ..... पर्ट्रस्र प्रते. व्र. द्रे. पथा क्षेट्रा पक्षेत्र चर्था प्रथा पथा प्रश्ना क्षेत्र वरः न्नः माना वादहेव विना नेवा या सन् न्ति वाहिक कुरा विना निका वि रर दे ते न्वन सन्तर के हर ला है ने जिन् पता ने दे दे प्रन्न क्रें**र** ... डेन्-बुम-बेब्-मु-रन्-लक्ष-का-बेन्-मु-र्यन्-म-रेन्। スト・ネタ・スト

मुद्दः नदेः देः नः ळ्नः " क्रियः व व्याः क्रियः व व्याः व व

ग्रर-र्न्चे दः वर-वेषाय हें दः धरे वर्-क्रुंदः चर्व-श्चेर-नुष-वष-र-धः *ढ़ेषःचःनेषः®वःश्चेन्ः*गृदुरःग्नेप्पययःतनुष<del>्ठःन्</del>रःयमुष्ठःभूपयःसःपदेःकः वयानवयातकरारे र्रायेव वेष केवागुरार्धरा श्रेरा गृहराषीयाग्र न्द्रेव हरायातृत सुरायावेवायते में मवद्यायमें यव यान्रायदेया वेना **६ॅवः वैनः बृह्यः ने स्टार्वे स्वार्थः ने बृद्धः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्** (1906) xx.型.刘x.美.号.别K.口氧之.点.xg.到.当.口答.rg.xg.u.u会. मुद्रेयाकेवास्यायार्वे रावेदा। अन्यारे रामुयाळे नार्वारास्यावे रामु **पञ्चर कुल बर्ज ५ ५८। चग्रद श्चेय गुरु गर्ज पर्द ५ ६ ५ ५ १** व्याप स्थार श्चा क्रे-देन्याम्यानी वे बरार्यम्याक्षायते हे त्र्वयस्य स्थानिया हे न्यात है त पश्च-प्र-हे तेव: विष्कुरा हुवा ग्र- रिहेव वर स्वाय हेव छेर म्बुर मे र्ये द रे म्ल दम् द दिया छ । यर द है र दे र हे र दे र है र दे द र मे य ब्रे.बर.च्या.स्र.क्र.च्या.रव.चलित.सर.स्वयाक्ष.यर.द्वयः कृत्-अव-क्षेत्र-ग्रे-न्यंत्-नेवायान्य र-पं-ह्म बार्या ग्रेया-नृष्ठित-हे-पर्यत्-तह्यः चर-दॅ'न¥ूर-रूट-वॅर-देग्वाकेक्ट-ल-व्ह्न-ग्रेष्-रूट-ग्वर-व्हर्-नहराम मंतर कु अमा व द हेन अमा स्व लेक पर राम्य स्था अव **ग्रै'**च क्वॅर त्यात्रविष् तद्देष क्र कर केष ये चेर या व्याया वर्ष केषा ग्रुदा

ॻ (ॴॱज़ॖॺॱॻऻॣॸॱॺॊॺॱॻॡॺॺॱॻढ़ॊॱॡॸॣॱॺढ़ॆॱॿॖॱॺढ़ॆॱॾॣॺॱॿॸॱ≫क़ॗॱॺ॓ॻॱॸॊॱॸॆॣॺॱॹ॒ॸॣॺॱ189ॻॣॺॺॱ)

र्वर् श्रेर् वद्र वदर स्वरः श्रं व स्वरं व व व व स्वरं देवा हे तर के दे तर के दे तर के देवा के देवा के देवा क न्इर-श्रेन्-नृत्र-नेब-संन्-नु-दिव-सदी-न्नर-क-श्र-नहन-सँग-सन्----श्चिरः नितः श्चिरः द्वुतः निवरः यः वनः वनः निष्ठरः देवः वह्विवः व्यरः छितः विवः वरः । व्र-क्रियः लक्षत्र न्यायि सर् क्ष्येया न्य्ये स्या क्षेत्र च क्षेत्र च क्षेत्र च क्षेत्र च क्षेत्र च क्षेत्र च लानह्रमा विचामहिदात्रचा चुलाहे मार्यास्य र हे गुला र्वा र्भग्राक्षः राष्ट्रायकतः स्ट्रिक्तायुद्राद्यद्वाची द्विद्रम् राष्ट्राया स्टर् ঀৢ৾ঀ৽<del>য়</del>৽ঀৢ৽৾ঀ৴ৼ৽ঀ৾ঀৢয়৽৻ৢ৽ঽ৾৾ৼৢ৾ৼ৾য়য়ৼ৽ঀ৾৽য়ৢ৾৾ঀ৽৽ৢ৾৾ঀ৽৽৻৾ঀৢ৾য়৽য়৾ঀ৽৽ <sup>ऴॱ</sup>ॼॖज़ॱॹॕॖॖॣॖॖॖॖॖॖज़ॱॿॖॱढ़ॗॱढ़ॕॺ<sub>ॎ</sub>ऻड़ॗऀ**ढ़**ॱढ़ॺॕॱढ़ॺज़ॱॾॕॸॱॸॕॱॸॺढ़ॱ<sub>ॱऻ</sub>ॸॕॸॱ न्रांताचेत्रमात्ता रहातन्त्रांतिष्ठरायरान्तिराह्मतास्या न्हें राना न्तरा कु जिन वर्षा र र है र नि हु द न व के द न व कि द भूगः हवः वेवः मा मनवः दगः ग्री-न्यवः देगवः नभूः भ्रमवः नग्राने छे । छतः क्षर चेर्नम वर् देन्याय शेषर या नहरा न्रीन नहें हरा गुन हुँ न् शे ग्रह्मानार्श्वम्यार्श्वी हेर्यार्श्वेदाना रहेरा है निविद्यानाम्यार्श्वेदा **स्व व्याप्त प्रमाल्य प्रमाल व्याप्त व्याप्त** यापरुषाक्षेत्र वेरावरा गृहीराष्ट्रवार्श्व व हि वि या स्रेरा हेषा स्र प्रवास नेर-१स नेवा केव मुर-१३८ रेन् नवुर-नेव नधु । वर् व्यापा स्र हिर **न्यॅब-रेन्यः स्व**न्यः।वयाःम्**ठेन्** य**्वयः न्युसः क्रेयः करः**ग्ठॅन् र्वेषः सदेः नग्रत्यन वेद्य नग्रन्ते ते वृत्य में दाय केव् वेवानग्रत्यत सर् ग्रदः - च्रिनः वरः नैकाञ्चनः तसे वः वेनः दकासुत्यः वदेः तुः धेनः दक्षेत्रः चुदः।

देवे वद वंद क्रिन्द्व देवाया ग्री क्रिय द्वार व प्रवास के स्वास के रोरः वः व्यव्रः वृष्टेन् र्रा र्वायः स्वायः वृष्यः वः स्वायः वः रायः है है र म चेय पर्या पर विर वि के द म भरत नेर । वि स व व व द र्टा श्रुट बर्दा ये बेट श्री अव वी उट स्र् প্রথাস্থা ইব ছ.প্রশ্ নহব্য নব্ব্য শেষ্ট্রশেষ্ট্রশে বিষ্ণ্য দে ব্লিখ্র প্রশাস বিশ্ব मह्य-प्रह्मा-म्याविषयाम्हर्वत्या चेर्-र्म्या इवः धितः मवतः र्वेर-न्द्राच्यावयायर मिल्रामी त्या मेवया प्रिन्धे ह्रमायाय स्या *ॸॖ*ॱॸॹॗॺॱॾॕॺॱॸॕॱॸ॔ॺॱॺॺॱय़ॱऄॗॸॱॸॿॕॴॱऻॻॕढ़ॱॻॺॱॹॹॱॸ॔ॱॾॱ**ख़ॺ**ॱ ৡ.৸ৡয়৾৴ঽঽ৾ঀ৾৻ঀ৾৴ৣয়৾৸য়য়৸ঢ়ৢঢ়ৼঢ়য়৽৸য়৾ৼ৾৾৳ৼ৸ঢ়ৢয়৾৾৴য়ৢয়৾৾ঀ छः शेवः गवराः √हिरः यहराहेरा यया गा छ्रारी विषया लुः हेर्। उत्तहणः र्म्या येत होर प्रयासराय विवास्या न नेर्रास्य निरासे विवास **ळ**न्-द्रग-घॅ-गुर्केन्-नृक्तेना गुधुतु-वन्-वे-बुल-घ-बेन्-केन-ब्ले-ब्लेन्स नपु.कुथ.मू.सिल.लूर्.नथ.कूर्य.ल.पू.न.न्येथ.वैट.नर्थट.मूर्य.गु. कुर्य.पै. য়ৢ৴৾য়৾ঀ৾৾৾ঀয়য়৾ঢ়৾ঀৢয়য়৽ঀ৾ৼ৴৾ঀড়৴৾য়ৢ৾৽য়ৢঀ৾৽ঀয়ৢঀ৾৽য়ৼ৽ঢ়৾ঀয়৽৽৽৽৽ बर नेत इर पवेव वव कि की हैं वय विगम् दें अहर है व निय हे ... म्वराद्धंयाहे स्प्राप्त मुरातु वि स्पापत त्यारम्य । स्राप्त राम्य राम्य नग्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र या नव्य न्यू र नहरः इन् विनः नहर ग्रीयः विश्वया गुर्हेन् खेन् र न्यूया " । विश्वया विनः

① (ण.२व. मट्यान व्याप्त व्यापत व्यापत

सन् क्षेत्र न्त्र न्य क्ष्य म्य क्ष्य क्ष

ने न्या ग्रामा निवा क्ष्या मिया क्ष्या ग्रामा निवा क्ष्या मिया क्ष्या मिया क्ष्या मिया क्ष्या मिया क्ष्या मिया क्ष्या मिया क्ष्या मिया क्ष्या क्

इं र होन् त्या विस्या व हो अ व हा या नहें र स्य प्या प्या विस्या नहें र हर वाया विस्या क्षेत्र में दुराया विस्या विस्या विस्या カ数イ. चेलट. के ब. कू चे. जथा विट्या चक्या जया विट्या कु. चेया विची. र श्चीया. हे स्व द्धंव ग्री प्रदीयाम न्रायम्ब बुरा मृह्व र येमरा मृह्य या स्रायम् चबर्ना या वर्गाता हुन चन्त्र हुन चन्त्य हुन चन्त्र हुन <u> ५ ज्ञेल.ब थे ब. ज्या कि दश. रेट. तज्ञ .क्ष्टा ज्या विटश. ग्री. ५ ब थे. ५ विट. क्री...</u> विद्यान्द्रः दर्गुया दर्गुया वर्गुन् । चरुषः तथा तथा विरुषः विना नविद्या कु । दन् विनः कु निर्मातः र्ह्ञे विना स्वा बार्च्च पत्रम् त्राचे वृत्याया ग्रीया वृत्रम् त्राची न्या प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त विरया न्यूर.चेलर.डेब.ब्रेच.लय.विरय.चक्य.लय.विरय.चर्चा.चर्चा. ग्री'दगव'दष्टिर'श्री ग्वव'यद'र्'रुट'र्ल'वय'यय'ष्टिर्व'ग्री'श्री' विन.पे.पीर.के.पी.पह्चाया.श्रर.स्या.मेला.र्टा वीर.केर.क्य.स्य. कुलाक्षे पन्त्र । प्रायः म्याया शुः हुराष्ट्र हं र्या । रट् केव सुवः ळ्य्यार्टा स्वापटाय्याया निया है है। ह्रव संख्या हैव सुवार वार्या कुल या वर्र् र रचल रे र वा अल वंबर लंब हुवा हे विवेर ले नेव **क्र्याय. चेडेय. पश्य. पश्चे. राष वा. कैला** ब्राट. चथात. लथा विट्य. क्रे. ग्रेय. [मन्। न्सुते व्हात्वयात्वया विह्या विना न्हेना ने व्वया वर्षे । स्वेनवा सः या सन्। र्षे वया त्यवाष्ट्रित्वान्ता हार्स्च त्यवीष्ट्रित्वार्थेन्या वर्द्धन्या सन्ता सन् *षा* ५ वर्षःश्चेन् मित्रः मे कें रःश्चेन प्रकार् व त्यायवाया केवाया हुरा हे ''''' 1959 শ্বন্ধর অধুন ব্রুগ শ্বন্ধ

ग्रहः । वेषः वरः वेषः नः नुहः «अवषः अतः नश्चनः वः वं नहेते ..... न्त्र अन्दः "इर् अंदा सेन्य वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष दे देव कुर न्त्रेय इर् लुबी.ज.पश्चिर.पे.य. वेदयाविबी.ज.पंज्रेश्वयाश्चिताचियातानेर.लूट्याविच.पे. क्रयाम्बरमञ्जयम् चु वेषावयम् जु व्याप्तामा नियाने महिषाब्दा ग्राम न्द्रेत्वराचेत्र" धातु प्रतायत्रे तुराविताया न्रा "कुषा क्रेत्रपरा मः इतः वरेवः व्यतः म। " "इं . श्रृणः वरः मः छ्तः यदः म। " "कै . श्रे इयः इ. श्रेयः वटः रे. श्रिचः रम्याना " "व्रेयः तः प्रः चरे वः च केरः प्रवः रेयः मु:धेन:ब्रुंच:द्र्नेल:य।" "शु:य:ळेल:क्रेद:अं।य:तर्द्रेद:बेर्-बेर्-बेर्-बेर्-बेर्-वेर्-स्र ॅब्र-५. विट-पर्झ. **झट. ग**ंधीय. ग्री. पथा. इ. पंथा. ग्री. प्रेट. व्या. श्री. प्रेट. प्रेय. ग्री. प्राची. प्राची. प्र न्मॅलम्यायतावी मृत्व मुं ही वायर ने मान्यस्य वहा पस्र वी स्मा "右下了了是'是大'司·赵·凡利·司子·日启·温·四尺初·马丁·픨丁·미芳仁·个可如·曰·" <u> ल्याया प्रमाणिता विषया विषय</u> न्दानवायायते यतु वेषायायस्य निन् श्रीवानश्चरायस्य वासेन् निव्यायस्य पर्ने न हैं पर पर्ने के स्पर्ने क **&ं**त्र:बेब्र-२मॅब्र-"बेत्र:प:२े-१ॅव्र-तु-ष्ट्र:बदी:ब्राब:२्र-व:ब्रव्यवर्थि मृत्रानी,र्नरक्त्राच्याची,पद्ग्वाके,प्रंत्र्क्री,व्यानवामी,पह्न्यामी, न्ता "म्रीन्रेन्याकाकानेम्याक्षर्ताक्षराक्षा" "क्यासम्याकाकु केन् **इ**न्-नर्द्धव:तेन्-क्रियाचे-मान्नेग्याचेन्-पः"नरुयाचे-नर्नन्-स्याने-नग्---मार्चर् ग्री केर श्रु र्वेद रेग्यार्ट्य वेर्याया वेर्याया मेस ब्राया सहिद स्था गुर-५५-ग्री बर्दे देव वे द्वे र दि वि वद्-दर-दव्यान व्यन् द्वरा

दे.च्याळ्च्याप्टर्चटर्थ्य् मृत्याच्यापटर्चेच्याद्यः स्तर् व्याप्ययाच्याय्यः स्तर्भियः स्तर्भियः स्वयः स्तर्भियः स्वयः स्तर्भः स्तर्भियः स्वयः स्तर्भः स्तर्भयः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्भयः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्यः स्तर्य

रमः वैदः पट्टः सः पर्षः वेदः पत्र्वेषः (1904) यदः व्रः व्यापदे छ्यः मञ्जानिकानेवार्षेवार्यमा तर्ने माउदान्त्र ज्ञानिका है ति नि नि न मद्गायद्यात्र्यान्यम् इयम् ह श्रुराञ्चनया वया ग्री हे त्याया न श्रीयम क्षेत्रयात्रग्नतः क्षेत्रयायात्रा मन्द्रयात्रात्रयात् गता ग्रुया ग्री त्रुतावी रोताञ्च न्यं वारी महारामा रामाता में ताले महारामा स्वाद ना ने । हू 'यदे न्न 'या यहँ वा रे 'देवा नाया नियम यह र व रे वो यह द हे 'खेवाय. भूर-विश्वर-भ्रव-भूव-प-देर। अयूर-श-अक्ष्य बूर-धि-भूर-विश्वर-**४.** च**८.८. नुनयः इ.**ब.कुब्रन्थः ब्रेब्र-रेब्र-रि.स.च्रे-तच्टरः । मुत्यायक्षवाहे से सरान्त्रेय हराहे स्राहर हे स्राहर हे स्राहर स्राहर महाराज्य स्राहर स बह्र-ने "न्डेन हे नर्दन नहीं वान्यवायान नव नि गति हा वया हा ৡৢ৾**৾৽**ঢ়৴৽ঀ৾৾য়ৢয়৽ৢ৾৽ঀ৾৽ঢ়৾৾৾ঀ৽য়৾৻৽৻৸**ৢ৽ৼঢ়ৢ**ৢ৽য়ৼৢ৽য়য়ৢৼ৽ৢৢৢৢৢৢৢয়৽৽৽ भ्याम् विराह्मम्या र मा निस्तानी तहीं मा श्रुरामध्या ति विराह्म विराह्म विराह्म विराह्म विराह्म विराह्म विराह्म बेर्-चूर-व-द्र-र्वन् यद्य स् हिर-वॅर-व केर्-व वळेन या-दिन्न----**हैल**'इंट्-लापवी.कुथाक्टट-इ्यानक्चे पहींचान्नियानेयानेट-ने वेच-पर्येची. मन्त्रम् र्मम् श्रुप्या ५६ मः रेश धराष्ट्रम् गुरा गुरा गुरा गुरा रेश रार्म् म्या न्दर्भन् वर्ष्ट्र अस्पन्त्र वर्षा ग्रुट् वर्षा मे द्रविष् मे द्रविष् सुद्र व न्वन्यायात्वेन्यात्व्यायदेन्त्रान्दे हेन्द्रेन्य्वर्त्तरार्द्रान्या इ.र्यार.इ.६व.ग्री.थ.पवाना इर.प्या विनातारा राष्ट्र व्यय ग्रीया रहेवा

हि त्यं व शुर केन प्रवा न्स्र प्रवा इस्र शुर त्रे व प्रवे राम् मग्रातः तहरामा मक्यान् कान्डिव हिते तर्वे न्यावा इयाया क्षाया तर्वे रा वेर-५-५८-५४ व्यावनिर-४५-३५-५४-५-१८-४५-१८ व्यावन्द्रवः क्यः श्रेन् त्यः त झत्यः सुन्न त्यः नृने अङ्केष हैं व्यादः तन् व न्यं वा ना ना रहेब.र्घ.पत्र्याची.प्रचालियाची.पर्चेर.गु.क्ट.री.प्रमेर.प्रच्यालायाचा न्दर्याग्ची:केन् नु:म्यान:इन्:मयन्ग्चीयाधनयःवेषः-,मःप्रमःच देवः.... धित व नेते प्रमानम्ब व श्रेन ग्री त्यव त्यव त्या मा सर्म में न्या स्वा श्री व्या मा स्वा श्री व म्यानी वर वया हिन् हिन् यावा देवा चरा के मा बेन महिवा में न्या हुन क्ष्ययार ह्या स्वास्त्रभ्रवयाय दिनः ह्रेटः ह्रवया ग्रुव्यं कः स्वे या हे खेर श्चिरः में विर्याय पर्यं वे श्चिर्या न्यूया "लेया नया व वच चारा न्दा क्रवाया क्रवा । सरारश्चराष्ठी शेर्मध्य हिरा श्वरा विदा दे प्रवेद प्रमारा भग र्टा इट.इया इट.र्चयायर्थर श्रु.पठयायः इयः श्रुर् हि.चंदर विवाय पर व नियम स्व वि य न व य पति य क न मा व व य मा न य व य प न न य व रेगलक्ट्रायल-रूप:रूप:र्ले संदेश्यक्तायन ग्री:बु:च-म्हाक्केन्स्निन् लाञ्चन्यते क्ष्मा नववा श्वरामा श्वरम् ने मारा हो न् निकास ते प्रमान श्वरमा लर लर बह्री नु.चय.क्र्य. 12 वेब.क्री.चय.क्रेन.क्रि.क्रु.द्र.ख्र.क्र.क्र. রদ্পের্ নের প্রাথক্ষ্ণান্দ স্থানত ক্রান্ত্র বাবত রাশ্র <u>ष्ट्र-घट्ट-श्रम्-घ्र-श्र-प्रदे विदे गु.स.श्र.श्रम्श्रुश-४.श्रम्, श्रेय-श्रेय-श्रेय-श्रेय-श्रीय-श्र</u> नित्रान्दरायहर्। देवयादेयामविवाद्गार्थते इराह्याङ्गायते के

त्यायाश्चित्त्व्याः स्ट्रांच्याः त्राह्णाः व्यायाः स्ट्राह्णाः स्ट्राहणाः स्ट्

दे व्यास्वाल्यान्त्र्वे वाची वे त्रायान्तियास्यास्यास्या 題は、父母な、当、な、のな、多、灰とな、別な、気な、多、して、ちとな、コの、」と、日 बुलार्स्र मान्य देशास्त्र मान्य द्वार विवाद केरा हिन्द केरला मञ्चरः बर्द नः ने न न न ने ते हा या याता है। या ता तता ते राहे न ता वे न ता । मक्षे. रट. मुचयालया सेवाया ब्राह्म श्रुवाया य तथा मान्य दिया हे या मह म्यान्त्रम्यान्त्रम्यान्त्रम् देवान्त्रम् क्षेत्रम्यते कुपान्यान्त्रम् वर्षाक्ष वर्षा पहें व र में व र में र प्रवास महिता है। र प्रवास महिता है। र प्रवास महिता है। र प्रवास महिता है। वया से पया पशु - नृतः पश्चे व : न्या - नृत्यः है मा नृतः वे माया व या पा नृतः। न्वतः क्रियः वियापान् वियाप्ते यास्त्र न्वियाने देते यो मा स्त्र वियास्त्र वियाम् क्र.रंगर.श्रम्या वहरी क्रया छेरा नम्रेन हेव वर्ग छ वया विनलाई गार्व हो के नित्य मदि के ला ने खें कर है व नित्र मा नक्ष र ने ब्रेनरा अनवा श्र. देवें, ज्वा राष्ट्र ह वा राष्ट्र विवा श्वा क्ष अन्तर वा क्या भर् ग्राम्याक् कराक्के नका श्रु प्रकरा द व्यया सहिम्या श्रूरा रामा हु के वाहे " रे निग हिर परेव यहर व ने वे ग्रा ने व ग्रा में व में व पर के में द व ...

सक्ष्मं मेलाम् त्रान्त्रात्व्यात्व्यात्व्याः स्त्रात्व्याः स्त्रात्व्याः स्त्रात्व्याः स्त्रात्व्याः स्त्रात्व त्रात्रात्वयाः स्त्रात्वेद्रात्वयाः स्वात्याः स्त्रात्वयाः स्वात्याः स्वात्यः स्वात्याः स्वात्यः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्याः स्वात्यः स्वा

दे व्याञ्च पतु व पते छे रापके प्रमु द ने व व सह र व व व द व द य म्बर-रु-वेनल स्रवल नवि वल स्र म्बीनल। ध्यारे दे रूपारे नया **गुःन्हॅं:५्न**ंह्ययःग्रेषःदर्भायःश्रेतेरःद्यषःविद् देखेनषःव्युदेः बह्मासुन्, रं. रंकर, हूं ने सीय हूं ने बर, तूं, सीयों हे, बर्द्धर्य, सुर्या पत्र मु । साम के । स्राप्त स विषान्न प्रति छ गु न्म म्झेदारमु न विषय हें या माले विषय विषय ञ्च-पक्चन् सदे ञ्च बहु मा हु दू र दे श्च य श्च र दिन र न र र र र र माव र र रे ब्रिस. ब्रेट. क्रेन् व्रिट्य. क्रुं ब्रेन्य व्यायदे या ग्रेन्य या ग्रेन्य व्याय व्याय व्याय व्याय व्याय व्याय त्तु<sup>-</sup>न्तु-मदि-ळे*रा-*मर्ज-निज-छे-राम्-मी-रलय-नृज-क्रुंप-परे-ब्लेट---न्मॅंब-ग्री-न्न-सामकाक्षे कें से संब रहे मान की का है वा श्रुवा न्दें का तस्या न्दें नहव् न वित वितान न में का नवे का हिना के मार्थ के का हिना न न का नर मुन **बैलालेबकाक्षे.कु.रेयर.ध्रबकाबेबर.त.रेटा, बेलेर.रेबूब**.यथबार्धे**य**. **ब्रुंगः यदे** ब्रीटः वे क्रवः द्रदरः द्रवः यक्ते क्रवं वातः वर्षे व तुत्र विवतः त्रेरः .... नर्गेत्। दे वर्षान्वव वर्ति वे व्या बर व्यान्य वर स्थान वर्षे दे वर्षे प्राप्त वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे पर्ये . जा श्री . प्रकृत . प्रकृत . प्रकृत . प्रकृत . प्रकृत . ज्या . ज

ख्यायाक्ष्याच्यायाक्ष्यावित्याक्ष्यायाक्ष्यायाक्ष्यायाक्षयावित्याक्षयायाक्षयावित्याक्षयावित्याक्षयावित्याक्षयावित्याव

म्यर-१-१वलायद्व-१त्यु-व्यव्याच्य-भ्र-१-५५-१ विवलायद्व-१

मर्गिषावि क्रूचियाक्रे वे रे वि अस्र विया अक्रे वा क्रूचा वि वर्गे रे रे विया वया इ.रथ. धे. धं. श. वाला ह. लबाया श्रूर. श्री. रंटा बाल्या वा. वा. वा. व्रू. पिना नी तथा है। संबोधा के प्राप्त का मुन्त का नी का सुना निका की का निका की का मिना की का मिना की का मिना की का बह्तान्त्रास्या ने न्या हा पर्दे स्वता हे प्राचे हे न वहा है । ये वहा म्राम् विक्रान्त्राष्ट्र रायान्त्र स्वरायान्त्र स्वरायान्त्र स्वरायान्त्र स्वरायान्त्र स्वरायान्त्र स्वरायान्त *ॿॣॸ*ॱॹॖॱॹॗॸॱॸॖॱॸॗॱॺॖॱॸॺॱॸॗॱॲॸ्ॱय़ढ़ऀॱॿॕॸॱख़ढ़ऀॱॸॺॿॱ॔य़ॖॸॱॿॕॱख़ॾॕ*ॺ*ॱॱॱॱ रट. इंग्य. प्रयानया श्रिते श्रुट. च . व्या विषया यया ग्राय में प्रयान र्वरः ब्रेट्यायञ्चे गया हे 'ह 'द्रा र्वया वृद्दा मुंत्या हुराद्रा मु 'श्चेरायहरा र्यम् मे नि में ह्येव.र्स्व स्.र्स्ट.च.क्रंट.वक्र.व्याचीवर.विरयी स्.स्.य.धवे.गध्व.क्रंट.चया र्रा र्रा की क्रिक् न्रा के खेन्या प्रचार प्रकासी प्रवास के जिन्या प्रधी कि प्रवास के न्त्रातु द्वार तु द्वार मा स्वार मा स्वार में द्वार मा स्वार में स क्किन्। तुर्याप्यते : न्मृतः क्ष्वः ते : त्र्न्। मृत्यु मृतः वि : क्रेक्: क्षेत्रः त्यायः स्राप्य नि बाह्याख्यानव न्ता हे नईवन्याम इ.वि.रल न्यूव केवा ग्री मू *हेव*ॱक्षुब्रःसँग्वः२व्यःचवेवःसुव्यःचवः५ग्रेवःचवेदःग्वदः।

न् म् त्राक्ष्याम् त्राक्ष्याम् त्राक्ष्याम् व्याप्त्राक्ष्याम् व्याप्त्राक्ष्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः व्याप्त्याः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्त्यः व्याप्याप्त्यः व्य

त्रु 'अते : त्राय**ळ**वा क्षे : त्रवा **. तु** . तत् वा ता त्राया खु . तु . दु ते . कु ता त्र र . . वेनयाईतान्वराखन्याञ्चराञ्चरा द्वराधना देतामना या विवासरा यहना ।। अनवान्ववाद्धंवाने ने नवार हाना ववा केनाया बन्। द्वाने राखा उ खिते न्म्यान्तरः ने न बदार्थवान्तर्भवाद्या द्वालरे न वार्षः न वार्षः वार्ष्यः या केव यंते स्वाधन दें वर्कन सेर यन त्रिन्य निविष्य व तृ यते भ्रायार्भयार्भ्यत्र्रान्ता विव्यविद्धार्यं विद्याराञ्चर्यार्भे स्थरार्भयार्भे विद्यार्भे युर्ध्यत् र्ह्यं व ज्ञाञ्च्यत् स्तर वर र्मा सदे मवला वि व धेव मिन्य मिन्य इ.है। तल वया सर्वितया मैना स्वया नरा नया गुन मिर्या पर के दे रे ने वक्त-न्हेन् शुराक्षे तुरे हुद्र विदा धरायदा वक्ष्या हुन्या प्रत्या नव्दर ग्रे.श्रू अ.त.रक्षेल.स.श्रू वाय. म्र्राच्या म्राच्यात्माव्यात्मात्र.पार्च याच्या वाया बेब्र्ट.भु.रवाव.त.अस्ट. १८८। विपानुत्र श्री.स्.बक्रव.रवाव वावत रंगी

ঀ৾য়৽ঢ়ৢ৾৾৽৸৾৾য়৾৾ৢয়৾৽য়৾৾ড়৾ঀ৾৽য়৾৾৽ঢ়৾ঀৢ৽ড়ৢ৾ৼ৽য়৾য়<u>৽</u>ঢ়ৼ৽ঢ়য়৽য়ঢ়৽ঢ় मरामी अर्द् र ति होत् रूरा अर्ड व हिन है नवा नि ग्रीव है किया के नवा निया षिः हे. पर्श्वर र्वा संविषया वा र र वा सरा ने पा स्क्री र पर्षः ¥ वा सः वैरः ... मः यना तम्रेन सः स्वाया तहिना हे न या र नया पर्यः र र दिया नम्भनः स्वयः । पियापि मुयापिया पिती दिरा। है पर्देव र्या पर्दा विषया ग्राया स्वया वया मल.कुर.कुथ.पड्रम.बूच नधु.श्रूच.बर श्रूट.कैचथ.बे.चचेब्य.चक्ष्य.... मल्यायायत्त्रियायते वार्षे व श्रेवान् श्रुवान् वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे ञ्च या बळें वा न्वादा स्वासे वा केवा श्री मा वी मा विकास पस्तामुलायमा सः शु न्दा। वायवाया के किटा खना वास्त्र में प्रवा हू भ्र.च.चेष्य.ध्रच्याय.भ्र.रम्ब.च.इ.२च.२.म.रम.। रिक्ताव.इ.चईव.रथ. मदे विनय तम्रीत नवि नवि भ्रीत नव्य क्रीय हे व म् शुवा न्ता पद्मराग्नी प्रतिकाता नारामा नामा निर्माण निर नग्तर-नम् नञ्जलान रात्र नम्बन होन् लायन नाते सहन् न कु केर होला <u>विरा</u> देवायराक्ष यादेराकेवायुरान्डराधेन्यवुरावेयाद्वायदे व्रा बा बाष्ट्र बी. बीट. श्री दे . प्रति . श्री दे न वा त्र न मुक्तान्तरम् सुन्याया समुद्रान्या न्यान्तर सामुद्रान्या ने निवेद ने द्रास्य म्बर्वारी राम्बर्गिया ग्रम् सुर्का सुर्म दे न्या वार्म हे न्या ह क्य भ्राम्यार देव श्रीमा शासर श्रम् वास्त्री मा मानवाक रोता स्था

न्त्रम् शुक्रा कु 'त्र्र्या श्री हे 'ह्रा कु सा बु कि स् वी मि हे रामा विष-**द्धुन:दंदै: त्र्युक्ष:बी न्राम:बी: तृगु: मठक:धी: वें ना** नी: न्राम: हिन: में डें न्या द्राष्टुः न्यान्त्र बुरः दर्याया यहका मृद्राम्याया मृत्रका द्वार ने प्रमा बैक्षा के बुरायका अविदार्का व्यक्त विद्या *ৡ৲*৽৾ঀ৾৾৾ঀয়৽য়ৢঀৼ৾৾৽ঢ়ৼ৾৾৾ৼ৾য়৾৻য়৽য়ঀ৻৽য়ৢ৾ঌ৾য়৽ঢ়ৢ৽ঢ়ৢয়৽৸৾ঽ৽ঢ়ৢ৾৽য়৾৽৽৽৽ 1906 ব্ৰ'ৱ'ৰ ব্ৰ'ৰ বিৰুষ্ণ বৰ জ্বান প্ৰ'ৰ প্ৰ'ৰ ব্ৰ'ৰ ব্ৰ'ৰ ব্ৰ'ৰ ব্ৰ'ৰ नैयाम्ह्राम्य म्ह्रम् वित्रास्य विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद्रात्र विद्रात् द्रातुरानेवाक्ष्मानु अवायात्रायदे न्यायात्रायवात्रात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायात्राय म्बर्यान्ते वर्षा मार्के र्षे वर्षे न्या स्वर्ष्णे वर्षे कुै'दर्म र्धः प्रियः र्धेवः रेगवारः इवः क्रीवास्रः गर्छेर् क्रवासरः गर्वेगवाः व.मे.ं ४.ग्रुर. विदः वृथाक्र. पूर. १.५०. व्यू. श्रूर. विद्या १.४०. १.५० हे. प्र <del>ठेल: वॅ</del>न्-क्रें-वर्न्न म्वकार्स्य:ने-नेनकायायक्षकानान्क्रीन हिलावॅन्-नु-र्सरक्षिर होन्यते क्या रोबाया होना ने पाया होना ने पावित है। क्षेत्र मही वै.पर्या.तथारप्या.मुव श्रूर.र्याया.श्रु.स्ट.च.चेर.क्र.प्य.स्या.स मॅर्-तु-क्षेर-वेनल-न्वर-्र-तक्ष्य-धनल-लबा यट-व-धे-केट-तु-म्द्र-इंट्याद्यापल्यायात्यापह्या स्वयापद्रम्म्या विषाल्या भ्रमतादेर भेर्ने र ता बहून दू । षु रता वता है नता व ता वहुर है । यहा नर ... म्बराक्टेव विवास सार्वित म्हेर दहार देश में अपने विवास स्वास तिपार्ने र. सुनक्ष अंचवा शुर भी. भू. बाट. लूटवा चेवा चेवा चेवा चेवा चेवा चेवा

क्रि. द्रश्चित्रः क्रि. क्र क्रि. क

इ.थम द्र.थं, याया है। रश्चा रशिट स्वाया याया, पर्वे रावही बाया तथु. ৾৴ঀৢয়৾৾৽ঢ়ৢ৾৽য়৾ঽ৽য়ৣ৾৽য়৽য়৾৾ঌয়৾৽য়৾৸৽য়ৢয়য়৽য়৴৽য়৴৽ঀৢয়ৢয়৽য়৾য়৽ঌঢ়য়৽ व्ययः क्षेत्रयः इयः न्दः यठवः कृदः से कृः न्व्यं वः यः से रः यन् वः ह्र द्याः नेटा इंब इया में रावा में र वा मे र वा में र वा वया बह्या तहर नवर कु धिव उरा वर वर वर वर स्था के ले हिरे र्थेया.वं. प्रपु: श्र. वार. वार पार सर. येवर. श्रेप्या. येवा. प्रीया. वी. प्रीया. श्रेप्र. **इंर.त.कृष.त्र.के.वह्य.**के.वह्य.पहार.कु.पे.**य.क्र.वर.**पकीरय.कुय..... बदरक्षेत्रः 20 वेदाबहता रस्तर् नवर क्वानिव दिला वर्ष्ट्रे भ्रम् द.य. अक्रूचे . स्ट्रचया चे अथा थी. पर्वे चे या. सूची .क्ष्रचया . चे चया क्ष्रचया . स्व र्रः २७०७ तथा न्या वर्षे दश्चेष:धॅर् र्च्द्र-द्रेब्याच्य र्र-क्द्र-श्चे-्र्य-क्र-च्-त्रक्र-श्चे-व्याधु-इ्रेंच.पे.स्.सर.सर.स.पिच.पुज.सपु. चेच.इ्रेचेश.क्री.क्ष्य.स्र्पु.पचन.ये.. विन्यातस्यावेनयानुवयायवानम्या देवाहुतः हवाने वे स्ट्राह्म त्रिक्षक् , क्षेत्र हिन्द्र , क्षेत्र प्रति विवास मा स्वास क्षेत्र , क्षेत्र है :र्रागरा है : र्ग - रचें व : रेगरा से : पक्क : र्व अ क्रिया क्षेर : रव : र्रा पिर्म्सुय वर्माव के.प.व्याधेनय हे.वियाने रा विद्या हुर विवयः खे.च.धूब.रटा बनय.पह्यट.पह्यय.ब्रैट्य.पर्येज.च.भूंच.रह्यी मे इब रू रें न रंग रंगर्य रंगे परियो क्षि पठर ग्रंब श्रिस रंग्या व्यवहराम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महाम महामा महामा महामा महाम बर्केन् न्यं वृद्धि पत्र दिन् तेन । वर्ष वृत्वरा व्यव्वके के क्षं प्रतर प्रमा 

न्न'या बळें ना नेता भने दा बादी ध्राया ख्राना हे दार् हें दा परि हा पह दा दर है बह्लान्त्रतिलानवृद्दा बूदायदे स्याव्यास्त्राम्बर्दा केदी इट.म.बुबार्ट. बहलार्ट्र.हे.बुदास्वेच्यार्चेचात्तितात्रेवर्ष्ट्र. ने मल्यायाम्य मार्थिन त्रिम् त्र्रायाय मार्थिन त्रिम् या विष्याय विष्याय विष्याय विष्याय विष्याय विषय विषय विषय म्बर्रेषाम्बर्ग ने व्यान् त्यते हा या न्रा हु पकर वामव में विनव चिश्वराचारक्षाताभ्वराव्यवात्वराव्यत्वरा त्रेर प्रे २ब्राम्टरल्'न्टर्ध्याळे ले विदेश्तुः बर्ळेष्याया उत्ती चुःचान्न ठटाः म्तात्व द्राके न्या त्या म् व अवतः न्या म् न न्या व्या प्या न्या च्या न्या व्या न्या व्या न्या व्या न्या व्या लु न्वे राक्षे क्वा कु तर्वे रावि का कर के नरा अन् क्षेत्र के वास्य **ଌୖॱৼয়**য়৽ঢ়৾৾৾ঢ়৾৾৽ঢ়৾৾ঀৢয়৾৽ড়য়৽ঢ়৾৾য়৽ঀ৾য়ৢঢ়৾৽য়৽ঢ়৾য়৾য়৽য়ৼ৽ঢ়৾য়য়৽৽ **ढेव-ध**र-धर्-गर-मरीर-श्रुव-धुव-व-ढेव-्व-धि-धि-छेव रे-हुर-धुराव-लकःश्वरः श्वरः चेतः श्वरः यवः में नवः यरः देवः देवः देवः देवः विवार्गरः। देवेः वर्षा भारता देरः चीना अवाची । भवान राधरा अन्ति । दे हेरा थि न्वार्षवानेवायदे त्या विरवा ग्रीवातू त्ये त्रा या वळवा ता येवा ह्या ववा न्द्र'हें 'सु ल'न्द्र' 'कॅंद्र' बते 'च्या द'न्द्रे वे 'तू 'बते 'तु 'बरा कुल' सु अ' कुंद्र'' वते कुते वहु दल भूर वन मुग्य वर्तु र केव यं लुग्य या यर्ग मुव ..... नवराद्यान्ता इर.रे.हिम्ह्रायाह्याम् नाह्युः केलावनाकी विषया ब्रॅल'ल'नई'ब्रुट'इंद'लवाव्दान्दाके'च'ड्रेट्'मदे'दे'च'ळेट्। **ढ**रायाचेरायराञ्चराग्रामयोराक्ष्रद्रायाङ्ग्रदाधरावरायत्वायाया

मकुर्-दे-लुकार्सम्-नम्यायक्रम्भम्-द्रम्या दे-द्रवाधिर-यहम्बर्धकः" वेषाचेर पषाकुषार्घराष्ट्रपायकृषाकु अळे अळेषाळेषा केषायुरार्घर <u>श</u>ीर् । म्बर्स्यासुन्याकरण्यूर्यास्यासुर्वे कर्रान्यासुन्यास्य दे वयान्तरास्तरास्त्र परास्तरास्त्राम्तिलान्तरास्त्रास्तरास्तरा शु-र्नेद्यानः ह्रेन्या श्रु-स्र. 1908 स्रु-श्र. 10 सर् मूट्-स्र. वृष्टिन्येष्टर् व्याप्त व्यापत व् न्यरः तहेव यः न्यतः भुः तम्याः स्राय्या क्षेत्रा क्षेत्रः भुव। नृतः नेतः नगायः भवा नीयाश्चा झा केन् अस्वायायहरा हे ने सारा यक्ष्या यहाया पु हा निविध्नेयाञ्चयात्रविदानिविध्या याञ्चेया (1908) यदः ज्ञानकुः मराष्ट्र मदे नु सा क्षु निष्य र न्दा नह नाया थे हिरा न नाय नि हि कि नना मा मश्चरं वृद्रा क्रवं गुर न्धरं श्वरं श्वरं ग्वरं ग्वरं श्वरं श्वरं ग्वरं वि ब्रुट् बे पहिंदर यमक द्वं मका कु में विका है मान कु मान कि कि मान कि कि मान कि नर्षेष्रः वृत्यते त्रास्ता स्तर् प्रत्रा प्रत्या क्षेत्रा विषया प्रत्या क्षेत्रा विषया परित्रा विषया परित्रा व **ब्र**चयःपत्तय.ऐ.ट्रेज.र्टट.त्रेथ्यत्वच.व्रे.लू.क्या रंते.वीर.श्रू क्या विनयाः तया बुन्याया विदि निन्या में चुन वर्ष न् ने ने न त्या कुन विन न वर **\$**पु.चे.श्चेब.ज्बेथ.तर.थह्र.१८८८। य.वे. (1808) प्रपु. श्च.बि.ब. मदे के यान्तु के व अने माया अर्मा मेया नगा त हिं व हा या कम हि या पा । । । । न्मः। अवितःकेदः क्षः रचमः ग्वायः या ग्वायः या व्यायः वी व्यायाः वी मॅन्र्यम् प्रमाम्बर्गम् केमा परु राज्या हिन् के द्वापमा न्नः व ने ने निन्ति । बर्गयान्द्रित्यहर्। दे.वयाञ्च नवे.चवः क्यान्द्रः संक्रेन हेन हेन हेन

ध.व.र्श्ने.प<u>ूर.र्</u>ट.प्रयाई.श्चे.परीयाययाकुपयापानायश्चेत्रापुटा। विजा <u> श्री प्रत्या भ्र</u>ी पाल कारी हो। स्वर्थ श्री स्वर्थ स्वराहर स्वर हे व >मॅ८'ल'सळ्टम्' नदाक्रेर'सेनल'ञ्जनल'र्नेर'ल'र,वल'शेर्मनुदानी''''''' मन्व लु प्रमाद ञ्चव ञ्चा याञ्च प्रचर दिन्ने व स्वर र्ष माया रे र ञ्चा र देव ..... देवकान्दाव्यवस्थितार्ककाथेवकारसुरार द्वेरा स्वानेदेरिका रेग्राया वे वदः ग्रीया अर्मे दः या वर्षे ग्राया न्यु प्राया व प्राया में व हे व .... ल्यायः ग्रीः याच्चाया स्रास्या हाः ५ स्थाः १८ हेनः भरः स्रे नयः स्वयः स्याः इवि. धे. प्राचाविष्य विष्य करि हे त्याया वि कराया हेरा दी से प्राचा स्राचा प्र हेव-देव-स-हेदे-हु-कंव-अर्व-वित्रहुन-य-द्र-। वाह्यदे-यन्न-स् बर्धरास्राम्बास्य क्रि.पिटार्स्यम क्षेत्रितेस्य इटाउन्सूटा देवै:ञ्च-पकुर्-पवे:ळेल्-चृत्रेक्'कृत्-कुल'र्यर हुन-पहृत्कु, बळे सुः त्रिंतः न्दः चठलः यः वना द्धरः वेवलः श्रवलः यहः देवः ह्वः तत्रमः सुवः यह्रव **इय. मु. कु. अ. र. र. ।** इर. र विषया त्या त्या मु. श्री है. बिद्रा नृतुषाम् इदायद्यान्यवा रोतः श्रुः बैः बदायरुषा क्षेयान्त्रत्यक्षान्त्रमः क्षयावुर्णा ने न्ययाष्ट्रायदे ज्ञायाञ्चार्यान्य स्तर् न्द्रताराधेनवान्त्रुते ज्ञालानसूराग्री मिं त्र**त्वा कु श्वनामरा न्यावा**नरा <u> इपया पत्र प्राप्त के क्षेत्र स्वया कर् अधिया पर मुन्त म</u> में देश की बहरा रें र रें र बहरा पहें में या पर में **「カイン製」** 

स्वयाचियात्राच्युवयाने भ्यूरायात्राच्युवा तर्नाचिया रटा हिरान्या म्बर्मन्यरम्बरः इव हेव देवे व्याव वाया सुम्बर मेव हु म्यु वर मेरा त्र्वतः देनः हू न्यते न्त्रः वा बळ्ळणः क्षे न्र्याः न्दः ये ग्रेटः स्वायः क्षुः येवयः देदः व्यत्रिं म्वायाः स्वायाः वर्ष्याः वर्ष्याः वर्ष्याः वर्षाः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्व बर दर् र र र देवर हे य दर् र वर विया र न द या श्रेण विया पर र श्रिर न दे <u> च्चेन्-वनवानवर-मःन्व-ळवान्द्व-न्तु-नन्वन्त्व-ने-च्चेन्-वेव्-</u> न्मॅल चेर पर्रा पर्व भेर् क्षेत्र कुरे भूर भेषा रूट में बल प्रेल र्रः विव चेर् १ ५६ मा स सम्राम्य ग्रुरः न् चर मेरः स्रीर् ग्रुष्ट म् दिया छे । श्चिर्-ह्यान्द-कुव-तद्वाची-चु-व-वद्य-द्वाश्चित-विदः। दे-हेया-यदास्य য়ৢয়৻ড়য়৻৴য়৾৻ঀয়৻ড়য়৻য়৻৸য়৻ড়৻য়৻য়৻৻৴ঀৢয়৾য়৻য়ৼ৻ঀ৾৻য়ৢ৾৾ঀ৻ঀৢয়৻ঀয়ৼ मात्मा तेत्र तम्रे ना न्ता ने बहुत्य ग्रादे त्र सुर मेवा वा निर्मे दे वहंग्यायते चेन् वनयाने न्राहे वर्षे न्रा विवा के र्वो स्वाया प्रं र रेवाया साविता र र्वा श्वाया ता तहे द दया स्वा तहरा व्याक्ष्रवतः कुः यन् वे से गवान्यस्य प्राया के वाके सः श्रेत्रा **ଌ୶**ୄୢ୷ଽ୕୵ୠଽ୕ୢୠୣ୵୕୶ଡ଼ଽୖ୶୶୰୷ୖ୶୕୶ଽୄୄୡଽୖ୕୕ୣଽ୕ୣ୕ଽଊ୶୕୶ୠୄ୕୵୷ୄ **য়৾৾ॱ**ঢ়ৄ৾*ঀ৲ৼ*৴য়৾ঀ৾৾৽ঀঀ৾৾৽য়য়ঀ৴য়ড়য়য়৾৾৽ৼৢ৾ঀ৾৽ড়৾ৼ৾৽য়ঢ়ৡ৾৽য়ঀয় व्यापाया बर् विद्यास्य र्वा की विरुव्य क्या की विरुव्य क्या क्या की या प्रवास यदेश्व दुग्धराद्रेव हुत वर्षा ह्या हेव चुका न्रा हे वर्षे न्रा बर्भाव व्यक्त विकास के वितास के विकास क

यर दिर्या मदि । यया हर की ब्रह्म । या व्यवस्था व्यवस्था के प्रति । विष्य के प्रति । विषय विषय विषय विषय विषय व वगान् छे न न स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान इन्पायर रु द्वारा हेर हे तर है तर सुरा स्वायर या रा स्वार स्वार है । वयः हुरः केवः गुरः र्डरः श्रेरः गलुरः रहा। वर्षः गवयः श्रेरः गलुरः नी-न्दर-दहें व सदी-न्यर-मी-दिल्लाचे है व व दिव है हु न हु सर पर ।।। नहेव् छे कुल नव मंद्र की वदारी दार में हु व के दि में अनव म्वर य विष केर करा में र वाया वाया स्थार र र वा या पहें व वा प्र विष ञ्च यः बर्ळेषः वैषा केवः गुरः न् चरः यः गुरं तरः सुरः वैः न् वय वैः इवयः छैर त्रेव-२ व्यापायते से मान्य के वा मान्य स्थान स्थान ⊿.≘.(1909) <sup>৵৻ঽ</sup>৾৾৾য়ৢ৾৾৾৽ঢ়৻ঢ়৾য়৾ঀয়য়ৢ৽য়ঢ়ৢয়৽ৢয়৽য়ৢ৽য়য়ৢ৽ঢ়ঢ়৴৽ঢ়ৼ৽৽ मरुषाव्या कु'व्या द्वेनय क्ष्या क्ष्या हेन हे 'तर्या मृत्र'न्र'। विर.क्रेच.जिर.श्रच्य पर्केट के.४४.क्रिय.श्रच्या अ.चर्च.तपु.क्र्य. शुया है। हैन सं यदि ने रद्यया शु येयया स्वया में राव व्यवा समानन लब् सुरा न्दः ने अव लया र गया इसरा वेदया र सुरा र ठरे पदः हूं 'यदे' ञ्च या यहून वृथा श्रुव मुराया मञ्जनाया पदा द्वारा सह न ने नि मा स्वया यह या नविरारर थेनला सर गुन्या र्दा पत्र नवा नवा स्वर प्रवा विरा ૢૢૢૢૢૢઌૢૢ૽૱ૹૢ૽૾૱ઌઌૢ૾ૢ૽૾ૡઽઽ.૧ૢૄ<mark>ૢૢૢૢૢૢૢઌ૽૽</mark>૾૽ઌઌૢ૱૿૽*ૹઌ*ૹૺૺ૾ૺઌૺઌૢ૽ૹૣૢૹૺૡ૱...... 「ガス びて、るの、ス美て、子、老、な、日 に、子、の ぬ、 こ 有、 だ、 口 類 て 首 町 類 ' あれ・・・・ पर्वेच्यान्तेरान्त्रान्त्राच्याः वर्षेत्रा श्रुराध्याः क्याः क्रुरावेदाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः मह्मव क. है न देव जिस्ता हव पर है कथा बर र र स्टर प्रमा के पर

तुतानेरःग्रदं त्रस्य नित्रम् न्या न्या न्या न्या स्या क्ष्रा व्या क्ष्रा क्ष्रा व्या क्ष्रा क्ष्रा व्या क्ष्रा व्या क्ष्रा व्या क्ष्रा व्या क्ष्रा क्ष्रा व्या क्ष्रा व्या क्ष्रा व्या क्ष्रा क्ष्रा व्या क्ष्रा क्ष्

後上1 8· 智云,白,台口,白路之,望,如照,印,山上,纪,灵立,迎口之,口以,

ब्रान्तः अपया नुरान्त्रं त्या स्वर् स्वर्

शुर्-र्रह्रक्ष्र्वासु स्वाप्त प्रवास्त्र मुर्गित स्वास्त्र म्याप्त स्वास्त्र हु वंग प्रकृत थे केर रु में र अर वं र में के ल री र छ परे में र स है दे षदः क्रेन्दः लु : २ र विनयः है यः ग्वरः है ' श्वय्यः है ' (1910) ज्ञः न्दः यदः । ळ्यानशियाने वे.याश्चिता व्यारी र्वाता स्वाधिता छ्या श्चिता **ਫ਼**៹੶ਫ਼ਖ਼ੑੑੑੑੑ੶ਫ਼ਫ਼ੑੑੑੑੑ੶ਫ਼ੑੑੑਗ਼ੑਫ਼ਖ਼੶ਖ਼ੑੑੑੑੑੑ੶ਜ਼ੵ੶ਫ਼ੑਖ਼੶ਖ਼ੑੑੑ੶ਫ਼ੑੑੑੑੑ੶ਫ਼ੑੑੑਜ਼ੑਜ਼ੑਫ਼ਜ਼ੑੑਜ਼ र्द्धन-८८-५६ त. देव. देव. द्वापार्य अ. देव. च्या अष्टिय प्रमास्य या क्या व्याप्त नर्भ्रताबरण्यायर्दर् केटाने व्यावया द्वेर् छं या तु के प्राचित्र व्यावेरः । तुःब्रैरः¦ररः&नयःमञ्चरःमृदरःक्षेःश्चेरःक्षंद्रन्न्त्रःक्षः**रम**ः । हे.रटा ब्राह्म स्टार्च्य श्रुवास्य क्रमण करा हे अ अहिवास्य राम्य पचरा पर्याप:भूष, नेयर बैर.कु.पकेष.रंजर हैं व पर्याप:भूष.पथथा. संना नम्तः हन मुद्दान्य नहेन ति देन न्दर में नकता न्दः हन नुः वयायर्गावरारायाञ्चरायीयापा विवाहे द्वारती क्षेत्रकृत करि हा पकुत्रा **नेद्;**द्रवान्वंवाक्षयाक्षयायम् मित्रेवायम् केद्रान्यम् केद्रान्वेदान्वेद्रान्यस्य हैव-नहेन-याथेनयाथेटा। वॅद्-नतुन्याखयानवायवाध्याधियाह्नायदे भि.श. व्या व्रेय. क्या तप्राचिया क्या दे . प्रेया प्राच ता है . र्या विया प्राच क्ष्मा द्या हे या न दे र पुर पह र दिर । वे वि म के र व्या वे व्या वे व्या **७.६.१४.८.५३**४.५३५.५३०.१९५०.घनय.३८.४०४.०५८.थ.४०० नम्भ-द्वर-त्र्वर-देर-केवरा-वृवरा-शु-व्य-प-शु-वर्वर-शुव-यरामः नव्यान्द्रनेयान्द्रताञ्चराजुराजुर्मुद्रान्यन्वेरावद्वर्भन्द्राजुरान्द्र मुन्तः द्राव्यात्म्या मृतायवतः गठ्या मृत्यायते वरः वे विवर्णे .... रमा के पर इस रवा क्षेत्र में र प्राया वर्ष के के दिया नवाय के क्ष्या

दे-विन<sub>िन</sub>्दर्भः दक्ष्मताया श्रुपः धरः सुवाक्षाकृतवा दू स्परे क्षाः या अक्रवाः द्रमः श्रु प्रमान् इ.स. स्थया रेताता है . रेटा इ.रेग्रे इ.रबिर. नथवा ईर्था न्म्ये प्रतित्वा भ्रम्य विषयः व.चंचर.र्के थ.कथ.न्षे य.धे. वि.च.चं.तिच.चंर.जंचर.श्चर्ष्यय.नर.... यग-रे-र्रयायाम्बुर्-रेयायहेव्-ग्रॅ-स्र्रयेयया रे-द्याकेव्-गुर न्चरःश्चेन् मृदुरः याम् शेनः कृदः क्चेत् हे . क्षेन् क्चे स्थानिया है । स्थानिया स्य युर-न्धर-धेर-न्बर-वे-न्द-स्व-बर-स्य-अ-ब्वर-प-अ-बर् ॺॕॖज़ॱॸॺॻॱऄॱॾॺ**ॺॱढ़ॖऀॱॺॱॾ॓ॺॱॸ॓ॸॱॸॸॱॸॺॱॻॕॱॲ**ॸॱॺॖॖॱ**ॺय़ॖॸ॔**ॱॸॿॖ**ॻॺॱ**ॱ वनवान्यानान्या अनवानेरान्धेवान्यवानीन्यवान्येवास्यान्यवास्यान्यवास्यान्यवास्यान्यवास्यान्यवास्यान्यवास्यान्यवा इ.रट.प्र.त.क्षु.क्वियाष्ट्रियाय्त्र.क्षुर.क्षुर व.यट.क्य.ख्रेताने.क्.यर.र मन्दर्भरा गायवाधुना हाथेयस्य वसाने राजल मरालगायहुन पत्नाया तुलानेरःकेत् गुरः न्छरःश्चेत् न्तुरः मेला दूः त्यते हाः या श्चाः शेरः नकु निश्च पर्यः निश्च निष्यः न न्यराधाना होता है। प्रमानिक हे प्रमानिक होता होता है निर्मा प्रमानिक प्रमानिक होता है निर्माण है नि वियानाया वर् । मूर्म् राष्ट्रया नवालवालया क्रीया क्रीया निरासरा साहिता য়ৢ৴ॱ৴ॻ॓ॺज़ॱॻज़ॱॻॱॸ॔ॸॱ৵ॿॕॸॱज़ॺॾॺॱॸ॔ॸॱक़ॖॺॱॸॖऀॱॿॖॱॿ॑ॸॱॸॖऀॱड़ॕॴऄॗ॔ॴ त्रा यहन् न तिराव का के न वका र हिराय हर से मा ति वे यह राष्ट्रीर । र्म् य.तपु.विय.रश्चेचय.वियात.स्वया.वि.चंचया.क्ष्या.±क्ष्या.चंच्या.ह्रय.... बहुवानरानहेवाक्षरायराये छरातु वेचवानवाक्षत्र में रावराक्षत्र वेरा 

वेनसः हे - न् है व न ब द र व के से व न हे व न मु र ख व र र न है व न व व व र र र য়য়৽য়ৼয়ৢ৽ৼৢঀ৽য়ঀৼ৽ৠৼ৽য়৸ৼ৽য়য়৽য়য়৽য়য়ৼ৽ড়য়৽য়ঀৼ৽ঀৼ৽ৢ न् चेत्रम्ब्राक्तात्वेत्रात्त्रात्वरेत्वात्यात्वक्षेत्रम्यात्वेत्रात्वरात्वात्यात्वेत्रम्यात्वात्वरात्वेतात्वेत रुषान्रेरक्रिवागुरान्धराश्चिर्वावुराविषात्राव्यदेः स्वार बद्धवः न्वताः बेर् धः पञ्चताः परः पहेवः कुषः वरः नीः यरताः कुताः स्वायाः त्यार्त्र व्याचित्र व्यापन व्याप्त स्त्र व्याप्त स्त्र व्याप्त स्त्र व्याप्त स्त्र व्याप्त स्त्र व्याप्त स्त्र **ञ्चित्रायाल्यात्र्याय्याय्यायाः अस्यायाः अस्य** वनयाचेन् केन् दूनः विविताग्री श्चेन् चुयायन्य विवाया नर्यन् चियाया हो। मूदॅ दरसुर है विवृध्धे हैं । इय धर पर्मे प्रवृण ईय पर् र र दें वि से र र न्न्यायदे प्रमाद स्वायान्ता कु न्रातु स्वाव के न्याया स्वाया प्रमाद नरायराया इवाविरा रे वया अगया यगा (1911) यदे हिवायर व्युन्यम् क्रियार्थे वाना विव्युन्य क्रियार्थिय प्रति विवयः स्वर्धियार्थे विवयः विन्यायंदे मूं पिट देन अने ट त्य बहून तास्यान ता ने र व र र है ही र ..... विवासिका सामितिका स्थापिका स्य म्बद्धा राज्य हिरात्र्यायाक त्रित्व व्यास्य विश्व No.

**ढ़॔॔ॸॺॱॹॖढ़ॱग़ॗॖॣॖॸॱॡढ़ॱॺळॅगॱॻऀॺॱॸੑय़ॖ**ॱॿॖॎऀॸॣॱ**ॺॾ॔ॸॣॱधढ़ऀॱख़**ॺ॔ॗॺढ़॔ चहे.लट्य.**प्रे.स्.र्हेट**.स्व.रव्यत्ष्वा.यीट.ब्रूट.रंवट.च्ड्रीर.तप्र..... लर्थाक्राम् केर क्रिके क्रिके क्रिके क्रिके क्रिके क्रिके क्रिकेट क्रि निर् त्यानेराकु वराकु ईरातृत सु सास में हे बे'हे'रम'ह्र'दगरा ब्रीट-५-केन्वट्न-५ व्यापे ज्ञायां बह्यान्य-दि द्वाने न्दी वायालुट-न्दः ঽ৴৻য়৽ৢঀয়য়ৢ৴৸ড়ৢ*ৼ৽৸৽*ৼয়৾৽ৡ৽ঀৼ৽ড়য়ৼ৾ঀ৽ৠ৾৾৴৽ঢ়য়ৼ৽ঢ়৾৾য়৽ <u> चुन्-पर्दः तहनः चुल-नहस्रताः नुल-नेर-न्</u>चेन-हे-पर्वन-कुल-नेर-खत्-न्राख्-तःश्वतःरव्-नश्चलःद्वाःषू त्यते श्चाः वरे क्वाःश्वेन् श्वे न्व्वरक्षः प्रवेर.प.झ.चप्र.पक्रिय.क्रिय.विर.प.क्षे क्षेण.बर.री.क्षेत्रथतवा.ययर नहें 'अ८ल' महे 'में 'भ्रेनल' ५८' नहुंब' हे ' मॅं २ ' ५ दे ' बेल' कुल' ५८' | व ' व ' व ' न्हॅर'नदे'ग्रन्**र'वर्ष'न्र'न्द्र'न्डे**न्हेर'र्ह्र'क्रेय'बद्दर'न्डेन्'ह् म्बरम्भे न् इक् हिते द्वा सुबाब सम्बन्ध व वका गुरा न इर खेर मालुरा ल ८ हे व व व र र छे व हे । अवर क्षेत्र पर्व । अर व छ व व व ख र छ व र छ । मुनः सः नर्रे यः हे . रूर् : रूरः नर्द्ध न् नुर् : पदि : यार्त्व : सु न्वा : तु न्या : सु न्या : सु न्या : सु য়ৢ৻৻৽য়ৄৼ৾৻ঀ৾৾৻৶ৡ৸৾য়৾ৼ৻৸৻৶ঽৣ৾৻৸ড়৻ঀ৾৽৻৸ড়৻৻৻ড়ৢঌ৻য়ৼ৻৴৽ঢ়ৼ৻৾ ह्रग्रायम् (1911) व्यात्रात्रायात्रात्रायात्रात्राचीयास्य उत्रुवि अर्वाद्यायाः

वे मि लर नहर नवे बेर्ब के मान दे कुर

"अद्यापते काळेव परे पर श्रुट पा विषय हुता विषय है न

रट. दे. चून मिल रिट. बड्डे ते. मैल रे न. रेट. हे. क्रेन्-त्-ल-गर्यवा तम्भावक्षर् प्रवास्त्र । त्राया स्तर त्राया सेव गुरा র্থার ব্রুপ্তর ব্রুপ্তর প্রাপ্তর বিশ্বর বিশ্ तम्भाष्ट्यान् हेम्यास्य स्वाधियान् विषाम् विषाम् विषाम् विषाम् विषाम् विषाम् बर्पान्दर्भ वर्ष्ट्रम् क्रिया क्रिया है राष्ट्र के तथा है तथा वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वरवर वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वसकेदसाधेमा नवमा नवदाना यहेव रदा नके चेव रवा मुद्दार देवा देरः तरः रंतुः जुलामरः द्वेदा द्वर्या स्वयतः ठर् द्वा जुला विषः छेदः ये र म्बेरायार्म्मारायहेयाक्तरायहेवाहेनाहेरार्च्यास्त्रेरार्च्या र्घरला केमा मेला देखातू 'या ते ज्ञा वला में दावा पन पा चे 'के वर्ष रा महास पर्नेनला भेदा बेला वा पर्ना मन् मिना के वा माने वा वा पर स्था र्नेंच्यापः अप्तः श्वापा हे के स्या ही क्या के कर यं क्या रा देया प्रश्चापा । . . रम्बरायव्यन्ता क्ष्मायरानु बङ्घा ख्यायावया महेन् रो बया विमा पर्वमा में रूर् हिंद्या के विदय स्व क्या से र सवा प्रकार है। व सक से से दे र परे . देखाया जी वहुमाया दे. बर् . बेकार व. कुर्य. इ. अ. अ. वेकार वारा वारा बॅलाग्रेलाञ्चर् न्नेरावर् वास्ववायावहवाचरे परावेत्रावि र विवायविवा **ठेलगुर-हुगल हे के ए ५८। इंद-हुक रा केद-दें** रात्ताय क्षेत्र **दंद** 

ब्रैव ग्री-मुल-विच क्रेव रॅं र-व्रद**्यदे अर्छेन्**-वृ**वराः** स्-र-व्रेद्याः वृद्दः '  $\alpha$ .  $\hat{a}$   $\alpha$ . विद्या कराश्चित्रपञ्च रापकु वायदे केत् नु विषया यह वालु वे वायव यं म्हेन रूटा र्ने त्रुव पहुर्न प्रकरा द्र रेंग इर मेर् प्रे য়৽য়ৢ৾৽৴ৼ৽ঀ৽য়য়য়য়৽ঀৼ৽য়৽য়ৼ৽ঀয়৽য়ৼ৽য়ৼৼ৽ড়য়৾৽৸য়৽৸য়৽৸ৼ৾য়য়৽৽ न्दा क्रारम्बाका ग्राह्म मुन्ता म्याकाका ग्राह्म प्राप्ता माला बद्धवाविषा कवा गुर्ने राजा श्वर छिरा श्वेषाया छै। द्वीवा श्रेष्य व र्राहेवा पश्चर द्वं न दराय वयवा ठर क्रिया सुन्या परा स्वामी दे र या मेरा मुद्रा मु लम हिराह्य म्वाइराम्य केराम्मारा विकास मिना हिर्मे के मान्या मैल. रिच. थे. श्रूच. बेब्रे र च. वि. चेबार चे र. लूर. चळा श्रूच बी. क्र. श्रूर. तहमः नवर मेथा सम्बन्धम् सम्बन्धम् । सम्बन्धः र्नुरयाश्चातहन्यायासम्बद्धाः लु.पर्नेन्याः क्षे.मूय रूट यह्या कुरा थुः सु नक्ष क्षेर स्थापक याञ्च के या नवर से र स्था "वे या विदा शु र खिरे म्रामा के मिराया हिर्या क्षेत्र में तह रावस्य है स्वराश क्षेत्र या अक्षेत्र या क्षेत्र लब सेल. हे. सूर. ल.बहर खेट. सब. मधु. चथ्या मा बंबा लटा विकर मा अर. या.स्ट्रा व्यक्तां व्यक्ति श्रें रात् हेवा हे ते कुलाहन द्रायम् बॅलालु न्रालु पत्रेवातु व्यन् यया हेन् ही सुग्यः न्राह्म हिरानेवाता क्षेर:Aहम्बराबुर:5:ल्रंटरेक:रेन्:डेक:हेर:म:ल्रंग्क:दव:म:श्रुत:श्रुट:··· बर-इंब-इब-१८। भ्रम्याने र रें र के जा व्यायम में र ने विवा र्वामा के रूरा कु रेमारा या में मिया केर् या केर किरा केर किरा केर विमारा केर या न त्री वित्रत्यम् न्सुरःवदः खिलः गुद्दः त्रम् यः केषः केरः छैवः 551

न्रंद्राक्षया नव तत्र स्थान्य मुर्गे क्रिक्र न्रं र न्यू नव म चिया विद्रा हेल'र्नेर्'ल'गदल'शेर्'ः|वुंद'ल'हे'विव'र्यम्'वेदि'र्वम'र्थेगलाहु''''' **५५** त्या श्रम् वि प्रकुर्ता हार्चे राखा है मार्चे वा प्रवेश के प्रवास के वा भ्रमण नेर वे दिव न्यम थै द्रम सुम्ब के मल वर्ष म्य **য়৾৾৲'শ্রদ'শৃঝ'য়ৢ'৲ৢৢ৸**য়য়৾৾৸য়য়৸ र्बेर्'ग्'बेर्'हुर्'। वै'द्विर्'र्यण'र्सुर'गैयाय'र्व'ळेग'य'के' ग्वय' र्रा तुर् बेर् ता स्वा विदाय हिंदा विदाय विदाय अर.पर्युचयातास्यचयान्वयास्रमयाः स्ट्रम्यायाश्चास्यः स्वराह्यस्य स्वर् न्डेन.ए.उरा-रूरा वे.व्र-र्वन्ने.क्र-प्रत्न्वन्र्ने.क् निवेट.मु.ब्र्बियथ.थी.पटथ.ब्र्बिय ग्रीट.लट.मुथ.पभूट.पट्ट्रेशथ.वुट्टराइ.ड्र. ऍ**ব**ॱ२য়गॱয়ेॱ२८ॱत्त चॱगॐगॱৠगॱउंয়ॱ३८ॱ२য়गॱঀয়ঢ়ॱঢ়ৢয়৾৾৽ঀৼ৾ৼ৾ पतिवार्षे स्राप्त रहेर् हेर् स्राप्त ने विवाद वार्षे वार्षे वर विवाद वर बैरःकः क्रेवःमं त्यर्या व्यव्यायान्वन् विवान्यः म् रः यान्याः सेर् व्या नै'नगाव'ह्रॅब'र्क'र्रट'र्नट'ड्डब्'कुल'र्व'र्ट'। नगाव'हुट'र्क'व्यामा नस्व कुराक्षेर राज्याय वर्षा चे विव न्वम विर कुराक्षेर भुगरा केव छरा मानकलाम्र कि.मोबेथाक्षाच्याक्षाच्याक्षाच्याक्षाच्याक्षाच्याक्षाच्याक्षाच्या ब्रैटा इ.यद्र.चल.व्रैट्य.व्रट.वय.वर्.ट्ट्य.चवार्यय.व्रट.र्ट्टा मतुर हे हिर् 

第、五を公子, 20.1 4 보다, 20.1 4 보다 20.4 (20.1 ) (20.1 ) 4 보다 20.4 (20

**ভ**. ব্র. (1815) খ্র. র. রেণ্ড প্রথন প্র. প্রথন প্র. প্র. প্রেম্ম প্রেম প্রেম প্রমান र्राच्छलाना सुन अरॅबार्नि रे में स्राम्य वर्षा में में स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य स्राम्य चश्चर। अनलारे राक्च नरातु स्पराधि सर् श्रे शराश्चर सन्तरा ग्रेया विवलः क्रेलः व चरा कुरा लुवाय द्रा द्वेत हेते : द्वेत देवायः तन्तः विन नियातः क्षेत्रातुः सुर् ग्रीः सुयात तुर् लुयासरः सहस्यायान निरा रे वयानेवारविवाहारेवारारारकुन् न्यायिहासन् वेवयानेवायन्ति व्यातृ 'यदे 'ञ्च 'या ये नया चु यया शु 'नतु ग्या ई न्'केनरा वृ नया न्रान्य रा इंद चर-में सं श्रे किंप सर्व र्यं श्रेय है। य तमें र्यम पेर्य रूप ঀ৴৽ঀ৾ঀ৴৽য়৴৽ঢ়ড়৻৽ৼৄ৾৾৾৾ৼৢ৽ঢ়ঀ৽ঢ়ঀ৽ৼয়য়৽ঢ়য়ড়৽য়য়৽য়ৢ৽৽৽৽৽ र्टायवाच्चिर् इववाची सेववावधार्टा प्रतापक्षा भराविदायदे वर्षे वर्षे वर्षे तुःवेनबःहेःहेवःवगःनतुवःर्वयःनवृत्। वृतः<u>द</u>ुरःवेतःनगरःश्चेरःसरः नगतःस्यानम् ग्वावनाः द्वायः स्वायः स्वरः श्रीन् श्रीः द्वेन् स्मायाः स्वरः श्रीयः म्बर्ध्या ने ब्राजिर वहारा मृत्या श्री से स्वाप के रामकु द्भग द्यान्तातम् तर्वययायन्तान्यं वानगागः भगाना भ्रव यन्ताकतः **৲**ৼ৻ৼয়ৢঀ৾৾৾৻ঀ৻ড়ৼ৻ঀৢ৾৾৻ঀয়য়৻৴য়ঀ৾৻৸ড়য়৻ঀৢ৾৻ড়৸য়৻৸য়ৢ৻৴ৼ৻য়ৢৼ৻ৼৣ৾৸৽৽৽৽

द्रवासवारित्वकृत्राख्टान्ववात् विषया तुलानेरास्ववावायात्रः यहेग्-पःयतेषः इंग्-षद्रस्व म्युद् सेषः वेद सुग्यह्रा मक्रकेव नेवं में किये वह न्रह्मा तन्तर दिना ता अने न्रायके न्रह्मा हुन्या कैनलाप नञ्चर हे जुल हेराबा वेनलामरास्य रात्राम्य **व न्या**न ह्या स्वराधन ग्र-पर्वा कृत्व न्वेन पर वेपवा अपवा नेर के वर न्वा प्रवा बहुन क्षेत्र बेर स्वरार्ने व रेर हार ने विष्य स्वार्य या पत्निया हैते. नैराबर्राञ्चर रेवान्डरायकाळवाञ्चावनरायातू ञाबदे में गवकार्या नगाद क्या कृरा च वर क्षा ख्रा च वर्ष च वर्ष च वर्ष वर्ष वर्ष वर्षे वर्ष वर्षे न ब्रें र्विट खेय पारगेय हैं ट. पश्या प्रभू वेष वी पश्चिता है पान देट वेष व लट्रम्बें विचा लट्र द्वा शिका प्रवास है रेट्र विचा हिंद्र विचा ही है तहीय. ध्रमः भेदेः नहें द्रमः स्वायः मः सहस्यायः नवरः दिरः। द्रयः देनः वरः न्तु ग्राक्षरान्दायदायुरान्ता न्यगान्य दायदागुरानुतादरा ञ्च.च.चथत्रः क्रूंटयः श्व.त्रचयः च.चेयः स्वयः सटः सु. ह्वेच स्वयः हे। क्रु. च्रूरः **ৡ**ৼয়৻ঀঀৢয়৻য়ৢ৾য়৻**য়**৾য়৻য়৾৾৾য়ৼৼৼৼৼৼ৾য়য়৾ৼ৽য়ৼ৻য়ড়ঢ়৽ঢ়৾য়৻য়য়ঢ়৽য়য়৻য় बदग्राः, हॅदः न्वदः पदे ते पायहेव पा क्षेत्रः ह्व व केवाकदः वियाय विवा रमःर्मलायबदःर्दः। रोरःश्चरःकःमःविःमःश्चलःश्च। द्वेःवर्णेवःम्ह्रवः तह्रव्सव् क्र्याया पर्याया वृदा हेव प्राया त क्षिया क्षया प्राया विष्या क्षया प्राया विष्या क्षया विष्या क्षया यर भगें र ने हें म बह र ने सब हुव ले मदे में या बें या ग्रेया म क्र र में र मलुग्रालयामव न्रा भग्रान्यं वास्त्रवारा महीया येन् न्यं वारीया

न्तः शुर्ना वृत्तः वृत्ता दे दे व व व व व व व व व व व व व व न्रान्युर् छिराप्रनार्मेवायार्दा छुदैः भिवारेनव र्दाशुःसुदारार् न्म्यारेयाची सामान्यात्रः सम्वापान्य सन् ने चित्रासळ्या का स्यापा ह्मिय. म्र. थ.नं वय. श्रेर. नं विरागी में सहर रे. थे. प्राप विरागीया के स्थाप क्ष्मयाचेर्रत्म्यायदे छ्र्रिष्मायवम् वम्यतः छ्वाचेषाचिर्वार् मुंब्र-पश्चें नव्य प्रक्षित्रम् प्रदेश्याच्या व्यास्या व्यास्या रेश्रामिव केर रहिन्य रहिन निया है । १ के वा 29 हे वा अहिन वा के वा र्ट.श्व.पष्ट्र.रट्ट.चळ्यान्या मृत्याद्याक्षेत्यावा नि.चश्चराहे . व. स्व शु षि'रकुर् बर्'टॅ्र प्राद्धिर'य्द्र'केर'वेवल'हे वि'वि'रेद्र'र्गेष देर'''' नविन्य नेरा दे वया छ है ज्ञान् इत्यह महिता परे के या नह हिन है व यर विषय पर अवय शु ज्वय स्व न्यव स्व वि व के र्श्व वि वि र नगायः ह्रव-रुत्-रोत्-श्च-द्रव-द्रव्या श्चायः अर्थरः अर्थः नशुः नः न्वनः ক্রমণ্ডুমা ট্রি:কন:মই কন:মন উন্যোদ্যা বদ:মুন্মান্য:মই দুন্মন ই:• क्रर.श्रयःतप्र. ंग्र.केर्या ७ मिल.र्यट्र वियः पक्षेत्र.मे . यक्ष. के.यर. हीर. ल्ब-न्रयाड्याइर-ग्री-न्यर-पश्चर-ग्रयादर-विवानी-प्यवान-क्रया के क्या महिका नियम की रहिलाम हे सुन हु कर दिरा दे नदि व नहें व न्मव परे कु न्रेस स्र स्वास्त्र म्वाम लुर यहे या यह राष्ट्र प्ने प्र वि पर इययः रटः रटः स्र स्ट्रे नवयः शुः छेरः श्रुंग हा र वटः र्या ५५ ता छेतः

श्चित्ताती, र्वेट क्रि. क्रि. विकास प्रमान प्रकास । श्वार सिर्य क्षा प्रमान प्रमान

## 9. 저희'대전'법적'품지적'취지

श्रमात्रे ग्राम् बाय बु.क. श्रमः (1913) प्रदाः श्रामकः मधः क्षयः मह निरा ब्राह्म नमाने ने र ब्रेन है नर्जन मुलारेट सुन्तरायर यर्ष सुया त्रें बन्न केन् ग्रीन गुन्न में दे व द शेन् तम हे चुक चुक हे न न दिन केक .... क्चित्रक्चे द्विरक्षत्रवाद्वाचार्यात्र विद्यानिक्षेत्र स्वाचित्रक्षेत्र विद्यानिक्षेत्र য়ৢয়৽য়ৢঀয়৻৴৴৻ঀ৾ঀয়৽য়৸ঽ৽ঀৢ৴য়৾৸৴ঀয়৻ৠ৾৽ড়৸য়৴য়৾৴৽য়৾ৼ৴৸৻ঽ৽৽৽ **इ** चे देव न् है द्वव न् ना में प्रवाह के मार्व व मास्मान विवा नहीं व हैं हैं हुं कंप हैं पदोय व्ववः केवा स्वाप्य कुरादरा यद्भार यहा दॅव:ग्री:क:ज्रुल य:लदॅ:ही वॅट्-ग्री:लल:दॅव ग्री:क:ज्रुल:य:ब्रेल वॅट्-ल: म्बरारीर्-न्द्र-बीसु-क्वान्ध्र-क्वान्यन्-भ्र-न्ययावर्ध्र-हे-रूप् लय. द्वयावि हे वि श्रूव द्र . तु . न्रर . कु या व व सार ब . हर . नम्भवन्यान्ता क्रिया नेवानवी क्राव्य निवास विवास वृद्वाय्वावान्त्रवारम् । व्याप्तवारम् विद्याप्तवारम् विद्या श्रीश्रम्याधन्।

पर्वः «हर् ग्रे॰क्ष्वः **कर् :र्रः नेरः नगरः** »वेषः पर्वः वरः "ग्रुरः कृषे र्गरः **क.**क्ट.त्र.लूट.तपु.चेंद.क्व.यीट.चूर.रूट.तपु.थेचय.थी.टय.थील कुर <u> इंब-क्रेब-पबर-ञ्च-र्रम्, ब्रुब-पश्चर-ञ्चल-पः ध्वा विद-वर-जे-र्यद-कः</u> म्बन्यन्त्रवर्षे व्यविद्वत्त्रे देश र्याह्रदायार्षे वाकर् ग्राटा वे न्द्रा हर न्मर त्रे पान् मृ मृ द्वेन त्यान्य न्मा गुम्मे वा नियान विवास दवा च तुराचिता ग्रामा द्वारा के स्वता के स्वता स्वता विषया विषया स्वता के स्वता के स्वता के स्वता के स्वता के स्वता नी.पड़ीपा.लर्.लर्या.प्रचाया**इयया.पङ्गपानई.विय.धे.क्र्याया.पर्य**ा.स् दिष्ठेर. 'म्यातपुर ध्याप वि.वियाता लिया. अव्यायम्या थाया पहुंचाया स्थिता स्थिता स्थिता स्थिता स्थिता स्थिता स् <u> क्रीयानम् राष्ट्रास्टरा</u>धारययार्वास्य व्यवस्यानद्वेदार्घरायाः व्यवस्थितः । न्द्रानी भेना संनता सराधा पर्या प्रसार में प्रसार में न्या मे में न्या मे में में में न्या में न्या में में में में में में में में में मे पर्नर विर विरा अपया देर प्यत् श्चित श्चित ह्वर द्वर है है न्तः त्रकः र्मेषः दे हे वि अव देर सु न्तर कुषः र्मेष्य र म्या व्यवः श्रेन् मृत्रम् मे प्रमुत्रा श्रेष्ठ्र स्रव्या हेन् प्रमुत्रे ग्रुट्या हैता होता स्रव्या प्रमुत्र मार्थे भ्रमण है त्र हे ता झॅब केव स्त्र हि या सुरावी भ्रु कंग न्रा द्रा ही झॅब ... ळेव-र्राग्या १ हीव-हिते १ र्ये व १ रे ग्याय १ व्याय १ विषा ग्याय शु । य १ र हो सेव • • • म्रायेन्य च्या वा न्ष्रेष है से म्या विकास मारा विकास म मृत्रात्वातः वे**ना स्ना** तस्त्र चेनः धरः दर्यः वयः स्वः स्वः स्वास्ता स्वास्तः 34.M21

ब्रेट्य.र्देश्च्र्य.क्र्च्यय.द्वे.च्च्र्य.व्यंट.व्यंय.ल्यंट्य.श्वःविश्वं

विद्रा न् चैन हैते र्वं न रेग्या रेग्या विषा न्द्र खंन केन प्यत् न हैं न स्वा त हैं न से केन प्यत् हैं न स्व केन प्यत् विषा न से केन स्व केन

भ, द्वाक्ष्यं प्राची क्षेत्रक्ष्यं चेराक्ष्यं विष्यं चिराक्ष्यं चिराक्ष्यं चिराक्ष्यं चिराक्ष्यं चिराक्षयं चिराक्ययं चिराक्षयं चिराक्ययं चिराक्ययं चिराक्ययं चिराक्यय

द्राह्म स्थाने क्रिया क्रिया

र्चनः ह्या व्यापात्र व्या क्षेत्रः व्यापात्र व्यापात्र

निक्रम्नेन्नम् त्राचेल न्यं न्यं ने स्वर्षे के स्वर्ण क

8.8 J

त्वायः करः मृष्वाच्याः क्वा स्वायः क्वा स्वयः स्वयः

 रु'मञ्जूर-डेराचेर्-पर्दः स्वान्यं विवाधिवारा क्रिक्रा

तुरानेरायुरान् इरामे : शुंक्या विन्यता नवि महा देव हु : हे : इव न है : ॼॖढ़ॱॻॖऀ*ॺ*ॱॹ॒८ॱॸ्ॻॖ८ॱऄ॒ॸ्ॱॺ॒ढ़ॖ८ॱॺऀॱॸऒ॔ॸ॔ॱख़ढ़ॺॺॱऄॗॸॱऄ॔ॸ॔ॱॺॱॺढ़ॺॱॻॖऀॱॱ नविषात्रवेषातावुरावावषावतुरावेराताववाया कु.के.र्राश्चराञ्चेत .... लव बर.वियानेवया है। खूद.रियारनयानिवासर. है। यूप. ইন্অন্ত্রিন্তা লেন্ট্রি.ম. 1540 মুখ-ছুশ-রুপ্রের্থন্থ্র न्यग्-इन्यावयावि न्द्राची जुलाविन केवायेते बद्दार्म हु । यः 1652 यूरावः त्यदे न्नः यारे निवेष में रायः शुवः छः यह यानरः देरतः । में . वें . ज. कं . तर . यक्ष्य . वे यूजा पहर . य. र मा म . कैया तर ही . यू. १७१७ वर हुन नर रुवन नैव वर् पुल हुन पर में र बक र सुर राजा रॅग्यानहराक्षे पार्रयाचे इवयाचे न वया है राम्युन्। ने हेया मेरा न्य्या त्यत् न वृद्धाः क्ष्यत् । बेर्या महेषा ता मेरा न्य्या क्ष्या वि प मुर् द्श् द्रायान्यान्त्रा स्था क्षेत्र स्था निवास हिना प्रेमा प्राप्त निवास हिना प्राप्त स्था न्देयायं त्यम् सराम् द्वेनया निष्ट्रा वन् तन् क्रास्ट्रास् चर् ग्रेया श्वरः थरः कु व्या में रासरा र्यम् र्यवा र्यवा रास्या प्रया से रा इर् शे.र्मा वर्.की.याक श्रमकेर्कित्व वनावया शे.स्ना अमार्य रमा म्बेर-५५ वर्गम्य बेर्-महर-मदे व बुब के कु क्या की रेग बेर-५८ भेषाः क्षायः वृद्धः दिन्यः श्रुंयः है। द्वी त्रावाद्धः स्वायः देवः हिंद्यान्ता बेराग्रेयाचेयायये द्ये नेपाय्यायय प्राचन

ळ्ट्राच्याः स्टाइत् चेत्र्र्याः स्ट्राच्याः स्ट्राच्

म्रिया श्री स्वेया की अर्म स्वाप्त श्री स्वया श्री स्वया श्री स्वया श्री स्वेया की स्वया की

महिरात्वा कुर्याक्षेत्रः हुना यक्क त्रान्त्वरः स्वान्त्वरः स्वान्तः स्वान्त्वरः स्वान्त्वरः स्वान्तः स्वान्त्वरः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वानः स

製紅.埼文.白蕉山.蓟

महाश्रास्ता व्यन् स्वार्थ व्याः श्री क्रियः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

क्षेत्र.चर्यात् क्ष्याचे प्रः क्षी विषयः क्षेत्र.चर्यात् विषयः च्यात् व्याचे प्रः क्ष्याः च्याः विषयः च्याः विषयः क्ष्यः विषयः विषयः क्ष्यः विषयः विषयः

 द्राविष्यः स्राच्या अद्युवः सम्या अत्राच्या व्युवः सुरा स्राच्या अद्युवः स्राचः स्राचः

तुषादेरः द्विषः मृत्रः मीराष्ट्रयः मिराष्ट्ररः मीराष्ट्रयः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वर व्याविष्यः स्वरः व्यवस्य स्वरः स क्षट्यः भ्रेन् न्त्रः भ्रेन्तः भ्रेन

द्वःक्वः महावाद्यः कुः मदः कुः म्याः द्वः देः देवे ले कुः स्व इयकः द्वः महावाद्यः कुः मदः कुः स्वादेवः कुः स्व मने 'तहम्मल'न्दा वर् ५ क्ष्मा श्रीन महम्मलम्मल मार् हैन **गृतुरः**यःष्ठ**रः**यरःक्रेव यः यद्रायरःकः व्वतान्तुरः द्वानु व्वतान्त्रा वयाकिरयाधीया परिति देव लवा पवि पदि लेव देव द्वारा वा के वाया देव **8ु:बर:**न्यन्'वे'वे'न्नॅर'च या बन्। वि'र्न्न'न्यॅन'रेन्य'वे'वे'वे मु द्वा वी शे तेर ल दिर दर्मिय दिया भी में र दि न विका न्यमाने त्र केर्या तरे प्वेत ह ग्या तहें मा श्रेन्या में न् है । स्रे व्र लूर. १८८. । श्रु. चेशुया के त्यारण स्यार क्षेत्र तमेन मेर्न स्था শ্রুদের্বাস্ত্রের বার্মার প্রাপ্তর ক্রান্ত্র বার্মার করে বার্মার বার্ম र्मरम्बन्यति केर्याधेन ने त्यु देव क्रायान हैं न्या वर्षा द्वा न्यंतः रेग्या वे तह्या या न्ता क्षा कं ना सवा है। क्षा श्री स्वा स्वी न्यम् वैरवे १ दहेन १ या अन्। वेरवे र ता वेदा परे परा परिवाधी में विवा कग्रामा व र्रेन छेन शे तह्या धर प्राय

मृतः क्वः प्रति स्ता व्याः प्रति व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः प्रति व्याः व्यः व्याः व्य

ইবান্ত্র মন্ব্র নির্দিশ্ব ইংক্রের নির্দিশ্ব ইংক্রের নির্দিশ্ব ইংক্রের নির্দিশ্ব ইংক্রের নির্দিশ্ব ইংক্রের নির্দিশ্ব হর্ম নির

र्व क्षत्र हुण सर् र् छेषः है रहा छुषः प्रतान्य स्ति छ्या प्रता हुष्य स्ति । जुष्य स्ति । जुष्य

म्बंदिः स्थान्यं त्यां स्थान्यः क्षेट्यः स्थान्यः विष्यः १८०४ म्याः स्थान्यः स्थाः स्थाः

र्व. क्व. प्या प्रा प्रा प्रा प्रा प्रा विष्य क्ष. य. प्रा विषय क

र्नेष्ठ-कष्-प्रम् क्षेत्र-विष्ठ-प्रम् विष्ठ-प्रम् क्षेत्र-विष्ठ-प्रम् क्षेत्र-विष्ठ-प्रम् क्षेत्र-विष्ठ-प्रम् विष्ठ-प्रम् विष्ठ-प्रम्य-प्रम् विष्ठ-प्रम् विष्ठ-प्रम्य-प्रम् विष्ठ-प्रम्य-प्रम् विष्ठ-प्रम्य-प्रम्

क्ष्यानश्चा स्ट.पुट.क्ष्याः च्याः स्ट.पुट.क्ष्याः च्याः स्ट.पुट.क्ष्याः च्याः स्ट.पुट.क्ष्याः च्याः स्ट.पुट.क्ष्याः च्याः स्ट.पुट.क्ष्याः स्ट.क्ष्याः स्ट.पुट.क्ष्याः स्ट.पुट.क्ष्यः स्ट.पुट.क्ष्यः स्ट.पुट.क्ष्यः स्ट.पुट.क्ष्यः स्ट.पुट.क्ष्यः स्ट.पुट.क्ष्यः स्ट.क्ष्यः स्ट.क्षयः स्ट.कष्यः स्

म्यान्य क्ष्री स्वर्षात्र स्वर्ष्ण म्यान्य स्वर्ष्ण म्यान्य स्वर्ष्ण स्वर्ष्ण स्वर्ष्ण स्वर्ष्ण स्वर्ष्ण स्वर् स्वर्ष्ण स्वर्ष्ण स्वर्ष्ण स्वर्षण स्वर म्राचिता विकास क्षेत्र स्वास्त्र स्

इन्।सं निहर नवा विद्राति श्रीया करिया भिना तकर निद्राति हना बळवः र्र्ञ्च र-वा बु वा परा देवा न् द्वी "ह्ववा वा कि दवा धेवा न् देवा हा तहेवा """ अन्य विदाह न्याया दर्भे द् वी क्रिया के या या मादा या या स्वर क्रिया थेया ..... न्रेलाकु'त्रेमाञ्चनकादेवान्धे छ्वाधिकाधेराह्याय सामावकायानम्न **क्षृत्रतः नृष्ठेवः गृतुरः श्लुः ह्या अन् वि व्याक्ष्यः मृत्यः मृत्यः मृत्यः श्लुः श्लुः स्वरः व्याक्षयः श्लुः स्वरः য়ৢ৾৾ঀ৾৾৾য়ৢঀ৾৾য়ৢ৾৽৴**ঀ৾ঀ৾৽৻ঀ৾য়ৢ৾ৼ৾৽ৼ৾৾৽৻৽৻য়ঢ়৽ঢ়ঢ়৽ঢ়য়৾৽৽৽৽৽ **নর্গা**দ্মানার ব্যালিক বিশ্বীকার্টার প্রার্থ বিশ্বীকার্টার প্রার্থ বিশ্বীকার্টার বিশ্বীকার্টার বিশ্বীকার বিশ্বীকার वि.ब.र्थेट. बुयातपुर्या सूचा प्रमान सूचा ग्रीटा श्रंथ तपुर कुट्या सूच सूर बारेरः ग्रुटः र्इटः श्रेरः ग्लुटः गैः यहुवः श्रेवः रगें र श्रद्यवा स्वरः रहें वा खु'बेद ह न्या नर्गे न बेद स्वय केदय थेन रेट र न्वे व वर् न्यर पार শ্বদেশের ইন্ নব্দ বর বিষ্কার ব্দ্রা ক্রিক্র বিষ্কার বিশ্বদ্রা করি বি <u>ৼঀৢঀ৾ৼঢ়ঽঀ৾৽য়ৢ৸ৼৼ৻ঀঀ৸৻৸য়ৼৼ৻ৼৢ৾৽য়য়৻য়৸য়ৼ৸৾৸ৼয়৻৽৽</u> वयाम ज्ञाम मुद्दान दे पदा ह नाया विद्या यह व देवा ग्रीटा क नाया स्त्र

10. 近人、光、山水水、砂、沙人、八里水、砂、沙人、白山水、山水、

क्ष्याः क्टाष्ट्रियाः ग्रीः हैं - द्रश्यायः स्वायः न्टाः क्ष्यः देवाः स्वायः क्ष्यः स्वायः क्ष्यः स्वयः स्व

मह्न मः विचः शुक्र-देरः मवरः हेः चं न् ः ग्रुः श्रुः स्वायः न् देयः द्वेषः में रः श्रेयः न्द्रिंद्रम्यान्द्रिंद्रम्यान्ते । इत्राच्या वरःग्रॅलःचः तर्मयः पतिवा पष्ट्राव शेः त्रीम यारे मायला यरः बहिता देरःमहेद्रच्नुः कराश्चिरः दर्म द्रमा द्रमा देवा न्रवा द्रवा **२ द**्रा र्श्वायाः व्याप्त स्वाप्त विवा त्यवा त्येव महत्र मा दि हिना विष्य हिना (1914) विषय स्था स्था র্মাজ্র নাম রাদার্থাপ্র ইদেরার্মিনের মৃদ্দ্রনান্ত্রান্ত্রা বুদ্রের रक्केर्-२, इन्हरके द्वापा न्वया क्षर मुद्देग या है किरामी न्वया न्यें वा क्रेट.त.ल.थी.श.इ.त.च्या.चे.स्ट.ची.टेच त्रुप्ताचियाञ्चल.बी.टेचचा.झ्ट... र्षत सर गड्डेन पाल. २. शिंद र ने तृष्ट स्ट में दि हिंदा हिंदा र स्वी. **घॅ** : न स्रृष-घ-क्तुय-बळं व : बया छु : ठु : शुदि : शुवाया छु : न् स्रवा : स्रूनः मुठेग ता न होता हिते । स्या के न स्या के न स्या के न पक्याम्बा.य्.यूराञ्चराच्चेराचेरायुग्यक्वा हे.र्थवा.क्ष्यायच्यायच्चराच्छेर.... गुैलान्यम् हेन् म्ह दिमा न्मे यह द है न लेन् बेन् महिमल दिन न्दः तज्ञेल में न् न्यम केना वे चं अपतह मारा कुरे तकर तमें न मान मा ने दे ही? र्मण्डी निव्राया वरे है नि क्षेत्र दें रामु र्निर कुला ता नक्षे निव्या गा 口景四 ने हिलान्यमा क्षराम् रार केर इस्तरामा से दे में देश से कं कर मञ्जीमाया भेरा। र्यमा र्राप्रा र्यम श्ची प्राया श्विरया श्वी सः तहीं माया श्वीमा 

द्या. सूची. न्या. सूची. प्रस्ता प्रस्ता प्रस्ता प्रस्ता सूची. प्रस्ता प्रस्त प्रस्ता प्रस्त प्रस्ता प्रस्ता प्रस्ता प्रस्ता प्रस्त प्रस्ता प्रस्त प्रस्त प्रस्त प्रस्ता प्रस्ता प्रस्

श्चिम् विष्यः विष्यः श्वानः विष्यः भ्वानः विष्यः भवानः विष्यः विष्यः भवानः विष्यः विषयः विषय

याख्य मुन्तु द्वा वायान्त व्याम्या वाम्या वाया न्या न्या नक्षाञ्चनः ब्रुंदः चेत्रायरः वृहंदः वृद्यः नः नृद्यः देवे वि वि वेदः देवे वहेंत् चेन् यं देता या सुरा भन् में हे के कुला न में मान न मान होता र्द्र "बहारिया की सु कु निविदे वदा द्राया का का कि कि वा वा वर निवा र्वण्यात्राष्ट्रित्राचार्टा रवणाञ्चरात्रतात्वाचारव्याञ्चरा कर.भ्यानर द्यामानु श्चर गुराद द्वयायान देना म द्वापाय । देवा য়ৢয়৽য়ৢৢৼ৽য়৽ঢ়য়ৢয়৽ঀয়৽য়য়৽য়য়৽৻য়য়য়ঢ়৽য়য়ৢৼ৽য়ৼ৽য়ৢয়৸ ब्रॅब्ग्स्यष्ठेव्रत्म गुव्यम्मरागैवाक्षावराग्रम्स्वाववराम्बराम् मृहेर्।य'दर्नेव'पदे यारादर्मे पडरायावा वर्षामृहेर्।यादर्नेव स्वायारा सम वयाञ्चयायाळेवार्यातेवार्येवारायाळी अद्गार्थायाया क्रीतायते हे न्या য়ড়ঀ৾৾৾৴ৼ৽ৢঀয়৽য়৾ঢ়৴৻ৼ৾ঀ৾৽য়ঀ৻য়য়৽য়৸৴ৼ৾৽ৠ৻য়য়৸৻য়ৢঀয়৽৽৽ केंचयात्वयात्रक्षायात्रापहूर्वामात्र्यम् विद्याप्तात्र्यात्रम्या न्यर सुर पहुन् कु अळे दे पग्र न्यं रुष प्रदे न नि ने न जी का ग्रम हिरा मृद्यापनात्मात्म कु नहराक्षे महिराह्म तक्ष्य विषान्ति नि नि नि नि चनातः स्वः चः कृतः राज्ञवरा विवा वर्षा विवे त्रेतः ईति द्वे छत्। त्रः वेव श्वः 

स्यान्त्र न्नु स्यान्त्र न्यु स्यान्त्र स्यान्त्य स्यान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्य स्यान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्य

याच्याक्कः स्वरः श्वरः स्वरः त्रावरः स्वरः श्वरः श्वर

육리·리조· 리드· 1913 보스·윤·괴도·철조· "보스·철도리·청조· 왕·전도리·대… ञ्चरानी जिरादेरानेरा संदेश्रिरा में निर्मा में ना स्वार्थ से ना स्वार्थ यदे देव सव "स्पर द वया महार ही यारे सुर मेर बेर हिर स्य द्धरः क्षे क्षेत्रः भवः वी वव नदे क्षेत्रः नदे नवा विवान नदः सुनः चे दः परः म्बर्भ्यः क्रियः यह वा श्वरा ग्राम्यः प्रमाना दर्भेना व्याप्यः वे क्रिमा हिरा है र्ग-न्ने स्र-स्निश्याप्त बर्-र् श्रु-हिला मु हिन-रू-र्ने ने र-सः म्बेग्र परे प्रिय वंग्राम्बेश्यार नेयाद्या व्या तहेत् पर्मा निवन तह नवा शुः ह्वन् प्रया निवृद् । तरा विवेश निवा निवा विवा विवा म्यायानः स्रान् क्रिन् वाक्ष्रान् वेत् वेत् क्रियाण्याः वेत् म्यायाः र्चें व के। क्षेत्र याच्या चठल क्षेत्र च ग्या पर्देशका क्षेत्र या ने न्या क्ष्र विदः म. वेश्वया. श्रीट. रट. पर्चर इ.प. लूर. त. क्ष्य. य. वुट. व्यय. ह्या. तथा ह्या. इरः क्रे क्रे रः सम्बन्धः स्ट्रिन्यः स्ट विन स्ट क्रे सः क्रे सः विन सः स्टरः स ब्रिंग ब्रॅब्र क्रेन् : इताये : प्रेन् : वेन् : चर-त्र-त्र्रान्त्र-त्र-श्चुन् क्रम्-च-न्द्रा ने न्द्रेत्र-प्रिय यथ-धर-द-न्त्र यः ब्रुं मेंबेट.पंतर्था मेंब्रुं श्राच्ना में थे.पंतर्या में था प्रत्या में या प्रत् <del>ऄ</del>ॖऀऀ॔ॱॱॕॱॱॸॱॱॱॱॱॻॸॖढ़ॱय़ॾॻ॑ॴॱॶॴय़ॶॖॖॖॖॹॱॻढ़ॸॱॸॱॸ॓ॱढ़ऀॱऒॗॸॴॱॸ॓ढ़ऀॱऄॗॱ**ॱॱ इ. चंया पार्य व्याप्त व्याप्त** ग्र-न्ने श्रेमयारेयाच्या विना हुराय ना

देब-प्रमा है रोप रंबर प्रायश हार पर हैं पर देव ग्रीय है गर हैं गया । मद्गर्याने वि नवर व नर नहेव न विर हिर श्वा वर्ष कर ल न श्वा म मलना नबर है। दर्मन सर धल घर नी मल देव न शुर हिर है ढ़ॖॱॿॖऀॸॱॻॖऀॴॹॖॱॺऻॸॱॴॱॺ॓॔ॸॴॱॾॣॸॱ<del>ॻ</del>ॴॺॴॿऻढ़ॱॴढ़ॖॱॸॸॱढ़ॿॱ**ढ़**ॴॱॱॱॱ पर्यंत ग्री.लूर. १८८। भी. चंर. ग्री. अ. झ. १०४. कु. विच. कू था वि अधिया है था. **ढ़ॆॱ**ॸख़ॱॺॕॸॱॺॾॕॺॱॺॸॱय़ॖॸॱॻॖॺॱॺॿॸॱॻॕॗॸॱॺॖॖॺॱॺऻड़ॕॸॱॺऀॱॲॸ्ॱय़ॸॱॸड़ॆॺ हु त्यरे ज्ञा या बक्रम वया करा करा त्या छ । मावम ने दे नम्य यदर हुम्या दिर केदःसःमलेषाग्रीः व्यद्गस्य देश 📑 🛊 🕏 🔻 स्थाधनः वरः १९३१ वर्षः स्थापनः म्रा इ.म.मर्श्वाचुनामरी हेरा महीया हेरा लाखे रे.मीर शेरे ही थे. न्या मिनीरायास्यासीयामस्यार्मेता "तर्गम मन्याययास्य ष्ट्रित्राम्याः इत्राम्याः मृत्राम्याः श्रीत् नृतः। श्रीः श्रीतः श्रीः मन् समयः त्रियाः मुत्राः केन् । व्यान्याः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः चश्चर.क्र्या.त.र्.केर.लर.। कं.ल्रु.चल.पंचच. क्रथा.के.्यंर.या. लयः विचा चिश्वास्य स्ट्रा हिन स्ट्री स्ट्री स्ट्री स्ट्रा नयः मृद्रान्यतः मृद्रम् ने म् जा अ दे मा व्यानयः हे दे हे र कंपः ल्टः श्रेचयः ब्रान् वायाः गाः व्यवः द्वयाः दयः कटः देवः श्वरः दे नयः दे ः श्वः वि नगाना नीता हीर श्लें ना मार्थ हैं हिंदा ता ना में द मी व ना दिया दिवा पर त्रीयः १ द्वा च्या हे नयः ५ द्द्रा हे त्द्रीतः ह्वा स्या महितः

हानी स्वार में का श्री प्रकार में त्या स्वार में त्या स्वार में त्या स्वार में का श्री प्रकार में त्या स्वार स्वार में त्या स्वार स

① (র্ম - ট্র-ম - দুর্ব - ম্ব্র ব - ম্ব্র - ম্বর - ম্ব

म्बि ह्या स्ट्रा हिन्द्र है स्वर्थ स्वाय विद्या है है दे क्षेत्र स्वर्थ है स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्व

मेह्न त्वेचलान्तान्तान्ति व्यान्ति वयान्ति व्यान्ति व्यानि व्यान्ति वयान्ति व्यान्ति व्यानि व्यान्ति व्यान्य व्यान्य व्यान्य व्यान्ति व्य

म्द्रित्वं ब्रायः के प्राविमः धिव य र्द्रः त्रायः त्रायः दे त्यः द्वरः वे स्वर रनयः इवयः ग्रीयः यः न्य ज्ञुनः यह ययः ग्रीयः उदः कवः यदं खुदः वेयः ..... वर्त्। द्र-न्द्रतालयास्यान्त्रात्रक्षरावर्ष्यात्रक्षरावर्ष्यः हेतान्त्ररः वया बरवा की यन् वया वि वर्गरा भरा ही भरा है नकुरा वि वर यक्षः रेग्रयावि प्रा दे हेरा प्राया श्री वि स्वे क्षेरा **व्या ग्राया** क्षेत्र:ब्री श्रदःमञ्जवःक्षेत्र:ब्रें :ब्रंगवः ५५० वरः ५८। ५:५८: न्त्रेर त्या यद पर पर दे परा चुरा ये दे हेरा 1912 य प्रविद प्र विद इर्.ग्रु.भ्वा.ल्र.इवा.वा.रिवा.पवा.सं.र्टा धव पश्ची धवायह. ह्म तया है। सु स्था तया सु प दु प द वा में वा त्या सु प दू प वा स्था प दे प वा सु प दे प वा से प वा से प वा से वियासाने नियानि स्तराधित साहरा या श्रुम रोता है निक्य ळ्ळा.चंड्रचे.च.लुव स.र्टा ज्र.रचयाश्चराः द्वे लया.चया.व्या.पंचा ॡॱॸढ़ॖढ़ऀॱढ़ॕॺॱख़॔ॸॱॿॖॺऻॹॱय़ॸॱॾॕॿॱॻॎॱॾॿॱॾॕॺऻ ॺॸॱॸॿॖॸॱय़ॱॸ॔ॸॱ। ॸ<u>ऀॱ</u> **회석. 보온 4 최도. 독. 보도. | 최도. 요용 | 최도. 용. 원. 육. 동. 동 | 최도. 中華. 급회.** नानक्यानी म्बाल्य स्वराहित है । यह शिका मही मही वारा भी महितारा मदे हेरा शु ने या पविताम हें वाया यह । निया श्रम मित हिरी है र **बॅं-५८:**। श्रदःगश्चयःक्षॅतःक्षे। श्रदःगङ्कदेःक्षॅतःक्षं। श्रदःन्नेतःसः ५८:१ ब्रम्स्य व्यवस्य विष्या व्यम् । त्यम् । त्यम् । व्यम् ।

खर्मवः नवरः तुः नर्द्धनवः भैरः। नेवः मेर् रः वानववः श्रेरः नृतुरः न्रः। रम्बे अ. कं निन र नर तनायान श्री नवा क्र के तार या नर हैं। के न मर हैं। म् के के व में अरत विषय प्राप्त भेषा क्षेत्र में न्राप्त में प्राप्त में के व रेते.बु वळव ग्रॅं मं वे केव बुल रमय ग्रे र्यावय पहल मक क्रिया की अरत मिर्या न में या के मिया निरा के ने राम संयोध की या या *बि८:न्८:*५इंगः बे.ब८:इ.नर्न्न:चत्रु८:च्रुष:ग्रु८:५ग्रा:वेष:क्षुव:द्यर:५५: विषान्द्रावेदाच्यायादातक्षययातह्यान्य्येयाया इत्या न्द्राधिर नेविर तर्म मुक्त के देन्य तहल के रेन्य र क्रिय के प्रतार मुक्त लश्रार्श्वयाम्बर्गर्तु महत्रादियाम्बर्गरम् नेवार्षि राष्ट्रदि विष्वत्रायामा न्द्रित्रके तुन्व केव स्नाधि धि के र र व स्र म्य केव **য়ৢ৴৾য়ঀৢ৴৾য়**৵৻৸য়৵৻ৠৢ৾৾ঀ৾৾৽য়ৼ৻ঢ়৾ৼ৵৽৸ঢ়৾য়ৢয়য়য়য়ঢ়৻ঢ়ৢ৾৽৸৾ঽ৽য়৾৾৽ बते बदत विवर्षे अईदरा शु नश्चर के र नेद भूग (1914) वर । । न्विमाना देवे ही हरा तु व्यावित हरा हैं विवार देव शुवार रा विताहर सु च न क्रे म्वा मवर विमान र दें म्या हर विमान र दें न्या मक्रकेव सदर द्वा की इंदर महिषा करा या देवे वदा तु तर तु श यः वः चर् । ह्रिरः न विषाने र न विषान विषा प्र. श्वायायितानुबायान् स्थायान् स्थायान् स्थायान् । प्राचीय स्थायान (1921) सर विगः तथर प्रतायहरू ग्राय स्वर प्रताय कर है । प्रता विवास है न इर. स. ५. र वर्षा स्वीया पर्धे प्राप्त क्ष्या वि त्र श्री स. र मू या पर्पत स्व क्षेत्रयाच्याः याच्याः श्रीया बिद्याः निवाः भ्रीयाः श्रीयः स्वायः । मः है **व**ः मले **व**ः हे : श्रृषाः हु : र्षेरः मः न्रः। মহন: স্কু: ধন্। (1923) শ্রী: **ই**অ. දී. কুনথা ধিব. বঙ্গৰ. ছুথ. গু. গু. গু. গু. বছ্ৰ হু. নেহ ক. গুৰু. শুন. বল. থিল. දී. গুৰু জ্ব. বঙ্গৰ. ছুখ. গু. গু. গু. গুৰুৰ **গু**. নেছ ক. গুৰু. শুন. বল. থিল. දී. গুৰুণ. শুৰুৰ ক্ৰি. গুৰুৰ গু. গুৰুৰ গু. নেছ কৰা গুৰুৰ গু

तुषानेरावर्षायाववारीरामलुदार्दा नेवाबद्याम्बद्यार्म् **के.**प्रवी.रस.श्रेप्र.स.श्र्वायार् घरराययराय बायाया हा बरारी. श्रेयायार्था **क्ष्माधरः तुः**श्चेन ह्यंद्रः मञ्जूरः तुः रुर्जुम्बाग्न दरः सः ने सामग्रादः समा वीः । । । न्मराक्रक्रातु श्रेव ह्रम्यातृ त्यते त्राया सक्रेंगान्मा मन्मत त्र्रें व र्यर ग्री तर्रेया पत्र ते व रवे व हे स्या हु सर विरा स्य पर रेर वर् श्चर वितार देर रवा रट ने विता की रवा शेरे रवर ने टाक **बर्**ष्ट्रियर्गः र्थम्यः र्थम्यः वर्षेत्रः वर्षः वर्षः वरः विष्य क्रीः व्यास्त्रः है हिन् पह्रमान् कराके प्रति मन्त्र मान्य प्रति मन्त्र प्रति मन्त्र प्रति मन्त्र प्रति मन्त्र प्रति मन्त्र प्रति मन्त्र **বিষা বাধান**েনর স্থ্রীবা নের্ছ বাধা নর্ভবাধা রি ছে নের স্থান্ত নার প্রান্ত নার্ছ নার স্থান্ত নার্ছ নার স্থান্ত নার্ছ নার इति.स्रेग्-न्द्रितः द्वेयः नश्ययः भेटः। श्रेगः नहिन्यः नेते नदः **ঀঀৢ**য়৾ঀৢ৾৾৾ঀৢয়৾ঀৢ৾৽ঀয়ৼ৾ঀঀ৾৽য়ৢ৾৽ঀয়৾য়য়য়ঀয়৻ঀঀৢ৽য়য়ৢৼয়৽ঢ়৽য়৽য়ঀয়৻য়ৢঀ৽ नुदुर्ने श्रेर् द्रद्रद्र्य वनका श्रूर देव न्याया श्रूर संवर्द श्चेतान्यानरुदादहेनामा संग्रागुरा हुन्ता विग्राहित्रा के में न्यान नै-२वन-२यंद-२नव-स्-ध्रुय-धराङ्ग्रन्-तु-जुल-व-द्युद-वङ्ग्द-जुःवङ्ग्देः-

ৡ৾ৼৢ*ৼৼৢৢৢৢৢ৽*ঢ়ৡৣ৾৾৾৴৾৾৾৴৾৾৽৺ৼৼ৾৾য়৾ঀয়৽য়য়৽ৼয়৽ৼয়৾য়৽য়ৢ৾য়৽য়ৢ৾ঢ়৽য়য়৽য়ৢয়৽ৼ৽৽৽৽ इस्रवादियान्यवास्त्रवाद्यान्त्रवाद्याः हेत्ववाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्या द्रमाबितः क्षां द्रमा निवार प्राप्त प्राप्त प्राप्त विष्य में प्राप्त है दे में मावहार प्रमा न्यमा न्यमा न्यमा न्यमा न्यमा अप्राचन स्था के न्यमा न्यमा अप्राचन स्था के न्यमा न्यमा स्था के न्यम स्था के न्यमा स्था के न्यमा स्था के न्यमा स्था के न्यमा स्था के न्यम स्था स्था के न्यम स्था स त्यते न्त्राया सुना न इत कु न अहे ते भु कं न्वा या में हु वा सर में न न वा नी ।। रवना है। नक्षे नवना नक्ष्या देव ग्रम् ने नवा में व ग्री तह्रवा बदावा प्राप्ता क्रिन् त्या वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे देव प्रम्या क्रिक्त वर्षे वर्षे देव वर्षे वर्षे देव व **इ**ब्न-८्राची-८्रम् का.स्वाची-४५८ व्याची-४५८ व्याची-४५ ड्र<del>य. ८ द्रव. तर. तर. य. वर्</del>या. ड्रीत. पष्ट्रव. पर्से. पथ्या. पङ्गण। ड्रीय. मुद्रानस्थ्रयापदे पूर्वे तारी ना सामु दिरान दुः ग्रीयापदे स्या धरा वरः । "ষ্ট্র·ম· 1925 মন: ব্রানবাস্থানবাদু নের ব্রান্তর বার্ নালু বান স্থান বিদ্যালয় নাল বিদ্যালয় বি য়ৢ*য়*৽ৼ৾য়ৢয়৽ঢ়য়৽৽ঢ়য়৽ৼয়৾য়৽য়৽ড়ৢ৾য়৽য়৾য়৽য়ঢ়৽ৼঢ়ৢ৽ঢ়ঢ়ৼ৽৾ৡ৽৽৽ गुर्न्स् व्यवास्त्रेत्। व्यव्यक्तित्विर्वात्यम् वर्ष्याः वर्ष्यम् वर्षाः न्यम् श्वेराम् मान्यम् अराभेरा एर भरावे न्धेव हरा रे में या छेन् बावव धेव ध न स्यावयय देन घ ने न स्केट में वया ध के र पर ने ङ्दे चॅन्-न्यमानी-न्यमाधु कं-रॅ**न्डे मॅन्यमन**-पराम्युयानु-न्धे**नः** हर-न्नवः वेदः स्र-यः वेगः रेर्। अनवः रेरः विदः गेः न्यदः कः यदः केः यः विरामायात्रम् सुरवसुर्गाम्ययान्ययः उत्पन्राविरा য়৾<del>৴</del>৽য়ৢ৻৽ৼ৴৽৻৻ঀ৾ঀয়৽৸য়৾৽৻ঢ়ৢ৾য়৽৸য়৾৸য়৾য়য়য়য়য়৸৸ৼৢ৾ঀ৾৽ঢ়ৢয়৽৸৽৽৽ रेन् "केश्वामाँ न्यायविद्या मुलान्यर सुनायह्रदामु अळे के देन

न्द्रतः व्याप्तरः वी अवा सुवा वा न्या वे वा के पान्ता विन् के नि नि मुःर्मकः तम्रुरः र्मः देवः द्वाः द्वाः द्वाः द्वाः व्याः द्वाः व्याः द्वाः वर् बुर रु विर शेष गहें र विर र्वे रक्ष य कु के वर् हिनक र हिन .... ह्य.७.२न.नहेय.गु. वनयायानहेत्र.वयान्य श्रुते श्रुरान हे स्र मन्बलःगुद्र-सिं-ळेंदेःन्बेन्वराधुवान्द्र-यान्ते न्वलवायं राबहित्यायाः वर्। मु.सर्-क्ष-देवाल र्टर-मु.सुद-च्रिः तड्रोल मः गृहेरः चमः मुंग्रेरः युर-न्इर-ब्रेन्-नृतुर-न्र-क्र-क्र-न्वर-ब्र-न्त्र-য়ৢ৽য়ঀৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢ৽৻য়য়৽য়য়ৢয়য়য়ৢৢৢয়ৢৢৢৢৢৢ৽৻৸ঢ়৽ৼঢ়ৢৢ৽৻য়ৢৢৢৢৢৢৢ৽৻৸ঢ়৽৻য়য়৽য়য়ঢ়য়ৼ৽ঢ়ৢয়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ় <del>ঀ৽ঽৼ৽৴ৡ৽ৡ৽য়ৢৼ৽ৡ৽৴৽৽</del>৻৽৽ৼ৾৾৾৾৽ৼ৾৾য়ৢ৽ঌ৽য়য়য়ৢৼ৽ঀ৽য়ঢ়৾ড়৽ৼ৾৽৴য়ৢ৾৾৾৾৾৾৽৽ ठॅग्-*पचुर-र*्वराह्मश्र-वृत्राव्य केटा <sub>र</sub>ु-नृत्तेट ग्वर-श्रह्म देने ने बेद *ॸॸॱग़ॗॸॱॱॹॖॸॱॹॖॸॱॸॿॖॸॱॺॱॻॹ॓ॱॸग़ॗॸख़ॎ*ॱॸढ़॓ॱॾख़य़ॱॸ*ॹज़*ॱय़ॱख़ॱॱॱॱॱ त्रु त्यते न्नु वा रहा के द्राया न्नु वा है । वर्ष ब्रामु वा रहा शुक्र वा प्र बानुबान्द्रोताचीताबेतानुष्यायान्द्रोप्त्रान्द्रेताचेत्रायीत्रान्त्रेतान्त्रान्त्रा वर्षात्रेन् सम्बन्धन् स्तर्भातः स्तर्भात्रः स्तरः स्तर्भात्रः स्तर्यः स्तरः स्तर्भात्रः स्तर्यः स्तर्भात्रः स्तर्भात्रः स्तर्यः स्तर्भात्रः स्तर्भात्र के<sup>-</sup>वॅर्-प्य हेर-प्या म**वर** कुर-र्मवःच्यु न्द- यक्षे-च**गु**र-वु-मी-धेवः…. वेयान्युर्या रे.ह्याञ्चन्याहः (1930) व्यन्त्रेत् व्यवः केवः ग्रीयः गवरानम्रेर.रे.स्रान्प्रं क्याच्याने साववारान्मेवास्यान् स्वा **「下水のれる」だと、それに多、過七、一日と、刻し、山日と、イモ、だし、かい山のかい**  सन महर नेर्रम् विद्राप्त स्थान स्था

"त्रःस्। स्त्रःश्वरःत्वरःष्ट्

म्हेशम। गुर-र्इर-वैश्वर्त् त्यर्ग्यः व्या

महन्तियाचेन्-नम्यायय।

मही मा हू 'यदे न्दामह केव क्या महिता गुरा में में भेव हर. वदा हमारा स्था

स्या द्रायते न्द्रायह के वा ची क्ष्या च च क्ष्या च च क्ष्या च च क्ष्या च च

নই দেশ্বা

त्रुण्म। मृन्केद्गः द्रानु द्राय्याः व्रायदे अर्केणः द्रायः । मह्यानाम् म्रायदे अर्केणः द्रायः ।

मतुन्या सन् स्न स्न त्रेयामाचेन मने मिरिकेन तु स्यो हा या न्यानन केन तु ने न्या स्न स्न प्रायमा सम्या

यमुन्य। वन् मुग्य वक्षः ग्रुटः न्युटः त्यः न् ः नृटः विष्यः स्नुटः विषयः स्नुटः विष्यः स्नुटः स्नुटः स्नुटः स्नुवः स्नुवः स्नुवः स्नुटः स्नुवः स्नुव

म्द्रम्ययान्त्रीः द्वाक्ष्याः प्रकृतः । स्वाप्त्राः विद्यान्याः विद्यान्यः । विद्य

11. ஜ'ゐ෬'語'恕'恐'현<'다ड'可吸恕'다'證국'다'「ज़ॎज़ज़ॎ' 팔ज़ज़'ज़'ज़ज़' ज़ज़'ज़ज़'ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ज़ ॼज़ज़ढ़'ॲॣज़

म्द्रार्ष रेरः स्त्रारा न्द्रारा मृत्राय राम्या द्वीं दा के । एमा मी प्रमी वा दा द्वा यः स्ट्रा श्री सः महत्र मिल्या स्वार्थियः यहे मका न्दः विषयः देशः मृहः अहः । নগ্নীবথা শ্ৰীদাৰ বাৰ্ন আদা অনুষ্ঠান নাম ক্লি 10 জ্বা 30 টুবা শ্ৰী ····· ढ़ॕॻऻ॔ॴय़ॱॺॖऀॻऻॴ**ॖढ़ॱढ़ॺॴढ़ॴ**ॱॻऻॷ**ॸॱऄ॔ॴॻॸॱॴॸॱॻऻढ़ॸॱऄ**ॱॺॖऀॸॱय़ॸॱॱॱ शूराने द्वार द्वे कु छन् द्वारा ठवा ता देन श्वीर श्वार वार वे तर्मात्रेयाः विवा**द्धाः तक्षेत्रायक्षेत्रायक्षेत्रात्रेयाः तुः विवाद्यायः वर्षाः** नु चुर हरा। अवयारेर र् गुर ग्रस्य 58 या वेचया छ्रा चुयार् नरः विच.चक्षेत्र मि.सक्.रेस्ट्य.त.इंबेय्य.तपु.चेे घा.टय.टु.विच.पस्य.च्रं. ৾৾ঢ়৸ৢ৾৾৾৾ঀ৽ঀয়৾৾*ঀ৾য়*৽ঢ়ৢৢ৾ৢ৾৾য়৽য়ৢয়৽ঽৼ৾৾ৢৼৼ৾ৢঢ়ৢ৾য়৽য়৾ৼ क्रवासन्दर्भ हिन्दर्भार्द्धनायवेनका नेवाल्या विवालयात्र ति.च मिन. शु. मून न भे भे भे अवर र्ना मिन अवर मिन मिन श्राम मिन श्राम मिन श्राम मिन स्थान मिन स्थान मिन स्थान मिन स्थान क्रव य.ध्वथ.ग्री.चयाय.सर।

दे.च्याम्त्रात्म् स्याम्त्रात्म् स्याम्याम्याः स्याम्याम्याः स्याम्याः स्याम्यः स्याम्यः स्याम्यः स्याम्यः स्याम्यः स्याम्यः स्यामः स्यामः

स्यान्ता व्याप्तान्त्रीयाः व्याप्तान्ता व्याप्तान्त्रीयाः व्याप्तान्त्रीयाः व्याप्तान्त्रीयः व्यापतः व्याप्तान्त्रीयः व्यापतः व्य

ने वर्षा संनेते हा 12 है स 22 विवान ग्राय भवा ग्रीस न श्री ग्रास मया द्वाया तर् न भूरता हे . क्या र नर अद्भव वी भी वी र नर दि । वर र र मत्रःहेवःपवेरणः श्चेन्यः श्चरः ग्वायः स्रायः यहरः अहरः श्वरः प्रत्याः व्यवः वयायग्वे व : न् ग्रु म् ग्रु व । श्रु म । श्रु व । स्व प्रमार्थराश्चराश्चर्याताचाम्याद्वेषाः स्वा पराक्वेषाः विवा धिवा परावासेराः मृतुरः ६ र् . तु . तथम्यायः । दिना यदे रयः न् मृता यदे रे . यः यहे दः यः स्रा तस्यानु ग्वेरः गृतु रः ग्वरः व वेरकः रूँ : न् अः धरः च गृतः श्लें वः श्लें श्लें वः .... मन्दा बाव हुर रवाया व देवान्यव वि न्वराया वका वि.पर्वाप.धुर्वातकथा.पश्चे.येथवा.पङ्केषा.प.र्या.पद्येषा.येथ्र.यर्थेर.क्षे.... ष्टर:र्रम् करः बद्धरः वर्षरकः स्वयः वरः न्वयः यह वा न्धरः देन रः सेवाकः बर्दन्र्विन् हेर्भे बद्दान् बर्ग्ये बुवं कुन् नु जरायवान्य न्या वेरान्ति त्रका मुं नु का न के न . जु . द में . द्धं न का ने . मु ता अक्ष न . सा के का से ते . म ते र . . . . न्त्रं न्त्रं न् भेव . हु . लेग्याया भेव न्त्रया झ कु कु . ह्यं म्या ग्रीया न कु व . स दे . . . . म्रोतः मृत्रः द्वो वेगवायः पर्दे दः पर्दे द्वे दः प्रवे द्वं मृत्रः पः द्रः। दे प्रवेद हर्म् मुलर्म्स वर्षेण वीरम् क्षेत्र हिस्ताने विद्यार मार्मि लेत

तुषानेनः वन् क्षे: न्वरः वहेवः यः वृरः व्रिषः श्चेनः न्वरः वहेवः वेवः व व्रेन्'यतै'त्वन'र्हेन्'ने'रूर'न्याई'र्र-'न्र'। र्ह'र्ज ロ@ qu. 対ロu. @. 類 d. ロ uu. 要. 夫 に. 当. ロ ヨ ヒ. 丿 近. セ 孑 u. 丿 と. l न्यवः सरः नरः हे : के : मुला ने : हे राञ्चः पठरः श्वनः पष्टवः गुवः दबेयः नरुषः नेवः यः नवेदः न्वरः सुग्रवः रुः रुरः क्रेः नवः नग्रदः ह्वं द सम्बर्गः तेन: श्रु: नृद्धव: तेन्वाय: ब्रह्मः धे: ब्रे: नहता: पनः श्रुत्रः य: नृहः। 교영역·후·丈仁·필·ㅂ크仁·신희·덕년대·년仁· 연仁·석노·美·통·奧·미 सदीत्रवनः स्ट्रायविष्यम् वार्यायेन् सार्वे वार्यायेन् स्थान्येवः न्वम् न्वम् श्चे चेन् स्रवस्मं बहेन् बर्ग्यः वैः कंर्यन् वाम्यान्यः न सन्दर्भवातम् वेद-पकुन्द्राळ स्टानगृदः ह्वन्गु न्नन्क स्वराः । र्वेरयानहरूतार्टः। "रे.ह्याञ्चर्नाययागुरादवेयायम्यार्टःस्ट चन्त्रचेत्रातियाकः मध्यात्रवास्याधियात्राचित्रवास्य बाह्यरानयः मञ्जद्भार्यक्रिया केत् हुत् वृत्या स्वात् विष्या स्वात् विष्या ।

**षद् प्रमुज द्वेर व सुर १ २ . १ या क न हें र शु र १ न व र १ या न १ या न** য়:२·पঀ৾ঀ৾ঀঀ৾ঀয়ড়৾য়৻ঽয়৻ঽৼ৻ৼয়৻ড়৽য়ঢ়ৼ৻ৼয়য়য়য়ৼ৻ৼয়ড়য়৽৽৽৽ रु तह्रस्याते देव सीट द्याये स्थाये था रेट विषया है , विषय है , क्रिं **क्री-ल्य-प्रम्य-क्रम्य-क्ष्म्यया मिल्ट-र्म्म-ययः मान्य-र्म्** त्रिरः अ: च्रुतः भृ: नुते: नृष्ट्यः द्वेष्णः च्रुटः हे : नृ अणः ह्वेते ययः द्विरः ः । **ब्रैरः तमेवः न्रः के रान्यवः रहः तह ग्राराधः तह ग्रायः ग्रवहः "® वेदाः** मयताना केर लिट नर नेट मुब्द दिया तमाया मुख्य न नर तमायान हैं" <u> ६८.७५.७ म्या १६.५.५२.७५.५१ अघथ.८५५५५ स्ट.</u> चुर-न्ब्रेट्य-प: **ह्**ब्य्य क्षेत्रयासिट-तर-ग्रीयात्प्र्य-प्रव्यास्त्र-ख्रा-स्रेत्य-**हेर्**'द्रवार्ड्र इंब'र्ट्र। विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः विद्यायाः बुद्याञ्चर प्रयासामुद्राप्त स्थापन मतुरःगैषः अवरः विरः ग्रॅंटः वॅरः कुरुषः रतुरः यहरः। दे 'हेराः श्रुवः चयल.ग्रीचे.चन्न्यालच्या.ची.चे.च.चे.च्या.चेट.। ची.चे.च्या.चळा.च्या.ल. <u>`</u>キॕॿॹॱय़ॱख़॔ॱ॔ऄ॔॔ॱॼऺॖॴॱढ़ॖ॓ॱॿ॑॔॔ॱढ़ऒॕऄॱऒ॔॔ॱऻॹ॔॔ॸॱॷऀॴॱढ़ॖॱॻऀॱढ़ॖॱ॔ॻढ़ॸॱॻॱॱॱ श्रवाता होता व . २ . २ ८ . के. चर्षा ब्राया श्री . चे ४ . क्षेत्र श्री या खेया खेया व ८ . यथ . . . . . . . . . इंराधिरास्याधाः भेरा अराधुर पारेरा

ন্বিলান্বিলান্ত্র (1934) শ্রা দ্রুলান্তর নালার বার বিলান্তর নালার নালার

पद्ग्या भूगा पद्ग्या विकास मान्या स्त्रीत स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्र स्

ब्रुवा तहं वाया ने राष्ट्री कुरा प्रम्भवाया कुषा पर सार्वे पा परे पर स्चित पद्री दि.त.क्र्य.सेचा.धे.क्र्याया.पर्वे.चस्याधे.च्रे.रे.हेरी **झ.**चि.५४.११५.(८ बाटया.मञ्ज.७४.१५४.५४.५४) जञ.लेबया.जब.जुब. नक्र-- न्वेषःनह्न-अनवः क्रेयायः बुगयः न्यंदः नेयायः तयमः वियागीयः हः न्ध्रेवःहेदेःस्यः सुन्यः यः <u>चेतः नेतः केतः</u> सन्यः सन केना पश्च पा स्वारा सेनाया सुनाया न्यं द न्येनाया ता त्या में न त्या न्ये द स्था चन्नास्य त्राच्यात् क्रियाः क्रियाः स्वाच्याः स्वच्याः स्वाच्याः स नेते विद्याक्षे वृद्यावियातु द्याया वाया या विद्या के वाया वाया विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या मद्र-मन्त्राक्ष्यान्वयरामग्रान्त्रं निः श्रेन्या स्रुवः रोटा व्यापि ፟ቒ፟፟**፞ቜ፝፞፞፞**ዻፙ፟ፙፙፙፙጚ፞**፞ቜ፞**ፙዻቛፙፙ፞ጚቜ፝ጚጜቜ፞ጚቔኯኯቔ፞ዻ፟፟፟፟፟ኯ पहलार्चालाचाः भेषाताः श्रेषः श्रेषः श्रेषः श्रेष्यया चाषाः भवा चीषाः सरः सरः हैं। <u>इ.क्.क</u>ेत्रत्र<u>ह</u>्य.चंबर.<u>व्</u>च्य.क्या.पंचय.चंब्रेय.या.चट्ट्रेय.त.य.चरी मानर-रनर-मेंबेर-पर्वशन्रा के.चर-पद्वार-पर्वे विवासी বর্ষর প্রত্যা রূপ রাজ বর্ষ প্রত্যান ব্রত্তি প্রত্যা করে বর্ষ প্রত্যা করে বর্ম প্রত্যা করে বর্ষ প্রত্যা করে বর্ম করে বর্ষ প্রত্যা করে বর্ষ প্রত্যা করে বর্ষ প্রত্যা করে বর্ম করে বর

दे.र्व्याश्चितः पथान्यां वे.रव्याः प्रवाधाः क्षेत्रः विषः विष्यः विष्यः मुल संगवा ववा श्वर विवया विवासी वार्य वर्षा पर्दे द्वरा क्षेत्रा स्ट्रा र वर्षा वा द्र-ः भ्रेषाचेयाने । श्रेर-विश्वयाग्रे । याकः पर्या पश्चराचेया प्राप्ता स्वया द्धियाः इर्-य-वेष्युर्-वेष-नेय-नेय-नेय-क्ष्य-क्ष्य-कर्-व्य-इर्-र्यव-----त्ररकेद्रत**हर**ःके अरावस्या शु र्सुट दहन । ५ या श्रुवा:बद्दे. र्स्र देवाया द्वाया द्वाया प्रवा है द्वाया वर्ष है नया कुषा स्वाया वे विष् मुरुमः चे मिं वः विदः केव विद्याय निया स्थायः नुः विष्यः प्रायः नि विवास्यः र्वन विनामिक विर्म्पत्रमा निकामिक प्रमुद्र में मिट प्रदे के सिना ने स्टाप्टर दे-धुर-श्चन नहर-विरा श्वायन्य रन न्यत भर मेरान्य या देवा न्दर्रद्रावहोत्यानः नेदर्रु के न नहरू त्यानहेद मेर् राग्वया हीर् ..... न्द्र-मेवा वर्-द्यम् यहर हे द्वारा स्ट्र-सदे श्रुवा वर्त कर में निर मद्र. यवत. चर्चे र.वेथ. ये. लट.। श्रुं श. वर्षे त. लय. र वृषः वे. श्रुं ट. श्रुं ट. वह्रवयः भेटः श्रेषयः पश्चितः वै.प. यटः कुरः वेटः क्ष्यः पः विषाः प्रेषः श्रेषयः ः त्रवासी स्वासी म्बराचेर्पये विषायेदार्या मर्ग मर्ग म्बरा मिल्या हो मान्र ने दा इसारा दि निर्दे । रर वन नहर द्वर य कुर म रेर्।

ने व्यानि हो (1934) यदे त्रा ४ वर व्यानि व्यान र व्यान व्यान व्यान र व्यान व्यान व्यान र व्यान व्यान व्यान र व्यान व्यान

मधान नदाक्षे लेवा नदालेवा कुरासदा श्वराश्चर निवर नदान कथा म.के.थर.५इर.५राज्याकर.ब्रुजाकेर.के.के. वेब. चर्ड्चा जना निरार्टा श्र-प्रविधान्य विश्व प्रविधान विश्व विष्य विश्व में के वार्य के वि न्तः बळ्दात्त्वा कु के ब्वा दा दे हे या वा हार छेवा वा के प्राप्त र बह्र-्झ्-ळ्याया हे.व. तापु. श्च-वा ब्यूच्ना ता. इता श्चिरा महेच. के या भीवा... व्ययःविरःक्ष्मःर्म्यन् क्षेत्रः मः "लेयः प्रतः हेयः क्ष्नः क्षः मः न्रः। न्यानःग्रीते तहतः वान्यानः स्वा न्याने न्याने निर्मान विष्यः विष्यः विषयः विषयः विषयः अपूर्वारा में त्राप्त में बारा है। है ने स्वारा में रे ने में में स्वारा में रे ने में स्वारा में रे ने में स्व *য়ुद*ॱ२ৢइ८ॱऄॗॸॱक़ॗढ़ॖॸॱॸॣॸॱॸॕॸॱख़ॱक़ॗॺॹऄॗॸॱक़ॗढ़ॸॱॸॖॸॸॱढ़ऄॗख़*ॸ*ॱॱॱॱॱ त्रुकः क्रॅं स्टानु क्रॅंट्र मः क्षण्या ग्री क्रॅंन्र क्ष्र ख्रेन विमः ग्रॅंका **बेट्रा अटः** । नवरः हे वव पन् नवरः देव। गुरः द इरः नैयः वर् द स्वापतेः इ. पपु. थह् र. ब्रू बेया थे. ब्रूर. खे. श्वें वीर खंच की. विषा कुष्रया है र. खे..... रेगल ५५ वन्या भी कर्मन निरम्म हर हे थे परे पर्मा रर.मेल.रर.मेप्.स.मेल.चव.चव.रंग.रंगर.मी.म्रूर.प्रीया स्चयान स्वापाळेब इवया श्रीर निक्र मेवा तबवा प्रिय ने स्वापास्त्री ने भेव नव न में व इवया हर नविक केंद्र राष्ट्र विक हो न विद र र में ला वन नहर डिय.क्रम.त.रूर। शुर्द्भार्द्राहर् निवर्त्तरम् भी त्रम्या मुद्रायद्वर निवास देश त्रम्य । स्मा मिन्द्रम्य श्चन्त्रान्त्रवान्त्रम् वार्ष्याच्या श्रम्यान्त्रम् मुक्त्रम् 

7.00

दे 'क्य'र्नेट'ऋदें 'शुट'मैय'श्चर'अट'र्चेद'य'म्क्य'श्चेद'म्।''' न्द्रंतः नेगला के प्रमा स्थला न्द्रा राम्या ग्राह्म विषया महार ही में विद **हर**ॱग्रुट'र्इट'र्श्चर्'ग्व्र्ट'गै'यग्राय'यगे र'क्ष्र'ग्वे्र'र्श्चर'र्श्चर'र्श्चर'र्श्चर'र्श्चर'र्श्चर'र्श्चर'र्श्चर र्नेंबर्नेंबर क्षेत्र न्सुरम्हेंबर सर्। वर्तर दिन्तुर विशेषहत विह्या नक्ष्रंबः बेदः भेवः यः ददः। वदः वद्यः बेदः ववुदः विषः श्रदः द्युदः श्चितः नृत्राची प्रमादः त्या प्रस्त स्वापः महिषाः हुः तुः कुः तदे दे हेवः स्व सुन्य न्द्रा इर्र्न् हिंदे क्यावन रचर की रहिला व इर्की रहें अ देवाया:के: [यवा:स्वया:पञ्चः वालवा:चेद्र:ख्वाया:क्षेत्र:संवया:ग्री:स:देवे:स्वया: न्ययः वर्षाः बॅल होन्यदे सम्दे दे दे ना ता द वे ना ता हे कर दे दे है है ना ता हा अहे द व गुर वंदे बरद वंदर भेदर कर है । देव तु गुर द छ र शेर व तु र मैल दर्द्दि हिट केव विन हु से पश्चर मदी प्रकारेव दर्मे राय रूटा ঽ৴য়ৢ৽৴ৼ৻৸৴ড়ৢ৻য়ৢ৴৻৸য়৽ঀৢঀ৾৾৽৽য়য়<del>৻৽৴৾য়য়৾৽ঢ়৾ঀয়৽৴ৼ৽৴ঢ়ৼ৽৽৽</del> रदायर्गा चेदार्गेषाया वदासु कु गल्दा में भ्राक्ष्या द्वारी मा चकंदः क्र्निः ग्रुटः हें 'दिन दे ने शे शहरता है र ख़ 'परा द म्या के केंगा चा दॅन्द्र बाह्य स्ट्रिक देवाया यहत द्या दन्ती से वया त्या प्रता हिन्ता है """ विंदर्भ क्षुं मह्न मुक्ते द्रान्य हुन् नक्ष्याम सम्बद्धाम क्षेत्र हुन् महन् मन प्रितालका क्रियेश दे . स्वादा त्रित्य क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया

12. সূ'নার 'র'র 'র'র 'বর 'বর বার বার 'বর 'র্ব 'র্ব ' নইব'ন্র 'ব্র 'র্ব 'র্ব বার বার বার 'র্ব 'র্ব '

क्रम् तर्भः क्रम् त्रायः नवयः पटः में ज्ञायः में अञ्चन्यः नवटः व्याः स्मान्यः विद्याः स्मान्यः समान्यः समान्यः समान्यः समान्यः समान्यः विद्याः समान्यः सम

우자 취지 여기 (1935) 전 젊. 5 대자 회에 독대 각 회 다 된다 다 하지 ...... व्हबान्यत्याचे नेवान्ता म्हण्या हेन्न विश्वेत अष्व दुरारगा नैया श्रीराया अष्ठि वा र या र र र र स्थ्रुव र या **यः बुदः नङ्गदः गुदः ब**द्धिदः र्थे गलः श्लुः दिदः र्दः २ठकः यः कुलः बेः हें ग ····ः **జৼ**৽ৼড়৾৾৾৾৾য়ৢ৽ৼৼ৽ড়৾ঀড়৽ঢ়৾৽ৼয়ড়৽ড়য়৽ৼয়৽৽৽ मझवाशुरामनात्मामझरात्रेवानवराञ्चेवानवरावेदा देवकार्नेवा देवै:न्र:इ८:बळबबाखु:प्रवासिक्:ब्रेवै:न्न:बळ्द:कुल:ळ्टा:द:ब्रेट्: बक्र्या-बक्क, ब्रह्म, री. मुर्था-बंधिय. द्या नुप्य १ - बक्क, ब्रह्म, स्थित, स्था न्यर मु । यु वर प्राप्ति पठर शुरा युर्ग मेरा हेर या युरा विरा **दयः** क्षे. यतः क्षेत्रः त्व विवयः हेवः वेदः ववः (1935) यदः त्रः 6 क्षेत्रः 5 *ढ़ेव*ॱबळॅ'बह्यःहे'ग्≅ेग्यःर्वगःहे'विगः६नःहॅद्यःळॅग्यः५५ॱऋगः**ःः** महुकायान्वरामदेवरा रहारुवा गुःषेवाद्युःकार्रां गा वा ने हिलान्निताय विवाला महावा हे वा पर विवाल था वेष:रूरः। क्र-ठदः ग्री-लटः क्रेटः तुः ग्रीरः चटकः ग्री-क्रु-वेनकः ॲर्-या देते :बर् ।ष्ट् यः व्रें व । वृद्धे व । व्यः व्रें व । वृद्धे व । व वृद्धे व । स्र-क्रिय.क्र्याय.परी.स्य.पर्वय.स्य. इवरा वित् थ्रा दन्यमान्ने स्थाया विवा न त्या ता न विवा ता न ते ता ने न्यू त्यते न विवा यदे ता ति विवा वरःमहेंद्रः क्रुवे वन् व्हर् चुर्याय स्रा वळव व्वर्या मेतु छंदर हुता शु-न्दा सम्मारम्याद्वयाम् द्वरायाने अत्रायान्यन् वयतान्दर पर्येश वेबाक्ष्यावे स.इ.चेर. बहेव रमानकेव पहुंची इ.चेर.

म्नॅ.चन्नर.कु.रंचर.च्य्य.अष्ट्र.कूरं.कुर.कुर.चु.जुर.विपा**र्य.**श्चरवाय..... महिंदाबर्दर्यान्दा व्यवस्थानहेवासुराह्यम्भवाद्याकेन्द्रा ध्व र्माताशुः से स्वर्भे दानस्व पान सुरामदा से मुदास्कर द्वियाया सुना नह्रव हे द्रम्या १ द्र इंटर सुव र न य य र न करा द्र वाया में दिया है. महेंद्र ग्रद्भ अर्द्भ वेर चेरा वर वेर ह्या सुर्द्भ द्रा छ्या र्रम्य शुःहे-दुर्-त्यतः हव हिया विद्यतः हवा मृन्दुर-त्यतः हवः मृब्र-१८०:५८। श्रुवे: क्रेन्स्क्रा-स्वायाञ्चल: वे नाहेरा वावरा सर् स.क्रेर.ब्रेब्ब्य.बट.थर.ब्रैक्.चप्ड्र.क्रेर.अंर.. **२ विषयः १ विषयः १** नेतुःकरः हुयः भुः दं ययः दयः छ। यद् ते । तुयः वटः यरः वड दः वे यः वदरः । बुबा.पे.वेष.कर.वुर.पषु.विताक्त.बु.लय.क्.क्.क्.द्रर.रंटा तिता नर्सन् व बरायहें निवेशाया वैदायन (1935) सदा है । इस र ह के ब श्च-तहिरयानदुः करानु रायक्षवास्य मान्यान्तान्तान्तान्तान्तान्य नर् नदे र वर्ष र के नदे ह ग्राथक व अर र ग व व व व र र ग विव न अर.श्र.धन.श्र.हर्न. १ स्टब्स् श्र.श्रम्याच्यायाचार्याः क्ष्मायारा हर्मा क्ष्मायारा हर्मा देव् यं केल बळे तहला नु विवेषण परि खर परि न् चैपल न्रा सहुव ये । नरमाना पहें कर है देश अर्के क्व दिर केव श्री पातिर ला है 'यदे श वहे " न्मर्भित् श्रीत् श्रीता देन्ति व स्त्रित् मन्वा तहेव क्रिया परि ने मा लुका अन्याति भू से स्थानिता भी प्रतिया श्री वा तार् से नित्र या तार्थ

बेव्राराम्वरार्गान्यात्राम्यात्राम्या वेद्रान्या व्यापारा विवास मार्गिता वदा य़**ॱ**ॻॳ**॔ॱॿ॓ॻॴॼ॔ॱॷॕॴ**ॱॿ॓ॸॱॿॱॴ॔ॱॷॕॱॱढ़ॕॴॷॕॴॱॿ॔ॸॱॴॹॱॴॸॱॿऻॸॿ इत्सःवसः ळॅरा क्षें नया ग्री त्याँ सम्यानविषः मह्न न न्युन् देशात हैवः **डेन्:र्नेतः**यदे:ब्रॅन्स्वर्यःबाय्यःग्टःळेदे:ववःग्रेन्:रे:ल्'ग्व**रःःःः** ॅव,जिट.श्रे.सी.श्रट.बय.लट.श्रट.श्री.ल्य.के.सी.स.वे.ल्य. য়ঀ৽ঢ়ড়৽ড়য়৽৴য়ৢয়৽য়ৼ৽য়য়ঀয়৽৸য়ৢঀ৽য়ৼ৽য়৽য়য়য়৽য়৸য়য়ৢ৽৽৽৽ बैब हरागुरार्डराष्ट्रीर्बल्याय क्रुब्रार्वेस्वील् माबेर्ध्वरावेस्य **ॺ॔ॱॿ॓ढ़ॱॸॖॸॱग़ॖॸॱॸॖॾॸॱऄ॒ॸॱॸढ़ॸॱॺऀॺॱऄॸॱग़ॖढ़ॱढ़ऀॱख़ॱय़ॖॱॼॗॸॱॺॸढ़ॗॱॱ** षदः श्वः बदः परः श्वेरः द्वाः श्वयः भ्वेरयः श्वेषः वः नृष्यः पदेः नम्दः " গুঁব-১৪ শু হ বি.এপ্ত. হ্ গ্ৰাল্পিন্ **40.4.22.** श्चीन् दिया हुत्य देव देव के नित्य प्रमा क्षेत्र के के के नित्य प्रमान के विवास के नित्य विवास के नित्य विवास बक्षः श्रम्यास्त्रः तित्रः न्दः यरुषायः सः सः सः विः व्यदः विः देः वः तः वेः यदः सः व्यदः लि द्वाराश्यका है निया प्रकार के स्वारम् तिया भी 55 55°I व्रमयः स्वाय द्वा यञ्च स्व व्य क्रमयः वि म

यान्त्रीत्। विश्व विष्यः विषयः विषय

...पर्चश्च क्षेत्रात्व स्थान्त स्थान स्

য়ৢঀয়৾৾৾ঀ৾৴য়ৣ৾৾৾৽ঀৢ৴৽ঀৢ৽য়ৣয়৽ঀয়৽৻য়ৢৼ৽য়৽য়৽য়৽য়ৢয়৽৻ঢ়য়৴৽৻ঢ়য়য় म्राप्तान्त्रक्षेत्रायञ्च राम्बराचेवायदे म्राव्या द्धेयाय प्राप्तायम्यारः भ्रव-प्रव-भ्रव-छ-पह्नव भ्र-ह्रा-न्द्रव-क्षेत्रव-विवय-य- भ्र-दर-। वेवय-**김 최정·지**] इयाया इ.चयूपाचनामा क्षुचयान्त्राञ्चा छ **इ.य. २ ध्रेय.के.य.वय.इव.धे.**पत्र्याक्षेर.वया.यर.पत्रेर.सेपयाययो... **经.**七型. n. 当七. d 如. 点. Z 如. 如. 单. 七 七. 七 莫 七. 如 如 u. 当 . 8 要 如. 10 *वैव*ॱभरःश्चेन् नेव यं के श्च पिनः न्रः यठल वणः कुनः वेयलः कुणानृवः । . रोष्टा चेत्र तिर्वाया ग्राया निर्वा वर्षा निर्वाचित स्त्र मेर् स्राया स्वा महुतानस्यानु केनता ह्या विवास या स्या ने अव ताता न स्वाता है 8 छ्या व वेव वया छर पर्हेर न्येया परि राग्य पर्म यव दा ने वया ..ब्रुट्यानश्च.त.ह्..पवा.क्ट.ज.ब. ईवाशु.रीयानगवा हेरावेचा करावेड्ररा AK क्रम्याक् .व.क्षा इ.स्ट्राइरागुःकपः हु ,र्यायानावायहरः चर.ज्यंथ.ग्रेथ.लर.श्रेर.द्रव.त्र.क्रय.क्ष्यंयावश्री.रंट.व्हल.रं र.सेक्री केंदा 10 हैन में है निरायकं यया शुः यह राष्ट्री मन्दर परायर ही र ...... बक्र्याः श्रुयः देवः सः क्रेन्दः रचतः ञ्चः कयान्यते यानेः नविषयः प्रियः नविषयः सु हैं.लपु.ध.चपु.लच.लब.चेष्ट्रेय.योर.चेष्च्याप्रेपुर्यं चंत्रारी. মার্থা श्चरविद्यानवदः हे रविन्या तुषाने रावन्य क्षान्य क्षान्य है । **महत्र¥ंहेलापॅर्'ल'ग्वराश्रेर्'ग्वरागी'शै**'दश्वराव्याहे'''' महार विवादा हे व स्या झेंचा मुला परि धर हो र देव हो हो न हेवा झेंचा ..... <u>रूर्यक्र</u> नेय पर्वे के या पहुंच्या की क्रिया है पर्या परींया रेवर अहरी.... हेलाचेनलानशुराम्ठरानदे लेरा शुर्ने देव रेवला हे त्यला व्यापता द्वारा बह्मान्त्राध्या द्वान्यमा व्यापामा **२**-नकुन्-म्येन-क्षेत्र-न्ना श्रीन्-ध-कृति-कुन-ध्याः क्षेत्र-न्न-पद्मेलाक्षेत्रयान् नार्वेषार्थे यार्ष्य्यात्युत्रास्त्राम्बुदाव्यायान् स्त्राम्बुदा **৾৽**ঀয়৾৽ড়য়৾৽**ৼৼ৾৾৾৽**৽ড়য়৾৽ঀয়৾৽ৼড়য়৽ৼড়য়৽ৼয়৾য়৽ড়য়য়য়য়৽ঢ়য়৾ৼ

**ব্রীশ-৯-র্মারি ক্রুম-র্মান, দু-ক্রিন**ক্য র্ম্বীর ঐনর্ক্য নত্ত্ব 'শৃত্ত্বর' নম্য স্থান मृत्रः विवयः वेरः भ्रुः व्यं दयः ह्रे ग्रायः द्रायः । ग्रावे या ग्रायः । ज्रुते या ज्रुतः ग्रा इसम्बेतास्वराष्ट्री निः ह्वीया स्वापन् स्वरा स्वराम् स्वराम् मानि बराव केदी पर्मे या संग्रायहरा विराव र विदा প্রবা-ধা देर-पतुग्राप्ति न्यान् रुग्नाव्य हो ज्ञा ८ केरा २४ वेद दूर्य रेज्ञा अः बर्ह्मण में प्यर हो र श्रु र हिंद रहा उठरा या क्षे राया से नरा स्रवार स्रवार स्रवार स्रवार स्रवार स्रवार स्रवार मयाक्रेनवाचत्रिदेः नर्गेन्यासु हैया सूराय न पुराया सूरा न क्रीयवा । .... प्रमया चे बारा व दा र वि बारा थी । बार्च पा वि दा। मदे र तुरा न्यायाः ह्यायाः विद्याः न्यायः विद्याः ह्याः वे विद्याः विद्यातः ग्रीः न्योः । पतुबःळ्यायळ्ट्राह्यान्दा नेवाळेवाञ्च र् व्यायाया तुः व्याया परिः करा हेरला न्दा मृद्यं वा स्वा स्वा स्वा मिला में वा सके वा त्या पुर इन्ययन्य मह्र न् यदे हु। न् इत्यान्त सुया य तुन् । व्या क र्यम्य हु र पानी देग्या ह्या पा हू र म्या प्राप्त हु न स्वापा प्राप्त प्राप्त हु न स्वापा हु न स्वाप **डे.**यं अघेष. लय.त. श्र्येथ.पश्च.पः 'चत. चेथ.षेथ। ने प्रविवादी 대표자·왕·면·월··다리·철·이· 두다·다이다·희·경· - : 월 리· 리티다 · 따전 · 다 현 다 \* \*\* **阿丘松 创。与七公七**七、類公

दे न्वराञ्च 10 क्रें रा 12 या ज्ञाया क्रवा न र र र श्वरा स्वरा महत्त सहसा पा स्वरा स्वरा

म् वर्षः स्वर्णः स्वर्णः स्वरं स्वर

रुषानेराम् विदान्दायुदान्यदार्थित्। मृत्यूदाम् विदान्यायाः **ख.लूब**.यट.वि.यीट.चुब.ट्र.लाय.कुब.ये.चर्चेंट.के.यट.बर्चाय.चे**ट्रट....** बर्स् र-हरा व ख. ल व मार क्षे वर १ हुर श्रेनव मेर् व व व हो र **मेंबेर.बुय.र्बर.**लब.पर्खुय.रश्चे.प.र्यट.ड्रे.जुय.यंड्य.क्वेय.खेय.पुर.**प्रेय.** गुर-८्वेद-हे-र द्र-चेत प्रतःस्याय सः र्रः देते. हेवः दश्ररः सः क्रें धिः .... मर्का क्षेत्र स्ट्रिं : न्रा विषय हे हिल हिल हिल हिल है । विनयायहर् क्षेर हेव पडिया वु निर्दे क्या मानकृत उरा र्व दु वि व्दःभिवःयः सः हे गार्दाः कु में न् श्वा का की में निवास में निवास की स्वीवः ब्रेक्प्याम्हरम्पर्मेष न्हेर्रस्य दर्या रेप्तिव रहेव हेप्दिन मुक्तर्दर्भवन्त्राम्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त् ब्रुद्द:शृष्ठ-ब्रुद्द:ब्रुव्द:ब्रुव्द:ब्रुव्द:ब्रुट:ब्रुट्द:ब्रुट:ब्रूट:ब्रुट:ब्रुट:ब्र्ट:ब्रुट:ब्रुट:ब्रुट:ब्र्ट: बर'र्ब स्वाय नेरा छ गुर नेक गुल गुर न् इर में नगत नमें र इ.ज्रम्थातम् लट्ष्याल् । दश्चाश्चायायायाय्वेट्ट्रम् च्याम् श्चयः वट्ट्रग्याट्याय्वेट्ट्रम्याय्वेद्यः द्रिम्याश्चाय्यायाय्वेट्ट्रम् च्याम् श्चयः व्याप्तायाः व्याप्ताय्वेद्यः स्वायः य्याप्ताय्वेदः स्वायः य्याप्तायः व्याप्तायः व्यापतः व्

13. द'ब्रेन'न्न'व्य'निष्य'निष्य'स्सेत्र'ञ्जि'व्य'निद्र' वर्षिन्'न्न'न्न' द'ष्ट्रम्'न्द्रिय'न्न'न्न्यन्' देव'क्र्रन

大事士, 2、3 二、 4 日 日 台 4、 4 世 4、 4 日 4、 9 日 4、 9 日 4、 9 日 4、 1 日 4

ग्रन्य स्व रा न्द ने अव अंत संग्राम्य ता हिन् नु त्र वन्य रा दिन प्र स्व र विरमः क्षे. वृषाः वृषाः नृषाः नृषाः नृष्यः नृष्यः वृष्यः वृष्यः वृष्यः वृष्यः वृष्यः वृष्यः वृष्यः वृष्यः वृष्यः व्ययः तः वियः व कृष्-वरुषा हे त्यवाषा याया में भी दिते हुष् हरा ही र्.... व्यवः व्यवः व्यवः व्यवः द्वरः ध्वाः दरः। चन्नवः स्व इरः हेना व.पर्यार्वापः वशित्राक्रीः शावयः त्राय्यावीयः स्वायः सर् स्ट्यः ऋवायः .... मह्न मृत्यायर र क्रेर हैं मृत्यु व वळे मृत्ये या क्रुर पर पहें द पर <u> इंट्यं.क्रुबंबार प्रेंबार मुंदा मुंदा मुंदा क्रुया मैंया क्रा मुंदा हो ग्राह्म वार्थ प्राप्त</u> न्मॅसप्पर्न्ता श्रेन् स्रव श्राम्या स्वतुव श्रीयास्य स्वया पर्वव स्वया प्रमाव बव्यः मले यः गव मः न्ये यः मते । गव व । यमे मयः च या या । स्वानमृत्रुव तह्यान्ययाथे भेषायळ्या वद्या मुलाळ्या हे ति मेव ..... **ख़.ढ़्य.५८.ॷ८.५७४.**५७४.५५५४४४४.४.ऄॗ८.८८.औ८.४८.४८ म्केरामतुरःक्षेत्रः ध्वा त्यरामवरः ध्वारा वर् र्वे दरा तकरः अध्व केरः हुरः परः पहेन साझ्याः (1938) यरः उः श्रेरः मैना प्राप्तः स्याः स्वारं स्वारं स्थाः मुलक्त.र्ब्र्स्य.वि.चवर.कुते.र्व्र्र्स्य.व्रीरय.कुल.च्युर्य.वेर्ः। रे.पल्य. 'पंग्रद'स्वा'वीया श्ची' इस' आयव सं 'न्दा इस' है या वादव या वाह्य से श्ची व्याप्त स्र वर्ष्य विश्व स्र वर्षे क्रिंद्र वह में मवर है ज्रिंत नह र चुका रा नं चुन् र क्रिंद्र व्या तृ वादे न बळें मृ क्ष्रियः देव कें केश शुन्या महिरा ग्री मा**ठ** प्रमाद का प्रदेश प्रमाद का स्

नगायः नगः न्दा इतः ईरा र्यम्या रोतः भुः न्यं व नेम्या स्ट्रा **ग्रैसःमुत्यः र्वः म्यूकेंनः नैः नग्रदः ठेः नशुदः नृद्यः** येवः लुः नदेः नियः येवः ..... षर लु रा भेर । य.ल्य.(1939) जूर.श्रेप क्ष्य र.श्रेर.श्रक्त ग्रेथ. श्चरः धरः नगतः नगः त्रां द्रां द्रां स्वरः म्वरः द्वा "दे क्वः मुल कवः रेशायर तथा है या हो र उदा वा दार में भूवत या यहा है या प्रदास र वै : यह्नवः यः ग्रेचे गः यः ह्वं वः यः ग्रेवे तः युः यु तात्वः य्यते : यदे र्च के मन्त्र लु चु चु र्षम्यायायायम् म कुत्र अर्द् न् न्मया व्यन् मे तनुमः" <u> इथ.न्रप्यानर.पधेय.प्याप.चेता.च्या.क्रुपाय.पर्ये.च्या.पर्वेया.मेथा.नः....</u> ऄॣ८ॱ८ळवारा: व्राप्तः हुना: चुन: चेन्द्रः नारायः न्मून्रा: खुरा: **द्रवरा**: यः ग्रायः नश्रू र-चुर्य हे : » कुलः नदे : अर-श्रु र-ग्नु व : व्रॅ ग्वू यः ल : व्रॅ ग्वा क्रु व : व्रे व्या स्ट : व्या व नरि केन् नः क्षेत्र कुल कंन व्यारीन् तम्ब सु वसुन् न वे यान् में या सः । । । श्चेन्-श्चॅव् ग्राम्-अनुवायान् श्चेष्यायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः श्चेन्:तुन्रःग्रीःगन्द्रःव्हेनःन्दःगर्रायःव्यवायःन्दःयहगरायत्यः ज्वुदेः वगःः गर्डेन् छला

न् न्यात्रः श्री त्यात्रः व्यक्षत् व्यवक्षत् व्यक्षत् व्यवक्षत् व्यव

नै व्याह्यां सुया (1940) वंदा दि श्रेट सुया प्रमुदा प्रहारी त्र्रत्यः यः त्र्वः देवा विदाधिवा क्षुतः देवा क्षुतः हे वदः ईवः तुः तः क्षेतः त्यः मञ्जयः क्षात्त्र्याय वेतः त्वाता व्याप्य स्वाया ज्ञायः न्राः न्या मिल्याः क्ति.श्रह्म. पश्चर क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया विषय वनयाः इ.च वयाः श्रुरः सि बयाः श्रुरः हि बयाः सरः द्वाः न इयाः क्षेत्रयाः क्रियाः ह्वाः त्रञ्चेर कि न में व्याचेर के नविष्य श्री स्वर्य बर्. श्या मूर्य विरा क्या तर ? क्या करा वक्ष्य मीय क्ये ? सं यावय. बेदाने न्ना बरा भेरा केवाका १ हेना केवा यान वदाना वारा ने निष्ठा बरा बिर. दुर्य. म्र. कुट्र. श्रे. बिर. तक्ष्य. कुट्य. क ब्रारं चर्रा हेया हेया न प्रताम पहें वे किया क्षा र अक्षा वे या प्रया श्रमता तथा समा शु दिना ता नश्री पत्न ना सह न न ते निया से न श्री र **६.**थ्ये रहेशर्तताः भैकाश्वक्षे रेटा हि. बेरायहश्रतिकार पुराया श्रूर:्वयाञ्च अर्ज्ञ रचराला नेयाद्वया ज्या व्यापराई हायाञ्च अता महरासुनारकृता व्हेशन्यं वावन्यं सामान्यराष्ट्रं स्वापक्राता वरः अदे नगता नहुरः नवरः वरः के नवः नवतः स्वतः स्वतः मेनवः व म्ब्रिंक द्य रूट में लाक्त र्मेट्य वि नवट के जया क्त रि के मास्त स्था बर् न्रिन्न्वाम्बर्द्व क्षेत्र कर् सुदे त्याय क्रिक् रोत्य वह व्यव रेत् तर्व र्रर प्रम्माय प्रवेश क्रमा सम्बन्ध स्र राम्य विवा विवा स्व ग्राप्ट महिन 714

न्धवःवापवः धं रणः नवरः श्चं न्वरः ग्रीतः श्चः स्वरः वहं मः कः व्यनः वर् नीवर ते व विनयः रेशःश्चिनः पयः नर्ज्ञेनः श्वेरः हिरः। द्वेरवयश्चरः कुषः छ्वः द्वेरयः लु'य म्वराव न्ने वळंदाके पानतृ मा ठेवालुवा गुराम हैं पा हू वि हा बते.लट्रीर्लारन्युट्यी नश्चनः र्वे अत्तुलारद्यान्त्रम्यान्द्रेद्वाम् ऑर-रैत-रॉत-क्रिय नेर-म्याय-पहेंचा-या-व्यवर-प्रतः शत्। ने व्यवरः श्रीरः ढ़ॕॱॾॕॖॻ॑ॱॿऀ॔॔॔॔ॶॣॖॸ॔ॳॱॳॾॣॳॱॾऀ॔॔ढ़ॸ॔ॿ॔॔॔ढ़ॶॣज़**ॱॿॿढ़ॱॿॖ**ॿ इनिवात वृत्ता (1940) विदेश्य बहुन कु नगर मना यान्य स्वर्य देव गार लट.शुर्-अक्ट्रबं-श्रुल-देव-सं-क्रे-क्रे-श्रीयु-धर्-क्रेरा-स-श्री-ध्राय-व्रव्-देट.... व्याम्न्व लु दन्या अन् र्वे म् म्योर वि अद्याम् राया राम्य अद्यास रैयाया मु हेव बी तहें या या से म्या मुया सामा या सक्या या समा র্মান্য এনে কেন গ্রিন্ অর্জ্ব প্রাণে প্রবার্ত্রন গ্রিন্ আরু र्गार. ८ ह्य. शुना न हेना. हु. इत्या शुना गुरा। के. हा. वा दे तिरा च हुना न्मॅन्यार्न्द्रात्रे स्यार्ट्या हे स्यार्ट्या है स्यार्ट्य ल.च हे व. बू ट.थ. श्रेचया वर्षे व. कु व. त्र र. लट. ले बेया व श्वे व. ट् बू ट्या श्रे व... <u> लुका चैक पा क्षेत्र दे देव दे बैंदिका प्रिया विदाय दिया विदाय प्राप्त</u> विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय विदाय के भु न श म्हे त न हे व शेन प्रति र म वे त शेन भु म कि म म तर मन क्षेत्राच्याः देवः सः क्षेत्रास्त्रायः हेवः छटः यथे सुवातः वित्रः यश्चित्रः स्राताः लाचॅंद्रात्राख्ट्राश्चेत्रितास्याळे वळे वावत्राण्यात्राच वेत्राच हेत्राच हेत्रा छंत्याः है नविव नई नगुराञ्च क्षा हु के ना गवद सुर न्दा अन्य सर्वेद

मन्ना कृताः चान्त्राः त्रितः चान्त्राः वान्त्राः वान्तः वान्तः वान्तः वान्तः वान्तः वान्त्राः वान्तः वान्तः

क्षेत्राचनार्नार्नदरान्त्रीरार्चित्रक्षेत्रक्षेत्रम् शु'त्ष्रान्द्रेयान्द्रेवाद्देयात्वर्यायात्तुराष्ट्रान्टाकेवान्त्रो येग्य लामग्रात् क्षेत्र न्दात् क्षमायान्य ह्या मने विकास केता न विकास क्षी म्वग्न्रा देशेद्रद्वद्वर्रम्यतःदेव्यतःविग्न्यर्ग्यः यामवराश्चित्मावुद्राची न्यद्राक्ष महि दे द्वारा न्युवर हि ते हि या द्वाद्या नपुरम्बार्भिर्याने अयामाना वारामाने द्राप्त हैं र रवा है है र हीया न हे कु है (1942) विते ज्ञ 4 के वा 23 हे वा विवया न न वा ग्री हैं व वा नमार्चते. म् क्वा.पाश्चर द्विष चु ना बन्न तर्मा हु त हो या यश प्राप्त राज्य या चकुर्मराहर्गारास्त्रातः श्वाः त्राद्येयाम्,तृतः तुःश्रेः क्षाः चेरामः न्राः ने निवन में बेव हर ग्रुट न्युट श्रेन मृतुट में ने निन स्म खु विव स्व .... विरयः या च श्री र . पर . च यो प. च वो . पा स र . यो या प स हो र . श्री स वो . दे था ने . वृत्यव्यामञ्जा वार्ष्या व्याप्त वार्ष्या वित्रवार्ष्या वित्रवार्ष्या वित्रवार्ष्या वर्षेत्रस्याम् वेदान्तायुरान्द्यरार्थेराम्बुरामे प्राप्तायायाम् १ वे त्र्रेम'मत्राष्ट्रतामः द्र्रेम'म् त्र्वातासः वात्रतासः स्वाद्धनास्याः स्वाद्याः स्वत्याः स्वत्याः स्वाद्याः स्वत्याः स्वाद्याः स्वत्याः स्वत्य र्वेन्याचेन् वनवान्नवानवे न्वयायु क्षुम्या ने हेवा वे प्रवा (1947) 於不,動·中不,夫,切·二八人,七十八人,其下如,七萬,中四,日四,七名,所,到下,由,其如... व्यान्त्व लु इया हे वि द्वम मैं द्वम न्त्र महत्य रे द्र वेद में """

ह नावारवत्त्र संत्रिः कुष्यत्त्र तृ चहेवाव्य कुष्याव्य विवार्षे त्राक्ष्य विवार्षे त्राक्ष्य विवार्षे त्राक्षय कुष्य कुष्य विवार्षे त्राक्षय कुष्य कुष्य विवार्षे विवार्ये विवार्षे विवार्ये विवार्ये विवार्ये विवार्ये विवार्ये विवार्ये विवार्ये विवार्ये व

दःश्चेरःमै:र्वानवर्वद्युरःक्वेवन्नर्छः दंवी ह्रमः चनःरमः बुरायाधिरावस्यालु कुते वदानेवावान्व कुर्ति संदर्भ हरा द्रमा समा मैया श्रेन क्रिंम में मवया है । मा उया महाम हिमा है मा स्वाप है ना स्वाप महाम है मा स्वाप है ना स्वाप है मझ् .क्ष.म.वया.श्रन्-क्षेत्रया.य.श्रीर.प्रव. स् .क्ष.नर.थ्रय.श्रेया.श्राप्तव.स्.र्या. र्नर मु अळे र्मण्य नर खेल नवर हे मुला हु र उ होर अळे न हे मु न्वरायह्रं न्यर न्वर्व व्राष्ट्र क्रिये वर्ष मेरा द्वार श्रेर श्रूर केंग्रियं-रेट. अहता पहुंचया सूचा ने . कं. चटा श्रापा चवटा चा केंद्र श्रीन श्रीटा मैं भरापम्ब के के रायस्य मानु के ते रे पायह दाय दे भेवा के के राहित म्, कु. कं. कं प्रचार हे या है . सू . चंरा है . कं दा चा चा ने रा हुन्यान् भक्तातह्रवसारारात्र्रात्या तु नवरार्वे न वर्ष् मू र्यात्रा हेक्र'र्भ्राम्बेक्ष'कुर'रु हेब्राखन् र्रावहतात्र्र्न्व्य्र्रम् वर्षात्र्र् द्राश्चिर्श्वस्तावयाश्चाद्वते भेवायायश्चेत श्चिमाञ्चवायात्रा स्ता मग् श्रु व वर्षे नगर् सु वर्षु र श्री र तव व नवे तव श्रु र त के न के सर र

£য়**৾ৠয়৾ঀয়৾৾৴৾৾৴য়৾৳৴য়ৼঀ৾য়ৠ৾৸ঽৼ৾৾ঀয়৸**৾য়৾ঀয়ৢৼয়৾৽৽৽৽৽৽৽ ग्रमा क्षेत्राचनानीयाय पर्नेनास्य मनामह्याने ही नामनानी पळायर वर्देवे नग्रद स्वायत्व दिवा वु न र्डस स्वतः वेदः प्रायतः देवः विदः । देवै:बर्'येग्राकेरा'यशैग'वेद'ग्रापर'याप्तर्र'यर'ययिग'यहुर'''' विथाक्षेत्रया उ. ब्रेट. विया यक्षेत्र पह्या न्याया थे या विषया त ब्रेट् भेता हु केव सं क्रे या नेदा अवया देर हिंगवा महिवागिय मन्या देया नी द्रांव रेग्राह्मस्यरान्तराळात्र्या रेराचेन् कुदे त्वन हेन् हार्गा या व्यन्य या चर्। देया पर. १ देया चया यो दिया यह र ह राया पहेंदारा यहर ষ্ট্রব-ক্রীব-প্রীব-নের-বের-ষ্ট্রব-বের-ম-ব্র-ক্রুব-র্ম-র্ম মহাব-----मुर्केन् हु । इरा ने द्वार महार दे हुन दिनर हुन दिन पान हुन पहिन बर्देव ग्राया देन देन खुन केरा देन रामवा राष्ट्री मानु रामी मब्दित्यं मञ्जूरान्म धेरावश्चेषा गुर्वा श्वा वी हेशाव श्वरूषा मा इवयान्त्रें नव्यान्यान्या

द्रश्चरः मुद्रः मुद्रः दे के वा मुद्रः द्रवः द्वरः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद्रः सुद देन् व व सुद्रः भुवरः भिवयः व स्वयः सुद्रः मुद्रः सुद्रः स

क्व.ग्रु.म्वर.भ्रुं र.ग्रद.सद.सदाया स्रवार देर.ग्रुय.ग्रेठराग्रु.स्वयः शुन्यान्ता न्धेदादितः हेरा त्यान्यायदे न्यनः ग्री श्रीन्न्यनः तस्त्रा बेव हेर्प्य त्वर हैर्रे हेव पहेव हैं ज्वा दिया है रूप दिया शुर-रुदः। र श्चेदः ख्वाराष्ट्रम् वी श्चेदः श्चेदः पर्वेदः श्चेदः परः प्रत्रेद् देः म्नुना ह्या र्या र्यार्य द्रा हि त्या पहूर या अवर छ्रेता बुर-पिर-र्नर-क्रेब-र्गे-छेग्या वृ-भ्रान-प-र्नर-धुन मर्ने-स्व-र्सन्य-वया र श्चेर ध्वाया न हें नया ग्रीया दुया नामा प्रतर सदेया दिया श्चेया ना महराहे हुन वन नर्ये राहे लान्या कर हो रान्य के नर्ये न मन्याया वात्रुव वात्रा कृष्य वात्रा की श्रीत् न्यतः वार्मे हितः श्रीयाः के वार्षेत् या सेत् । बेर-प-र्सम्याग्री ब्रेट-र्ड्डम्यायराज्य यहाराजी विषया (1947) त्र 2मर नगत त्रंत तुर विर दर र केव द वी लेग्य दर है हा के द्रर र हे-सम्मान्यकार्मन् न्यम् हेरान्य कु क्या र्या नित् ने कः क्रेन्यन्य मिलान्नर विराजकेषात्र वार्याताला नेयातह्या पर्वर ने ने रापर हेव ..... वक्षक् सन् मक्कुन् चुन्ना मन्द्रवस्य ने क्ष त्रराधन् परि द क्रिन् वी विनया <u> सहीरायात्रकानेवातस्यात्रह्मन् न्यंनायानेवाह्ययाविववार्वावावातस्याः ।</u> कुःबरगलाग्रें राष्ट्रयाग्रदा विदान्यमा द्वाया ईवाया देशे रातु विदेता **बेव-केर**-घनाद-ब्रॅव-बुर-पिर-र्घर-**केव-र्ग-**थेन्य-रॉम्याव्यासु-धुन्-बुष्महे म्न्द्रा वुर मरूर पर्व हुं या चुरा है । स्र यर पर्व र ति दे । चुरा म्मा १ क्रुं २७ हेव. सं. यर हाय ग्री हिनया या सम् वर् द्वातम्बर्धः श्चार्यात् सुर् ते तर्द्वावर श्ची हो त्रायावया वेषाया सुर वह वर प्रिक्त के प्रवाद कि कि स् निम् स् निम खेरं पहुर वेनक ईया ही ज्ञर क नर कर प्रायाय या सर्। १८ दुवै न्वेतःग्रःवेदःश्वरःद्वयाः वेरावहरः वयः कुतः न्वेतः युः यः द्रः। वरः भ्रम्यान्त्रः विष्युरः विरार्थिण ग्रीयारः दर्भग'य' <del>श</del>्चर 'ठेट'। न्यर.रे.श्रेचय.श्रेचय.प्र.त.क्.र्.प्यय.स्थय.वर.ग्रंय.वेय.हे.र.ज्रेट.... रेवः सं केरः वः पञ्चतः शुः कषा श्चेवः यः नृहः। श्चः पठरः मृर्षयः नृष्यं वः रेगः म्ब्रेयः तम्म द्वंतः विश्वयः द्वं रः त्। म्ब्रंतः घर यः द्वं रः त्रेंद्र'न्ठरा'वी'न्शुव'र्षेद्र'प्र-प्य-सुरा'प्रेत्र'ष्ठे त्रेत्र'वि'र्वे के .... डेर.मर्व.व.व.व.मर्रा विर् ह्र.ची.पवु.रवच सराया ह्या.ह्य.विश. याधिदावेषानाईन् ने गुप्तवेदि नजुप्तदार्द्व मुंबा छ ने मा अधिदा है पा है पा हि प यानेना ने वयान क्षेटानेन संके हेराय विनाने नर केव हुँग कु पर्डेंब श्र-भ्रेयायाः इत्रम्यायाः द्यानः भ्रेतः मृतः स्याध्याः **८ है ग**.चे था इत्रताच्नाः ताम्ब्रताच्चित्। मृत्तुरः न्रः ते न्यनः चैरः त्व्याः व्यव्याः "" वैद्रः। बहरारी रदी श्रुष्य इस्राया में अर्ह्षेत्रः वृत्र या दृद्रः। द्राया यहना ग्रीः <u> इर्.र्बन्नेथ.यु.र्ने.इर्ल</u> वेष्.र्या.युर्व.र्वे.स् इसाने स्थाप्त मान्य स्थाप्त मान्य मा र्यः पञ्च अवा तवादः वैवा दिदेवः पत्तुरः वैवा विव्यवः वर्षे नः द्वा यः प्रहरः पः है। याया हे, से . ह, से बंबाया त के ता है। या प्याप त ती ता पा से दा द्वेन्यायाया द्वना नक्ष्या है न्सु द्वना के निना ता द्वे ता हिन् हिन् हिन् वा देवे वा ति है

र.ब्रेट्सविच.पर्वेथ.पह्य.रेचलाला.चेथापहूच.पर्वे**य.वेथाह्याक्षेय** चन स्वेथः वेष हुष हुण्यव्यर्थातः स्थयः वया पद्वः शिरः १ क्रि. बर्गत र्राप्तराष्ट्री सु खं कुव ई है (दे स छं कुव हवा मिया नेरा) न्ता हे हुर थे ने स्वार स्वार हित (हे हुर र या संदर हेर ) विर विवेश गा-द्रः ब्रेट्रायात् विव वहेव केवारा स्प्राया विषाधिताया स्प्राया यह ष्राया र.ब्रेट. इव. स.क. द्रंर्या व्रिया र विषय हट. क्र वया परी. स्वा मह्यात्यर पर्ने पा बेर्या त न्या देना येव अपया विरागीय शु अप नवरः रविवारतार्वराष्ट्री रक्षवार्शेर वानविदायवे वानामान्य राधरा मुता सेरा धा बाचन्। न्यादम् यता ३८ वा चेन् वा नहार वि वा वह नि की वि न अम्बर्धित्वा अन्वर्धे राष्ट्रस्यात्रेणवर्षावर्षात्र्वात् अन्वर्धः व्याः य.बुर.प.विश्वयाः १६८.ह.केर.बुर.र्ज्याः प्रेयाः भूर.ग्रेयः स्तायाः यदः चेन्-स्रमण हे-सर्वन्तुन-वहन-येन्यः क्ष्रंन-ग्रीयः निस्यान्तिन-म्हेन-वहन **लट**.चयान.डु.कु.चना.ठव.यिना.क्चॅ.र.कु.चला.डु.पु.चट.पचटया.कु.च.क्स्ना. च्यान .....वेयापदे सुराद्ररयाने ज्ञुयानु रात्र होराने ह्युन तत्रवान नेव ं सुपः रङ्गवः दें र् इवावया कुमः क्षु रार्धे ग विश्वया कराववाया गर्छरा र्मायाः ৾ঀৢয়৾৽ঢ়৾ৼ৾৾৾৻৾য়ৢঀয়৾৽য়৾ৼ৾৾ৼ৾৾৽য়ৢ৾৽ঢ়য়ৼ৾৾৻৾য়ৢ৽ঀয়ৢয়৾ৼয়য়য় • न्यातः गृह्या ग्रीः वाद्या स्वास्त्या स्वास्त्या स्वास्त्या स्वास्त्या स्वास्त्या स्वास्त्या स्वास्त्या स्वास्त्या स्वास्त्रा स्वास्त्या स्वास्त्रा स्वास्त्र स्वास्त्रा स्वास्त्र स्वास् ंगैयाचेरावयरारे र्गायाञ्चयायवृत्राचेर्पये स्वात् शुरायस्वायायाः " चन्। ह्रेन्यः ब्राच्यः व्यायः व्यायः त्रेतः ह्रोः व्यायः व

ने हेल र केर ब्रुट नहीं पहेल पर दे न वल ईस है । हुन वल है नल **ঀঀৢ৴য়ৢঀ৽য়ৢ৾ঀ৽ঀৢয়৽য়ৢঀয়৽৸৸**য়৽ঀয়৽য়৾য়য়য়ৢঀ৽য়৸য়ঢ়**ঀ৽য়ৣঀ৽৽** क्रुम् मृति र्ड्य यात्रा मृत्र र मृत्रा के मा श्री मा है ता मृत्रुम्या *ने र-* ऋ दः ह्युन: न ङ्ग्रदः द ह्यः न् यत्यः थे र**ेतः** ग्रे**तः** ग्रे**तः** स्वाप्ते स्वापते स्वाप्ते स्वापते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वापते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वापते स् नन्तरस्य देनवरमः द्वेरन्द्रवेशम्बद्धाः सुरुषः मा विवास स्वाधिदः हे · · · · । ळ्ट्य.पहुंब.वि.वेट.ब्रैंज.भें.वंबट.ज.चेय.टंटा र्टेट.लूब.कु.चू. त्त्रः वटः क्रंतः त्रेयः वृतः न सूत्। नगतः त्र्तः गः वृतः क्रंतः कुः यः नक्याताञ्चमाञ्चेयान्वराक्षेप्रचेवावयाञ्चेतावनयाञ्चरानदे ने पायह्न गुर् थे में दे द्या हे हुर थे ने या स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप **美.**,⋚थ.केबं,चब.क्रुबयापापाबेट नयापस्यादी,घब.बक्ट बावेयाये.सूर ... वेदःस्र-प्रदे:र्म्ययामःकययाने वे अपना (1947) ह्रा. ३ केवा ४ वेदाग्री " <u>श्रदः वे यः इः स्व गः स्वा स्व म्वयः सः न्दा स्वा स्व स्वा स्व स्वा स्वा स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व स</u>्व वर्षेष् अत्याचन रार्वा न्वराविषावषा व्याप्त वर्षा न्या वर्षा न्या वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष क्षेत्र छर विश्व यः रेरा

5ुवां सुत्याने प्वर्यादत्व सारेदा चे**रा** श्चवा के तावाव कि तावाचे वार व वें रा सुषः ग्रेग्यार्गेरः यह गः न्धु नः व्वाह वः यहं नः नेवाकुरः शैनः क्षः नु देः ः ः क्रुव-मवि यया मवन के से य दु मा दे रा के मरा य दु रा वु रा पा न्रा न्त्रेन्यःहेराः इत्यायः वर्षः स्यान्तः स्यान्तः विष्यः म्यान्यः स्वायः स्वायः न्र केरे न्र वा हंवा वा न्य र अप क्षा वा न्य वा क्षा वा वा क्षा वा वा कि न्य के का न्य के न्य के न्य के न्य के मर्ज्ञेरल वुरुप्य क्षिप्धित सराङ्गरा बैरा अनलारेराक्षात्ररावन मर्या क्रे.मद्र.मबर्यः मृष्यःश्वा "सु.म्युम्यम्यम्यःम्युम्यः व्याप्या । मनुन्ः धुग क्षेत्र त नर भेता र में प्रत्य पर से मेग मारा विश्व के के र में त ब्रन्रहर्षा " वेराम ह्याला ब्रेन्स् ब्रावा क्षात्रा व्याला विराह्म विराहम विराह्म विराह्म विराहम विरा नहर्गहर्गहर्गन्द्रत्वेर्ग्न्ह्राध्याचीर्ग्न्येर्। रे.क्रेन्नच्यावयः न् भेतः हिते हेरा तब्र राम अराज न् ग्री शेन न् नर स्राह्म राम श्री राम स्राम स 원다.다. 한다.

स्वायाक्तर वर्षा वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष

रः ब्रेट्- ब्रिय तक्षेत्र तह्य न्यया थे जेता वर्षे न्या यहै वात्र तह वात्र वा न्मॅं व परी न्गे ततुव प इ बल मिंद वि वे छे नम हु तयर वल ..... दः ब्रेटः न्में वः पदेः क्षं । वटः वटः चवन पदेः श्रुटः वः वं नः न्यन वहः हुनः र *रे'र्*ग'महुर'**द्रवार्जग'ग्रग'महर'। मग्रत'**स्य'मेवाम्बराह्यारे' ঀ৾য়৻ঀয়৸ৠ৴৻৸ৼ৻ৼ৾৾৾ৼ৾৴য়য়৾৽ড়য়৾ৼড়ৼ৻ঽয়৻ঽ৾ৠৼ৻ঀৢ৾৾৽ঢ়ঢ়ৼ৾ৠৢৠ৸৾৾৽ **रे**ते:बद्यतःपत्ने,पश्चेरःश्चरःस्वर्यः <del>दरःस्य</del>रः केवःबद्यवः वर्षः विषः रैट-इन-दवन-इन-ध-चुल-बवर-लेर-द्यन-यन्थन केल-कंपल-केव ৺য়ৢ৽য়৽য়৽য়ৼ৽ৼৠ৾৾য়৾য়য়৻য়৽য়৾য়ৼ৽ৼৼ৽ৼঀঢ়ৢ৽য়৽ঢ়ৼ৽য়ৼয়৽ড়ৢ৽ৼৢঢ়ৢ৽ৠৢ৽ पकुव-र-नेत्र-केव-रेव-केव-श्व-क्षेप्य-र्राग्य-र्-रेय-रेग्य **स**-केव------लूट्यः ह्र्याय पर्स्रयः यह्रयः युक्तः हे . यः दः प्रदेः ग्वराह्यः ग्रुजः । यहे रः वः ब्रेट्य.पर्ट्र-मुल.च्रेय.क्रूंचय.सुन्य.ल.स्ट्र-स्न् च्र्या.क्रेन् स्न् क्रे... कृषा चर्षा संग्रान् के व स्थि हे सार चर्या मया में न की खेन न न मा स्था म शु'वि'सं'वञ्च रव्यावेयामुयान्दित्व'ग्रेनामुर्रायान्दित्रपदेः च रद् हे बर श्रेयान नेना

## 14. ਕ੍ਰ'ੜ'ਰਕਵਕ'ਕ'ਰ੍ਰੇ'ਉ੍ਰ'ਹੈ'ਰੈ'ਕ'ਰ੍ਰ'ਕ

다다. 보고 보고 보고 하나 되고 하나 보고 하는 다른 보고 하는 다른 사 가 하다. पदव कुलरेट सुन्य द्वर ची तहेल प नेव पवेव द्या वर है है व बिट-दे-हेल-बे-धन (1947) यदे-त्तु-प- 10 पर-हेल-द्**यं**व-वृ-क्वर-----त.रंचर.र्थें व चर्र.रंच.रंट. विव क्ट.कर.विव.रंवेंच.पर्वेच.क्र.रंचता रैबान वि श्वें बाबन्य पर त्रवेश। हुर पर बन्य र ने वें व के न्यर श्वें नहा मुलामकराक्षराद्वराह्मना विपाळेन्या स्टास्य होना तह न्या सुरा है । **बे.५.५.५**३५.५.४.५५.५५.५५.७.५५.४.५५.७८.५५.७८.५ रॅंबर्, अपया नेर वंदर की प्राप्त । धन्य रे न्या अव रे न्या सके र्सम्बर्धरम्महिर्द्धराञ्चम्ने श्रुवैर्देन्द्रम्मराष्ट्रर्देश्चिराष्ट्रियाञ्चरा द्याययाश्चर क्षेत्राकुर बरवया हुर ह्व ह्याय ता व हूर तरु र व्यूया याके प्यार बेर् मृत्रिया मिं या स्रिते र विवाय ध्या महिं में वि खा से यह वर मुलारेराखन्याययार्ष्ट्रवार्स्ट्रव्यार्स्त्रम् द्वाय्यम्ययायाःस्रास्याः **र्रः र्डेक्**हे। कु.म्रः संग्रार्म् रहित व्रेल क्रील क्रील क्रीरावड्व हेरः मर-कुन-श्रुर-वेंन-परि-रे-श्रूर-कुन्-प-रे-धेव। दव-ग्रुर-पर्वन कुल-रेर-75 व म्यून वर्षा ने प्रायम मार्थित स्थान में प्रायम स्थान स् पहेब् ब्रा वर्ष वर्ष द्वा द्वा द्वा द्वा वर्ष प्राप्त के कि वर्ष के वर्य के वर्ष के वर्ष के वर्य के वर्ष के वर ववः वैरायः वैः यश्चाः गाः वेदः हुरः नः न्रः। श्रूययः नेरः ववः वैरः वें विवाहरः 'गुर'र्इर'शेर्'म्बर'मैवा वर्'ग्रे स्टर्'रेव सम्बन्ध म्बर्था हु' कुलार्'द्र' दर्ज '''' <u> न्मूय, द्व. जूर. से र. वेब. न वर. ने या जिला क्र र. द्व. क्र वेया प्राप्त वेब.</u>

न्ब्रः स्वाके के के शिशुप्त हिरान्दा। न्द्रेव है शेन्ब्रा स्वाके **के स**न ख़॔ॸॱॴॱॸॿॱॿॖऀॴॱॻॖऀ*ॺ*ॱॺॖऀॱॿॖॴॱॸॗ॔ॱढ़ॼॕॱ**ॾॕ**ॴॱय़ढ़ऀॱॴॴॱढ़ऻढ़ॖॸॱॸ॔ॸॱढ़ॿॖऀॴॱॱॱॱ **षॅर्-वेर्-क्षं-इबक्-पञ्चनकः हेकः वर्-ग्रे-क्ष्रः देवः क्षेत्रक्षायः पर्यः वर्-पु-क्षेत्रः** र्या छेन् कु धेव अवाय क्रॅन वेव कि कि मान्य कि निवास क्रिक **ब्रॅब**्बियःस्रमयाविःसःस्रॅनःश्चेःमुत्यःग्चैःन्द्वयःस्रंनः**न्रः। गवरःश्चेयःगरः** विग्राग्वरामा अन्। अन्यस्यायाम् वयागुः यहराहे रहेरामें र तर.री.चश्चेषा.ध्रेटा। प्र.स.क्र्याक्र्य स्व त्याञ्चेषा वाला प्रमाया विस्ताता <sup>कृ</sup>र। कृटःम्<u>न</u>टःदुःमरुदःक्र्नःकःरेदेःम्बुटःर्न्द्राघटःमीःरॅग्यारःरयः दॅगालु :झ्राया न्यान धुर्गाय ने । स्वार्थिय योग्य वे । या ने ये । सुर्था का ने ये । सुर्था का ने ये । **ॱॱॱ** प**ढ**वः ळॅट्रप्राक्षः देवे कु वः क्रुंद्रान् वेषा शुवाषा क्रूंद्राच वा चर्। षात्रे ते गा न्रा वेन् न्यत्र त्रेयायान् न्य प्रात्र व्यापात्र मा रैर-ज्ञ-प-पवि क्ष्ण-र्ययाम्बर्। दे हेरा-एड्रेब-हिर-पर्श्व-रिज्ञ-वर्ण ইন'নহ্ন'ৰ্ব'ব'ই'(1948) শ্ৰী'শ্ৰেছ্ণ্'ন্তু'ৰ্ব'ন্তু'ৰ্ ब्रैन स्वा च्या या नेना

व्यक्तिक विक्रा क्रिया क्रिया विक्रा क्रिया षाकेद सं देवा महिदामहिद्या माँ या गाँ दा महिदामहि स्रम्या देराषा वे " रे.गा.र्टा रड़ेव है। जेव.री चर.रे.ल्ट.सर्व.वि.स.स्रे.हेय. त्यरक्ष.त.केब.चब.श्रबंश्चर्यः अव्याप्त स्थाने स्याने स्थाने स्था र् श्रीन् मिल्रा मी त्या कं ना रे र र या मी मिलं हु ते हुँ र नर न हे वा वरा " ह्र.त.क्षर, ईयायब्द्याया श्रेष्ठ, येवा वियायक्षेत्र, घराता न्द्रा विरा विदः स्वीयाता के या भी दावि वेदा में नियर प्राप्त हैं में अर्ध में या प्राप्त में विव मिराश्चर् हैनयामिरा छ खे. वधिर है. यर प्रविवा व है वर प्राप्त ब्रियाग्रीयार्वन्यत्नी मु कि र्स्या मु र हेन् हेन् वेन मुन मु के नया वि या के ..... पस्तारी क्षेत्रापरी राष्ट्रेर राष्ट्रेया व्यव् राष्ट्रया व्यव् राष्ट्रया व्यव् राष्ट्रया व्यव् राष्ट्रया व्यव् यः नै र मा मैया वव 'केट 'तु 'यकत' क्ष्रं न 'वें न 'रा मवया श्रीन मालु ट मी 'नैंव' ' न्हर्।वरःने द्राययःल्रास्नार्थाः ह्रेनायः ह्रेनायः हेनायः विन्नायः वाचरा वाज्ञारः (1949) वृद्धे त. ७ पर के यर पर पर पर पर में ने बेब १ हर ने न वें न से तर पर **ब्राह्म वर्षात्राम्य स्वराम्य म्यान्य म्यान्य स्वराम्य स्वराम स्** ब्रु.इ.ल्ट्यार्झ्ययाञ्चरातविराधयात्रीयाः न्युराविराध्याः पह्मन् माना विद्या ने रामा प्रमान के निष्या क कु.पड्राय.च.श्वायथा पूर्त.पर्ने.यीट.ब्रीप्र.वटप.व्रिट्य.श्रव.सिवाय. भूर. मृत्रातकता वटा दवा श्रेयाया नृता। या नेते हा । ४ पराका शेरे ग्रे रें प्रते तमें प्रकार कर कर निरम् त्रेयस्यः श्रेनः श्रेनः मृतः वृतः स्विनः स्व रेयार्या हुर मेंग हम लाम्मेंग हुम हुर तकर मेका वर्रात्वा हु छेर

यात्रात्रात्रात्र्व्यात्रात्र्वात्र्वात्र्वात्रात्र्यात्रात्र्वात्रात्र्यात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्यात्र्वात्रात्र्यात्रात्र्यात्रात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यत्यात्र्यात्र्यत्यात्र्यत्यात्र्यत्यात्र्यत्यात्र्

वैद:देवे: क्ष्मल धर:» र्वेष तु:ग्रुट:क्ं :क्षे:द्वट्रक:ग्रुक:देव:धर:तु:र्वेद :: यक्ष्यात्र्रातावाद्वराष्ट्र व्याचितात्र केर्प्य देन् केषा विषया विषय विषय विषय केर् ग.र्ट.रेव्वेथ.ह्.यद्व.बेल.र्टर.जेब्य.ता प्र.स.क्रुप.र्ड्य.प्रट्य. यः इवरा २८८४ सुन् कर् वेर् क्षेत्र है ते देन वि देन वि वयः ययः नर वरः या য়ৢ৾৾ঀ৾৾৽য়৾৾ঀৼ৾য়৾য়ৼ৾৽য়ৢৼৼৼৼৠ৽য়ৼয়য়য়৽ঢ়৽য়য়ৢয়৽য়ৢ৽য়৾৾ঀৼৼঢ়৽য়৽য়ৼৢ৾৾ঀ द्म वि'नदै'नक्ष्यत्यां वार्षेन क्षेत्र क्षेत्र निवेश महिता क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र रव मु:बळ्ळ:बळ्ळ:ब्रंव्यव्युन्:वॅन्:तु:वञ्चवःचु:चेन्:यरःग्हेंरःग्वरः.... वनाः छ । वरात् इरा श्री वर्षाः वर्षाः चराः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः **ダボイ ジエ**ー *क्रेर-पक्षेत्र-व्यवित्र-वित्य-वितान्त्र-वित्य* दॅव गुरःगुरःन्इरःबैःन्बर्यःश्चेन्ःमृतुरःमैयःगुवः छ्रनः य:रेर्। भ्रॅमाप्त ने व व मुद्द ग्रुट र नि प्ते द तु प्र हिंद प्र वे वे के दे मुक्ष प्र द अव या पदै - द्व मुल ने र लु ग्र पदै म्हें परा सु ग्र वाय यहर न ग्र वहर न सु र र **पॅर्-५र्-न्-**बुर-र्-क्रिन्-स्व-धरे-बेरा-कुल-ध्रिय-ळ-**र-के**व-घॅरे-व*र-----*ह्र-ॱसंगः न्वेतायदे नञ्चनः च । आरः आरः मवरः नः न्रः। 25.232. **য়৾**ॱॸॺॸॺॱয়ॆॸॱॺॿॖॸॱॸॸॱॸॕॸॱॺॱॺढ़ॺॱয়ॆॸॱॺॿॖॸॱॸॸॸॱॿऀॱॸढ़ऀॱॹॕॺ**ॱॱॱ** ब्रॅंबर ड्रेन्टिन् इन्वर इन्वर इन्वर (1950) व्रंदे ज्ञ. ७ व्रंतर १० व्रेन्टिन विवरण [म**अ**त्रः विदः क्रेवः श्रेः न् बद्दराः श्रेन् : मृद्धरः मी : ग्रुद्धः विदेशः मृद्धितः स्वाः स्वाः स्वाः **४ं'के'**र्कर्नुं अर्वे'र्रेयाबी क्ष्रूरात्ने प्रमृत् क्षेन् प्रमृता वानेता वान न्दरः वर्षः रे नेर हिरे हेरा 24 हेदा करा वर्षे राज्य वरा शु से नवा ग

त्रुं र बेल पान्ता विद्यानिया वर्षे वार्ष्य र ते ते र विवापनिया भागमः देते देला द श्रुण्य दम श्रुपः न्यू संग्वदमः वः यः अद्। हुः यदे श्रुः **बाबळें**नालयास्याने ग्राम् केते ग्राम्य विष्य स्वातालया क्राय क्रिया प्रति के **ঀৢৢৢঢ়৴৻৸ৼঀ৾৽**ড়ৄঀ৽ঽ৾৾৾ঀৼ৾৽৻ড়৽ড়ঀ৽য়ৼ৾ৼ৽ঀঢ়য়৻ঀৢঀয়৾ৠ৾ৼ৽৻ড়ৢঀ৽ৠ৾ঀ৽৽৽৽ **७गः**लव-र-"न्ने स्नाः श्चलः श्चः लरः न हें रः श्चे क्रनः ला सम्मिन्युतानुद्रात्रीयता विकाय विद्राल्य । देवी द्रीयाता सुवा देवी स्निन्य **৾৲**৲৽৽য়ৢ৾৻৽ৼড়৾৾৵৽য়ৢ৻৽৽ঽৼ৽৻ঀৢঀড়৽য়৾৾৻৽য়ৢঢ়৽য়ৣ৾ৼ৽৻য়৾ঀ৽য়ৼ৽ঢ়য়ঀ৽৽৽৽৽ **र्र**-धुल-र्व्या तर्र-क्रिन-र्व्य त्राच्या कुल-र्वे प्राप्त व्याप्त त्राचा त्राच त्राचा त्राचा त्राच त्राचा त्राचा त्राचा त्राचा त्राचा त्राचा त्राच त्राचा त्राचा त्राच त त्र्वन् क्ता के त्र मज्जून दे दि पर्व मुं का स्वाप के न क्षा स के न के न का स है । **७२**:ग्रेजःचगदःवनःवीःचगदःक्ष्रः-र्वोःस्रवःत्रेकःकेःकःकःवर्दरःचगवः चलना स्रेचया स्वेचया श्रे. श्रे चाया स्वेचा (1950) यदः है। ८ द्वयः 22 वैव में तुर ळव अर्र र भु न वे नव का र ने भू न में र क में व में र त्यम् १८ हुत्यः क्षे १८ द्व**ः १८ व**्षः १ व्यः १ हृतः १ हृतः । हेराशु पड्र देव. য়য়৴৽ঀৢ৶৽ঢ়ৢ৽৽ঢ়ৢয়৽য়য়৽য়য়য়

म्ना महेत्र मृत्र मृत्

दे 'वब' दंद'वे 'वदे 'वर्ड दब' वर्षे 'व दब्द 'वे 'वर्षे 'वद' वे 'वर्षे 'व कुवायम्यान्यार्थेयाच न्दा व्यान्यान्य विकास्यान्य विकास्य विकास्य विकास्य विकास्य विकास्य विकास्य विकासियाः **वटः नटः ग्रुटः स्वाः श्रुचः पर्दः क्रेन्ः तुः श्रु नवः स्वाः (1950) स्रदेः स्वानुवाः । য়ुॱबैॱॸ्बर्यः**नवेर्यःदर्म्यःन्यम्। क्वःयरं ख्रिम्यःसु-त्सुरः नर्झुन् · · · · · र्श्वेन्'य'न्ह्र्म् सुन्'ळेव्'यॅ'क्वेर्य'हे'म्बर्व, मुल्'र्न्न्स्'स्यावास-र्ह्न् स यण् ब्रेयः ग्रेतः बद्धं तः **कः वदः यः दं र-तः र्**दः नः र्दः। रवणः श्रुयः चक्कपः क्षे 'न्यम् क्षेत्रः मृष्यरः यः न्दरः से तः न्यम् स्यायः विषयः क्षेत्रायः क्षेत्रः स भ्रुं र छेर पर पहरा बर् व र भ्रुं र प्वेब पर स्था भ्रुं य भ्रुं र स त्रिंतः सः ने स्वाः श्रुंतः भ्रूं नराः श्वाराः ग्रीराः स्वावाः वानाः वानाः स्वावः ষ্ণ (1950) মুধু মৃ 10 ছুখ. ১ ৰুখ পু ব পা ব পা ব পু ব পা ব প্ৰাৰ্থ পা প্ৰ <u> न्यम् मैराकमः अर्देरः न्युरः यह माचेन् यस् मराक्षे मराने ग्यन् न्यम् मैः</u> गर्डे पुग्रान्यग् न्राध्यान्यग् सः क्रूटानतुत्र न कुर्यानकुर् रवा । ..... 

विश्वता स्त्र ते के ता श्रु दा देव दे प्रति । विश्वता स्तर विश्वता स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स न्मरायतुषायम् 'न्यम् प्राचित्राचित्रायस्य च्यापायस्य च ন্ন: 10 क्रेयः 15 वेब क्रमः वर्दे ग्रॅंट नर्या प्रदेश शुन् केट्या वर्षे वाः ... नम्राम्यान्द्रम् कुलान्द्रातुष्य्या सान्द्राह्रा साळवे हेरा वह्रा वर्षा । । । हराहेगाकाववास्य हरा विषयास्य देः काषा क्षेर्रा हिर्म हिर्म भेर दूर.लट.लट.चक्रेच.च.की जूर.प्रुप. मा क्रुय. 31 केंब.रहेब. हिते क्ष्याया स्टार्च मा "गुराने वा क्षेत्र सार्वे दायते चर्या देते प्रदाकः" देर-संक्तुरार्झेन-वरार्विरद्धेव-राविन-केर् बेरबुदाः"ठेरार्झेट्स-हियः…. য়৾ৼ য়ৢয়৽য়ঀৼ৽য়৽ৼৼ৽ त्यायह्नंद्रयाकाचे दे ग्रीतायह्रया द्रीता म्यरात्र श्रुरावरामीयास्त्र हुतात्र सहितायते भ्रामातस्त्र म्यारात्र श्रुरा वंदर्-तुः" त्यूदर्भेषा व्यू द्रान्यण म् श्रु द वर्षव वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र वर्ष्ट्र वर्ष न्दः अधुवः श्रेवः यह गः विषः छेन् छैः भेन् " हेरः यः र्षे ग्रायः गृह यः तकतः सूः" ळ्याया. श्रीया. वृद्राची. यहा. प्रया. या. श्री दे प्रत्यात क्षेत्र न्नः क्रुं द्वर केष कर दु . दकर हे के छ . या है ता खेर छी . या वका छ . क्रुं सका .... यान्ता वन्तीन्तरावश्चरावय देवावराष्ट्रियाची तवायान ने हरा नयाई र्रान्यायदेव नयायाई राधरा ग्रुरा है । श्रुरा हे ना श्रमा श्रमा श्रमा श्रमा न्वरम्ब्युरात्रवात्स्यातुःश्चेन् श्चेराची यया न्वयान्वेरयालु **छेन् न्वेया** त.र्टा वर्षात्रश्च या महेवा पहूच में अक्ष अक्ष्मा मुया प्रेमा में या है। व्यवायात्वत् निवान्नेयायदे ने नाम मुन्याया हिन क्षेत्र मुन्या नाम त्या नवर्गान्नेर्गातु के उ स्वर्गाकेन तु श्वर के रा अन्य स्ना (1950) स्रुप: 10 क्रम: 8 वेब: विक्तान्य विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्र विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा वि

तम्ब संदर्भा शु विवेश में बर सहित्। दे विश रेश पविव शे न्यर्भा मर्केट्यायम् वार्या मेवाक्या अर्दे तावितास्त्राशुः ह्रद्यायः न्दा मर्डेद्र त्र्य या द्रवया या मु के ते के १ त्रद्र या गुरु त्र द्र त्र व्या या प्र न्स्याधनाम्बर्याः द्वारा ह्वाराम्मायाः विमाहेराः विमाहेराः विमान्याः विमाहेराः मैं-न्यं बरे ने न्यं के स्वाया के स्वाया मिन्द्रं व न्या के स्वाय के स्वाय के स्वाय के स्वाय के स्वाय के स्वाय र्सम्यः न्द्रः। मृत्वः रात्रेरः तञ्चरान्म्यः मृत्युयः ग्रीः तञ्चराम्यदः रदे.ग्रंयाञ्चल ब्रेट्याबटा चुराते हु त्यदे न्तु या बर्क्केषा क्षाया व्याने व म्बार्याया सह र न न न न महत्त्र के न दे महत्त्र स्व महा सिन महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र महत्त्र मह ন हे ব' স্থ শব্ম প্র শ্বা (1950) ন্ত্র' 11 উবা অদব ক সূত্ৰ নরদেন্য প্রাক্তির বিশ্বর নেই আব্দেশ টে উ'ন্নদেশেন ক্র শ্রীর लाश्चिन् क्षेत्र नहीं मुन्दान न्दा दे तहालाहू लाते हा अहा विवर-न्दः वरुवः शुँ स्वर-क्रेब्र-न्यं यानु-स्वववा नुवान्तर-वर्ष-वाववा <u>श्चेन् मृत्र मे ्यरः २ हेन्य पन्यराष्ट्रियानु यरायम्याया हे छेन्य ग्रुन्ः ः ः ः</u> कुरः। वक्ष भेषः इरः सिबोधः सप्ठः ह्या प्रश्चरधः सः विरः चेषः ग्रीधः दैः सप्ठः ञ्च यः बळ्य हे जुल रु ग्निव द्रर्य दया छ वे दे गा प्र र्हे वे हे संग्रा भाक्नुत्रान्द्रयान्द्रयान्ते वेत् क्षेत्राचर्द्र वेद्राचेत्रान्द्र्य वेदाचेत्रान्द्र्य 角切り買べっ四下! च्र-थान्वयाश्चरम्बरम्बर्भवर्भवर्भवरा बर्के पान्तान्वारा सेना तहारा न्या मात्राया की प्रमानन तु नि त् ग्री रि र भ्री अदा स्त्र नाय स्त्रा ग्रीया ने त्या है ता स्वता ना हैना हु .... इयासरामहेन धे कुया तु नार्वा यहेन (वु या सुमा कुया महेया र्यंता ঽ৾ঀয়৽য়ৼ<sup>৽</sup>ৼয়৾৽য়ৢ৽৽য়৽ৢয়৽ঢ়ৢ৾য়৽ঢ়ড়৸৽য়য়৽ড়ৼ৽<del>৽৽৽</del>

मनतः चेन् मानि मनत बेन् मानि मानि ने नतः गुरान् इत् वे **नबर्यः श्रीन् गृद्धार् न्राम् यार्थे याण्ये याची यादी व नवा याया या नहे वा वया या** वनरामि व धेव ले र पहूर देव सवर कुल महेरा द्वे र देव र र प मन्द्राच निष्या के त्र विषय के दिन्द्र के विषय के दिन क **&**4.%.xx4.34.6.12x.43x.31x.4.32x.4.32x.4.34x.4.44x.414x.... पस्तानु तस्त शे निहर है ले निर्दे में राज्य म्वर **9 変でない** মু স: শু অ: ঘ্র ন ন হ ব ব ने न्या ग्राम् न व्या विष्य विषय विषय विषय नैया में न या म्वया श्रीन् मृत्वरा वया यहाया श्री सम्बद्धा स्वर्मा या मित्र म्या यह गार्मा बव्यार्डे ना वि नदि स्वाय स्वाय होन् न् न्वीया पदि न नाम स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय অব্য.(1951) ম্ব.ষ্ট্রান্ত : 2 ন্য.ম.ম্ব.ম্না.ম্নম.মেইন্সাবারীম্য ····· र्टा वि.श्चर्यव्यवयार्ट्ट्रिया विचानक्षेत्रमक्षेत्र्रा विचा ন্মূৰ ঐশব্যস্ত্ৰৰ। रश्य स.चहेय.पह्रय रूय.शैच.च्या.चंचर.क. इस्.अ.ल्ट्.सप्टु.पश्चिराञ्च.जू.चेवचा.रस्. स.स्र.स्च.रचर. त्रहेग्य बेन् वळेंग गैयाळेंग्याचेंदे . दन्दा र वेया ग्वर कु गह्द ...... त्रचेचलाम्बद्धाः स्वृताः श्री इत्राह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म स्वराह्म **२.३८.५.५५**.५३८.५८.५८। ग्रुट.५३८.५४८४.४५ ग्रुट. मेलान्नराक्क कराया प्रनामिता समुका के क्रिका सका क्रिका मारा करा यदान्त्र शुक्ता शुक्ता स्वापक्राया महामान्य दारा द्रा প্র क्षेत्रातुत्रान्त्रन् ग्रीताञ्च नाराम्**द्रदे** स्यादा स्वेतामाद सः ग्रुदे ग्यान्द्र स्वेत्रता नवर है इनव जन (1951) यद है जि. 4 छन 29 हेन गुर

त्रुतः वीः इवतः क्षेत्रः तद्देवतः विनः विन्यतेः म्त्रां तः स्वादः त्रेन्तः स्वादः । स्वादः त्रेन्तः स्वादः । स ष्ठ्रम्य मन्नियः मृत्यः मृतः वी: वी: देन्य सः श्रीतः हुतः नृतः। वितः *ঀৢ৽৲ৼ৻৽ড়৴৽ঀঀ৶ড়৻*৽৸ঀ৾৴৽৸ঀৼ৾৴য়ৼ৻৽৸ড়৻৸য়ঀৢঀ৽৸য়৾ঀৢ৾৽ঀৄ৾৵৻ ब्रॅल. ब्रेट्य. ब्रट. ब्रेच. ब्रॅट. व्रेट. ब्रेट. व्रेच. 5 क्र्य. 53 हेव. त्र. क्रट. क्रेच. श्चेन् मृत्युद्रः श्चेम्यामृत्रेयामृते न्वद्रः कः कंदः यः व्यन् स्वरं त्युता ये स्ययः। **বঅ**'ব্-িল্নউদ্অন্ত্র্লান্ড্রুদা**রনঅ'শ্লুনাট্রান্ত্রর্ভ্রান্ত্র** ভারান্ত चकु'चतुव'ल'बेद'ह्नव्य'र्देख'शु'चर्नेर्'पदेखर्दर्'क्वं'व्चरकुवः..... <sup>৳</sup>য়ৢঀ৻ৼ৻৴ৼ৻৸য়ৢঀ৻য়ঀৣঀ৽ৼ৾ঀ৽ড়ঀ৽৸ড়ৢ৽৸ঢ়ৢঀ৽ঀৼ৾৾৽য়ৢৼ৽ৼৢয়ৼ৽ न्बर्याश्चेन् मृत्युर न्दर विन्याम् विकाश्चिन् मृत्युर मृत्युर मृत्युर किये .... त्रेतः परे क्रॅंरायः मृह्वाद्येम्याम्ययः विदः मृत्यायः मृद्रायः सह <u>६८.४८. वित्त की पूर्व के बूच के बूच त्रुच निव्य की प्राप्त की की प्राप्त की प्राप्त की</u> ं धर:र् ग:य:४। वर:य:ॲग्राय:य:वहेव:तृ :यदी:न्न: अ:अळॅग:र्रः। গ্রি:রিস:স্কু:দ্র্রন্থরেম:জ্ঞ:বা শ্রু:জ্ঞরি:অম:জ্ঞ্রন্থনেত্র্ব:গ্রীরা महें मगुर अवतः ग्रेग् फु देव ळ्रा "हु यदे नु य अळेग मेवा अद गु द दि र सु य इदे र दि र दि र वि र य মন্ত্ৰমে, ধরিশ, বরিশ, বাব প্র শুর, ক্রার, ক্রার, করি শুর, করি শুর, করি শুর, করি শুর, করি শুর, করি শুর, করি শুর,

क्रिन् की क्रिन् में

**ऍज़ज़ॱॸ॒य़ॸॱक़ॱक़ॱक़॔ॸॱ**ऍॸੑॱय़ऄॱशॣॱक़॔ॻॱऄॱख़॒ॱक़ॆॸॣॱज़ऻॸॕॖ**ॸॱ**ॻॖज़ॱय़ॱ 1951 **बै:२बरब:**बैद:बेबर:बैवाय:वहंत:बाबर:वदे:२वट:æ:æ:æ: **ल्ट.तपु.र्थे.क्ट.रट**.र्धु.चपु.सूथ.क्रूज.चे थे.क्रेच्य.चे दुय.सूपु.सूच. स ট্রীকামর্ব নেই মধুক নেমান্ত্রী ক্রনে শ্রুরি ইনা 1951 ম্র ব্রানা 5 **ঈঅ: 23 ঀৢ৾ঀ:《ঽ৴৻ঀ৾:৸য়**৾৸ঽ৾ৼয়৻৸য়ৢ৸৻৸য়ৢৼ৾য়৸৽৽৽ **बहुद:**>४।बैद:हन्यानमॅद्र:यर:वॅद्र:यान्याःश्चेत् नृतुद:द्रःवॅद्र:.... **२ बाजः** रो र **भु 'वै' र बररा इवरा** ग्रेज' **ब रे** व 'शुर' व है 'लु 'हु ' अ''' **२ बरल २ ३ रल ५** लॅल २ बन ५ द - क्रुं - २ सुर ३ र ४ नल २ वर ५ कुर ४ न **፲፱੮ਖ਼.੯ ਜ਼੮.Დ.ਜ਼ਫ਼ੵਜ਼.क़ऀ੶**੶ਜ਼.ૹ៝८.ৠৢਜ਼.ঀ৾৾৾.ਜ਼৾

ब्रेश-बाखवा-ळ्ट्रा

न्द्रम्यत् मते ह्राया प्रताप्त प्रताप्त क्षाया क्षाय क्षाया क्षाय क्षाय

द्वा की स्वर्वा कर के निर्मा के निरम के निर्मा के निर्मा के निरम के निर्मा के निरम के निर्मा के निरम के निर्मा के निरम के निरम के निर्मा के निरम के निरम

## 日祝·知石弘·日祝·山山·思報山·浙土· 日祝·日 「山西·福山·武·山山·日祝·山山

न्नतः स्वादः स्वतः स्वादः स्व

① वृद्गी नेन न्व वार्य ज्ञुवार्धर् न्वित ज्ञुः का न्ववार्धी न्वः वर्ष्य वेदवार्म न्युः पर्वः रेवः देवः देवः 248—249

ञ्चव दे रा रेग परे हु 'यद्भेग यावरा परे 'द्वर में 'यद्वेद रा देंर' तु अळ्या दी स्राध्यापरासुरायी त्रिते हो ना हेर् सर विया च रा स्र विट.मु.दे.पर्याशी लय.इय.इम.श्रि.प.यट.शम्.गुर.यश.इय.त.ट. **इ.कु.**षुयाश्चीबायासार्या तीयार्चियाञ्चाखेराक्षेयाची स्थार् है। य. 1883 प्र-रवः वैर.पक्र.र्जः तप्र.खं. ध्रा.जीवा वी.प्र.शे.पक्षेत्रया यन धुवा बाहिता ग्रीता हु बात म् ई बाता के ब्राम्य ता से बाता समा समा प्रमाण का विवास के विवास के विवास के विवास नश्चरयाने न सुराया न तुना न सुराया । विदास स्था <u> स्वाया - द्वे के के द्वा प्रवेश क्षेत्रा तप्रवाद श्वाप व्यव्या प्रवाद में के के त्या त्या के के विवाद प्रवाद</u> इरा दे क्या "द्रॉक प्रवादिया देवा देवा क्या विवास वारा दे दर्शे । यदःरेगः छेन् श्रेरः तु गर्वः रेगः श्रुंयः गर्ने रः तु व्यत्मयः" 🛈 वेदाः न्यायः म.केर.के.के.के.के.के.क्य.क... देशामारायायायायात्रात्रा न्यायाम्राञ्चाञ्चनाम्यात्रात्रा ১៩५ ইকাই গ্র্বি শ্রব্রের বর্ষ ক্রিক 1897 ইব্ কে গ্রুবের প্রত্যান করে।

① (প্রশ্ অ'ই'ইর' ভুদ' ন্দ্রত্ব'শ্ অব্দের শ্লুব'ঐ প্রশ্ অ'দ্র' দ্বি'''''
দ্বে' 175)

मदे चे चु स्तर हू यदे ज्ञा अ "भु छेर न हु न हु म हे द र दे द न्विग्राप्याप्याप्त्गामुद्रान्द्राप्तरायाः मुं न्वाप्याप्तान्या न्र्रतान्दि या गुवराया सुवान्यरा सर्वे नाता स्वावन सुरानी में ने न्या व्यास्य प्रत्य त्रा अव प्रत्ये यापर प्रज्ञे प्रत्य प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्रता व्याधिव पर्व तह ने न् वावयान् न मान्या हुनामान्या हेवान्या स्वालाम्य रुषान् विन् मु न श्रुव न विव स न न र स्वर संव स्वर में न न वरा न कुल हे ..... अन् छेत् वन् नि में नि के नि क निर्वतः स्यानितायाञ्चनतारे रेना छेन् दर्जा स्व श्री र वता है निर्वाण पते नगत न् मृत्र कृतः " ा न्रेस गति च अराय सुन न् नर सहन् " শ্বিমাঞ্জন্ম ইইটাস্ক্রব স্থান নিম্বান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্র स्यातः वृबाता व्यक्तान्तरः श्रदः ह्रा

विट् छुन्यारी अव्याप्त विषया व्याविषा अव्याप्त विद्यापा विद्या विद्यापा वि

मदे म देन विदेश देन देन माना माने विद्या में देन मुकेरामा मानदे " 🛈 बेवान्सुद्याया सूर्वित वेवा वे व्या क्षेत्र स्वा पर .... म्पेर्-पातुव-वर्षाश्चर्याने सुम्याले महिना श्रीया ग्रीया मनिरावि \*\*\*\* वरः देवः अळवः हमः तशुकामवरः वरः। वः नवरः महायः कराः सम्बरः M.प.इ.र. खेब. खहरी. तर्रात् क्ष. तार्या ह्या. ह्या. क्या. क्य-वि: च्या-पर्व: पहुत्य-विगवाः क्षुत्र: प्रवेशः पान्त वा वा व्यः क्षुः गान्त वा व ञ्च ल'र्चे रःश्चरःपःल'बर्दु रःयः ब्रदःचें 'च श्च चःयः वैषा अवचरा परः च हे दः" गुं पान्वव के तार्दिराया च कुर कर् राया वे ता के राय में निया गुरा यह निया नर ग्रम्या दे स्र स्य वया सं न सुन हो न स्व त ग्रम् असे दे स्य पर्वन नु राया की प्रयाप पत्री द्राया या श्री वा मालु दा श्री ता दि वा निर्मा **য়ঀ৶৻ৼৼঀ৾৾৽ড়৶য়ৢ৾৾ঀ৾৾৾৽য়ঀয়৽৸ঀ৾৾৾৽য়ঀ৾৽ৼৼ৾৾৻য়৾য়ঀ৾৽ড়ৢঀয়৽৻ঀৢ৸৽৽৽** न्दर्धनायाञ्चरान्याञ्चना च इत्यो वह व्यक्त क्षेत्र स्राप्त ने देवा व्यक्त त्तरे न्न वरी भुते न्न न्न के न न क्र ने मा विषय क्र न में का मिल ने न वर्षा म.विम.र यर. बक्क् तं. बुकार श्रुवाया यथा केर. बुकेर बाक् भू मावद ..... ୢୢଌୖୡ୵ୢୣୠ୶ୖୄୣୠ୕୷ୖ**ଌ୵୷୷ୢଌୖ୶୷**ୡୄ୵ୢୣୠ୷ୣୠ୷ୠୄ୷୕ୣ୷**୷ୄ୷୷୷୷୷୷** श्चिमा मेला ईन् हिराया हुराय हुन ने माना श्चिमा खालाया या अर्क्रमा यहा न्यतः स्वान्यां प्रतिन्तु न्यते न्या मृत्रात्रे वार्षे वार्ष र्षेन्त्राराञ्चव ग्री निबुद्ध स्वरातु स्वरी सुद्धार दिन् सव दूरम् यम् वेवः <u>र्दाः नरुषः परः कुवः नर्शेरषः ग्रीः श्रुरषः नर्शेषः श्रेवः परः सर्।</u> য়ঀড়৽৻৻৻য়য়য়য়৽ড়য়৽য়ঢ়য়৽ৢঢ়ঢ়৽ড়য়৾ড়ৢঢ়৽ৼ৽ৼ৽য়৻৽য়ড়ড়৽**ৢঢ়৽**ঢ়

①(अब्याती .यहेय.यह्य.ध्या.प्या इंट.धी.)

पहन्नान्यमार्मय पर्वः मिन्न प्राची पर्वातः हिंद्यः मिन्न हा मिन्न पर्वे न मैं अहा वि.धे.मः केथायह्यामितायक्या शि.यायह्यायायुरायह्या यय। र्च-द्र-रु-रु-प्दहें व-स्याय-रेज-सेन्-ग्री-सामकाम-तु-स-मेव म् वेव त् प्रकेष मवर मे ने प्रमा स्थान सं रेगा प्रमा अर वमा है या ग्री देवाःम। शुक्षः हवारा न्दाः श्चाः देवाःम। श्रुवः दवाः स्वायः देवाःमः चिवादयन्ः नह्रव केव रें या न्याव न वे या देय या बेर पर मह्र द्या पर है पर महि पर हिंद गुव মন্দ্রী'অর্জ্ব অ'"দ্রুদ্রাভব্দ্রীর্মান্রী'এদ্রেই'" ব্রিরান্ত্রান্র্রাশ্ য়ড়ঀ৾৾ৢঀয়য়ৼৄ৾ৼয়য়ৣ৽য়ড়৽য়ৢয়৽য়ঢ়৽ঢ়ড়য়য়ৢয়৽ঢ়য়৽য়য়ৢয়৽য়য় द्वराम्डेग्-हु-देग्-वृद्धरामी-पर्द् र्डे-ड्रेड्र-पर्दः श्रूयः पर्द्राक्ष्रपरा ह्रा तमन्यः प्रमास्य कुनः विद्याः नेवरः वयः हेवः सुरः वळव्ययः मनः सिनः । ঀয়৽য়৾৾৾য়য়য়৽য়য়ৼৄ৾৽ঽ৾৾৾ৼ৽য়ৢ৽য়ড়৽৻য়ৢয়৽ড়ৢ**৾ঀ**৽ড়য়৽য়ৢ৽ৼয়৽য়ৢয়৽ঢ়য়৾য়ঢ়য়৾৽ मुक्षान्द्रवेशः रात्पयः वयः सम्याः अक्षेत्रः मुग्यः द्विम्यः न्हेम्यः **वेः म्वरः परःः षवः हवः वत्रवः श्रुटः या स्वान् हिना हिना वियान राम स्वान देश महिना हिना स्वान देश महिना हिना स्वान ਛੇਕ**:ਗ਼ੁੈ-ਐ:ਛੱਕ-੫੫੮ਕ:ਛੇ:੫:ੜਕਕ:ਨ਼ੁੱਧ:੮਼ਖੋਕ:ਗ਼ੁੈ-5ੁ੮:ਨੁ:ਗ਼ੂ੫ਕ:ਛ**੮:···** वेन्यास्तरस्त्यास्ति सदि स्निन्यास्त्रम्याः स्निन्याः स्निन्याः स्तिन्याः स्तिन्याः स्तिन्याः स्तिन्याः स्तिन्य विवर्गा महात्र क्षेत्र द्वरा वर्षा प्रवास माने अपन लुका चेत्र पात्रका सुवाका वहेंदा स्वा सुवा प्रवा । श्वा पार्व का प्रवा स्वा विकास स्वा स्वा विकास स्वा स्वा स्

म्या-प्यान्तः म्यान्यः विकान्यः विकान्

लबा लव री. म्रेचया तर विय हे . तब या दिवा त्यर चुन के वा व्यवर तेव चुन बद्धतार्दः। बद्धवः सुन् मुन्ने तेन्या सर् निष्ठ है हैं न र्घवः नगदः इवः ब्र-इं व्हे जुलः यह्यं वितः स्वायात्रात्रा विवायात्रे वार्षात्रा र्ग्रेयःक्षरःक्ष्यःप्रयाम्यःश्चरःपञ्चरःय्याःग्रदःयद्यःहे वह्यःपञ्चरः मृदेर्यात्रियानुयात्रेयात्रेयादे प्रत्यात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रेयात्रे त्र्वेश्वयः «वर्थः द्रवाकुः अस्तरः श्रेटः यः » «र्षः श्चवः त्विर्यः द्ये । पष्ट्रयः यः **द्र-अक्-र-म्**रोर-ग्री-क्रे-अ-»«ग्रीयामानर्द्य-व्यवागुन्यन् न्त्र-पदि-क्रे-----स्र-,>श्वीयाचक्कयानरायह् रा.,ा ३था.बोयानाक्षराक्षेत्रक्षे.च.बोबूचाये. दे र्वं अवता व द र ग्री मार्थ देवा कु र अर्छ र छेद र व स्या द छें द र ग्री श्री हि द राया <u>बुण्याके क्षेत्र</u>्का स्वापने क्षेत्रायदे स्वायेन ग्री कें नासु पदेवा केनानेना न्यॅंब-तु-श्रु-र-प-तर्न-द्ग-तु-दी-दे-वळ र-ग्री-सुत्य-तु-श्रु-र-प-र्ययाधिदा ਭ ·ਭੂਨੇ ਕ੍ਰੰਗ ਜੰਘ ·ਬੇਕਾ ਨੇ ·ਬੇੁ ·ਕਾ 1913 ਜੱਟ ·ਲ ਸੁਟ ·ਕੱਟ ·ਜੱਟ ·ਸੁ ·ਸ਼ੱਕ ·ਲੇਕ · बार्यः न्यरः बहु वः नयः वे नः तुः बळेषः न्याः यने बवः ग्रीयः श्रुवः नुः ः ः ः विनयः नृष्यं चुरः विरः । चुः कुयः तुः नतु गयः देरः न्नानयः देरः वहं यः न्नीरः वः इवः देषः त्यः क्षरः क्षेत्रः विवः वेदः वः न्यः । देः वेदः कुः म्रामु श्रे रेग्व र्व्यवायाम् र्यातः म्राम्य प्रति व्याप्त व्यापत अव नह्या नवर है नरे जिन रर सव नव्या छव स हिरानवा हराया

ञ्च याञ्च द्वेर नहु नहुवा केव संदे द्वन ह नवार में रका र्व र र नु के र देग श्चिम न स्टा अव न स्या अव स्या रेगा स्र र हेला रेगा गवरा स्र र धेगा पठरा हुं गरा पहुरा ग्री स्र पा गु केंद्र **ब्रॅ**ॱ५८. कृष्ण अप्ता क्षेत्र क्षेत्र प्रमुद्द श्रीट म्लर प्रमुद्द प्रमुद्द वि भ्रम्यः न् श्रेम्यः म्ययः म्ययः म्येयः म्हेम्यः मृह्यः ग्रेयः श्राप्यः न्यमः । बहुदि न्या दें रातु : बळें वा :या से : हु रा :यवा : छंदा : यदि : बळे दा : व दवा : र र र र र र र र र र र र र र र धन्त्रः अवः द्वरः श्वरः न्यः न्यरः पद्धन्यः ग्रेः न्तः दहेनः न्ने न्न न्रः। ख़**ज़ज़ॱय़॔ॱ**ड़ॱॿॺॱज़ॱॿ॔ॱक़ॣॱॷॻॱॸ॔य़ॺॱॴ॓॔ढ़ॴॱख़ॖ॔॔॔॔ॱॶऀॱॻऄॣॱॻॿॴॱॴॺॸ निना ताञ्चन द्वेरा शे झे निर्मा हो नि चु निराक्ष निना सर के ना सर के नारा ता ना अव.पद्या प्र.कु.ज्र.च्र.पर्व.की इर.चेष्याच्य. १६ पान्नेयाम ब्रेर.ब्रॅट.र्टर. हेथ.त.पद्रय.घचय.हेथ.तप्र.श्रेथ.थे×.क्र.क्रथ.केब.के. परुषाधेदः" <sup>®</sup> वेषाम्यायानः क्ष्राने वषामञ्जरान्यामान्या विषाञ्चदः इयान्तिराल्येयायकराष्ट्रीयार्टा यमायुर्धर्यस्ति। श्रदाह्या

ढ़ेंतुं ज्ञून देट खूँ र वर्षे या यह व सुवाया व व पेट्या है वाया व वे या वया । वित्रामक्षेत्रम् वित्राचित्रम् वित्राचित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् न्राह्म द्वारा के ता हिंद मैला ु म्लारी त्याँ पद रीमा होता होता मी न्तु त्यीद देवा की लाज हा है । नहुन् भंदरासु सुन्यार न्व न्ये यान वेया के या स्वरास्य न्य न्ये वा सदी ।।। तर्ने नृः विवासितः केरान् राकुषान् निरादियाः दर्शाः नान् निरादरा स्वास्तरास्यः ब्दिन्दर्भः स्टरे हु स्व (ब्रिक्ः 1923) यूरः वृ स्वरः वि स्व नि रुव चि र्वे देश श्रुव वट प्रमु र रहे गु मु ठेग ( वे श्रे र रायर सम्बर्ध या मा न्यर प्रवेट्यः) व्राप्त स्थयः पर अपया म्यर पहेर् चर प्रकृषा मेयः स् चर्यः सं. चेड्चे प्ययः बर्ट. चेन्या क्षेत्रः र्यट्यः सङ्घ्नाः ची. रामायः र म्रह्यः द्वराहे तर् दे दे त्वरा सुग्या त्वरा विवान । पत्वरा महारा स्वरा विवान । पत्वरा विवान । पत्वरा विवास । <u>฿ฺ</u>๚๗.๔๗.५.฿๘.๚๙.๔๙८.೫५.๑๗.๒८.८.๛.๛ฺ๛ฺ๛ฺ๛ฺ๛ฺ๚๛....... ① य स्वायामधीत. थे. जुरे. तपु. क्षेत्र. कुरे. कुरे. तु. प्रेंत्र. वे वर. वहरे. तत्. बर्दन् नकानुकातन्तरमाना ने वावका विकास तस्व-पवर-स् स्वायाग्रव-१ वियाग्रव-१ श्वराहे सं ग्राययार्व गृहे

①(इन्य.स.४४ इ.स.४०४ न्या.१४४ के.स्.५८ द्य.४४४)

स्य. श्रीय. ता. ताय. य्रा विष्य. वा. त्या. य्रा व्या. य्या. य्य

क्रम् म्या क्रिया क्रि

म्नाया स्वाया के क्षेत्र स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वाया स्वया स

①(हॅग्यान्ह्राभ्यास्याधेरान्द्रपत्रान्द्रा

② (ग्रव रमल अवामनर वहन रंग्य रेगरें सा 190)

त्राच्या " (1933) प्रमः म्राया अक्ष्या यस्त्रा स्वरा स्वरा

मृत्स्य स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य

① (न्द्रःरम्बः अल्य मन्दः यहनः देन्यः देनः देवः 191)

वावतः पदेः न्वरः सं क्रान्ते तः वार्षे न् पदेः निशुरः स्वाय वास्ते न्वः त्रवार्श्य अव क्षेत्र या गवर अन्य ग्री अव गलर में र जि ग्री वाराया वाराया र्ष्ट्रत्वेबलःत्तर्भेतःर्द्र्रः सुदेः**वे**ःस्ट्रः≫≪**७वलः**धेष्-वर्षुदःद्वेटःन्टःः सदः त्वाः क्ष्वः समयः दयः मन् न्यतः वृतः विनः क्षेत्रायः युः मकन् सः देवः .... पदे भे श्रेग »«धे कुर स्ट्रेरे स्ट्रेरे स्ट्रेरे स्ट्रेरे स्ट्रेस स्ट न्द्रितः वृति म्नाः कुद्रः अद्वेतः यदेः द्रम् नेन्तः य द्रेतः यदेः वृद्यवः धेनः अ «ॳॕॖ**ๆॱॿॖढ़ॱढ़ढ़ॗॎॸऺॴॸऄऻॱऄॸॱॸढ़ऀढ़ॱढ़ॸॕॸॱढ़ॾॕ**ढ़॓ य़ॖख़ॸॿॾॸॱ≫**⋞**ॸॸॗॗॸॱ <del>ৡ</del>ৢৢৢ৻ৼৢঀৣ৻৺৻৾ঢ়৻য়৾৾৵৻৸৻৸ড়ৣ৾৾৻ঀৣ৾৻৻৶৻য়৾ঀ৻ৠৼ৻৶ৣ৾ৼ৻ৠৼ Aष्ट्रिरल'न्ये'मञ्जल'मः दॅं' अर्कर'म्लेर'ग्री'क्ने' अ'»≪ञ्चन'ङ्कॅर'कुल'मः''' **ড়**৾ঀ৾৾৾৵৽ৼ৾য়৾৽৴ৠ৾৾৾৴৽ঢ়৽ৢ৾৾৾৾৴ৼ৾৽ঢ়য়৽ঢ়য়ৼ৽৾৾৵৻য়ঀ৾৽৾ঀ৾৽ৼ৾৽৾ঀঢ়য়৽৽৽ क्रेट:भ्रेग:वी:क्रेल:दर्भ:श्रॅं:ब्रह्म:त्र्म: क्रु:क्रेल:देत:ख्व:ब्रक्टन:यदे:दं**ट**: इर.म्.इरा.पम्.पर्सर.प.य्ययाईयापट्याःश्चरायास्ययायाश्चरातिरः तकर्-ष्रव-नग्य-देव-नश्चर्य-रेग्य-र-द्वेयर-वर्धेर-नश्चर-ध्व-सेव<del>---</del> है प्रविव सानुस्र स्पर मावका भेरा "ण मावव ञ्चव के राप्त हुव प्रदे रे रे

① (हॅन्यःन्ह्राञ्चलःधर् वहनारेवःर्यः51)

① (क्रेन्य-नह्र-अप.र्ब्य-जूर-पह्र्य-र्य-र्य-७०)

मते द्रवान्धुंन त्याव हा च्या पर्ने नाट से नवा बाह्य दे नी

वै रे रे रे पि वै व पहें प्राची व वि प्राची वि प्राची व वि प्राची ळ्ळा.प्रच् में क्षेत्र में प्रह्म द्याया अधि क्षेत्रण डि. सरार्म तरास्त्र. इया विषय के अव इया महेया देवा ने मव निषय है । मि अव में या श्चिरः वी श्चिरः र वे श्विरः य द्वेष्ठः र प्रायः र य र र र । यह अ र र य । इं र वि र्रेल महीर राम श्रीर मी श्रुव र्मी श्रुव राम श्रुव । यर तर्म मा मा स्वर् र्में व ग्री श्चर र्मे द्वर में या कें या कें या निर्मा कें रहे मा के रहे में र्ने ड बलाया क्रे कें कुला छेर र नें द छै कि र ने ने क्रे य नर बायला यक्षेत्र र ग्रायं र न स र स क्रायं स्था है ते ख्रायं र में प्रायं र में प्रायं र स स स स स स स स स स स स स स स हुल:ब्रेट:बै:केल:र्बे:इबल:र:केल:गुन्या पट्य:ठव:र्बेव:ग्रे:ख्रव: न्ने न्मल स्व कुल अर्क वा क्षे कें कें कुल के निम्ने व कें के कर ने के कि इ.थ.५८४। ५३४,५५५,५५५५,०३,३४४,५५,५५६,६० इलरी में केल ब्रीट ने ब्रुवर्ने कें प्रवट प्रस्व मा विन कुलर्ने वर स्वर रवाक्यारी अवार्षे र्पाया स्वापस्वापस्वा देवा के के क्या स्वी अवा न्ने भे नेता मुला सर्ज ना में रान्न ना केंद्रा है दे हैं तान्ने हिला विस्ता केंद्र पर्चेर.परुथ.रेटः। क्षेत्र.तर.चि.श्चेत्र.श्चेत्र.विच.चक्षेत्र.क्षेत्र.ग्वेतः ८८.। धि.श्रव ब्यानव.क्ट. व्रि. क्रव.क्रव. च्याचा व्रि.श्रव. प्रथा.क्रव. प्रया.

कूथा र्याच्या या श्रव पाया क्या त्र प्रेय भिया विश्वा या श्रव पाया क्या नक्षेत्र पहेत्र क्रेश गुग्या ञ्चव क्षेत्रापर वै : व्यव ग्रार व व व प ग्राव र्चार.सेब.क्र्याया श्रव.क्रयाचर.चु.ल्रब.चर.चेल.विच.प्रवासप्र.क्रर. न्यॅव केव यं बहुव रन वॅर तृते बर्चे र कु न ख्वा वेव है कृ न न वेव " श्चवःहरान्त्रीः नम्भवः मः तहेवः श्चेदः श्चेतः नश्चयः वहंदः मः यः वद्। देः द्याः <u>ঽ৾৽ঽ৶৾য়৴য়৽৴ৼ৽৸ৼ৾য়ৼ৽য়য়৾৾ঀ৽য়য়৽য়য়৾য়৽ৠৢৼ৽য়ৼ৾৾৾৴৽য়ঽঌ</u> अ×. श्रुथा. द्रवा. तप्र विट. यः च हे **द** च द : श्रु : ब रू : यः दे व : यः द द । सुन्यान्यान्येन न्दर्भन्य वार् के जुवा में दर्भ त्ये वार् के प्रम्य क्रियास्यान्दात्रस्यान्नीरानीत्वत्यान्नित्यान्त्रत्यास्यान्त्रान्त्रत्यास्यान्त्र नःवर्देवे ब्राम्यान्यर्गम् अष्टि व्राप्तः व्राम्यान्यः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व बुनःसर्वः वाह्नन् हेलान् वोत्रात्तात्त्रात्त्रेन् नव्यात्त्रात्त्रात्त्रात्तात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त यर-रदाने कदावाराम्यादा देवा हेवा द्वा लु प्रमें वाया यावारा हा

स्त्रम् स्त्रम् त्र्रम् स्वर् त्र्रम् व्रः स्त्रम् स्वर् स्यः स्वर् स्वरः स्

## ञ्चमल प्रस्थ,≫ख्यातपृष्ठ बरामञ्ज्ञम्यान बराखी

## 2. うっちゃっかっます。 うっちゃっかっます。 では、 では、

वापणः सदीः न परः सं न ने । तत् न क्ष्यः तथे या वर्षे न ने । वर्षे व वर्षे व कु.यपु.क.५च.भूट.वेशुराञाः कूट्याश्च.येव्यात्तुः प्र्ट्याव्ये प्र्ट्याव्ये व्यास्ता ॅबॅ.बॅट. ७ थ.वे .चपु. ब्रॅट. क्र्र २.लच. बयट. क्रबय. क्रेट. बपु. रु.चे. च. प हुर्ब. . ता.क्ष.जब.क्रेज.सू.ब्रेयाता.र्टा तीयात है.वे.च.ब्रेया.ग्रे.यंयायी.ही. Ă· 1903 ইন্:মন:বুদ:নই:শ্র:মই:ক্ক:র্ম:অম:গ্র:মই:র্ম:রা:নর্নুন: ॅ्रम् यदे यह व .पः रेगः द हेवः द्व यः कुषः वे **राः** यदे.बर.श्र.चक्षेत्रया न के बे थी । के बे के अप अप र 1905 भेर हिला स्ट व्यादिया है या प्राप्त स **त्राय प्राय वर्ष के वर्ष वर्ष के अपने के वर्ष के वर के वर्ष के वर्ष** बाबर्द्घराष्ट्रेर्न्बाया ग्राहेर्न्छे विश्वरायय। "नरावार्यात्रावहेरासुर्वेन म. इर. मी. प्राचित्र प्राचित्र प्राचित्र भी प्राचित्र भी प्राचित्र भी प्राचित्र भी प्राचित्र भी प्राचित्र भी प নদ্শা "@ ইকান্তুদানাৰীন্দ্ৰীন্মা 1934 শামিৰানকানীৰকান্তীৰা तरेन्'चुल'न'मॅर'म्राया**ढ,'पॅरा**यॅर'त्वु द्राया बहुं न'डेल'ग्रेल'गुर'''' हॅम्यानुरायका ब्रेट् बेट्-बेट्-बेट्-ब्रायम्याया धेव वेँ।

वित्र त्रुग्या प्रयाण्या क्रिया त्रुप्ता मृत्या मृत्या स्वर्णा में त्र्या क्ष्या व्या क्ष्या मृत्या स्वर्णा में त्र्या स्वर्णा में त्र्या स्वर्णा स्व

①(म्बुराइंस नेम: न्र: यदे स्वरं न्य: यदे : सं कुल वर्नर: मध्य:)

ॐ(कुलाविश्वरादेगानवान्त्र्यं क्ष्यान्त्राच्याः क्ष्यां क्ष्याः क्ष्यां क्षयाः क्ष्यां क्ष्याः क्षयः क्ष्याः क्ष्यः क्ष्याः क्ष्याः

मद्रान्ती न्याय प्रयम्भी वा ने म् मान्या श्रुप्त न्याय स्वाप स्वा

त्रवायम् अन्ये स्वायम् अव्यायम् विवयः स्वायम् विवयः स्वायम् विवयः स्वायम् विवयः स्वयः स्य

रट.कब.ही. कुं मानरा मा दिना है प्रजीत पह के में व प्रभीव पाया मरी रमकामाह्मवकाताः श्रूमाह्युदानुन् वनकानुः श्रेषा न्ये विषानुदान् श्रृंष्वा म्बर्म्स्य स्ट्री मार्चिता व्याध्य महित् तु वी तुर्मा विवाधिवा विदु:इव:रश्चरश्चरश्चर इ.धर ध्व हैनयः चर्च व्याप्तियः विष्यः म् व्या मर्था नेवा नवर सेवया कि. बक्ब. रूट. क्ब. त. रूव चढ्र. झे. र राज. दनर नदे क्वं व्याग्त्व याने केट केट क्वं वर्ष के व्याग्त का दह्य न् चिर्यानवर् न्यया वह र् प्यते र्वेर्या या त्वादः विवा । य्या या वे या ययः न्ये क न इया कृत वित्या प न्या न्या न्या वित्य व **इ.५.७८.प.म.चय.१५८.५००.५५८.चिथर.पी.५५०.५५८.१८८.** यदः यदेवयः सर् उरः। देशः क्रेदः यदे विदः यः द्रेदः शुन्यः वक्रुरः मह्याः गुः स्टा त्र्याः केवायः प्रूटा परायहेव मवतारे राम व्यापाराः र्र्याः लर.र्बा.सपु.रुबाय.बंबर.बुय.स्.स्बा.बाइर.सपु.हुर.र्धय. न्दर-क्र्यानी विद्यायर वेनवावर्त्त्नी प्रमुखाया हु नुरासुरा ही वि 1927 वॅर्'रम'बुर'पङ्क'र्जुब्'पदै'बे'पॅस'पॅर'वॅर'र्'रु'र्बुव्'व्यार्रः'' **इब**न्क्षःत्ररःबद्दाः क्षरः स्टान्म् दावळेष् देरातुः देता पर्वे छियानुः चल्क्या दिर. दे. स्ते. स्वार स्वार श्वर हो स्टर र हे व न व रा स्टर बैकानञ्जर्भायाः बुकाराः क्षेत्रः या विदानाः यदे । क्षेत्रः क्षेत्रः विदेशुः यक्षेत्रः विवाः । । <u>ૡ૽૽ૺ੶ਜ਼ਫ਼੶ਖ਼ੑਫ਼੶ਜ਼੶ਜ਼ਜ਼੶</u>ਸ਼੶ਖ਼ਫ਼੶ਜ਼੶ਫ਼ਫ਼੶ਸ਼ੑਫ਼ੑਜ਼੶ਫ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ੑਗ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ਜ਼ म्बर्ध्यात्र्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः वृत्रेतातुः वा वाकेतायः शुप्तः पर्ते वा या इट- कि. तथा वृष्ट- मु. विवाधा रुवा क्री. क्षा जा नाई ट. तक वाया क्षेत्र चावट.. माया बन्। श्रम्याने मातृ त्यते म् त्या पर्दु मात्रुया मा केदा या कंदा श्रम्या

न्तः बुनायः वैषः कंनाय पयः पगादः पसन् छेषयः नें नायः न्तः परुषः सद्यः क्ट्र-मेंग्रायइ पक्रवादे त्या के प विवादि । याव दार्मे गायदे प्याद बर्गन्न क्रेर तेग्रा श्रुव वहर् यावठता दे व्यावहराय वहराया वरा विषयः अने यः केव दः मवदः। दे वयः द्रयः स्व त् व्या शुर्यः शुः गुः অম:এ্ৰাঅ:ৰাৰ্ম:নেই:ইন:ডিম্অ:য়্ৰম:য়ৢ'ঌম:য়ৢ'ঌম:য়ৢ'৻ঽঢ়ৢয়'ঢ়য়য়৻ঌ৾ব म् करामी न्ये कान मलवानम न्रायन्य नु न्ये प्रमेश रम मु अर्के विदानी द्ये कि दिने कि दुने स्वार्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्व रेग ययाय सु समुन् न्यान नरायान्त नर्गे होता सर्ना परा मरी राजा देंग न्र अन्रकान्यायावरायस्य वितर्भे मुन्यविष्यये मुन्य हुन्य रेग्राणी अर्थे पर हार अर्दे वा पर पहरापदे प्रिन्तु तर विरागिता थे वृष् क्रुं र द्यंद र्षेष्वार देषे पदे र वेषा ग्वेद केद य इयस रूट द्या दरुष:चल्ना:पर्याह्मद:बी:क्रुब: ग्राम्य:ध्रम्य:पर्कु र:घ्रिय:प्रेम्:ब्रेम:युर्ना द्याया दे के दा श्री क्वा व्या व्या श्री दि स्वा के दा स्वा व्या श्री विद्या है । द्वा स्वा स्वा श्री विद्या ह बळ्च ग. हु . शुर्र - धारे वे . हे . हे र . हुं र . हुं र . हुं र . हुं र . हे . हे . र . हुं र . हुं र . हुं र रव.र.श्रैय.चेशैरय.तर। "पर्यय.श्रेरय.भ्रे.बर.वी. **\$**\mathref{\pi} \cdot \tilde{\pi} \tilde{\pi} \tilde{\pi} \cdot \tilde{\pi} \ **क्र**याम् । देवाम् वितास्य में देवा मे देवा में देवा मे पठला की 'दिहें दे में 'चर 'खर 'हें न्'रा म कु में ता के 'खे मिला पदि है वा न ही न्'

ॻ(न्ने त्नुन्रक्तारवेला कुः ह्नाला नह्ना न्न सदे इरान)

र गे.क्रथ.र्ब.स. ग्री : इता क्षेत्र मे निर्मा करा स्थान स्थान क्रे.ची.थर.पर्वेचेथ.सेपथ.४हूच वी.केम.श.र्र. इयार हूर.प्वेच.चाच. वीयायक्षेत्राचे त्या द्यान्तर्मा नियम् नियम् नियम् यु द्वा यहेर झे बर बहे । यह र है । यह र है । वि:र्वे:यवेतायर तवेतार्दा वर्ड्डाय र्वे रिवेतायर र्वे त्या विराधितायर विस्तितायर विस्तितायर विस्तितायर विस्तित यर.मुचयात वयाच्यीर.मचा.कुर.म्.चविषु.पुर.म्.म.सेर.धैवे.कूथावेषु. **द्धरातःर्ने.क्रथःग्रीःरह्यं.ग्रं.ररःग्रेजायःव्र्यायग्रे.लरं.प्रं.प्रा .....** न् चुन् क्ष्याक्षेत्र स्रि स्मान्याक्षेत्र स्वाराक्षेत्र स्वाराक्षेत्र स्वाराक्षेत्र स्वाराक्षेत्र स्वाराक्षेत्र न्तु : अ: नन्य तर्वेय न्य: नठर : वेनव: तत्य ..... न्ननव: नेर : गु : करः म्न.च्यापः म्नेट-वयः व्यावयः यः शुः वे ययः यः ने या यः यः र यः ने या गुन्यात्यावी की वन क्रिन न्यं के लि. ना ...... वित्या ने वित्या ने वा के ना स्थान बह्र-प्रतृ ग् गुर्म न् मे केरा देव सं के देग परि पर्ध पा क्रेव परि स्वाया क्षेत्रानेते:नर्मे**र:सं** से छ न क्षेत्र न्येत्र ह नतान्य वाय कर्ने । के निश्चरः तर्भाष्ट्रात्रेर्परम् स्वावनामी तस्र रात्व्वापत्वेता.....र्मेषाया सूरा पर्वन ा क्रियानयायायाया व क्रियान व न्रायः देना पहर चुर पर र प्रताल अर्जर मु पर र या प्रताल नि हेना हेर्ररवा म्वर्रर्भ केत्र राज्य स्वर्रा विमानम् वास्य

<sup>(</sup>रिने तर्त्त क्ष्य प्रेयाची मं चुत्र है प्राप्त मे निर्मेश 39-45)

५ ५ मिश्रम्या "1 देव इस्यापत्व देव गुम् मन्द्रायम मन्द्रायम । रैरःविरःषेषः र्वेषः वृत्रेरः सर्दरः यदैः भृः यदैः सुः व्याः देः दः तुरः स्र्रः सुयः **য়৽৾ঀ৾৾৽**৽য়৽য়ৢৼ৽ঢ়ৼ৽য়ৼ৾৾৾ড়ৼ৽ৼৼৼ৽৾ঀ৽য়য়ৢৼ৽ৼৼয়৽৸ৼ৾৾৽ ब्रुद्र शुः क्र्र : क्रुद्र : देर : क्रुद्र : द्यारी पर्या के प्राप्त के विश्व कि वि ② विश्वादिन्याने विष्युमाञ्चराची निया का दिल क्रिंत क्रिंग सिन् सिन् स्वाप्ता । त्म हु गता इर वा वर्ष र गहार मा में का फेर के रा दे हैं में ग द का हु गता ग्री दे त्र दे द्राया स्वाया पा दे त्र वाया त्याया यह व त्र विष् ब्र-प्रवेद-र्वेष्यःश्चर्यः सर्म्यः मुद्र-गुर्वः स्व रेष्वः र्वे कः वः त्यतः नियाम्दराष्ट्र जिस्याने मिदालास्यर देवाया की लया नु त्या पा पने वाया न्या बुयानहराधरान्यरावळ्ययास्यापरा ग्राम्यायाया वा न्राहिरासु बर्धर्ना विवाया साम्रामा साम्राम् स्ति साम्राम् स्ताम् स्ताम् स्ताम् स्ताम् स्ताम् स्ताम् स्ताम् स्ताम् स्ताम न्वेर-द्व-प्रते न्वर-प्रन्न रे-प्र-्तु-स्निष्यः हेर्-पः हिन् प्रद-प्रते .... व्यवारा के दे दे वा किरान्त कर कर कर न्तर स्था स्थान के वार য়ৢ৽য়ৢ৽য়৽ৼ৽ঽ৽৸৽ড়৸৽৸৽ৼয়৽য়ৼ৽য়ৢৼ৽য়ৢৼ৽য়ৢয়৽য়৸য়৽ৼ৸৽য়ৼ৽৸৽য়ৢৼ৽য়ৢ৽ড়৽৽৽ इर्ड्निल्निक्रात्रात्इराध्नायान्त्रावावरान्तराम्रामी विदान्ता मु अव ग्वाय ह्यायय। मु मार प्रियावट सायद्य मुयायदे प्रस्ते न 

<sup>12(</sup>न्ने न्द्रन्ह्या दिवा क्रिया में क्रिया मरा मर्दरा पहुला)

इंबारी बैरा पृथा र.थे.जयारी इंस्ट्री पडीर पष्टा प्राप्त र्दे. ロをす、ログロ:美田の、別イ、四本、四本、別・万 は 別人、り、日本、「口頭」へ、重な、「切・…… मः वर् यर रुदः दे वावतान्यर यदे ता श्चिमः यर से विवादा यदे रे या ।।।।। क्रुकाने क्रिंदराया "न्यव कु विन् की नर नु क्रिंद्र नदे कु त्युया छी । न् कॅरल व र न्र र अव अ नु कु न्य र या थे नता न के ला " के ले ला लुला म.चल.ग्रीयायवेया रय स.चंट.ग्री.क्रियायाङ्ग्राचयटातर्ने.क्रेर.झट. क्षे**। "**ने'सर विं ते त्वांत्र तु विषात्र ता कु ग्वर कु ख्या नेर स्वर विषय श्चिमयान् क्षेत्रामायान्यमायम् विमान् नियान् श्चिमयान्यमाय स्वर्मा श्चिमया वृंच. हे. ब्रेच. हे. कथ. थ्रा " वेय. रटा "ट्रे. बर. व्यं व्यट. वं वेय. वं वेय. वं न्दःदेन् चनः तथवः स्यान्दः। दः श्चेदः र्यम्यः सुन्दयः पञ्चेदः य ब्रामा व्यापायहे निर्मान्य विष्याचे विषय स्वर्षा विष्य स्वर् तर्ने हंग्या विरायन्द्रियायर बरावे तत्त्र विराय विराम्नर क्रायताक्रेर मेरायायाय निवासिक दे द्याय विवा द्रायति सुर्वा स्वा प्रवृतः ने यः वर्षे 'ददेव' प्यदः पत्रदारः पहेव' द्वेव' वे दे 'दे 'देवायः ग्री 'वदः

①(美山紅山美人、七山、竹、岩人、山、

प्रविन्ति चित्तः स्वर्यः अवर्यः क्षेत्रः विन्तः वि

या.श्रे.चया.क्रं.इया.श्रे.च्छं.च्छं.च्छं.च्छं.च्छं.च्छं.वया...
रा महत्यस्य स्वाच्या स्वच्या स्वाच्या स्वच्या स्वाच्या स्वच्या स्वच्या स्व

<sup>ा (</sup>कुल विश्वतः देव-ध्वः प्रमूनः पर्वे न्युक्तः कुन् न्युकः कुन् न्युकः कुन् न्युकः अन्यः । धरः देवः देवः द्वः ७)

**७(र्वे ५५५ क्र. ५३० मु. नशुर हैं बाक्ष्म श. ५२. देग ५८. यं.)** 

① (শ্র ্ব: ক্রী : হ্রম: প্রশ্ব সং ব্রম: ইব: 40)

②③(美可切、口養了、「有」口及、養工、口、)

ष्ट्रेना मन्दरस्यादेन<u>। इस</u>्याप्ट्रवाद्यायाचा स्वराधित स्वराधा स्वरा **र्गामी ऋराग्री और प्रार्ट पेरा रुखा ग्री पर म्याया अवस्य मा इ**र-५८ ५-६८ नवराईयात्युर-८-४न्य देंग्यईर-६व-क्रीट-६व-५ बन्नतः नृष्वितः पद्धन् श्रीका द्वारत्वेत् नृतः। यायानः सुव द्वीकानी द्वारा स्वार हे.हे.रनथ.ज.संबेराचपु.सह्रे म्ड्याग्रद्याग्री.श्र.लट.च.चेश्वापह्र्या.... स्वयः बह्रं सूरी द्राजिरः मैं स्वरः रे स्वेष्यः स्वयः वयाधवान्द्रात्रस्यात्राचिष्यारान्द्रः। देःश्रवःश्चायाः ठवःश्चीः ख्रायाःशुः बर.त्र. हिंद्य. श्रु. ववर. ५ व ग. ग्रु. । दे. द्वा स् छि. व्र. द्वा पर. वर. वर. धेव र्वेष्यर प्रवर्षे त्रिव क्षेष्य प्रवेष स्र हेष वी वि वि क्षेष्य स्र वि । हॅं व : तथेर न वेवा या हेर् : वेदा । व्या दिन हिरा विदारी केरा 1934 वेर् : वेदा ট্রি.দ্র.মাছ না.বাথা ষ্ট্রী-ম-1945 ম্ব-প্রম-এ-ম্ব-ম-বর্ণ-ম-ম-ष्ट्रं त.स.ट्र.चर्ड.चेडेय.२व र्ष्ट्रवी.चे.चे.स्वेयाय.घर्डे व्यव तट्ट.चर.ट्रेय.ड्री.. मॅ 1938 मॅ र कु म र कु श्व स्वर र सु त्य र द र र म न स्वर प म म स्वर ग्रह्ने र्व्यावा अवया रु. र्यया वा श्रुवे । मर्ज्या विष्या विष्या विष्या श्रमण नेते सुव ळेनाय में ज्ञम ने निम्म केवाय राष्ट्र में निम्म केवाय राष्ट्र में निम्म केवाय राष्ट्र में स्.स.प.स्थान.स्वाय.चेर्द.रेय.ग्री.मे.रेन.स.क्रेर.स्थय.यहता.क्र्य ... यः वुरुष्यरः वृष्यः विषयः विष्यः दे द्वाः विषयः प्रः महिष्यः यः यः सद् **के.प.बट.त्र.चेन.चेन्यकेट.वेट.वेच.त.वेट.परीच** के.िट.कुर्व ब्रुट्ट. **ब्रे**श श्रेयः देतः होरः वीः नायायः द्वां नायाः शुः श्व नाः न से । हः । एरः चुः नः होनाः है। नूरे. कुरें. पर्वे पर्वे अस्ट. २ था ही पूर्टी अवाप होता ही.

त्र्यायः प्रत्मा १ विष्यः व्यायायः विष्यः विषयः विष्यः विषयः व

ने न्वराश्चर प्यत् मृत्र ने विषय प्रत् मृत्र प्रति मृत्र प्रति प्रति मृत्र प्रति मृत्र प्रति प्

श्चित्र्त्रत्व्याची नर्व्यास्याचित्रत्त्राम्याद्वारा

बूर्यान्तः बूर्याशुः शुः नदेः गुः धरः वेगः शुरः व।।"

<sup>🗓 🕮 (</sup>ज्ञुलाम्बर्यः नेनामदेः स्नूनः नृष्यः ज्ञुनः नृष्यः चुनः व्यान्यः नेनः ३१ — ३३)

र्निम्ब् म्य दिर्शेर्यर कम्य या सक्षेत्र श्री तर्

पश्चरके स्वराध्य स्व

मुगनत्वाकारम्यस्य।

क्षेत्राम्यत्वाकारम्यस्य।

भूर.विवा.च कुवा.(१वुच.एवा.धै.) पश्चर.बैद्धाःप्यातवादात्वाराः स्थाराः र्न् गुरेर ग्री श्रूर र रे र्न् व के बर् र ब्रु बेर हिन ROYAASIAT IGSOGIET VO देयाचु प्रतिः ह्वं प्रतिः द्वा स्वा मुक्ता म्या मुक्ता मार्था मुक्ता मार्था मुक्ता मार्थ चेर-**व्या**शुःखःदेवे बेः वैषाः वैषाः कुः यूरः श्रेन् युट्र-न्दः প্রথাস্থান্যা त्रेवान इराव्याविराखारेराम्द्वात्रेवानु केवा इराक्षात्रा लट्राव क्व ब्वराय रव राष्ट्र वार्व वि च इरा च्या अर चर ना नर केर षा-देवयाया-दवारी वाराधेदाची श्री दिवा वीषा ववाषा इता छेदा से वत्या न्दान्दान्वराम्द्रालु प्रकास अन्यान्त द्वासन् केत्रायात् अन्या व्रमयः श्रीरः विषः ग्रीयः मवेषाः ग्रीरः। श्रीः म् मः मिल् दः मीयः तश्रीयः मिल् दः लबालिहरायासुलाचराचगावासँब र्यायाने हेर बरायेनवारारा र्वेद्यं हेते.श्रु. देवा व्याप्तं स्त्रा केत् प्रत्यं व्याप्तं व्यापतं व् मः विषः मुः मुद्रा देः देवायः स्वायः सः यहत्यः विष् नगतः व्रंतः गः वृत्रः विषयः व्यः व्रंतः व्यः व्यः **व्यक्तिः** इत्रा न्म्यायि विषया प्रभूता त्रेष्ठा भेषा व्यापा सुतारा ...... प्रणा मारा सुरा वायात्वाव इया गुरा ठया दहें ना यहं ना वा डेवा न वाया न हरे ही ম' 1945 র ব্ প্রত্ত ম' বের্ব ক্র লব ব্রু র্ব নের দ্বর্ব ব্রু র নির ক্রি নির ক্র নির ক্রি নির वेनबःभैरः। र्डीवःहैः पठवः कुयः रैरः खुन्यः पयः रेः ऋः श्चीः सः 1914 स्र-विश्वयःरटः प्यांपानदेः स्रेयाः ने स्र स्री : स्र त्यान सं स्र यः च्या प्रति । स्य

<sup>्</sup>री (क्ष्यं प्रत्यं विश्वतः विश्वतः विश्वतः विश्वतः भाग्यतः भाग्यतः विश्वतः विश्वतः विश्वतः भाग्यतः भाष्यतः भाष्यतः भाष्यतः भाष्यतः भाष्यतः भाष्यतः भाष्यतः भाष्यतः

विष्य सुर्धि याधिया में स्वा पित के के ता स्वा के ता स्वा के स्व के

①②(हॅ नव प्रह्म र्नापते ह्रमः अत्रः क्ष्रियः विषयः वि

<sup>®(</sup>द्ये पर्व क्र्याप्त अपा मे द्या वर्ष महामा में प्राप्त क्रा

खुन्यहर्न्सः विः चुर्न्ने विः केर्न्सः केर्न्सः विन्नः विन् विन्नः विन् विन्नः विन्य

> "ठ:२८ म्वरायञ्चर छुर्यः श्रेर में द्व। इ.स.च्यायः स्वर श्रेर श्रेर स्व। इ.स.च्यायः स्वर श्रेर स्व। इ.स.च्यायः स्वर श्रेर स्व।

ब्रान्य में क्रिट्स न्या प्राप्त क्ष्य क्

①(美山か、山薫上、上山、口は、岩上、山、)

য়्वारान्ध्रतः व्यान्य स्ट्वा न्वारान्ध्रतः व्याप्तः व्यापः व

द्यान्यान् व्यायक्ष्यात्।

ने न्वयाविद्या सुन्य श्री त्या स्वया स्वय

শ্বশক্তিব দিশ অন্সূত্ৰমের অবাধিশ স্থান্ত ক্রিক্তির দ্বি ন্থাত্ত ₹यः तन्तरः वेनाः येतः परः नृत्र वः त्यः परः न्तः। वेन यरः नुः कुलः रचताः देव वेर-न्ग्र-वे संबाधि न्सु तह ग्राधर वह न त्रिण दे क्रिं विदः नर्वे दः द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा स्वारा द्वारा दिन *र्धुर्पं*निहेर:बव:नव्रावाचकुर्वंर्खुं कुय:रवरा:वेन् क्रें य:पवेर्ः ख्याप:....र.क.क्षेतार्यया. क्ष्यात्रहे.क.क्षेत्राचरायाञ्चेत्राह्याः म्.र्ट. बैंच. बे थेच. शहता पहूं शया श्रेचया के. बेर. थे. चंचे बेया रा. हुयु खू ঀ৾ঀ'ঽৼ৾৾৾৻ৼ৻৺৽৽৽ৼ৾ৼ৻য়৾ঀয়ৠৢ৾য়ড়৾ঀয়ড়৾ঀৼয়৾ৼৼড়৾য়ড়ৢয় **ु**यः भ्रम्यः ग्रीः धेम् केरः नुयः सुः तम् तः धुन् नुः स्त्रं स्तः म्रीवः ग्रीयः स्र्रः ग्रीः मुल-रनराः इत्रः पद्वः तर्वे तः विवायः क्रवः पविदयः पदः श्रेतः नदः। मुलः रवराने तर विगामञ्चनरा वायेग्याम स्राम्य द्वा स्वामान मेव न्यर नरकर् है स्ट्रिय पा बेर् ठेया "दूर। " हि र वया ग्रुट कुया रमया इं अः क्रुनः अधुवः तशुनः र्रम् वारान्यः मवरः यः नेः धमः यः नेरा "० देवः नशुरः हैया दिव राज्या चर्। 1946 वर् से ही सिंदे ज्ञान ने लाय दे **ब्रयास.धेर्यायायार्यारायक्र्यार्या** व्रेरायराश्चीत्राय**र्था** क्र.यदुःश्चिरःक्र.पश्चराःवयारःयःश्चरःयानवयाशुःवययाहे नवदूःरुवः ... नर्वारं वि. वे. व्याप्तव की अनयान वेर्या सदी अर खर हैं हे ...... र्श्वेरयाग्री मह्यो स्वापिटावी विद्यास्यान् राष्ट्र सदे नम्दरम्य विद्या

① (美山村・山美人・七山・古女・者と・む・)

<del>१ १६८ देवे थे ने क कर हुँ व बेर् हु ग</del>वकार विवाय मुकामवदेश है रमका ग्री : इं र्ंट्रेष वितायबंदा नेक लाम मंद्रा दिया " । इया ग्री दा ने शिरा त्तृम ने व्यायम्य प्राप्ते प्राप्ता कवा श्री : श्रम्य प्राप्ते ति । श्रम् **१.८म. अर.च्या. १४.८म. प्रमान क्रा. में स्थान में स्था** हे विमामह मामवर्ष दे मान ई देर विमाय हमा गुरादे ताथी में शे तर्वारम्राविदावी "ने वे में नेराया थे वे ने में निर्माय अपना मान नःधेवःदेवः"② वेषःगशुदःयतुग ने वयाक्षःयतः धेतःयेवयावया जुयाः रमणारेमा मेरार्गराया स्थाप होती रसु पहीं मृत्या मेरा **ऍव**ॱनद्ग्ॱङॅर:पिट:अळॅग:श्लुट:ठ:द्ऍव:ग्वट:श्लप्राप:पहेव:दॅर:' ब्रीट-भुःशुट-५व्यवाः भूर-वट-ठ-५व्यवः ग्री-व्ययः ववाः कवाः व्यदः यः दे -४,रः यः क.च.इट.वुटा वि.वि.श्रयातायक्याल पडेच.जू.बैंबाङ्बारहे अह्ट. स्यादेराव्यदायहर्व इरावदार्वा विदायका "दे हेरा के वि इराव मिले सिर्दे के बाहि वा निवास का स्वार की सिंदा के बाहि के सिर्देश की की सिंदे के सिंदे के की सिंदे के सिंदे के नेन् येनवाने। ने बुन र महिवादि र नम् र ववावर विषय र वि चर **२ेव**ॱख़ॅॱळेटे-शुॱबरुव-रु-नेव-न्*ष्*य-च्ची-टब्च-ऍब-५ॅग-क्डे-वि-वर्ग-वेण-च्चु**व** बुरासुलार्धेर्पारने तेवासुरवर्षा वी धेवा देवतार है कु तर अनुवासु ल्यात्या वे र वे वा व विदाय चरःवीः ख्रेष्यायः रेते वरः तुः यह रः तृः ग्रुं वः वः श्रेषः यशेषाः ग्रुह्रायः ते रव्याः ।

Ф (ह्रण्यान्द्रान्य्यदे दूराना)

न्ड्यानेयाव्याद्वाद्वाहे वियामधरागावियावया देन हीरातु विवया हे दे वया अर्थे बया स्वर्ध मार्थ के प्राप्त **इयाधिबायावध्यावध्यारटा बाधिरयाडीटा। .....धुर् श्चिटाक्षेत्राच्या.** मैकाकुतारमकारे : सन् मं : तत्न ने डेका न हारका ग्रहा देवा है वे देवे : द्वर-दे-देव-ळव-वळ्ट-विवासु-शुर-द्वयाः स्र-द्वर-व्यर-वर-वर-स्बे ख्रियं सप्ता त्या व्या द्या है स्टर है अदि है नया है की वो इ वर्षा या कुर. वेल. श्रुट् वया वेच. मार्च मारा ग्रुट. मे वट. पर्यं हे. वया ह्रेट. पट. दी बव्रबायेनवासुन् उंबानलुग्वान्वासु वान्नर स्वान्याय स्वान्या दिरः ररः नी पत्नारा भवा हु ' छैर' स्वा नवर त्र ना परे हु न से है। हैं শ্ব. 1946 র্ব ২ব.রীশ.বপ্ত.ই.এ.মের.জ.মের.মা.বের.র্বা लाने स्थे मंत्र या न्वया होन् मृत्र मी प्रमाद भ्या त्या हिन्या वया है य.ग्रॅर.ष्ट्रेर.ग्री.प्रिथ्यापट.र्झर.झ्. तेबा.च्.श्रा.रंघ्य.बा.वेथाताच्याप.त्या. क्षे अप्तरा प्रते र पद सं की धे के अप्तर में दी है र के दाया के या प्रवास मार्थ परा ही " ब्रुव-व्यान्त्रयाञ्च त्रान्त्रः सङ्घेनयामः द्वेनः यहेवः मह्नामहार विवयः सुवः तुः चर्रियो.त.त्र.चरी विर.वी.चर्खियाथा.चया.ता.झे.चे.चेथा.ह्या.देवा.रंदा.रंटा. मम्दः इत्रः ध्वारा स्वार स्वारा स्वारा स्वारा हिवारा देश प्राप्त स्वारा है वारा प्राप्त स्वारा स्वारा स्वारा स मनेरःववःमः धरानुषातरुग् विरावहेवः ननुरानेरः पर्वः र्वेवः

① (美可如·口養子·子可·口及·爱天·口·子口·芒切· 19)

ক্টিব র্র্সান আন্দর্ম স্থানর নি স্কের্না বিদেশী প্রদার্থন বিদেশী প্রদার্থন করি নেরু ট্রিন্ ता विराद्धता पर्दा क्षेत्र ग्राम्या गुत्र वेया प्रत्य विव ने विराह्म र क्या विरा र्5 यान् कु स्र ह्रा या यदा सं हें व धरे दे से के दे चे पर्व कर स्र स्र स त्येया ग्रेता श्रेता भारेता वेरा मही ह्या व मा ने त्र विम न मुबला है की बर इयरार्झररा शु पञ्च पर ग्वारा देव दर्दर वे "अपरा देर कु वर (न्डिन हैरे) गृतुर गैरा व क्र्नि सुर स्न क्रा क्रिन है ने कर है। राज स्था र्ने त्रुव केंग्रवेय मंद्रि मुर्ने द्रि मुर्ने क्रिय केंग्रव मुद्र मुद्र हर वर लु गुरु व्याप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त वर्ष वर्ष प्राप्त प्र प् क्षर ठव सुर। गुव तथे या संग्राचारा गुरा या ने ते में सामाया भूगा त्यत्रदेवानः क्रेन्द्रम् त्रं प्रदेशम् वर्षः हरः यहरः व्यन् वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः नःक्रिः त्र्रत्रः नेतः वर्षः वर्षः द्रवरः सद्देवः यः अवः देशः द्रवरः वर्षः देशः न् चैतः हितः रें कं नः नेतः नरः न नन् ग्रेः हेलः शुः कु नलः वापवः वि गः भेवः ः क्षेत्रवा "मुड्र-द्र्याहे क्षेत्र-प्रमादा मुक्ष्याचा हे न्या वयवा कर्तिम् मैकामग्री " देवायाक्षर ग्रमावया ग्रुटामा देवा व्यवसाम्यदा न बुर्.गुय.इ.य.वया

द्वाः श्वेतः श्वेतः स्वेतः स्व

<sup>🛈 (</sup>हॅन्यःनहॅर्-र्गःयदे ह्रूरःम रेगःर्यः 21)

विदः त्या व व इं स्था है स्था

"न्यायः ययः व्याप्तः स्वरः व्याप्तः व्याः यः व्याः व्यः व्याः व्य

u.t 2 u.u 当 u y d. イヒ・ヨーロ・イズ u.ロ 草 し、日口 u. 製 u ヒ・ヨロ・カ u. खु.पश्चित अह्र ८.५१व.किटा ट्रेब.सब.धेल.पर्वे. २व तर विट.खु. पर्नाय बर्। यायमान् ने नियम्बन्य हुन पर्वः है सं विया बर्ने हु। म्रूरि-रेश्यादेव-र्श्य रण रश्याच्ड्यश्यि न्नी-तत्त्व क्रेश्यादियाची... स.बैथा.बेथा.सपु.चटा.प्रिटं.पर्येग.प्रटा क्रा.बे.बटार्ट्रचेथा.हैथा.पर्दूरा बार्बेश रे.केर प्रट.बट.इ.चेच पद्भवीट.ह्च.चड्चेथ रड्डे याप्ट. **ॅं. विनापर इर विना तु पर्यं व वह ना छया नेरा।** रमाय विन केर नभूयाग्रियान्वर्वात्यवारिटार्झ् क्वर् ये वित्वयाल्या व्यास्यवय व्या मः मः चर् वेषः हम् व रः व्रेर् व व्रियः यव रम् दः प्रमः व्रवः रम् दः व्रवः **के: ने** 'कॅरा'कं 'दर्ने 'केंन्' भें रायदे यगदायरायरायहेवाह 'ख्या'स्यप्ट' द्यः वृंग् गुरः श्रुः तुषः केटः यव रः वृह्दः स्य धरः गुव्या देनः वेरः द्र-: ञ्च-पर्व-प्रवेग-पर्व-ळ्य-शुव्य-श्व-द्रिय-वित-त्र्य-प्रवे श्विटः मवर कुरे क्रें र वि र वा र इव रिट र नियर विषय के ले ने ले ने स्व मदे माता प्रवाहा धिन् सुना मदे हु सामने प्रवास में ना सदे रुवात्विरःश्रेयायान्दःसं वयाञ्चात्य स्टायाना वरःसन्तर्भरं या**हेत्** वयानायां द्वागुराहे शेया श्वायदे ग्वयरार्ग शेवा न नत्र्भी नुरक्षि भाष्ट्र वेषाम्य विषाम्य स्थाना स्था वर्षा इस्रायायाः में नदे द्वा विषा न्मा द्वा ने के ने के त्या द्वा या विषा विष्य ने नि कुलारमणात्री त्युमायते रे मार्थ व्या दे अव वि मार्थ अ

मानवातुः प्यान् विष्यात् विष्यात् विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया इलाबेर्-पर्वे कु खर्कवर्तु कुलारवना पर्दे पर्दे खूर क्ष्याचन्द्र पर्दा हि मळ्याळ्या त्याञ्चा महत्रवा हे जुला समया तर्ने तर् विवा वीया वर्षा सद रात्र्युरावान्ता क्षेंबाबन्तारवान्यतालावळराठवाग्री धेवात्रयुता **च्यापार्दिः इपयार्द्रक्षे वियायेग्या नेतार्वे स्वाप्तरायं वे प्राप्तायः ।** মার্দিয়ী দেরুশান্তা रर.रेश.मुल.रनश.इंब.पर्झ.क्ब.पर्ट.क्ब. खुरामानुदान्तरान् त्यवानु दि दि दे व माने वाके हुट के धेव दि हु .... *वैरा:*स्व:ऑर्य:ग्रु:बरुव:रु:ब:ॅर्य:सर्य:य:व:बन् क्रॅर्:ध:बेन् ॅर्र:रेय: ध: लेवा ने नु त हैर ने अव के बवाय मान्य हैं । वाने अव विरवास दिर हु **য়৾৾৾ঀ৴৽ৡ৶৻**৸ঢ়৾৴৸৴৴৴৸য়য়৸৸য়য়৻য়য়য়য়৻ शुःतर्मे र : कुंदे: इंगलः इं यः में : लं : मा : मा ठेग धु : ने : यर : रा डें व : वर : दलः इतः मायाचर 'कुलारमण ईवात्र रिकारे के विष ह ग्रार रिकार में निकार विषाग्रुरःग्वयःसं"ा@विषायिद्रायः न्रा देवः न्यारः विरायरः हुः पञ्चतः नव्**रः** श्रॅरः "धरः पञ्चतः वर्रः वे वे स्वाः (श्वे सः 1947) सः हः । ᠯ᠋ᠵ᠃ᢂᢅᢋ᠃ᢋ᠂ᠮᢩᢔᢩᠵ᠂ᠵ**ᡏᠬ**ᢧ᠂ᢡ᠂ᠬᠵ᠈ᢩᢟᡝ᠂ᠱᠸ᠂ᢂ᠂ᢩᢖᠵ᠂ᠮᡭ᠂ᠵᠵ᠂ᡶᠵᢩᡰ <u>दिः इथ.चेवेर.बर्चयालेथ.वेथ.तच्ये.चवुराचेय.चेथ.चेव.क्याक्री.....</u> म्म्यारायरायम्बर्देराम्बर्दावयायरातुः मञ्जूवः" ७ विकामारायायः " *ॱ*ष्ट्र-१५८-१५८-४५ व्या-म्या-म्या-१३-४२-५५ वर्ष्ट्र-४-१०४ वर्षेत्र-देष्ट्र

बे.नबं.प्रपु.संपु.संब.श्रुवं.पत्र.कु.भू.प<u>श्चनं.पत्रा.सं</u>

① (气司·養如·別·美可如·口莨气·气可·口及·紫天·口·)

② (ह्रेब्य.न्ट्रं-र्बं.नपु.इट्न.)

इरके निया में नर्दे दारा केंद्र या श्रेंद्र त्या त्या श्रेंद्र त्या श्रेंद्र त्या त्या श्रेंद्र त्या त्या श्रेंद्र <u>ष्टि: तृःश्चॅं तृ मृत्रः यः क्ष्रः यावरा त् यदः यळ्या ग्रुटः विषा ग्रीः वर्ष्ठवः विदः तृः ः</u> नमुत्र वेटा वर्देर व इ डे नट यदर विट नेता वन हे ता दर्ने उत्तर <u> चयल.पश्च चया.चट.लट.वे.कै.श.ड्रेर.त.श्चयातात्र प्रेया व्यत्तरी स्था</u> मत् **ग**राध्याप्यस्पर्वे विद्यान्यः हेरावी विद्यस्य विवादितान्य विवादिता न्याद्रणा ग्रुटा द्वरा द्वरा द्वरा द्वरा द्वरा विकास द **पहुंब.त.**बुट्य.झट.झ.चब.धे.पट.पहबंब.भुज.सेचय.बुट्ट.बुल.थे.खे... **बहु**न्-नव्ना-तत्त्व यः नरुषः स्व-तु-हुन्यः नर्त्रेषः नन्-तु-हुव्-पर-ञ्च**रः।** नै'मर'मॅ'महेरा'र्डब'दैम'म्दुमरा'बहर'हे।'मॅ' 1949 मॅर्'रा'मूर'''' स्पुर्-र भेषे थे. थे. था. पार्च श्रीर था. प्रीया विषया क्ष्या चे था. विषया विषया क्ष्या विषया विषया विषया विषया वियाने . इ. चे व. प्यापिट्या शि. शिंच. हो ये. हो या शिंवे . खे. श्री इ. च इ. च दे. कुत्र्रां त्रान्त्र कु विवासिर्याय्यास्य राम्स्य प्राप्त निर्मा स्री स्रीयया **श्चान्यः नेतः राज्यः अञ्चः क्षः तरः पत्वान्यः ५५ म धर्यः विदः मीतः हीतः पर्दः । ।** वदः अं भ्रें भ्रेंतु प्रज्ञां ता न्द्रिया करा स्वर्या दे रत्तुया स्वराधा ता स्वराधाः रट हिया नु कि ते करे क्षेया नि करे क्षेया ने करे क्षेया ने करे ततुन्" डेल:न्रा "नर्डव विरावकानहेंवाय:न्रायहत्यामण रेंद् तु:श्चरप्तुःबायराधुद्राठंबायज्ञुत्यायाक्षातुःबाठे:बेराबेदायाः देवाः.... हुरः" 🗓 देशः मारायः देरः। अतः हुराः कृतः मार्देरः विद्यासः स्वा सेवः सेवः वयः श्रुवाया विवा ववा भागायर श्रीतावी प्रता देवा नेराय वुवाय ववा विवास विवा

<sup>🛈 (</sup>त्ने कॅल इस सर देन देल 22)

स्ताः स्ता पर नित्रत्म

> चुन स्राधितान्त्राचेतान्त्राच्या " मुद्रम स्राधितास्त्राचेत्र स्त्राच्या स्तराच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त्राच्या स्त

व्यतः नियान् व्यतः श्री स्वरः श्री स्वरः स्वरः

① (न्ने प्तृत कॅंग प्रेय में इय बर नेप र्षा 23)

② (菁可可、可養了 了可、智工、)

सब् म् नवाया शुरा। "किवानाशुर्या तर्ने क्राविर मेवा यह र परे हें बाबा नहें न् वरा। "नेति नुका केंन् नर्वन कुला नेरा खुवाया केंग्रे" त्यः वैदः ह ग्रायः पर्मे त् हेराः धेदः स्वराः वेदः पत्वाष्यः गुदः त् च्राः सुः कवः .... ग्रदः केवः खेलः चर्-तुः क्वायेनयः ग्रीयः क्षे-यः विः श्रवः तुः नल् नयः धरः नयः चरुरः तथा चेत् वी केत् केत् केत् विषा केत् विषा तस्ति द्राया वेत्र विषा यदे क्रिंत्र स्था विषा विष् '८४.यो८.८वे८.शे.क्य.यो.चय.चक्र.प्यावे८.तरा শৃত্যুদ্ধ দ্বা <u> २ य न बुद्दः नैय दः दर्दः दर्दः दर्दे दर्दे य मृदः विदः नृदः द्यदः यः ः ः ः ः </u> नेन् बेन चुर लु राया भेव रे गहार राया यार न च र सु र स्वास र हे द खु रा बनुवारु विदायेतवा क्री श्ववाया वाववाया विवा वीवा श्वाप्तवाया या नह वा र्धर् ग्रम्प्रिया हे र वे भ्रायळे र ग्राय प्रम् श्रुम् देवा बुवा यह र व्यवराष्ट्ररा (श्री स्त. 1921) १८ अ. च के र. महीरा हु या विदे र में र... <u>इ.स.यपु.क.क्र्र्य-पर्वाताक्र्याताक्षेत्रायम्बर्यायाक्र्यायाक्र्यायाः वृ.श्रेपया</u> न्मुरःग्रद्यान्वे न्द्रुःवे न्मुरःयेनयः स्ना विदः भुग्ने न्यापरः में त्रः त्रः द्धरः छः द्वं त्यायः त्रं ययायः दः द्वे ते : त्रु तः श्चः त्रायः वः व्यं न *ं*ग्**ुर**ंक्य:दुरे-रुग्नेय:धेर:ब्रॅंन्:ब्रुय:देरे:ग्रुद:र्स्य:क्ष्य:दर्स:ध्रुय: र्तृः विद्रायाः महीयायाः हे विवार केंग्रयाः श्वा ६ दि दे सम्मिविया दिः

<sup>(</sup>१) (१व) प्रमुक्किल तथेला कु क्वावर रेग १०००)

हिर् हिर हिर देवा वर देवा वर देवा वर देवा वर के के किर किर के किर किर के किर कि भ्र.विनय. १५ र. विट. अष्ट्रते वया पत्र. तिया ग्री. वशिट. द्वरा सेवा. पहेर. या..... इबरा बुगरा वरा नवरा ५५ गाउरा "रेगा गवरा गवरा महे "बेरा मॅं ही के नवाकं दारेगा विदानी के रेगवा विदायह वा विदाय वाया विदाय न्दःनेते नशुद्रः हें यः ने स्नाद्ये प्रश्रु या अर्ह् दः या ह्याया न प्रदः ये प्रश्ना । । । **ॾ्रल.चेवट.च.श्रमथ.भें.**वेचय.क्रेर.विट.बक्र्म.वयात्र.श्रमः अट.पुट.पवच.... त्रस्यायह्रम् प्रत्राचे वारा न्ये प्रत्याप्य शालुराम विवास्त्रामा पर् व्या स्व विराम स्वया म् हिर्या है। स्वया स्व रेव विराम स्वा स्वा स्व नरः भूवः नेवः वश्वः र . वश्वः वशः नवः भूवः ववरः वः वरु श्वः वश्वः वरः वरः व बर्ह्मना ने ते महार हिंदा क्ष्म खरा इवस हुर हुन वर्द र हुन य परे दे दे .... इट.ग्री.प्रेय.द्रया.ल.श्रेय.तप्र.श्रेय इय.सेल.टे.वैट च.ध्र्या.ल्य.ला बावय. र्टर मर में भी में या के र किर में या थी या ग्री में प्राप्त की मार्ग में में किर में या या या या वि

बावयान्तरान्ते तत्त्व स्वात्वयाध्या क्ष्या स्वात्वयाध्या अध्या अध्यात्र त्या स्वात्य स्वात्य

① (菁刊적 日養 「、 「刊 智 下、 )

भःरः हः रीरः पत् ग्राप्तु राञ्चग्राः हॅं अः अर्ह् न् पदेः «कु 'ग्राम् दराः धेगः » चरःश्चे सः 1945 स्रः विषयः इत्रायद्रं तः त्रं अः वरः श्चे व्याः क्रवः । म्रीट.चेयाचे.चेयातपु.ट्रेटा.>मु.चर.ची.अह्ब.केटी तितालचाय चनत पर्टर.कथ.म्था तीपा.र्हेरथा <u>व्र.वरा</u> <u></u> ह्र.प्रर.श्र्यथ.ग्री.पर्ट. रेषाम्बु न्द्र है सु उ स् कु अर्द्ध न मे ने प्रमान चल-देन्यागुः दें हैं सु पठलान्ययानदे देन के न प्रकेन 1938 स्र गॅर:छिर:केव:बॅ:पर्डेंब पक्वग्:हु:बर्ड्न:पदे:«५२ॅन्:पदे:पङ्गव्न:पर्डेंग:» < कु.श.प.लपु.चक्षेष पर्द्वयः>(श्रट.मुपु:श्रूरः)< श्रेषः रचयः र्चेषः व्यरः । अधितात्रात्रः व्यरः । अधितात्रात्रः व्य र्गरः मं ः»( इंशर्स् : २४.) «मेलाविषशः रुवाः नथान श्रेरः नदेः चेष्यः । । । मृदर्ः अस्तरुः चेत् व्यवस्तर् धरः अस्तर्गा वेतः देशायः वेता च । पः अ ≪ररःचित्रदेशःयः≫≪गृत्रःशुःळग्राः वेत्रःयळ्तः चतुत्रःयः≫≪येग्राः ञ्चरामदाबह्दरः≫≪श्वराह्मायाःश्चेॱश्रॅराह्मरानुः≫≪श्रृवार्दमायाःश्चेः · · · · ः न्गादःगवन्द्रस्यः अ≪ङ्ग्यान्दः। विषा नयायः धयायाः स्वायाः शुः <del>美</del>.去८.६.५४४.५५८.५४४.४४४५.४५८.४५८.५.%४५५५८.५ गे.२.४४८.३५८.१ «६.४८.४५.३ %४८.४५.४५.४४.४५.४४.४४.४४.४४.४४ मदे क्वं ग्रॅंबाया दे 'यद '>«ह्या हुर या ५५५ पदे क्वं रा > व्यवस्था विकास ह्रंबाबिरःग्याबरःनू। टु.शबरः≪टूरःश्चरःग्नेतान्वेयःनः,≫बोध्यानः,

≪श्चें त. श. चे तार. पं स् अथ. त. ने वे र. ने द्र नश्चे न. ने ,

» <u> ইন্-</u>মহার্থ-ব। «गाःभैःगाः नःवयः ववरः पदैः वशुरः व »«पॐवः वरः वयः ववरः पदेः महार असुर असुर असे र अन्तरात्तुरावी पञ्चराची प्रतात्वरात्त्र व्याप्तरात्त्र व्याप्तरात्त्र विष्याची विष्यत्यात्त्र विष्यत्यात्त्र व नदेॱम्'र्हेंबः ≫र्टः। ≪षयः श्रृत्ःम्'रहेंब ≫≪ष्यं बर्हेत् कुेंर्टरः हेंवः≫ < इ.व. व्यवर. होय. ता. वयर. तपु. भा. क्रवा. भारता होय. भी वा. भ बक्कव.कच.त्रेच ची.द्रवारा.चे.कट.वट.त्री वेट.ग्री.चशिट.क्वालाचश्रय. म् लाच चयर प्रश्नर श्र प्रमास्य द्वार श्र स्वर द्वार स्वर श्वर स्वर য়ৢৼ৻ঀঀ৾য়য়৻ঀঽয়৻ৼ৻ৼৢঀয়৻ঀয়ৼ৾ঀ৻য়ৢয়য়৻৸ৼ৻ঀৢৼ৻ঀ ळ्या. यहार. प. केर. पथवा. र तु. शुर. २ श. लट. श्री. पहुच. ग्री. ये. या. श्री. त क्रैं-भ्रिंग व के व क लाया जिर मेला के पर अहर। मेर लगाया ने व न्यायाने केन्त्री क्षण्या स्थापित क्षेत्र कर्मा मा क्षण्या स्थापा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर्मा कर ने बुद्दायत्दार्ग्यते क्षेत्र क्षेत्र विक्षायाम् विवाद्दार्थः विकास विग यूरा त्रैर:र्भे:बर्ळें व्:र्व्य:बिष्:<u>र्</u>र्र्य:वृ "য়য়য়৽ঽ৴ঢ়৾৾৾ঢ়৴ঀৣ৾৾৽য়৾৴৽য়য়৽য়৾৴৽য়ৢয়য়ঀ गुन्नान न्याया वाता शुर्वे मार्थे न कुट.त.घ**ञ्चय.**२८.के.लु.यूप.२.पश्चेनया म्यारम् म्यारम् स्त्रात्र प्रमानिक स्त्रात्र स्त्रात्र स्त्रात्र स्त्रात्र स्त्रात्र स्त्रात्र स्त्रात्र स्त्र

ৰিকাইন্-টুনেনিই- খ্রী-স্কল্মন্ট্র-নের্ব-ইনি-স্কল্মন্ন্রকান্ত্র-নের-বিশ্ব বিশ্ব ক্রিন্নের বিশ্ব নির্বাধন কর্মির স্কল্মন্ন নির্বাধন কর্মির স্কল্মন্ন নির্বাধন কর্মনির স্কল্মনির স্কলমনির স্কলমনি

> "तर्रे-दे-रद्ग हुद्ग न्देद्र मदे हु । या हु । कुंद्र केट्र हुद्ग के । या देवा न्याय का या विकास के । या विकास के

प्रकान्त हे. हुन्य प्रवास स्वास स्व

## 저통지'당도"

विन्नः मन् नी नार्न् स्वरे सं क्षु या अर्थे वा उया वया वर्षे पर्व न्या ने য়৴৽ঀ৽৸য়৽৸ড়ৼয়৽৸য়৸৽য়৸৽য়য়৽৸য়৽৸য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়৽য়য়৽ वया व्या वर्षः श्रेषः स्था रु । श्रुपः वरः तुषः वेषः । वरः । वरः । वरः । यर्व ठव ब्रेव स्थापा बुद लायरी सु तुरे कु के लाव हैर बच हैर । ৡ৾য় ঀ<u>ह्</u>र्रथ.२.२८.७.२५, पद्य.पञ्च । पत्य. प्रुपया प्राक्त कीव. ८० য়्रयाची सु द्राप्त देव प्यता वर्ष में व्राप्त हरा खुर प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्र मिविर.वी.पर्वारथ.कुष विवाय.पविर.र्टा ही.कू बादा.क्ये.पूर्वार्थर.पेट. ख्र-कुः वर् गादै वर्षे द्विर र्र क्ष्रिय क्ष्रिय वहेल स्तर् क्रिय वहेल स्तर वावलायाः वदः द्विः द्रवादाः नवः कुषः क्षुतः वदः पः वठलः या दहेवः वहा म्राक्तिः क्रियः र वेथः र विर्मितः त्रा विष्यः परःगश्चयः ५२° ५५ द्वार्श्वयः वुनः ४ वर्षः चुनः । क्ष्यः परः पर्यः ठयः ल.वें.लपु.थं.बा.श्रे.सुर.पर्श्वे.बाश्वेयातपु.श्रेचयाग्री.ला.बैंयारीतेर.बाह्रियाबी क.वेष.कु.च.बट.सू.ध्वी.श.पह्म ब्रथ.नर.पहेवी च्चा यदे मुद पञ्च नवानम् वा पत्र चि नहें र नवि 'स्नवा संख्य वर्ष पार्च 'रूर कुरा.... <u>ৼৄ৸য়য়ৢ৴য়য়য়ৣ৽য়ৢ৸ড়য়য়ৣ৽য়ঢ়ঀ৽য়ঢ়য়ৼঢ়ৼৼ৻ৠৢয়৽য়য়য়ড়৽ঽঢ়৽৽৽৽</u>

त्रक्तं त्रात् क्षात् व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्य

नवन भर मृ सं न्या भेर दें र क र ने य शेय वि य पर दे हरा हु ... **র্ব্রন্মেন্**স্মাদ্র্মান্দ্র্মেণ্ भ्रम् या सं से अ दिर प दिन ने स पर म ठगः त्राचक्षुत्राया यहं ५ के ५ : ये ग्राय रॉ.ये. ५ तु ग्रायः ५ तु हत्यः ५ र : व व या य मृति की तर् पति मृत्रा तहम बहर् प वा वर् हमा पर मुलावन रेश्राचरि केन् यावरा न्वे क्व के के तुन न्यान क्व विद्यापा बक्षन वयाग्रदः व्याप्तेदः कृत् क रहेवः दहेते क्रिंतः ्रेतः दहेन् नदः ॾ॓ऄॱॸॺॕॸॺॱय़क़ॸॱॴॸॱॶऀॺऻॱऄॗ॔ॺॱॺॺॸॱॷऀॸॱॸॸॱऄॗॸॱॿॺॱ*ॺॱॺॹ*ॿॖॎ**॔ॱॱ** हे के लु कु र्रा वहुर वहुर पहुर पाई र्र कु र्य कुर विप वहुर अव्यक्ष्यत्यान्यः न्यतः नुतः नृत्यानः अळेषः मिः मृत्यः छेतैः नृष्यं न्यान्यः । मुःक्षेर-सं-लट्-पर्नेते-न्नवाक्ष्व-पर्नेनवामुःह्मानु-ल्न्। र्-नुनः दे-दर्दे-न्द्र-र्द्र् के के लुर-प-दिन्क न्याध्य प्राम् क्रिक्ष का पार्रा रुषाः बर्द्धरताः श्चेमाः स्वाः वृः श्चेमवार् रूरः रुमारः कमः वर्मे रः स्वरताः रूमवाः ः ः व्यवदःश्रम्यवः वन्यन् वन्याम् वाके माम भवाम् न्याम द्राप्त द्रम्य पः न्दा वात्रर द्वेन प्रत्र वर इनवार स्नवार ही हैंद करर हर वर वर वर

स्त्राच्यात्र्वाक्ष्यः स्त्राच्याः स्त्राचः स्त्राचः स्त्राच्याः स्त्राचः स्त्राचः

ने अव क्या श्री स्वाया में व्यया में वर्षा में यह स्वाया में वर्षा में यह स्वया में यह स्वया में यह स्वया में वर्षा में यह स्वया में

वेयायात्री वेदायवात् भ्रेतावयात् अत्ति क्षान् वेदान् प्रत्ये व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्यापत्ते व

यन्य क्यानी रे प्रते क्षेट यं दे ख्वर र्रण म्यूर प्रेश कर दे स्

## 보고, 원·坪·회상·네요. 당고, 종리, 윤리, 원리, 생리석.

|    | <b>र्ध</b> °बेर∙   | ₹ब.च.च्   | নম্বর্থ.প্রবা                                   |
|----|--|---|---|
| 1. | क्रुयः रचलः देवः<br>बेरः दग्रदः स्                       | न्गे वर्तुन क्रंबावयेवा   | ষ্ট্র-শ্ব· 1946 নন<br>ব্ল- 16 র-ট্র-শ্বা        |
| 2. | चद्र-द्याप-क्रुंद्या<br>क्रुय-द्युद्ध-स्यापन             | र्धर.च <br>ह्यर.च्र.चाई.चा.लचा.   | 1545 বন:শ্রু <b>ন</b> :শ্রু                     |
|    | ক্রন:উন:ব্রন:র্র<br>ন্র:ইন:ব্রন:র্র-<br>নুর:ইন:ব্রন:র্র- | <u> </u>  | द्यान्य स्तुन्यः<br>इयान्य स्तुन्यः             |
| 4. | 교육시<br>청८·전·평८·용영·<br><b>포석·</b> 선흥८·영·美괴·               | व्रहात्रयान्त्री<br>व्रह्म  | बोडेयःस <br>र्थयःस्चयःचञ्चः                     |
| 5. | <b>쾳이 지지에</b>  | প্রজ্ <i>ব।</i><br>থ্যস্থী.রানাধ্য.ন:শ্রীকা   | নুৱামনা<br>বুৱামনা                              |
| 6. | বগু.থ.গ্রথনা<br>জন্মন্ত্র,ধ্র.                           | क्ष्यः ग्रुतः स्वाः ग्रुतः<br>यभाषा समाः ग्रुः ग्रुदः<br>क्ष्यः ग्रुतः स्वाः ग्रुतः | य्।<br>नुरुषःस्य<br>नुरुषःस्।<br>नुषःस्यकःसङ्गः |

| 7. तनेल.चह्या<br>श्री-देगवानुवा<br>श्री-देगवानुवा<br>श्री-देगवानुवा<br>गुप्तान्द्रवा<br>गुप्तान्द्रवा | ञ्चन्देर्ञ्च ।<br>स्रम्भवाद्य ।<br>स्रम्भवाद्य ।<br>स्रम्भवाद्य ।<br>स्रम्भवाद्य । | 5্রাব্রর<br>20প্রস্কা<br>160৪ বন:স্তুদ্দ<br>10 রাষ্ট্রাব্র |
|---|--|--|
| 9. ऍवःग्रेंग्न्यः<br>बेःऍगःवेदःग्   | वेसःमङ्गःह।  | नुष्यःस्।<br>मृषुयःस्।                                     |
| 10. স্থুলে ইন্ত্রন  | स्यानवेयास्यः सम्या  | नुकेषाःया<br>मुकेषाःया                                     |
| त्तुवा<br>तत्तुवा   | শ্রুব-র্ষ্রব-ন্ট্র্রেশ্রুব-<br>র্ষ্যবিশ্রীর-শ্রুব-<br>ব্র্যবিশ্রীর-শ্রুব-          | चेडेय.च।<br>चेड्य.चय.च <b>ड</b> .                          |
| 12. কুরি:ঘ্রন্থের<br>শ্বন্থের   | धर-क्रय-स्वा<br>खुद-दुन-स्वद-रू-<br>विद-तुन-स्वत<br>युद-युद-स्व                    | 941 স্থল্ব স্থান্ত প্র                                     |
| বর্ত্ত ক্রম্মন।<br>ক্রম্মন্ট্রিক<br>বর্ত্তি   | অনিথ.ন.ৰ্বিটা  | নুষ্টম:মা<br>শ্রীম:মা                                      |
| 14. ध्यातु त्राञ्चर मे<br>न्गर क्या<br>द्दीर स्   |  |  |

|     | ) - 1                |                                       |                              |
|-----|----------------------|---------------------------------------|------------------------------|
| 14. | 望い、イロダ.              | द्रु :यदे : ह्नु :य:स् :य : क्रेड्र : | 1643 বৰ ভূব 11               |
|     | <b>৴য়ৢ৴য়ৢ৽য়৽৽</b> | শ্                                    | €. लेब                       |
|     | ब्रुट्ट स्था         |                                       | 9 9 1                        |
| 15. | 型な.メロダ.              | थ.श्रु.चर्थर.वेशय.श्रेज.              | 1328 རབ་སྱང་ 6 ས་            |
|     | শ্বাথানের র          | बक्बा रगाव गड़ेर                      | ব্যুগ                        |
|     | শ্ব                  | न्यवास्यास्यः भेषः                    | 1388 རང་སྱང་ ७               |
|     |                      | ্ব্য                                  | শ:বহুন                       |
| 16. | इर्.ग्रे.चेबत.       |                                       |                              |
|     | न्यशःधेयाःकः         | ह्य नयः ह्ये न                        | <i>5ুঝ.</i> ৴নথ. 7—9         |
|     | শৃত্রথ-বস্তুরা       |                                       |                              |
|     | 10.1.0.1             |                                       |                              |
| 17. | <b>棄</b> 41.년흡년.     | ईु 6. €. यूया                         | ব্রিমান্দ্রমানস্কু শৃত্ত্বির |
|     | ರಶ್ವೆ ಚರ್ರ. ಹೆಳು.    | 10.1                                  |                              |
|     | শৰ্জ বৃ              |                                       | শ্                           |
| 40  |                      |                                       |                              |
| 18. | <b>ベス・例で、美・</b> 女ダ・  | ₩ X. 4 L. E. 只. 4 D.                  | 1436 རབ་སྱང་ ७               |
|     | <b>कू</b> थ.पश्चर.।  | नेव केवा                              | बे त्रुग                     |
| 19. | 望い.イロ4.              | ध्रके के व ध्या प्रमान                | 1538 বন:বুদ: 9               |
|     | पर्सिया.ग्री.जी.श्रम | গ্রদ্ধনা                              | 4.91                         |
|     | •                    | 1                                     |                              |
| 20. | कु.प्रंत्रः ध्रेष    | श्रेम.क्ट.त.र्चल.                     | 1434 ₹5 \$5 7                |
|     | क्ट.जाम्य.ग.         | रट्टेर.बे.बद्द्रा                     | नेट-स्व                      |
|     | रगद छेरा             |                                       | ارفرار                       |
|     |                      |                                       | l .                          |

| 21. | ळ्यायदे देय द्यम्                               | क्षत्रःमःगुदः  | 1346 ጓጓ         |
|-----|---|--|-----------------|
|     |   | て中日、美・美一   | ਭੂਵ: 6 ਕੇ.ਫ਼ੀ।  |
| 22. | ন্থ-এ.র.২০থ.                                    |  |                 |
|     | ব্রিঅম:ব্র্রুন্মের্ট্রন্ম<br>ন্র্তুম:ব্র্রুন্ম্ | क्षे चेदा ही च   |                 |
| 23. | तर्भ.पर्वर.चेर्था.ग्री.                         |  | ERITERI         |
|     | इयाधराधराक्ष्या                                 | ¥'**:  | 24.244.         |
|     | गह्य १ स्व।                                     | इ.वर.वं.र.वं.वा  | □ 8.2 m 到了!     |
|     | 3   |  | 24.204.         |
| 24. | र्घतःचलेर्।                                     | 되, 최성대, 최도,  |                 |
| 05  | <u> </u>  |  | 8 4             |
| 25. |   | ই্রন্থ:শ্রীন   |                 |
|     | में न्दर देल सुदे                               | 9 1 2 1  | বুঝ-শ্বথ        |
|     | P.321   |  | 7951            |
|     |   |  |                 |
| 26. | वदव.च. वि. वे. ब्रूट.                           | र्व.श्च च.श्वला  | 1984 ጚባ         |
|     | বহুৰ.ন্ত্ৰী.দু. শ্ৰীথ.                          | 119.91   | 夏 <b>도</b> . 16 |
|     | ষর্ব তথাবাইব বা                                 |  | निरःडै।         |
|     |   |  | 1 01            |
| 27. | <b>क्र्य</b> .पड़िट.पड़ेब.                      | and the late of th |                 |
|     | 다경·다꽃·활성.                                       | पर्धिया.त.त्रञ्च.  | रुष:रचष:        |
|     | मदे ने व डिन्।                                  | <i>ব্</i> শ্ব≺শ্   | 16氦气"面[         |
|     | . /   4   | 1 1  |                 |
| •   | ~   |  | 823 के.ल्या     |
| 28. | न्वेव वर न्तु हुर                               |  |                 |
|     | 美-大工句-四-可                                       |  |                 |
|     | •   | l  | 1               |

|         |  | 1                                 | ,                        |
|---------|--|-----------------------------------|--------------------------|
| 29.     | ্ নহৰ-মূল-                                     | गःइंगःरगः यहेवः छेः               | 1743 বন:ভুব: 12          |
| क्के या | . बेट. <u>ट्रंच. ब</u> ंबजा                    | र्घर दें र है।                    | <u> </u>                 |
| 30.     | इ.कुप्तः बहुर।<br>इ.कुप्तः वहुरः देवः          | तु-ङ्गंब-२व-ळेब-श्वन              | 1322 རབ་སྱང་ 5<br>ᅟౙౢ:ఏ: |
| 31.     | म्यायाः<br>यक्षेत्रः<br>इतः                    | बर.ब्रथ.धे.ब्रैच.चे.              | 1566 న్రా. క్రైగ్ 8      |
|         | <b>इ</b> रा                                    | यळॅं।                             | ब्रे सूय                 |
| 32.     | ਕ.ਬੈਂ⊿.ਵ.                                      | दे.र्जं.र्वश्रश्चायतःचन्नरः       | र्थः रचयः चञ्चः द्वे ग   |
|         | बक् र.क्रुव.म्।                                | শ্                                | ঘর-বেশ্বা                |
| 33.     | · 화대· 소디선.                                     |                                   | रुषास्चर्याचञ्चर         |
|         | म्रोर-ग्री-श्रेट-घ                             |                                   | यर्ब-या                  |
| 34.     | ন্দ্ৰ ব্যৱস্থা<br>ন্দ্ৰ ব্যৱস্থা               |                                   | र्थेय.४ । य. वे.सी. त्री |
| 35.     | न्याद्येत्रः                                   | त्मूशःस्ं महिवः वः                | 1478 ব্যস্তুর ৪          |
|         | শ্।  | <b>ব্ৰ</b> শ্                     | ব্য'ব্রি                 |
| 24      | 081X'0 #1 X'                                   |                                   |                          |
|         | न्यू र क य हैं .                               | <b>बिय.कुर्य.क्ट्रिय.</b> प्रियथ. | 1744 ጓጓ 12               |
|         | न्यक्षरःस्।<br>त्रेषःपद्धःस्रः<br>न्यक्षरःस्रः | न्द्रवा है व                      | विद-वै                   |

| 37. | शुनःबद्याः<br>सुदःचगादः  | ग्री.के.ज्ञा<br>बिद.चग्रव.क्र्य.  | 1802 ਕਰਾਡੂਵਾ<br>13 <b>ਫ਼</b> ਾਡੀ     |
|-----|--|---|--------------------------------------|
| 38. | यद्गः मुद्रा<br>यक्ष्रः प्रद्या<br>यक्षेत्रः पद्गः<br>यक्षेत्रः पद्गः मु | ইনজিব-নূর্য<br>অস্ক্রশ প্তব্-যুদা   | चर्चे.त्।<br>येथ.रचथ.च <b>थे.</b>    |
| 39. | य.श्रुदे:बार्ट्स<br>यम्बद्धःब्रुट्स<br>यम्बद्धःब्रुट्स                   | ক্ষ-দ্ৰ-দ্ৰহ-<br>ক্ষ-দ্ৰ-দ্ৰ-দ্ৰ-দ্ৰ-   | 11 전 월 때<br>11 전 월 때                 |
| 40- | 漢句.セヨヒ.1<br>英句.セゴと.<br>変か.セゴビ.   | यञ्जरा<br>श्रुव्यायाः भेषान्ययाः  | 1748 বন:ভূব<br>13 শ:বন্তু শ          |
| 41. | **************************************                                   | স্থ শব্দ স্থান প্রত্ন পর্ব প্রত্ন পরত্ন প্রত্ন পরত্ন প্রত্ন প্রত্ন প্রত্ন প্রত্ন প্রত্ন প্রত্ন প্রত্ন প্রত্ন প্রত | 1985 <sup>조덕</sup> ·딓도'<br>!6 위도'쿼도' |
| 42. | त्र्वे.गुरः<br>महवःस्वयः<br>मुक्तेरःश्वेरः।                              | त्त्रे मुद्द दङ्ग व<br>त्रे मुद्द दङ्ग व<br>त्रे मुद्द दङ्ग व   | 1803 <sup>독지</sup>                   |
|     | ŧ  | 1   | 795                                  |

| 43. <b>5 'गु</b> 'অবি'শ্ব<br>বৰ্ম'শ্ৰীশ্বানৰ<br>শৃ'ধা                                    | हू 'यदे ह्व 'य स्थ                        | 5্ৰ'** 17<br>শ্ব <b>্ৰ</b>      |
|--|---|---------------------------------|
| 44. গ্রুদ:শ্রুম:শ্রুম:<br>কাল্বকাগ্রু:শ্রুম:<br>শ্রুম:শ্রুম:শ্রুম:<br>শ্রুম:শ্রুম:শ্রুম: | ञ्च महार ही म                             | 1986 বন:গ্রুব:                  |
| 45. চুন্দের স্থান করি করা                            | ৸ ত্ৰ' স্ব'                               | 1986 শ্ব-বন্ধুব                 |
| 46. শুম:রম:শুম:<br>ক্রম:ব্রুম:গ্রু:র<br>ক্রম:ব্রুম:গ্রু:র                                | गःइंगः२गःतहेंदःहः<br>र्यटःदेंदःस्।        | 1749 AU SK.                     |
| 47. व श्रुन् ने म<br>मदस्य स्ते चुन्<br>इत्य महासम्बद्धः<br>चुन्या                       | ব্দ <b>্র</b> ব্যাব্র্থা<br>ব্দ <b>্র</b> | 2ेब.च <br>2ेब.रचब.च <b>र्थ.</b> |

| 48. শৃগুৎ র<br>শ্বনে ন<br>ইং.নুর   | ₹. <u>ዿ</u> ፞ዿ.む.            | 型型!<br>ロヨビ:異心.<br>ロレ・男女:疑.                 | বুজ-মনজ 17 বুজ<br>স্কুল          |
|------------------------------------|------------------------------|--|----------------------------------|
|                                    | त्रव्यवदेः<br>-(वड्डिट:सहब्र | क्रील <br>पहूर्यक्र्य.<br>पश्चिमानक्षेत्र. |                                  |
| 30. <b>নু.মু</b> .মু               | •                            | क.त.कुब त्री<br>टॅ.जपु.घ.थ.                | <i>দুব</i> া-মনবা 17 প্লুম্      |
| 51. <b>5.গ্ৰ</b> -মে               | थ.ट.च <br>इ.चूथ.च≅ट.         | ক্র ম.ফ্র. অঙ্ক।<br>ক্র ম.ফ্র. অঙ্ক।       | न्त्रहम्<br>इतःस्वयः 17 दुवः     |
| 52. पू 'यदे हु<br>इस हर<br>महोर मु | শ্ব শ্বাথন                   | क्य.क्य.बक्का<br>इं.शु <i>र.जट्</i> य.     | 1701 বন:স্তুব: 12<br>স্থল্পন:অন্ |
| 53• हू स्परे च<br>इयः हर           | व्यायदेः                     | 成分.美.写一<br>岛大.题.关如.                        | 1818 ব্যাস্থ্রী                  |
| 54. দু শেই দ<br>ক্ষাহ্             | .名析名.<br>.な析வ.逝た.            | ने :बॅ : हुन<br>महुन : यहेन :<br>बेर्      | हुब:रचब: 19 हुब:                 |

| 55• | বছৰা বৰ্দ : ক্ষা প্ৰমা<br>ই' অৰু মাসু শাব <b>ল ন</b><br>বছৰা ইৰুমা   |   |                              |
|-----|--|---|------------------------------|
| 56• | च.रपु.मी.रीटर्या<br>चेयर.क्षा.केषु.ध्या<br>क्षर्यःरीडर्यःमी.यक्षुषु. | <b>等・口袋す、</b> て可<br>て口で、 <b>美・美</b> ┃     |                              |
| 57. | रट.क्ब.श्रेषा<br>रचेष.श्रेषा   | 보크도.单 x.훽'a.<br>岁.네논.뜆.                   | নুম: ক্রম্ম:18শ              |
| 58• | क्रें बंदा-ह्रं दी<br>इंबंदा-ह्रं दी                                 | बर्न.बियर.<br>बेचयाःचैरःकुः<br>बर्दःबियरः | 1733 독대<br>왕도: 12종·제도기       |
| 59. | बर्-स्य म्-स्य-स्य<br>म्-बुर-म-मह्र-स-स्य-                           | ब <b>र्न</b> :बानर :क्रें :               | 1763 ব্যুদ্র<br>13স্কু:প্রশ্ |
| 60. | न्न्दःमहितःसुरःमः<br>मह्न्यःस्यःस्यःस्यःम्<br>गुःस्यःस्य             | द्धरा<br>वह्दर्ग्यम्<br>वह्दर्ग्यम्       | 1806 <sup></sup> - 3         |

| 61. ব্য:ক্ষার্থ্যব্দ্শ্ব<br>তব্যুটার্থ্যমান্  | ঘষ্ট্ৰদ্ৰ : প্ৰীকা<br>ঘ্ৰান্ট : ক্টৰ্  | 5ুঝ:বন্ম: 18<br>ঈুব:ক্রা                   |
|---|--|--|
| 62· 智气·强·ギベ·¤总·   | ग्री-ध्रे-ब्रा<br>ब्रिस-चगुब-क्रॅब.    | দুব:≖ন্বন: 18<br>স্থ্ৰু : ক্ৰ              |
| ক্রুমাস্ট্রদ্মান্ত্রদ<br>ক্রুমাস্ট্রদ্মান্ত্রদ  | देव.वट.।<br>चेत्र-छी.ल्ये<br>इव.वट.।   | 1987 ২ন স্তু <b>দ</b> '                    |
| 64. শুঅ-২ন্থ-শ্ৰ-শ্ৰন্থ-শ্ৰ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ্ৰন্থ-শ | ন্তুল-অঙ্কর।<br>নদ্ধর ঘর:<br>নদ্ধর ঘর: | 1822 <sup>독무</sup> - 등도"<br>14 중 등         |
| 65. ह.क्या.पश्च.सप्ट.<br>सम्बद्धा.सप्ट.स्य.सर.<br>रूर् सप्ट.सप्ट्सं.सप्ट.स्य.स  |  | 1 <i>े देव. कूर्</i> ।<br><i>देव.</i> रचव. |
| ह्यतःग्री:नेन <br>ह्यान:सर:लु:ह्रंन:  | म्बर-धम                                | 1793 རབ་སྱང་।<br>13 禹་སྐང་।                |
| 67. दे.इवे.इट्-शःम्वराग्रीः<br>न्ह्यःस्ट्रम्  |  | 700  |

| 68.  | हू स्पते द्वा स्वे<br>इस्य हर द्वा स्वे<br>स्वे स्वेद्र स्वे       | दे-सं-द्वियः यस्त्रदः<br>दहे गुरा से दः गुः सः               | 1820 ন্ন:শ্বুন<br>স্থলাব:নব্ধুন    |
|------|--|--|------------------------------------|
| 69.  | <b>はなる.単、気点</b> 、  | म्बर-धम  | 1814 རང་སྱང་ 14                    |
|      | নহম:গ্রী:ন্ন:শ্রুম:<br>শ্রী:শ্রিম:গ্রী:শ্রীম:<br>শ্রুম:গ্রী:শ্রীম: |  | निर-वि।                            |
| 70.  | र्षे.पपु.मर्थे.मपु.  | 효교, 소리는, 회교, 원, 및.   | रुष:रचब: 19 हें र                  |
|      | ब्रब्धः ह्यः स्ट्रिः   | च इर व देव अत्र इ य  | <b>æ</b> [                         |
|      | ब्रेट्टा   | 5 a  |                                    |
| 71.  | त्रुवा मदेः<br>इयः   | ขิดเปอยเล็กเพื่.ยู.  | 2 थ.रचब. 19 2 ब.                   |
|      | 日上、大、知典上、  | च च र.प हो वे. पाया <b>ई या</b> .                            | <b>ন</b> গ্ৰীশা                    |
|      | क्रेरे-र्यास्  | कु त्य   |                                    |
| 72.  | चञ्चर चर्गर्<br>चर्गाद श्वा कु                                     | मृद्धरःधम  | 1842 독학 - 물투 : 14                  |
|      | नैया   |  | <b>电影</b> 机                        |
| 73.  | मृतिराधेरः इया   | 稿소.축회.뜆.ㅂㅋ <b>ㄷ.훅</b> 씨.                                     | <i>2 ঝ.</i> ৼঢ়ঝ. 19 ঈ৾ <u>२</u> . |
|      | बर्द्धान्यः विषः   | <b>बड़्।</b><br>युव्ययान्त्र <b>बद्या</b> न्या <b>न्यु</b> . | <b>æ</b> [                         |
| 74.  | त्रवःक्र्यःस्वेतः<br>इतःक्र्यःस्वेतः                               | ल्ब.यट.वैश्वय.स.   | 1985 རབ་སྡང་ 16                    |
|      | क्र-व्हर-श्रव<br>व्य-व्हर-स्थ्य                                    | यम्रेव-जवा   | नेट.बट.                            |
| ያረሰ. | Δ ,  |  |                                    |

| 75. | 日本:<br>日本:<br>日本:<br>日本:<br>日本:<br>日本:<br>日本:<br>日本:                       | बुन:चह्नदःक्टें-देटः।            | 1985 조직·튛도· 16<br>취도·궤도·        |
|-----|--|----------------------------------|---------------------------------|
| 76. | स्त्र स्वया<br>स्र्व स्वया   | বর্ষ ব.বাবা<br>প্রথ-বাবা         | 1985 বন:স্তু <b>ন:</b> 16       |
| 77. | द्वराचा<br>पद्वयाचीः क्रेचया<br>पद्वराचीः क्रेचया<br>पद्वराचीः क्रेचया     | র্বন্ধনের<br>ব্যন্ধনের           | 1983 རབ་སྱང་ 16                 |
| 78. | न्त्री त्रुव् क्रिया<br>स्थेता ग्री : इस<br>स्राय्येता<br>स्थेता ग्री : इस | श्चेत्र भेषः रमः कुः             | 1972 རབ་བུང་ 16<br>ॡॱᢒऀ         |
| 79. | न्ने'तर्नुन'ह्नस<br>त्रेयाची'सं'जुरा'<br>सर्दर'तर्नुस                      | न्या-र- <b>ब्</b> च-सङ्ग्ब-क्रव- | 1979 বন-প্রুম: 16               |
| 80. | मेश्वर.ग्री.घट.च<br>चेथ्य.ग्री.घट.च<br>चेथा.घष्यय.ह्या.<br>चेषा.घषय.ह्या.  | न्बे.पर्वे क्र्या.<br>पद्मणी     | 5ৢঀ:৲নব: 20 ঈৢ৾ <b>२</b> '<br>æ |
| 81. | इ.चबेरी  | इ.न्याय.इट.                      | र्थः रचयः च कु रः म             |

| 82. শ্রে-ইন অর-চর-<br>অল্ব-ইন ক্র-র-   | चया.चेथा<br>इ.स्.क्षेथ.चीच.               |                                    |
|--|---|------------------------------------|
| 83. গুদ'ষ্ঠ্ শুর্ব-ব্র<br>শ্রুম'গ্রু-ক্লম্পর্<br>শ্রুম'গ্রু-ক্লম্পর্<br>শ্রুম'ষ্ঠ্ শুর্ব-ব্র | हैं वर हूं<br>र दू श                      | न्तुष्ड्रं र.का                    |
| 84. ইগেন্ডুদ: ই' মর্চ্   | क्षम खर:रम्<br>रघर:ग्रम्थःया              | 10 এ.হু <br>10 এ.হু                |
| बह्यः चे वा<br>इय घरः घ्रेचः चङ्गवः<br>85. इदः विष्यः चङ्गवः                                 | ·몇십.동 <br>덕립山.활대.신리도.                     | 1845독대<br>14위도:필대                  |
| 86. इट्टान सक्ति संदेर<br>इवाह्य प्रक्रिय  | ঘ≅হ. <br>খন্থ. ১ ঘজ.<br>খন্থ. গ্ৰন. ১ বু. | च≨.र्ज.स <br>१८४८च्याः             |
| 87. দ্দী'নেদুৰ্'শ্বন'<br>শ্ৰী'ক্ষ'ন্ন'ক্ৰ'<br>নুষ্'শ্ৰীদ'ন                                   | ल-नेयाङ्ग-म्रा                            | 149 <u>4</u> रुप हुर<br>8 नेट हुम् |

| 88. | र्मे १८ दुवः ग्रुपः<br>मे इत्राधः<br>सर्द्राधः महिता   | गुव-न्यद जुवा सर्वा                            | 1497 <b>~</b> 5.5                |
|-----|--|--|----------------------------------|
| 89. | # A : 日本: 大日本: 中本: 一本 A : 日本: 「日本: 「日本: 「日本: 「日本: 「日本: 「日本: 「日本  | क्ष.ज्ञ <b>्च्र</b><br>स.क्ष्रॅट.स.ग्रीय.∠चंत. | च≨.र्ष.च <br><i>2ेब.</i> -रचब्र. |
| 90. | মুড়-ড়-ঞুথ.<br>নম.পুথ-ঞুব.<br>নথন-স্থুব-খ্রা  | হ্মনেগ্র-স্ক্রন্থ-জ্ব-                         | 1983 বন:স্তুহ:<br>16 স্ক'শ্বশ    |
| 91. | म्ह्रायः प्रतः हे स्या<br>स्याः शुद्धः यहरः<br>द्वः यह्न यहियाः<br>स्रा  | শ্ব-গ্ৰহ-1                                     | 1989독다.골드·<br>17작품제              |
| 92. | स्थान्य स्था | 다.뜇·고전시<br>더.덫네·칭·크로                           | 1985 <sup>독</sup>                |

| 93. | ग्री:इय:बर <br>घत्रम्यःवराज्यः   | दहिबा्या:ब्रेन्:ग्राबा्याः<br>स्                 | 1419 বন-ছুদ্- 7             |
|-----|--|--|-----------------------------|
| 94. | ठॅर्-ग्री-र्गर<br>कग-रेग-धा  | রুম:বৃগ্ন:শ্লু:ব্লুম:<br>ব্রথ্নবিশ্ববা           | 1984 조작·픻도· 16<br>위도·휠      |
| 95. | 西京<br>型で、近点ない<br>型で、近点ない<br>型で、たった。<br>では、<br>では、<br>では、<br>では、<br>では、<br>では、<br>では、<br>では、  |  |                             |
| 96. | (전)<br>(전)<br>(전)<br>(전)<br>(전)<br>(전)<br>(전)<br>(전)   | पह्येब.जय।<br>स्रबं-भंद-विश्वयःचः                | 1985 <del>**   3</del>   16 |
| 97. | 四京の <br><b>3</b> 年、中、元<br><b>3</b> 年、中、元<br>日 京 年、一<br>日 京 年、日<br>日 下 日<br>日 下 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 日 | 瀬 <b>仁美心:て刊:て</b> 石 <b>仁:</b><br>瀬:བᆿ <b>ང: </b> | নশ্ব-না<br>ইথ-২নপ্ৰ-মঙ্ক-   |
| 98. | क्षेत्र-सदी-ब्रे-क्ष्<br>नु-क्षेत्र-इत्य-धर-   | ञ्च-छ-त्-रा-देव-क्रेव-<br>ञ्च-छ-त्-रा-देव-क्रेव- | 1366 <del>~ ~ ~ ~ ~ 6</del> |

| 99.  | 日仁.於仁.聖心.           |                             |                         |
|------|---------------------|-----------------------------|-------------------------|
|      | र्वेत इया हरा       | वशुर बेर वरे केवा           | 1609 37 55. 10          |
|      | कॅर-सुवै-बे-        |                             |                         |
|      | MT1                 |                             | 4.9                     |
| 100. | देय:बेर:बॅ्ब        |                             |                         |
|      | यदा-न्धे-सूत्र      | हुर:र्गर:ब्रें:चबर          |                         |
|      | 到一个村、口美工            | বর্ষ-দাব্দা                 |                         |
| 101. | इ.६८.ब्रेच्य        |                             |                         |
|      | प्रथा. इ. घ. ची पा. | a Barristera a constitution | 1453 বন:শ্বুব: ৪        |
|      | ग्री इय घरा         | दिहेग्या बेर् दिन्द्य       | <b>&amp;</b> .21        |
| 100  |                     |                             | 8 9                     |
| 102. | चे.चं≾.कू <i>थ.</i> |                             |                         |
|      | द्युद्र-देवः        |                             |                         |
|      | ₹4.Ŋ.≆a.tı.         | विच चह्नव.खे.बा             | 1986 조직 물도 16           |
|      | र्वेदे सहर          | 3 77 7                      | बे सून                  |
|      | 351                 |                             | 71                      |
| 103. | श्चॅग-न्यॅब-        |                             |                         |
|      | पर्कृदे.≇य.         |                             |                         |
|      | おえ、ヨイタ・ガイ・          |                             |                         |
|      | מיקד. שקמי          |                             |                         |
| -    | केण यमें र या       |                             |                         |
| 104. | देव.शुरुषायते.      | लर.जिर.स.ल.पंचेश्रा         | र्थेय.प्रथ्य.पङ्ग्रस्या |
|      | चेट्ट-रचया          | - 1                         |                         |
|      |                     | '                           |                         |

| 105• শৃর্ম:শূর্<br>কুম:শ্রংস্ক্র:<br>শুর:শূর্ম:শুর                                |                       | ন্তুৰ্-ন <br>নূৰ্-ন  |
|---|-----------------------|----------------------|
| (বু·শ্বা  | 화 a. 화 . a, g, l      | न्द्रत्रस्थ          |
| বিশ্বা  | 충 . 첫 之 . a 논 a .     | चुत्रःस्यःचङ्क       |
| 107• 5ੁਵਕਾ-ਸ਼੍ਰੇਕਾ  | ক্রথ:ক্র:অহ্ন।        | चर्च.त्रा            |
| ਕਾਲਵਾ   | ঐ:গ্রুব:অম্থ          | र्थय.यचळ.च <b>ळ.</b> |
| 108. শ্বংশ্বং<br>বৃগ্বংশ্বংশ্বং<br>অন্ত্ৰংশ্বংশ্বংশ্বংশ্বংশ্বংশ্বংশ্বংশ্বংশ্বংশ্ব | 화 4.활.회욕 <br>충·정스 41년 | 1692 天平 夏天           |

দুশ্দ্ৰা নিল্ল নেপ্ৰব্ থকা অস্ক্ৰী ৰী ৰাশ ক্ৰিটি দ্বাদ্ৰ ক্ৰ

ञ्च छेत्र न् में दलाया रचा माराया विषया মন্ত্রনমান্ত্রন্থা নর প্রন্থার (৪४1)মার ইপার্মার প্রন্থার त्रवायते कु.वे. (892) स्राप्त हिर्या प्रीरास्य विश्व वास्त्र स्रेयस त्रव्यः स्थार द्वरः म्याया द्वर्गार द्वर्गा ह्वर्या ह्वरा महिम्य वर्षा य र व्यायः महिन् द्वरा द्या द्या नृ श्रीयया पर्यः स्वा श्री द्या वी र या त्या वि र र स्टर ही या पर्यः । *थैया-*प्याचित्रव्यस्यक्षराचार्यः। अत्याचात्राच्याच्याच्या *षु:*मलु न्याः व्यंत्रः मदे : " वया द्धंत्यः मठ या न्यवः वया या दे । मञ्जयः यु : ये नया ख. चंत्र-इंट. पर्थे त. चंदुः चंत्रे चंत्र- व्याच्या व्याच्या चंत्रे व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्या व्याच्य . मुरायेनवारा स्वावास्या (१११) व्या स्वाया मार्चा मार्चा मार्चा मार्चा स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वया स য়ৣ৾৾ঢ়ॱয়ৢয়৻৴ড়ৢয়৾৽ঢ়ড়য়৻য়ৼ৾৾৾ঀৢয়য়৸ৼঢ়৻ঢ়ৢয়ৢঢ়৽য়য়ৢঢ়৽ৼৄয়য়৻ড়ঢ়য়৻ড়য়৾ঢ়ৢ৽৽ चवेया दे.रेया.श्रेरामेल्य.संदरामेशियारमिराज्य.रंभी.चर्डा.क्षेम द्या.रे. विनवानी देखवार्या स्वार्यात्राचा के (916) व्याप्ता के वाद्यादा व्याप्ता 

पर्श्व के.ये <u>व वृषाश्चर विल्ला</u>बक्ट.विश्वेता की.ये.ये.ये.येथे वे.क्र्यं विष्यं थे. .... नरः पठरः भरः। विरः इवः यः गृषुव यः भ्रुः व ५ रठरः श्रेवः यराः र्वे पः यः श्चिर.श्चर.श्च.रत. छ. घर घडेव। ञ्चःळेवः श्रम्यारा देरः मञ्जेव हें यथा <u> पश्चै पथ.यथ.यू.र्ज. प्रय. यूट. घुट. तथ.ये वे य.ज. र प. वैट. पश्चेय. हू यथ.ग्री.</u> क्षंय पः नवरः पर्देः संस्टः स्वा बेरः ग्रुटः । यतु सः नः सः स्वावरा नेरः ग्रुटः **६**मःसः न्दा मदया ग्रे : हा सर : द्रारा सदे : व्यव : न्वा मद्रा : व्यव মঝ-এইম-ৼ্ব-এ-্ব-জ্ঞীক-এম্ব-এহ-এ-ম্ব-এ-ম্ব-এ-জ্ঞা----न्बॅररायः न्दः बहुव धरः नगदः धैः गवदः नः ईनः यः नविव। मर्द्धव शे हु न में रनम हु म रमा महेव हैं नवा सम् न्दः पठराषे वर्षा वर्षाय वा क्षेत्र वा श्रीवा य यदः यः न्त्रा श्रीदः नवदः वियासद्वरम् स्वर् द्वार् सेवर्या होत्र प्रतात्त्वत्य स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः धेवः यरः ळॅ रः र यगः ग्रेरः श्वरा

दविंदः≫र्टः<<। क्रिंदः क्रुवः स्वादविंदः अविश्वातुः विषयः व वेरः श्वेवः ) क्र्वं यः विनयः यः नतु त्रः ग्रीः त्र रः वीः शुः त्रेयः विषयः र नः विषयः प्रा दर्जेट. **थे** ने त व्यव न व स्वाय की स्वार ने केंद्र न द । मु 'न्र'म्ब्र'न्द म्बेराग्रीयान्ने पक्षेत्र बुला सु सेरा संग्रायायायाया स्वाइत से स्रायः नेतामक्षेत्रः ह्रमाताम बेतात्रायाम्य प्राप्ता स्थानेता स्थानेता स्थानेता स्थानेता स्थानेता स्थानेता स्थानेता स विनलपालाञ्च (१४१) वरा सु :बेलाग्रेलाङ्ग रादी या बॅराळग देव रूरा **नमृत्रः मः नश्चनतः पदेः ञ्चनतः चुः नतः ङेतः नः सः सः ममुः न्दः न्सु।** यं नकु - नृदः नकु न् : र्राट्यः नृरः नृदः श्चे : नृदः नदः श्चे : नृदः हिनः धिवा मु केरा ग्रेरा केर पर प्रकृत परि गवता गवि र ने पर तुन ग्री केर पर्द गता परि **सं**-दर्ने-सःनङ्ग्दः-सः श्चे-द्नः श्चे-दन्ने । स्वाप्नः स्वाप्नः स्वाप्नः स्वाप्नः स्वाप्नः स्वाप्नः स्वाप्नः स्व ञ्चवः भेरा नेवान्य १. ह्या इतः स्वा द्वारा व्या ३. व्राञ्च वयापः हैं :हे : द्वरः धुन 4. शुः वेरः द्वंषः विवयः दवुरः नवयः ) वुरः नदे वरान्येयाञ्चव न्राह्मान्तेयान्य कु द्वरावेयान्य प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप स्यत्व, व्यव, कर् त्याचे नथा होवा न्या न्या व्यव विदेश গ্ৰহ

हैं (950) स्राधितात्री हैं स्थान्त क्ष्यात्र हैं स्थान्त हैं स्थान हैं स्थान्त हैं स्थान हैं स्थान्त हैं स्थान्त हैं स्थान्त हैं स्थान्त हैं स्थान्त हैं स्थान हैं स्थान

प्यातः विच त्यान् यत्।

प्रातः विच त्यान् विच त्यान विच त्य

मूर्यं स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त स्वर्त्त स्वर्त्त स्वर्त स